

सुवर्ण प्राच.-

गोडल रसशाला औषधाश्रम
४१६, कालवादेवी रोड, मुंबई २.

राजकोट शाखा -

गोडल रसशाला औषधाश्रम
सा लाखाजी रोड, राजकोट.

हेड ओफीस और कारखाना
रसशाला औषधाश्रम गोडल-सौराष्ट्र.
(शुद्ध आयुर्वेद औषधोंकी प्रमुख फार्मसी)

मध्य प्रदेश के
सेल हीस्ट्रीव्युटर
नथमल हजारीचंद्र कांशरीया,
बोलाघाट

राजस्थान के
सेल हीस्ट्रीव्युटर
राजस्थान आयुर्वेद सदन
(गज.) उदयपुर.

रसशाला प्रेस-गोडल

रसोद्धारतंत्रनी (रस संहिता)

विषय:-

मगला चरण

ज्वर प्रकरण

ज्वरकी उत्पत्ति

८ प्रकारके ज्वरका मेद

१३ सन्निपात ज्वर के मेद

तापज्वर-बुखार

कारण चिन्ह

साधा बुखार तरुण ज्वर

नव ज्वर

ताप उत्तर ने का लक्षण

सामान्य शुश्रूषा

उवास

घातज्वर वायुका ताप

शुंठयादि क्वाथ

पित्त ज्वर-गरमीका ताप

द्राक्षादि क्वाथ

पित्ताशनि रस

कफ ज्वर-कफका ताप

सामान्य सारचार

कफ ज्वर हर चूर्ण

विभ्रताप हरण गोली

शीतज्वर-टाढिया ताव-

सेलेरिया

विषम ज्वर चूर्ण

त्रिभुवन कीर्ति गोली

रुग्दह सन्निपात (टाइफाइड

ताप)

पृष्ठ

१

॥

॥

॥

२

॥

३

॥

४

५

६

॥

॥

॥

॥

७

॥

८

॥

॥

९

॥

॥

॥

सन्निपात भैरव रस	१०
वृद्धकैशुरी भैरव रस	११
प्रन्थिकादि क्वाथ	१२
प्रलापक सन्निपात	१३
त्रैलोक्य चिन्तामणि रस	१४
सधिक सन्निपात	१५
परिवर्तित ज्वर	१६
शठयादि क्वाथ	१७
भुग्न नेत्र सन्निपात	१८
कंठ कुब्ज सन्निपात	१९
फेफड़े के पड़की सुजन	२०
तन्त्रिका सन्निपात (इन्फ्लू एन्जा)	२१
प्रन्थिक सन्निपात (मरकी प्लेग)	२२
ज्वरांतक विरेचन घटी	२३
सप्तामृत पर्यटो	२४
प्लेगकी गांठका लेप १	२५
॥ ॥ ॥ २	२६
तिक्तादि क्वाथ	२७
महासुदर्शन चूर्ण	२८
महाज्वरांकुश रस	२९
हिगुलेखर रस	३०
रत्न गिरि रस	३१
द्विर्ण गर्भ (हेमगर्भ पोडली)	३२
महा लाक्षादि तैल	३३
अतिसार	३४
मनश् भैरव गुटी	३५
कपूर सुदरी गोली	३६
अगस्त्य छतराज रस	३७
चित्रकादि घटी	३८
अमय नृसिंह	३९
कपूर रस	४०

वृद्ध गंगाधर चूर्ण	॥	अजीर्ण	४०
कुटजावलेह	॥	अग्नि तुलसी गोळी	४२
संग्रहणी	२५	अजीर्ण कंटक	॥
आमातितार-मुरडा	॥	कष्याद रस बृहत	॥
ढाई चूर्ण	२६	शंखवटी बृहत	४३
पचामृत पपंटी	२७	हिगाष्टक चूर्ण	॥
लोह पपंटी	२८	अग्निमुख चूर्ण	॥
सुवर्ण पपंटी	२९	लभण भास्कर चूर्ण	४४
सिद्धनाथो कांचन पपंटी	३०	सप्त शर्करा चूर्ण	॥
महणी कपाट रस	॥	अजीर्ण कंटक रस	॥
महणी गज केशरी रस	३१	अग्निमांश मंदाग्नि	४५
रत्न कला चूर्ण	॥	वाग्नि दीपन गोळी	४६
महणी हर काथ	॥	स्वादिष्ठ चाटन	४७
संग्रहणी और मुरडामे छाछ	॥	रसेन बटी	॥
संग्रहणी आदिमें सामान्य प्रयोग	३२	विस्त्रिका कोलेरा	४८
ववासीर-अर्शोरोग-मसा	३३	शुठयादि पेप	॥
सुखा ववासीर	॥	विस्त्रिची कालान्तक रस	५०
खली ववासीर	३४	विस्त्रिची हरी बटी	॥
चंद्रकला अथवा महाचंद्रकला	॥	विस्त्रिची विजय रस	॥
तिक्तनादि चूर्ण	॥	विस्त्रिची हराजन	५१
अग्नि मुख लोह	॥	अ जन	॥
अंश कुठार गुटी	॥	विस्त्रिची हर मदन	॥
अंशः करी केशरी रस	॥	विस्त्रिच्छा हर तौल	॥
शार्कर लोह मसम दुर्नामारि लोह	३६	अग्निदाह (चाम)	॥
करादि चूर्ण	॥	कृमि रोग पेटके जंतु	५२
ववासीर पर (अरेलु औषध)	॥	सुस्तादि कवाथ	५२
प्रयोग यो १ से १९	३६-३७	प्रयोग १ से १३	॥
मसा उपर लगानेका लेप-	३८	कौट मदन रस	५३
धुई, भलम	॥	कृमिहरी बटी	५४
प्रयोग १२	॥	पलाश बीजादि चूर्ण	॥

पांडुरोग-कामला ५५-५६

पुनर्वा मंडुर:-	५७
नवायस लेह	५८
घात्री लेह	५९
महर वटक	६०
लेह रसायन	६१
मधु मंडुर	६२
सामान्य प्रयोग १ से ८	६३
रक्तपित्त रक्तसाव	६४
महाचंद्र कला	६५
सुधा पर्पटी	६६
रक्तसावहर फाट	६७
रक्त शिक्का रस	६८
रक्त स्तमन रस	६९
उशीरासव	७०
बेल पर्पटी	७१
सुधा निधि रस	७२
रक्तपित्तके सामान्य प्रयोग ११	७३
रक्तपित्त शामनालेह	७४
क्षय रोग राज क्षमा	७५
शिव्य घृता	७६
रसरज रस	७७
राजमृगांक रघु	७८
स्वर्ण वसत मालती नं. १	७९
स्वर्ण वसत मालती नं. २	८०
क्षय ज्ञाक	८१
स्वर्ण भूपति	८२
शृंगाराभ्र	८३
वासावलेह	८४
जातीफलादि गुटीका	८५
महालाक्षादि तैल	८६

क्षय रोगके सामान्य प्रयोग १०

सामान्य कास कफ	७३
स्नेह गुटिका	७४
गुण महोदधि रस	७५
मकर वटो	७६
मधुयश्यादि गुटी	७७
शृंगाराभ्र रस	७८
मुष्का रसायन	७९
खेरमारादि गोली	८०
क्षयहर मिश्रण २	८१
चेपचोन्यादि वटो	८२
अहि फेनादि वटो	८३
लवंगादि चूर्ण	८४
बाल ककारि गुटी	८५
महाराज मृगाक रस	८६
शिलाजतु प्रयोग	८७

श्वास दमा ७८

सुवर्ण पर्पटी	८८
श्वास कुठार	८९
श्वास कालेश्वर (महाकालेश्वर)	९०
ताम्र पर्पटी	९१
सुर्यावर्त रस	९२
श्वास चिंतामणि बृहत	९३
हामरैश्वराभ्र रस	९४
श्वास गजसिंह रस	९५
बाबादि क्वाथ	९६
उध्वश्वासारि रस	९७
चिंतामणि चूर्ण	९८
श्वासके सामान्य उपाय १०	९९
शिका हीचकी	१००
सर्व मगला वटो	१०१

हिकाके सामान्य प्रयोग १४१ ८३
 मुखरोग मुखके अदरके रोग
 गलेके रोग स्वर्ण ८४

कल्याण भैरव रस ८५

कल्याण घृत ८५

किन्ना कंठ रस ८६

सास्वती अबलेह ८६

गलेके अन्य रोग ८७

दागी कवाय ८८

तिक्तादि कवाय ८८

यवद्वारादि गुटी ८८

प्रवालादि मिश्रण ८८

गलरोगहर तैल-और घी ८९

गलेका काकड़ा ८९

गलेका चाँदा ८९

गलेका रोगदा सामान्य उपचार ७ थी ९

दाँतके रोग ९०

दाँतकी खेरी ९१

शिलादि मंजन ९१

दाँतका शूल ९१

पलाश बीजादि मंजन ९१

वातघ्ना गुड प्रन्धी ९२

वजन संस्कार चूण ९२

दाँतकी पाल ९२

दंत मशी ९२

दाँतके पेढा-मसूढाके दद ९२

कुष्ठादि मंजन ९३

काशीसादि मंजन ९३

मसूढासे ठोही पत्र निकलना ९३

पायोरिया ११

काशीसादि मंजन ११

दाँत हिलना ९३

दाँतहटीकरण मंजन ९३

जिह्वा-जीभके दद ९४

एलादि घर्षण ९५

निर्गुटी आदि गन्ध ९५

रसाजनादि मंजन ९५

जिह्वा रोग हर मिश्रण ९५

तालूके रोग ९५

तालूरोग हर घर्षण ९५

कुष्ठादि गन्ध ९५

मुक्तादि मिश्रण ९६

ओष्ठ-होठोंके रोग ९६

ओष्ठ व्याधि हर तैल ९६

ओष्ठ व्याधि हर मलम ९७

ओष्ठ रोपण मलम ९७

मुख रोग मुख पाक ९७

मुखका पाक ९७

मुखपाक हर कवाय ९७

मुखपाक हर मिश्रण ९७

मुखरोग हर घर्षण ९७

मुखरोग हर लवण ९७

मुख रोगहर घृत ९७

मुख सौंदर्य वटी ९८

रसादि गुटी (वाक्को प्रटिका) ९८

मुखरोगहर गन्ध ९८

९८ ९८

९८ ९८

प्रवालादि मिश्रण	१९
जानोफलादि गुटी	"
कुष्ठादि चूर्ण	"
कुष्ठादि चूर्ण	"
खदिरादि तैल	"
मुख सौरभ्य वटी	"
योगपुर योग	१००
निम्बादि योग	"

अम्ल पित्त १०१

अम्लपित्तांतक मिश्रण	१०१
सर्वतोमन लेह	"
लीला बिलास	"
अम्लपित्तांक लेह	"
अम्लपित्तर चूर्ण	"
अम्लपित्त दामनावलेह (कुर्मांडावलेह)	"

अरुचि १०४

रासवाण	१०४
अरोचकपट्ट	"

वमन-छर्दि-उलटी १०५

छर्दि शंकर	१०५
छर्द्यन्तक	"
ऐलादि चूर्ण	"
अमरी गुड योग	"
कमल बीजादि योग	१०६
खर्परादि योग	"
विषतिंदुकादि योग	"
आमलकादि योग	"
सौन्धवादि योग	"
एलादि योग	"
अतिविषादि योग	"

गुणो (प्रमाणेन)	
सामान्य उपाय २९	
गरीरका दाह शेष वृषा १०८	
चंदनदि स्वाधज यगुर	१०९
रौप्य गुटी	"
कुष्ठादि गुटी	"
ओलादि चूर्ण	"
एलादि योग	"
द्राक्षादि योग	१०९
खदिरादि योग	"
आमलादि योग	"
कर्पूरादि योग	"
मुशलयादि योग	"
वालकादि योग	११०
कुष्ठादि योग	"
लेहस्रंड योग	"
कुष्ठादि योग	"
चंदनादि योग	"
वृषाहर रस	"

मूर्च्छा १११

मूर्च्छा नाशन धूत	"
मूर्च्छान्तक रस	११२
मूर्च्छा हर अजन	"
रास्नादि योग	"
गोक्षुरादि योग	"
अष्टावृत पपंटी मिश्रण	"
अथ्य (दारु) से	११३
होनेवाले दर्द	
मुक्तादि मिश्रण	११५
प्रणालादि मिश्रण	"

मथभंजी रस

उन्माद पागलपन

११६

सरस्वती चुर्ण

११७

भूतभैरव रस

११८

पलाकादि क्वाथ

११९

उन्माद हरी वटी

१२०

उन्माद हर मिश्रण

१२१

उन्माद क्षामक चुर्ण

१२२

उन्माद हर क्वाथ

१२३

बचादि चुर्ण

१२४

कुष्ठादि चुर्ण

१२५

उन्माद गन्धांकुश

१२६

उन्माद प्रयोग

१२७

उन्मादहर धूनी

१२८

महाघृत

१२९

वत्स्याण घृत

१३०

सपंगन्धा कल्प

१३१

वातरोग ८४ प्रकारके

१३२

वात व्याधि संधिवात

महायोगराज गुणक

१३३

रघु योगराज गुणक

१३४

वात राक्षस

१३५

चितामणि चतुर्मुख रस

१३६

वात चित मणि वृद्धत

१३७

वात विष्वंस रस

१३८

महा राक्षनादि क्वाथ

१३९

महा नारायण तैल

१४०

राक्षनादि घृत

१४१

संधिगत हर मिश्रण

१४२

वातहर घृवा

१४३

नजला अर्दित वात १२५

अर्दितकुश रस

१२६

आफरा पेट फुलना १२६

सिद्धयवाही चुर्ण

१२७

उरुस्तंभ

१२८

उरुस्तंभारि रस

१२९

उरुस्तंभारि लेप

१३०

कंपवात

१३१

कंपवातारि रस

१३२

अमर सुंदरी गुटिका

१३३

गठियावा गठिया वातरोग १२८

ग्रंथिवातांतक रस

१३४

जानवा वा-घुंटेनका वात १२९

जानुशोधहर लेप

१३५

जानुशोधहर क्वाथ

१३६

त्रयोदशांग गुलक

१३७

जिह्वास्तंभ-जीभ-तुतलाना

अटकना

१३८

अर्क पुष्प प्रयोग

१३९

जिह्वास्तंभहर मिश्रण

१४०

कटीग्रह टचकीयुं

कमर

झकड जाना

१४१

मन्यास्तंभ

१४२

मन्यास्तंभारि मिश्रण

१४३

हनुग्रह

१४४

पक्षघात

१४५

एकांगकीर रस

१४६

चक्षुषाघातारि रस	॥	आक्षेप हर मिश्रण	१४१
चाहुशोष-अय वाहुक	१३३	वात भास्कर रस	॥
चाहु शोष हर मिश्रण	१३४	आमवात	१४२
चाहु शोष हर क्वाथ	॥	रघोन वटक	१४३
चाहु शोष हर मिश्रण-और तैल	॥	धामवातारि	॥
शिरोग्रह-मस्तक झकड जाना	१३४	आमवातेवर	॥
		आरोग्य वध'नी गुरिका	१४४
शिरोग्रह हर मिश्रण	॥	आरोग्य वध'नी गुटीका नं १	१४५
शिरोग्रह हर क्वाथ	॥	तिक्तुतादि क्वाथ	१४६
रसाज्ञान स्वादका अज्ञान	॥	मुस्तादि क्वाथ	॥
रसाज्ञान हर घषण	१३५	आमवातहर मिश्रण	॥
गृध्रसी वात (रांझण)	१३५	महारास्तादि क्वाथ	॥
गृध्रसी वातहर मिश्रण	१३५	अपस्मार-वाइ-मिरगी	१४७
अग्नि देवता वटी	॥	अपस्मार नाशन रस	१४८
लकवा सुसवात	१३३	भूत भैरव लघु	१४८
सुमवातारि तैल	१३६	भूत भैरवरस महा	॥
लघ्न योग	॥	अपस्मार हर मिश्रण	॥
सधिवात	१३७	अपस्मार हर चूर्ण	१४९
अधिवातारि रस	॥	वाइ मृगीके सामान्य प्रयोग	१४९
सधिवात हर मिश्रण	१३८	वातरक्त-गलत्कुष्ठ-लेपसी	१५१
सधिवात हर चूर्ण	॥	वातरक्तांतक रस	१५२
सधि ग्रह सांघोका झकड जाना	१३८	कुष्ठण प्राणिक्य रस	१५३
सधि प्रहारि तैल	१३८	रक्तवाताशनि रस	॥
धनुर्वात धनुर्वा	१३९	अमृता गुगळ	॥
धनुर्वात हर मिश्रण	१४०	किशोर गुगळ	१५४
धनुर्वादि क्वाथ	॥	विद्य हरताल भ-म	॥
धनुर्वातारि रस	॥	धप' कंजुकी योग	१५५
धनुर्वातादि वज्र रस	१४१	महाम'जिष्ठादि क्वाथ	॥
आक्षेप आंवकी ताण खेच	१४१	गलत्कुष्ठ हर गलम	॥
		प्रयोग १ से ५	॥

उपदंश च्यांदी गरधी

उपदंश हरी वटी	१५८
कस्तुरीदि गोळी	,,
ऐशरादि गोळी	,,
उपदंश हर मिश्रण	,,
उपदंश कुठार	,,
विस्फोटकारि प्रयोग	१५९
हिम चन्द्रस	,,
उपदंश हर मलम	,,
गुंठा गम' तेल	,,
सिंदुरादि मलम	१६०
गुंथादि वटी	,,
गुंथा हरीतकी वटी	१६०
विस्फोटक हर प्रयोग	,,
विस्फोटकृश वटी	,,
अश्वगधादि चूर्ण	,,
विस्फोटक हर प्रयोग	१६१
विस्फोटक हर घुणी	,,
उपदंश हर दुग्धा	,,
ओया हुवा मुद अच्छा करनेका प्रयोग	,,
सामान्य प्रयोग १ से ७	१६२
श्वेत कुष्ठ (सफेद-कोठ)	१६३
(श्वेत कुष्ठहर रस)	१६३
द्विवात्रि रस	,,
द्विप्र कालानल तेल	,,
श्वेत कुष्ठहर लेप	१६४
श्वेत कुष्ठ हरी सोणठी	,,
गंधक कृत्	,,
सामान्य प्रयोग १ दी ८	,,
निगा रसायन	१६५
कष्ट गुनका विगाड	१६६

गंधक रसायन	१६७
कुष्ठ कृतान्त रस	१६८
अश्वनादि फाट	,,
महाम जिष्ठादि क्वाथ	,,
सर्वकुष्ठ हर मिश्रण	१६९
अमृतमल्लानक	,,
कुष्ठ राक्षस तेल	,,
कुष्ठहर लेप	,,
सामान्य प्रयोग १ से ८	,,
स्वायंभुव गुणक	१७०
दद्रु-दादर	१७१
दद्रु मिश्रण	,,
दद्रु रसायन	,,
कुष्ठदि लेप	,,
दरदादि लेप	१७२
दद्रुन सोणठी	,,
दादके सावे प्रयोग १ से १८	१७१
किटभ-खजु खरजवा	१७३
खजुनाशन मिश्रण	१७३
खजुनाशन तेल	,,
सामान्य प्रयोग १ से १३	,,
पामा विपचिका खुजली	१७५
चित्री त्वचाविकार	
पामाहर मलम	,,
रसादि मलम	,,
अक' तेल	,,
गंधकादि मलम	,,
प्रक्षीण' प्रयोग १४	,,
निलादि चूर्ण	१७६
व्रण-गुमहा	

त्रण फोड़नेका मलम	१७८	भगंदरारि तेल	११
त्रणसे बिगाड़ निकालनेकी पोटी	१७	रुक्मेश्वरी पाटी	१८६
बिगाड़ निकालनेका लेप	१७	नवकार्षीक गुणल	११
त्रण रोपण लेप	११	भगंदर शोधन प्रवाही	११
त्रण पककर फूटकर रुकानेका उपाय	१७९	साधा प्रयोग १ थो ११	११
त्रण बैठानेकी पोटी	१७९	विद्रधि अन्तर्विद्रधि	
त्रणपकानेकी पोटी	११	वहि विद्रधि केन्सर १८८	
त्रण फोड़नेका लेप	११	सर्वेश्वर पर्पटी	१८९
आगली पट्टी	११	विद्रधि हर मिश्रण नं १	१९०
रोपण मलम	११	विद्रधि हर मिश्रण नं २	११
रक्त लानेका मलम	११	विद्रधि नाशन कवाथ	११
कात्यादि मलम	११	घञ्ज रसायन	११
कात्यादि तेल	१८०	खदिरादि कवाथ	१९१
त्रण घञ्ज तेल	११	विद्रधि हर लेप	११
त्रण मातङ्ग रस	११	विद्रधि हर धूप	११
त्रणहर मिश्रण	११		
त्रण रोपण मलम	११	गंडमाला गलगंड कंठमाल	
सिन्दुरादि रोपण मलम	१८१		१९२
रोपण मलम	११	कांचनार गुणल	१९२
त्रणके साथे प्रयोग १ से ७	११	गंडमाला कंदन रस	१९३
नासुर नाडीत्रण	१८२	गंडमाला हर मिश्रण	११
नाडीत्रण हर मिश्रण	१८२	कंठ लोबेश रस	११
नाडीत्रण शामक मिश्रण	११	गलगंड हर तेल	१९३
नाडीत्रणांतक गुणल	११	गलगंड लेप हर	१९४
नाडीत्रणहर तेल	११	वाल्मीक राफ़ी	१९५
नाडीत्रण हर मलम	१८३	वाल्मीक हर मिश्रण	१९५
निर्युद्धी तेल	११	वाल्मीक हर तेल	११
भगंदर	१८४	वाल्मीक हर लेप	११
रुक्मेश्वरी शलाका प्रयोग	१८५	हृदयरोग और	१९६
भगंदरारि मिश्रण	११	फेफड़ेका रोग	११
भगंदरारि रस	११		

हृदयार्णव रस	१९८	कुशदि लेप	११
हरिहर रस	११	पित्त शिरोरोग प्रयोग	२०५
प्रभाकर वटी	११	चन्दनादि लेप	११
शकर वटी	११	कफ शिरोरोग प्रयोग	११
त्रिनेत्र रस	११	त्रिदोष शिरोरोग प्रयोग	११
हृदय रोग हर मिश्रण	१९९	क्षय शिरोरोग प्रयोग	११
हृदय पुष्टि मिश्रण	११	कृमि जन्य शिरोरोग प्रयोग	११
अजुनारिष्ठ	११	शिरः शलादि वज्र रस	२००
हृदय वध हर गुटी	११	अर्धवभेदक आधासीसी २११	
मुखके बाहरके भागके रोग		सूर्यावर्त	
	२००	अर्धात्रि मेदहर नस्य	११
कुङ्कुमादि तेल	१००	प्रयोग १ से १५	११
मुखके खोलके उपाय १ से ८	११	अर्धात्रि मेद हर मिश्रण	११
मुखके काले दाबके उपाय १ से १४	२०१	अनन्त वात	२१२
मुखके मसे के उपाय १ से ३	२०२	अनन्त वात हर प्रयोग	११
दिमाग जगज मस्तक रोग		शंखक	२१३
	२०३	दिमाग-मस्तिष्क से रक्तस्राव	२१४
शिरो रोग हरी वटी	२०५	शिरोरक्त स्राव हर प्रयोग	११
शिरो रोग हर अण्डेह	११	मस्तकमे प्रन्थी	२१५
षड्विन्दु तेल	२०६	मस्तक प्रन्थी हर प्रयोग	११
पचासत लोह गुगल	११	मस्तकका मलेदर	२१६
रक्ष्मा यिलास तेल	२०७	जलशेषण रस	११
पाठादि लेप	२०७	मस्तकका भ्रम	२१५
शिरो घस्ती	११	दुरालभादि वज्राण	११
शिरोरोग हर मिश्रण १	२०८	मस्तिष्कके आवरण का दाह और शोथ	११
शिरोरोग हर मिश्रण २	११	मस्तक दाह	२१६
सर्वशिरोरोग हर नस्य	११	मस्तक सिरकी पीडा	११
अर्ध नारीश्वर नस्य	११	फुफुरादि घाम	११
वात शिरोरोग मिश्रण	११	मस्तक पुष्टि	२१८

मस्तक पुष्टि मिश्रण	॥	इच्छा मेदी गोळी	॥
मुष्ठा कहर	॥	लशून वटो	२२७
मस्तक पुष्टि षटी	॥	भरिगयवर्धनी चूर्ण	॥
मस्तक पुष्टि चूर्ण	२१९	जठोदरारि मिश्रण	२२८
शिरके बालको जुये-किंले	॥	शूल-परिणाम शूल	॥
मस्तकी टाक-इन्द्रजित	॥	शूल गज केसरी	॥
शिरका खोडा-मण-गुमचां	॥	शुक्रांतक रस	२३०
उदर रोग पेटके दद २२१		शूल दावानल रस	॥
बातोदर	॥	शूल गजेन्द्र लेक	॥
बातोदरारि गुटी	॥	विपतिन्दुकादि वटो	॥
रसेनादि तेल	॥	शुक्रारि कवाथ	॥
पितोदर	॥	शूलहर चूर्ण	॥
पितोदरारि वटो	२२२	हिंशुल भस्म श्वेत	॥
कफोदर-कठोदर		शालग्राम चूर्ण	॥
कफोदरारि वटि	२२३	श्री फल लक्षण	२३२
कफोदरि मिश्रण	॥	मलशोषनी वटो	॥
बन्धान	॥	उदर रोग हर चूर्ण	॥
कफोदर-विषोदर-सन्निपातोदर	॥	प्लोह हर चूर्ण	॥
विषोदरारि मिश्रण	२२४	प्रयोग १ से ९	॥
कदम्बादि कवाथ	॥	उदान्त वायु-गैस चढना २३६	
कठोदर-परिखावी उदररोग	॥	उदावर्तशनि रस	२३६
कठोदरारि गुटि	॥	फलवती	॥
कदम्ब गुदोदर	॥	विपतिन्दुकादि वटो	॥
कदम्ब गुदोदरारि घृत	॥	अष्टीला प्रत्यष्टीला मृवारकी गांठ	
आनाह पेट फुलना चढना २२५		विट गांठेह	२३७
भारायण चूर्ण	॥	प्रयोग १ से ६	॥
बिन्दु घृत	॥	दस्तकी कब्जी-मलावरोध	
कदरादि रस	२२६	आनाह २३८	
कठोदर कलंघर	॥	मधु विरेचन चूर्ण	२३८
कठोदरारि रस	॥	हरीतकी अवलेह	२३९

शुद्धि चुगं	॥	स्युजय रस	॥
प्रयोग १ से ६	॥	यकृत प्लेहारि योग	॥
एलोयादि वटी	२४०	रोहितक घृत	॥
जुलाब-विरेचन	॥	सामान्य प्रयोग १ से ८	२५७
अश्वबोली	२४१	गुल्म-गोली	२५८
इच्छामेदी गोली	॥	गुल्म दावानल	२५९
मेघनाद रस	॥	मुक्ता पचामृत	॥
विरेचन चूर्ण	२४२	काकायनी गुटिका	॥
नामि विरेचन	॥	गुल्म कालानल रस	२६०
आरोग्य वर्षनी चूर्ण	॥	गहननथ रस	॥
प्रयोग १ से ५	॥	गुल्म कुठार	॥
शोथ-सोफ-सुजन-सोजा २४४		निम्बूक्षार प्रवाही	॥
शोथोदरारि महर	॥	हरीतकी अवलेह	॥
शोथ कालानल रस	२४७	देरडा क्षार प्रवाही	२६१
दुग्ध वटी	२४८	गोधुम प्रयोग	॥
शोथ शार्दूल तेल	॥	सुहमार	२६२
शोथका सामान्य उपाय १ से १५	॥	महालाक्षादि गुग्गुलु	॥
प्लीहा तिल्लीकी वृद्धि २५०		मुमिआइ	॥
प्लीकाणव रस	२५०	संधाण	२६३
प्लीहारि रस	॥	अस्थिभग्न हड्डी टूटना	२६४
प्लीहा हर मिश्रण	२५१	आमा गुग्गुलु	२६४
रोहितकावलेह	॥	भग्नारोग्य तेल	॥
रोहितकागुट्ट	॥	भग्न संधान लेप	२६५
अक' लवण	॥	भग्न पाति लेप	॥
महा स्युजय लेह	॥	घा सुज जटी	॥
यकृत कीवर कलेजे के रोग २५३		भग्नारोग्य मिश्रण	॥
यकृत प्लीहादरारि लेह नं १. २५५		भग्न हर कवाथ	॥
यकृत प्लीहादरारि लेह नं २	॥	पानी लगना-दुर्जक	२६६
क्षारामृत	॥	जन्य रोग	
रोहितमादि चुगं	॥	दुर्जल जेता रस	२६६
महालोक्ष्मा रस	२५६		

अपूर मालिनी वसु	॥	श्लोपद गज वैद्यरी	२७९
अपराजिता गुटिका	२६७	श्लोपदारे लोह	॥
दुर्जल हर मिश्रण	॥	नित्यानन्द रस	॥
ज्वर वङ्गांठ बांवलार्ई	२६८	सौरेश्वर धुन	२८०
ज्वर नाशन रस	२६९	प्रयोग १ से ६	॥
ज्वर हर मिश्रण	॥	हडकवा पागलकुत्तेका दंश	२८१
ज्वर हर मलम	॥	प्रचेतक चूर्ण	॥
प्रयोग १ से ५	॥	खान विषहर चूर्ण	॥
मेदवृद्धि चरबी चढना-	२७०	खान विषहर कवाथ	२८२
मेदरोग		प्रयोग १ से २३	॥
लोह रसायन	२७१	वृद्धि अडवृद्धि अत्रवृद्धि	२८४
मेद घोषो रस	२७१	वृद्धि बाधिका वटी	॥
रूपौन्मापकषण तल	२७२	अडवृद्धिहर रस	२८५
शीतपित्त उदर कोठ		अत्रवृद्धि नाशन रस	॥
उत्कोठ शीलस	२७३	भक्तोत्तरीय रस	॥
शीत पित्त शमनी वटी	२७३	महा सैधवादि तैल	२८६
शीत पित्तारि मिश्रण	॥	वृद्धिहरी वटी	॥
शीत पित्तहर कवाथ	॥	वृद्धि नाशन मलम	॥
प्रयोग १ से ५	॥	प्रयोग १ से ४	॥
वीसर्प रतवा	२७४	पथरी अश्मरी मूत्र ग्रन्थी	२८८
कालामि रुद्र रस	२७५	त्रिविक्रम रस	२८९
वीसर्प हर कवाथ	॥	अश्मरी भेदी रस	॥
लेव १ से ४	॥	पाषाण वज्र रस	॥
ज्वर स्नायु बालाका रोग	२७६	प्रयोग १ से ९	२९०
स्नायु जयती वटी	॥	उष्ण दात पेशावमे जलन	२९१
स्नायु शुलारि रस	॥	उनवा	
सामान्य प्रयोग १ से १९	२७७	उष्ण दातहर मिश्रण	॥
हाथी पांव श्लोपद	२७९	उष्ण दातहर चूर्ण	॥
		प्रयोग १ से ७	॥

मूत्र कुच्छू	२९२	मस्तकयादि	१००
मूत्र शालाका	२९३	इन्द्रवटो	१००
मूत्र कुच्छूतक रस बृहत	"	शुकमातृका वटो	३११
मूत्र कुच्छूतक रस लघु	"	रक्तमैहोतक रस	१००
मूत्र कुच्छूरि रस	२९४	महा वसंत कुसुमाकर	१००
कौवेरी गुटीका	"	महा वसंत कुमाकर	३१२
प्रयोग १ से १३	"	वसंत कुसुमाकर	३१२
मूत्रवात मूत्रावरोध	२९६	स्राविादि अनटेह	१००
मूत्राघारि रसे	२९७	घातु पौष्टिक अवलेह	१००
सामान्य प्रयोग १ से ४	"	बहु मूत्रातक रस	३१३
मूत्राशय के रोग	२९८	प्रमेह कुलातका वटो	१००
मूत्राशय रोगातक रस	२९८	कामधेनु रस	१००
मूत्रका वेग रोकनेकी-		मालती कुसुमाका	३१४
अशक्ति	२९९	महाभ्र वी बृहत	१००
मूत्रातिघार हरी वटो	२९९	मधु मेहारि चुर्ण	१००
सामान्य प्रयोग १ से ९	"	बंद्र कान्ति गुटी	१००
मूत्र पिंडके रोग	३०१	शतावरीदि चूर्ण	१००
मूत्रपिंड रोगहर रस	"	घातु पौष्टिक गुटिका	१००
सामान्य उपाय १ से ७	३०२	गोक्षुरादि अवलेह	३१५
प्रमेह	३०३	मस्तकयादि चूर्ण	१००
चंद्रप्रभा	३०६	चंदनासव	१००
प्रमेहारि वटो	"	देवकुसुमादि पाक	३१६
भीम पराक्रम रस	"	पौष्टिक आयो	१००
हरीशंकर रस	३०९	सामान्य उपाय १ से ४०	१००
ब'गेश्वर लघु	"	नेत्ररोग आंखके रोग	३२१
ब'गेश्वर बृहत (महाब'गेश्वर)	"	मुक्तादि अजन	१००
गुगल वटो	"	विमलाजन	१००
वसंत तिलक रस	३१०	चंद्रोदया पति	१००
प्रमेहोतक वटो	"	प्रकीर्ण प्रयोग १ से १९	३१२
		बावलु	३१३
		बेल	१००

स्तोषाद्विर्वा	॥	नेत्ररोग हर मिश्रण १ से ३	॥
आँखकी चांदी	॥	पलाश मूलाक	॥
कुण्डल मंडलका गड	॥	अद्विफेनादि लेप	॥
फुला	३२४	वासादि फांट	॥
आँखका डैया	॥	हरीश्रादि योग	३३३
मोतीया बिन्ड	॥	कपूर पुष्पांजन	॥
झामरवा नाकसुर	॥	सिद्धांजन	॥
आँखणी	३२५	भुंजग वसांजन	३३४
आँखका कणा	॥	सर्पांजन	॥
रुग्नी नजर	॥	माक्षिकांजन वति	३३४
टुकी नजर	॥	कलशांजन	३३५
निर्बल कपजोर दृष्टि	॥	अक'दुग्ध प्रयोग	,
आँखकी सूजन	३२६	प्रकोण प्रयोग १ से ८	॥
रतौबापन नकताध्य	॥	नासा रोग नाकके रोग ३३६	
सुखावती वति	॥	पीनस-प्रतिश्याय	३३७
जागार्जुनी वति	॥	विडंगादि नस्य	॥
अयनामृतांजन	॥	पीनस हर नस्य	॥
पुष्पांजन	॥	वित्रघंटा वटी	॥
गुटिकांजन	३२७	चित्राक हरीतकी	॥
लोम पोटाकी	॥	कलिंगादि नस्य	॥
फुलाका सामान्य उपचार. १ से ३५	॥	पीनस हर मिश्रण	३३८
समुद्रफेनादि वति	॥	पीनस हर धूप	॥
नासुर हर लेप	३३०	परिचादि वटी	॥
चक्षुरक्षांजन	॥	रत्नपत्राटी	३३९
महा मुक्तांजन कृष्ण	॥	नासारोग हरी वटी	॥
अमृत फांजल	३३१	कर्णरोग कानके दर्द ३४०	
जमोरा मुक्तांजन	॥	कल्याण तेल	॥
खड्गबिंदु तेल	॥	कान पकना	॥
अयना मृत लोह	॥	कानका मसा	३४१
जागार्जुनी शलाका	॥	कानमें बहारकी चोज	॥
मात गी वती	३३९	कानमें नाद	॥

वाघिय'-वहेगपन	,	गभ' रहेनेका तात्कालिक लक्षण नियम	२२
विल्ल तेल	,,	गभि'णोका स्थिति	,,
वाघिय' हर मिश्रण	३४२	आहार विहार	,,
कृमि घण'	,,	गभ'छाव-गभ'पात	३५४
कृमि घर्णारि तेल	,,	गभ'पाल रस	३५५
कानमे ग्रन्थी	३४३	गभे'न्दु शेखर	,,
कृमिमृत तेल	,	गभ' चिंतामणी वृद्धत	,,
कण'रोग हरी वटी	,,	प्रयोग १ से ८	३५६
स्त्रीयाँके रोग ३४४		शुष्कगभ' नागोदर छोट ३५७	
मष्टात'व-अत्यात'व अनात'व		शुष्कगभ'के पल्लवित करनेका उपाय	३५७
कष्टात'व पोडितात'व	३४५	छोट निषादनको उपाय	३५८
एलियादो गोळी	३४६	सूतिका प्रसूता सुवावडोकी मावणत	३५९
अक्रतु बरी वटी	,,	प्रसव-प्रसूति-सुवावडके लिये	३५९
प्रयोग १ से ४	,,	प्रारंभिक व्यवस्था	
रक्तप्रदर-अत्यात'व(लोहीवा) ३४७		सुख प्रसव	३६१
रक्तम्राव हरी वटी	३४७	पंढरिया यत्र	,,
बोल पर्यटो	,,	बीषा यत्र	,,
प्रयोग १ से ५	३४८	सुख प्रसव चूर्ण	३६२
श्वेतप्रदर सोमरोग		सुख प्रसव लेप	,,
प्रदरांतक छोट	३४९	सुख प्रसव अजन	,,
प्रदगरि छोट	,,	प्रसव व्यवस्था	,,
बायोछारिष्ट	३५०	बच्चेकी समाल	३६५
सोमश्रीवन रस	,,	प्रसूता-सूतिका-सुवावडोके रोग	३६६
सुनानी जुलाव	३५१	देवदारवादि क्वाथ	३६६
प्रयोग १ से ८	,,	सूतिका मिश्रण १ से ३	३६७
सपगं छेडा रोग	,,	सूतिका रोगानक	,,
रजस्वला नियम	३५२	श्रंफलादि बत्रीसु काटल-पाक	,,
कैसी छका अंग नहि करना	,,	शुंठयादि बत्रीसु काटल	३६८
गर्भधानत्र नियम	,,	सौभाग्य शुठो अवलेह	,,
गर्भाग्न	३५३	सूतिका धिनोद रस	,,

अतापलंकेश्वर	३६९	सूजन से बंध्यत्व	३७६
सुतिका वस्त्रम रस	,,	शरदीसे बध्यत्व	,,
सुतिका भूषण रस	,,	गुह्य भागमे गरमीसे बध्यत्व	,,
अपरा पातन धूप	,,	भूत प्रेतका उपद्रवसे या	,,
अपरा पातन लेप	,,	हिंसीके अभिचारसे बंध्यत्व	,,
मूढगर्भ	३७०	संतान नहि होमेका अन्य ७ कारण ,,	
टेढा-वक्र		पुत्रा प्रद रस	३७७
कुच्छ प्रसव		गर्भ धारण चूर्ण	३७८
योनिरोग जननेन्द्रिय रोग ३७२		गर्भधारीणी वटी	,,
बात प्रधान योनी रोग	,,	गर्भप्रदा वटी	,,
पित्तप्रधान योनि रोग	,,	लक्ष्मणा ठोह	,,
पित्त ज योनि रोग	,,	सोम घृत	,,
कफप्रधान योनी रोग	,,	सो और पुरुषके ऋतु और वीर्यमें	
कफ ज योनी रोग	,,	संतान नहि होनेकी पहिचान ३७९	
योनीकण्डु-छुजली	३७३	नाल परिवर्तन पुत्रीका पुत्र हो ,,	
हृयमारोदि तेल	,,	काकज घा प्रयोग	,,
योनिनाह मलम	,,	गर्भ प्रतिबंध	३८०
योनि शूल	,,	गर्भ निग्रह चूर्ण	,,
योनिम अशं मधु	,,	गर्भ निग्रह मलम	,,
यो निभ्रश-बहार आना	,,	सामान्य प्रयोग १ से ६	,,
योनि शोथ	,,	स्तनपाक	,,
योनी स्त्राव	३७४	स्तन शोथ सूजन	३८१
योनि शैथिल्य	,,	स्तनकी शिथिलता	,,
सकोचनी सेगठी	,,	कटकारी मलम	,,
दुह्यारोगेश्वरी वटी	,,	कुष्ठादि मलम	,,
फलघृत	,,	श्रीपणी तेल	,,
वध्याश्व-वाक्षपन	,,	लोघ्रादि तेल	,,
अंतुम बंध्यत्व	३७५	घचादि तेल	,,
वीर्य (रतवा) से बंध्यत्व	,,	स्त्रीके दूध धावणका विकार	,,
चरम दृढनेसे बंध्यत्व	,,	दुग्ध बर्धन चूर्ण	३८२

स्तन्य सुधा रस	३८१	नामिका क्षोथ	११
सौंदर्य वर्धक	११	निशादि तेल	११
कालिप्रद तेल	११	गुदाका पाक	११
सौंदर्य वर्धन लेप	११	गुदाका मण	११
शरीरको सुगंधी करना	११	दात आते समयके रोग	३९०
नर मोहन लेप	११	दंतोच्चेद गदांतक वटी	११
सुख सुगंध कर चुर्ण	११	मसुरिका ओरी-मछण्डा	११
शरीर सुगंध लेप	११	मसुरि शीतला रक्षक वटी	३९१
सर्वरोगदातक वटी	३८३	शीतला सीली माता निकलना	
प्रदरांतक रस	११	शीतला स्तोत्र	३९२
प्रमदानद रस	११	पाल कफारि वटी	३९४
स्त्री-नपुंसक-काभनाश	११	लवंगाष्टक	११
स्मरणमाद-हिस्टोरिया	३८४	वडीखांसी-कुक्कीया खांसी	
मुकटेधरो वटि	३८४	उटाटियुं	३९५
सिंहनाद गुगल	११	पालकासहरी वटी	३९५
अश्वगंधारिष्ठ	११	बालसप्त मद्र चुर्ण	११
सूत श्रेखर	३८५	वच्चेका आरोग्य रखनेवाली औषध	
बाल रोग वच्चेका रोग	११	पालारोग्य वटी	११
प्रहवाधा	३८७	बालागोळी	११
सर्व प्रह हर धूप	३८८	बालार्क	३९६
सप्तच्छादादि	११	बाल पौष्टिक सेगठी	११
अष्टम गल घृत	११	बाल पौष्टिक अवलेह	११
तृपा प्यास	११	सत्रीषधि स्नान	११
गला पलना ताल कंटक	११	सुद रोग-छोटे प्रकीर्ण रोग	
बालारोग्य वटि	३८८		३९६
गन्धोथ हरी वटी	११	अमिदग्ध	
बाल विस्पर्ण	३८९	अमिदग्ध शामक मरुम	३९७
रास्नादि लेप	११	शस्त्राघात	३९८
बाल विस्पर्ण हर क्वाथ	११	शस्त्राघात रोपण तेल	११

निद्रामें मिश्रा हो जाना	३९८	विष वज्रागत रस	४०७
मूत्राकुश रस	३९९	मृत्यु पाशच्छेदी घृत	॥
अग्निद्रा	॥	सर्पविषहर कवाथ	॥
निद्रा वर्धन रस	॥	अरिष्ट योग	॥
निद्रा प्रद हिम	॥	सर्प विषके साद प्रयोग १ से १० ४६८	॥
अतिनिद्रा	४००	सिद्ध धूप	॥
निद्रा नाशन रस	॥	विछूका दंश-वृश्चिक दंश	॥
निद्रारि कवाथ	॥	सामान्य प्रयोग १ से १०	॥
अफीमका व्यसन छुडाना	॥	विल्लीका काटना करड	४०९
अफीम हरी घटो	॥	गरन शन रस	४१०
हाथ पाँवमें खीली नीकलना		अफीम विष	॥
हाथ पाँवको व्या फटना-पाँददारी	४०१	घतुराका विष	॥
शैषण मलम	४०१	वछनागका विष	॥
हिंगुलादि मलम	॥	शस्त्रिया विष (सोमल)	४११
मसा मस	॥	मूषक (जुवा) मारनेकी दवा रेट (१०)	॥
सौ घवादि घर्षण	॥	हृदयबन्ध रोग(हार्टफेल्योर)४१२	॥
टंघणादि घर्षण	॥	हृदयामृत योग १ से ६	४१३
कास्वकी बाबलाइ	४०२	भस्म पिष्टि मकरणम्	४१४
अंशुघात ल लागवी	॥	अकीक भस्म पिष्टि	॥
हिमाद्रि रस	॥	अभ्रक भस्म निर्वद्र	॥
शुद्ध श-	॥	अभ्रक भस्म १०० पुटित	॥
आमणनिकलना-	॥	अभ्रक भस्म १००० सहस्र पुटित	४१५
चाँनी घृत	॥	अभ्रक सत्व भस्म	४१६
शुद्ध श सामक मलम	४०३	कान्त पाषाण भस्म	४१७
यत्नी लगना दुर्जल अन्य रोग	॥	कान्त लोह भस्म १०० पुटित	४१८
अल मरण	॥	कान्त लोह भस्म	४१९
विष मकरण	४०५	कासीस भस्म	॥
सर्प व-शोप काटना	४०५	कासीस गोदंती भस्म	४२०
जुल कीजानेवाली सारवार	॥	कुक्कुटांडावक भस्म	॥
पीप (अमृत्य) पत्र प्रयोग	॥	काश्य भस्म	॥
गः वृक्ष अथवा गरुडगच्छ वृक्षका प्रयोग			

स्वर्पर भस्म	४२१	रजत भस्म (रौप्य भस्म)	४३८
गोदती भस्म	"	लोह भस्म	४३९
गोमेद भस्म	४२२	लोहाभ्र भस्म	"
चतुर्षग भस्म	"	वराटिका भस्म	४४०
जहर मोहरा पिष्टि	४२३	वज्र भस्म (होरा भस्म)	"
जहर मोहरा भस्म	"	गैकात भस्म	४४१
ताम्र भस्म	"	गैह्वर ^१ पिष्टि भस्म	"
तुल्य भस्म	४२४	शुक्ति भस्म	४४२
त्रिषंग भस्म	४२५	शस्त्र भस्म	"
तृणकांतमणि पिष्टि भस्म कहरवा	"	शुग भस्म	४४३
नाग भस्म	४२६	सप्तरत्न भस्म (नवरत्न)	"
नीलम्र पिष्टि भस्म	"	नवरत्न पीष्टी	४४४
पन्ना पिष्टि भस्म	४२८	सुवर्ण ^१ भस्म १	"
पित्तल भस्म	४२९	सुवर्ण ^१ भस्म २	४४५
पोखराज पिष्टि	"	स्वर्ण ^१ माक्षिक	"
पोखराज भस्म	४३०	संगे यशव भस्म	४४६
पंचलोह भस्म	"	स्फटिक मणि भस्म	"
प्रवाल पिष्टि चंद्रपुष्टि	४३१	हरताल भस्म	४४७
प्रवाल भस्म	४३२	हिंगुल भस्म	४४८
संग भस्म	"	रसायन-वाजीकरण ^१	४४९
मयूर पिच्छ भस्म	"	वाजीकरणका अर्थ	४५०
मल्ल भस्म	४३३	नपुंसकत्वका कारण	"
माणिक्य पिष्टि भस्म	"	ब्रह्माभवास्था कैसे आति है ?	४५२
माक्षिक सत्व भस्म	४३४	कुटि प्रवेशिका	४५५
मुक्ता पिष्टि	४३५	कुटि प्रवेशके पहिले और पिछेके नियम	"
मुक्ता भस्म	"	नीलकंठ रत्न	४५६
मुक्ता शुक्ति पिष्टि भस्म	"	पूर्णन्दु वटो	"
महर भस्म	४३६	महालक्ष्मी विलास	"
मृगशृंग भस्म	४३७		"
यशद भस्म	"		"

अहिफेनादि वटी	७६	उपदश कृठार	१५८
आ		उपदश हर मलम	१५९
आगळी	१७९	उपदश हर मिश्रण	१५९
आनदभौरव	२३	उपदश हरी वटी	१५८
आभा गुगळ	२६४	उपदश हुका	१३१
आमलाकादि योग	१०६	उपदश भारि रस	१२७
आमलादि योग	१०९	" "	लेप १२७
आमवातहर मिश्रण	१४६	उशीरासव	३२
आमवातारि रस	१४३	उष्ट्रास्थि प्रयोग	११९
आमवातेश्वर रस	१४३	उष्णता हर चूर्ण	२९१
आया हुआ मुख अच्छा करना	१६१	उष्णता हर मिश्रण	२९१
आरोग्य वर्धनी चूर्ण	२४२	ऊर्ध्वश्वासारि रस	८९
" " गुटिका नं १	१४५	ए	
" " गुटिका नं २	१४४	एकागवीर	१६२
" " मिश्रण	१०१	एलादि गुटिका	३४८
आक्षेप हर मिश्रण	१४१	एलादि धर्षण	२५
इ		एलादि चूर्ण	१०५ १०९
इच्छामेदी	२२३	एलादि योग	१०६ १०९
इच्छामेदी	२४१	एलीयादि लेप	१७२
इन्दुवटी	३१०	एलीयादि वटी	२४० ३४६
उ		ओ	
उदर रोगहर चूर्ण	२३२	ओष्ठरोपण मलम	९६
उदरारि रस	२२६	ओष्ठवाचिहर तेल	"
उदावताशनि रस	२३६	ओष्ठव्यादि हर मलम	९६
उन्माद गजाकुश	११८	फ	
उन्माद शामक चूर्ण	"	फच्छु राक्षस तेल	१६९
" " मिश्रण	"	फंटलाकेश रस	१९३
उन्माद हर वनाथ	११८	फंटकारी मलम	३८१
उन्माद हर धुनी	११९	फफज्वर हर चूर्ण	८
उन्माद हर मिश्रण	११८	फफ शिरोरोग प्रयोग	२०९
" हरी वटी	११८	फपवातारि रस	१२८

कमल बीजादि प्रयोग	१०६	कासीसादि घर्षण	॥
करंजादि चूर्ण	३६	कांस्य भरम	४२०
कर्ण पाकके प्रयोग	३४०	किन्नर कंठ रस	८६
कर्णरोग हरी वटी	३४३	किशोर गुणक	१५४
कर्ण क्षल के प्रयोग	३४०	कीट मर्द	५३
कर्णाघृत तेल	३४३	कुकुमादि तेल	२००
कपूर पुष्पाजन	३२३	कुकुटाढत्वक भरम	४२०
कपूर रस	२४	कुटजावलेह	२४
कपूरसुधरी	२३	कुष्ठकृतांत रस	१६८
कपूरादि वटी	१०९	कुष्ठर छेप	१६९
कपूरादि घाम	२१७	कुष्ठादि गह्व	९५
कफोदरारि मिश्रण	२२३	कुष्ठादि चूर्ण	९९-११८
कफोदरारि वटी	२२३	कुष्ठादि मंजन	९३
कलशांजन	३३५	कुष्ठादि मलम	३८१
कल्याण घृत	८५-११९	कुष्ठादि योग	११०
कल्याण तेल	३४०	कुष्ठादि छेप	१७१
कल्याण भैरव रस	८५	कुष्ठारि रस	२०८
कस्तूरी भैरव रस वृद्ध	११	कुम्भिकर्णारि तेल	२४२
कस्तुर्यादि गोळी	१५८	कुम्भिरोग प्रयोग	५२
कांकायनी गुटिका	२५८	कुम्भिशिरोग तेल	२१०
कांचनार गुणक	१९२	कुम्भि क्षिरोग प्रयोग	२०९
कांत पाषाण भरम	४१७	कुम्भि हरी वटी	५४
कांतलेह भरम	४१८-४१९	कुष्णादि चूर्ण	९९
कांतिप्रद तेल	३८२	कुष्णादि योग	११०
कामधेनु रस	३१३	कुष्णमाणिक्य रस	१५८
कामिनी विद्रावण रस	४६१	केरबा क्षार	२६१
कामेश्वर रस	४६२	केसरादि अवलेह	४६३
कालाग्नि रुद्र रस	२७५	केसरादि गोळी	१५८
कासीस भरम	४१९	कौवेरी गुटिका	२९४
कासीस गोदंती भरम	४१०	कवचाद रस वृद्ध	४२
कासीसादि मंजन	९३		

		गलकृष्ट हर मलम	१५५
		गल रोग हर तैल	८९
खदिरादि क्वाथ	१०१	गलशोषहरी वटी	३८८
खदिरादि तेल	९९	गदगनाथ रस	२६०
खजूनाशन तेल	१७३	गुगल वटी	३०९
खजूनाशन मिश्रण	१७३	गुंजागम' तेल	१५९
खप'र भस्म	४२१	गुटिकाजन	३२७
खप'रादियोग	१०६	गुहृच्छादि रसायन	४६४
खिलीके प्रयोग	४००	गुग्गमहोश्चि रस	७५
खेरसारादि गोली	७६	गुग्गुलु श क्षामक मलम	४०३
		गुल्म दावानल रस	२५९
		गुल्म कुठार रस	७
ग गाधर चूर्ण' वृद्ध	२४	गुणरोगेधरी वटी	३७४
गडमाली कंदन	१९३	गुग्गुलीवात हर मिश्रण	१३५
गडमाला हर मिश्रण	१९३	गोदंती भस्म	४२१
गंधक द्रव्य	१६४	गोधूम प्रयोग	२६१
गंधक रसायन	१६७	गोमेधमणि रिष्टी	४२२
गंधकादि मलम	१७१	" भस्म	७
गंधकादि लेप	१७२	गोक्षुरादि अवलेह	३१५
गरनाशन रस	४१०	गोक्षुरादि चूर्ण	४६३
गरुडवृक्ष प्रयोग	४०६	गोक्षुरादि योग	११२
गर्भचितामणि रस वृद्ध	३५५	ग्रंथिकादि क्वाथ	११
गर्भधारिणी वटी	३७८	ग्रन्थिवातांतक रस	१२८
गर्भधारण चूर्ण	७	ग्रहणी कपाट रस	३०
गर्भनिमह चूर्ण	३८०	ग्रहणीगजकेशरी	३०
, मलम	७	ग्रहणी हर क्वाथ	३१
गर्भपाल रस	३५६	घ	
गर्भप्रश वटी	३७८	घा रुक्ष जली	२६५
गलगड हर क्वाथ	१९४	घ	
गलगड हर तैल	१९३	चतुर्व'ग भस्म	४२२
गलगड लेप	१९३	चंदनादि क्वाथ	१०९

चंदनादि रोग	११०	त्रिधास्तंभ हर	१३०
चंदनादि लेप	२०८	ज्वरान्तक विनैचन	१८
चंदनासव	३१५	ताम्र पर्णटी	७९
चंद्रकांति गुटी	३१४	ताम्र भस्म	४२३
चंद्रकला वटी	३३	तालु रोग हर घर्षण	९५
महा चंद्रकला	३४	तिक्तादि कवाथ आमवात	१४६
चंद्रप्रभा वटी	३०८	तिक्तादिक्वाथ सर्वाज्वर	८८
चंद्रोदयावर्ति	३२१	„ चूर्ण	३४
चक्षुरक्षान्न	३३०	तुत्य भस्म	४२८
चांगेरी घृत	४०२	तुत्य हरीतकी वटी	१६०
चितामणि चतुर्मुख रस	१२४	तुत्यादि वटी	१६०
चितामणि चूर्ण	८१	तृणकान्त मणि पिष्टि (कहरदा)	४२५
चित्राकहरीतकी भवलेह	३३७	तृणा हर रस	११०
चित्रकादि वटी	२४	त्रयोदशांग शुगळ	१३०
चित्राघटा	३६७	त्रिदोष शिरोरोग प्रयोग	२०९
चोपचीन्यादि वटी	७६	त्रिनेत्र रस	१९८
छ		त्रिभग भस्म	४२५
छदिंश कर रस	१०५	त्रिभुवनकोर्ति गोळी	९
छयान्तक रस	१०५	त्रिविक्रम रस	२८९
ज		त्रिशोय'श	३६२
जलशोषण रस	२१५	त्रैलोक्य चिंतामणिरस सन्निपात उवर	१२
जलोदरारि मिश्रण	३२७	त्रैलोक्य चित्तमणि रस रसायन	४५७
जलोदरारि रस	२२६	वाजीकरण „	
जहरमोहरा पिष्टि	४२३	द	
„ भस्म	„	दंतद्रुहीकरण मंजन	९३
जातिफलादि गुटी	७५	दतमशो	९२
जात्यादि तेल	१७९	दत्तामृत गदांतक रस	३९०
„ मलम	„	दद्रु (दाद-दादर)	१७१
जालुजोथ हर कवाथ	१३०	दद्रु रसायन	१७१
„ लेप	„	दद्रु रोगागटी	१७१
जिह्वारोग हर मिश्रण	९५	दद्रु रस मिश्रण	१७१

वरदादि लेप	१७१	नाशके रोगोके प्र.	३४०
दशन सस्कार चूर्ण	९७	नाग भस्म	४२८
टरटके साधे प्रयोग	१७१	नागार्जुनी धर्ति	३२६
दासी क्वाथ	८८	नागार्जुनी बालका	३३१
दिव्य धूप	६८	नासीमगहर तेल	१४२
दुग्ध वटी	२४८	„ मलम	१८२
दुग्ध वर्धन चूर्ण	३८२	„ मिश्रण	१८२
दुरालभादि क्वाथ	२१६	नाडी प्रगतिक गुणक	१८२
दुर्जल जेता रस	२६६	नामि विरेचन	२४२
दुर्जल हर मिश्रण	२६७	नाभरोग हरी वटी	३३९
दुर्गामारि लेह (शांकर लेह)	३६	नित्यानंद रस स्त्रीपद	२७९
देवकुसुमादि पाक	३१६	निदानाशन रस	४१७
देव दावादि क्वाथ	३६६	निद्रावर्धन रस	२९९
द्राक्षादि क्वाथ	६	निद्राप्रद क्षीम	३९९
द्राक्षादि योग	१०९	निद्राविषय	४१०
ध		निद्रादि योग	१००
		निर्गुंडी आदि गंडूष	९५
		निशादि चूर्ण	१७६
		निशारसायन	१६५
		नीलकण्ठ रस	४१६
		नीलम पिष्टि	४२६
		नीलम भस्म	४२७
		नेत्ररोगके प्रयोग	२७९
न		नेत्ररोगके प्रयोग	३३१
		नेत्ररोग हर मिश्रण	३३२
		प	
		पंचलेह भस्म	४३०
नयन चक्षुलेह		पंचामृत पर्वटी (र. त.)	२७
		„ (औ. र.)	२८
		पंचामृत लेह गुणक	२०६
		पंचामृत लेह गुणक	२०६
नयनामृत लेह	३२१		
नयनामृतांजन	३३३		
नयनामृतांजन	३३६		
नय मोहन लेप	३८२		
नवकार्षिक गुणक	१८६		
नवरत्न पिष्टि	४४४		
„ भस्म	४४४		
नवायस लेह	५७		

पंदरिया यंत्र	३६२	पुण'चंद्रोदय अनुपान चूर्ण	४५९
पन्नापिष्टी	४२१	पुण'चंद्रोदय षट्पुण गंधक जारित	४५९
पन्ना भस्म	४२८	पुण'चंद्रोदय अनुपान मिश्रण गोली	४६०
पलाशबीजादि मंजन	५४	पूणेन्द्र वटी	४५६
पलाशमूलार्क	३३२	पोम्पराज पिष्टि	४२९
पलाश बीजादि चूर्ण	५४	पोम्पराज भस्म	४३०
पलाशादिकथाय	११७	पौष्टिक आधो	३१६
पलाशादि क्वाथ	२१५	प्रतापल'केश्वर रस	३६९
पक्षाघातारि रस	१३३	प्रदर प्रमेहके प्रयोग	३५७
पांडु कामलाके प्रयोग	५८	प्रदरारि ठोह	३४९
पाठादि लेप	७८७	प्रदरांतक रस	३८२
पामा वियचिक्का खुजली	१७५	प्रदरांतक ठोह	३४९
पामाडर मलम	॥	प्रमाकर वटी	१९८
पाषाण वज्र रस	२८९	प्रमदानंद रस	३८३
पित्ताग्नि रस	६	प्रमेह कुलांतक वटी	३१३
पित्तशिरोरोग प्रयोग	२०९	प्रमेहके प्रयोग	४०-३१६
पित्तोदरारि गुटी	२२२	प्रमेहारि वटी	३०८
पित्तल भस्म	४२९	प्रवाल पिष्टि	४३१
पीनस हर नस्य	३३७	प्रवाल भस्म	४३३
पीनस हर घूप	३३८	प्राचेतस चूर्ण	२८१
पीनस हर मिश्रण	३३८	प्रवालादि मिश्रण रक्तपित्त	६२
पीपल (अश्वत्थ) प्रयोग सर्प विष	४०४	प्रवालादि मिश्रण गलरोग	८८
पुत्रप्रद रस	३७७	प्रवालादि मिश्रण मुखरोग	९९
पुनन'वादि क्वाथ	१४७	प्रवालादि मिश्रण मदात्यय	११५
पुनन'वादि चूर्ण	४६३	प्लीहादि रस	२५०
पुनन'वा म'हर	५७	प्लीहाण'स रस	२५०
पुष्य धन्वा वृहत	४६१	प्लीहाहर चूर्ण	२२२
पुष्य धन्वा लघु	३१६	प्लीहाहर मिश्रण	२५१
पुष्पांजन	॥	प्लेग की गांठका प्रयोग	२१९
पूगी फलादि योग	१०६		
पूण'चंद्रोदय द्विपुण गंधक जारित	४५८		

फ	ब्राह्मो घृत	११९
फलघृत	३७४	११९
फलवर्ति	२३६	२८६
फुलाका उपाय	३५-३१७	१८६
य		
वग भरम	४३२	११
व'गेश्वर वृद्ध	३०९-४६२	११
व'गेश्वर लघु	३०९	१८५
वहिरादि योग दाह	१०९	११
वस्य गुदादरारि घृत	२१४	१८५
ववासीर के उपाय	३६	२६५
वहुमूत्रातक रस	३२३	११
वाधिय' हर मिश्रण	३४२	१६४
वाल कफारि वटी	७७-३९४	२६५
वालपौष्टिक अवलेह	३९६	३०८
वाल पौष्टिक सोगठी	३९६	३३४
वाल वीसप' हर ववाञ्च	३८९	११७
वालानोकी	३९५	१४८
वालारोग्य वटी	३८८	११
वालार्क रस	३९६	४६१
वाहुशोषहर ववाञ्च	१३४	१०५
॥ ॥ मिश्रण	॥	॥
॥ ॥ तेल	॥	॥
विंदु घृत	१२५	४३६
विल्व तेल	३८१	५७
वीजपुर योग	१००	४२३
चोल पर्पटी	रक्त पित्त ६२	११५
॥ ॥	प्रदर प्रमेह ३४७	५८
चन्न नाशन रस	२६९	३१४
॥ हर मलम	॥	७५
॥ ॥ मिश्रण	॥	२०२
	मन्मं'याम्न रस	
	भकोत्तरीय रस (चूण')	
	भगंदर मलम	
	भगंदर शोधन	
	भगंदर हर लेप	
	भगदरारि तेल	
	भगदरारि मिश्रण	
	भगदरारि रस	
	भगनशांति लेप	
	भगनसंधान लेप	
	भगत हर कवाप	
	भगतारोग्य तेल	
	॥ ॥ मिश्रण	
	भीमपराक्रम रस	
	भुजंग वसांजन	
	भूतभैरव रस	
	॥ रस महा	
	॥ रस लघु	
	भोगपुरक्षी वटी	
	अमरीगृह योग	
	महर भरम	
	महर वटक	
	मदन कामदेव रस	
	मद्यमजी रस	
	मधुपञ्जुर	
	मधुमेहारि चूण'	
	मधुयष्ट्यादि गुटी	
	मधुविरेचन चूर्ण'	
	मन्मं'याम्न रस	

मम्यासंभारि मिश्रण	१३१	महावर्षतकृष्णमाकर रस	३१४
ममोरा सुवर्जजन	३३१	महासौंख्यारि तेल	२८६
मयूर पिच्छ मसम	४३२	माणिक्य पिष्टी	४३३
मरोचादि वटी	३३८	माणिक्य मसम	४३४
मलशोधनी वटी	२३२	मात गो वती	३३२
मल्ल मसम	४३३	माळती कुसुमाकर रस	३१४
मस्तक ग्रन्थो हर प्रयोग	२१५	माक्षिक सत्व मसम	४३४
मस्तक पुष्टि मिश्रण	२१८	माक्षिक मसम	॥
॥ ॥ चूर्ण	२१९	माक्षिकाजन	३३४
मस्तक पुष्टि वटी	२१८	मुकुटेश्वरी वटी	३८४
मसूरी शोतका रसक वटी	३९१	मुक्ता कलर	२१८
मस्तक्यादि चूर्ण	३१३	मुक्तादि अंजन	३२१
मस्तक्यादि वटी	३१०	मुक्तादि मिश्रण	९६
महा चंदनादि तेल	४६४	मुक्ता प चामृत	२१९
महा चंद्रका जग	३३	मुक्ता पिष्टी	४३५
॥ ॥ रक्तप्राव कपूरबुक्	६०	मुक्तामसम	४३५
महाज्वराकुंश	२०	मुक्तामसम	७६
महानारायण तेल	१२५	मुक्ताशुक्तिपिष्टि	४३५
महाप्राटी वृहत	३१४	मुक्ता शुक्ति मसम	४३६
महाभुजजन कण	३३०	मुक्ता सुगंधकर चूर्ण	३८२
महामौलादि गवाय	१५५	मुखपाकहर कवाय	९७
महाश्वत्युंजय लेह	२५१	मुख पाकहर मिश्रण	९७
महायोगराज गुणक	१२२	मुखरोग हर गद्वप	९७
महाराजमृगांक रस	७७	मुखरोगहर घणैण	९७
महारास्तारि कवाय	१४३	मुखरोगहर घृत	॥
॥ ॥	१२४	मुखरोग हर लवण	॥
महालक्ष्मी विलास रस	४२६	मुख सौगंध वटी	३८
महालाक्षादि गुणक	२६२	मुख सौगंध वटी	९८
महालाक्षादि तेल ज्वर	२१	मुगल्यादि योग	९९
महालाक्षादि तेल क्षय	७१	मुस्तादि कवाय	१४९
महालोचनाय रस	२५६	मुस्तादि चूर्ण	५२

मूच्छान्तक रस	११२	रजत भस्म (रौप्य भस्म)	४३८
मूच्छानाशन घृत	१११	रत्नकला चूर्ण	३१
मूच्छांहर भंजन	११२	रत्न पर्पटी	३१९
मूत्रकृच्छ्रातक रस वृहत	२९४	रसराज रस	६६
मूत्रकृच्छ्रातक रस लघु	११	रसादि मलम	१७५
मूत्रकृच्छ्रारि रस	२९४	रसोन्नदादि गङ्गष	९५
मूत्रवित्र रोग हर रस	३०१	रसाक्षादि गुटिका	९९
मूत्रातिचार हरी वटी	२९९	रसांज्ञानहर घर्षण	१३५
मूत्राधानारि रस	२९४	रसेन्द्र गुटिका	७४
मूत्राशय रोगांतक रस	२९८	रसेन वटी आमवात	१४३
मूत्राकुश रस	३९९	रसेन वटी मंदामि	४७
मुनीआइ	२६२	रसेनादि तेल	२२९
मृगशृंग भस्म	४३७	राजमशी भंजन	९४
मृत्युपाशच्छेदी रस	४०७	राजमृगंक लघु	६८
मेघनाद रस	२४१	रामबाण रस	१०४
मेघरवा युनानी चाटण	४६१	रालादि योग	११२
य		रास्नादि घृत	१३५
यकृतप्लीहारि छेद मं १	२५५	रास्नादि योग	११२
य		रास्नादि योग	११२
यमद भस्म	४३७	रास्नादि लेप	३८९
युन नी ववाथ	३२८	रक्ष लानेका मलम	१७९
युनानी जुलाव	३५१	रुद्रयादि कवाथ	३२३
र		रोपण मलम	१८१
रक्तपित्तके उपाय	६२	रोपण मलम	४०१
रक्तपित्तशमनावलेह	६३	रोहीतक घृत	२५६
रक्तपित्ताकुश रस	६१	रोहीतकादि चूर्ण	२५५
रक्तनेहांतक रस	३११	रोहीतकारिष्ट	२५१
रक्तनादाशन रस	१५३	रोहीतकावलेह	२५१
रक्तभन रस	६१	रौप्य गुटी	१०९
रक्तप्राव हर पांड	६१	रौप्य भस्म (रजत भस्म)	४३८
रक्तप्राव हरी वटी	३४७		

ल

लघु योगराज गुणक	१२३
लघुगोविंद वटी	७७
लघुगोविंद	३९४
लघुगोविंद	४४
लघुगोविंद	१३६
लघुगोविंद वटी ब्रह्मदेव	२०७
लघुगोविंद वटी	४७

(रत्नान वटी-ब्रह्मदेववटी.)

लक्ष्मणा लोह	३७८
लक्ष्मी विद्या लोह	२०७
ललाट चूर्ण	२६
लोम पोचलो	३२७
लोमोदरि लोह	३८१
लोह खडयोग	११०
लोह पपटी	२८
लोह मर्म	४३९
लोह रसायन-पांडु	५७
लोह रसायन मेदशुद्धि	२७०
लोहान्न मर्म	४३९

घ.

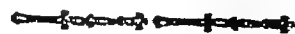
वचादि चूर्ण	११८
वचादि रसायन	४६४
वज्र मर्म (हीरा मर्म)	४४०
वज्र रसायन	१९०
वज्रादि तेल	३८१
वर्धनके उपाय ७	३७१
वराटिका मर्म	४४०
वाल्मीक हर तेल	१९५
वाल्मीक हर मिश्रण	१९५
वाल्मीक हर लेप	१९५

यसंत कुमुदाकर महा	३११
यसंतकुमुदाकर	३१२
यसंत तिलक रस	३१०
यसोकर मोहन	४६४
यसंत चिंतामणी बृहत्	१२४
यसंत भास्कर रस	१४१
यसंतके उपाय	१५१
यसंत रक्षाक्ष रस	१५२
यसंत राक्षस रस	१०६
यसंत विधाक्ष रस	१२४
यसंत हर जुषा	१२१
यसंत शिरोरोग मिश्रण	२०८
यसोदरारि गुटी	२२१
यसोदरी वटी	४६३
यसोदरी चोम	११०
यसोदरी गुटिका	९९
यसोदरी कवाय	८१
यसोदरी फांट	३३२
यसोदरीलेह	७०
यसोदरीलेह	३३७
यसोदरीलेह नस्य	३३७
यसोदरी हर धूप	१९१
यसोदरी हर मिश्रण	१९०
यसोदरी हर लेप	१९१
यसोदरी वटी	१९०
यसोदरी नाशन कवाय	१९०
यसोदरी मिश्रण	३२१
यसोदरी चूर्ण	२४२
यसोदरी हरण	८
यसोदरीलेह वटी शूल	२५१

विषतिदुकादि षटी उदावर्त	२३६	सांख्यटी वृहत	४३
विषमज्जर हर चूर्ण	८	शठयादि क्वाथ	१४
विषमवज्जवात रस	४०७	शताव्यादि चूर्ण	३१४
विषोदरारि मिश्रण	२२३	शरीर सुगंध लेप	३८२
विषूचो कालांतक रस	५०	शस्त्राघात रोपण तैल	३९८
विषूची विजय रस	॥	शांकर छेद भस्म (दुर्नामरिछेद)	३६
विस्फोटक हर प्रयोग	१६०	शिरः श्लामिवज्ज रस	२१०
, हर घृणी	१६१	शिरोमह हर क्वाथ	१३४
विस्फोटोद्गुश वटी	१६०	शिरोमह हर मिश्रण	११४
घोषर्षहर क्वाथ	४०७	शिरो यस्ति	२०७
वृद्धिनाशन मलम	२८६	शिरो रज्जुघात हर प्रयोग	२१३
, पाचिका वटी	२८४	शिरोरोगहर भवकेह	२०५
, हरिवटी	२८६	शिरोरोग हरी वटी	२०५
वृश्चिक विषहर प्रयोग	१०-४०८	शिरोरोग हर मिश्रण	२०८
वैत्तकांत भस्म	४४१	शिरोरोगहरी वटी (मस्तकावरणदाह)	२१६
वैद्ययं पिष्टि	॥	शिलाजलु प्रयोग	७७
, भस्म	४४१	शिलादि मंजन	९१
मण पकानेका लेप	१७९	शीतपित्त क्षामनी वटी	२७३
, फोडनेका लेप	१७८	शीतपित्तहर क्वाथ	२७३
मण फोडनेका मलम	॥	शीतपित्त हर मिश्रण	२७३
, वैठादेनेका प्रयोग	॥	शुक्ति भस्म	४४२
, मार्तण्ड रस	१८१	शुकमातृका वटी	३११
, रोपण मलम	॥	शुठयादि षत्रैस्तु	३६८
, वज्र तेल	१८०	शुठयादि क्वाथ	६
व्रणसे विगाढ निकालना	१७८	शुठयादि लेप	४९
व्रण ह* मिश्रण	१८०	शुद्धि चूर्ण	२३९
		शुष्क गर्भ (छेद)का	३५७
श		, पल्लवित करना	॥
शांकर वटी	१९८	, (छेद) निकालना	३५८
शास्त्रचूर्ण	२३१	शूलगज केसरी रस	२२८
शास्त्र भस्म	४४२		

झल गजेन्द्र तेल	२३०	सगर्भकै उपचार	३५६
झल दावानल रस	२३०	संगे यशब मरुम	४४६
झल हर चूर्ण	२३१	संप्रहणी के उपाय	३२
झूलारि क्वाथ	२३१	संधिप्रहारि खोर	१३८
झुलितक रस	२३०	” तेल	”
झृग मरुम	४४३	संधिवात हर चूर्ण	१३८
”	७०-७५	संधिवात मिश्रण	१२५
शोथ कळानल रस	२४७	संधिवात हर मिश्रण	१३८
शोथ शार्दूल तेल	२४८	संधिवातारि रस	१३७
शोथोदारि मंडुर	२४९	संधिपात भौरव रस	९
श्रीपणी तेल	३८१	समुद्रफेनादि वती	३२७
श्रीफल लवण	३३२	सप्तावृत पर्पटी	१९
श्रीफनादि बब्रीसुं	३६७	सप्तच्छदादि लेह	३००
श्लीपद गजकेशरी रस	२७९	सप्तरत्न मरुम (नवरत्न मरुम)	४०१
श्लीपदारि लेह	”	सप्तावृत लेह	३२९
श्वान विषहर क्वाथ	२८२	समशर्कर चूर्ण	४४
श्वान विषहर चूर्ण	”	सरस्वती भवलेह	८६
श्वस कालेश्वर रस	७९	सरस्वती चूर्ण	११७
श्वस कुटार रस	७९	सर्पग घो कल्प	१२०
श्वस गजसिंह रस	८०	सर्व कुष्ठहर मिश्रण	१६९
श्वसवितामणि वृद्ध	८०	सर्वप्रह हर धुप	३८८
श्विकालनरु रस	१६३	सर्वतोमद लेह	१०१
श्विकारि रस तेल	१६३	सर्वभंगला वटी	८३
श्वेतकुण्ठ हर रस	”	सर्व सोगदांतक वटी	३८३
” ” हर लेप	१६४	सर्व कंचुकी योग	१५५
” ” हरी सोणठी	१६४	सर्वविष के प्रयोग १०	४०८
” ”	”	सर्व विषहर क्वाथ	४८७
श्वेदविदु तेल-मस्तक रोग	२०६	सर्पान्जन	३३४
श्वेदविदु तेल-नेत्ररोग	३३१	सर्वेशिरोरोग हर नस्य	२०८
”	”	सर्वेश्वर पर्पटी	१८९
संकोचनी सोणठी	३३४	सर्वेषि स्नान	३९६

सारस्वतरारिष्ट	४५८	सोम घृत	३७८
सारिषादि अवलेह	३१२	सोम जीवन रस	३९०
सिन्दूर मूषग रस	४६२	सौन्दर्य वर्धन लेप	३८२
सिंदुरादि मलम उपदंष्ट	१६०	सौभाग्यशुंठी अवलेह	३६८
सिंदुरादि मलम व्रण	१८१	सौरेश्वर घृत	२८०
सिद्धनाथी कांचन पर्पटी	३०	स्कंदेश्वरी पर्पटी	१८६
सिद्ध धूप	४०८	स्तन्य सुधा रस	३८३
सिद्धयवोनी चूर्ण	१२६	स्थौल्यापक्वण तेल	२७१
सिद्धसूत रस	४६०	स्नायु जयति वटो	२७६
सिद्ध हरताल भस्म	१५४	स्नायु शूलारि रस	"
सिद्धांजन	३३३	रुकाटिकमणि भस्म	४४६
सिंहनाद गुग्गुलु	३८४	स्वर्ण भूपति रस	७८
सुख प्रसव कर भजन	३६२	स्वर्ण वसंतमालती वृहत	६८
„ प्रसव कर चूर्ण	३६२	स्वर्ण वसंत मालती नं १	६९
„ प्रसव कर लेप	३६२	स्वर्ण वसंत मालती नं २	६९
सुखान्वती वर्ति	३२६	स्वाद्विष्ट चाटण	४७
सुधानिधि रस	६२	हरिहर रस	१९८
सुधा पर्पटी	६०	हिमवद्र रस	१५९
सुप्तवातारि तेल	१३६	हिरण्यगर्भ (हेम गर्भ) पोटली	२१
सुवर्ण पर्पटी	२९	दिगाष्टक चूर्ण	४३
„	७७	दिगुलेश्वर रस	२०
सुवर्ण भस्म १	४४४	हीरा भस्म (वज्र भस्म)	४४०
„ २	४४५	हृदय बंध भय हरी गुटो	१९९
सुवर्ण माक्षिक भस्म	४४५	हृदय पुष्टि मिश्रण	"
सूत शोखर रस (स्वर्ण युक्त)	३८५	हृदय रोग हर मिश्रण	"
सूतका भूषण रस	३६९	हृदयार्णव रस	१९८
„ मिश्रण ३	३६९	क्षय	
सूतिका रोगांतक रस	३६७	क्षयोदरारि गुटि	२२४
सूतिका वल्लभ रस	३६९	क्षयरोगहर प्रयोग	७१
सूतिका विनोद रस	३६८	क्षय शशांक रस	६९
सौन्धवादि घर्षण	४०१	क्षयशिरोरोग हर प्रयोग	२०९
„ योग	१०३		



रसोद्धार तंत्र रोगानु क्रमणीका

अ

अकाल मरण	४०३
अग्निदग्ध	३१६
अग्निमाद्य	४५
अक्षुब्ध	२८४
अतिनिद्रा	३९९
अतिस्वार	३२
अंशुवृद्धि	२८४
अन तवात	२११
अतिद्रा	४००
अपस्मार मीरगी	१४७
अर्कम व्यसन छुराना	४१०
अम्लपित्त	१०१
अग्नि	१०४
अर्धविभेदक	२११
अशुघात	४०२
अक्षेरोग	३३९
अदपरी	२८८
अष्टीला	१३७
अरिषभग्न	२६४
आ	
आंतके रोग	३२१
आवासीपी	२११
आनाह	२२५
आफरा	१२६
आमवात	१४२
आक्षेप-आचकी	१४१

उ

उदररोग-पेटके दर्द	२११
उदावत	२३६
उन्माद पागलपन	११६
उपशय	१५८
उद्धतंभ	१२६
उल्टी-वमन	१०५
उद्धृवात	२९१

ओ

ओष्ठके रोग	९६
------------	----

क

कटिग्रह	१३१
कंठमाल-गंडमाल	१९२
कंपवात	१२७
कर्णरोग	३४०
कब्जी-मलाबरोध	२३८
कानके रोग	३४०
किटिम-खजू	१७३
कुष्ठ	१६६
कुमि-पेटके जन्तु	५२
केसर-विद्रधि	१८८
केलेरा विसृचिका	४८

ख

खजू-कोटभ	१७३
खाधी-कास	७३

ग

गठिका वा	१२८
गदमाला	१९२
गम प्रतिचक्षक	३००
गलगंड-	१९२

गलेके रोग-	८७	प	
शुद्ध भ-	४०२	पथरी-भदमरी	२८८
शुद्ध-	२५८	पक्षघात-	११२
अघ्नो रक्षण	१३५	पागलपन-ठन्माद	११६
ज		पांडुरोग	५६
जलप्रास-हठकवा	२८१	पाददारी-	४०१
जानवेा घा-	१२९	पानी लगन-	२६३
जिह्वा-जीमरोग-	९४	पामा खुजली-	१७५
जिह्वास्तंभ-	१३०	पेटके-उदर दर्द-	२२१
ज्वर प्रकरण-	१	प्रदर-	३४७
त		प्रमेह	३०३
तालुके रोग	९५	प्लीहा-तिल्ली	२५०
तिल्ली-प्लीहा	२५०	फ	
द		फेफड़ेके रोग-	१९६
दमाश्वास	७८	य	
दु-दाद	१७१	बही खाड़ी-	३९५
दातके रोग-	९०	बवासीर-अर्श-	३३
दाह शोष	१०८	बालरोग-	३०५
दिमागके-मस्तिष्कके रोग	२०३	बाहुशोष-	१३३
ध		बिल्लीका काटना-	४०९
धनुर्श	१३९	बीछुका दाँश-	४०८
म		प्रघ्न-बदगाँठ-	२६८
नजला-अदित-	१४५	भ	
नाकके नासारोग-	३३६	भगंदर-	१८४
नागोदर-	३९८	भस्मपिष्टि प्रकरण-	४१४
नारु-स्नायु-	२७६	म	
नासारोग-नाकके	३३६	मंदाग्नि-	४५
नासुर नाडीप्रण-	१८२	मयसे दद' (मदात्मय)	११४
निद्रामूत्र-	३९८	मन्यास्तंभ-	१३१
नेत्ररोग	३२१	मसा-मस-	४०१

मसूढोंके रोग-	९२	वाजोहरण-	४४९
मस्तकरोग-दिमागके	२०३	वातरक्त-	१५१
मस्तकमें ग्रन्थी	२१५	वातरोग-	१२१
मस्तकका बड़ोदर	२१६	वाल्मीक-राँकी-	१९५
मस्तकका भ्रम	२१५	विद्वि-कैसर-	१८८
मिरगी-अपहर	१४७	विष प्रकरण-	४०५
मुखरोग	८४	विशुचिका-कोटेरा	४८
मुखरोग-मुद्रपाक	८७	वीसर्प-रतना-	२७४
मुखके बहारके रोग	२००	वृद्धि-	२८४
मूर्च्छा-	१११	वृश्चिकविष-त्रिछुका-	४०८
मूढगर्भ	३७८	मण-गुमटा-	१७६
मूढमार	२६२	घा	
मूत्रच्छू-	२९१	घाँसक-	२१३
मूत्रवेग रोकनेकी अशक्तिक-	२९९	शरीरके सुगंधी रखना-	१०२
मूत्रपिंडके रोग-	३०१	शस्त्राघात-	३९८
मूत्राघात-	२९२	शिरोग्रह	१३४
मूत्राशयके रोग-	२१८	शीतपित्त-	२७३
य		शीतका-माता-	३९१
यकृत-बीवर रोग	२५३	शीतलास्तोत्र-	३९१
योनिरोग-	३७२	शुष्कगर्भ-छोड-	३५७
र		शोथ सूजन-	२४४
रक्तपित्त-रक्तसाव-	५९	शोथ दाह-	१०८
रक्तप्रदर-	३४७	श्वस-दम-	७८
रसाज्ञान-	१३४	श्वेतकुष्ठ-	१६३
रसायन-	४४९	श्वेतप्रदर-	३४७
राँबण-प्रघ्नी-	१३५	ख	
राजवदना-क्षय-	६४	सं प्रहणी-	२५
ल		स चिवात-	१३७
ककवा-	१३६	सफेद कोढ-	१६३
ख		सर्पदश-	४०५
खपन-उलटी-	१०५	सूजन शोथ-	२४४

सूतिका रोग-	३५९	हनुप्रह-	१३१-
सर्पावत-	२११	हाथ पाँवकी कपा फटना-	४०१
सोमरोग-	३४७	हाथ पाँवमें खोली-	४०१
सौंदर्यवर्धन-	३८१	हाथी पाँव-	२७९
स्तनपाक-	३०१	क्षिप्ता-हीचकी-	८२
खीभो के रोग-	३४४	हृदय बंध-	४१२
खींके दूधका विकार-	३८२	हृदयरोग-फेफड़ोंका रोग-	१९६
खो नपुंसक-	३८४		
		क्ष	
हृत्स्वा-अलत्रास-	२८१	क्षयरोग-राज्यक्षमा-	६४
हड्डी टटना-	२६४	क्षुररोग-	३९६



ग्रन्थ संकेत

इस ग्रन्थमें प्रमाण रूपमें आधारभूत स्वीकार किये हुये ग्रन्थ

भेषज्य रत्नावलि

भावप्रकाश

बृहन्निघट्ट रत्नाकर

गर्भनिप्रह

रसरत्न समुच्चय

रसेन्द्रसार लघु

शार्ङ्गधर सहिता

योग रत्नाकर

योग तरनिणी

घुग्द याधव

चमलेन

रसप्रकाश सुधाकर

रसेन्द्र चिंतामणि

रसकामधेनु

रसरत्नाकर

(नित्यनाथसिद्ध)

चरक

सुश्रुत

अष्टांग हृदय

रसरत्न सुंदर

आयुर्वेद प्रकाश

नरकदत्त

वैद्य जीवन

रसोद्धार तंत्र

प्रस्तावना

आयुर्वेद यह बड़ा विशाल शास्त्र है। प्राचीन ऋषि मुनिगणों ने अपने सैकड़ों वर्षों का आयुष्य व्यतीत कर प्रज्ञा कल्याणके लिये किया हुआ अनुभव ग्रन्थ रच कर रहे हैं। हमारे सामने आयुर्वेदकी संहिता ग्रन्थोंसे लेकर छोटे बड़े जो सैकड़ों प्राचीन ग्रन्थ हैं इनमें सैकड़ों हस्तलिखित पुस्तकोंके रूपमें ग्रन्थित हैं। इनके आधारसे अनेक ग्रन्थ प्रसिद्ध हुये हैं और अनेक अप्रसिद्ध भी हैं।

आचार्य श्री चरणतीर्थ महाराज (पूर्वाश्रम राजवैद्य जी का शास्त्री) विरचित रसोद्धार तंत्र अथवा रस संहिता यह ग्रन्थ मूल संस्कृतमें गद्य पद्यात्मक ग्रन्थ है। उसका चिकित्साखण्ड (उपचार पद्धति) गुजरातीमें २० आवृत्तियोंमें आज तक ५१००० एकावन हजार पुस्तकों प्रसिद्ध हुई हैं। आचार्य श्री के ५० सालके शास्त्रीय औषधोंके अनुभवका यह ग्रन्थ निचोड़, सत्व है। इस ग्रन्थसे हजारों वैद्य गृहस्थ, व्यापारी और प्रत्येक वर्गके प्रजाजन लाभ उठा रहे हैं। इस ग्रन्थकी माँग हिंदी अंग्रेजी मराठी भाषाभाषी प्रजाकी ओरसे कई वर्षोंसे होती रही है परन्तु छापनेकी अनुकूलता न होनेके कारण अभी तक अन्य भाषाओंमें यह ग्रन्थ प्रसिद्ध न कर सके, आज हिंदी भाषाभाषी प्रजाके सामने यह ग्रन्थ रखे हुये प्रगल्भता होती है।

इस ग्रन्थकी रचना प्रत्येक प्रजाजन, आयुर्वेदके अभ्यासी, वैद्य चिकित्सक सब कोई रोगके कारण चिन्ह निदान पथ्यापथ्य और शास्त्रीय सिद्ध औषधोंसे चिकित्सा कर सके और वैद्येतर वर्ग घरेलू उपचार सारसार सरलतासे कर सके इस प्रकारकी रचना की है। वैसे ही यह ग्रन्थ आयुर्वेदके छात्र और व्यापकोंके लिये अभ्यासक्रममें और संश्लेष प्रयोगके लिये भी परम उपयोगी है।

इस ग्रन्थमें दिये हुये शास्त्रीय औषधोंकी कृतियोंमें आचार्यश्रीके जो जो अनुभव मिला हैं तदनुसार घटक द्रव्य उनके प्रमाण और क्रियाने जो परिवर्तन किया है यह ५० सालके अनुभवका परिणाम है।

इस ग्रन्थमें हिंदी भाषामें कहीं भाषा और ग्रन्थोंके हिन्दी नाममें अपूर्णता आत्म देा इसका संशोधन कर पाठ्य और चिकित्सक इस ग्रन्थका उपयोग करे लैषी प्रार्थना हैं।

इस ग्रन्थके अनुवादकी माँग अंग्रेजी मराठी संस्कृत भादि भाषाओंमें आ रही है। भगवतीकी इच्छा और कृपासे जहाँ तक बन सके प्रसिद्ध करनेकी चेष्टा करेगे।

इसका उपयोग करनेवाले विद्वान पाठक अध्यापक अग्राही अदिके-
 लो अपना अनुभव हो, लिखेंगे तो उपकृत होंगे और दूसरी आवृत्तिमें इसका
 उपयोग हो, सकेगा ।

इस ग्रन्थको कई राज्योंने आयुर्वेदिक कालेज पाठशाला आदिमें अभ्यासक्रममें
 रखनेकी इच्छा प्रदर्शित की है उनको धन्यवाद देते हैं ।

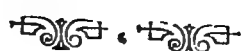
इसकी मांग अधिक होनेसे यह आवृत्ति अल्प समयमें समाप्त होनेका संभव
 है और इसका पुनर्मुद्रण तत्काल हम न कर सके यह स्वाभाविक है इस लिये
 यदि कोई पब्लिशर इस ग्रन्थको प्रसिद्ध करना चाहे तो हम उचित नियमोंसे
 सम्मति दे सकते हैं ।

गोड्डल

११-६-१९६४

रसशाला औषधाश्रम

स. २०२० ज्येष्ठ शुक्ल २



॥ रसोद्धार तंत्रं ॥

(रस संहिता)

चिकित्सा खण्डः ॥

अध्याय १

दारिद्र्यगदध्वंसो गौरीशंभू सदा बन्दे ॥

गलधृतशुण्डाहस्तानतजननीतातममरेशं ॥१॥

सकलविकाराणां यद् ज्ञेयो राजा ज्वरः रुयातः ॥

तम्माज्ज्वराधिकारं प्रथमं बध्यते हिताय वैद्यानां ॥२॥

सब रोगोमे ताप ज्वर यह रोगोमा राजा है । इसलिये ज्वराधिकार पहिले कहते हैं ।

ज्वरकी उत्पत्ति

ज्वर ताप होने पर भी यह देवकोटीका एक सत्व है । भूत, प्रेत, पिशाच यक्ष राक्षस आदि सत्त्वोंको उत्पत्ति भिन्न भिन्न प्रकारसे कही है इस प्रकार ज्वरकी उत्पत्ति बाल्मिके वर्णित है । दस प्रजापतिके यज्ञमें सती-अपने पति शंकाका अपमान देख कर जल भरी तब कोपायमान हुए वृक्षके भयंकर श्वाससे ज्वर उत्पन्न हुआ है । वह प्राणी मात्रको बध देता है । जन्मके और चेत्युके समय प्राणि मात्सके शरीरमें ज्वर अवश्य घुसता है । तापको देव और मनुष्यके सिवाय और कोई सहन कर सकता नहि । हाथी जैसा बड़ा प्राणी ज्वर भानेसे कभी नहि बच सका उसका मृत्यु होता है । कहना चाहिये कि प्रजाके लिये हि ज्वर उत्पन्न हुआ है ।

८ प्रकारके ज्वरका भेद

१ वात ज्वर । २ पित्तज्वर । ३ कफज्वर ४ वातपित्तज्वर । ५ वातकफज्वर । ६ पित्तकफज्वर । ७ त्रिदोषज्वर । ८ अभिवातादिसे हुआ ज्वर ।

१३ स्थिपात ज्वरके भेद

१ वातप्रधान पित्तहीन । २ पित्तप्रधान कफ वातहीन । ३ कफप्रधान पित्तवातहीन । ४ वात पित्तप्रधान कफहीन । ५ वातकफप्रधान पित्तहीन । ६ पित्त-कफप्रधान वायुहीन । ७ वायुप्रधान पित्तमध्यम कफहीन । ८ वातप्रधान कफमध्यम पित्तहीन । ९ पित्तप्रधान वायुमध्यम कफहीन । १० त्रिदोषप्रधान कफमध्यम वायुहीन ।

११ कफप्रधान वायुमध्यम पित्तहीन । १२ कफप्रधान पित्तमध्यम कफहीन । १३ तीन ही दोष प्रधान तीनोंका प्रकोप ।

आगन्तुक ज्वर-अभिघात चौट शस्त्राघात घात चौट प्रहार या ऐसे कारणोंसे आनेवाला ताप भिन्न माना गया है फिर भी इस ज्वरका अतर्भाव उपरके ज्वरमें होता है। अर्थात् काय^१ कारण परस्पर उपरके किसी ज्वरका रूप यह आगन्तुक ज्वर ले लेता है और उसमें एक दो तीन दोषोंका न्यूनधिक्य भावसे प्रकोप होता है ।

ताप ज्वर बुझाव

ज्वरकी उष्णता-शरीरकी उष्णता ९७- $\frac{1}{2}$ से ९९ को होती है । ९९ से १०२ तक सामान्य ताप, १०२ से १०५ तकका अधिक ताप और १०५ के उपरका भयंकर ताप माना जाता है । ९७- $\frac{1}{2}$ से घटकर ९६ को शरीरकी उष्णता हो तो यह शरीरमें अपेक्षित उष्णतासे कम मानी जाती है । और ९६ से नीचेकी गरमी यह शरीरको हानि पहुंचानेवाला शैत्य कहा जाता है । कई थर्मामीटर ऐसे भी होते हैं या कई उपचारक रखते हैं । कि वह २-३ डिग्री गरमी ज्यादा बताती है । ताकि रोगी भयविह्वल बन जाता है । और उपचार करनेवालेके आधीन होकर उपचार प्रारंभ करा देता है और १-२ दोषके पीछे बचची गरमी मापक यंत्रसे रोगीको ज्वर उतार देनेका यत्न कर घन भी प्रदग्ग करता है । वैद्य लोग तो नाड्यकी गतिसे ही तापकी उष्णता नाप लेते हैं ।

विद्वान् अनुभवों वैद्योंको ज्वर नापनेके यंत्रकी आवश्यकता नहि रहती । वह नाडी गतिसे ज्वरकी उष्णताका प्रमाण जान लेता है । और ज्वर में जिस प्रकारका दोष प्रकोप हो जानकर और रोगीको ज्वर निताजनक हो तो भी कम कह कर आश्वासन देकर चिकित्सा करता है ।

कारण चिन्ह

श्वेत बदनसे, हवा विगडनेमें, सूक्ष्म जंघुसे, उदभिज्ज श्वाभिज्ज त्रिषसे आघात, चौट, बाध, फुफ्फुस हृदय दिमागका दाह आदि कारणोंसे ज्वर ताप आता है । आहार विहारकी अनियमिततासे दूषित वात पित्त कफ दोष उदरमें आमाशयमें जाकर कोठेके अभिक्षे बाहर निकालनेकी चेष्टा करता है तब ताप आता है । शरीरकी अवरोध, देह इन्द्रियोंका और मनका सदाय इसके ज्वर कहते हैं ।

शरीर सुस्त सुका हुआ होने किसी भी वस्तु पर प्रीति न हो, सुखमुका दिखेज नने, सुखका रसद बिगड जाय, आसोखे धार्मिक काय हो, ठकी चीज

पवन या सूर्य के तापकी इच्छा और द्वेष हो, बग़ासें—जृम्भा आलस्य शरीरका भारीपन, रोमांच, खुराकर अमाव, आँखोंमें अघेरा, शीतसे शरीरका कांप इत्यादि चिन्ह ज्वर आनेके पूर्व होते हैं। वातप्रकोप जन्य बुखारमें उपरके चिन्हके साथ जमाई ज्यादा आवे। पित्तप्रकोप हो तो उपरके चिन्हों के साथ आँखोंकी जलन ज्यादा हो। कफप्रकोपमें उपरके चिन्हके अतिरिक्त अन्न पर अभव वमनकी इच्छा उत्प्लेद मोल उबका ज्यादा हो।

साधा बुखार तरुणज्वर नवज्वर

कारण—खुराक ज्यादा खानेसे, अजीर्णसे, ठंडी, सूर्यका ताप, वर्षाके कारण, जागरणसे, ठंडे पानीसे स्नान करनेसे, शरबत आइस्कीम बरफ चीवडा व'जारका खुराक वेजंटेबल घी आदि अन्निक खानेसे, नाटक सीनेमा देखनेके छदसे, निद्रा अनियमित होनेसे, धूपमें फिरनेसे, शरीर और मनका अधिक परिश्रम करनेसे, ऋतुके परिवर्तनसे बुखार आ जाता है। शरीरका दोहापन, अन्न पर अमाव, पेटमें भार, मस्तक पीडा, शरीर भारी, पौठकी पीडा, आँखोंकी जलन, नाडो गति १ मिनटमें १२० से १३० तक होना, तृषा, शीत होकर शरीर कापना, मुखशोष, इस्त पित्तवाक्यी अल्पता रुकावट आदि चिन्ह मालूम होते हैं। कभी उत्प्लेद उबकाके साथ वमन भी होता है। और रोगी बकवाद भी करता है।

ताप उतरनेके लक्षण

पसीना हो, शरीर हलका लघु लगे मुखमें पाक हो, भोष्ठका पाक, छींके आँधे, अन्न पर रुचि हो तृषा कम हो मस्तकका भारीपन मिटे कमजोरी देखे।

सामान्य शुश्रूषा

रोगीको स्वच्छ बिछानेमें स्वच्छ मकानमें साफपायी पर शयन काना रोगीके खंडमें पवनका थोडा आना जाना हो लेकिन उसके शरीर पर पवन न लगे, रोमीकी पास ज्यादा मनुष्यों वा बैठने बातेंचिते काने न देना। तृषा ज्यादा लगे तो पर्यादाई हंस पिलाना।

पर्याटी तोला १, घनिया तोला २, धालीशास तोला ४, साथ कूट पीस कर उसमें १०-४० तोला कुएँका या ताजा जल छेड कर राँग लपेटे बत'नमें या मिट्टीके कुल्लेमें भर छोडना।

तृषा लगे तो यह पानी कपडछान कर २-४ तोला पिलाना। ताप ज्यादा लगे और उष्णता १०२ से ज्यादा हो तो थोडा नमक डाला हुआ ठंडे पानीके पोटो घिर कपडालमें धरना। या नदीका सवाल कलेके बीचमें रत्न कर घिर पर

घरना। या धरतकी पैली सिर पर या पेट पर फिराना। रोगीका पेट देखना। बीजा भार हो मलमूत्रका अवरोध हो तो विश्वनाथ हरणकी गोली २ से ६ तक साहसरे देना उपर गर्मजल या चाय काफ़ी पिलाना। एक से दस्त होकर पेटका भार कम होगा शरभमे तबण ज्वरमे लघन कराना। ज़ातक रोगीका बुखार उतरे और खानेकी इच्छा न हो जब तक कुछ भी खानेको न देना।

दो दिनके पीछे भाँप वाष्प लेना। एक आधा घड़ा पानी भरकर उसमें नमके पत्ते वकाई न नीमके पत्ते कीड़ामारी लता करंज आककेपान २० बीस तोले भरकर औटाना। घड़ेक मुखपर कुछ घतन ढकना। पीछे रोगीको खुली चार पाई या खुरशोमे बैठाकर उपर कुछ कपड़ा ढाक कर घटेका मुँह खोल देना और लकड़ोंसे पानी हिलाते रहना ताकि वाष्प निकल कर रोगीके भग प्रत्यग्गमे फैलकर पधीना छूटेगा। और हाडसे ज्वर का अंश निकल जायगा। शरीरकी छोटी नसोमे रामराममे ज्वरघन कड़ो वाष्प घुस ताप अटक जायगा। यह सारे शरीरमे इन्जेक्शनका काम करेगा। रोगीको ढके हुए कपड़ेसे घमराहट हो तो बीच बीच में मुखको बाहर निकाल ते रहना लेकिन गलेक नीचे के सारे वदन में वाष्प की क्रिया होती रहे वैसे करना। १५-२० मिनीट के बाद कपड़ा अलग कर रोगीका शरीर दुवालसे पोछ कर कोरा कर डलना।

उपवास

रोगीको बुखार आते ही उसके पेटकी दशा कि जाँच करना। पेटमें चारी अजीर्ण मलमूत्रचय आदि होना चाहिये बिना पेट ब्रिगडे ताप आता ही नहीं। ताप आने ह अन्न और दूध बंद कर देना और उपवास प्रारंभ करना। यदि रोगी बुद्धिमान हो और बुखार आते ही खाना बंद कर दे तो ताप चढ़ता नहीं और रुक जाता है। वस्तुतः उसकी जीभकी परीक्षण न छोड़े ही उसके चार पायी मे पडनेका समय आता है। रोगी अपनेको भूख लगनेको कहे जब ही कुछ मुँह क पानी जैसा प्रवाहो देना। पेटमें आमांश या और बिगाड जवतक होगा उपवासमे दरदीको हानि नहीं पहुँचेगी वरना जैसे जैसे उपवास आगे बढ़ेगा ताप उतरने लगेगा और रोगी बुखियायी में आने लगेगा। कइ मूल लेग रोगीको इच्छा न होने पर और पेटमें भूख न हो फिर भी इठात खुलाक दिया करते हैं। इससे बुखार उतरने के बजाय बढ़ता है। डाक्टर लोग भी बुखार बांटेना दूध पतल खुलाक, साबुदानेकी काजी इत्यादि देनेकी सिफारिश करते हैं इससे रोगी मरण नजिक जाता है और आयुष्य बलसे ही बच जाता है। कइ रोगियों के हमने ३ से १३ दिन तक उपवास कराकर अच्छे कर दिये हैं जिन्हे

शक्तिरहित छेड़ दिये थे। रोगीके पेटकी जाँचकर आवश्यकतानुसार उपवास कराना पेट में आमका अम्ल और विगाड़ नष्ट होनेसे रोगीको भूख लगेगी। पीछे प्रवाही शुराक देना बंद ठीक होगा। बुखार निकल जाने के पछे १०-१५ दिन के बाद सब प्रकारका शुराक देना।

लघन करनेसे शरीर हल्का पड़ता है, अंधा वायु पिशाच दस्तका तुल्यता होता है, छाती का भार हलका होता है अच्छे उकार आते हैं गला और मुख स्वच्छ होता है जीभकी मलिनता दूर होती है, सुप्ती और बेचेनी मिटनी है पसीना आता है, शुराक खाने की इच्छा होती है न्हा और तृषा सुप्तो है।

क्षयका ताप भय कोष कामाघता शोक और भ्रमका ताप, सगर्भाका ताप, सूत्र की छ लगने से चढ़ा हुआ तार, सूतिकाका ज्वर जैसे ताप में लघन कराना नहीं चाहिये। हृदसे ज्वारा लघन करनेसे हानि पहुँचती है। आवश्यकतसे अधिक लघनसे साँधों के दर्द, आलस्य, खाँसी, गला और मुखका गोप अग्नि, तृषा, आँखोंकी कमजोरी, कानों में कुछ बधिरता, मंदता भ्रम आँचोंमें अवेरा और शरीर और बलकी हानि होते हैं, इसलिये बुद्धिपूर्वक आवश्यकतानुसार रोगीको लघन कराना उचित है।

बुखार के साथ वमन और अतिवहारके चिन्ह देखने में आवे तो औषधसे उसे रकना नहीं लेकिन अधोवेग कम हो जैसे उपचार करना। बुखार के रोगीको दस्त तो कबचित् हो होता है। चहुँवा दस्त बंध हो जाता है जिस लिये ताप उठारने के औषधमें बहुधा दस्त लाने वाले घटक द्रव्य होते हैं जैसे कि विश्वताप हरण आदि दिये जाते हैं। यदि वमन आदि होते हों तो पण्टादि हिम देना। पण्टा^१ जनिम, धालीद्राक्ष और जीमकी छाल समभागसे कूटकर रखना। पाँच तोला में ४० तोला पानी डाल कर मिट्टीके बरतन में रख छोड़ना बार घटाके बाद रोगीको थोड़ा थोड़ा पिलाना। रोगीको दस्त बंध हो और ज्वरका वेग अधिक हो, पेटमें मल जमा हो तो दाँसे छ गोली विश्वताप हरणकी देनेसे दस्त होकर विगाड़ निकल जाता है और बुखारका वेग कम हो जाता है। पीछे महाज्वराकुण, त्रिभुवनकौर्ति, त्रिपुरमैरव आदि महासुदर्शन चूर्ण के कवाय के साथ देने से ताप रक्त जाता है।

वातज्वर वायुका ताप

कारण—वातल पदार्थ, बाल, बटाना, चोमड़ा और गरिष्ठ पदार्थ, चीकना ठंडा रातबोसी पदार्थ, बाजाब बीठाइ आदि खानेसे और वर्षाकी ऋतु में

१ इसे गुजराती में खडसलिया पीतपापडा कहते हैं।

यह ताप आता है। शरीर में कम्प गला और होठका शीप, मलका अनरोध, शिर, पेट, कंठ और, पीठमें दरद, तापका अनियमित चढ़ना उठाना, मुखका वेस्वाद, जंसाह आना, पेटमें आफरा अजीर्ण रोमाच इत्यादि चिह्न होते हैं।

उपचार—१ से ६ गोली त्रिधुताप हरणको सुदर्शन के साथ देना और दो दिनके पीछे त्रिभुवन कीर्ति २ से ३ गोली दो वखत पानीसे देना।

शुंठरीदि कथाथ—कचूरा, हलदी, दाहहलदी येवदार, सेठ, पोंपल काली मिरच, सत्थानाशीके मूल, इलायची गिलेय, कुटकी, पर्पट, जवाभा काकडाशिगी, चिरायता और दशमूल, सब प्राय कूटकर रखना। १ से २ तोला कथाय या फांट पिलानेसे वातज्वर और दूसरे ताव ऊतरते हैं या अटकते हैं।

पित्त ज्वर गरमोका ताप

कारण खट्टे, सारे, गरम, तीखे दाह और क्षोभ करनेवाले पदार्थ खानेसे विगढ़ा हुआ पित्त जठरमें आकर खुराक में मिल रसको दूषित करता है। इससे पित्त गरमोका ताप आता है।

चिह्न—सारे बदनमें दाह, तृषा, निद्रानाश, मुख कड़वा, मूर्छा, कड़वा खटा वमन, चक्का, भ्रम, बकवाद, पतले दन्त, पसीना, मलमूत्र और आंखोंमें पीलापन, नाडीको गति १२० से १३० तक, तापको गरमी १०४ से १०५ तक दिखाई देते हैं। पीछे ताप ६-७ दिन तक सतत रहा करता है। बीचमें ४-६ घंटा वेग ज्यादा रहता है। जीभ पर काली छारी जमती है। इस तापसे दरदीया भरणशाय भय रहता है। और रोग अचछा होने के पीछे भी कई दिन कमजोर रहता है। इस तावकी अवधि ७-१० या १५ दिनकी है। बीचमें उचित चिकित्सा न होने से दिमाग, जठर, कलेजा और फेफड़ेमें सूजन होती है और रोगी बुरी दशामें पहुँच जाता है।

स्वार्धार—रोगीको स्वच्छ बिछानेमें सुलाना, हवा कमरेमें आती जाती रहे लेकिन रोगीके शरीर पर न लगे यह ध्यानमें रखना। रोगीको प्रारंभमें वमन और दस्त होता उसे मध नही करना। सिरमें दरद और जलन होता हो तो ठंडे जलके पोता रखना। शीप लगे तो पर्पटोदि द्रव्य पिल ना।

उपचार—द्राक्षादि कथाथ—द्राक्ष, हरड, मोथ कुटकी, अमलतास का गर्भ, पर्पट, सहदेवी समानभाग १ से २ तोलाका फांट कर पिलाना। त्रिभुवन कीर्ति २से ३ गोली पानीसे। महाचंद्र कला ३ से ४ गोली पानीसे।

पित्ताशनि रस (रस)—पारद, पंचक सोहागा काली मिरच, कचूरा, गिलेह, शकर, इलायची, कपूर कचली, कूडेकी छाल, रौप्य मस्य, प्रवाल पिष्टि प्रत्येक

पांच पांच ठोला, मोती पिछिंदो ठोला मिलाकर, गिलोई, काली दाल बड़ी सौंफ^१ पर्यट इन चारोंको समानभाग कूट क्वाथ कर चार भावना देकर दो रतीकी गोली बनाना अथवा घोट कर रखना । मात्रा २ से ३ गोली अथवा ४ से ६ रती बदख्का रस और सहर के साथ अथवा सो दफे स्पष्टन क्रिये हुए पुराने गुडके पानीके साथ देना । इस ज्वरमें आंखोंमें जलन हो तो महामुक्ताजन कृष्ण अथवा नयनसुषाका आंखोंमें अंजन करना ।

कफज्वर-कफका ताप (सरवीका बुखार)

कारण—गरिष्ठ चीजने पदार्थ, बाजारकी मीठाइ, मिष्टान्न अधिक खानेकी आदत, ठंडे पानीसे स्नान, दिनको सेना, रात्रिका जागण आदि कारणोंसे और खास कर वसंत ऋतुमें यह बुखार आता है ।

बिह्न—शरीर भाररूप लगे, सर्वांगोंमें दर्द हो । मीठा खटा वमन हो, सरक्लेद, आलस्य, मुखमें मीठापन दरतमें सफेद आम पड़े, भूख मंद, नोंद ज्यादा, कान और नाकमें जड़ता, चीकनाह लिये पसीना खांसी जुकाम, सिरदर्द नाकसे पानी पडना, दम चढ़ना हीचकी, स्वर बैठ जाना, इत्यादि बिह्न होते हैं ।

दस्तकी कज्जी होकर बुखार आता है साथ सर्वांगी बढ़ने लगती है और फेफड़ोंमें कफ भर जानेसे बुखार पडता है उचित चिकित्सा होने से दस्त और मुखके द्वारा कफका निकाल हो कर ताप उतरने लगता है । यदि बुखार अधिक दिन चले तो कफके कारण श्वासनलीमें अवरोध होता है, जिससे रोगी बहुत मुश्किलीसे दम ठे सकता है । फेफड़ों के अंतःपडकी सूजन होकर छातोंमें शूल निकलता है । आगे कभी दरवी देशुद्ध भी हो जाता है इस दशामें दाक्टर लोग इसे न्यूमोनिया फेफड़ोंके सूजनका बुखार कहते हैं । इस दशामें वमन और कफके साथ रोगीको यदि छुन गिरने लगे-तो दरवी बचना मुश्किल है ।

सामान्य सारवार

प्रारम्भमें सादा विरेचन औषध अथवा विश्वनाथ हरणकी २ से ६ गोली देकर दो चार दस्त होना चाहिये । रोगीको भूख न लगे जब तक कुछ भी खराक न देना । गरम कर तांबे के बर्तनमें रखा हुआ पानी थोड़ा थोड़ा देते रहना भूख लगे जब अदरख काली मिरच नमक डाली हुआ सुंगका पानी देना । बुखार उतर जाय जब थोड़ा दूध भात खीचकी आदि देना । इस बुखारमें दरवी सहन कर सके इतने दिन लक्षण कराना । दो से आठ दिन तक लक्षण

१ गुबरातीमें 'बसीमाळी' कहते हैं ।

का सकते हैं। इस कफ ज्वरमें यक्ष या सातु दानेकी कांजी देना यह न्यूमोनिया का विदोष को आमोदन देना है। छातीपर महालाक्षादि तेल या रसराज लगाकर शोक करना। कल्पतरु रस २ से ४ रती अदरक के रस अथवा तुलसी के पत्तोंके रसके साथ देना।

कफज्वर हर चूर्ण—(रस.) छोटी पीरल, पीपरीमूल, गजपीपल, सेठ, चित्रक, चैत्रक, निशुंड़ीके बीज, इलायची, अजमोद, सरसों, हिंग, भारंगी, पाठा, इन्द्रजव, जीरा, बक़ाइन नोमकी छाल, मूरा, अनीस, कुटकी, वायविक ग सब समभाग कूट कर ३ मे ४ मास देा तीन दफे गरम जलके साथ देना अथवा १ तोलेका कवाथ करके पिलाना।

विश्वताप हरण—(र त) पारद, गंधक, हरद, पीपल, आकके मूल, कुचला १ जमाल गोटेकी गोरी, कुटकी निसेथ समभाग लेकर घतूरेके पानके रसमें घोट चनेके समान गोली बनाना। २ से ३ गोली अदरक रसके साथ देना। मात्रा २ से १ गोली तक पानीसे। सब प्रकारके ताप उतरते हैं।

श्रीतज्वर-टाडिया ताड-पेलेरिया

जातु परिवर्तनसे आनेवाला ताप

कारण—शतुके परिवर्तनसे, गाढ जगल में रहनेवालोंका गदे पानीसे, भेजवाली जमीन में रहनेसे, मच्छर के उपग्रवसे उपयोग में आनेवाले पानीका निकास न होनेसे, डूनेज-भूगर्भ में बुगदा में गदकीका निकास और सफाई न होनेसे हवा बिगडनेसे सूर्यका ताप कम मिलनेसे, हवा और प्रकाश कम होनेसे, गीच बरतीगली गर्मियोंसे, कच्चे वासी, ठंडे और सड़े गये शाक बकाला खानेसे, अर्जन होनेसे, अधिक आगरण करनेसे नाटक सिनेमा आदिमे हजारों मनुष्योंके श्वासोच्छ्वास मिलनेसे यह दुखार आता है और फैलता है।

चिह्न—शरीर तूटने लगता है, जमाइ आती है, कमर फटती है। आंखे जलती हैं, ललाट और सिरमें दद होता है, तृषा लगती है, पिशाब, लाल, वमन, दस्तकी कबजो। यह दुखार ठडी लगकर या वैसे ही आता है और अमुक समय आकर उतर जाता है, फिर आता है। अगर पहिले पसीवा होकर ठडी लग कर दुखार चढता है। कई रोगीको दुखार आने के पहिले ठडीसे शरीर कांपने लगता है। सूर्यके ताप पर जानेकी इच्छा होती है। २-४ रजाइ ओढकर पीछे ठडी कम होकर ताप चढता है। कई रोगीको

१ विषतिद्वक इस गुजरातीमें शेरकोचस्य कहते हैं।

प्रथम सिर पकड़ता है, दुखता है, चेहरा लाल हो जाता है शरीरको और प्रत्येक अवयवको एवं दमानेकी इच्छा करता है । एक दिन छेड़ दूसरे दिन आता है वह एकादिक-एकांतरिण; दो दिन छेड़ तिसरे दिन आनेवाला तृतीयक तरीया, और तीन दिन छेड़ चौथे दिन आनेवाला चातुर्थिक-चौधिया ताव कहा जाता है । ये सब विषमज्वरके मेद हैं ।

विषमज्वरहर चूर्ण—(र.स) सेठ, छेटी कटहरी पुष्करमूळ, काकडाशिंगी, कुटकी, कजुरा, गिलोई आवला दाह हलदी पीपल, काली मिरच, कुलीजन, प्राय-माण, परांट, अमरचदन, धमासा, कूडेकी छाल, व शलोचन, दालचीनी अतीस, देवदार, मोय पटोल अजवायन चित्रक हाड, पीपरीमूल, नीमकी छाल प्रत्येक डार तौला, विरायता २० तौला कूटकर २ से ४ माशा पानीके साथ दे से तीन टफे देना ।

त्रिभुवन क्रीति—(र.नं) शुद्ध हिंदुल, शुद्ध बछनाग, सेठ, पीपल, काल मिरच सोहागा, पीपरीमूल, शुद्ध गैरिक समभाग से लेकर तुलसी आदु और भतूरे के पानके रसकी अंकेक भावना देकर चने के प्रमाण गोली बांधना । २ से २ गोली दो वख्त गरम पानीसे धी जाती है । सब प्रकारके ताप उतरते हैं और रुकते हैं ।

रुग्दाह संनिपात (टाइफोइड ताप)

(२१ से २८ दिनोंका ताप)

कारण—यदि बड़े हुए सागमाजी, फल खाने से, गंदे फुए के पानी से, कमरे के आसपःस मेज और मलमूत्र त्याग होते रहनेसे, वर्षाऋतु के मलिन पूर आये हुये पानी पनेसे, बरफ शायत आइसिंग अधिक खानेसे आहार, विहारकी अनियमिततासे पहिले आया हुआ सामान्य ताप इस संनिपात ज्वरमे पलट जाता है । यह ताप बहुत करके ५० सालकी उमर तक अधिकतासे आता है । युरोप जैसे ठंडे देशों में इसका उपद्रव अधिक रहता है । हिंदुस्थान जैसे गरम देशों में इसका भय कम है ।

चिह्न—यह ताप आते ही रोगी कमजोर हो जाता है । शरीरके अवयवों में और साधों में दर्द, मस्तककी पीड़ा, मदाग्नि, कम्प, ठंडी लगना, दस्त, वमन, नाडोंकी गति १२० से १४० होती, है, भूख नष्ट हो जाती है, जोम पर मल जम जाता है । ताप दिनको १०१ से १०२ तक और शामको १०४ से १०५ तक बढ़ता है । पित्ताब कम होता है, नींद कम आती है । तप्रा, नेशुद्धि में रोगी पड़ा रहता है । दस्त पतला, आंतोंकी दाहिनी बाजू में दर्द और गड़गड़ आवाज होता

है। ७ से १२ दिनमें शरीर पर गुलाबी रंगकी फुन्सिया निकल कर सुख जाती है। तीसरे सप्ताह में तापके चिह्न कम होते हुये आराम होने लगता है। इस तापमें भी रोगीको मन्निपात हो जाता है तब दात पर कांटे छांटे पड़ते हैं। होठ फटकर खून निकलना है। जेथुदि बढकर ताप जोरसे आता है। आंखकी कीकी बढी होती है। कभी नाकसे और दस्तमें खून गिरता ताप १०५ से १०७ तक बढना है। तब रोगीकी बचनेकी कम अशा रहती है। कई दफे इस तापके साथ दस्त, मरहों, दस्तमें खून, आंतों में क्षत पडना लैवर और तिल्ली बढना, फेफड़ोंकी सूजन आदि होते हैं। यदि रोगीको असाध्य चिह्न मालूम होने लगे तब तीसरी सप्ताहमें मृत्यु होना संभव है।

पथ्यापथ्य—रोगीको अच्छी हवा प्रकाश और सूर्यका ताप मिटना हो जैसे कमरे में रखना। वह रोगी के शरीर पर सीधा न पड़े यह ध्यान में रखना। बहारसे देखने अनेगलोंने रोगी के पास शोर नहीं मचाना। रोगीके पास बहार के लोगोको आने नह। देना। कपड़ा बिछाना बदलते रहना। बुखार अधिक जोर में हो तो गुलाबजल के या उंडे जलके पोत्रे सिर पर रखना। १५-२० दिनके पीछे रोगीका भूख लगे खुराक की इच्छा करे तब मुगका पानी गले हुअे भात, काफ़ी, चा आदि देना। बुखार उतर जाने के पीछे ही दूध देना। जो जो चिह्न हो उस प्रत्येक के लिये विचार कर औषधकी योजना करना। रोगीको इस रोगमें कफ ज्यादा निकलता है इसके लिये दूमरे आदमीने रोगी के मुंहसे कपड़े के टुकड़े लुछ कर कफ निकालना। और धुकदानी में इच्छे कर दूर जमीनमां गाड़ देना।

सन्निपात भैरव—(शा. म अ १२) पारद और गंधक ३-३ तोला लेकर कजली करें। ताम्र, रौप्य, अभ्रक, वग नाग और लोह प्रत्येककी भस्म एक एक तोला, सफेद वछनाग (शि गिया) २ दो तोला मिला कर पीछे शिग्रु^१ अरणि, सोंठ, बीली गम और चोलाइ प्रत्येकके रसमें एक एक दिन घोटकर गोला करना कपड़ेमें लपेट उपर कपड़ मिट्टी कर उसे नमकसे भरे हुये बरतनमें रख और उस बरतनको वालुका यंत्रमें रख ६ घंटे पकाना पीछे उसमेंसे औषध निकालकर १ तोला प्रवाल और आधा तोला शुद्ध वछनाग मिलाकर तगर मुसली जटामांशी सत्यानाशी नेतर के मूल पीपल नीली तमालपत्र इलायची, चिनामूल तुलसी सौंफ देवदारु घटूरा अगस्त्य गोरखमुह। जुड़ और मदनफल प्रत्येकके रसमें अनेक मावना लेकर तैयार करना। पैसा न हो सके तो उपर लिखी १८

औषधिको साथ कूटकर उसके पचावकी १८ भागना लेना । मात्रा २ से ३ रती अदरखके रससे देनेसे सय प्रकारके सन्निपात, न्यूमेनिया, फ्लूसी, द्विदोष ज्वर, त्रिदोष ज्वर आदि ताप उतरते हैं और अटक आते हैं । आधा तोला बीजेराका रस और एक तोला अदरखका और मरीच के १६ दाने पीस कर साथ इसकी मात्रा देनेको शांगंधर लिखता है ।

इस औषधके पाठमें शांगंधरमें आर लिखकर पित्तल भस्म डालना लिखा है । हम अनुभवसे आर को जगह अन्नक डालते हैं और इस रसको शांगंधरके मतसे कृष्णवर्णके झहरसे दो दफे भावना देना लिखा है । यह वस्तु प्राप्त करना अशक्य होनेसे हम नहीं डालते । सपविषके स्थानमें २ तोला सफेद बछनाग (शिंशिया) डालते हैं ।

हृदय कस्तूरी भैरव रस—(मै र. ११६) कस्तूरी, कपूर, ताम्र भस्म, घाईके फूल, अतिविष, रौप्य भस्म स्वर्ण भस्म, मुक्तापिष्टि, प्रवाह, ठोह भस्म, पाठा, वायविडग, मुस्ता, दोंठ, बाला, हगताल भस्म, अन्नक भस्म और आंवली सब बराबर समान लेना कस्तूरी और कपूरको छोड़कर सब वस्तु साथ मिलाकर आकके पके हुये पानके रसको भावना देकर सुख जाने पर कस्तूरी और कपूर मिलाना । यह औषध अदरख के रससे या तुलसीके रससे सब प्रकारके बुखारमें और सन्निपात ज्वरमें दिया जाता है । बिल्व गर्भका चूरा और जीरा और बाह्यके साथ देनेसे आम्रातिघार, संप्रहणी, ज्वरातिघार, मंदाग्नि, खांसी, प्रमेह जीर्ण ज्वर आदि शांत होते हैं । भैरव्यरत्नावलीमें सूक्ष्मशिम्बो लिखा है इसके स्थानमें हम अतीव डालते हैं ।

प्रस्थिकादि कषाथ—पीपलीमूल, इन्द्रजौ, देवदार, गुगल, वायविडग, मारंगी, सेठ, पीपल, कालीमिरच, चित्रक, कायफल, पुष्कमूल, रास्ना हरड, छोटी कूटहरी, अजमेद, निर्गुडीमूल, चिरायता वचा, चवक पहाडमूल सब समाना कूट १ से २ तोलामें पानी ४० तोला छोड़ चतुर्थांश रहने पर दिनमें दो दफे अकेला किंवा किसी औषधके अनुपान रूपमें पिलाना । सब प्रकारके सन्निपात न्यूमेनिया केशुदि आफरा और सुतिका रोगमें योग्य औषध के साथ या अकेला पिलाया जाता है ।

प्रलापक सन्निपात

(१४ दिनका ताप)

कारण—मेजवाली या गंदी जगहमें रहनेसे या गंदी जगहकी या गंदे बंजरमें जानेसे, गहरी बस्तीमें रहनेसे यह ताप लागू होता है और इसमें भी यह कारण और चिह्न टाइफोइडके समान देखने में आते हैं ।

चिन्ह—इस तापसे रोगी २-३ दिनमें कमजोर होता है, सिरमें सन्त रक्त ठंडी लगना, शरीरके आयवोमे दर्द, आँख लाल आँखोंसे पानी गिरना, ताप बढ़ना, आँखें मुदना, मुख खुला रखना, ऊतर न दे सकना, बधिरता, जीभ पर काळे पड़ जमे । होठ और दाँत पर काली फुन्शिया निम्न ताप को गरमी ६-७ दिनके पीछे १.५ तक बढ़े नाडीकी गति १२० तक हो, ४-६ दिनके पीछे हाथके तल्ले छाती पेट आदिमे काळे रंगकी फुन्शियाँ और दाग दिखायी दे । नाक और आँखोंसे कभी खून गिरे । इसमें वात पित्त कफ तीनों का अधिक कोप होनेसे रोगी बरबाद करता है । शरीर कपता है । दाह और बेशुद्धि बढ़ती है ।

पथ्यापथ्य—इसमें भी पथ्यापथ्य टाइफाइड तापके समान समझना ।

यह बुखार सांसर्गिक है । रोगीका उच्छिष्ट या खाँड़ हुई कोई चीज दूसरेने खाना नहीं । उसके मलमूत्र दूर फेकना । रोगीको हवा और उजारावाले कमरे में रखना । गुग्गुलु, लेवान नीमके पत्ते घी चावलको मिलाकर धूप करना कपड़े बिछाने आदि कड़े घूप में रखना ताप के साथ दस्त मुँहा खून वमन आदि जो चिह्न मलूम हो उनके पर विचार कर औषधोंका योग करना ।

ब्रह्मचर्य चिन्तामणि—(वृथात) पारद, माणिक्यपिष्टी, गंधक, मुक्ता, स्वर्ण, रौप्य ताम्र, लेह, अभ्रक, रौप्य माक्षिक, शङ्ख, प्रवाल, प्रत्येककी भस्म और हरताल, मनशील शुद्ध किया हुआ प्रत्येक एक एक तोला लेकर चित्रकके क्वाथकी ७ भावना देना । पीछे निर्गुंड़ी का क्वाथकी ७ भावना देना । पीछे निर्गुंड़ीका क्वाथ सुरणका रस सुअर का दूध और आकका दूध प्रत्येककी तीन तीन भावना देना । पीछे सब सबको पीली कोहीयेमे भर कर उसका मुँह आकके दूध और सोहागा मिला हुआ मिश्रणसे घष करना । पीछे उसे मटर्नमे भर कपल मिश्री कर गजपुट अम्ल लगाना । निकाल कर घोटकर उसमे सबका वजन जितना हो उतना रस सिंदूर डालना और रस सिंदूरसे चतुर्थांश वैकान्त भस्म डालना । पीछे इन सबको मिलाकर शिशुमूलकी छालके क्वाथ से ७ भावना देना । पीछे सूख जानेपर इसका जितना वजन हो उतना विषादि चूण डालना । और पीछे एक दिन तक बिजोरेके रसकी भावना देकर सुखाकर घोट रखना इसकी मात्रा २ से ४ रती ग्रन्थिकादि क्वाथके साथ अथवा महापुदर्शनके क्वाथसे या अदरकके रस या तुलसीके पानके रससे सब प्रकारके सन्निपात उवरने दिया जाता है ।

विषादि चूर्ण—भतोष, चिम्क, दालचीनी सोहागा, काली मिर्च हरद, आवकल, लोंग, पोपल सेंठ और शुद्ध वछनाग सब समान भाग कूट कर रखना और यह चूर्ण उपर लिखे अनुसार तैयार किये हुए रसमें समान भागसे ढालनेका है।

सूचना—इस त्रैलोक्य चितोमणि रसमें हमने अनुभवसे थोड़ा परिवर्तन इस प्रकार किया है। अज्ञ अर्थात् हीरेकी भस्मके स्थानमें साण्डिक्य पिष्टि का योग किया है। क्योंकि हीरेकी भस्म बनाना और इतने प्रमाणमें मिलाना बड़े द्रव्य व्ययका कठिन काम है, यह सबके लिये शक्य नहीं है। और शिग्रुमूलकी आवना देनेके पीछे जो रस तैयार हुवा है उस रसके बराबर विषादिचूर्ण और चतुर्थांश काला वछनाग ढालनेका पाठ है लेकिन विषादिचूर्ण के दश द्रव्य और ग्यारहवा वछनाग सब ग्यारह ही द्रव्य समान भाग लेकर कूटकर तैयार शिग्रुमूल आवनासे तैयार किये हुये रसमें यह विषादि चूर्ण समान भागमें मिलाया जाता है और पीछे सबको विजरेके रसकी भावना दी जाती है।

इस रसके प्रत्येक द्रव्यका तैल लिखनेके समय हम खीली कौड़ोका तैल लिख नहीं सके क्योंकि वह छोटी बड़ी हो सकती है। इसलिये यह औषध बनानेवाला गजपुट के पीछे वह कितने तैल में रहता है यह ध्यान में रखकर यह औषध बनाना चाहिये।

इस रसमें सनभाग सूत भस्म अर्थात् पारद भस्म ढालनेका लिखा है। लेकिन पारद भस्म अनेक किसमकी होती है। इसमें किस प्रकारकी पारद भस्म इसमें ढालना यह प्रश्न हो जानेसे हम सूत भस्म के स्थान में रस सिन्दूर ढालते हैं जो एक प्रकारकी कृपणकव रस वर्णकी रस भस्म ही है।

घातव्याघिज्वर कुमि जठर श्वालामवात शूलानि ॥
घातास्त्ररक्तपित्त क्षय कफशूल प्रमेह कुष्ठानि ॥
पांडुरतिसार ग्रहणी क्षुति भग गुदजेष्वयं प्रशस्तोऽस्ति ॥१॥
त्रैलोक्य त्रिताम्रजेतामघेयो रसो गदध्वांतविनाशनश्च ॥
नानानुपानैरुपलि प्रयुक्तः पङ्गुजमाश्रय गुणप्रदः स्यात् ॥२॥

—[*]—

सचिक सनिपात

(परिनिर्दिष्ट उवह)—पांच अश्वत्थामान श्विनका तार

कारण—दुष्काळ के समय खराब खुराक लेनेसे अथवा दुष्काळ के पीछे अधिक खुराक लेने से गन्ध आवादी से, गंदे पानीसे, पेयमें बिगाड होनेसे यह ताप आता है। साथमें सूजन के साथ पड़ा सखत होती है। कफ अधिक। खासी। नोद कम।

चिह्न—सिरका दर्द, कमर या अवयवोंमें पीड़ा, पानीका स्राव, ठंडी, शरीर कपना, कमजोरी, पीठमें दर्द, ताप सतत रहा करे, पसीना आकर बुखार चढ़े, ताप १०६ तक बढ़े, कभी कभी और शरीर पीला हो जीभ पर काला और भूरा मल जमे, दस्त कब्ज, तिल्ली और यकृत बड़े, पांच या सात ने दिन ताप उतर जाय और फिर चढ़े उस प्रकार दो दिन दफे उथला मार कर योग्य औषधसे बुखार जाता है।

चिकित्सा—संनिपात भैरव २ से ३ रती अथवा त्रैलोक्य चितामणि ४ से ६ रती अदरकके रससे अथवा शहदसे देना।

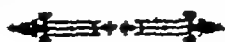
शठयादि कृषाथ—कचूरा, श्वेदार, हरड, बहिडा, आंवला, विषायरामूल रासना, सेठ, गिलोय, शर्तावरी, गुणल समभाग कूट १ से २ तोला का कवाच कर दिनमें तीन चार दफे पिलाना। महालाक्षादि तैल शरीरको मर्दन करना। भूख लगे जब साधा खुराक देना। सुदर्शन चूर्णको माप (बाष्प) देना। दस्त बंध हो तो विश्वताप हरण २ से ६ गोली गरम जलसे लेना।

भुगनेत्र संनिपात (फुफफुसको सूजनका ताप)

कारण—शरदीसे, वर्षाकालमें नदीके ठंडे जलसे अधिक स्नान करनेसे, तापका उपश्रव हो जब बादी करनेवाले पशाय खानेसे, भोजनलो जगहमें रहनेसे, खांसी और पेंस के साथ बुखार आनेसे, बच्चोंको बड़ी खांसी ससणी शीतला वराध आदि रोगोंसे यह बुखार आता है। यह बुखार लागु होनेसे पेट बिगड़ कर फेफड़ोंमें सूजन होती है। यह न्यूमेनियासे मिलता जुलता ताप है। श्वासकी गति बढ़ती है। छातीमें दर्द होता है, खांसी आती है। नाडीका वेग बढ़ता है, सिरदर्द, पिशाच कम, दस्त कब्ज, आंखोंमें खींच, तप्रा, बकवाद श्वणेन्द्रियकी कमजोरी, कफ चीकना। इस तापकी सुदृढ़ ८ से २५ दिनकी है।

संनिपात भैरव ३ से ४ रती अथवा त्रैलोक्य चितामणि ४ से ६ रती तुलसी रस अथवा अदरक रसके साथ देना और इस प्रत्येक रसका आंखमें अंजन करना और नाकमें डालना। तापका जोर १०४ से १०५ तक बढ़ता है। पसीना आनेसे रोगका बल कम होता है। किसीको खांसी भी नहीं आती। श्वासकी गति मिनिटमें ३०-४० होती है। नासिकाके छिद्र ऊंचा नीचा होता है। नाडी १२० से १४० तक चलती है। रोगी क्षीण होता है। तब नाडीकी गति भी क्षीण होती है। फेफड़ोंके जिस भागमें सूजन हो वहां दर्द और शूल आता है। दोनों फेफड़ोंमें सूजन हो तो तापका जोर बढ़ता है। यदि १०-१२ दिनोंके पीछे तापका जोर कम होतो रोगी बच जाता है और तापका जोर और चिन्नु बढ़ने लगे तो १५-२० दिनोंमें मृत्यु होता है।

पथ्यापथ्य—बुढ़े हवा प्रकाशवाले कमरेमें रोगीको रखना। उस कमरेमें आरने उपलब्ध या सूखे गोबरका अग्नि रात दिन रखना। रोगी श्रुतिमें हो तो देखना कि पेटमें या इसके आलुषाकुमें कदा दर्द होता है या नहीं। भूख, ढकार पेटकी कठिनता और नाडीकी गतिसे पेटमें कितना बिगाड़ है यह देख लेना। दाक्तरोंके मतसे यह जतुजन्य बुखार है। आयुर्वेदके मतसे पेटमें विगड़े हुए मलमें स्वाभाविक हो जतु पैदा होते हैं और इस रोगको पैदा करते हैं अर्थात् इस बुखारका मुख्य कारण पेटका विगड़ना है इस लिये, मलका निकाल करना और लंघन करना यह इस रोगकी प्राथमिक चिकित्सा है। यदि रोगी कुछ खुराक मांगे तो मुगका पानी या चाबलका पानी नमक हल्दी हिंग काली मिर्च डालकर थोड़ा पिलावे। सुदर्शन चूर्णका क्वाथ अथवा पिप्पल्यादि गण क्वाथ, कस्तूरी भैरव, त्रैलोक्य चितामणि, सन्निपात भैरव, शिरण्यगर्भ पोटली, विश्वताप हरण आदि औषध देना और दशांग और दोषज्ज लेप गरम कर छातीपर लगाना या अलसीका लेप गरम कर छातीपर लगाकर उपर सह दाब कर पाटा बांधना। छाती पर और पीठपर कपड़ेके गोटेसे शोक करना। शरीर-पर महालाक्षादि तेल अथवा महानारायण तेल अथवा कल्याण घृतका मालिश करना।



कण्टकुब्ज सन्निपात

(फेफड़ोंके पड़की सूजन) तेरह दिनका ताप

कारण—बुल्ला ठंडा पवन, वर्षा, शरदी करने वाले आहार विहार, अरुण शरयत आइसक्रीम, जागरण पेटका बिगाड़, आदि कारणसे यह बुखार आता है।

चिन्ह—श्वास लेते समय छाती में सूझा चुभती हो, चौरना हो, काटता हो अथवा पीड़ा होती है और खांसी आते वक़्त भी वैसा ही दर्द हो उस करवट पर रोगी सो सकता नहीं। दोनों फेफड़ोंमें दर्द हो होता है। जिस ओर दर्द हो उससे करवट को रोगी सो सकता नहीं। दोनों फेफड़ोंमें दर्द हो तो रोगी सीधा सोता है। पेशाब लाल उतरता है। इस बुखारसे अच्छा होने के पीछे रोगीको हृदयका दर्द रह जाता है और कइयोंको क्षय रोग भी लागू होता है। श्वसकी गति बढ़ती है। बढ़ता है। खुराक पर अरुचि, सारे बदनमें दर्द, चूषा, सिरमें दर्द, चमर हट, कभी शरीर और मस्तकका कंप।

चिकित्सा—अलसीका लेप गरम कर करना। छाती पेट और सिर पर शोक करना। पेटमें बिगाड़ हो तो हरकके चूर्णसे या विश्वताप हरणसे या अश्वचोली आदिसे शोक दो दक्ष कराना, लंघन कराना। खुराक प्रवेकी जरूर हो

जब सुबका पानी, बाजरे के छायात्री चुड़वाली या नमकवाली पतली रान. मातका पानी नमक हलदी चाला हुआ, पपीया, सूखे गोबरकी अंगूठी रातदिन रखना । गुगलका घूप दो वक़्त काना । और महासुदर्शन कवाथ अथवा शठयादि कवाथ के साथ बृहत् कस्तूरी भैरव अथवा सनिपात भैरव देना । त्रिभुवन कीर्ति त्रिपुर भैरव, हृदयार्णव रस हिं गुलेश्वर और कफकेतू दिया जाना है । मृगमदासव अथवा उत्तम प्रकारका दाढ़ भी दिनमें तीन चार वफे २ से ४ तोला दना ठीका होगा ।

इन्फ्लु अन्झा

तन्द्रिक सनिपात

अतितन्द्रा तथा श्वासेनिसारः कफकासरूक ॥

शरीरस्थोष्णता शोथो गले कंठः कफोधिकः ॥१॥

जिह्वा श्यामा श्वेतोर्मान्द्य कलमो दाहस्तथाधिकः ॥

इन्फ्लुअन्झा स्वक्षकोऽयमनार्यः कथितो ज्वरः ॥

आयुर्वेदे निगदिता त्रिदोषोत्थश्च तन्द्रिकः ॥२॥

—रसोद्धार तत्र

कारण—यह चेपो संक्रामक बुखार है । महामारी (सरकी) से भी जल्दी यह बुखार सारे देशमें एकदम फैल जाता है । चाहे जैसे स्वच्छ गावमें भी इसका फैलाव होता है । इस बुखारका पवन चलता है जय बाजारकी मीठाह, मिष्टान्न खानेसे, जठराग्नि विगडनेसे, हमेशा निकत-पडवा औषध सेवन नहीं कानेवाले लोगोंको यह बुखार लागु हो जाता है ।

चिन्ह—यह बुखार लागु होने से प्रतिश्याय नाकसे पानी पडना, सिर पांठ और संधि में दर्द होना । प्रारंभमें थोड़ी ठंडी लगकर ताप भरना । छाँके और खासी बढना । छाती फेफड़े गलेमें सूजन, हृदयकी कमजोरी श्वास नली के शोथसे मुश्किल से श्वास ले सकना इत्यादि चिह्नोंके पीछे न्यूमोनिया होकर रोगीका मरण होता है ।

पथ्यापथ्य—प्रारंभमें तापके चिह्न देखनेसे रोगीको लघन करना । ताप का जोर कम होगा वैसे हृदय और फेफड़े पर तापको असर कम होगा । रोगीको भूख लगे जब मगका पानी देना । आठ दिन तक मगके पानीमें आदुका रस हिण काली मिरच नमक हलदी चाल का दंते रहना । और दस बारह दिनके पीछे दूधमें सोठ काली मिर्च पीपल लौंगका समभाग किया हुआ चूर्ण डाल कर मिलाना । यदि कुछ दूधमें मधुर करना है तो गुड या शह थोड़ा डालना । छाती पेट और पीठमें दपड़े के मोटेसे शोक करना । गुगलकी छुई श्वासमें देते

रहता। छाती और दोनों बाजु में अलसी का लेप कर रुई दाब कर पाटा बांधना सारे बदनमें महालाक्षादि तेल मलना। दस्त लाने के लिये विश्वताप हरण या अश्वचोली गोली २ से ६ देना। शठपादि कवाथ, अमयादि कवाथ के साथ सन्निपात भैरव कस्तूरी भैरव, त्रैलोक्य चितामणि अम्रक भस्म, चोसठ प्रहरी पोपल मृतसजीवनी सुरा अथवा ब्रान्डी देना।

ग्रन्थिक सन्निपात

(मरकी-प्लेग)

कारण—गंदकी दुर्गंध, अंधेरा, सूर्यप्रकाशका कम मिलना चूहेक' शब्दना अथवा देवी प्रकोपसे यह रोग प्रगट हो फैलता है। गट', मोरी अंगनमें दिनरात मेज पेटका बिगाड, मलिन भकान इत्यादिसे बढ़ता है। चूहा और खिचके'ली आदिको यह रोग ऐकदम लागु है और ऐसे जनावर एक स्थानसे दूसरे स्थानों में दोड़ने रहनेसे सारे गांवमें फैल जाता है। यह रोग कमजोर कृष और बूढ़ों को कम होता है जवान स्त्री पुरुषों को और सगर्भा स्त्रियोंको एकदम लागु हो जाता है। यह रोग शीत और वर्षाऋतुमें उत्पन्न हुआ हो तो भयंकर रूप से फैल जाता है। प्रथम ऋतुमें इसका जोर कम होता है। रक्ते गवाड़े रोगीकी सारवार करनेवाले, देखनेका आले बले घड़वास में रहनेवाले लोग भी, खानपान आहार व्यवहार और औषधमें सावधान न रहे तो उनके भी यह रोग लागु हो जाता है। गांवमें रोग उत्पन्न होनेसे सगर्भा स्त्रियोंको दूसरे गांव में ले देना चाहिये। गला, बगल, साथल, के मूलमें गांठ-ग्रंथि उत्पन्न होती है।

चिह्न—रोगी चिंतातुर बेचैन, भूखका नाश, स्नायु साथे अकड़ जाना हृदयकी गति बढ़ना, ग्रंथि होनेकी जगहमें दर्द शुरु होना, सुख चिकना, आंखें निस्तेज, वमन उबका, छाती में घमराहट, सिरका दर्द, दस्त कब्ज इत्यादि चिह्न होते हैं। ठंडी लगकर ताप १०७ तक बढ़ना है। नाड़ीकी गति अभिवर्धित। श्वास हर मिनट २० से ५० दफे चले। चमड़ी सूकी, पसीना बंध, आंखें लाल, कीकी बड़ी, सुननेमें कमी, पेटमें जलन, तृषा अधिक अभका पीबका भाग सफेद और अभका अप्र भाग और आलु बाजुका भाग लाल, अधिक दिन बीतने पर जोम फरक' काली पड़े, नाकके अप्रभाग पर कालिमा, तन्द्रा निद्रा घेन बड़े, आंघोमें, बगलमें, गरदन पर गांठें दिखा दे। यदि गांठ पक कर फूट जाय तो दरदी बच जाता है। यदि रोगी बच जानेका हो तो गांठ होने के पीछे तापका जोर कम होता है, गांठ पड़ती है। बुद्धि जाती है तन्द्रा

कम होती है, जीभ अच्छी होने लगती है, आँखोंकी लालिमा कम होती है। यदि गाँठ पकने पर न आवे और तापका जोर कम न हो तो रोगो २-३ दिनमें मृत्युवश होता है। यदि ७ दिन निकल जाय तो वच जानेकी आशा रहती है।

पथ्यापथ्य—यह रोग उत्पन्न होते ही अच्छे आदमियोंने शाकमाजी चकाला खानेका पथ करना। रातवासी अन्नपान नहीं ग्याना। दोनों वरुन गरम खोराक खाना। अगर शक्य हो वहाँत एक दफे ही भोजन करना। दूध गरम कर पीना।

आरोग्यवर्धनी, महासुशर्न इत्यादि औषध खाते रहना, प्राणायाम करना। दोनो वरुन दिव्य धूप अथवा गुगल घो और नीमके पत्तोंका धूप करना। शरीरकी और घरकी जगह स्वच्छ रखना।

रोग लागु होनेसे रोगीका तीव्र जुलाह देना। इच्छामेदी ५-६ गोली अथवा अश्वचोली १०-१२ गोली अथवा विभताप हरण ८-१० गोली अथवा ज्वरांतक विरेचन ४ से ६ गोली गरम पानीके साथ देनेसे ५-६ दस्त होकर पेटके त्रिगाढ के साथ प्लेग के जन्तु मर का निकल जाते है और गाँठ चैठ जाती है। रोगीको जहां सूखका ताप आता हो ऐसे कमरेमें रखना। पानी उवाल कर पिलाना और थोडा गरम ही पिलाते रहना। रोगीको ७ दिन तक कुछ भी खुराक नहीं देना। यदि दस्त होकर त्रिगाढ निकल गया हो और भूख लगे तो मुंग का पानी नमक हलकी काली मिर्च डाल पिलाना। यदि दाह क्षोष और तृषा लगे तो पर्पटादि हिम थोडा गरम कर पिलाते रहना। गुठका पानी भी देना। रोगीकी सेवा करनेवालोंने हमेशा शरीर पर तिलका तैल मालिश करना। साधा खुराक लेना। एक दफे भोजन करना और शरीर स्वच्छ रखना।

चिकित्सा—प्रारभमें उपर कहे अनुसार ४-८ दस्त हो जाय औसा उपचार करना। महासुशर्न चूर्ण अथवा शठयगदि कवाथके साथ त्रिलोक्य चित्तामणि ४ से ८ रती, सन्निपात भैरव ४ से ८ रती देना। रोगी के शरीर पर महालाक्षादि तैलका मर्दन करना। हिरण्यगर्भ १ से २ रती घीस कर अक्षरखके रससे देना।

ज्वरांतक विरेचन—(रस) पारद, गंधक, सोंठ, नीपक, कालीमिरच, सल्यानाशीके मूल, कुटकी, चिरायता, सेन्धानेतन, त्रिगुण्य^१ के फूल सप्रभात लेकर स्रक्के समान शुद्ध किया हुआ ज्वाल गोंटा डाल कर सहदेवी^२ के रसकी

१ प्रोणमृगनी-गुजरातीमें कुबो। २ सहदेवी गुजरातीमें सेदरही।

भावना देकर रती प्रमाण गोली करना । सब प्रकारके तापमें दस्त बध हो जब मलको निकाल कर बुखारको कम करने के लिये यह औषध उत्तम है ।

सप्तमृत पर्पटी—(र सं)- पारद ४, गंध-८, छेह ताघ तैष्य, अंशुक प्रत्येको भस्म दो दो तोला सुवर्ण भस्म १ तोला विविक्त पक्काकर, ताजे गोबर के योगसे केलाके पत्तोंमें दबा कर चौलाई छोटी कटहरी, सत्यनाशो घोक्वार, तुलसी, अंदरख और धतूरा प्रत्येको १-१ भावना देकर रखना । २ से ४ रती लशुन के रससे अथवा अंदरखके रसमें देना । सब प्रकारके मंनिष'व ज्वरमें शठयादि क्वाथसे या दूसरे औषध के योगसे दिया जाता है । और सहजणी अतिहार पुराना मुरझा हृदयरोग, आंतोंके रोग कमजोरी अदिमें भी अच्छा फायदा देता है ।

प्लेगकी गांठका लेप १—कायफल, सेठ राप्ता, चित्रक, हलदी, अरणी के पान, इन्डायण के फल, देवदार सहजनेकी छाल साथ पीछ गरम कर पोल्टीसकी तरह बांध पाटा बांध उपर शोक करना ।

प्लेगकी गांठका लेप २—सेठ, अरणीका मूल, राप्ता विजेराका मूल दाहलकी सम्मग कूट पानी में पीछ गरम कर बड़ी पेल्टीस के रूपमें गांठके उपर रखना । गांठकी अजुधाजुधा १-१ इंच भाग ढक गये इन तरह कीब १०-१५ तोला लगाकर पाटा बांधना और उपर शोक करना ।

तिकतादि क्वाथ—कुटकी चिरायता पर्पट, गिलोय, कचूरा, राप्ता, छोटी पीपल पुष्कर मूल, त्रायमाण, छोटी कटहरी के मूल, देवदार, बड़ी इरड, घमासा, भारंगी सब समान भाग लेकर कुट कर १० तोल्लोंमें पक्के तीन सेर पानी छोठ उबाल कर १ सेर रहेनेसे कपडछान कर उसमें आधा तोला नमक डाल कर २-२ घंटेके पीसे १-१ तोला पानी पिलाते रहेनेसे प्लेगका ज्वर कम होता जायग और रोगी बच जाता है ।

सब प्रकारके ज्वरमें दी जानेवाली औषधें

महासुदार्शन चूर्ण—(शांग' म अ. १२, ये त. ऊ. २०)

हरड बनीडा, आंवला, हलदी, दाह हलदी छोटी कटहरी बड़ी कटहरीके मूल, घमासा, कुटकी पर्पट मोथा त्रायमाण बाला नीमकी छाल, पुष्करमूल मुलैठी मूल कुटकी छोटी अजवायन, इन्द्रजी, भारंगी, सहजनेक बीज फटकीरी बच्चा-दालची, पकड़ेवालेका मूल चदन अतीस बलासूल शालीपर्णी शुनिपर्णी, नमकीन तगर चित्रक (सीता) देवदार चक्रक तम लपन्न पटेल जीवक

शुष्कपत्र, लवण व शलोचन, कमलमूल, काकौली, तमालपत्र जायपत्री तालीसपत्र
सम भागसे लेकर और सब औषधमें आधे वजनसे चिरायता कूटकर मिला देना ।
यह सुदृश न चूण है । वात पित्त कफ एक दोषका, दो दोषका, त्रिदोषका ताप
और सब प्रकारका ताप आग तुक्त ताप विषमज्वर घात में उतरा हुआ जीर्णज्वर
सञ्जपात ज्वर घनके विकासमें उत्पन्न हुआ ज्वर शीतज्वर एकांतरा तरीया चौबिया
मलेरियाका ताप मोह तथा भ्रम शोथ तृषा श्वास खासी पांडु हृदयरोग कामला
नव प्रकारके शूल पेटका शूल आदिमें उत्तम गुणकर्ता है । चढ़े हुए तपको
उतारता है आनेवाले तापको रुकता है

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः क्रोधेश्वराय नमो ज्योति पतंगाय
नमोनम सिद्धिरुद्र आज्ञापयति स्वाहा ।

हाथमें सगसे के दाने चुटकी भर लेकर इस मंत्रको सात दफे पढ़कर
जिघ्रको एकांतरा तरीया चौबिया ताव आता हो उसे छिड़के उसके शरीरपर फेके,
सात दफे करनेसे सब ज्वर जाता है ।

महाज्वरांकुश रस—(यो त. र. त. २०) पारद गंधक वछनाग कनक-
बीज प्रत्येक एक एक तोला त्रिकटु (तीनों मिलाकर) ६ तोला सत्यानाशी के
पचांग के रसको भावना ४ देकर गुजा प्रमाण गेलीकर २ से ३ गोली मोसवी
के रस से अथवा अदरख के रससे देना । सब प्रकारके ज्वरको उतारता है
रुकता है ।

त्रिगुलेश्वर—(र स ज्वर)

हिंगूल वत्सनाम च प्रयेत कर्षमात्रक । चतुष्पिपिलो च मदयेत्सर्वमेव च ॥ १ ॥
भावनाद्रसैर्देया द्विगुजथोष्णवारिणा । वानज्वरे प्रशस्तोयमनुपानैर्ग्वरेषु च ॥

विनिषेधवतिसरेपि देयो दोषत्रिरीक्ष्य हि ॥ २ ॥ रस संहिता

हिंगुल तोला १, शुद्ध वछनाग तोला १, छोटी पीपल तोला ४ साथ
घोटकर अदरख के रस की भावना देना । १ से २ रती गम जलसे देनेसे वात
ज्वर में उत्तम है । अन्य ज्वरों में भी दोष के प्रकोप को देखकर अनुपान
योगसे देना । अतिसारमें भी गुण करता है ।

रत्नगिरि रस—(भी र. ज्वर) पारद गंधक तापमस्म अत्रक मस्म
सुवर्ण मस्म प्रत्येक १ अंक तोला, लेह मस्म तोला आधा, वैकांत मस्म तोला
१ पाव भांगरे के रसमें घोटकर पपड़ी की तरह पकाकर घोटना । पीछे सहजनों
वासा निगुंडी बना चिकन भांगरा गोरखमुंडी छोटी कटहरी गिलोय अरणी

अगस्त्य ब्राह्मी कुटकी खारपाठा प्रत्येक के रसको तीन तीन भावना देकर गोलाकर टपर बेलोंके पत्ते लपेट टपर मिट्टी लपेट कर सुखा कर उस गोलेको बालुका यंत्रमे रख तीन घंटे पकाना । पछे स्वांगशीत होने पर निकाल घोट कर खना । ३ से ४ रती इस रसको ८ से १२ रती छोटी पेपलका चूर्ण और २ से ३ मासा धनियाका चूर्ण मिलाकर पानीसे देनेसे एक घंटामे तापको उतारता है ।

सब प्रकार के तापको उतारने के लिये और वैशुद्ध रोगोंको अग्र्यन करने के लिये उपयोगी हैं । मरकी प्लेगमे से ३ रती यह रस सुदर्शन चूर्ण के साथसे देना न्युमोनिया टाइफाइड आदि घनिपात ज्वर मे उत्तम है । वैसेहि २५ क्षय खासी हृदयरोग फेफड़ों के रोग जोणज्वर आदिमे भी गुणकारी हैं ।

हिरण्य गर्भ (हैमगर्भ पोदली) — (१ स ज्व) पारद तोला ४, गंधक तोला १२, सुवर्ण भस्म तोला २, रौप्य भस्म तोला ४, ताम्र भस्म तोला ३, मुष्का १ पट्टी, प्रवाल, शंख पिष्टि अत्रक भस्म गेहूँ भस्म टकण रससिद्ध प्रत्येक तोला २ दो वंकात भस्म तोला १ सन साथ घोटका निगुंडी निबू और गजारपाठाके रसमें दो दो दिन घोटकर एक एक तोला की सोगडी या गोली बनाकर प्रत्येक गोली को रेशमी कपडेमे बांधकर एक घटकीमें गंधक भर सब गोलीयाँ उस गंधकमें डुबो कर दाब कर उस घटकी का मुख बंधकर बालुका यंत्रमे रख पकाना । ३ घंटा के बाद अग्नि निकाल कर स्वांगशीत होनेपर पटकी तोड़ कर गोलीयाँ निकाल लेना जला हुआ कपडा निकालकर गोली साफ करना । अदरक के रसके साथ १ से २ रती घीस कर पिलाना रोगो वैशुद्धि में है तो धिरपर तालुके भागपर अन्नासे बाल निकाल छेका देकर उस पर गोली का घीसा हुआ चूर्ण तालु पर घीस खूनमें मिल जाय ऐसा करना । सज्जिपात न्युमोनिया सर्पदंश आदिमे गुणकारी है ।

महालाक्षादि तैल — (१ स. ज्व.) आककी या अन्य किसी वृक्षकी कच्ची लाख तोला ४८, चन्दन घउला वाला मूँली ३ शतावरी कुट्टी देवदार हलदी कुछ मजीठ अगर काला वाला असगंध बलामूल दूधहलदी मोरवेल नागरमोथ इलायची दालचीनी नागकेसर रास्ना तमालपत्र प्रत्येक सोलह सोलह तोला लेकर सब कूट कर उसमें खट्टा दही तोला १० और पानी सबसे ८ गुना डाल कर पकाना आधा पानी रहनेसे उसमें तिलका तेल अथवा सोंसोंका तेल रतल ३६ डालकर पानीका अंश जल जाय और प्रब्य सब पक जाय जब उतार लेना । स्वांगशीत होनेपर कपडछान कर रख छोड़ना । सब प्रकारके ताप उतारने करने के लिये उत्तम है और शरीरकी अदरकी बहारकी जलन दाह शीघ्र खुजली खचा विकार आदिमें गुणकारी है ।

अतिसार

दस्त ज्यादा होना

कारण—गरिष्ठ और चीकने पदार्थ, रुक्ष, प्रवाही पदार्थ खाना, भोजनकी चीजें उंड़ी हो गई हो ऐसी हलवत खानेकी आदत, मिष्ठान्न और बाजारकी भीठाई आदि अधिक खाना और खुगाऊ पाचन न होने पर भी भोजन करते रहना। विषविकार, श्लेष्म भय विगष्टा हुआ पानी पीना, अधिक मद्यपान, पेटमें रुमि जलुका उपद्रव इत्यादि कारणोंसे और बच्चोंका दात आते वखत, दस्तका रोग होता है।

चिह्न—छाती नाभि करवट और पेटमें शूल आना, अघो वायुका अवरोध, आभरा, आदि चिह्न के साथ अतिसार होना है। आम बच्चा ठोपवाला हो तो मल जलमें डूब जाता है दुर्गन्ध आती हैं। चीकनाइ ज्यादा होती है औ पक्वभेष वाला अतिसार हो तो दुर्गन्ध कम, चीकनाइ कम, पानी में तरे और बारबार पतटे दस्त होते हैं। दस्तके साथ मुखसे पानी गिरना, अर्धचि जीभ पर पंखी छारी, पेट पर वायु और शूल, खट्टे दुर्गन्धवाले डकार, कमजोरी और कभी कभी खून का गिरना आदि चिह्न मालूम होते हैं।

पथ्यापथ्य—खुराक बंध करना पेटमें भार हो, भूख न लगे वहा तक दो तीन दिन उपवास कराना। पीछे पतला और सादा खुराक देना। खीचड़ी कटो, छाश भात, गेहूँ बाजरीकी पतली राव, मुंगका पानी आदि नागोंकी प्रकृति और रोगका स्वरूप देख कर देना। भोजवाला मकान, गंदगी, मलिन कपड़े, मलिन बिछाने आदि रोगको बढ़ाते हैं। ठंडी श्रुतु हो तो अंगोठो पाम रखना और कपड़े के गोटे पेट और पेट पर शैल करना। महानारायण तेल अथवा महालाक्षादि तेल पेट पर मालिस करना। दस्त बंध होने के पीछे भी १०-१५ दिन तक सादा खुराक देना। बच्चोंका दात आनेसे या माताके आहार विहारकी अनियमिततासे दस्त होते हो और बच्चा स्तनपान करता हो तो उसकी माताको खानपानमें सम्हाल रखनेक सूचना देना। यदि बच्चेका दूध पिलाया जाता हो तो बायविडंग और थोठका चूर्ण चुटकी डाल कर पिलाना। बच्चोंको बालारोग्यवटी, महाणवक, बालाक आदि औषध देनेसे दस्त कम हो जाता है।

चिकित्सा—

मानंद गैरब गुटी (र. प्र. अ. ८.)

पकाया हुआ टकण दिगुल शुद्ध, शि गिया वछनाग, कालो मिरच और धतूरे के बीज सब समान भाग लेकर, जभीरी निंबु के रसमें घोट कर गुंजा प्रमाण गोली बनाना। सब प्रकार के अतिसार में देा से तीन गोली पानी के साथ दी जाती है। बच्चेको आधी या एक गोली देना।

फर्पर सुंदरी गोली—(र. प्र. अ. ८) कपूर, जायफल, जायपत्री, कनकबीज, समुद्रशेष के बीज, अकलकता सौंठ, पीपल, कालो मिरच चोपचीनी और लता करंज के बीजकी गीरी (भुन कर अंदरसे गर्म निकाल कर देना) प्रत्येक चार चार तोला और भाग २२ तोला, अफीम २२ तोला और शुद्ध वछनाग ११ तोला सबसाथ मिलाकर भांगरेके रसमें घोट कर चना समान गोली बनाना। २ से ३ शहदके साथ देना। इससे सब प्रकार के अतिसार, संप्रहणी, मंदाग्नि, बवासीर आदि रोग मिटते हैं। और इस गोली के सेवनसे अफीमकी आदत भी छूटती है।

स्पष्टीकरण : वर्तमान सरकारी एकमाईज कानूनके अनुसार किसी भी आयुर्वेदिक औषधीमें सेकड़ा जीतना टका अफीम डाला जाता हो डालना अर्थात् कानून बदलता जाता है जिस वखन जो कानून हो अफीम डालनेका ध्यानमें रखे। अफीम कम होनेसे उसका कुछ गुण औषधमें लानेके लिये रमशाला औषधाश्रममें ऊपर लिखे एक घाणमें ४० तोला पोस्तका डोडा और २० तोला खसखस कूट कर इसके दवायकी भावना दे कर पीछे भांगरेके रस की भावना दी जाती है।

अगस्त्य सूतराज (योग. र. संप्रह.) पारद १ तोला, गंधक १ तोला, शुद्ध दिगुल २ तोला, अफीम ८ तोला कनक बीज ८ तोला भांगरा के रसकी भावना देकर तैयार किया जाता है। इसकी मात्रा २ रती में त्रिकटु ४ से ६ रती मिलाय शहदसे देना। उपर पानी पीवे झाडा मरडा संप्रहणी वमन उवका उत्प्लद शूल में गुणकारी हैं। सब अतिसारमें देा मासा जीरा का भुका, १ बाल जायफलका चुर्ण १ रती यह रस मिलाकर पानीसे देना।

१ लताकरंज गुजरातीमें काकचीया अथवा काकचा कहते हैं।

चित्रकादि चटी—(भाव अति.) चित्रक पिपलीमूल और यवक्षार प्रत्येक एक १ तोला, पचलवण पाचे। मिल ५ तोला, त्रिकटु तीनोंमिल ३ तोला, दिग अजमोदा चक्रक प्रत्येक एक एक तोला सब साथ कूट बीजेरे के रसकी और दाहिम के रसकी एक एक भावना देकर ३ रती की गोली बनाना। मत्रा ३ गोली पानीसे देनेसे सब प्रकारका सब वैषका अतिसार मिटता है।

अभयनृसिंह—हिंशुल, शुद्ध बछनाग, सेठ पीपल काली मिरच जोरा सोहागा पारद गंधक अभ्रक भस्म सब समान भाग लेना और अफीम सब के समान मिश्र कर नीबु के रस की भावना देकर सुखाकर घोटकर तैयार करना। जीराके चूर्ण में १ रती यह रस मिलाकर शहद से रोग का स्वरूप देखकर दो वख्त या अधिक वख्त देना। अतिमार के साथ ताप हो या न हो सब देप के सब प्रकार के अतिसारमे उत्तम गुणकारी है।

कपूर रस—(भ. अति) हिंशुल अफीम नागर मोषा, इन्द्रजौ जायफल कपूर सबसमान भाग लेकर घोट रखना। २ से ३ रती रसमे दो मासा जीरा चूर्ण और शहदसे देना। सब प्रकार के अतिसार प्रग्रहणी मुरब्बा अतिसारमे खून गिरना आदि मिटते हैं।

वृद्धगंगाधर चूर्ण—(भाव. अति) नागरमोथा, अहसाकी छाल, सेठ घाई के फुल लोप्र वाला बेलफलकी गिरी, मोचरस, पाठा, इन्द्रजौ, कूडेकी छाल आमकी गुठली लज्जालु अतीस समभागसे कूट रखना। २ से ४ मासा शहदसे देकर उपर पकाया हुआ चावलका पानी पिलाना। सबप्रकार के अतिसार सग्रहणी आदिमेग मिटते हैं।

कुटजावलेह—(र. स. अति) कुडाकी छाल अथवा मूल ४०० तोला और भुईआंवली तो १०, मुलैठी का मूल तो १०, नागरमुस्ता तो. १०, वाला तो १०, पाठा १० तोला, चित्रक मूल तो १०, छोटी कटहरी मूल १० तोला कूट कर उसमें पानी पका १ मन ढालकर कुवाथ करे। चतुर्याश रहे जब कपडछान कर इसमें गुड पका १ मन ढालकर पकावे। कुछ गाढा होवे जब नीचे लिखे द्रव्य ढाल कर पकावे। अश्लेह जैसा हो जब इसमें शहद पका शेर ५ पाच मिला देवे। इन्द्रजौ, अजमोद, लज्जालु, वायविङ्ग, घनिया, बेलका गर्भ, सेठ छोटी पीपल, लोप्र, नागफेंशर, जामुनकी गुठली, आमकी गुठलीका गर्भ और कूडेकी छाल प्रत्येक शोलह शोलह तोला कूट कर मिला देना। अतिसार सग्रहणी शूल आदिमे उत्तम है।

सम्रहणी (आंत्रक्षय)

कारण—अतिसारका रोग मितने के पीछे कई दिन तक जठराग्नि मंद रहती है, उस समय अजीर्ण करनेवाले गरिष्ठ पदार्थ खानेसे, अधिक खुराक लेनेसे जठराग्नि विगड़ कर पित्तधरा नामक कला जिसका ग्रहणी नाम है वह विगड़ कर यह रोग होता है। अनियमित भोजन, अतिभोजन, अधिक परयात्रा, मलमूत्र के वेग रक्कना, चाय, आइसक्रीम, गुल्फी, बरफ वगैरह अतिशय पीनेकी खाद शक्कर का खुराक अधिक खानेकी आदत इत्यादि कारणसे यह रोग होता है।

चिह्न—इस रोग के रोगी खाया हुआ अन्न पाचन होते खट्टा बनता है, शरीर रक्ष सूखा होता है। तृषा ज्यादा लगती है। सम्रहणीका यह मुख्य चिह्न है। आंखमें झांख, कानमें आवाज, पसलियों और सांधोंमें शूल, हृदय में पीड़ा, शरीरकी प्रतिदिन बढ़ती हुई निर्वलता, मलद्वार पर कोई चीरता हो बैसी पीड़ा, खाग और खट्टा रस पर प्रीति, किसी समय पतला तो किसी समय सूखा कण्ठके साथ या बिना कण्ठका दस्त होना हाथमें पैरमें सूजन। यह दरद दिवसको और रातको शांत रहता है। पार्श्व-ऊरवटमें शूल, मल निकलते समय घटा खाली होता है वैसा आवाज, ताप रहना, सुस्त, लेटा रहनेकी इच्छा ये असाध्य लक्षण माने जाते हैं।

पथ्यापथ्य—स्नान नहीं करना। यदि आवश्यकता लगे तो सप्ताहमें ऐकाध दफे थोड़ासा गरम पानीसे स्नान करना। पानी बहुत पीना नहीं। चिकने पदार्थ, लड्डू जैसे मिष्ठान्न, ठंडे हुये पदार्थ, बाजारकी मीठाह, खादकी चीजें नहीं खाना। जो जो खुराक रोगी लेता है वह वैसा ही मलद्वारा बाहिर निकलता है। अतः इस रोगके रोगीको पतला, तदन हलका दीपन, वातपित्त कफ नाशक खुराक देना। छोटी चमच धीमे जिरा और हींग डाल कर अग्निसे पकाकर छाँड़को बछार देना और उसमें सेंधानोन अदरक हरा घनिया मीठानीम डाल कर वह छाँड़ खुराकके लिये देना। औषध के उपचारसे खुराकका पाचन होने लगे जैसे थोड़ा थोड़ा भात खीचड़ी, कढ़ी मुगका पानी आदि देना। सम्रहणी में वायु पित्त और कफ जिस दोषका प्राधान्य हो उसका खयाल रखके औषध और अनुपान देते रहना।

आमातिसार-मुरडा

कारण—गरमा गरम खुराक, बहुत तीखे, चिरचिरे, बहुत खट्टे रातवासी बड़े हुए, बिना भुख पेटमें डाबते रहने कि आदत, बाजारकी चीजें

पर प्रीति आदि कारणासे अजीर्ण मलावरोध होकर वह रोग होता है। जब आँखों-चूक झल चोट आती है। मदामिवाले और आँखोंकी चमकौरी वाले रोगीको यह रोग हर वक्त हो जाता है। अपक्व मल आँतों में रुककर वहाँ क्षत पड़ते हैं, इससे आँतों में सूजन होकर उसकी वेदनासे झलके साथ मुरडा होता है। यह रोग मिट जाने के पीछे भी इसकी असर रहा करती है जो वर्षों तक रहती है और कभी कभी उमड़ कर दूसरे रोगोंका कारण बनता है।

चिन्ह—पाँदा चींट झल के साथ आँकड़ों आकर मल बाहर निकलना है मल थोड़ा पूयके साथ पड़ता है कभी खूनभी मिरता है। रोगी शरीर के भागोंको इधर उधर मरोड़ता है और असह्य वेदना सहन करता है यह रोग सांक्रमिक चेपी या जंतुओंसे उत्पन्न होने की मान्यता ठीक नहीं है। कई रोगीको सख्त मुरडा होकर दस्त होते हैं और कई केसमें मलवध होकर दुकड़े दुकड़े से थोड़ी थोड़ी देरसे दस्त आता है। दस्तकी हाजत रहा करती है। दस्त करते समय रोगी कण्ठना है, बैठे रहनेकी इच्छा करता है लेकिन थोड़े मुँद या आम या खूनके थोड़े बुद पड़ते हैं। नाड़ी की गति बढ़ती है। जीभ पर सुफेद मल जमता है। दो तीन दिन रोग बढ़कर १० से १५ दिनमें आराम की ओर आने लगता है। तीव्र मुरडा में शरीर में थोड़ा ताप रहता है। भूख मंद होती है। पाँवकी पिठलियों में गुठले चढ़ते हैं पेट कूजता है। दस्त में दुग्ध रहती है। आँखें गहरी उतरती हैं। मुरडा १५ से २० दिन के पछे पुराना पड़ा जाता है। और पीछे सप्रहणीका रूप लेता है।

पथ्यापथ्य—रोगीको स्वच्छ कपड़े स्वच्छ बिछाने में रखना। पीनेका पानी गम'कर ठंडाकर पिलाना। पिण्डलीयोंमें गुठली चढ़े या दर्द हो तो कपड़े के गोटेसे शोक करना। महानारायण, महालाक्ष्मिदि तेल पेट जाँघकी पिण्डलियाँ आदिमें मालीस करना। अण्डों के तेलका जुलाब देना। खुराक में दूध मेस'बोका रस देना छाँछमें या दही के घोलमें जीरा से'वानेन धनिया डालकर देना। खुराक में लीचड़ी कड़ी मुग हुवर या मुंग मठकी पतलीडाल देना।

सप्रहणी मुरडाकी चिकित्सा

लाईचूर्ण—(भाव संग्र) गंधक १ तोला, पारद तोला ०।१, त्रिकटु तीनोंमिल २ तोला, पचलवण के प्रत्येक लवण डेढ़ डेढ़ तोला, ह्रींग जीरा शाहजीरा प्रत्येक १। डेढ़ डेढ़ तोला सब साथ विधिवत् मिलाय सबका जितना तौल हो उससे आधे तौलसे अर्थात् ७।१ पौने आठ तोला भाँग मिलाकर तैयार करे। मात्रा १ से २ मासा छाँछसे दे। सबप्रकार का अतिशय सप्रहणी मिटते है।

पंचामृत पर्पटी (र. घ)

चत्वारिंशद् भागा गंधस्य च पारदस्य दश भागाः
कृत्वा कज्जलिकां वै लोहाम्रस्वर्णमाक्षिकाणि स्युः ॥१॥

प्रत्येकं दशभागं सर्वं समिश्र्य लोहमात्रस्थं
गोघृतमथ दशभागं पक्त्वा द्रवितं च ढाल्यमेवैतत् ॥२॥

कदलीदले ह्यधश्चोरिसंस्थे गोमये च सद्यस्के
यामचतुर्थान्तरमिति निष्कास्याथ मर्दयेत्स्रल्वे ॥३॥

कथिता सर्वगदह्नी पंचानृपर्पटी मिषहृमाता ॥
गुजैकामारभ्य द्वादश गुंजावधि प्रयुज्येय ॥४॥

सौंघव जीरकघोलैः संग्रहणी रोगनाशि ति सिद्धा ॥
अथवा मधुनघनीतैरतिसाराशः शोणितानि ॥५॥

मन्दाग्नि पाण्डुरोग स्त्रीगद जीर्णज्वरादिदेशेषु ॥
नानानुपानयोगैश्चिन्धान्यन्यानि वीक्ष्य योज्येयं ॥६॥

तोष्रभस्म प्रयोगोऽत्र दृष्टो ग्रन्थान्तरेषु च ॥
अस्माभिरनुभूतेयं सिद्धा माक्षिकयोगतः ॥

रोगप्रशमनं सद्यः करोति निरुपद्रवम् ॥७॥

रस संहिता-संग्रहणी ॥

४० तोला गंधक, १० तोला पारद, दोनोही कज्जली कर उसमे लोहमंस्त्र
अत्रकभस्म स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रत्येक दश दश तोना मिलाना । भारने उपल्का
गुद्द अग्नि कर चुल्हे पर लोहेकी कड़ाई रख उसमे १० तोला गायका घृत ढाल
लोहेके तबियासे ढिलाना । सब पिघलने पर ताजा गोमय-गायका छाण के उपर
बिछाये हुए केलोके पत्ते पर ढाल दें उपर दुसरा पत्ता दाब कर उसके उपर दुसरा
गोमय दाब दें । पत्ते के जितने भागमे पर्पटी हो सब दब जाय इस प्रकार गोमय
अच्छी तरह दाने । १२ घंटाके पीछे धीरेसे समालकर गोमय दूर कर दो
पत्ते के बीच रही हुइ पपटी निकाल कर अच्छी तरह घोट रखे ।

मात्रा १ रत्ती से आरंभ कर १२ रत्ती की जाती हैं । शहद घृतसे अथवा
शहद मक्खनसे लेकर उपर जीरा सेवानेन दहीका मट्ठा पिलावे । आरंभमे १
रत्ती ४ दिन तक देवे । ५ वे दिनसे २ रत्ती । १० वे दिनसे ३ रत्ती । १५ वे
दिनसे ४ रत्ती । २० वे दिनसे ५ रत्ती इस प्रकार बढ़ायी जाती है । इस प्रकार

देनेसे रोगका शमन हो उस मात्रामे जारी रखे और आवश्यकता के अनुसार मात्रा बढ़ावे या कम करे । इस प्रकार देनेसे संप्रहणी का रोग मिटता है । अतिसार मुरब्बा पुरानी हीसे टी आदि रोग फिर उत्पन्न नहीं होता और इसके पीछे भी नहीं रहता । बवासीर क्षय भस्मपित्त मदाग्नि पांडुरोग औरों के रोग अजीर्ण आदि रोगोंमें बुद्धिपूर्वक उचित अनुपानसे ही जानेसे प्रत्येक रोगका शमन होता है । रोग मिटनेके पीछे भी पंद्रह बीस दिन तक सेवन करना ठीक होगा ।

इस पचामृत पर्पटीमें ताम्रमस्र का योग कई ग्रन्थों में लिखा रहता है हमारे अनुभवसे ताम्रमस्र गुणकारी है फिरभी उग्र होनेसे अतिके क्षोभ करती है रससंहिताके अनुसार ताम्रके स्थान में सुवर्ण माक्षिक डालने से बहुत अच्छा गुण करती है । सो इसप्रकार बनाकर अनुभव करे और लिखे रोगोंका शमन कर यश प्राप्त करे ।

पचामृत पर्पटी (भैष. स. ग्रह. ३८५)

८ तोला गन्धक, ८ तोला पारद, लोह भस्म तोला ४, अभ्रक मस्र तोला २, ताम्र भस्म तोला १ लोहेके बर्तनमें पकाकर पर्पटीकी रीतिसे बनाना । २ रती से प्रारंभ कर ८ से ९ रती तक क्रमसे बढ़ाते हुए रोगी की स्थिति देखकर सेवन कावे । शहद घृतके साथ दी जाती है । सर्वदेहों की संप्रहणी में अतिसार में अरुचि बवासीर घमन ज्वर के साथका अतिसार नेत्ररोग रक्तस्त्राव क्षय आदि रोगोंमें उत्तम गुणकारी है । जठराग्निको प्रदीप्त करती है ।

लोहपर्पटी—(र. सं. मै)

सूतः पलमानः स्यात्तावद् गंधश्च कज्जलीकृत्य ॥
जम्बूफल रस पक्वं लोहं भस्मापि सूतमानं स्यात् ॥ १ ॥
संमर्द्य पर्पटीवद् गोघृतलिप्तेऽयसः कटाहे तत् ॥
मृद्ग्नौ संपाच्यं रंभापत्रेथ गोमयस्थे वै ॥ २ ॥
संढाल्य मर्दयित्वा सेव्या दधिजीरकैरथो मधुना ॥
इयं संप्रणी रोगे संसिद्धा लोहपर्पटी ॥ ३ ॥
दद्याद् गुंजाद्वयो मात्रा यावत्सप्तदिनं भिषक् ॥
पश्चात्प्रतिदिनं चैकां गुंजां यावच्चतुर्दश ॥ ४ ॥
घर्मयेद्रोगशान्तिः स्याद् हासयेच्च तथाविधं ॥
असाध्यां ग्रहणीमामातीसारस्रुतिकागदान ॥ ५ ॥
पांडुप्लीहाग्निमांदादि कुष्ठार्शः कामलागदान् ॥
हन्ति वृष्या तथा बल्या रसायनगुणप्रदा ॥ ६ ॥

पारद तोला ४, गंधक तोला ४ दोनों की कज्जली कर आम्र के फलके रसमें पकाया हुआ लोह भस्म तोला ४ भिलाय घोट लोहेकी कड़ाई में गायका घृत चुपड़ कर उसमें वह मिश्रण डाल, मंदाभिसे पकाना। गोबर पर रखे हुए केलीके पते पर ढालकर उपर ओर पता-गोबर दाव कर स्वांगशीत होने पर घोट रखें। दहीका घोल और जीरे के चूर्ण के साथ २ दो रती मात्रासे प्रारंभ कर ७ दिनतक देना पीछे प्रतिदिन एक एक रती बढ़ाना जहांतक १४ रती एकदिकी मात्रा हो। आराम हो जब तक इस मात्रा से चला रहें। आराम होनेसे फिर एक एक रती प्रतिदिन घटाते हुए बंद कर दें। रोगीका बलावल शरीरकी स्थिति रोगका स्वरूप रोग के साथ अन्य जो जो चिन्ह देखनेमें आते हो सबका विचार कर उपर लिखी मात्रा में न्यूनाधिक करना उचित लगे तो करते हुए औषध चालू रखे। और आवश्यकता हो तो अनुपान रोगानुसार बदलते रहें। असाध्य संग्रहणी आम्रातिसार सुतिकारोग पांडु तिल्ली मदाग्नि कुछ घवाओर कमला आदि रोगकी शान्ति होती है यह लोह पर्पटी बल रक्तवर्धक प्रौष्टिक और रसायन जैसा गुणकरती है।

सुवर्ण पर्पटी (र. सं. यो. र.)

शुद्धरसोशी तोलाः स्वर्णदण्डं तोलकैकमात्रं स्यात् ॥
 मर्दनविधिनीकीकृतमथ गन्धस्तोलाकाष्टकस्तत्र ॥ १ ॥
 क्षिप्त्वा कज्जलिकां कुरु लोहकटाहे घृताक्तद्वयां तत् ॥
 सुदग्निना च पक्त्वा गोमयसंस्थे दलेथ रंभायाः ॥ २ ॥
 सटाव्योपरि पत्रं दत्त्वा संच्छ दयेच्च गोमयतः ॥
 स्वांग शीतं ज्ञात्वा निष्कास्य च मर्दयेत् शुभे खल्वे ॥ ३ ॥
 मुंजाद्वयमारम्य स्याद् मुंजादशमिता यथा मात्रा ॥
 मधुना कृष्णाचूर्णैः संग्रहणी श्वास कास यक्ष्महरी ॥ ४ ॥
 हृद्या मेघ्या वृष्या बलशुक्र विवर्धिनी मता सद्यः ॥
 रससंहिता प्रयुक्ता सिद्धेयं स्वर्णपर्पटी पथ्या ॥ ५ ॥

शुद्ध पारद ८ तोला सेनाका बक तोला २ अथवा सुवर्ण भस्म तोला १ ढाल कर घोटें। स्वर्ण पारदमें मिल-जाय जब शुद्ध गन्धक ८ तोला मिलाव कज्जली कर लोहेकी कड़ाईमें गायका घृत चुपड़ कर मंद अभिसे पका कर रसरूप होनेसे गोबर पर बिछ ये केलीके पतेपर ढाल उपर-दूधरा पता-गोबर दाव स्वांगशीत होनेपर घोट उपयोगमें लें। २ रती मात्रा गृह्य और छोटी पील्लके चूर्ण के साथ प्रारंभ करे दूसरे सप्ताहमें प्रतिदिन एक एक रती बढ़ा कर दश रती प्रति-

दिनको मात्रा रोग शांति हो जब तक देते रहे । पीछे एक एक रत्ती प्रतिदिन कम करते हुए बन्द करें । संप्रहणी श्वास साँघी क्षय हृदयरोग आदिमें गुणकारी है । हृदय को बलवान करती है बुद्धि रक्षक वर्षक, पौष्टिक है यल हृमको बढ़ाती है । इस पर्पटी में ग्रन्थान्तरमें सुवर्णक १ तोला डालनेका भी पाठ है । अर्थात् ८ तोला पारद ८ तोला गंधक में १ तोला सेनाका चूर्ण के रसायन में दो तोला भी डाला जाता है ।

सिद्धनाथी कांचन पर्पटी (स्वाध गणपत)

शुद्ध पारद में तो १० में २ तोला स्वर्णभस्म अधरा सेनेका चूर्ण (पत्ता) डालकर घोंटे, मिल जानेसे पीछे उसमें शुद्ध गन्धक तोला ३० डाल कराली कर पीछे उसमें माणिक्य पिष्टी प्रवाल चन्द्रपुटी अन्नक भस्म निधन्द्र, लोह भस्म गौण भस्म प्रत्येक चार तोला डाल घोंट लोहेकी कटाई में गायका घृत चुपड़ कर सब मिश्रण डाल मन्द अग्निसे पकाना लोहेके तवेया परमो की चुपड़ कर हिलावे । रसरूप प्रवाही हो जानेसे गोधर पर बिछाये केलीके पत्ते पर तबराचे डाल उपर केलीका पत्ता दाव उपर गोमय दाव दे । ११ गा २४ घंटाके पीछे पर्पटी लेकर जोंट रखे । माघ २ रती से प्रारंभकर यथा बुद्धियेनादयसे रोगीको दालत देखकर आवश्यकताके अनुसार मात्रा बढ़ावे घटाव । शहद मयक्त्रनसे या शहद छोटी पीपलसे या रोगानुसार अनुपानसे देवे । चुराक भी रोगको देखकर देवे । संप्रहणी पुराना मुरछा बालेरा क्षय कृशता कमजोरी भाग्यक्षीणता उदर हृदय केष्ठोंके रोग आदिमें उत्तम है । बलबुद्धि शुक्लकान्ति मेघा आधुप्य वर्षक है ।

ग्रहणी कपाट (रफ) (र सं)

रसखिदुर तो १० में सुवर्णका वस्त्र (पत्ता) तो १ डालकर घोंट मिल जाने पर उसमें गंधक तोला २० डालकर घोंटना । मिश्र हो जानेसे उसमें रौप्य भस्म तो १. कनक बीज तोला २, लोह भस्म तोला ३ सावरसिंग भस्म तो. ४ सफेद सींगिया (श्वेत वस्त्रनाम) तो. २. अतिविष, विजया, नागरमोथ फूल मायूफल, इन्द्रजै, कूडेकी छाल प्रत्येक तो. ४ अफीम तो १०, सब साथ मिला कर, कोठेका गम और निबू और भांगरा प्रत्येक के रसकी एक मग्नना देकर गुंजा प्रमाण गोलो बनाना । माघ २ से ३ गोलो पानीके साथ देना । दिनमें दो या तीन दफे पानी के साथ देना । रोगका स्वरूप और दोषोंका निन्द देखकर मात्रा और समय न्यूनाधिक करना और अनुपानकी आवश्यकता हो इस प्रकार बदलने रहना । संप्रहणी, अनिसार, पुराना मुरछा, शल, बवागीर रजसाव, बुद्धिंश आदि रोगोंमें उत्तम गुणकारी है ।

प्रहणी गज केसरी (रस रान समुच्चय पृ ३५५ अनुसार)

शुद्ध पाण्ड तोला ५ और शुद्ध गंधक तोला ५ लेकर कनली बना कर ठोहकी कूड़ में पिघाल कर उसमें कोडी भस्म, सुवर्ण माक्षिक भस्म और शुद्ध गंधक प्रत्येक तो. ५ डाल कर गाय के गोबर पर बिछाये हुये केली के पत्ते पर डाल कर उपर केलीका पत्ता और गोबर दाब देना । २४ घंटा के पीछे निकालकर ठोहकी सरल में घोट कर उसमें सुवर्ण माक्षिक भस्म रफ तो. ५ और अश्रक भस्म तो. २० डाल कर सबका जितना वजन हो उससे आधे वजन में नीचे लिखा अति विषादि चूर्ण मिला देना । पीछे अरणि, मरेठी (महाराष्ट्री), भांग, अश्वगंधा और पचकोल (छेटी पीपल, पीररी मूल चवक चित्रकमूल और सेठका समभाग दे दिया हुआ चूर्ण पचकोल कहा जाना है) प्रत्येकके कवाथ के एक एक भावना देकर छायामे सूखा कर घोट रखना ।

नदी योगीने बनाया हुआ यह रस अनृत समान गुणकारी है । प्रातः और सां. दो दो रती शहदसे या दहीका घोल और जीरे के चूर्णसे देना । पुराना मुरछा, संप्रहणी, आंनों के रोग, हृदय के रोग, आमाशय और पक्वाशय के रोग, बवासीर, सब प्रकारके अतिप्रार, पेटका फूलना, आदिमें उत्तम गुण करता है ।

पथ्यमें दहीका घोल और छाछमें सैधानोन डाल कर गायके घोका बंधार दे कर खुराकके लिये देना और साभा लघु रुचिकर प्राही खुराक देना । खुराकका पाचन होता है, जठराग्नि प्रदीप्त करता है, आमका पाचन होता है और खुराक पर रुचि बढ़ाता है ।

रत्नकला चूर्ण—(र. स.) चिरायता, कुटकी, नागरमोथ, इन्द्रजी, सेठ, छोटी पीपल, काली मिरच प्रत्येक तोला ४, कूडेही डाल तोला ६४, चित्रकमूल तोला २ सब साथ कूटना । दो से चार माशा शहदसे या छाछ के साथ देना ।

प्रहणी हर कवाथ—(र. स.) सेठ, चित्रकमूलकी छाल, हरद, स्ताकरंजके बीज, नीलीका गर्भ पुननवा, काली मिरच, शरपुख, कूडेकी छाल सब समभागसे लेकर कूट कर रखना । मात्रा प्रातः और शामको २ से ४ माशा पानी या शहदसे देना ।

संप्रहणी और मुरछामें छाछ

गायके दहीके हाथसे या रवैसे मयन कर छाछ या घोल बनाना । सैम वायु प्रधान हो तो सैधानोन डाल कर, कफप्रधान हो तो नमक और काली मिरच डाल कर और तिल प्रधान हो तो शकर डालकर ली जाती है । संप्रहणीमें खास कर नमक बीरा और हिंससे गायके घोसे बंधार देकर खुराकके रूपमें देना । बवासीर, अतिहार और शुद्धम में भी छाछ हितकारक है ।

न तक्रसेवी व्यथते कश्चित् रोगो न तक्रमिहना भङ्गित ।
यथा सुराणाममृतं द्विताय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः ॥

संग्रहणी अतिसार चवासीर आदिमें स मान्य प्रयोग

प्रयोग १ सुबह और शाम खद्य न हो ऐसा प्राक्षापत्र २ से ८ तोला तक्र पिलाना । च्यवनप्राश २ से ४ तोला खिलाना । पचायत पर्पटी कुट्टावलेहके साथ २ से ४ रतो देना ।

प्रयोग २ अगस्तिसूतराज तोला ॥, ग्रहणी गजकेशरी, तोला ॥, सुवर्ण पर्पटी तोला १ साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना । एक सुबह एक शामको आवश्यकता हो तो एक रातको पानी या शहदसे देना ।

प्रयोग ३ अदरक रस तोला ५, गांधका घी तोला ४० में डालकर पकाना, पानी जल जाय जब बर्तनमें भर रखना । यह घी अतिसार संग्रहणी अदि रोगीको भोजन औषध आदिमें देना ।

प्रयोग ४ रसौत * अतीस, इन्द्रजौ, कुडेकी छाल सेठ, घाईके फूल समभाग कुट कर २ से ४ माशा प्रातः सायं शहद से देना । उपर चावलको पकाकर उसका पानी नमक हलदी डालकर खुराकके रूपमें पिलाना ।

प्रयोग ५ शांकरलोह भस्म तोला १, अत्रक भस्म, निश्वंद तोला १, प्रवाल चक्रपुटी तो १, महाचक्रकला तोला १ साथ घोटकर ६४ पुडी बनाना । सुबह शाम एक एक पुडी लेकर उपर दूध या छाछ पिलाना ।

प्रयोग ६ अहिफेनादि घटी:-खागेक या खजूरके बीज तोला २॥, सेठ तोला २॥, अक्रौम तोला १॥ साथ पीष निवूके रसमें चना जैसी गेली बनाना । १ से २ गोली दिनमें दो से तीन दफे देना । अतिसार, संग्रहणी, वच्चोंके दस्त और कैलेरामें भी यह अच्छा काम काती है ।

प्रयोग ७ दाडिमके बीज, शाहजीरा और शकर प्रत्येक ०। ०। तोला मिलाकर शहदमें खिलाना ।

प्रयोग ८ पाठा X अतीस, कुडेकी छाल, घाईके फूल, रसौत, सेठ, विलोम समभाग कुटकर २ से ४ माशा शहदसे देना । उपर चावलका पकाया हुआ पानी खुराकके लिये देना । यह संग्रहणी रोग के अलावा दस्तमें गिरता खून भी बंध होता है । इस चूर्णका क्वाथ करके भी पिलाया जाता है ।

रसौत- गुजरातीमें रसमंती, जिसका रस आंखमें अंजन किया जाता है ।
पाठा X गुजरातीमें कालीपाठ कहते हैं ।

चवासीर-अशोरोग-मत्सा

कारण-मुख मंद होने से, अथवा पाचन कम होनेसे, बिगड़े हुये वात पित्त एक दोष मात्र मेरु आदिको दूषित कर गदामें विविध आकृतिवाले मांसके अकुर उत्पन्न करते हैं। क्रोधसे, मलमल के साथ लटनेसे, दिनको सोनेसे, रातको जागरण करनेसे, उमड़क+ पांवसे बैठनकी आदतसे, ऊंट और घोड़ेकी अधिक सवारी, गुड़, लाल मिरच, मुगफली, सिंगडनेका तेल, वेजीटेबल घी और मिलावेकी गिरी आदि चीजें अधिक खानेकी आदत इत्यादि कारणोंसे बिगड़े हुये वात पित्त के साथ बदन होता हुआ रक्त मिश्रित बहन करनेवाली घमनीओमें कुछकर शरीरमें आकर गुदाकी बलीयोको दूषित कर मांसके अकुर उत्पन्न करता है। जब अनेक कारणोंसे अठरासि मंद होकर गुदाकका पाचन नहीं होता तब बड़ा हुआ मल गुदाकी बलीओमें अटपनेसे बलीओमें फूल जाती है और बड़ा मांसके अकुर उत्पन्न होते हैं। अति सीमंगसे, कठिन आचनगर बैठे रहनेसे, मलेरुसर्गके समय अधिक बल करनेसे, मलमूत्रका वेग रोशनसे बैठे रहनेकी आदतसे, शारीरिक श्रम कम करना और सुगन्ध अधिक खाना बहुत भारी नमकीली तीखी जलद चीजें खाना आदिसे, जलद दवा या दारु पीनेसे, पाचन क्रिया बिगाड़नेवाले कारणोंसे बवाहिरका दर्द होता है।

बिह्व-अपान वायु छूटता नहीं है। अपान वायुकी ऊर्ध्व गति होनेसे अपान उदान न्यान अपान और प्राण वायुको बिगाड़ कर अठरासिको बिगाड़ता है ताकि चवासीर का रोगी कुश और कतिहीन होता है। गरम चीज खानेसे जीभ लाल होकर उबमें चाँटा पड़ते हैं। फाँते घुमते श्वास चढ़ता है, शरीरमें ताप रहता है। मुख और हाथ पाय पर सूजन और नपुंसक जैसी स्थिति, आँखोंमें अंधेरा, मन चिंतातुर, साँधोंमें दर्द इत्यादि चिह्न मालूम पड़ते हैं।

सुखा चवासीर-अकुर सुखे बिना मांसमें दर्द होता है, थल-मोहता हो ऐसी मद वेदना होती है। फट्टे और लाल रंगके होते हैं। अकुर पर नख मारनेसे मालूम नहीं होता। गायकी जीभ जैसा खरसट। आकृति बेर, सड़े कच्चे फल और खारेक के बीज जैसी होती है। डकार, हस्तकी कबजी,

+ उमड़क बैठना-दस्त जाते गन्ध रिस प्रभार बिठा जाता है इस प्रकार बैठनेकी आदतको गुजराती में 'उमड़क बैठनु' कहते हैं।

झातीकी सृजन, सांघी, वास, मल सुखा और चभी फेनवाला, पीकना और पीलाके साथ आता है। रोगकी घनही-मध्य आंख मुख काला फिक्का, पीला-सा प्रवेद पड़ जाता है।

खूनी घनासी—मलसे जय न्वासीर दमता है तब गरम खून पड़ता है। खून अधिक पढ़नेसे रोग पीग कृष हृष्टीके गिर जग दीखता है, उत्साह कम होता है। जगसा फिरनेसे दम चढ़ता है। ताकात धीन हो जाती है। दस्त कठिन फाला सुखा ऊपरता है। भूख मद होती है। तीखा चिरचिरा जरा भी खा नहीं सकता। खाने से जीभ आ आती है। दस्तके साथ खून घुट्टे या मलसे मिला हुआ पड़ता रहता है। अघोवायु नहीं छूटता। निशु या खड़े पदार्थ खाने से मुख और पांव पर सृजन आ जाती है।

पथ्यापथ्य—गरिष्ठ, अजीर्ण करनेवाली वातुल दस्त कट्ठ करनेवाली, चदरमें पायुप्रकोप करनेवाली, गरम, दाहक, तक्षण चीजे खाना नहीं। साधा, लघु, पतला, दीपन पाचन करनेवाला खुराक लेना। दस्त प्रतिदिन साफ आने के लिये बड़ी हरडका चूण, अदलनासका गर्भया मधुविरेचन चूण योग्य मात्रासे लेना। दूधका खुराक ज्यादा लेना। छाछ, दहीका मश्रा शहद घृत डाल कर खुराक के लिये देना अच्छा है। सुण-जिमाकंद आंवळी, मुमभी सफरज, सीताफल दाह भात खीचड़ी, गेहू या जड़ी राज मन्थवन फली, गयका घी, खीर, मुंग, हरी और सूखी धान दूधी, पकक चौलाह मेथी, जेहीकी भाजी, वेणीज, आदि हितकारक है। लाल भिरच, तैल, मेदोकी चीजे मजरका मीठाई आदि हानिकारक है।

संज्ञकतः अथवा महासंज्ञकला (यो त पृ २०४)

(यो र. पृ. २९८ सूत्राघात प्रकरण)

शुद्ध पारद ताम्रतम, अन्न मम्म प्रत्येक चार चर त्रैला, गधक ८ तोर। पारद गधकका कजली कर उसमें ताम्र और अन्नक मिलाकर नागरमोघ दाडिमका रस, केनडेक पोटा का रस, सहदेवी का रस, गारपाठाका रस, पपंट वाला मुशली, शतांरी प्रत्येक में एक एक दिन भावना देकर इस औषधके बराबर नीचेका तिक्तादि चूर्ण समान भागसे मिलाना।

तिक्तानि चूर्ण—तिक्ता (कुटकी), गिलोयका सत्व, पपंट, वाला, छेटी पी ल, चन्ना, और अनंतमूल (सारिवा) सब समान लेकर कूट कर चूर्ण बनाना। यह चूर्ण समान मिलाकर दाक्षका रस या क्वाथसे सात भावना देना और चनेकी

भाण्ड गोलो बनाना । यह रस खनी या हल्के बवासीर, अम्लजिह्व, प्रदर, अंतर्दाह, वायदाह, जलन, रक्तमूर्छा (बलदोषहर),

रक्तमूर्छा रक्तपित्त तापज्वरखनानलः ।

मूत्रकृच्छ्राणि सर्वाणि प्रमेहानपि दुस्तरान् ।

उपर या नीचेका रक्तजान, शरीरका तपना और गरमीका ज्वर, मूलकृच्छ्र प्रमेह आदिको शांत करता है ।

योग रत्नाकरमें गुप्तलीके रयान में रामशीतला के रसकी मायना देना लिखा है । और तिक्ततादि चूर्ण में चागदी छोटी पीपल के रयानमें भाषवी लिखा है ।

हम योगतर्गिणी के इस पाठके अनुसार यह औषध बनाते हैं ।

अग्निमुख लेह (र. सं)

निसोत, नित्रक, निगुंड़ी गोरामुंड़ी, भुइआहली, प्रत्येक तो ३२ या कवाथ का कपहल न भर इस कवाथमें चयविद्वग तो १२, सोंठ, छोटी पीपल, काली मिरच प्रत्येक तो ३, बड़ी हरड बड़ेड़े (विभीतक) आंझला प्रत्येक तो. ५, शिलाजित तो. ४८ सबको धराये हुये कवाथ में डालकर पकाना । और घट हो जाने से सूखा कर पावडर रखना या चन् प्रमाणकी गोली बनाया ३ से ६ गोली या ३ से ६ रती पानी के साथ देना । सब प्रकारके सूते या सूखी बवासीर, भंदागि, पेटके दद, अजीर्ण, पड़ रोग, दूजन, रुकोप, तिल्ली, जीवर आदि दरदोंमें उत्तम फायदा करता है ।

अक्षः कुटाय (र. सं)

पारद तो. १०, मधक तो. १०, ताज मम्म अम्रक मम्म, वरक मम्म, माक्षिक मम्म प्रत्येक तो ६, अतीस, विभीतक इन्द्रजौ, खरज के बीज, हरड, चित्रक सैवानान, कलिहरी काली मिरच, दती मूल, निसोथ, खुशी दूध, पकाया हुआ सोहागा, जव्वार, प्रत्येक तो. ४ कूट कूट छानकर मिलाता और सबसे तीन गुना गौमूत्र डाल कर पकाना । घट हो जाय जब चने प्रमाण गोली बनाना । मात्रा ३ से ४ गोली पानीमें देनेसे सब प्रकारके बवासीर और गुदाके रोग मिटते हैं ।

अक्षः करी केसरी -स (र. सं)

पारद तो. १०, मधक तो. १०, कजरी कर उसमें सूखा शिलाजित तो. १०, बंग मम्म शकर लेह मम्म, सुर्ण माक्षिक मम्म, अम्रक मम्म प्रत्येक तो ४ मुक्त पिष्ट, प्रवाल पिष्ट, माक्षिक पिष्ट, वैकान्त पिष्ट, प्रत्येक

ले. ६-प्रबको-मिलाकर, काला हंसराज, बड़ी हरद, रसौत, पंचामृत और काली प्रास-अधिकारी के एक एक भावना देकर छाया में सूखा घोट कर रखना। मात्रा २ से ६ रती शहद मखन के साथ। सब प्रकार के बवासीर, रक्तसाव, प्रवर आदि रोगों में उत्तम गुणकारी है।

पांकर लेह भस्म-दुर्गाभारि लेह (मात्र. १७६ अशोषिकार)

अच्छे लेह अर्थात् स्टील या गजवेलको मनशील पात्रिक पत्तु और पारद इनको मिलाकर लेह पर लेा करना और अग्नि में पका कर लाल हो जाय जब त्रिफलाके कनाथ में बुझाना। इस प्रकार सब लेहका चूर्ण हो जाने तक पुनः पुनः मनशील आदिष लेप कर करके त्रिफलाके रस में बुझाते रहना। सब लेहका चूर्ण हो जाय जब नीचे लिखे औषधोंके रस या कवाथ में मिलाकर एक एक गजगुट देना। त्रिफला, अदरक, भांग, भांगरा भानकंद भिलोवा, चित्रक, सूरण ढाक और धुहर। अच्छी भस्म हो जाने के पीछे धीरे मिलाकर लेहकी कड़ा में पकाना। २ से ४ रती गायके या भेडियाके दूधसे या शहद और मखनसे देनेसे सब प्रकारके बवासीर नष्ट होते हैं। वात पित्त, कुष्ठ, विषम ज्वर, गुल्म, पांडुरोग, घेन, आलस्य, अरुचि, शूल, परिणामशूल पमेह सुगन रक्तसाव, इत्यादि रोगोंको दायन करता है। इस भस्मको दुर्गाभारि लेह भी कहते हैं। आयुष्य, बल तेजको बढ़ाता है। बलीपलित नाशक है। सब प्रकारके बवासीर के लिये यह शिद्ध औषध है।

करंजादि चूर्ण (र. घं.)

लता करंज चीजका गर्भ, नैठ, इन्त्रजो, अगहरी (वाण) के पत्र, सैधानोन बड़ा हारड, चित्रक, समन वसे कुट रखना, मात्रा २ से ४ साशा छोल के साथ देनेसे सब प्रकार बवासीर भिड़ते हैं।

बवासीर पर सामान्य औषध (घरेलू औषध)

प्रयोग १ जिमो कंद (सूरण) के उपर दो से अंगुल सफेद मिट्टी लगाकर अगरामें पकाना पीछे उसमें से सूरण निकालकर टुकड़ा कर, तिल के तेलमें जीरासे बघार दे कर सधानोन छिड़ कर छोल के साथ खिलाना।

प्रयोग २ बड़ी हरदका चूर्ण और गुड आवा बड़ी हरदका चूर्ण और एककर मिर्चिकर २ से ४ मात्रा दो वखत छोल के साथ देना।

प्रयोग ३ इलायची भज और छीलकाके साथे कुट कर ०। तैला, पानी के साथ खिलाना। एक सासमें सब प्रकारके मग भिड़ते हैं।

प्रयोग ३ चमार घूली के पान सोला १ पीस का राय के इस के साथ खिलाना फिराकमें चावलको हलने नमक डाले घी और जीराका वपार देकर गायके दही मथ कर उसके साथ खिलाना । १४ दिनमें मसा मिटता है ।

प्रयोग ५. राय तो. ४, छिलकाकी साथकी इलायची तो. ४ पायाण मेद तो ४०, रावकर तो. ३॥ सप साथ कूट कर चार ने आठ माशा दिनमें एक या दो दफे दहीके मठेके साथ देना ।

प्रयोग ६. रसौत (रसवती) तो. ०॥ पानीमें पिघालकर दहीमें मिलाकर पिलाना और मसे पर रसौत लगाना । सात दिनमें आराम होता है । गरम चोत्र खाने न देना ।

प्रयोग ७. इन्द्रजी और शकर समभागमें कूट कर आधा होला दही के साथ देने में गिरता हुआ लुन अट्ठता है ।

प्रयोग ८. नागकेसर इन्द्रजी और शकर सब समान लेकर कूट कर घृत बनाना । ८ से १२ मासा पानी के साथ एक या दो दफे देना ।

प्रयोग ९. पचाया हुआ सोदागा तो. १॥ पोंस कर दूधकी १४ पुटी बनाना । इसी १ चक्र पेशीके चौर कर बीज निकाल कर १ पुटी इसमें का कर चाव कर खिलाना इसके उतर पांच घात पेशी खुर की ओर खिलाना । इस प्रकार १४ दिन तक सोदागकी १८ पुटी खिलानेमें बवालीर मिटता है ।

प्रयोग १०. गायके दहीका मट्टा तो. २० इसमें खजूर तो. ६ डालकर बीज निकाल कर उसमें पानी तो. २० और नागकेसर तो. ०॥ सब मिलाकर १४ दिन तक खिलानेमें बवालीर मिटे ।

प्रयोग ११. गोमयान (गोमायरी) तो. ४. चावडर का पीना । मि. १४ दिन तक खानेसे बवालीर मिटे ।

प्रयोग १२. देसी ओषधी बीज (जिना छिन्दा मिश्रण इसमें गेहूँ तो २ से ४ के गायका दूध तो ३० और शहद तो १० मिला र दो घंटा तक रखना । गठके सेने दहन पीना । १ मास के प्रयोगमें बवालीर मिटे ।

प्रयोग १३. बाजदंशराव (दंशरी) का रस तो. १० और शकर भाव तो. १४ दिन तक पीलाना ।

प्रयोग १४. छिन्दा-दोहा का रस तो २ पुराने घृतमें मिलाकर खिलाना । एक छाल पीना । ७ से १४ दिनोंमें बवालीर मिटे ।

प्रयोग १५. कुटेई छाट और शकर समभाग कूट कर तो. ०॥ पानीमें देना ।

प्रयोग १६. अमरकी छिन्दा, छाव, गायकी, देवदार, इन्द्रजी, रावविर्ग, कटु केटे मिश्रण, रसनिन सौंठ सेली पीस समभागमें घृत बनाना । पानीके साथ २ से ४ मासा देना ।

प्रयोग १७. मजीठ तो ५ रसौत तो ५ हिमजी हरड तो ५. शकर तो १५ सब छाय कूट २ से ६ पाषा तक पानीसे १५ दिन देना।

प्रयोग १८ चोलादनी भाजीका रस (तंडुलीमक ताजकजानी भाजी) तो ५ भाकर मिलाकर ७ दिन पिलाना।

प्रयोग १९. पारावत (पारिवा-पक्षी विशेष) की चाक, २से३ माषा दूध के साथ ७ दिन देना ॥

प्रयोग पर लगानेका लेप जलम या धुइ देनेका प्रयोग

लेप नं. १-वसौस कच्ची गायके मखनमें घोट कर मससे पर लगाना।

लेप नं. २-नागरमोथ तो २॥ घी तो ५. दोनों गरम कर उसमें बोदार तो १॥, अफीम तो १॥ घुरे के पत्रका रस तो ५ सब को अच्छी तरह घोटना। मलम जैसा हो जाय डपी में भर देना। दिनमें २ दफे लगाना।

लेप नं. ३-माल कागणी के बीजको पानीमें पहेन पीस कर मससे पर लगानेसे रक्तस्राव बंध होता है।

लेप नं. ४-हलदी, कढवी चिसोड़ी धुहरका दूध, संधानेन समभाग लेकन गौमुख या पानीमें महीन पीस कर मससे पर लगाना।

लेप नं. ५-करंजके बीज बकरी के मूत्रमें पीस कर मससे पर लगाना।

लेप नं. ६-गह्वना मूल और आकके पान दोनों समभाग पीसकर मससे पर लगाना।

लेप नं. ७-अपामार्ग (अघड़ा) का पत्रागको महीन पीस कर छुवदी पनाना गुप्त पर बांध कर लगेत बांधना और रोगी सोता रहे अघा करना। ७ दिनमें समा गिर जाता है।

धुइ नं. ८-पुष्पका बाल खर्पकी कांचली, आकका मूत्र, खीजडा (जम्बोडा बटा साड) का पान समभाग कूट कर धुइ नेने से मससे सूख जाते हैं।

धुइ नं. ९-गलको सरसोंके तेलमें मिलाकर मससेका धुइ देनेसे रक्तस्राव बंध होता है।

धुइ नं. १०-मेंशके बिग तो ५, हाथी दानका चुरा तो ३. देवदाली-फुकडवेण तो ३ अजवायन तो ७ गंधेके सूखे लोडे तो २ बाली (कमेद) के छिलके तो ३ सब प्राय कूटकर धुइ देना।

लेप नं. ११ गडी हरडको मखनमें घोंस कर मससे पर लगानेसे जलन मिटता है।

लेप नं. १२-अफीम, सफेद बछनाग, कुचला सीनेरी समान भाग लेकर कूटका, पानीमें महीन पीस मससे पर लगानेसे सूख जाता।

अजीर्ण

अपचन अग्निमान्द्य मंदाग्नि खुराक पाचन न होना

कारण—जो मूर्ख लोग पशुकी तरह बिना प्रमाण खुराक खाते रहते हैं वे लोग अनेक रोगोंको उत्पन्न करनेवाले अजीर्ण के भोग होते हैं। शरीरको गुण फायदा करने वाला खुराक खानेवालेको और भूखका ध्यानमें रखकर प्रमाणपर भोजन करने वालोंको कोई रोग नहीं होता। अजीर्ण यह अधिमांश का ही भेद है। मंदाग्नि तात्कालिक पीडा नहीं करता लेकिन यह दीर्घकाल तक टिकने वाला और मालूम न पड़े इस प्रकार शरीरको हानि पहुँचानेवाला है। जब किसी रोगका हमला होता है तब खयाल होता है कि इसका मूल कारण मंदाग्नि की उपेक्षा है और अजीर्णका परिणाम प्रत्यक्ष सामने आता है। पाचन शक्तिसे अधिक खुराक लेनेसे, हरवस्तु खाकर शक्की की चीजे खाते रहनेसे, बाजारकी मोठाड़ चीरड़ा आदिकी आदतसे, चाहा काफी आईस्कम शरबते बरफ अधिक लेते रहनेसे, दो समयसे अधिक वस्तु खानेसे, भोजनका समय अनियमित रखनेसे पाचन न होनेपर खाते रहनेसे, बिना चाबे जलकी जलदोसे बड़े बड़े मात्रा (कोकिया) लेनेसे, अति उपवास करनेसे, भोजनके समर्थ मनप्रसाद न रहने, क्रोधसे कामेक्षीपन करनेवाले बाजांकर खुराकें टवाड़ का अधिक उपयोगसे, बैठे रहनेकी आदत-व्यवहारसे, अनियमित और अपने शरीरको अनुरूल न हो, वैसा खुराक लेते रहनेसे, मलमूत्रका वेग रकनेसे, इर्षा क्रोध लोभ द्वेष चिंता आदि दुर्गुणोंसे, किसी द्रव के कारण भूख कम लगने पर खुराक लेते रहनेसे, दिनकी खानेकी रातको जागरण करनेकी आदतसे, संजेंमा नाटक अधिक देखनेसे, भोजन करके तुरंत पैदल अधिक चलनेसे आदि कारणों से यह रोग उत्पन्न होता है।

चिन्ह—किसीको दस्त यदि होता है किसीको दस्त अधिक होता है। किसीको दो या तीन दिनको दस्त होता है। नहि पावन हुआ खुराक निश्चल जाता है तथा आराम होता है। किसीको कठिन शुष्क दस्त होता है तब भयकर स्थिति हो जाती है। मूल मंद होती है, मुखमें उत्कलंद वमन की इच्छा रहना, उकार अधिक आना, छातीमें दाह, पेटमें दर्द शूल अथवा वायुदुर्गंधाला, श्वासका रुंधन घमराहट मस्तकमें दर्द चकर आना, शरीर तपना काम काजमें किसीसे बात चिते करनेमें निरुत्साह लगाने बेचैनी निद्रा कम आदि चिन्ह अजीर्ण वालोंका मालूम होते हैं। यह रोग दीर्घ कालिक होनेसे रोगी दुर्बल कृश कमजोर होता

है। शरीरका तौल कम होता जाता है। शरीर पीछेपन पाहुँ जैसा बर्ण दीखता है और यह रोग दीर्घकाल रहनेसे अस्थिर या संप्रदणी का रूप लेता है।

आमाजीर्ण—इस रोगमें शरीर भारी भार रूप लगता है। उत्केलद (उबका) आना गाल और नेत्रपर सूजन, खाये हुए खुराकके गंधका बकार आना आदि मालूम होते हैं। **विदग्धाजीर्ण** में भ्रम तृषा शोष मूर्च्छा पित्तका उपद्रव, धुआ के साथका खट्टा बकार पसीना दाह आदि होते हैं। **विष्टग्धाजीर्ण** में शूल पेटमें पीडा आध्मान आफरा चढ़ना पेट फूलना, वायुका उपद्रव मल अधोनायु रुक जाना, शरीर पकड़ जाना, मन में घमराहट संधिमें शरीर के भिन्न भिन्न अवयवों में दद आदि होते हैं। **रुक्कोपाजीर्ण** में खुराकपर अभाष अशीति अरुचि छातों में भार वैचेनी रगनि, किधी कामपर अरुचि आदि मालूम होते हैं।

पथ्यापथ्य—साधा लघु जल्दी पाचन हो जैसा सुहाक लेना। जितना पाचन हो उतना ज़िम्मा। दस्त पिशाचका देग रुकना नहि। जागरण साग करना नहि। सीनेमा आदि देखने का व्यसन रखना नहि। हराया सुखा हुआ अधिक प्रमाणमें और बाजारकी मोठाई चीवड़ा जैसी चीजे खाना नहि। अजीर्ण मालूम पहनेसे खुराकवद कर देना। उपास के समय पेटमें कुत्र भी नहि डालना। एक सप्ताह में शरीरका आराम देने के लिये एक दिनकी रजा मांगते हैं जैसे एक सप्ताह में पेटको भी आराम देनेके लिये उपवास करना चाहिये पेटको आराम मिलनेसे शरीरके प्रत्येक अवयवमें भी आराम मिलता है। भोजन के समय बीच बीचमें थोड़ा थोड़ा पानी पीते रहना। अजीर्ण मालूम हो तो एक दो या अधिक उपवास करना। उपवास करनेके पीछे भूख लगे जब उपवास छोड़ देना और पंचे साधा लघु खुराक लेना। प्रति सप्ताह उपवास करनेकी इच्छा हो उन्होंने किसी तिथि या वार नियत करना। प्रति सप्ताह उपवास न कर सके उन्होंने प्रतिपक्ष पन्द्रह दिनमें एक दिन उपवास करने के लिये अष्टमी या एकादशी जैसी तिथि को अगर तारीख अटकूट हो उन्होंने प्रत्येक अष्टमी ग सकी १० को और आखीरकी तारीख को उपवास करनेका नियम रखना। यदि उपवास के दिन भूख अधिक लगे तो दूध या कुछ फल लेना। भूख न लगेतो पानीके सिवा उपवास में कुछ भी न लेना। दीर्घकाल के अजीर्ण मंदाभि वालोंने उपवास के दिन दीपन पाचन औषध छाँड़के साथ लेना। हमेशा दो दफे दस्त जानेकी आदत रखना। चाह काफी केको आदिका व्यसन हो धीरे धीरे छोड़ देना। दिनमें दो बख्त और शारीरिक परिश्रमका व्यवसाय करने वालेने प्रातःकाल दूध गुट शोटी गाँठीया जैसा नास्ता कर लेना और पीछे दो बख्त भोजन।

मानसिक कार्य ओकीसका घंटे घंटे दिमागी करनेवालोंने दो बफे भोजन करना आजकल प्रातः कालमें चाह या दुध काफी ब्रेड रोटी पुदी बिस्कीट आदि का गमन बहुत हो गया है, जिसकी कोई आवश्यकता नहि है। क्योंकि १० या ११ बजे पर तो उन्हें भोजन करना है। तो इसके पहिले दो तीन घंटा पर पेटमें कोई चीज डालनेकी आवश्यकता नहि। १० बजे भोजन करनेवालोंने चाहा काफी दुध भी पेटमें क्यों डालना ?

रजाके दिन खूब धुमते हैं और खूब खाते पीते हैं और पेटको विभ्रान्ति देने के अलावा अधिक भार डालते हैं यह आरोग्य के लिये बाधक है। चाव कर छोटे प्रास लेकर भोजन करना। भोजन के बीच बीचमें पानी एक दो घोंट पीते रहना छाँछ दूध भोजन के साथ लेना हो तो सारा कटोरा भोजन के पीछे नहि पी जाना लेकिन बीच बीचमें घोंट घोंट पीते रहना। रात्री के भोजन में छाँछ दही नहि लेना, दूध ही लेना और दोपहर के भोजन में छाँछ दही लेना। यदि दही लेना हो तो उसका मठा बनाकर बचि हो तो शकर गुड या शहद तीनों मेंसे कोई डालना और थोड़ा धी डालना सब मिलाकर दिनके भोजन में बीच बीचमें घोंट घोंट लेते रहना। न रात्री दधि भुंजोत न च पच्युतशकरं। भोजन के समय मन आनन्दमें रखना। भोजन करते समय क्रोध नहि करना। अन्नका तिरस्कार करते नहि जिमना। ठंडी या वर्षा ऋतु में आवश्यक कपड़े पहिन ना। ग्रीष्म ऋतुमें खुले वस्त्र या चारीक कपड़ा पहिने रखना। पानी ठंडा पीने के लिये बर्फ डालनेकी कोई आवश्यकता नहि है। हाँ मजदूरी कारीगरिक परिश्रम करने वाले कि जिनको ८ बजे पर काममें चढना है उनको ७ बजेपर कुछ नास्ता करनेकी जरूरत अवश्य है। ऐसे लोग चाहा गांठीआ चाहा ब्रेड चाहा भजिया आदि अधिकता से खाते हैं, उनको चाहिये कि गेहूँ रोटी या ज्वार बाजरी का रोटला के साथ गुड दुध छाँछ खा कर कामपर जाये। और पीछे दुपहरके और शामको भोजन करे। दुपहर के पीछे २ या ३ बजेपर चाहा काफी पीनेकी आदत सब लोगोंको धीर रही है वस्तुतः यह खुराक नहि है पेटमें जाकर खुराकका काम नहि करता वस्तुतः यह मनका लेन है। यदि विभ्रान्ति के समय कुछ पीना हि चाहिये ऐसी इच्छा रहती होतो गुडका या शहदका पानी पी लेना अच्छा है। चाहा आदि न पीनेसे शामको अच्छी भूख लगती है और भूखमें किना हुआ भोजन शरीर को पुष्टि देकर आरोग्य रखता है। रजाका दिन शरीरको विभ्रान्ति देना है लेकिन उस दिन पेटको विभ्रान्ति नहि मिलती बल्की रजाके दिन खूब खा पी कर पेटको परेशान किया जाता है। आइस (बर्फ) का उपयोग नहि करना

कैकौन कैरी प्रटकीवा या गोलामें पानी अच्छा ठंडा रहता है वह पीना । बहुत गरमी पड़ती हो जैसे प्रदेशमें ताजा निम्बू १ निचोड़ कर उसमें थोड़ी राकर छालकर एक रास पीना । मोहन के पीछे पान सुपारी लोंग इलायची बड़ी सौंफ यदि सुप्त शुद्धि के लिये खाना । मुखवासके पीछे देतीन घोंट पानी पीना । खुराक दूर शायत चाहा काही पान सुपारी आदि कोई भी चीज खाने के पीछे दो तीन घोंट पानी पनेका नियम अवश्य रखना ताकि वैसे पदार्थ के सूक्ष्म अंश दांत मुखमें न रहे और अज नलि शुद्ध रहने से अज नलीमें वैसे पदार्थ चिपकें रहने से अनेक रोग होने का सम्भव रहता है वच जाय मोहन मे अदरख हरी हलसी काली मोच हिंग जीरा निम्बूका टुकड़ा आदि खाने का नियम रखना ।

अश्लुडो गोन्दी (शाग म. ट. ३०-२२१)

शुद्ध पारद शुद्ध गंधक शुद्ध वछनाग अजमोद बड़ीहरद बहिडा आपली सजीवार यवक्षार चित्रक मैन्वानोत्र जीरा सौवर्चल (सचर) वायविडग नमक सेठ छोटी पीपल काल मिरच गव समान भाग लेकर सवा गितना तौल हो तना शुद्ध कुचला मिठाई निंबू रससे गोली बना प्रमाण बनाना १-मन्दा मि भूख कम लगना अजीर्ण खुराक पावन न होना पेटका वायु शाफरा आग्मान आदिमे २ से ४ गोली दिन भामे पानीसे देना । पहरेज खात्र नहि हैं ।

नोट—मैषज्य रत्नावली में शागंधर का हि पाठ दिया है परंच ज्युषा के स्थानमे अर्थात् सेठ पीपल मरीच के स्थान मे मैषज्य रत्नावली कारने टकन-सोहागा कर दिया है । मैषज्य रत्नावली समग्र ग्रन्थ होनेसे उसमे जिस मूल ग्रन्थका पाठ दिया है वह देना चाहिये था । एष परिवर्तन करना ठीक नहि ।

अज्जण कण्टक—(भाव जठराधिकार) सोहागा छोटी पीपल गिलेय शुद्ध हिगूल प्रत्येक एक शेर काली मिरच २ शेर निम्बू रससे गोली चने प्रमाण बनाना । ३ से ६ गोली पानीसे अजीर्ण रफ मिटता है जठराग्नि प्रदीप्त होता है ।

क्रन्दाद रस इहान—(र स) पारद तो. १६, गंधक तोला ३२ कज्जली कर उसमे ताप नस्न तोला ४ और लेह भस्मे तोला ४ मिलाय पर्यटकी क्रियासे एरडी के पत्ते पर ढालना पीछे उसे पीस कर लेहेकी मटई से रख कर उसमें पक्का ७ शेर नीचूरा रस जलाना रस छालते जाना हिलाते रहना सय रस अल जाय तब बचडी जैसा रहने पर उतार लेना । पीछे उसमे सेठ छोटी पीपल पीपलमूल चित्रक अमलवैत प्रत्येक द्रव्य आठ आठ तोला मिलाना और पकाया हुआ सोहागा ११ तोला सजीवार ६ तोला और काली मिरच १२०

गोली मिलाय चनेका खारना प्रवाही होता है उसके ७ भावना देना यदि चना खार न मिले तो सुरकेकी ७ भावना देना। सुखाकर गोली चने प्रभाव बनाने ३ से ६ गोली दिन भरमे देनेसे अजीर्ण मंदाग्नि पेटका वायु शूल गुल्म बवाक्षीर पिंडो बद्ध उदर रोग आदि मिटते हैं।

नोट. इस क्रव्याद रसका पाठ रसालत समुच्चय का है इसमे पंचकाल अमलवेतके वन्य की ५० भावना देनेका और सबके बराबर टंकण और टंकणसे आधा कृष्ण लवण और सबके बराबर काली मिरच ढाल चने के प्रवाही क्षार की भावना ७ देना लिखा है।

भाव प्रकाश मे पंचकाल और चुका (सुरका) को एक भावना देनेका और सबके समान टंकण और उतना हि कालीमिरच और काली मिरचसे आधा बिडलवण छालकर चने के क्षार की ७ भावना देना लिखा है रसालत समुच्चय अथवा भाव प्रकाश के पाठानुसार क्रव्याद रस बनना चाहे बना सकते है हमारा ५० सालका अनुभूत पाठ यहाँ उपर दिया हुआ है।

शस्त्रवटी वृद्धत (र. स. अजीर्ण) इमलीका क्षार तो ४, पंचलवण का प्रत्येक लवण चार चा। तोला, छांख भस्म आठ ८ तोला, पिपरीमूल चित्रक पारद गंधक छोटी पीपल यवक्षार सजीखार काली मिर्च सोंठ शुद्ध बछनाग अजमेद गिलोय हिंग प्रत्येक एक एक तोला मिलाय निम्बूरसकी ३ भावना देकर गोली ३ से ४ रती बनाना। दिनभरमे २ से ४ गोली पानीसे देनेसे सब प्रकारका अजीर्ण मिटता है। भूख लगती है पेट के सबरोग गुल्म प्लीहा बद्ध उदर रोग बवाक्षीर आदिमे उत्तम गुण करती है।

नोट—भैषज्य रत्नावली, भाव प्रकाश आदिमे शस्त्रवटी का पाठ भिन्न भिन्न है। यहा रस संहिता का अनुभव सिद्ध पाठ दिया है।

हिगाष्टक चूर्ण (भाव) सोंठ पीपल मिरच अजमेद सेंधाजोन जीरा साहा जीरा और हिंग सब सम भाग लेकर कूट रखना २ से ३ भासा पानीसे देनेसे पेटके सब रोग मिटते हैं।

अग्निमुख चूर्ण (भाव) सजीखार यवक्षार चित्रक पाठा करंज बीज पंच-लवण इलायची तमालपत्र मारंगी वायविडग हिंग पुष्कामूल कचूरा दाहहृदी निबोथ पागरमोथ वच इन्वर्जौ कोकम जीरा आवला हरड कलौजीजीरा अमलवेद इमली के फल का गर्भ अजमेद देवदार छोटी हीमजी हरड अतीस प्रियशु ह्युषा अमलतायका गर्भ तिल मुक्क सहेजना कौकिलाक्ष और ठाक इन पाँचोंका

हार और गौमू में पकाया मसूर सब समान भाग लेकर कूट कर बिजोरा निम्बूके रसमें ३ दिन तक पीटने रहना फिर मक्का और अदरकके रसकी भावना देना । मात्रा १ से ४ मासा पानीसे देना । अजीर्ण गुल्म प्लीहा बवासीर उदररोग अत्रिपित्त सारण एपेन्डिक्स पेटकी प्रथी आदिमें उत्तर गुणकारी है । जठराग्निको प्रदीप्त करता है ।

लवण भास्कर (भाव अजीर्ण)

नमक ८ तोला, ^१सौवर्चल ५ तोला, ^२बीडनोन सेंधानोन, धनिया छोटीपीपल पिपरीमूल, तमालपत्र, कलौजीभीरा, तालीसपत्र, नागदेसर चवक, अमलवेत प्रत्येक टे। दो तोला, काली धीरच, जीरा, सेण्ड प्रत्येक एक एक तोला, दाढीमबीज सुखा ४ तोला (हरा दाढीम बोज है तो ८ तोला लेना) दालचीनी और इलायची प्रत्येक आधा आधा तोला सब साथ कूट कर रखना यह लवण भास्कर भाव तोला छौछ या सुरके के साथ लेनेसे वायु कफसे उत्पन्न गुल्म प्लीहा उदररोग मसा-बवासीर मलावरोप-वज्जी भगदर शूल सूजन श्वास खाँसी आम पडना हृदयका रोग पथरी पांडु कृमि और मर्दाग्निको मिटाता है खुराक का पाचन करता है ।

समशर्करा चूर्ण (भाव अजीर्ण)

इलायची १ तोला, दालचीनी-२ तोला, नागकेसर ३ तोला, काली धिरच ४ तोला, छोटी पीपल ५ तोला, सेण्ड ६ तोला और सबके बराबर साफ़ कूट कर मात्रा १ से ४ मासा पानीसे सब प्रकारके अजीर्णमें गुणकारी है ।

अजीर्णकण्टक (र.र.सु अजीर्ण)

पारद १ तोला, गंधक १ तोला, वज्रनाग १ तोला, काली धिरच ३ तोला मिलाय छोटी कटहरीके फलके रसकी २१ भावना देना पीछे मटरके समान गोली बांधना । १ से ४ गोलीको पीछ या चाय कर उपर तिलपणीका मूल एक तोलेको पानीमें पीछ उसके साथ मिलाना दिनमें २ या ३ दफे लेनेसे कोष्ठरा विसृचिका रोग मिटता है सब प्रकारके अजीर्णमें दो जाती है ।

अग्निमायि-मंदाग्नि

रसशेषाजीर्ण भूख न लगना

अतिशय जलस्य पानान्नियमरहितसोजनेन मनुजानां ॥

मलमूत्रवेगरोवाजिद्राऽतिपमात्तथा च जागरणात् ॥१॥

न हि पचति भुक्तमन्नं, पश्चाद्भवति ह्यजीर्णं रोमेष्वै ॥

मूलं विविधगदानां तस्माद्द्रष्टव्यं हि जाठरो वह्निः ॥२॥ र. सं.

“बहु ज्यादा पानी पीनेसे, नियम बिना अनियमित रीतिसे जिमनेकी आदतसे, दस्त और पित्तबके वेग रोक्नेसे, निंद नियमित न लेनेसे, जागरण करनेसे ऐसे कारणोंसे न्याया खुराक न पचनेसे तो अजीर्ण होता है जिस अजीर्णसे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं जठराग्नि प्रदीप्त रहे इस प्रकारका आहार विहार विमोरे रखना ।

स्वरूप—भूख कम लगना इसे रसशेष अजीर्ण भी कहा है । पाचक इन्द्रिय की क्रिया में बाधा पहुंचने पर अन्नका पाचन होना चाहिये वैसा होता नहीं है । न्याया हुआ अन्न पाचन होकर पोषक पदार्थ द्वारा शरीर की वृद्धि और पोषण होता है और दृग्गता मिलती हैं । इस क्रियाको पाचन क्रिया कहा जाता है । अन्न नली (गलाका मार्ग) पकाशय छोटे आंत्र और बड़े अक्षप्रक्षार ३० कूट लम्बी नली मुखमें शुरू होकर गुदा तक पहुंचती है उसे पचनेन्द्रिय भी कही जाती है । न्याया हुआ खुराकका पाचन होकर रस रक्त सूत आदिसे परिणाम पाकर शरीरमें फैलाकर शरीरका व्यापार व्यवस्थित चलता है । निरूपयोगी भाग बहार निकल जाता है । अन्न पाचन होना इसका अर्थ यह है कि उसका द्रवण होकर रक्त बनना है । अन्न चाबने में आता है, दाँतोंसे चर्वण क्रिया होती है जब लालित्वाटक पिंडद्वारा अमृतस्य उत्पन्न द्वारा अन्न के साथ मिलकर पेटमें जाता है । वह जठर रससं मिश्र होकर वह से यकृतशिरा द्वारा यकृत में जाता है । वहाँ विशेष क्रिया होकर रक्त बन कर रक्तशाय हृदय में आकर वहाँसे सारे शरीर में फैलता है भ्रमण करता है । इस प्रकार शीघ्र दृष्टे अन्नकी व्यवस्था होती है । किसी कारणसे उसमें विघ्न आता है तब अतिमांस अजीर्ण आदि रोग होकर अन्यान्यरोग उत्पन्न होनेका संभव रहता है ।

कारण—चाय काफी कोफे भीरी योगावेद आदिका अमृत, अतिप्रिय, ठंडे रहनेकी आदत नौकरी या लज्जा में बैठ रहनेसे शारीरिक व्यायाम न मिलने पर भी गतिष्ठ अन्नमान लेते रहना, लीजोंको काफी पीयूष पानी भरना खोर्ड करना, दाँतों और स्नायुओंका दृष्ट बलवान करने वाली घरेलू

कामरूपी ककुरत न करना, सीनेमा नाटक देखने के लिये जागरण करना, नियमित निश न लेना, चाहा काफी अधिक पीते रहना, खाँड़ शक्कर का प्रमाण बेटमे अधिक डालते रहना, हरवस्त खाते रहना, दाढ़ मांस अधिक लेना, उपवास कर आँठोको एक सप्ताह या पक्षमे एक वखत आराम न देना इत्यादि कारणोसे जठराग्नि मंद होता है।

चिह्न—खटे डकार आते हैं। पेटमे वयु भरता है, दस्त होता है, या कब्जी होती है। खुराक पर रुचि कम होती है। सिरमे दद, जीमपर मलका जमाव, मुखमे चिकनाद, लार परना कमी वमन हो उमई उयका आवे, कमी मुखमे चाँदा पडे आँखोमे हाथ पावके तल ओमे जलन हो, छाती मे घडकन धमराहट स्वभाव उग्र तमोगुणी हो, किसी काममे मनका उत्साह न रहे इत्यादि चिह्न देखने मे अति है।

पथ्यापथ्य—खुब चाव कर खाना। दाँत निकालकर चोगठा बना हो उन लोगोने खानेके समय उसे चढाना पीछे उसे साफ कर दाँतोमें अन्न कण छुस गये हो निकाल धो कर डिशीमे रखना। दिनरात चढाये रखनेसे दाँतके पेटे दंतवैष्ट कमजोर होजाते हैं। दो हि वस्त मोजन करना। ७० सालकी आयुके पीछे एक वस्त हि मोजन करना। शामको दूध या फल लेना ठीक है। फिर भी शामको भूख लगे हो साधा मिताहार करना। दूधसे खीचड़ी मिला कर खाना। प्रातःकाल चाहा काफी आदि पीनेकी कोई जरूरत नहि है। जिनको १० या ११ बजेके भीतर मोजन करना है उन्हें चाँह काफी ब्रेड रोटी गुडी गंठीया आदि नास्ता करने की बौइ आवश्यकता नहि है। शारीरिक परिश्रम करने वाले मजदूर वगैरे महेनतकस मनुष्योको शामपर जाने के पहिले कुछ खाना चाहिये क्योंकि उनको वारा बने तक शारीरिक परिश्रम करना है। इन लोगोने प्रातःकाल रोटी दूध, रोटी गुड, रोटी दही, रोटी छाँछ आदि अल्प खुराक नास्ताके रूपमे करना चाहिये। नाटक सीनेमा अधिक देखनेसे पेट बिगडता है और उसके बिगडनेसे अनेक रोग के बीम बनते का मोका आता है। इसलिये आदर विहार निशा आदिमे नियमित रहेने से शरीर अच्छा रहता है। और जठराग्नि मंद नहि होती।

अग्निदीपन गोली (र स)

पारद गंधक छोटी पीपल, सोंठ हलदी कचूरा जटामांसी हरड आँवला सेबानेल प्रत्येक एक एक, दोला और काली मिरच १ दोला पिस कर नींबु रसमें दो दिन तक पीट कर मटर, जैसी गोली बनाना। २ से ६ गोली दिन

अग्नि जलानेसे जठराग्नि प्रदीप्त होता है। भूख लगती है। दस्त आता है। अजीर्ण मिटता है।

स्वादित्वाद्युक्त (र. स.)

अधक भस्म ३ तोला, वन भस्म ३ तोला, माषिक भस्म ३ तोला, दालचीनी, काली मीरच रुमीनस्ती प्रत्येक नग आत तोला अङ्गुली ५ तोला, लिंग १० तोला, जायफल १ तोला, भाग ३ तोला, सेठ १ तोला, बादामगिरी ४० तोला, केसर ३ तोला, इलायची २० तोला सब कूट कर शहदमे मिलाय सबदेह जैश बना कर एक मास तक चनाई मिट्टी बर्तनमे रख छोड़ना। प्रति सप्ताह हिलाना। एक मासके पंछे ४ से ८ मास तक प्रतिदिन खानेसे जठराग्नि प्रदीप्त होती है, भूख लगती है, शक्ति आता है, दिमाग हृदय फेफड़ा आदि बरवान होते हैं।

रसोन्नत वटी (लघुवटी) (र. स.)

लहसुनकी कली छिलका निकाली तोला ४०, लिंग सेठ पीपल काली मीरच अजवायन सैधना जैरा कलोज जीरा दाऊदजीर प्रत्येक चार चार तोला और ठोबान २ तोला लेकर, पहिले लसूनमें लोहान डाल घड़िन पीस पीछे सब मिलाय निबू रससे गोली ४ रतीकी बनावे। सुठे घासको २ से ३ गोली देनेसे जठराग्नि प्रदीप्त होता है, खुराक पाचन होता है, दस्त आता है, नेत्र मिटता है। पेटमे वायु नहि रहता। अजीर्ण बतानी औषध देना। भोजनके पहिले नमक अदरक खाना। अतीस ६ से ८ रती छोटी पीपल ६ से ८ रती मिलाकर पानीमे सुपह ले देना। दिगाइक चूर्ण अथवा लवण भास्कर २ से ४ मास पानीसे देना। चवनप्राशके साथ छोटी पीपलका चूर्ण ६ से ८ रती देना।



विसूचिका कोलेरा हैजा महामारी

अतिसारस्तथाछर्दिः पीपासोऽङ्घ्रिचनं भ्रमः ॥

वेवर्ण्यं हृदये पीपा दाहः शूलं शिरोरुजः ॥१॥

असुप्तं मूर्धरोऽथ कम्पो मूर्च्छा अनिद्रता ॥

विसूचयाः तन्मि विन्द्वा नि सृष्टयुरूपो गदोऽस्तद्वचं ॥२॥ रस संक्षिप्तः

कारण—यह रोग भोजवाले प्रवेशमे प्रौढ ऋतुमे या वर्षामे उत्पन्न होकर फैलता है। किसी भी प्रदेशमे या ग्राम शहरमे किसी भी कारण उपस्थित न होने पर भी हवा विगडनेसे मरको कि तरह फैल जाता है। कभी कभी आहार विसारकी अनियमितासे, रेल्वेकी सफरमे कच्चे ठंडे वासी सड़े हुए पदार्थ खानेसे भी यह रोग हो जाता है। लम्बी सफरकी परेशानीसे, खराब गंदा दुर्गंधी ताँलाव कुत्ता या टाँकेका पानी पीनेसे अजीर्ण रहते हुए खाते रहनेसे यह रोग होजाता है। हवाके विगडनेसे फट निकला हुआ यह रोग सार्वत्रिक-चेपी है। फीर भी पेटके समालने वाला आदमी रोगी के सहवासमे रहता हुआ भी बच जाता है।

चिह्न—यह रोग कभी शीघ्रकारी होता है कभी फसा हुआ रोगी, रोग लषा चलनेसे बच जाता है। शीघ्रकारी मे फसा हुआ रोगी, जलदी सृष्टु-वण होता है। इस रोगमे किसीको दस्त ज्यादा और वमन कभी होता है, किसीको वमन ज्यादा और दस्त कभी होता है। किसीको साथ बुखार भी रहता है। खासका रुंधन होता हैं। प्रारभ मे कठिन गाढ़, पीछे पीला पीछे सफेद दस्त होते है। किसीको केवल दस्त हि होते है उलटी वमन मिलकुल नहि होता। और दस्तके साथ पाँवकी पिण्डलीयामे गुठनी चढनी है। किसीको वमन जोरसे होकर प्रथम अन्न पीछे चिकना पानी और पीछे खून निकलना है। जिस को उलटी कम होती है उसे कोलेराके विपक्षी ज्यादा अरु होता है और रोग भयंकर रूप पकृता है, वस्त उलटी के साथ पेटमे कलेरामे नाभीमें पैदुमे दर्द होता है। दस्त उलटी और दर्द बढने के साथ शरीर की गरमी उष्णता कम होती चलती है, स्पर्शसे शरीर ठंडा लगता है। शरीरके गंभीर कमी होनेसे तृषा बढती है, पीछे हाथ और पाँवमे गुठली चढनी है। पहिने पाँवकी पिण्डलीयामे पीछे हाथ मे और पीछे सरे बदन मे गुठली चढनी है जब स्नायु सख्त गांठे गांठे बाटे दिखने हैं। आंखे गहरी उत्तरनी हैं। शिक्ल फिक्का धिंतादुर, पसना चिकना, चक्कर, नालीकी गति क्षीण, पानीक तृष ज्यादा, पिशाबबंद,

बमड़ी त्वचा काळे रंगकी, गाल बँठ गये, होठ काला सूखा, दाँत खुले दीखे दाँतपर छारी जसे, दद' बढ़ता जाय जब नाडी क्षीण होती हुई अंशुय होनी है। शरीरकी गरमी ९५ से ८५ तक घट जाती है अंतमे मूर्च्छा बेहोशी बढ कर मृत्यु हो जाता है।

रोगी बचने का हो तो औषधका अच्छा परिणाम होने लगता है। दस्त और बमनका समय लंबा होने लगता है। शरीरमे १०१-१०२ तक बुखार चढता है दाँत बढ़ होने के पीछे एकघ पीलेरंग का दस्त होता है, पेशाब आने लगता है, तृषा कम होती है।

केलेरासे बचनेके नियमः—मरज चलता हो तब हमेशा भूखे पेट नीमके पेड़े पत्ते धाव कर खाना अथवा पीस कर पनी मिलाय पी जाना। खुराक कम लेना भूख रहने तक। बन सके तो २४ घंटा मे एक दफे भोजन करना, शामको सूर्यास्त के पहिले खा लेना। दोनो बरत गर्म खुराक लेना। सुबहका शामको और शामका सुबहको नहि खाना। हरा शाक कम खाना। पानी उवाँल कर तामे के बत नमे रख कर पीना। दूध गर्म कर पीना। खुराक सादा हलका जल्दी पाचन हो एसा लेना। मिष्ठान्न बाजारकी सीठाई फरसान नहि खाना। घरमे पकाया हुआ खुराक हि लेना। उपवास नहि करना। दूध हर बरत गर्म किया हुआ हि बच्चेको पिलाना। फूट या सुखा मेवा कम खाना। जुलाव या दस्त लानेकी दवा लेना नहि। दस्तकी कच्ची रहती हो तो आरोग्य वर्षनी २ से ४ गोली या थोडा हरडका चूर्ण गुड के साथ लेना। मकानकी आजुगजु और मकान के अंदर सफाई रखना खुली हवा और प्रकाशवाले मकान मे रहना। इस रोगकी हवा चलती हो जब तक नीचे लिखा चाय सुवे शाम पीना अच्छा है।

लुट्थादी पेय—सीठ छोटीपल काली मिर्च दाहिनी लोण प्रत्येक एक एक तोला सब कूट कर रखना आधा तोला चूर्ण ले तुलसी के पत्ते २ तोला और हरी चाय २ तोला और शकर यथारुचि, पानी ६ कप डाल और १० मिनट के पीछे कपडछान कर वैसे हि वर के छोटे बड़े सबने पीना यदि इच्छा हो इसमे दूध गर्म किया हुआ डालकर चाय या काफी की तरह पीना। हरी चाय न मिले और चाय काफी का व्यसन हो तो वह डालकर चाय बनाकर पीना।

पश्यापथ्य—रोगीको खुली सुखी हवा प्रकाश वाले कमरे मे रखना। पानी उवाँल ताबेके बर्तन मे ठंडा कर पिलाना। कपडे बिछाना दिन मे २-३

दस्त चढ़ना । मन्त्रद्वय दूर खड़े में डालना उर राख डाल देना । पत हाथमें गुठली लगे वहाँ चपी करना दावना, तेल मालीस करना । अच्छा तोत्र मद्य पिलाना, मद्य शरीर पर मलना । महानारायण तेल में थोड़ा नीलगिरी तेल मिलाय मालीस करना । कन्तूरी रती २ कपूर रती २ लघूनका रस तो ०॥ अदरकका रस तोला ०॥ मद्य या ब्रांड़ी ५ तोला में मिलाय पिलाना । पेट पेड़ुं और दूसरे जिस भाग में दद^१ होता हो शूल निकरता हो वहाँ नीलगिरी तेल लघून या प्याज पलांडु का रस या ब्रांड़ी मर्दन करना । सोठण केरा चूर्ण शरीर पर घिसना ।

विसूची कालान्तक रस (र. सं.) रससिन्दूर तो ८, पारद तो ४, गंधक तो ४, अन्नक भस्म तो ६, सोठ सोहागा चक्क चित्रकमूलकी छाल, निर्गुंडीके बीज कनक बीज पिपलीमूल सज्जेखार संचल जाखार अपामार्ग क्षार कालीमिरच अजमोद, हिंग शख भस्म शुद्ध वछनाग नागरमेथ जायफल लेंग प्रत्येक दो दो तोला, भांग ८ तोला और अफी- १ तोला सब साथ पीस अदरकका रस निम्बूका रस और तांबूल (बिना कथा चूना लगाये) का रस प्रत्येक की एक एक भावना देकर ३ रती रती की गोली बनाना । आधा आधा घटामे २ से ३ गोली नाळि यरके पानी से देना । दस्त वमन कम होता जाय वैसे गोली देनेका समय बढाना । यह विसूचिका केलेरा मुरडा संप्रहणी वमन गुल्म प्लीहा यकृत आदि में अच्छा गुण करता है ।

विसूची हरी वटो—(र. सं.) भुनाहुआ धनिया की दाल जो मुगवांस रूपमें भोजन के पीछे खायी जाती है, तोला ४, ^१जायपत्री तो ३, जीरा तो ३ अतीस इन्द्रजौ ^२अजवायन, ^३कुबेराक्षीबीजकी भीग लेंग प्रत्येक तोला एक एक, बिडनेन सोठ बिल्व फलका गर्म कार्ली मिरच छोटों पीपल पिपलीमूल राल इलायची हरड प्रत्येक तोला ०॥ आधा भव कूट कर निवू रसमें २ रती कि गोली बनाना । प्रति पाव पाव घटा के पीछे एक गोली प्याजके रससे या मद्यसे देनेसे विसूची केलेरा अतिसार मुरडा संप्रहणी मिटते हैं ।

विसूची विजय रस—(र. र. सं. अ. १६) पारद शुद्ध सोहागा पकाया हुआ समभाग लेकर जायफलकी ७ भावना देना मात्रा १ रतीमें ४ से ६ मासा शकर का चूर्ण मिला कर गायके दहीके भटठे के साथ देना ।

१ जायपत्री गुजरातीमें जाव^२त्री कही जाती हैं । २ गुजरातीमें अजवायन अजमा जो मसालामें खाया जाता है । ३ कुबेराक्षी—लता करजके बीज कोपका कर छिलका निकाल गिरी लेना । गुजरातीमें कांकवा कांकचिया कहते हैं ।

केलेरामे सामान्य उपचार

विस्चुची हरांजन (यो त. लघु त. १४) बीजेराकी जड़ सेांठ पीपल काली मिरच, वरंज बीज सबको छांछमे पीस सेगठी बनाना छांछ-तकमे घीस अंजन करना ।

अंजन—अपामर्ग ओंगाके पते काली मिर्च दोनों समभाग लेकर घोंडेके मुखकी (लाला मुखके फेन) में पीस सेगठी बनाना पानीमें घीस अंजन करने से केलेरा मिटती है ।

विस्चुचिकाहर मर्दन—दालचीनी तमालपत्र अरंडमूल सदृजनाका मूल या पत्ती कुछ बज शतावरी सब समान भाग लेकर छांछ में पीस शरीर पर मर्दन करनेसे विस्चुचिका मिटती है ।

विस्चुचिका हर तेल—उपर लिखा दालचीनी आदि छह चीजे पांच पांच तोला छांछमें पीस उसमें २ सेर छांछ और पक्का ४ सेर तिलका तेल डालकर पकाना । छांछका जलांश जल जाय घटक द्रव्यों पक जाय जब उतार कर स्वांगशीत होने देना । दुसरे दिन कपडछान कर तेल लेना । इसका सारे बदनमें मर्दन करनेसे विस्चुचिका मिटती है ।

अदरकका रस तोला २० प्याजका रस तोला २० अफीम तोला ०१ का कसुया (प्रवाही) कर सब साथ मिलाय एक एक चम्मच प्रति आधा घटा पर पिलावे । दस्त वमन कम हो जब समय बढावे अफीमके अभावमें अफीमरूका अर्क (टिककर ओपीयम) के २ से ७ बुंद रोगका रूख देख कर उपरके प्रवाहीमें मिलाय एक एक तोला पिलाते रहना ।

अग्निजाह्न—डाम देना—नामिकी आलु बाजु कुंडली आकार का डाम देना । और सिर परका बाल निकाल तालुमें और गरदन पर ३ डाम देनेसे केलेरा मिटती हैं । लेहेकी छड़ीसे अग्निमें तपाय उसका छेडा लाल हो जानेसे उपर लिखे स्थानमें अग्निका डाम दिया जाता है ।

कृमिरेग पेटके जन्तु.

कारण—अजीर्णसे अजीर्ण पर और बिना भूख लगे खाते रहने से, अधिक छोटे शरीरको अनुकूल न हो वैसा अन्न पान लेनेसे, ठंडे गगी मोहनको आदत से, चीकने ठंडे पदार्थका सेवन, दही और गुड अधिक खानेकी आदतसे, जलचर प्राणीओके मांससे आमाशय और पक्वाशयमें छोटे बड़े जंतु उत्पन्न होते हैं।

चिह्न—ताप गूल हृदय रोग चेचेरी अन्नपर मभाव दस्त पेटमें दर्द कृशता अफारा पेट चढ़ना पेट घंटा मोटा होना भ्रम पाचन न होना, दस्त ज्यादा होना या दस्तकी कड़वी, गुदा में खुजली, निंद कप, दम चढ़ना, आंखें निस्तेज, चेहरा फिका आदि चिह्न पेटके अंदर कृमि जंतु उत्पन्न होनेसे होते हैं।

पथ्यापथ्य—मधुर पदार्थ बाजारकी मिठई बंद करना। हरे या सूखे शाक पत्र छोड़ना। मांस घी दूध दही पत्ताखे शाक, खट्टी मधुर चीजे आटाकि चीजे आदि नहि खाना। कड़वा तोखा कफनाशक मोहन लेना। तिलका तेल नमक शहद हिंग अजवामन लहसुन हल्दी कोकम नीठानीम जीरा धनिया, हरा धनिया अदरक आदि मोहनमें लेना।

१ मुस्तादि कावथ—(योगशतक) नागरमोथा सहजनेकी छाल हरद मूसाकानी बहिडा समभाग कूट उसका १ तोलका कावथ कर उसमें वायविडंग ३ मासा और छोटी पीपलका चूर्ण १ मासा डालकर पिलानेसे कृमि निकल जाते हैं।

२ खुरासानी अजमोद का चूर्ण २ से ३ मासा—मे ४ से ६ मासा गुड मिलाकर रातवासी पानीसे लेनेसे पेटके जंतु निकल जाते हैं।

३ ठाकके बीजका चूर्ण १ से २ मासा शहदसे लेना १२ से १५ दिनमें कृमि निकल जाते।

४ वायविडंगका चूर्ण २ से ४ मास शहदसे १५-२० दिन लेना खुराक में आवला और ममालावाला मुगका पानी और चावल का खुराक देना.

५ दाडिमकी छाल आधा तोला कूटकर उसमें ४० तो बानी छोड चतुर्थांश रहने पर कपडछान कर उसमें २ से ४ तोला तिलका तेल डालकर पिलाना ३ से ५ दिनमें पेटके कृमि निकल जाते हैं।

६ अजुन के फूल वायविडंग १ कलहारी भोलावा वाला राल कुछ प्रत्येक दस दस तोला चदन बीस तोला साथ कूट कर यहधूत श्वास में लेनेसे

१ गुजरातीमें घोले शींगडियो वछनाग.

पेट के कृमि निकल जाते हैं और शरीर पर मस्तक में बालों में धुँवा देनेसे जू लीख-
भर जाती है। बिछाने में देनेसे खटमल मरजाते हैं। कमरे में देनेसे मच्छर
भाग जाते हैं।

७ वायविडंग तोला ०।१ का कवाथ कर उसको वायविडंगका चूर्ण २ से
३ मास ढाल कर पीनेसे अथवा वायविडंग के कवाथको तिलका तेल २ चम्मचमें
विडंगका वधार देकर पीनेसे एक दो सप्ताह में जंतु निकल जाते हैं।

८ विडंग ईन्ड्रजो ढाक के बीज समभाग चूर्ण करके २ से ३ मास
गुहके साथ एक दो सप्ताह खानेसे पेटके जंतु निकल जाते हैं।

९ नीमके पत्ते ५ तोलाको पीस उसमें २०-१५ तोला पानी ढाल कर छान
कर शहद मिलाय पीनेसे जंतु मर जाते हैं।

१० दाँतके क्रिमिपर धूप—इंद्रायण के पकाफल लेकर उसको निधूम अंगारा
पर रख नली द्वारा दाँत या दाढ़ पर धुवा देनेसे पीड़ा मिटती है और जंतु निकल
जाते हैं धुवाँ देते-वस्तु मुखसे जो लार पड़े वह पानी भरे बर्तनमें पड़ने देना
तो निकले हुए जंतु दिख पड़ेगे।

११ वैसे हि छोटीया बड़ी कटहरी के पके फल को तिलका तेल चुपड़ निधूम
अंगारा पर रख नली द्वारा धुवा दाँत दाढ़को देनेसे जंतु निकल जाते हैं पीड़ा
जाँत होती है।

१२ धतूरे के पानका रस तोला २० अथवा तांबूल पत्रका रस तोला २० में
पारद तोला १ घोटकर बालमें घीसकर ढालनेसे यूँका और लिखा जू और लीखे
भर जाती है निकल जाती है।

१३ धतूरे का पान तोला ४० को पीस कर अथवा धतूरेके पानका रस तोला
४० में तिलका तेल तो ८० ढाल पकाकर पानी जल जानेसे कपड़ छान कर, लेना
यह तेल बालमें ढालनेसे जूए भर कर निकल जाती है।

कीटमर्द रस—(२ र स ५१५) पारद १ गंधक २ अजमेद ३,
विडंग ४, कुत्रला शुद्ध ५, ढाक पलाश बीज ६ साथ पीस ६ से १२ रत्ती
प्रातः साय शहदसे देनेसे और उपर नागरमोथा १ तोलाका कवाथ पिलानेसे
कृमि निकल जाते हैं। यह रस रक्तरक्त सच्चयका है। भैषज्य रत्नावली कारने
इसका नाम क्रिमि मुदगर दे दिया है।

कृमिहरो घटी—(र. सं.) पारद गवक खुरामानी अजमेद ^१भेलीया, कालाजीरा कहुआ, कपिला डोकामाली छोटोहरद रेवंचीका शीरा भींटीआवल पलाश बीज इन्द्रजै लता ^२करंजीज, चिरायता, कपूर, हिंग, निमोथ, संचळ, वायविडंग जमाल गोटा अमिया हलदो समभाग लेकर पीस बकरीके दूधमें गोली रती प्रमाण करना २ से ३ गोली पानीसे लेनेसे दस्तसे कृमि निकल जाते हैं ।

पलाश बीजादि चूर्ण—(र. सं.) डाककैजीज इन्द्रजै वायविडंग नीम के बीजकी गिरि चिरायता समभाग लेकर चूर्ण करे २ से ३ प्रासा चूर्ण गुठ के साथ खानेसे ३ दिनमें पेटके कृमि निकल जाते हैं ।

१ गुज. सीकैतरो ऐळीयो जो कवारपाठा से बनता हैं ।

२ गुज. काकचिया काकचा

पाण्डु रोग कामला

कारण—अति विषय बहुत खटटे पदार्थ अति नमकीन, अतिमधवानकी मिट्टी खानेकी तीव्र जलद पदार्थ खाने की आदत, अतिरक्तता, जलम, ओरतोको प्रसव के समय ज्यादा खून गिरना अत्यातं, संप्रहणी के रोगमे या बवासीर मयामे खून गिरना आदि कारणो से तथा क्षय अर्बुद सूत्रपिंड के रोग, विषम ज्वर मलेरिया का बुलार, यकृत लीवर के रोग आदिसे वात पित्त कफ दूषित होकर हृदयमे रहे हुए पित्तको बलवान वायु क्षुब्ध करनेसे वह पित्त हृदय मे रही हुई दश धमनी नाडीओं द्वारा सारे शरीर मे फैल कर कफ रक्त मांस आदि धातुओको दूषित कर त्वचा और मांस के बीच रहने से शरीरका रंग पीला हरा और बहुत चरके पांडु रोग होना है उसे पाण्डुरोग कहा जाता है।

चिह्न—प्रारंभमे हृदयका कम्य त्वचा सूक्ष्म अरुचि पिसाब पीला पसीना न होना भ्रूव मन्द अंखो पर सूजन दस्त कब्ज आदि चिह्न होते हैं। पीछे कृन और चरबी कम होती है। शरीर कृश होने लगता है प्रभाव क्रूर होता जाता है। मुखमे पानी ज्यादा आता है अर्थात् अमीरस निकलने लगता है। ठंडी चीजे या शीतस्पर्श अच्छा नहि लगता। बुलार आता है। कान मे आवाज शरीर सफेद फिकूका हाथ पांव मुख पर और कभी सारे बदनमे सूजन होती है। ज्यादा चलने से या सीढ़ी चढ़नेसे दम चढता है। छाती मे धक्कार दस्त कब्ज पेटमे वादी रहती है। राती रात दिन उदास रहता है। इस रोगीका रक्तक्षीण हो गया शरीर भूत दांत नख आंखे पीले पड़ गये हो ताप अरुचि नमन डबका तृपा वैचेनी गुण लिंग योनि पर सूजन शोथ हो पसीना आकर शरीर ठंडा पड़ जाता हो तो रोगी बच नहि सकता।

मिट्टी खाने से हुये पांडु रोगमें रक्त रक्त आदि दूषित होते हैं। मिट्टी का पाचन न होनेसे शिराओके मुखोके रक्त देती है। इन्द्रियोका बल तेज प्रभाव कार्यक्षमता ओज नष्ट होते है। इससे शक्ति क्षीण होती है चमडीका रंग बदल जाता है। जठराग्नि मन्द होती है।

मिट्टी के पाण्डु रोगमे तन्मा आलस्य खांसी श्वास शूल अरुचि, नेत्र गाल मुख पांव नाभि जननेन्द्रिय मे सूजन, कृमिकी उत्पत्ति और खून कफके साथ पड़ता है। दस्त होते है।

हलीमक—काला पाण्डु, जिसमे त्वचा और शरीरका रंग पीली मिश्रित हरा काला हो वह हलीमक कहा जाता है। इसमे बल उत्साह जठराग्नि क्षीण

होते हैं। थोड़ा ज्वर रहता है। मैथुन में अप्रीति श्वास तृषा चक्रेर आदि चिन्ह-
मालूम होते हैं। इसका उपचार पाण्डु रोग के अनुसार हैं। जो चिन्ह अधिक
मालूम हो उसे ध्यान में रख औषधोक्त रोग करना।

पथ्यापथ्य—हमेशा एकदो दस्त हो वैसा करना। खुराक साधा देना
आटाका खुराक मिष्टान्न रोटी आदि बंद करना। करेला दुधो सूरण परवल-
अदरक हरा धनीया जीरा हलदी सेंधानेन आदि देना।

कामला

कारण—पित्तोष्ण मार्ग से न जाता हुआ खून में मिलने से, पित्तक नली में
कुछ पदार्थ घुस कर उसका रास्ता बंद होने से, पित्तशय की नली को सूजन
या संकोच होने से या अन्य कारणों से मार्ग बंद होने से, दस्त की कच्ची से,
चिंता शोक अजीर्ण दुखार विष आदि अति खट्टे अति विदाही गरिष्ठ पित्तकारक
पदार्थ खाने से ऐसे अनेक कारणों से यह रोग होता है।

चिन्ह—आंखों का सफेद डोला पीला हो। पेशाब पीला उत्तरे नख चमड़े
पीली हो, शरीर में बेचैनी सुन्ती, खुजली तृषा आँखें अश्रु पसना थूक पीले हो
दस्त कच्चा, सब पदार्थ पीले दीखे कमी थूकमी पीला होता है। पेट में वायु
बढ़े। अन्न पाचन न हो हो उकार आवे, शरीर कृश खुराक कम नाम से वमन में
दस्त में मुख से खून, गिरे निद्रा घेन रहे। नाड़ी का वेग एक मिनट में ५० से ६०
बखत चले। कम लगे रोगी को वमन अरुचि उबका ताप बेचैनी श्वास खांसी
में चिन्हे दिखते हैं। मज्जमूत्र कालेया पीले हो सूजन चढ़ गई हो वाद तृषा
आफरा हो जठराग्नि मंद हो ये चिन्ह असाध्य के हैं।

पथ्यापथ्य—मुख जो जो चिन्ह दिखे उसको चिकित्सा करना। करना।
दस्त एकदो होना पेशाब ज्यादा वैसा करना। भारी चिकने पदार्थ खाँड़
रक्तचक्री चीजे, खट्टे पदार्थ दही छाँछ, रातवासी खुराक घी दही चरबी वाले
पदार्थ खाना नहि। तबीत को अनुकूल हो वैसा खुराक लेना।

पाण्डुरोग और कामलाकी चिकित्सा

पुनर्नवा मण्डूर—(भाव) पुनर्नवा निसेय सेठ पीपल काली मिरच वायविडग देवदार चित्रक कुष्ठ इलदी हरड बहिडा आवला दन्तीमूल चवक इन्द्रजौ कुटकी पिपलीमूल नागरमेथ वा चकडासेगी करवी भजमेठा वायफल प्रत्येक ४ तोला मण्डूर भस्म सबसे दुगुना लेंकर सबको कपड छानकर उसमे सबसे ८ गुना गौमूत्र डाल कर पचाना गुड जैसा गाटा होजानेसे ६ रती भारकी गोली बनाना सुबह नाश्त ३ से ६ गोली पीम कर छाँछ या पानी के साथ देना । यह गोली पाण्डुरोग कामला हथीमर के लिये उत्तम गुणकारी है । अश्विनी कुमारने यह बनाया है । पाण्डुरोग के साथके श्वाम खासी सूजन ज्वर शूल आदि उपद्रव भी मिटते हैं । इसके अलावा दूसरे रोगोंमें भी उत्तम गुणकारी है । जैसे कि कुष्ठ घातरक्त कृमे बवासीर उदररोग सूजन दम खाँसी शूल आदि ।

नवायस लोह—(भाव. रस प्रतीप) सेठ पीपल काली मिरच हरड बहिडा आवला नागरमेथ वायविडग चित्रक प्रत्येक ४ चार तोला और लोह भस्म ३६ तोला सब साथ घोंट रखना । मात्रा ८ से १८ रती तक दिन भरमे शहद घी छाछ गौमुत्र या पानीके साथ देना । यह पाण्डु रोग कामला और उसके उपद्रवोंको नष्ट करता है । और हृदय रोग उदररोग सूजन कृमि कुष्ठ भगंदर सूजन जोश आदि रोगमें भी गुणकारी है ।

घात्री लोह—(भाव) आवला लोह भस्म सेठ पीपल काली मिरच हलदी सममान मिलाना । मात्रा ६ से १२ रती शहर घृतसे या पानीमे देनेसे कामान कुन कापला आदि मिटते हैं ।

मण्डूर वडक—(भाव) सेठ पीपल काली मिरच हरड बहिडा आवला नागरमेथ वायविडग चवक चित्रक दास हलदी दालचिनी स्वर्णमाक्षिक भस्म पिपली मूल देवदार प्रत्येक चार चार तोला और मण्डूर भस्म काली सबसे दूना मिलाय सबसे ८ गुने गौमूत्रमें पका ४ रती की गोली बनाना । सुबह शाम ८ से १२ गोली तक दी जाहीं हैं । उपर छाँछ १ कटोरा पिलाना । भूब लगने पर खुराक देना । पाण्डुरोग कामलाका खाम अपघ है । इसके अलावा कुष्ठरोग उदररोग सूजन उत्पन्न बवासीर मसा लीवर और तिलो का बढ़ना आदि में उत्तम गुणकारी है ।

लोह रसायन—(रस संहिता) शुद्ध पाण्ड तोला ८, गंधक तोला १६ कजली कर उसने लोह भस्म तोला २४ डाल घोटकर उसके कारारपाठाके रस में ३ दिन

कालीवन तुलसी के रस की भावना देकर उसमें नीचे लिखी औषधीया मिलाना ।
अड़सा छाल गिलेय चित्रक हरड बहिडा आवला निगुं'डोछाल पलाशबीज
विजयसार छाल गली (नोली),^१वबूलके रसवाले पके फल बलामूल शतावरी
गोखरु वायविडंग द्रोणपुष्पी नागरमेथ कायफल कुटकी शिलाजीत प्रत्येक दो दो
तोला कूट कर मिलाना पीछे त्रिफला के कायकी ३ भावना लेहकी सरलसे या
लेहके कढ़ाईमें रगकर देना । घोट कर रखना ८ से १२ रती प्रात और शामको
पानीसे या छाछसे या गौमूत्रसे देना । पाण्डु रोग कामला हलौमक २ मास
सेवन करनेसे मिटते हैं । और बवासीर उदररोग लीवर प्लीहा कुछ खूनका विगाड
सूजन आदि रोगमें गुण करता है ।

मधु मण्डुर—(रस सहित) मण्डुर भस्मको त्रिफलाके क्वाथ की ३
गौमूत्रकी ३, क्वार पाठाकी ४ और पचासूत की ७ गजपुट देनेसे सिद्ध होता है
प्रत्येक रस में घोट घोटकर गजपुट देना । इसकी मात्रा ६ से १२ रति दिन में
२ दफे पानीसे देनेसे २ मास में पाण्डु रोग कामला आदि मिटते हैं ।

१ शिलाजीत १० से १२ रती गौमूत्र के साथ देनेसे कामला मिटती है ।

२ इलायची और पिपलीमूल समभागसे कूट ३ से ४ मास पानीसे पाण्डुरोग
में देना २१ दिन तक.

३ आरोग्यवर्धनी गुठी तोला ४ मंडुर बटक तोला २ लेह रसायन तोला २
साथ घोटकर ६४ पुढी बनाना । दिनमें दो बख्त पानीसे देनेसे पाण्डु कामला
आदि रोग मिटता है ।

४ हरड बहिडा आवला अड़साछाल चिरायता नीमकी छाल कुटकी गिलेय
समभाग कूट १ तोला का क्वाथ २१ दिन पिलाना पाण्डु कामला में

५ अपामार्ग के पंचांगकी भस्म जवाखार कुटकी बड़ी हरड समभाग कूटना
४ से ६ मास पानीसे २१ दिन देना.

६ चिरायता नीमकी छाल त्रिफला पटोल अड़सा छाल गिलेय पर्वट भांमरा
समभाग १ तोला का क्वाथ पिलाना.

७ लेह भस्म तोला १ आरोग्य वर्धनी तोला ४ शख भस्म तोला १
सावर सौंघ भस्म तोला १ साथ घोट ६४ पुढी कर दिन में २ बख्त देना ।

८ *द्रोणपुष्पी के रसका अजन करनेसे कामला मिटता है यह रस १ से २
तोला पिलायाभी जाता है ।

* द्रोणपुष्पी गुजराती कुबे

१ वबूलके फल-गुजराती बावळना पाकेवा परदिया ।

२ पचासूत-दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, समभाग मिलानेसे बनता है ।

रक्तपित्त-रक्तस्त्राव

रक्त—खूनका स्त्राव किसी भी स्थानसे खूनका गिरना ।

कारण—बहुत गर्म तीक्ष्ण तीखे बहुत खटे बहुत नम्रकिन क्षारवाले दाह पित्त करने वाले पदार्थ अधिक सेवन करनेसे, क्रोध शोक भयसे अधिक परिश्रमसे, अपनी प्रकृतिसे विरुद्ध अन्नपान खानेसे अदि अनेक कारणोंसे दूषित हुआ रक्त पित्तको बिगाड़ता है और बिगड़ा हुआ पित्त खून में दाह करता है जब मुखसे गुदासे योनि लिग आदिसे कस्त्राव होता है ।

चिन्ह—खून गिरनेवाला हो जब सिरका दई अरुचि ठंडे पदार्थकी इच्छा, खटे डकार, खाँसी खाँस ताप हृदयक' ध-राहट शरीर पीला होना दाह तृषा सिरका तपना अङ्गपर अरुचि इशता मनकी कमजोरी दाँतके मसूढ़ों में सूजन इस तरह भिन्न भिन्न स्थानोंसे खून गिरनेसे भिन्न भिन्न चिन्ह दिखायी देते हैं । आमाशय बिगड़ा हो तो नाक या मुखसे खून गिरना है । पकाशय दूषित होनेसे दस्त द्वारा खून गिरता है । और देनो दूषित हुआ हो तो देनो स्थान से खून गिरता है ।

हथियार आदिसे खून गिरना—हथी चण्डु अथवा तलवार आदिका घाव होनेसे, नसे फटनेसे टटनेसे बहुत ठडीसे बहुत श्रमसे, बहुत भार उठानेसे गर्भ चलद दवा खानेसे, दाह अधिक पीनेसे किसी स्थानमें अवयवमें खून बढनेसे आदि कारणोंसे खून गिरता है ।

मुखसे रक्तस्त्राव—होता है जब दाँतमें मसूढ़ोंसे जीमसे तालुसे गिरता है । होजरी से गिरता है जब वमन उलटी से खून गिरता है । वह खून कुछ काला रंगका घेरा लाल होता है । और अधिक प्रमाण में गिरता है । साथ कुछ खुराक मिला हुआ रहता है । खून गिरनेके पहिले उबका आता है । कलेजे पर सूजन आती है चक्कर आता है । आँखों में अंधेरा आता है । खून थोड़ी देर होजरी में रहकर उलटी द्वारा बाहर निकलता है । व' खून लाल होता है । होजरी पर लगनेसे क्षत होनेसे क्लेश यकृत के रोगमें, मूत्रपिठके रोगमें आदि कारणोंसे खून उलटी-वमन द्वारा गिरता है ।

फेफड़े (फुफ्फुस) से खून गिरनेका कारण छतीपर मार लगनेसे असह्य वोज्र उठानेसे ताकातसे अधिक दोहनसे पत्रत आदि चढनेसे खाँसीसे ओरतोंको श्वेतु वध होनेसे श्वरोगसे उर-क्षतसे आदि कारणोंसे फेफड़ोंसे खून गिरता है ।

पिशाबमें रक्तस्त्राव—रक्त होता है जल कमर देनो पाश और पेट पर जकड़ी आदिका मार पड़ता है । उर्ची जगहसे गिरनेसे धूरुमें लवी सफर करने

से, मूत्रपिंडमें पथरी जमनेसे दाह जैसे जलद परार्थों का अधिक उपयोगमें आदि कारणोंसे पिशाच द्वारा खून गिरता है। पिशाच होने के पहिले खून गिरे तो मूत्रमार्गसे, पिण्डके साथ मिलाहुआ खून हो। हो मूत्रपिंडसे, पिशाच आजानेके पछे खून गिरे या खूनके साथ पिशाच अतमे उतरे तो मूत्राशयसे खून गिरा हुआ समझना।

पश्यांश्च—जागरण करना नहि। दाहकाने वाले परार्थों वेगन पर्याज लसून लालमिरच तेल बाजार की मोठाई गरिष्ठ पदार्थ पाचन में बाधा हो ऐसी चीजोंसे दूर रहना। सारा समशीतोष्ण खुराक लेना। मुग चना गेहूं चावल आदि घान्य कोशिर फुलावर नालकैल मूत्रोपधी सूरण तुरिया धीरोटा मेथी चौलाइकी भजी परवल आदि छाक हितकर हैं। छाड़-तक दहीका मट्ठा, शक्कर चागेरीशून, वाशारलेह बल्याणघृत, और अपनी प्रकृतिमें अनुकूल हो ऐसी चीजे खाना। ज्यादा परित्याग नहि करना धूपमें धूमना नहि। ठंडे पानीसे स्नान नहि करना सेवाल बाधना। अरनी शक्तिसे अधिक योजन उठाना नहि। दौबना नहि। नाकमें खून गिरता हो तो मस्तक पर ठंडा पानी छिड़कना।

महाबद्धकला—(२ स - ३ पूरयुक्त) पाद गंधक धम्रह भस्म लोह भस्म यशभस्म यशद भस्म रौप्य भस्म पकाया हुआ पाट या सोहागा प्रत्येक तोला ६, अमृता सप्त पर्यट चिनीकवाला छोटी पपल वाला गोरखमुडी इलाइची बबुलका गोद नीमका गोद टाकका फुल केलीका कंद कमल बीजका गिरि प्रत्येक तोला ३ तीन सब साथ मिलाकर बबूरी पानी द्राक्ष पानी सहदेवी (सेदरडी) पर्यट (गु खडसल ये पि पपडो, नागमोथा वैथ (कपिथ कोठानो रभ) गोखिन्हा (गेपथरी) प्रत्येकके रस हो एक एक भजना देकर सुनास उलने कपूर तोना ८ मिलाकर पानीस चने प्रमाथ गाल बनाना। आधा २ स ८ तोला दिनमें ३ बार दफे देना। उपर द्राक्षका पानी या च्यवनप्राश जीवन या कुटज अवलेह के साथ या पानी देना। किसी भी स्थानसे गिरता रक्त अटवता है। दाह दाहज्वर मूत्रकण्डू पिशाचकी जलन पिशाचमें खून गिरना खूनकी छर्दि वमन उदका हृदयमें पेटमें जलन दिमागका तपना गम रहना आदि मिटता है।

सुधा पपड़ी—(२ स रक्तपित्ते) मुकाशुक्तिकी पिंडी, प्रवाल चंदपुटी, स्फुटिक पिष्ट उहरमोहरा पिष्टी रौप्य भस्म यशद भस्म सुवर्ण मालिक भस्म रक्त रत्नेच पांच पांच तोला पाद तोला ३५, गंधक तोला ७० कज्जली कर एक छोटेकी कड़ाहीमें १० तेला गायका घा छेड़ गर्म होनेसे कज्जली डालना घीभी आंचने रस हो जाय जब स्रव भस्म डल देना छोड़े के तवेथासे हिलाना सब

मिल जय जब गोबरके उपर बिछाया कैली के पते पर डाल उपर दूसरा पता दाब कर उपर गोबर दाब देना । स्वागशीत हेनेसे २४ घंटे के पीछे बिकालना । घोट कर नीचे के रखी भावना ३ देना । काली द्राक्ष हरा धनिया (बाधमीर), पीठे नीमके पते, सफेद चंदनका चूरा, नीमकीछाल अजन ब्रह्मकी (विजयसर) छाल प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर कुटकर १०० के मिट्टीके बर्तनमे पानीमे भिगा रखे प्रातः कालको हाथमे मर्दन कर कपड छान कर कूड़ा फेकदे प्रवाही पर्पटी में डाल एकदिन धोतकर सुखने पर फिर उपर लिखी छह चीजे पान पांच तोला लेकर उपर लिखे अनुसार भावना देना इस प्रकार ३ भावना देकर सुखाकर रखे । एक दिनकी मात्रा ३ से १२ रती तक जड़ वृत्त अक्खन आदिसे दी जाती है । उपर द्राक्षाक्ष अथवा रक्तक्षाय हर फांट पिलवे । किमीभी स्थानसे गिरता खून रुक जाता है । छातीसे नाकसे मूत्र इत्रोसे दमते गिरता खून रुके । औरतोको अधिक श्रुतु खाव होता हो सफेद पानी गिरता और ईश कारण कमताकात कमर आदि मे दूध दह आखोकर जलन सिर धूपना चकर अम्लपित्त छतीका दाह पिशाच कि जलन, गुभ्रग गुदा बहर निकल पिडा करना, योनिकद आदि रोगमे गुणकारी है ।

रक्तस्त्रावहर फांट—बढकी छाल, विजयमार (भजन ब्रह्म)की छाल, नीमकी छाल, काली द्राक्ष, अशोककी छाल चगमाग लेकर कुट कर रखना रातको अच्छे बर्तनमे १ से २ तोलाको २० तोला पानीमे भिगा रखे । प्रातः मर्दन कर कपड छान कर धीधीमे भरले उसमे ३ बडा चमचा (प्रायः ३ तोला) शहद मिला कर किसी भी रक्तक्षाय की औषध की मात्राके साथ २ या ३ दफे पिलावे । अथवा अकेला फांट भी पिला सकते हैं ।

रक्तपित्ताकुश रक्त (र. सं.) पारद तेला १०, गंधक तेला १०, रसपिडूर टकण पकाया हुआ, फिटकिरी बडी हरड आगला इलायची, चित्तिन्वाला (सीतल चीनी) नागर मोथ अदुसा (कासा) प्रायेक तेला ५ ले सब साथ कुटकर पर्पट और मधुयशी मूलके द्वाय की एक एक भावना देकर रखें । मात्रा ३ से ८ रती शहद, या भस्वन या पकाये चावल के पानी से रोगका स्वल्प रोगीके धारोर्धी स्थिति देखकर दी जाती है । सब जगहसे गिरता खून रुकता है ।

रक्त स्तंभन रक्त—(र. सं.) पारद गंधक प्रवाल चन्द्रपटी अहरमोहरा स्फटिक पिष्टि मुक्ताशुक्ति पिष्टी लोहा गरम वर्ण आक्षिक भस्म सोहागा पकाया हुआ सब समभाग लेकर कुट मिलाकर सहदेवी वाला द्राक्ष और गावजवान (मौ पाथरी) प्रायेक दश तोला लेकर साथ कर ३ भावना देना मात्रा ३ से

६ रती पानी या साहदसे गिरता रक्त रुके औरतों के अत्यार्तव रक्तप्रदर र्वेत प्रदर मिटे ।

उशीशस्त्रव—(१ ख.) काली या लाल द्राक्ष रतल २०, कौ फूट कर एक मिट्टीके या लकड़ी के वर्तन मे डाल उसमे पानी रतल २०० मे पकावे २ घटा पका कर मिट्टी की या लकड़ीकी कौठमे भरदे । उसमे शक्कर ३० रतल ढाढे । वाला तोला १८०, धाईफल तोला १०८, कमल गोटाकी गिरी कमल पुष्प गुलाब फूल चमेलीके फूल लोग इलायची भीतलचोंगी गजीठ घमासा ववूलकी छाल शाहमरी छाल ढाकके फूल कपूर वायवरणा जामूनके बीज प्रायेक औषधी बीष बीस तोला लेकर कूट कर मिलावे कोठीका मुख बंद करदे । आठ आठ दिन के पीछे खोल कर हिलावे देा महिना पीछे कपड छान कर अच्छे बरतनमे भर दे । २ से १० तोला तक की मात्रा दी जाती है । सब जगहसे गिरता खून रुकता है और हृदय फेफडा आते दिमाग को ताकत देता है ।

बोल् पर्वन्नी—(१ ब) पारद सेर एक गधक सेर एक ले कर कज्जली कर पपंटीकी रीतीसे पकाकर घोटकर उसमे हीराबोल आघाशेर और मिलाकर त्रिफलाके कायकी भावना १ देकर घोटकर रखे मात्रा ३ से ६ रती । मधुशृतसे या मधु मक्खन से देना । सब जगहसे गिरता खून थमे । रक्तश्चेत प्रदर मिटे ।

सुधानिधि रत्न—(यो २.) पारद गधक स्वर्णमाक्षिक भस्म लोह भस्म सम भाग लेकर लोह के बरतनमे डाल त्रिफलाके काथ की भावना देना । सुख जानेपर घोटना । मात्रा ३ से ४ रती साहदसे देना रक्तस्त्राव रुकके ।

रक्तक्षित्तिके सामान्य प्रयोग—मुष्कायि मिश्रण, मुष्का पिष्टी तोला ०॥ महाचंद्रकला तोला १, प्रवाल चंद्र पुटी तोला १॥, बोल पपंटी तोला ०॥, अघता सत्व तोला ३ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनावे । ३से४ समय पानीसे या साहदसे दे ।

प्रवालद्राक्षदि मिश्रण—प्रवाल चंद्रपुटी तोला २, मुष्का पिष्टि सुधा पपंटी कहर रोहरा पिष्टि, कृतामृतलोह प्रायेक एक एक तोला सब साथ ले मिलाकर घोटकर ६४ पुडी बनावे २ वरुत साहद या च्यवनप्राश जोदनसे दे ।

प्रयोग १—साहजिरा, इन्द्रजौ मेढाभीगी वीलीगर्भ नागकैसर इलायची रोंफ समभाग फूटकर ०१ तोला दिनमे २ या ३ दफे साहदसे दे ।

प्रयोग २—नदी का सेवाल और काली मिट्टी मिलाकर सिरपर लगानेसे नाकसे गिरता खून बंद हो ।

प्रयोग ३—घनिया आबला वासा पत्र द्रक्ष पितपाषा (पर्यट) समभाग कूटकर २ तोलाको २० तोला पानीमें रातको भिगो रखे प्रातःकाल कपडछान कर २ से ३ तोला शहद मिलाय दिनमें २ दफे पीवे ।

प्रयोग ४—बाला घनीश सफेद चन्दनका बुरादा मूलेठ मूल गिलेय समभाग कूटका २ तोलाका प्राणी पीवे ।

प्रयोग ५—नीली (गली) का मूल आधा तोला पीस कर चावलके ओसामन में शहद या शकर मिलाकर देना ।

प्रयोग ६—सफेद चन्दन को घंस कर ०। तोला लेकर चावलके ओसामन (पाने) में शहद मिलाकर देना ।

प्रयोग ७—अनारकी छाल, कूडेकी छाल, (कूटजावक) आधा आधा तोला से कूट कर २० तोला पानीसे पक कर आधा रहने पर कपडछानकर शहद मिलाकर २ दफे पीवे ।

प्रयोग ८—कूडेकी छाल नागरमेधा, कोमल छोटे बिलिके फल अतीव बाला सम भागसे कूट कर १ तोलाका काय या फट कर शहद या शकर मिलाकर पिलाना ।

प्रयोग ९—झुले आंवला में घीमें पककर (तल कर) छाछ में पीसकर चिरपर छानीपर पेटपर लगाना डेर कत्ना तो उस स्थानसे गिरता सून थमे ।

प्रयोग १०—अदुसी (वासा) जीरा मूलेठो मूल (यष्टिमधु) द्राक्ष समभाग से कूटकर ०॥ तेल में १० तोला पानी में भिगोकर पीना ।

प्रयोग ११—दूर्वा कमल बीजकी गिरी वबूलकी पत्ती, ओगा (अगमार्ग) का पान समभाग कूट ०। से ०॥ तोला पानीसे देना ।

रक्तपित्तशमनायक—(र. सं.) अदुसी (वासा) के पान रतल १० लेकर ६० रतल पानी में काय करना आधा रहने पर कपड छान कर उसमें शकर रतल ४० डाल कर पकाना पीछे उसमें भूरे कैलेका खमण रतल २० डाल कर पकाना यह हेनेसे उसमें बलावीज कत्था इलायची—नगकेशर सफेद चन्दन का बुरादा हरद आबला काली मीरच सोंठ छोटी पीपल घनिया जीरा शहद रस शतावरी प्रत्येक ८ आठ तोला अष्टवर्ग २४ तोला मिलाकर अगलेह जैसा हेनेसे उतारना । २ से ४ तोलाकी मात्रा है । रक्तचाप प्रश्न प्रमेह मूत्रकृच्छ्र मूत्रपिंड-पुरवेके रोग जलन अम्लपित्त छानीका दाह शरीर तपना आदि मिटता है ।

क्षयरोग-राजवक्षसा

कारण-क्षयरोग रसायुष्य है। एसी मान्यता सर्वथा सत्य नहि। इसके लिये सच्ची नहि सिद्ध होती है। मधुर पदार्थ खानेकी बहुत आदत, बहुत नीचे चिर निरे, बहुत जड़द लग्न पानी या भोजन, हर तरह अजीर्ण होना, दाधारकी चीभी नीठाई आदि अधिक खाना, अधिक चाढ़ पीनेका व्यवसन, अति विषय अधिक भोग अधिक दाह पनेकी आदत आदि कारणोंसे क्षय रोगका भोग होता है। मांसी दुग्धर खासका रोग बहुत समय तक जारी रहनेसे अजीर्ण होकर क्षय का रूप लेता है। किसी रोगसे शरीर कमजोर हुआ हो उस स्थिति खाने पीनेकी आसारिक व्यवहारकी मर्यादा न रखनेसे यह दर्ज होता है। भोजन में मसूर, मूंग, चने, ससर्ग गाले, दिना खुशे द्वारा प्रकाशकाले पकानेके रखनेवाले को, ठंडे रातोंमें, रात हुए अन्यके लच्छिष्ट खानेसे, क्षय रोगसे ससर्ग, अति विषय भोजनमें, खानेका नाटक हमेशा देखने वालोंको द्वारा मनुष्य के समूह में रहने वालोंकी, बहुत खान खीत, उच्च रक्तसे अधिक भाषण करनेसे रक्त में अति मुष्णकीने गुल्मा मक्खी आदि जंतुओंमें दूषित मछा हुआ वाशों गुग्गुलु आदिके भोजनसे यह रोग होता है। अनेपेय पदार्थ के अनुसार टङ्गुर मल सामक जंतुओं शरीरमें दाखल होनेसे क्षय रोग होता है यह बात सार्थक नहि है। वस्तुतः क्षय रोग उत्पन्न करनेवाले कारणोंसे हि शरीर में क्षयोत्पादक जंतु उत्पन्न होते हैं। आहार विहार औषधों के उचित व्यवहारसे क्षय रोगसे दूषित अवयवका भाग कम होता जाता है वैसे स्वाभाविक हि इस के जंतुओं नष्ट हो हर रोग गिटा है।

यह रोग प्रायः २० से ३० वर्षका आयुवाशोंको अधिक होता है। ओरतोंको प्रसव कालमें सवाल न रखनेसे यह रोग लागू हो जाता है। वतमान समयमें सुधरी हुई और सुखी बुड्ढोंकी ओरसे कुत्तेका आदतमें पड़नेसे, कुछ मी परिश्रम और धरेल काम का व्यायाम भी न होनेसे, सीनेमा आदि अधिक देखनेके कारण घुरे मार्गपर चढ़ जानेसे, आमाशय पेट आने हृदय फेफड़ा विगड़कर ओरतोंको यह रोग लागू हो जाता है। चक्का पीसना, कूटना पानी भरना रसाई बनाना असे धरेल काम करनेवाली ओरतों के अवयव सुख नीरोगी होनेसे उनको यह रोग नहि होता। इस कारण ग्राम प्रजाकी अपेक्षा शहरोंकी प्रजामें यह रोग अधिक मात्रा में होता है। मामोमें खुल्लो हवा शुद्ध पानी परिश्रमवाला जीवन, अंडर प्राउंड होनेकी बुगडाका अभाव, सीनेमा नाटक आदि स्वास्थ्य विगड़ने वाले विलासी

जीवन बनाने वाले साधनोंके अभाव, शुद्ध दूध भी मिलना आदिसे प्रायः प्रजा इस रोग से कुछ अंशमें नच जाती है। कौओ की अपेक्षा पुष्पोंके प्रायः ज्यादा यह रोग होता है। ब्रह्मचर्यका नाश भी इस रोगका कारण बनता है। वीर्य रक्षणसे होनेवाले लाभसे वर्तमान युवक विद्यार्थी लोग अज्ञात रहनेसे प्रायः विद्यार्थी दशामे ब्रह्मचर्यको नष्ट कर रूपने शरीरके भविष्यके सुखको नष्ट करते हैं। छात्र छात्राओंका सह शिक्षण भी एक महत्त्वका कारण है। अभ्यास करनेवाले छात्रों के हस्तक्षेप या ऐसे अन्वकारणोंसे वीर्यक्षय होनेमें कभी क्षय रोगका भोग नहीं होता और अपने भावी गृहस्थाश्रम सुखमें आग लगाते हैं। इस बातका अनुभव और पश्चात्ताप गृहस्थी जीवन के समय होता है। इस बातसे छात्रा विद्यार्थिनी वर्ग भी परे नहीं है। पुत्र आशुके लोग भी विषय सुखमें ही सगरका सार्थक समझते हैं और ऐसे व्यवहार के साथ सच्चे घी दूध आदि पुष्ट पुराक के अभावसे और बाजीशर औषध के दिना सेवन विषयासक्त रहनेसे भी क्षय रोगसे पकड़े जाते हैं। बहुत उपवाससे, मल भूषादिके वेग रुकनेकी और जर्जर करनेवाले पदार्थ खानेकी आदतसे इस रोगका आक्रमण होना संभव है। अनुलेप क्षयमें पहिले रक्त रक्त मांस मेद मज्जा अस्थि वीर्य भोजका क्षय क्रमसे होता है और प्रतिलेप क्षयमें पहले वीर्यका नाश होनेसे अन्त्य मज्जा मेद मांस रक्त रसका क्षय होकर यह रोग होता है। अनुलेप क्षयकी अपेक्षा प्रतिलेप क्षय रोगीको जल्दी घेर लेता है। घृद्धावस्थासे, बहुत पयसे चलनेसे, शोकसे, बहुत क्रूरता व्यायामसे, विशेष प्रकारके द्रव्य गलेकी ग्रन्थी गांठे आदि कारणोंसे भी क्षय रोग होता है।

स्थिति—इस रोगकी तीन अवस्था है। प्रथमावस्थामें लंबे समय तक खांसी चालू रहकर पतला कफ गिरता है। फेफड़ों में क्षत पठना है। दूसरी अवस्थामें नाडी एक मीनटमें ११० से १२० चलती है। चमड़ी सूखी और झट्ट होती है। छातीमें दर्द नाभिके नीचे दोनों और दर्द घघराइट शूल, अनियमित समयपर पसीना होता है। दिनों दिन शरीर कुश होता है। जठराग्नि मंद होता है। दस्त किसी को ज्यादा किसी को कम होता है। स्वभाव जीविय। घंतस उग्र शोधी होता है। खांसी बहुत आकर कफ गिरनेसे थोड़ी देर आराम मिलता है। आंखें सफेद होती हैं। शरीर कमजोर होते हुए भी विषय सुखको इच्छा होती है। रोगी स्वप्नमें सूखी नदियां, जलसे वृक्ष देखता है। और पार्श्वमें पीछा हाथ पांवसे जलन सब अंगोंमें ताप कमजोरी सारे अंगमें जोष अक्षर अभाव व्याप्त खांसी रक्तमिश्रित कफ स्वरमं ये प्रमुख

चिन्ह है। वायु प्रधान क्षयमे स्वरभंग शूल कंधा पसलीयो पाशने पीडा, पित्तप्रधानमे ताप-बुखार का जोर जलन कफमे रुन, कफप्रधानमे घिर भारी मिरका ददं खुराक पर द्वेष खांसी के साथ सफेद कफ ज्यादा गिरना अदि चिन्ह होते हैं।

क्षयरोगीके शरभमे ताप ९९ से १०० तक होता है पीछे मट्टर १०० से १०५ तक पहुँचता है। और कम ज्यादा होता रहता है। खांसी मटनेसे नाडीकी गति १२० तक एक मिनटमे चलती है। बहुत करके प्रातःकालमे ताप कम होता है और शामको बढ़ता है और रातको बहुत पसीना होता है। शरभमे एक फुफ्फुसमे शोथ होकर गढ़ा होता है। पीछे दोनो फुफ्फुस सूखने हैं।

असाध्य चिन्ह—खुराक पर अश्वि खास दम, मग्न खांसी रुन गिरना स्वर बैठ जाना, तपका जोर, बलका प्रतिदिन नाश खुराक ज्यादा लेने पर कमजोरी बढ़ना, वृषण और पेट पर सूजन दस्त भमे सफेद ऊर्ध्व खास हरवस्त वीर्यस्राव आदि असाध्य चिन्ह है।

अति विषय जन्म क्षय—जननेद्विष और अद्वेषमे पीडा विषय भोगने अशक्त होने पर नी चरन करनेसे वीर्य बहुत अल्प पतला और कमी वीर्य के बजाय रुन के बुद गिरे, शरीर फिक्का सफेद हो। वीर्यक्षीण होने के पाछे मेढ मांस रक्त और रस यह धातुओ एक के पीछे एक क्षीण होती है और यह रोग असाध्य होता है।

उरक्षत—बहुत भार लठानेसे, बलवान के साथ लठनेसे, उचसे गिरनेसे, बल घाटा हाथी लठ जैसे बलवान जनावरोको काबूमे रखने के प्रयत्नसे, लया प्रास पांव चलकर करनेसे, लकी वेगवाली नदी तैरनेसे, बड़ी छलांग मारनेसे अदि कारणोसे हृदय पर आघात होकर उरक्षत होता है छाती चंराती हुई कटती हुई लगे। छातीमे असह्य ददं हो, पसलीयो मे शूल कंधा ताप, कमजोरी, कृशता, खुराक पर अभाव, जठराग्नि मद, मन उदस, दस्त पतला, खांसी मे कफ काला पीला गांठवाला रुन मिश्रित पड़े रत्यादि उरक्षत के लक्षण है।

पथ्यापथ्य—शारीरिक धम कम करना आराम निश्चालि लेना। रोगी अशक्त हो तो दस्त जानेका नजदीक रखना। रोगी के रहने के मकान पर दुर्गंध किसी चीजकी न आवे ठीसी समाल रखना, बिछाना कपड़ा बदलते रहना, कम बेलना, मनको दूसरी बातो मे रखना, रोगका चिंतन चिंता न करना। धैर्य रखना, प्रसन्नचर्य पालन करना। ओरतोका सहवास कम रखना। असे एकतवास न देना।

शरीर पर ठंडी लगने नहीं देना। सुखी हवा वाले स्थानमें रखना। हवा प्रकाश ज्यादा आवे ऐसा करना लेकिन रोगीके शरीर पर सीधी हवा न लगे यह सावधानी रखना। पीनेका पानी नीमकी छाल २-४ तोला और निर्मलीके बीज पांच-सात डालकर वह पानी पीलाना। ठंडी ऋतु और वर्षा में कमरे में अंगीठी रखना। रोगी को अच्छा लगे तो छातो या अन्य भाग पर कपड़े के मोटेसे या अन्य साधन से सेंक करना। शीघ्र ऋतु हो तो रोगीको एक दो दिनमें गर्म जलसे स्नान करा कर तुल्य शरीर पोंछ डालना।

खुराक में साधा जलदो पाचन हो ऐसा देना। गाय और बकरीका दूध चावल खीचड़ी मुंग बना तुवरकी दाल गेहूं बाजरी आदि धान्य पावल करेला घोसोडा इलीका शाक, फलमें पपैया चीकू मीठा ये सबी द्राक्ष आदि देना। एक कप दूध में १ से २ चना प्रमाण सेवानान या नमक मिलाकर पिलाना। यह दूध और घारोष्ण-तुल्य होना बिना गम किया उत्तम गुणकारी है। मूत्र न होतो खुराक कम देना। दूध पाचन न होता हो तो उसमें थोड़ी शक्कर और चाहा या कोफ़ी डालकर देना। औषधसे खुराक पाचन होने लगे जब खुराक बढ़ाना। मुंग चावलकी अच्छी तरह पकायी हुई नमक डलदी काली मीठ डाल बनायी हुई खीचड़ी के साथ दूध मिला कर देना बहुत गुणकारी बृंहण शक्तिप्रद है। दूधमें उचित प्रमाणमें नमक डालकर पीना पिलाना चरक मतानुसार बृंहण है और क्षयरोगीको नमकवाला दूध-देना फुफ्फुस हृदय आंतोंके लिये गुणकारी है।

घारोष्ण स्नेहलं युक्त पीत्वा सलक्षणं पयः ॥

नरः स्निह्यति पीत्वा वा सप्तं दध्न लफाणितं ॥ चरक

इस तरह बहुत स्थानोंमें दूधमें नमक डाल कर पीनेका लिखा है। नमक के स्थानमें सेवानान भी डाला जाता है। सौराष्ट्र काठियावाड में मुंगकी दाल और वेशी चावलकी दलदी नमक डाल कर बनायी हुई खीचड़ी में दूध मिलाकर रात्री का बाल रात्रि भोजन प्रत्येक प्रात और घरमें पाया जाता है। लाखो अनुष्य रात्रि भोजनमें खीचड़ी दूध मिला खाते हैं। दूध में शक्कर मिलाना स्वाभाविक सार्वजनिक है परंतु खुराक में दूध के साथ नमक मिलाना या नमक न खुराक में दूध मिलाकर खाना पथ्य गुणकारी और क्षय रोगी के लिये तो अवश्यक जीवनदाता है। धन्य पीडित मांसाहारी के लिये बकरी का जगली पशु का मांस या उसका प्रवाही गुणकारी है। क्षयरोगी के लिये पानी जहां तक हो सके कूप का पिलाना। कुआ भी ऐसा हो जिस के उपर दिनको सूर्यका ताप और

रात्रिको चंद्रका प्रकाश पड़ता हो । जल्को चपड छान कर तामे के पात्रमे भर रख क्षयरोगको देना । हमेशा तिलके तेलमे बना हुआ सुगंधी तेल अथवा महालाक्ष दि तेल दो वखत सारे वदनमे मालीस करना । १५ जलसे स्नान कराना रोगी के कमरे मे दिव्यरूप दो समय करना ।

दिश्य धूप—नागर मेघ ४ राल ३, गुडर कपूर पाचली ३, हीराबोळ १, वाला ४, मिषरी ४, हल्दी २, जटामासी २, चंदन सफेद काचूरा १०, पांदवीया धूप १०, तिलक, तेल ४, गुगल ६८, ची २, इस प्रकार लिखे भागसे सब चीजे लेकर कूटकर साथ मिलाना यह धूप दमरेमें करनेसे भूतप्रेत पिशाच भाग आते हैं हवा शुद्ध होती है । क्षय रोगी नित्य हुक्का या चिलमसे इस धूपका धुआं श्वासमे लेनेसे क्षय रोग केन्सर मिटता है ।

रसराज रस—(र स) पारद ४ तोला, गंधक २ तोला, मोतीकी छीपको भस्म अथवा भस्म पीलीकौडी की भस्म हाथी गंतकी भस्म ताम्र भस्म स्पर्ण माक्षिक भस्म प्रत्येक एक एक तोला साथ मिलाय वासा और अरणी पत्तेके रसकी एक एक भावना देकर सुख जाने पर उभमे छोटी पीपल ४ तोला कालीमीरच २ तोला सोठ १ तोला लोंग २ तोला मिलाकर शीशी मे भरना । ३ से ६ रती पानी दुध या शहदमे देना कास घास हृदयरोग क्षय में गुणकारी है ।

रसराज रसः शक्तिवलायुपुष्टिवर्धन ॥

राजसृर्गादि लघु—(र स) रससिंदूर तोला ८, अभ्रक भस्म तो. ८, ताम्र भस्म तो ४, रौप्य भस्म तो २, सुवर्ण भस्म तोला १, सन कौल शुद्ध तो ४, हरताल शुद्ध तोला ४, शुक्त भस्म शख भस्म सावरसींग भस्म प्रत्येक तोला ८ पीली कौडी भस्म तोला ४० सोहावा पकाया हुआ तोला ४ सब साथ मिलाय बकरीके दूधमे घोट गोला बनाय शराब संपुटमें कपड मिट्टीकर बालुका यंत्रमे ४ प्रहर पकाना । स्वागशीत होने पर औषध निकाल घोट कर रखना । मात्रा ३ से ६ रती प्रातः साथ छोटी पीपल और कलीमीरच तीन तीन रती मिलाय शहदसे देना । खांसी कफ क्षय फेफड़ेका हृदयका रोग उर क्षत नाबिमे गुणकारी है ।

स्वर्ण वसंत मालती वृहत् (र स) स्पर्ण भस्म १० तोला, उत्तम प्रकारके बरसाई मोतीकी पिष्टि २० तोला, पूर्ण चन्द्रोदय पङ्कगुण गंधक जारित ३० तोला, काली मिरच ४०, तोला, यशद भस्म रक्त ८० तोला, सब साथ मिलाकर मक्खनसे मलहम जैसा पिंड बनाना । पथरकी खरलमें सघ डालकर पड़े कागदी निचूके रस डाल डाल कर चोटते रहना । १८ दिन तक रात दिव

घोटनेसे मखनका स्नेह अर्थात् घीका अंश नष्ट हो जाता है और औषधमें सटाई आ जाती है। तब अधी रतीकी गोली बनाना अथवा अ धे आधे तोलेकी सोगठी बनाना। मात्रा २ से ४ गोली अथवा १ से २ रती शङ्ख और छोटी पीपलके चूर्ण के साथ देने से वात पित्त कफ के प्रकोपका क्षय रोग, ज्वर, खाँसी, जीर्णज्वर सम्पाद मूर्च्छा, अपस्मार सप्रहणी रोगमें उत्तम गुण करती है। स्मृति मेधा आयुष्य वारोग्य कांति पुष्टि और बलको बढ़ाती है।

सिद्धा ज्येष्ठ, बृहत्स्वर्णवसंतमालती वरः।

विश्वगुण्या गुणे स्वीयैः सेवनाद् सर्वदोषहृद् ॥

स्वर्ण वसंत मालती नं. १—(र. स.) इसमें स्वर्ण भस्मके स्थानमें स्वर्णका बख और पूर्ण चन्द्रोदय के स्थानमें रससिंदूर डाला जाता है। और मुक्ता को सरह कभ मूल की डाली जाती है। बाकी विशेष कृति और गुणधर्म उपर लिखी स्वर्ण वसंत मालती बृहत् जैसा ही है।

स्वर्ण वसंत मालती नं. २—(र. स.) इसमें स्वर्ण भस्म या स्वर्णका बख पाँच तोला, स्वर्ण माक्षिक स्वत पाँच तोला कर्म मूल्यके मोती २० तोला, कमी सिगरफ ३० तोला, काली भिरच ४० तोला, हृद्ध स्वर्ण ८० तोला। सबको मखनने पिंड बना कर १८ दिनतक निंबूके रससे घोटनेसे घीका अंश नष्ट हो जाता है। पीछे एक रतीकी गोली अथवा अ धे तोलेकी सोगठी बनाकर उपयोगमें ले। सोगठी हो तो १ से २ रती तक पानीपे घोसकर इसमें शङ्ख और छोटी पीपलका चूर्ण ४ से ६ रती मिलाकर देना उपर इच्छा हो वह पीवे गोली २ से ४ दी जाती है।

क्षयक्षार्शक रत्न—(र. स.) पारद गंधक स्वर्ण भस्म मुक्ता पद्मा स्फटिक प्रवाल और माणिक्य प्रत्येकको पिष्टि, अत्रक भस्म, लोह भस्म, रौप्य भस्म, तालचन्द्रोदय, बिद्ध हरताल भस्म प्रत्येक चार चार तोला, सेठ पंपल, काली भिरच, पीपलीमूल, सुगंधी कुष्ठ, कचुरा, कपूर काचली, काकड़ा शोंगी, लताकरजके बीजही नंरी, लौंग, इलायची, दालचनी, घयासाका मूल, शक्कररी, विगारी कंद असगंध, तुलसी बीज कनक बीज प्रत्येक दो दो तोला, सब मिलाकर तुलसीका रस, अदरकका रस और ब्राह्मीका रस प्रत्येकका एक एक भागना दे कर सुख जाने पर घोट कर इसमें अवर १ तोला, कस्तूरी १ तोला, केशर २ तोला और भीमसेनी कपूर ४ तोला मिलाकर घोटकर रखना। मात्रा ६ से ८ रती शङ्ख, घृतसे २५ घृतसे दी जाती है। इसके सेवनसे क्षयरोग, जीर्णज्वर, हृदय और फेफड़ोंके रोग नष्ट

होते हैं। और हृदय बध होनेका (हार्ट फेल्योर) का भय नहीं रहता और फेफड़ों, आँतों मूत्राशय आदि अवयव बलवान होते हैं। विविध प्रकारके प्रमेह रोगमें भी अच्छा गुण देता है।

स्वर्ण भूपति—(यो. र. स्वर्णयुक्त) पारद १० तोला, गंधक १० तोला, ताम्रभस्म, २० तोला, अभ्रक भस्म लेह भस्म, स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म, शुद्ध बलनाग, कांत लेह भस्म प्रत्येक १०-१० तोला। सब मिलाकर हंसपादीके रससे १ दिन मर्दन कर एक एक भासाकी गोली बनाकर सूख जानेपर काचकी शीशीमें भर उसे कपडमधी का बालुकायंत्रमें १२ घंटा तक पकाना। स्वागशीत होनेसे शीशीसे सब औषध निकालकर घोट कर रखना। मात्रा २ से ४ रती, छोटी पीपलका चूर्ण ६ से ८ रती, अदरकका रस अथवा तोला सब मिलाकर खाना। उपर दूध पीना। क्षय, आमवात घनुर्वा, पंगुवात, आढ्यवात, अग्निमांश, कटिवात उदरशूल गुल्म उदावत सप्रहणी, उदररोग, मूत्ररोग, मूत्रच्छूँ भगंदर कुष्ठ, विद्रधि, (केन्धर) काष्ठ, श्याघ, सब प्रकारके ताप, पांडुरोग, इत्यादिमें उत्तम गुणकर्ता है। सर्वरोगविनाशाय शस्यते स्वर्णभूपति ॥

शृंगाराभ्र—(स्वर्णयुक्त र. सं) अभ्रक भस्म तो ८, पारद, गंधक, पकाया हुआ सोहागा, नागदेशर, जायपत्री, कपूर, लोंग तमालपत्र, स्वर्ण भस्म, प्रत्येक एक एक तोला, तालीसपत्र, नागरमोथ, कुष्ठ, जटामांसी, दालचीनी, घाईके फूल, इलायची सेठ डालीमिरच, हरड रबी, चहेडा आंवळा, गजपपीपर प्रत्येक दो दो तोला, और छोटी पीपल १० तोला, सब मिलाकर तुलसी के रसमें घोटकर सुखाना। जायपत्री कपूर लोंग दालचीनी इलायची अैसे सुगंधी द्रव्य पीछेसे डालकर घोटकर रखना। शहद और घृतके साथ ३ से ६ रती तक दो समय दिया जाता है। क्षय श्वास काष्ठ पांडु उदररोग, शोथ, जीर्णज्वर, सप्रहणी म दाम्नि, अकृत्ति इत्यादिमें दीया जाता है। बल और शक्ति बढ़ाना हैं। इसके सतत सेवनसे मनुष्य नीरोगी रहकर सौ वर्षका दीर्घायुषी होता है।

वासावलेह—(र. सं) १० रतल अड़सा (वासा) के हरे पत्ते लेकर कुटकर ४० रतल पानीमें उबालना। आधा पानी रहने पर कपडछान कर उसमें शुद्ध रतल २० डालकर पकाना। घट्ट होने पर उसमें नीचे लिखी औषधियोंका चूर्ण डालकर धीमी आंचसे पकाना। अवलेह जैसा हो जानेपर चुन्नेसे ग्लारवर टंडा हो जाय तब दूसरे दिन अच्छे चीनाइ मिट्टीके बरतनमें भर देना। इसमें डालनेकी औषधिः— सेठ, साहजीरा, कलौजी जीरा, जीरा, पीपलीमूल, काकडाशिगी

कुटकी, हरड़, घनिया, भारगी, अतीस, लौंग, अन्नक भस्म, शंख भस्म शुक्ति भस्म, भुईंश्मली, घमाश प्रत्येक दो दो तोला कुटकर मेंदेके हवालेसे छानकर उपर लिखे सुताविक ढालना । मात्रा १ से ४ तोला तक हृदयरोग खास दमा खांसी, फेफड़ोंके रोग आदिमें उत्तम गुणकारी है ।

जातीफलदि गुटिका—(जाती फलादि चूर्ण) (र. स.) गायफल, गायविडग चित्रक, सेठ तगर, तालीसपत्र, सफेद चंदन, लौंग, कलौजी जीरा, कपूर, हरड़, बहेड़ा, आंवळा, काली मिर्च, छोटी पीपल, बशलेचन, दालचीनी तमालपत्र, इलयची नागकेशर प्रत्येक तीन तीन तोला । भांग तो. २८ सबके बराबर शक्कर मिलाकर शहदमें ६-६ रतीकी गोली बनाना । मुखमें रख कर रस उतारना अथवा ४से८ गोली की मात्रामें देना । क्षय खांसी दम संग्रहणी अतिघार, मुरडा, पीनस, प्रनिश्वाय, मंदाग्नमें गुणकारी है । शहदमें गोली न बनाकर चूर्ण रखा जाय तो इसे जातीफलादि चूर्ण कहा जाता है इसकी मात्रा २ मासा ।

महालाक्षादि तैल—(लाक्षादि तैल) (र. स.) (शां ज्वराधिकारे) पीपल या अन्य वृक्षकी काख तो ४० कुटकर उसमें १० सेर पानी ढालकर पकाना । चतुर्थांश रहनपर कपडछान कर उसमें तिलका तेल रतल पांच ढालकर पकाना और इसमें दहीका पानी (मस्तु) रतल ५ ढालना और कुछ, मधुयष्टि, देवदार, हलदी, नागरमोथ, मोरबेल, कुटकी, सफेद चंदन, प्रियशु, हिमकद, (दुधियो हेमकद, रास्ना प्रत्येक चार चार तोला लेकर दहीके पानीमें पीसकर तेलमें ढालना । पीछे घीमी आंचसे पकाना । पानीका भाग जल जाय जब कपडछान कर रख लेना । इसके भदन करनेसे जीर्णज्वर, क्षय, विषमज्वर, दाह, हाथ-पांव और शरीरका जलन मिटता है । बच्चोंको, बूढ़ोंको और सगर्भा स्त्रियोंको भदन करनेसे शरीर नीरोगी रहता है ।

क्षयरोग के सामान्य प्रयोग

नीचे लीखे प्रत्येक प्रयोग खांसी, खास दमा हृदयके सिद्ध मिन्न रोग, क्षयरोग, सर्दी रुफ फेफड़ोंके रोग आदिमें दिये जाते हैं और चलवधक पौष्टिक है । क्षयरोगी के लिये एक सालके पुराना घान्य, द्विपल (बठोब) विगेरे खाना गुणकारी है ।

१ अन्नक भस्म सहस्रपुटी तो. ०१, सावरसिंग भस्म तो. १, महालक्ष्मी विलास तो. ०॥, क्षय शर्शाक तो. ०॥, छोटी पीपल तो. २ सब साथ मिलाकर

४८ पुडी बनाना । एक सुग्रह एक शामको ४ माशा खिनेपलादि चूर्ण के साथ मिलाकर लेना ।

२ महाराज स्याऊ तो १, अन्नक भस्म १०० पुटी तो २, शुक्ति भस्म तो. २, ताम्र पर्पटी तो १, सुवर्ण दसन मालनी तो ०॥, और छोटी पीपल तो. ३ । सब पीसकर ६४ पुणी बनाना एक सुग्रह एक शामको रातसे वा दूधसे लेकर जार वासावलेह १ से २ तोला खिल ना । उपर दूध पीना ।

३ दलचीनी, रोठ नागरमोथ, इलायची धनिया, खांदला, हल्दी और अजमोद सब समानभाग लेकर कूट कर गुडमें गोलकी बनाना । इसका धुआं हुकामें या चुगीमें पीना ।

४ अड़साका (वासा) मूल, जीवती (खरखोडीवा फल) बदंती (धूप) के पंचांग सुलैठी का मूत्र, कचूरा, छोटी कट हरीके मूल, सब समभाग कूटकर एक तोलमें २० तोला पानी डालकर रातको सिंगो रखना । सुग्रह कपड छान कर अकेला या किसी दवाइके साथ देा दफे देना ।

५ छोटी कटहरी फल, बड़ी कटहरी फल मोय डपली (भूम्याफलकी) गोरखमुन्डी, हल्दी, तिलपर्णी (तिलवणी) रसैत (रसवती) सब साथ कूट सबके बराबर गुगल मिला र गुडसे सोगठी बनाना । और इसका धुआं हुक्कासे पाया चीलदसे पिल ना । दिनमें दो तीन बफे पिलाना ।

६ दिव्य धूप २० तोला तमाकुकी सूखी पत्ती १० तोला, सुगंधी कुष्ठ ४ तोला सबको कूट कर उसमें गुड २० तोला मिलाकर महीन कूटकर रखना । धुआं हुक्कासे या चीलमें पनसे श्वय अदि रोगमें बहुत लाभ होता है ।

७ कुडाडी छाल अड़साके पान भारगी और जीरा समभाग कूटकर १ तोलाका क्वथ गनाकर हृहद डालकर पिलाना ।

८ अन्नक भस्म तो २, शिलाजतु इयेग तो १ सुवर्ण पर्पटी तो. १, वातचिंतामि वृहत् तो ०॥ सप्तान्न लेह तो १ काली मिाच तेको ३, सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना । कटकारी अवलेह अथवा च्यवनप्राय अथवा वासावलेहके साथ देना ।

९. अजुनकी छाल, आणिका मूल, अड़साके पान, असगव दाहहल्दी, खाखावली, सब समभाग लेकर कूटकर रखना । एक तोलामें २० तोला पानी डाल रातको सिंगो रखना । दिनको दो दफे पिल ना ।

✓ १-नमक तो. २० के पीसकर भाकड़े दूधमें भिगोकर सुखाने पर पानी वाला नालियेर (श्रीफळ) के उपरकी रेखा सब निकाल कर आत्मे स्थानमें छिद्र कर पानी निकाल कर उसमें नमक भर देना । जितना समा सके दाब दाब कर भरना । पीछे छिद्र के स्थानमें घुच दे कर नालियेरको सात कपडमिट्टी करना पीछे गजपुट अग्निमें पकना । पीछे खोल कर खोपरा (टोपरा) के साथ नमक निकाल लेना । उसको पीस कर रखना । २ से ४ रती दो व्रत देनेसे ताप खासी क्षय आसने उत्तम लाभ होता है ।

खांसी कास कफ ।

उदानानुगत प्राणो भिन्नकास्यस्वरो मुक्तात् ।
दुष्टो नरेति सहसा स शेष कासोऽस्त्रियः ॥

कारणः—वासनलिमें धूल बगैरह पदार्थ ज जेसे, आती हुड छीकको रुकनेसे दाह करनेवाले गरम ठंडा, वायुकर्ता रातवासो आदि पदार्थ स्थानसे ठंडे पानीसे स्नान करनेसे, ठंडा पवन लगनेसे, आघातसे, चोटसे, अतिमोहन, गरिष्ठ मोहन, अजीर्ण पर मोहन करनेसे आदि कारणोंसे खांसीका रोग उत्पन्न होता है ।

बिहून-गलेमें खुजली जैसा होकर खासी आवे । कफ कष्टसे छूटे जब कुछ अच्छा लगे । शरीरमें घेडा ताप रहे । अन्नपर अभाव । गलेमें छोटो अक्का जुमता हो ऐसा लगे ।

वायुकी खांसीमे : हृदय गला और मुख सुखा होता है । हृदय पसलियां और मस्तकमें झल निकले । घमराहट, बेचेनी, दार बैठ जाना, खांसीका वेग अधिक, पीडा हो, दर्द हो, खासी सूखी आवे, स्वर बैठ जाय । दस्त सूखा हो ।

पित्तकी खांसी—छातीमें जलन, ताप बुखार, मुखमें शोष, मुखका स्वाद कड़ुआ, तृषा अधिक, पीले रंगका तीखा कड़ुआ वमन, रोगीश रंग पीलापन लिये, आंखोंमें जलन शरीरमें जलन दाह कफ पीला दस्त पतला ।

कफकी खांसी—कफ निकलनेमें कष्ट कष्ट, छातीमें दर्द कष्ट, मस्तक दिमाग छातीमें बोझ, गलेमें कफका अधिक जमाव मुख चिकना शरीरमें बुखारी ग्लानि शीनस वमन अशुचि दस्त चिकना कफ सफेद ।

उरक्षतकी खांसी—अपनी शक्तिसे अधिक बलका काम करनेसे, अधिक माषण, अधिक गाना, अधिक नोष्ठ उठाना, अधिक समय तैरना, बेल घोड़ा आदि पशुके साथ लड़ना उनको काबुमे लेनेके लिये बलका अधिक उपयोग करना आदिसे हृदयमे क्षत व्रण होकर खांसी आती है। इसमे कफ पीला काला सूखा गांठेवाला सड़ा हुआ पड़ता है। कफ निकालते गलेमे छातीमे दर्द हो छातीमे शूल निकले, श्वास दम्रा, तृषा आदि होकर दिनादिन शरीर क्षीण हो छातीसे और पिशाबसे खून गिरे।

क्षयकी खांसी—अतिविषय अनियमित भोजन वाजाह चीजोकी आदत, वायका अधिक व्यसन, अधिक दुःख शोक, चिंता मानसिक संताप, अमुक रोगसे क्षीणता आदि कारणोसे क्षयकी खांसी होती है। इसमे दुर्गंधवाला पीला हरा सफेद कफ गिरे, बुखार रहे, कमजोरी अधिक लगे, खुराक पर अवधि मदाग्नि, सांधोमें दर्द आदि चिन्ह होते हैं।

पथ्यापथ्य—खांसी वाले रोगीने अपने शरीरको ठंडी लगने न देना, शीत श्रुत हो या शरीर ठंडी सहन न कर सकता हो तो गर्म या मोटा कपड़ा पहिनना। शरदी करनेवाले, गरिष्ठ पदार्थ, खांठ शकर के मिष्ठान, अजीर्ण करनेवाले अन्नपान नहि खाना। खीरग नहि करना। पवनका धक्का लगे इस प्रकार चल्ना नहि। सींगदानेका-मुंगफलीका तेल अच्छे र लाल मिरच नहि खाना। फलदी पाषण हो औषा ताजा बनाया खुराक लेना। दुध अधिक लेना ताजा वारोष्ण दुध मिले तो बिना गर्मकिये बिना शकर ढाले पीना। दुधमे थोड़ा नमक ढालकर पीना। दूधमें गुड मिलाय पीना अच्छा है। खीरदी चावल सब प्रकार दाल नेहु चाजरी जव चना आदि न्वाना। शाकमे सूरण दुधी तुरीया करेला वेगन परवल कि मेथी चौलाई आदि, फलोंमे चीकू मीठे मोसची सफरजन हरी द्राक्ष पपैया आदि। सूखा सेवामे द्राक्ष बादाम पिस्ता आदि गुणकारी है। चा काफी का व्यसन हो तो बिना पानी ढाले निखालस दुधमे थोड़ी शकर चाय या काफी ढालकर एक या दो बखन पीना। हुक्केकी तमाक्षुमे गुग्गल घृत गुड अथवा टिक्क धूप के साथ गुड मिलाय इसका धुवा हुक्केसे या चिश्मसे पीना छातीपर कपड़े के मोटेसे या अन्य साधनसे सेक काना। शरीरपर महालाक्षादि तेल अथवा महानाराण तेल अथवा मृंगराज तेल मलीस करना।

रसेन्द्र गुटिका—(रस) पारद गंधक अभ्रक भस्म ताम्रगन्ध शुद्धहरिताल लोह भस्म अतिविष कालीबीरच सह सप्तान भाग लेकर साथ मिलाय मांगरी

निर्गुली सहजना मूली मूल निबुरस हाकका फुल काकमाची प्रत्येकके रस या क्वाथसे एक एक भावना देकर दो रतीकी गोली बनाना । मात्रा २ से ६ गोली से ३ से ४ मासा सितोपलादि चूर्ण अथवा तालीसादि चूर्ण मिलाय गहद दूध या पानीसे देना । सब किसमकी खांसीमे गलेके रोगमे गुणकारी है ।

गुण महोदधि—(र. स.) पारद गंधक लेहमस्म ताम्रपत्र वंगभस्म अन्नक भस्म शुद्ध बछनाग दालचीनी प्रत्येक एक एक भाग, तमाल पत्र सोंठ छोटो पीपल काली भोरच नागरमेथ घायविहंग नागकेसर निर्गुली मोक्ष इलायची पीनलीमूळ मुरडासींगी वंशलोचन प्रत्येक दो दो भाग लेकर जलपिप्पली (रतवेलीघो) निबु और तुलसीके रसकी एक एक भावना देकर दो रती की गोली बनाना अथवा घोटकर रखना ६ से ८ रती अथवा ३ से ४ गोली शहद या दूध से दो या तीन समय देना । खांसी श्वास छाती के फटोका रोग श्वासनली स्वरनलीका सूजन स्वरभंग आदिमे गुणकारी हैं ।

मर्कवटी—(र. स.) आकका फूल २० तोला लवंग सोंठ छोटो पीपल काली भोरच जायफल प्रत्येक ५ पांच तोला सथ मिलाय पानीसे ३ रती की गोली बनाना मुखमे रख रस उतारना ।

मधु यष्ट्यादि गुटी—(र. स.) मूलठी मधु यष्टी का घन (सीरा) २० तोला, तज तमाल सोंठ पीपल काली भोरच लवंग सावरसींग भस्म शुक्ति भस्म कुष्ठ प्रत्येक चार चार तोला अदरक के रस से गोली ३ रतीकी बनाना मुखमे रख रस उतारना खांसी स्वर भंग श्वास नलीकी सूजन तन्नि मिटे ।

शृंगाराभ्र—(र. स.) अकक भस्म निश्चद्र तोला ३२, कपूर घायपत्री नागरमेथ गजपीपल तमालपत्र लवंग जटामासी तालीसपत्र तज नागकेसर कुष्ठ घाईफूल प्रत्येक एक एक तोला, हरद आंघला बहेडा सोंठ पीपलछोटो काली भोरच प्रत्येक आधा आधा तोला इलायची २ तोला जायफल २ तोला, गंधक ४ तोला, पारद २ तोला सबसाथ विचित्रत घोट कर अहूसी (वाघा) के पतेके रसकी भावना देकर सूख जाने पर घोट रखना । मात्रा ३ से ६ रती दिनमे दो या तीन बार शहद दूध या पानीसे देना । पंछे तांबूल पानमे अदरक दो मासा डाल कर चाव कर खा जाना सपर पानी पीना । कास श्वास हिकका वमन तृषा पीनस क्षय रोगको मिटाता हैं । विशेषतः मंदामि ज्वर उदररोग सूजन मेदवृद्धि नेत्ररोग प्रमेह शूल अम्लपित्त पांडुरोग रक्तछाव आमवात आदि रोगमे भी उत्तम गुणकारी प्रतीत हुआ है । बन्ध कृयु नाजोकर और पुरुषातन देनेवाला है ।

वाजीकरश्च बल्यो ललनाजनविष रंजने भोगी ॥

शृंगाराभ्रः सततं आरोग्यायुष्यवर्धने भवति ॥ १ ॥

शुक्ला ग्लायन—(चरक चि अ म्लो. १२२ से १२५) शुक्ला प्रवाल वेद्यं जल स्फटिक प्रायेककी पिष्टी, शुद्ध काला सुरमा, पारद गंधक आकके फूल इत्यादी नमक सेवनान, ताम्र भस्म रौप्य भस्म, लोहभस्म कमल पुष्प, कसेरुम जायफल, कण्ठीज अपामार्ग वीज सब समभाग लेकर साथ मिलाय रख ले । प्रातः साय ४ से ६ रती मात्रा शहर घृतसे लेनेसे कास श्वास हिककाफा धामन होता है और यह अंजन करनेसे तिमिर काच नीलीक पुष्पक आखिका मेल चिफडा आखकी खुन्लो, आख उठना आदि रोग मिटते हैं ।

खेरसारादि गोली—(र स) खेरसार या कथा ८ भाग, पुष्परमूल काकडाजोगी जायफल भारगी, हरड, लवंग सोठ, छोटी पीपल कालीमीरच अतिस अजनायन, घमासा, गिलेय, छोटी कटहरीका फल, बड़ी कटहरी फल बहिडा सब एक एक भाग लेना । साथ मिलाय कर कपूर ८ भाग मिलाय पानीसे गोली बने प्रमाण बनाना । कास श्वास स्वरभंग हिकका आदिमे गुणकारी है ।

मिश्रण १ अभ्रक भस्म तोला २, ताम्रपर्णी तोला १, चासठ पोरि पीपल तोला , साधरसिंग भ म तोला २, हलदी तोला २ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी कर २ बख्त शहद दुध या पानीसे देना । सब प्रकार के खासी के रोगमे देना । प्रत्येक पुडी के साथ ३ से ४ मासा सितोपलादि चूर्ण मिलाकर लेनेसे अधिक लाभ होता है ।

मिश्रण २—शुक्ल भस्म तोला १ शृंगाराभ्र तोला १ मुग्ग पर्णी तोला १ शुग्ग मासीक भस्म तोला १, अमरस बृहत तोला १॥ सोठ तोला २ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनादे । दो बख्त दूध शहद या पानीसे सब कास श्वास मे उत्तम है । प्रत्येक पुडी के साथ तालीसादि चूर्ण ३ से ४ मासा मिलाकर लेनेसे अधिक लाभ होता है ।

चोपचीन्यादि बट्टी—चोपचीनी बट्टी सोंफ सज्जखार एरंडी बीजका गर्म जाली मुमली समभाग लेकर गौमुखमे गोली ३ रतीकी कर २ से ३ देना ।

अहिफेनादि चटो—अर्कण छोटीपीपल अड्डवा मूल भारगी सोठ काली मिरच लवंग दालचीनी कपूरकाचलो जायफल जवखार मूलीठी मूल नमक अजमा जायविठग हलदी सब समान भाग मिलाय शहदमे गोली ३ रतीकी बनाना २ से ३ गोली मुखमे रख रख उतारना ।

लवंगादि चूर्ण—गोली—लवंग ४० तोला सेठ छोटीपीपल कालोमिर्च अदुषी पत्र छोटी कटहरीफल नागरमोथ कचूरा पिपलीसूल इलदी जवखार कर्कट शृंगी कुलीजन प्रत्येक दस दस तोला साथ कूट रचना शहरसे २ से ३ माशा खासी खास दिक्का मिटे । शहरसे या शुद्धसे गोली १ मासाकी बनाना ।

बालकफारि गुटी—(र स) पाद तोला १० गघक तोला १०, सेठ छोटी पापल कालोमिर्च वायावडंग जवखार सोहागा पकाया प्रत्येक तोला ८ हीमजी हाड एरडो के तेलमां तली हुई तोला २४, कथ्या तोला ५६ कर्कट शृंगी कपूर काचली सागर गोटाकी गिरि (कांकचीय'नां मोज लताहरज बोज गर्भ, लवंग प्रत्येक तोला १० जमाल गोटा गीरी शुद्ध तोला २० सब साथ मिलाय मृंगराज के पते के रसमे सुग जैसी गोली बनाना वच्चीका १ से २ गोली पानीमे पीस देना कास बही खासी कफ शरदी दमा छाती मे कफका जमाव आदि मिटते है । और बही उम्रके लोगोंको ४से६ गोली गरमजलमे दी जाती है ।

महाराजमृगांक—(र. स. क्षये) स्वर्णभस्म तोला १, रससिद्ध तोला २, मुक्तापिष्टी तो ३, गघक तोला ४, स्वर्ण माक्षिक भस्म तो, ५, प्रवाल पिष्टि तो. ६, पकाया सोहागा तो २, शंख छुक्ति, कौडी सावर विंग लेह वैक्रांत त्रिमग अत्रक आठो चीजे'की भस्म प्रत्येक २ टा तोला लेकर सब मिलाय नीमके पचांगके क्वाथ या रसमे ३ दिन घोट गोलाकर उपर केली के पते रपेट घागा बांधकर उपर मिट्टीका टेप एक एक अंगुल करना लवण यत्रमें गोला रख २४ घंटा पकाना । स्वांगशीत होनेके पीछे निकाल कर घोटकर रराना । पातः राय ३ से ४ रती छोटी पीपल और काली मिर्च के चूर्ण ६ से ८ गती के साथ शहर घृतसे या दूधसे दिनमे २ या ३ समय देना । ४० दिन सेवन करनेसे क्षयरोग मिटता है । रोग अधिक बढा हुआ हो, दोनो फेफडे चिगड गये हो तो रोगीकी शारीरिक स्थिति रोगका स्वरूप देखकर आराम हो जबतक देते रहना । इस औषधसे कृशता हृदय फेफडेकी सूजन उर क्षत खासी कफ जीर्ण'उर मिटते है । रोगी बलवान पुष्ट होता है ।

शिलाजतु प्रयोग—(र स.) शॉलार्जीत वायाविडंग लोहभस्म १०० गुटी बही हरड स्वर्णमाक्षिक भस्म सब समान भाग लेकर घोट कर रखे । ३ से ४ रती शहर घृतसे देनेसे क्षय खासी खास दम कमजोरीमें उत्तम फायदा होता है ।

सुधर्ण पर्यटी—(र. स.) सोनाका वक' (पते ४ तोला लेकर ३२ तोला शुद्ध पारदमें घोटना सोना मिक जाय जब ३२ तोला शुद्ध राखक लेना । लेहेकी

कड़ाईमें १० तोला गायका घी छेड़ पीघल जानेपर उसमें ३२ तोला गंधक छेड़ उसका रस हो जानेसे सुवर्ण पारदकी पिष्टि ढाल कर लेहेके तवेथामे हिलाना सब मिल जाय जल हरे गोबरके उपर बिछाये केलीके पते पर त्वरासे ढालकर उपर पत्ता और हरा गोबर दाब देना । २४ घंटे के पीछे गोबर अलग कर केलीके २ पत्तों केबीच की पर्पटी निकल कर घोटकर शीशी में भर देना । मात्रा ३ से ४ रत्ती ३ से ८ गासा सितोणलादि चूर्ण और गहद घृतमे देना अथवा चोसठ प्रहरी पेपल ६ से ८ रत्ती से मिलाय गहदसे देना । क्षय रोगमें उत्तम गुणकारी है । और सप्रहणी अतिसार पटाग्रि पांडु जीर्णज्वर और बुद्धलोग जवान बच्चे स्त्रियां आदि सबकी किसी भी रोगकी कमजोरी में कमताकालमें कृशता क्षीणतामें परम गुणकारी है ।



श्वास रोग

कारण—उमन, विष, विषविकार पांडुरोग, अजीर्ण, ताप धूप, बुआ, नमस्थानमें आघात, ठंडी पवन छातीमें लगना, गंधकका बुआ, आघात, ठंडे पानीसे नहाना आदि अनेक कारणोंसे यह रोग होता है । फुफ्फुसोंके बाहरकी पतली धमनी नाडियां बिगडनेसे उनमें बाहरी वायुका यथाचि आगमन होता नहीं और फुफ्फुसोंकी विषकी हवा स्रगलतसे बाहर निकल सकती नहीं । इस कारण यह रोग होता है । विशेष रोगोंके चिह्न के रूपमें भी यह रोग हो जाता है ।

चिह्न—किसीको ठंडी श्वास, किसीको वर्षामे और किसीको सब ऋतुमें यह रोग हो जाता है और बहुत वर्षांतक रहता है । प्रायःक वर्षामे अमुक समय पर उमड़ आता है । बहुत करके रातको समय ज्यादा होता है । जब रोगी नींदसे जाग जाता है । छातीमें एक प्रकारका आवाज निकलता है । पहिले खांसी आकर दम बढता है । कफ निकल जाने में आराम रहता है । स्वरनलीमें एक प्रकारका आवाज निकलता है । पहिले खांसी आकर दम बढता है । कफ निकल जानेसे थोड़ा आराम रहता है । छातीमें घबराहट, संकोच, दाब थडका, जलन, पीडा, उदर आदि होते हैं । हिरने कियेमें तकलीफ होती है । पीछली रातको दम और पकडता है । पाचन अच्छा नहीं होता । दस्तकी धब्बी रहती है । श्वास चढ़े अथ पहिले खांसी बहुत आकर रोगी बेचैन हो जाता है । पसीना

लपता है। अंदर जानेवाला आस दुंधा और बहार निकलनेवाला आस लपता होता है। लमणोंमें दर्द पेटमें और कब्जमें शूल, कामजात्रमें निरुसाह मुखमुद्रा चित्ताप्रस्त आदि बिह होते हैं।

पथ्यापथ्य—अर्जुण होने न देना। बर्दा करनेवली चीज छेड़ना। खांछ शब्दकी चीजे, बजारकी मोठाड़े, मुंगफलीका तेल घी, दही छाछ आइस्क्रीम, बरफ अदि नहीं खाना। रोगीके लुब्ध होना प्रकाशवाले कमरेमें रहना। आस-पास गंदगी भेज न देने देना। आगरण नहीं करना। घी और चरबीवाले पदार्थ कम खाना। गागर, घेरी गह्वी, जटनी इन्का दूध लाभकारक हैं। ठंडा और सामने देगनाला पन्न लेना नहि। प्रणायाम करना। एक समय सोजना करना। गरम जलसे नहाना।

श्यास कुठार (योग पृ १५६)—परद गवक शुद्ध दलनाग टकण शुद्ध मन्शील, प्रायेक तोला ५ पांच और कली मिरच तोला ४८, सेठ तोला २, छोटी पीपल तोला २, कली मिरच तोला २, सब साथ मिलाकर ८ दिन तक घोट कर रखे। मात्रा—१ से २ रती इन्धा चूना लगाया पानमें डाल खिलाना। दिनसे २ या ३ बार देना उपर बूध पवे। श्यास दमा काष्ठ खांसी, मदाग्नि, कठके रोग मूच्छा अपस्मार मृगोके देना ०। से ०। रती बिना पत्था चूना लगाये पानमें पाम्बर प्रवाही धर पिलावे। बच्चोंके कफ सरसी भराणी बड़ी खांसीमें अच्छा फायदा होता है।

श्यास कालेश्वर (महाकालेश्वर) (१५६)—पारद, गवक, शक्र भस्म, ताम्रभस्म, लोहभस्म, गगनभस्म, नाक्षिक भस्म, दिगुल शुद्ध दलनाग शुद्ध कुचला जायफल जायपत्री, लवंग, तण्डुल, इलायची, नागकेसा, दन्तक बीज, वंश लोचन, समुद्रफोण शुद्ध, सेठ प्रायेक द्रव्य दो दो तोला, विजया १० तोला, कालीमिरच ६ तोला, छोटी पीपल ६ तोला सब साथ घोटकर कदरसके रखकी १ भावना देकर सुखाकर घोट रखें। मात्रा २ से ३ रती शुद्धसे या वासा-वलेहने देना। सब प्रकारकी खांसी दम क्षय गलेके रोग मदाग्नि अनिद्रा कफजोरी आदि मिटते हैं। शक्ति आती है।

ताम्र पर्पटी—(१५६) ताम्र भस्म तोला १२ पारद तोला ४, गवक तोला २४ पहिले गवकको पिघाल कर रख देना जाने से उसमें पारद डालकर तबेधासे हिलाना। मिल जाय जब ताम्र भस्म डाल कर पर्पटी की रीतिसे गोबर और के केलीके पत्ते के बीच दबाकर २४ घंटे के पीछे निकाल कर घोटकर

उसमें छोटी पीपल का महीन चूर्ण तोषा १२ मिलाकर घोट कर रखना मात्रा ३ से ४ रती शहद घृतसे देना। श्वास खांसी हृदय के रोग शरदी कफ टाररोग शूल पेटकी पीडा गुल्म आदि मिटते हैं।

सूर्यावर्त—(रस) ताम्र भस्म पारद गंधक प्रत्येक तोला १०, शस्त्र भस्म शुक्ति भस्म सोंठ पीपल काली मीरच लवंग इलायची तज प्रत्येक तोला ५ सब साथ घोट कर रखना। ३ से ४ रती तुलसी के १५-२० पते के साथ अथवा तांबुल पानकी पट्टी के साथ देना सब प्रकारका श्वासका रोग खांसी हिचकी मिटे।

श्वास चिन्तामणि घृह्य—(स्वर्णयुक्त रस) पारद गंधक ताम्र भस्म शुक्ति भस्म शस्त्र भस्म प्रत्येक पांच पांच तोला, सुवर्ण भस्म रौप्य भस्म मुक्ता पिष्टी प्रत्येक एक एक तोला, माक्षिक भस्म तोला ६, सोहागा चातुर्वनाम सोंठ पीपल कली मिरच मनशील कनकबीज प्रत्येक चार चार तोला साथ मिलाय घोट कर छोटी या पड़ी करहरी के फलके रसकी निगुड़ी रससे और अदरक की एक एक भावना देकर सुखा कर घोट रखना मात्रा ३ से ४ रती शहद घृतमे या दूधसे या शहद से देकर पानकी पट्टी खिलाना। इसका धुआ भी चिल्ममे पिलाया जाता है।

खामरेश्वराभ्र—(रस) अभ्रक भस्म तोला ३० पारद तोला १० गंधक तोला १०, रसगिंदूर तोला ५, कांस्थ भस्म तोला ५ सब साथ मिलाकर घोट कर नीचे की वस्तु के कवाथ की ४ भावना देना। भागंगी कन्क पत्र अहसी कमौदी बकाउन नीम निगुड़ी पीपलीमूल षडरस चित्रक चक्र तज लोण प्रत्येक तोला ४ लेकर कुट कर ४ भाग कर एक भागका फनाय कर भावना देना। इत्तरह ४ भावना देना पीछे सुखाकर घोट रखना। मात्रा ३ से ४ रती शहदसे देना। श्वास छाती के रोग छातीको कमजोरी खांसी बच्चे के कंठोके हृदयरोग शरदी पीनस जुकाम आदिमे अच्छा लाभ देता है।

श्वास गजस्निह—(वस्तूयुक्त रस) ताम्रभस्म पारद गंधक प्रत्येक तोला १०, अभ्रक भस्म मूँठी मूल सोंठ पीपल पीपरी मूल तथा मिरच लोण इलायची केसर कुलिजन शकलकरा तज चदन का तेल अथवा चूरा प्रत्येक एक एक तोला सावरधिग भस्म तो ६, मल्ल भस्म तो १०, कस्तुरी तो. २ पड़िले पारद गंधक ताम्र भस्मको परीटी बनाकर दुसरी वस्तु मिलाना। सब किसमका श्वास दम खांसी हृदयरोगमे उत्तम गुणकारी है।

वासादि क्वाथ—(र सं) अड़सीके पत्ते हलदी घनिया गिलोय भारंगो पंपल सेठ कटहरीकामूल स-भाग लेकर कुटकर १ तोलाका क्वाथ कर पिलाना ।

ऊर्ध्वश्वासारि—(रसं) शुद्ध पारद गंधक ताम्र भस्म लेहमरुम, वर्गभस्म, चित्रक सेठ छोटपीपल, काळी मिरच, असगंध, हरद, बहेडां आंबडां, छोटों कटहरी मूल, हन्दी अकलकरा बड़ो अज्योद, नवग, नागरमोक्ष, कनक बोध, सैधव अवाखार, इलायची जीरा, मुलेठी, अजबान, चीनोफवाला, प्रत्येक १ एकनाग, रुंती धूप ५ भाग विजया ५ भाग, और गुग्गल ५ भाग मिलाकर बड़ी कटहरी के रससे भावना देकर दो दो रतीकी गोली बनाना अथवा घोट कर रक्खना मात्रा ३ से ४ गोली अथवा ६ से ८ रतीं दो या तीन समय पानीसे या शहदमे लेना ।

खिंतामणि चूर्ण—(र. चं) रास्ना, बलाबीज, पञ्चकण्ट, देवदार, हरद, बहेडां, आंबडां सेठ पंपल, झाली मिरच, वायविडंग समभागसे मिलाना । दो समय ३ से ४ मशा शहद अथवा बी के साथ वेना ।

श्वास के सामान्य उपाय

प्रयोग १ श्याम कालेधर तो ०।।, सावरखिंग भस्म तो १, अग्निरस तो. ०।। अष्टामृत पपटी तो १. लौंग तो २ सब साथ मिला कर ६४ पुढी बनाना । दो बहुत बामानलेह अथवा शहद अथवा पानी के साथे वेना ।

प्रयोग २. ताम्र पपटी तो ०।। सुरणी दमंत मालती ०।। अत्रक भस्म तो १ शुक्ति भस्म तो १ श्यामकुठार तो १ सब साथ मिलाकर ६४ पुढी बनाना । दो समय शहद या पानीसे ।

प्रयोग ३ अत्रक भस्म तो. १, ताम्र भस्म तो. ०।। सर्वेष्टर पपटी तो १, चोसठपोरी पीपर तो ३ सावरखिंग भस्म तो २ सब साथ मिलाकर ६४ पुढी बनाना । दो बहुत शहद या पानीसे देना ।

प्रयोग ४ घटूरे का पान तो २ छायामे सुखाकर उसमे दिव्य धूप तो ४ और गुड तो. ४ सब मिलाकर टीकिया बनाना । इसका धुआं हुककेसे या चोलीमसे लेना ।

प्रयोग ५ बहिडेकी छालका चूर्ण सेर १ में ८ शेर गौमूत्र ढाल चकाकर घट्ट होनेसे दो ११ माशाकी गोला बनाना । २ से ४ गोली पानी या शहदसे लेना ।

✓ **प्रयोग ६** अजवायन २ से ४ माशा गहरियाका दूध तो. २० और हल्दी तो ०॥ सब साथ मिलाकर पिलाना ।

प्रयोग ७ देवदार, चलामूल, जटामांसी समभाग ले सबको साथ पीस कर २-२ माशाकी टीकिया बनाना । सुखाकर टीकियाको गंध के घृतने भिगे कर हुक्का या चीलमसे घूम पीना ।

प्रयोग ८. दशमूलादि षड्वाथ दशमूल कचूरा रास्ना छोटो पीपल, सेठ पुष्कर मूल काकडा शिमी भुखी आवली, भारगी गिलोय लौंग चित्रक सब समान भाग लेकर कुटकर १ या २ तोलाका क्वाथ या फांट बनाकर पीना । श्वास हृदयका जकड़ाना पसलियोंका शूल, हिक्का, खाँसी में उत्तम गुणकारी है ।

प्रयोग ९. केलीकां, फुल, डोलरका फूल शिरीषका फूल और छोटो पीपल सब समानभाग लेकर कुटकर रस्ना २ से ४ माशा पकते चावलका ओसमण (पांनो) -चावलके मूँसे देना ।

✓ **प्रयोग १०** हल्दी, काली मिर्च, काली दाक्ष, छोटो पीपल रास्ना कचूरा सब समान भाग कुट गुठये २-२ बालकी गोली बनाना । २ से ४ गोली १ तोला सरसोंके तेलसे मिलाकर खा लेना । उपर गरम पांनो पीना ।



हिक्का हीचकी

कारण-अजीर्णसे उदावर्त वायुकी उर्ध्वगति होनेसे, हस्तिरीयासे दस्तकी कबज्जीसे रुख, ठन्डे, वासी भोजनसे मलमूत्रका वेग रुक जाने से अजीर्ण पर भोजन करनेसे आम बढ़नेसे अभिघात और आघातसे क्षयरोगसे और कौड भी रोग भयकर रूप पकड़नेसे यह रोग उत्पन्न होता है ।

चिह्न-अन्नजा क्षुधा यमला महती, गभीरा ये पांच प्रकारकी हिक्का होती है । पहली दो साध्य है और सामान्य उपचार से मिट जाती है । यमला कष्ट साध्य है । यह हीचकी आनेक समय मस्तक और श्रोत्राका कंप होता है, पेट चढ़ता है तृषा लगती है । वमन और दस्त होता है, जमाई और हीचकीका वेग दोनों साथ आता है । यह हीचकी अन्न पचन हो जब उठती है । इसका दूसरा नाम वेगनी और परिणामवती भी है । महती हीचकी असाध्य है । यह आते समय झुकुटी शंख (कान और नेत्रके बीचका भाग-लम्णा)

अब जब हो जते हैं आखे में पानी भरता है। रेगी बोल नहीं सकता। स्मरण शक्ति नष्ट होती है। इस हीचकीका शब्द वेग और बल अधिक होता है। गंभीरा हीचकी भी असाध्य मानी जाती है। यह पक्वाशय और नाभिसे ऊठती हैं। यह आती है अब गंभीर नाद जैसा शब्द होता है। दूसरे लक्षण महती जैसे हैं।

पथ्यपाथ्य-साधारण हीचकी में प्राणायाम कराना। वायु अधिक करनेवाली चीज नहीं खाना। उपवास कराना। आश्रय जनक पाते करके रेगीको भय उत्पन्न और आनंद बढ़ाना। साधा खुराक देना। इलायचीके छिलकेका धुआं हुकके से या चुगेसे पिलाना। वायुका अनुलोचन हो दस्त पिशाब ज्यादा हो ऐसा उपचार करना। उष्ण वीर्य औषध और अनुमान तिगारक होता है।

सर्वमगला घट्टी—(र. स.) पारद, गन्धक, अन्नक, भस्म, ताम्र भस्म, शाल भस्म, कांस्य भस्म, प्रत्येक ४ चार तोला, रससिंदूर शुद्ध मनशील छोटी पीपल, सेठ ईलायची, काली मिरच, पीपरीमूल प्रत्येक ६ छह तोला, अदरक, तुलसी पत्र घट्टे का पान निगुडोका पान और अदुषी के पान प्रत्येक १० दस तोला लेकर कूट कर कषाय करना। उसको ३ भाषना देना। और रती रतीकी की गोली बनाना। ३ से ४ गोली शहदसे देना और हुक्का या चोलम में धुआं पिलाना।

हिक्का हीचकी के सामान्य प्रयोग

प्रयोग १ सेठ, कालीमिरच, कूटकी, पीपरीमूल, छोटी पीपल, सेधानोन जीरा, कचूरा, काकडा मिर्गी निसेध, काला नमक कुष्ठ सब समान भागसे कूट कर बीजोरा निगूके रसकी भावना दे कर रखना। पात्रा २ से ४ प्राशा प नीसे देना। हिक्की श्वास खाँसी और मदाग्नि मिटे।

प्रयोग २. गाय के सींग का धुआं पीना।

प्रयोग ३ इलायची कूटकर उसका धुआं पीना।

प्रयोग ४. अच्छी हिंग तो. १ में उड़दका आटा तो. ५ डाल अवा आधा तोला की टीकिया बनाना। छायासे सुखाना। उसका धुआं पीना।

प्रयोग ५ भारंगी और सेठ सम भाग मिला कर पात्रसे आधा तोला गरम जलसे देना।

प्रयोग ६. सबेश्वर पर्पटो, साबरसि ग भस्म, चोसठ पीपरी पीपर। चंद्रप्रभा अप्रमान भाग मिलाकर ४ से ६ रती शहद या पानीसे देना।

प्रयोग ७ पत्रकाष्ठ छोटी पीपल, इलायची और मयूर के पीछे रखकर समभाग ले कर कूटकर मिट्टीकी हड्डीमें हाथ अंतरधूप जलाकर उस रस रस ८ से १० रती शहदसे देना ।

प्रयोग ८. कायफलको कूट कर २ से ४ माशा शहदसे देना ।

प्रयोग ९. हलदी मयूरपिच्छ और राल समानभाग कूटकर दूधवा धुआं पिलना ।

प्रयोग १०. मोरपिच्छकी भस्म २ से ३ रती और छोटी पीपल ४ से ६ रती अदरक के रससे शहद डालकर देना ।

प्रयोग ११ तुलसीके पत्तेका रस १ से २ तोला पिलना ।

प्रयोग १२ विजयसारकी छाल (अंजन वृक्षकी छाल) और सदाती क्षुप समभाग कूट कर ४-६ माशा पानीसे देना । अथवा उसमें गुड मिला कर इसका धुआं पिलाना ।

प्रयोग १३ छोटी पीपल और सहजनेका मूल समभाग कूट कर ८ से १० तोला पानीसे देना ।

प्रयोग १४ अष्टामृत पर्पटी तो १, लौंग तो २, सितोपलाटि चुर्ण तो ३, साधरसिंग भस्म कपूर, इलायची प्रत्येक तो २, जायफल तो २, सर साध कूट मिलाकर २ से ४ माशा गुड के साथ दो से तीन दफे देना ।

मुखरोग मुखिके अंदर के रोग

गलेके रोग तथा स्वरमंग

विषेच्चैर्भाषणाजीर्णाध्यशनैरतिशोतलैः ॥

अभिघातादिभिर्दोषा गलस्त्रोतःसु दृपिताः ॥

कुर्युर्नानागलगदान् स्थिताः स्वरवद्देश्वपि ॥

गलकर्कशयोः शोथ स्वरभगादिकागदान् ॥ र. सं. ॥

कारण तथा चिह्न—अजीर्ण दस्तकी कबजी शरदी पवन लगना गरम पदार्थ ज्यादा खाना और पित्त प्रधान रोग आदिसे और आंश किगनेसे अग्रहणी के रोगसे मुखका रोग होता है । गलेकी सूजन अंदर और बहार होती है । जिससे पानी भी नहीं उतर सकता । ताप भी रहता है । आवाज बैठ जाना है ।

स्वर भंग, जोरसे भाषण करनेसे, बोलनेसे, गानेसे, विष विकारसे अजीर्ण पर मोखन करनेसे खांसी क्षय केन्सर जैसे रोगसे प्रवृत्त बदलेनेसे सरदी तम बनेसे, और अन्य कारणसे यह रोग होता है।

स्वरभंगमे वायुकोप हो तो मुख आंखें सूज और मल कुछ काले रंग के हो, मुख सूखा हो गंदे जैसा स्वर निकले। पित्तप्रकोप हो तो, आंखें मुख मल सूज कुछ पीले रंग के हो। बोलते समय गलेमें दाढ़ और जलन हो। कफ प्रकोप में कंठ कफसे रुक जाय। बहुत श्रमसे थोड़ा बोल सके। नाकसे श्वास छटसे ले सके। क्षय के स्वरभंगमें स्वरके साथ धुआं निकलता हो वैसा भास हो और स्वर एकदम बैठ जाय। स्वरभंगका रोगी क्षीण हो वृद्ध हो, कमजोर हो रुका हो कबि समयसे रोगसे पीड़ा हो और तीनों दोषों के चिह्न दीखते हो वह असाध्य माना जाता है।

पथ्यापथ्य—पसना निकलनेको दवा, जुलावको, वसत को दवा देना। औषध के कुल्ला कराना। अंदरके भागमें दवाई लगाना और गलेमें किसी भागपर खूनका जमाव होकर सूजन हो तो नस्तसे खून निकलवाया। नस्य देना हुककासे या चीलमसे दिव्यधूपका श्वासमें धुआं देना। मुग, जव, कुलथी उज्जद, जंगली भांस, परवल दूधी, चावल पुराने घान्ध गरम पानी, बडुआ रस हितकारक है। तीखे पदार्थ मत्स्य, ग्राम्य भांस, दही, गुठ रुख पदार्थ कठिन खुराक, कफकारक पदार्थ बाजारकी मीठाह आदि हानिकारक है।

मुखके रोगसे बाहर के भागमें गाल गला या कंठ पर सूजन और पीड़ा हो तो दशांग लेन अथवा दोषघ्न लेपसे तनगुनी सफेद मट्टी मिलाकर पानीमें पीस लेप करना और उपर पाट बांध देना।

कल्याण भैरव रस—(र. सं.) पारद, गंधक, अभ्रक भस्म, प्रवाल भस्म प्रत्येक तो ५ मोतीकी पिष्टि तो. २ सबको सभ घिनाकर चोकर भागरा अड़ुसी, छोटी कटहरी, ब्राह्मी, और गिलेय प्रत्येक के रस या श्वाथको एक एक भावना वे कर रती प्रमाण गोली बनाना। २ से ६ गोली पीसकर पानीसे या शहदसे देना। गले के अंदरकी सूजन, दाढ़ जलना गलेक काकडेकी (Tonsil) सूजन स्वरभंग श्वास हृदयके रोग, क्षय, हिक्का, मसा, अतिशय सपहणी जोर्णजर इसमें फायदा होता है।

कल्याण घृत—इद्रायण मूल तो. १५, बहेडा, तो. १५, देवदार तो. १५, हल्दी तो. १५, अनन्तमुख तो. १५, इलायची तो. १५, दाहमकुल तो. १५-

तमाल पत्र तो. १५, ब्राह्मीहरी तो १५, खम्वर्तधुप तो, १५, हरड १५, आमबी तो १५, फलेजीजीरा तो १५, घउले तो. १५, दासहळदर तो १५, कपळमुळ तो. १५, मजीठ तो. १५, छोटी कटहरी तो १५, अतिविष तो १५, चमेलीपान तो. १५, सबको कूट पानीमे २४ घंटा भिना कर उसमें घी रतल तीस डालकर पानी जलजाय तबतक पकाना । मुख जीम स्वरनली श्वास नलीके रोग स्वरभंग गळेका सूजन मुखपाकमें, उन्माद पागलपन दिमागका रद मस्तक पीडा अपस्मार मृगी हृदयरोग आदिमें उत्तम फायदा करता है ।

किन्नरकंठ रस—(र स) पारद गवक्ष, अभ्रक भरम, माक्षिक भरम लेह भरम प्रत्येक १-१ तोला, वक्रान्त भरम ०। तो सुवर्ण भरम २ आनी भार, रोष्य भरम ०।। तो चद्रमा लेह शिलाजित वाली १० तो. बटी हरड २ तो सब साथ मिलाकर अद्दसी (शंसा), भारंगो, छोटी कटहरी, अदरक और ब्रह्मी प्रायेकके रसकी एक एक भावना देना घनेके प्रमाण गोली बनाना । मुखके रोग, स्वरभंग खाँसीसब गळे के रोग आदिमें २ से ४ गोली शहदसे या पानीसे देना ।

सर्वस्वती अवलेह—(र. स) हरी ब्राह्मी तो ६०, कटहरीका पचांग गिठिया भांगरा, वासा, बलापंचांग, मुलैठी पचांग प्रत्येक तो ३०, लेकर सबको कूटकर ८ गुने पानीमे पक्काकर चतुर्थांश पानी रहने पर कपडछान कर उसमें शक्कर शहद और गुड प्रत्येक ६-६ रतल डालकर पकाना । कुछ गाढा होनेपर उसमें हलदी आषा हलदी पीपलीमूल आवली इगट शिलाजित, सेठ, छोटी पीपल काली मिरच, अजमोद मुलैठीका शिरा कुछ निक्षोथ मैघानेन बच अन्नक भरम प्रवाल पिष्टि प्रत्येक तो ६-६ डालकर पकाना भावलेह जैश होनेसे उतार कर स्वांशोत हो जानेसे अच्छे वरतनमें भर देना । मात्रा १ से २ तोला खिलाकर उपर गरम दुध पिलाना । गळेके रोग, गळेकी अंदर या बाहरकी सूजन स्वरभंग, खाँसी, श्वास छाती के रोग पीनस, गळेका कावडा (Tonic) की सूजन जिह्वास्तंभ उन्माद पागलपन आदिमें उत्तम गुणकारी है । बुद्धि स्मृति भेषा बढ़ते हैं ।



गलेके अन्य रोग

रोहिणी—यह रोग गलेमें होता है। वात पित्त कफ दूषित होकर गलेके मांस खून को विगाड़ कर गलेको रुद्ध रखने वाले अंकुर उत्पन्न होते हैं। यह असाध्य हैं। वातप्रधान रोहिणी में जीभ में चारों ओर पीड़ा हो मांसांकुर गलेको रुद्ध दे, रोगी ७ दिनमें मर जाता हैं। पित्तप्रधान रोहिणी में जलन पाक सुखार और मांसांकुर जल्दी निकल आवे, ५ दिनमें रोगी मरण पावे।

कफरोहिणी—ने श्वासमार्ग गलेका मार्ग रुद्ध जाय पकनेमें विलम्ब हो कठिन चिकना खुजली के साथके अंकुर निक्कले, ३ दिनमें रोगी मर जाय।

त्रिदोष रोहिणी—में तीनों दोषोंके न्यूनाधिक चिन्ह दिखे इसका अस्पताल में पहुँचा कर ओपरेशन कराकर अंकुरोंको काटना चाहिये ताकि श्वासकी गति और खुराक रुद्ध न जाय और बचजाने की आशा रहे। काटनेके पीछे कल्याण घृत खुराक के रूपमें देना, दिनभर १० तोला तक दिया जाता है। बन्बूल की छाल, विजयसार (अजगरक्ष) की छाल, रुदती क्षुप, हल्दी नीमकी छाल सब सम भाग कुट कर ६ तोला में ३ लोटा पानी ढाल पिलाते रहना। रसालादि वटी ३ से ६ पानी में पीस पिलाना बाह्य भाग में दशांग या दोषघ्न लेप लगाना

कंठशालूक—वेर जैसी कंटक युक्त पीड़ाकारो स्थिर कठिन कफजन्य अन्धो गलेमें होती है यह शल्यसाध्य है।

अधिजिह्व—जीभके अग्र भाग जैसा जीभके उपर के भागमें या नीचे के भागमें कफरक्त प्रकोपसे सूजन होती है। यह पके तो रोगी का मरण होता है। यह सूजन जीभ के उपर हो तो असाध्य है, नीचे होतो साध्य माना जाता है।

घल्ल्य—लगा और मोटा शोथ कफजन्य होता है। इसमें अन्न मार्ग रुद्ध जाता है असाध्य है।

बलास—कफवात प्रकोपसे गलेमें सूजन होती है। इसमें दम चढ़ता है पीड़ा होती है असाध्य है।

एकधृन्ध—गोलाइ लिये मोटा दाढ़ खुजलीवाला शोथ पकता है दाढ़नेसे बहुत पीड़ा लगता है। इसमें रक्तका प्रकोप होता है।

शतघ्नी—रोहिणीसे मिलता हुआ रोग है। चिन्ह उपचार वैसा ही है।

गलायु—आँवलेके बीज जैसा कठिन स्निग्ध पीछा घम, कहरक प्रकोपजन्य, अन्नको रुकनेवाली ग्रन्थी होती है शस्रघाघ है ।

कठविद्रधि—सारे गलेमे अंदरके भागमे सूजन फैल जाय पीडा जलन दद है ।

गलीघ—गलेको प्राणवायुको आसोच्छासको रुकने वाला कफ और रक्तजन्य शोथ है ।

स्वरन्न—आखमे अंधेरा आवे, आसकी गति अधिक हो, स्वर वैठ जाय, गला सूखे । सुगक या पान उतारनेमे रोगीको कष्ट हो ।

मांसतान—गलेमे चारों ओर सूजन फैल जाय । असह्य पीडा हो यह त्रिदोष प्रकोपसे होता है इससे थोड़े घंटेमे रोगी मर जाता है ।

विदारी—दाह पीडा के साथ गलेमे लाल मुख रंगकी सूजन हो, उस भागमे मांस सड़कर बिखर जाता है । पस पूय निकले । पितप्रकोपसे होता है ।

चिकित्सा—किसी भी प्रकारकी रोगियोंको मन्त्रसे सुप्त निवृत्तवाना । २ लोटा पानीमे १ तोला नमक और ३ तोला गर्म दिया घों डालकर कुल्ला कराना । यद्विदु तेल अथवा महालाक्षादि तेल ५-१० मिनीट मुखमे रख कुल्ला करना । नागकेसर चिनीम्बाला कपूर समभाग मिलाकर शहद मे निलाकर पीछी व्रशसे गलेमे लगाना । नीमकी छाल बड़की छाल अशोक की छाल अजगरक्षक छाल बड़की धुय समभागसे कुटकर २० तेला मे ४-५ लोटा पानी डाल कर रख छोड़ना इस पानीसे कुल्ला कराना यह पानी पिलाते रहना । यद्विदु तेल के या कन्य गवृत के या महालाक्षादि तेल के बुद नाकमे हर वखत डालते रहना । नीचेकी औषध सब प्रकार के गलेके रोगमे लाभकारी है ।

दार्घ्य क्वाथ—दारुहलदी नीमकी छाल रसौत इंद्रजौ बडो हरड समभाग कुट रखे । २ तोला का क्वाथ या फांट पिलाना ।

तित्कादि क्वाथ—कूटकी अतीस दारुहलदी पाठा नागर मोथ इंद्रजौ समभाग लेकर कूट २ से ३ तोलाका क्वाथ या फांट पिलाना ।

यवक्षारादि गुटी—जवाखार, तमालपत्र पाठा रसेन दारु हलदी छोटी पीपल समभाग कुटकर शहदमे गोली बनाना । गलेके सब रोगमे ३ से ६ गोली देना ।

प्रवालादि मिश्रण—प्रवाल पिछी चरपुटी तोला २, जवाहर मोहरा पिछी तोला १, अमृता सत्व तोला ३, महाचन्द्रवाला तो १, रसालादि बडी तो. १ साथ मिलाकर ३ से ६ रती शहदसे या कन्य गवृतसे गलेके सब रोगमे दिनमे ३ या ४ दफे देना ।

मलरोगहर तेल अथवा घी—सफेद फूफूकी अपराजिता (गुज, गरणी) का पंचांग तोला ४०, वायविहग निसोथ सेधानेन दासहलदी प्रत्येक तोला १० सब साब कूटकर उसमें झाड़ी हरी तोला २० डाल कर उसमें १० रतल पानी डाल १२ घंटा भीगे रखना। पीछे उसमें १० रतल तिलका तेल अथवा १० रतल गायका घी डाल कर पकाना। पानीका अम्र सब जाय जय कण्डछान करना। तेल बनाया हो तो झुल्ला करना, घी हो तो २ से ४ तोला तक तिन भरमे खिलाना। घा गायका न मिले तो कोई भी घी लेना लेकिन बेजीदेबल घी मिलाया न है। गलेके सब रोगोमे यह तेल या घी बहुत लाभकारक है।

दिव्य धूपका धूआ हुक्केसे या नलीम पिलाना। नीमकी अंतर छाल १० या १५ तोला कूटकर ४ से ५ डोटा पानी मे भिगे रखना पीछे दिन रात वही पानी गले के सब रोगमे पिलाते रहना।

गलेका काकड़ा (टोनसिल) काकड़ा पर सूजन हो, बड़ा हो लाल हो गया हो, कभी उसमेसे खूनका आगा देखनेमे आता हो तो इस पर घनासा तोला १० से ८० तोला पानी डालकर फवाथ कर आधा रहेनेसे कण्डछान कर कुल्ला करनेसे सूजन मिट जाती है, बड़ा हुआ कम होता है। और काकड़ा के कारण जो पीड़ा दर्द खाने पीनेमे तकलीफ होता हो दूर होती है और काकड़ा असल हालतमे आ जाता है।

प्रयोग १—चमासा तोला १०, रुईती क्षुप पंचांग तोला ५ क्षरपुखा पंचांग तोला ३, नमकी छाल तोला १०, बीजयसार (अजन वृक्ष) का छाल तोला १० सब कूट कर रातको १० रतल अथवा ५ डोटा पानीमे भिगे रखना। दूसरे दिन इसमें से थोड़ा थोड़ा पानी कण्डछान कर सात आठ दफे कुल्ला करना और पिलाना। इस प्रकार १ सप्ताह करनेसे टोनसिलकी सब शिकायते मिटती है और ओपरेशन नहि करना पड़ता ॥

प्रयोग २—दंत रोगमे दन्ताका दंतमज्जन को भी दंतौन (धतुलके या बल्के दंत धावन) से टोनसिल पर घोंस कर साथे पानीसे या उपर बताये पानीसे कुल्ला करनेसे १५ से २० दिन मे सब शिकायते मिटती है।

गलेका चांदा (गला आजाना) गलेका अंदरका भाग लाल होकर उसपर सूजन होती है। उसपर बिकनी छारी जमती है। उसमे चांदा पड़ता है। गलेका द्वार तालुआ चोरिया आदि लाल हो जाता है। गलेमे दर्द होता है। गला सूखता है। कोई भी बीज गलेके नीचे उखारनेमे कष्ट होता है। स्वर बंद जाता है। साप रहता है। तेल लाल मिरच दाह करनेवाले तीव्र पदार्थ खानेसे गर्म भोजन लेनेसे सपदार्थसे सन्निवातसे बहुत अधिक पीनेसे यह रोग होता है।

गलेके रोग पर सामान्य औषध

प्र-१ फुटकी अतीव देवदार नागरमोथ इन्द्रजो ब्राह्म दासहृदो सम भाग
कूट १ तोलाका कवाथ कर १-२ तोला शहद मिलाकर २-३ दफे पिलाना।

प्र-२ पाठा रसौत दूर्वा तेजघल दाक्ष हरद बहेडा आंवला समभाग
कूट ४-५ तोला काशकर कुक्का करना और पिलाना।

प्र-३ खेरसारादि गुटी या रसावादि गुटी मुखमे रख रख उतारना।

प्र ४ प्रवालपिष्टी तोला २, जहर मोहरा पिष्ट तोला १, अमृता सत्व
तो ४, साथ घोट कर ८ से १२ रती शहदसे या मक्खनसे २ वखत देना पोछे
उपर दिया हुना काथ या फांट पिलाना।

प्र-५ नागचपाका पत्ता छायामे सुखा कर हंडीमे भर कपड मिट्टीकर
चुल्हापर चढाकर पकाना भस्म हो जायगो। ४ मासा भस्म देनेसे स्वर-
भंग मिट कर आवाज खुल जाता है।

प्र-६ तज तोला १, इलायची तो २, छोटीपीपल तोला. २, वशलोचन
तोला ३, समुद्र फेन तोला ४, शकर तोला ८, सब साथ कूट कर ३ से ६
मासा शहदसे देनेसे आवाज खुलता है स्वरभंग मिटता है।

प्र-७ आंवला इलायची कुलिज नजीरा कृत्या सेरोक्षार चद्रप्रभा गुट्टी सब
समान भाग घोटकर गुडसे या शहदसे गो ली ४ से ६ रतीको बनाना। मुखमे रख
रस ऊपरना स्वरभंग मिटता है गले के रोगमे फायदा होता है।

दांत के रोग

मनुष्यके दांत उम्रमे दो वखत फूटते हैं निकलते हैं। स्तन धय बच्चोको
छह माससे तीन वर्ष तककी आयुमे दांत आते हैं, वह दुधिया दांत कहा जाता है।
यह दांत पांच छह वर्ष की आयुस गिरने लगते हैं और कायमी दांत निकलने
लगते हैं। १७ से १८ वर्ष तककी आयुमे सब दांत निकल जाते हैं। दांत
ढाड, दो बनिया कुतरिया और काटनेवाला बैसा मेद दांत मे होता है। प्रायेक
दांतमे पोल होती है। उसमे मज्जा भरी रहती है। वह पोलान्न दांतका अंतिम
भाग-मूलके अप्र भाग तक और छेडा मूलके छिद्र द्वारा रक्त शिरा द्वारा दांतको
पोषण मिलता है। उसमे वात पित्त कफ दोषके कारण बिगाड होता है जब
दांतके भिन्न भिन्न रोग उत्पन्न होते हैं।

कारण—हर वस्तु खा खा करनेसे—खाते रहनेसे, पेय के बिनासे, दस्तकी वजहसे, खट्टे पदार्थ अधिक खानेकी आदतसे, दतौन-दन्त घावन न करनेसे, अजीर्णसे अति गरमागरम पदार्थ और अति ठंडे पदार्थ खानेपीनेकी आदतसे, तमाखू-जड़दा चाहा काफी के अधिक अम्हासे ऐसे अनेक कारणोंसे दांत के रोग होते हैं ।

दांतकी खेरी—तमाखू-जड़दा पान सेपारी अधिक खानेकी आदतसे, दांत साफ रखने की बेदरकारीसे मेल कम कर सड़ता है । दांतकी पोलमे अन्न या कोई चीज घुसकर वह सड़नेसे भी दांतगे सड़ा होता है । क्षार पदार्थ का शर कमता है । दांत पर खेरी जमनेसे पोलमे सूजन और सड़ा होकर दांत हिलते हैं और पीछे गिर जाते हैं । खेरी पीली या सफेद होती है । चुटकी में छेकर चोखनेसे कांदसी जैसी भुकी हो जाती है । खेरी वाले मनुष्यको मुख दुर्गन्धवाला रहता है । दांतसे पूय-पस निकलता है ।

शिलादि मंजन—मैनसील, तोला ५, गेहूँ-गैरिक तोला ५, जशखार सेवानोन इलायची तज तेजबल प्रत्येक तोला २०, कपूर तोला १० अभिया हलदी तोला ४०, हलदी तोला २०, सफेद मिट्टी तोला १०० सब मिलाकर दतौन से दांतोंपर मसूढोकी हाथि न पहुँचे इस तरह मंजन करे और गर्मपानीमें थोड़ा डाल कुल्ला करे तो दांत के बहूनसे रोग मिटते हैं ।

दांतका मूल दांतमें दर्द

कारण—दांतका मूल सड़नेसे अजीर्णसे अकस्मातसे पाचन शक्ति मंद होनेसे खट्टा और मधुर पदार्थ अधिक खानेसे यह दर्द होता है, जब निद कम आती है, खुराक केना कठिन होता है । दांतमें सूई मोकने जैसी पीड़ा जलन आदि होता है अमर मंदमद पीड़ा होती रहती है । बीचके किसी दांतमें डाढ़ने या सब दांतोंमें पीड़ा होती है जब रोगी पागल जैसा बन आता है । पीड़ा थोड़ी कम हो जब कुछ आराम मिलता है ।

उपचार—महानारायण तेल का गहूँस मुत्रमें रख मुखमें इधर उधर घुमाकर १० से १५ मिनट के पीछे थूक देना । इस तरह सुबह शाम दो दफे करना ।

पलाश बीजादि मंजन—ढाकके बीज १० तोला, छोटो पीपल, सोठ मरीच बच अजवाइन हरड सेवानोन प्रत्येक पांच पांच तोला, पुनर्नवा मूत्र और हलदी बीज बीज तोला, समुद्रनफेन ४० तोला सब पीट कर रखना दांतोंपर लगाना । गर्मपानीमें डाल कुल्ला करना ।

दांतका गढ़ ग्रन्थि—कारण—दांतके मूलमें घटा होनेसे, खेरी जमनेसे यह दर्द दांतके मूलमें होता है और छोटी जैसी ग्रन्थी लगती है। यह पक कर पस निकलता है। उसमें पौड़ा अधिष्ठ हो तो गाल और गलेमें सूजन होती है। पस निकलने के बाद दर्द कुछ कम होता है।

दशन लस्कार चूर्ण—सोठ, बड़ी हरड़, नागरमोथ, कथ्या, सुपारीका फोलसा, कालीमिरच, दालचीनी लौंग, गेह सब समान भाग लेकर और सबके समान सफेद मिट्टी मिलाकर रखना, दोनो समय दांत पर लगाकर गम पानीमें धोकर सोडागा ढाल कर कुगला करना।

दांतकी पोल—दांत साफ न रखने से, खटे पदार्थ ज्यादा खानेसे, दांतके बीच अन्नका कण रह जानेसे दांतमें घटा होता है और दांतके अंदर के भागमें सड़ा होकर वह। उपपन्न हुये अन्तु दांतके अणुओंको खा कर दांतमें पोल हो जाती हैं वह बढ़नेसे दांतके मूल सड़ जाती है। वह बढ़नेसे दांतके मूल थिलकूल कमजोर हो जाते हैं, जिससे दांतके उपरका भाग पड़ जाता है या निजीब होता है।

दतमशी—माजुफल तो ४. कथ्या तो १, छोटी हरड़ तो ३, कच्ची सुवर्ण माक्षक तो ॥, मझूर मसम तो ७, पकाया हुआ नीलाधोधा तो, ॥, रमोमस्तकी तो ॥, सगे जरद तो १॥, इलायची दाना तो १, कपूर तो ॥। सब साथ कूट कर कपडछान कर रखना और दोनो वखत दांतपर धोसना और गम जलमें धेड़ा ढाल कर कुगला करना।

दांतके पेढा (मसूढों दन्तवेष्ट के दर्द)

कारण—कमजोरी, अजीर्ण खटामीठा पदार्थ ज्यादा खानेकी आदत घुल्लार पेटका दर्द बहुत शफे खाते रहना अन्न के कण या दूसरी कोई चीज घुल जाना गर्मी उपदश आदि कारणोंसे मसूढों (दन्तवेष्ट) में सूजन हो कर लाल हो जाते हैं और निरक्षिप्त कम होते होते दांतके मूल खुल्ले हो जाते हैं, इस प्रकार घाड़े या बहुत दांतों के मसूढों बिगड़ते हैं। बहुत करके मुखके आगळे दांत जो वस्तुको काटता, उनमें और उपरकी दाढोंके मसूढे ज्यादा बिगड़ते हैं, जब मसूढोंमें सूजन होती है तब या पस निकलता है, मुखमें दुर्गंध आती है और खानेपाने में तकलीफ होती है।

कुष्ठादि मंजन—कुष्ठ, दाहहृद्दी हृद्दी लेप, नागरमेध, मर्जिट, पाठ । कुटकी, मालकागुनी (ज्योतिष्मती), अजवाइन, मच, सैधानेन, छोटी हरड, गेह सय कुट, कपडछान कर दांतको घोंसना और गरम पानीमें थोड़ा डाल कर कुगला करना।

कालीसादि मंजन—त्रिफलामे पकायी हुई कसीस, कथ्या, माजुफळ, चीकनी सुपारी, सैधानेन, चीनीकवाला, कालीमिरच, इलायची, हरड पहिडा, आवळा, दादिमकी छाल, गेह और बदामके छोटेके कायला सब समान भाग छेहर कूट कपडछान कर रखना, घोंसना कुगला करना।

मसूढोंसे लोही और पस

निकलना (पायोरिया)

कसीसादि घर्षण—कसीस लेप, छोटी पीपल, मनशील, त्रियंगु तेलबल तमालपत्र, कुष्ठ, हृद्दी, समभाग कूट कर रखना, इसका मंजन और कुगला करनेसे पायोरिया, पस मिटता है। महानारायण तैल अथवा महालाक्षादि अथवा सफेद सरसोंका तेल या तिलका तैल इनमेंसे कोई तेल, मुख में दो चार तोला रखकर इधर उधर घुमाकर १०से१५ मिनिट तक रखकर धूक देना और गरम पानीसे कुगला करना।

१ तोला अदरक और १० तोला सहदेवोंका बराब कर कुगला करनेसे मुख और दांतके बहुतसे रोग मिटते हैं।

१ तोला अदरक, ३ तोला सफेद सरसों और ५ तोला त्रिफला उसमें चार छोटा पानी डालकर पकाकर रखना कुगला करना।

दांत-हिलना

कारण—खानपान नियमित न रखनेसे, दांत साफ रखनेकी असावधानीसे उपदंश के कारण, उपदंशादि रोगमें पारदवाली दवासे मुह लेनेसे, बहुत गरम चीजे खानेसे, दांत के मूल कमजोर होकर दांत हिलते हैं। जब दांतोंमें दर्द होता है। खानेमें तकलीफ होती हैं। ठंडा पानी या ठंडी चीज खाने पीनेसे या शरदी लगनेसे दांतोंमें शूल और दर्द होता है और इसकी पीडासे खुमार आ जाता है। सिरमें दर्द होता है और बेचैनी होती है।

दांतदुर्दीकरण मंजन—कपूर तो. ५, माजुफळ तो. १०, कथ्या तो. ८, बज्जुलके फळ तो. २०, श्रील (वज्रदंती) तो. ३०, पारद तो. ४, गंधक तो.

८, नागरमोथ तो. ८, गुलर उदुंबर छाल), तो. १०, समुष्फेन तो १० सब साथ कूट मढ़ेन कर रखना दांतो पर लगाना और पानीमें डाल कर कुगला करना ।

प्र १ हि गोद (इंगुदी) के मूलको छल और कुटकी समभाग कुटकर बारीक कपड़ेकी पोटली में या रुई के बीच रखकर दांत या दाढ़में रखने से दांतों ग्रन्थी मिटती हैं और हिलते दांत मजबूत होते हैं ।

प्र २, वायविडंग कटहरी के बीज घमासा समभाग कुटकर पांच तोला यह चूर्ण चार रतल पानीमें पकाकर रख छोड़ना पीछे उसका कुगला दिनमें पांच सात बफे करनेसे दांत और दाढ़के सब रोगमें लाभ होता है.

प्र ३, नवसार और काली मिरच समभाग कुटकर रुई के बीचमें ४-५ रती डालकर दांत के उपर रखनेसे दर्द मिटता है ।

प्र.४, १ तोला कपूरमें पांच तोला नीलगिरी तेल— डाल कर धूपमें रखनेसे कपूर पिगल जाता है । रुईका फोया भिगोकर दाढ़ और दांत पर रखनेसे दांतको पीड़ा और अन्य दर्द शांत होते हैं ।

राजमशी मंजन—सच्चे मोती, वच्चे प्राल, स्वर्ण मक्षिक भस्म लाल, कच्ची कसीस, प्रत्येक एक एक तोला, मझूर भस्म लाल, कुष्ठ, पकायी फिटकीरी, सीमसेनी कपूर, छोटी हरड़, बड़ी हरड़ बहेड़ा आवलां, माजुफल, अनाईकी छाल कथ्या, सोहागा—प्रत्येक डेढ़ डेढ़ तोला कस्तूरी १ बाल सब साथ कूट कर कपडछान कर खना—दाँतकी खेरी, दाँतका पाक, मसूढ़ोंका दर्द, दाँतमें खुजली, दाँतमें जंतु, मुखके दुर्गन्ध आदि मिटते हैं ।

जिव्हा—जीभके दर्द

चिह्न—अजीर्ण, शरदी ऋतुका परिवर्तन, जखम, उपदंश, प्रमेह, पारदका विकार इत्यादि कारणोंसे जीभमें सूजन होती है । वायु प्रधान हो तो जीभमें चोरा पड़ता है, स्वाद मालूम नहीं पड़ता । पित्त प्रधान हो तो दाढ़, जलन और लाल धक्कुर जैसा जीभ पर दिखाता है । कफ प्रधान हो तो सौमलके काँटा जैसा जीभ पर दिखाता है ।

जीभके नीचेका शोधः इसमें कफ और खूनका प्रकोप होता है । जीभ जकड़ जाती है और जीभके मूलमें पाक होता है ।

पडजीभी—इस शोधसे जीभ मोटी स्थूल होती है । इसमें कफ और रक्तका प्रकोप होता है । लाल पड़ती है । खुजली आती है और दाढ़ भी होता है ।

पलादि घर्षणः इलायची, फिटकरी, चंदनका चूा, आमकी गुठली, बडवूलका पान, तमाल पत्र, घायका फूल, शक्कर, हलदी और लेदर (लोध) सब समान भाग लेकर कूट कर रखना और जीभ पर चार पांच वरत घीसना । दशाग लेपका क्वाब कर दिनमें ५-७ दफे कुगला करना ।

निर्गुंडो आदि गंडूष—निगुडी कथा कंचनारकी बडवूलकी नीम प्रत्येकी छाल समान भाग लेकर कुगला करना ।

रसांजनोदि गंडूष—रसांजन, मुलैठी मूल, आवलों समभाग लेकर कुगला करना ।

जिह्वारोग हर मिश्रण—रसेन्द्र गुटिका तो. १, प्रवाल चद्रपुटी तो. २, क्षताश्रुत लेह तो. १, चितोफलादि चूर्ण तो ४ सब साथ मिलाकर ६४ पुदी बनाना । शुबह-शाम पानीके साथ या शहदसे लेना ।

तालू के रोग

गलशुंठी—कफ और रक्त के प्रकोपसे होता है । तालूके मूलसे लवा शोथ होता है । इसमें तृषा लगती है खांसी आती है । श्वास चढता है ।

तुडोकेरी—यह भी कफ और रक्त प्रधान है । इसमें चक्षके झूल निकलते हैं । वेदना और पाक होता है ।

अभ्रव—शोथ कठिन रक्त के प्रकोपसे होता है । इसके साथ ज्वर और तीव्र वेदना होती है ।

कच्छप—यह बलुआकी ताह मेंटा, कम पीडावाला कफ प्रकोपका शोथ होता है ।

तालु अर्बुद—कमल जैसे आकारका शोथ तालूके मध्य भागमें रक्त प्रकोपसे होता है ।

तालुशोथ—पित्तप्रकोपसे तालूमें पाक होता है । यह भयंकर रोग है ।

तालुरोगहर घर्षण—कुष्ठ, बच, सैंधानेन, कालीपाट, (पाठा), मेथा, कचुरा, अतीस, राक्षना कुटकी, पारद, गंधक, नीमके फलकी, गिरी सब समभाग कूट कर रखना । तालूके श्रोत्र पर अश्लीषे घीसना और लाला निकलने देना ।

कुष्ठादि गंडूष—कुष्ठ, काली मरीच, बच सैंधानेन छोटी पीपल पाठा मुस्ता हलदी कचुरा सब समभाग ले कर कूटके क्वाथ बनाना तालुरोगमें कुल्ला-कराना ।

दर्शांग लेप नीमकी छाल काचनार समभाग कूटकर इक्षका क्वाथका कुल्ला तुंडोकेरी, अर्बुद और तालूपाकमें करना ।

४ तालूशोधमें महानारायण तेल मुखमें १० मिनट रख कुल्ला (गह्वर) कराना । शिरोवस्ति देना मस्तक पर गायका घोलगाना । दर्शांग लेप पानीमें पोस लगाना । स्वीका शेवाळ सफेद मिट्टी और जलपिप्पली (रतवेलीयो) पीसकर मस्तक-पर लेप करना वांछना ।

मुक्तादि मिश्रण—मुक्ता पिष्टी प्रवाल चद्रपुटी रसालादि गुटी अभ्रक-भस्म चद्रप्रभा गुटी सप्तामृत लेह शिलाजीत सुधापर्पटी सब समान भाग लेकर मिश्रण ६ से ८ रती देा वस्तु कल्पण घृत १ से २ तोलामे २ मिलाय कर सुबह शाम देना पालुके सबरोगमें गुणकारी है ।

ओष्ठ होठके रोग

चिन्ह—वायु प्रकोपसे ओष्ठ रुख सुखा होता है काले पड़ जाते हैं पौड़ा होती हैं पित्त प्रकोपसे छोटी छोटी फुन्सीयां दाह होता हैं । कफ प्रकोपसे खुबलि आती है, सफेद फुन्सीयां निकलती हैं, रक्त प्रकोप होनेसे लाल फुन्सीयां होती हैं । पौड़ा होती हैं रक्तका घाव होता है ।

ओष्ठ मोटा—कंठमाल के दरद से उपरका ओष्ठ मोटा स्थूल होता है,

ओष्ठ फटना—शीत ऋतुसे शरीरसे छोटी गरमीसे ओष्ठ फटता हैं ॥

ओष्ठ व्याधि हर तैल—गंधीले खेरकी-गंध बाबूलकी छाल, तगर, कुष्ठ, अजीके वृक्षका मूल, प्रत्येक ४० तोला लेकर कूटकर दसगुने पानीमें १२ घंटा भिगो कर उसमें तिलका तैल रतल, १० तथा एरेंडका तैल रतल, ५ मिलाना और गभीला खेर, लींग गेह, चंदन लाख, मुलैठीका मूल, कायफल दाहदुलदी अमियाहलदी कचुरा, पानडी, हरद, लांगलो, जावत्री दुधिया बज, प्रत्येक तोला १० लेकर पानीमें पिस कर छुषी कर १० शेर गाढ़के दुधमें मिलाकर तथा उसमें मेथ तो. २० डालकर कड़ाहमें पानीका भाग जब जाय तब तक पकाना । पछे तैल कपडछान कर देना । जब जब शीतल हो जाय तब कपूर तो. २॥ बासीक घोंट कर बरणी में डालकर भर रखना । यह तैल ओष्ठके किसी भी रोग पर लगाया जाता है ।

औष्ठ्याधिहर मलम—राल तो. ४, गेह तो. २, पकाया हुवा टकण तो. ३, दलदी तो. १॥, गायका घी तो, ३०, मोम तो. २॥ सब साथ पकाना औष्ठके सब दरद पर लगाना ।

औष्ठरापण मलम—अंडिका तैल, घी राळ, धोम रास्ता गुठ. सँघानोन गेरु सब सम भाग लेकर खुब घोटकर पकाकर एकरस करना । मलम यह लगानेसे त्वचा फट जाने पर रक्त निकलता हो, रुक आती है ।

मुखरोग-मुखपाक

मुंह का पाक (मुखपाक) जीमकी आसपास, तालू, ओष्ठकी अंदरका भाग रेटोफे अगरह स्थानों पर चाँदी पड़ते हैं । पेटके बिगाहसे, अजीर्णसे, पन तथा माग, तमाखु के साथ चूना ज्यादा खानेसे, लाल भिरचं जेसी गरम चीजें ज्यादा खानेसे, दशका रोग होनेसे इत्यादि अनेक कारणोंसे मुखमें चाँदी पड़ते हैं ।

मुखपाक हर क्याथ—सतपण वाळा, पटोल, नागरमेथ, हरद चिरायता कुटकी मुलैठो अमलतास, चदन, समभाग कुटकर क्याथ बनाकर पिलाना ।

मुखपाक हरमिथण—प्रवाल चंद्रपुटी तो १, मुक्ता पिष्टि तो. ०१, महाचंद्रकला तो ०॥ अष्टासत्त्व तो २ सब साथ मिलाकर ४२ पुडियां बनाना । च्यवनप्राश के साथ २ समय खाना ।

मुखरोगहर घण—तदुंबर नीम विजयसार, छै, वड, दबूल इन वृक्षोंके थड उपरकी अंदरकी छाल बीस बीस तोला, कच्ची सुपायी तोला १०, पकाया हुवा सोहागा (टकण) तो. २॥ सफेद क्या तो २॥ सब मिलाकर कपडछान कर मुखमें घोंसनेसे चाँदी मुख पाक जीमका पाक गलेका रोग, काकड़ा टोन्हीरकी सूजन मिटते हैं ।

मुखरोगहर लवण—एक कोरी मिटटीकी हंडीमें नमक तोला ४० डालकर उसके उपर ताँडीका सुरका तोला ८० डालकर पकाना । जब सुरका जल जाय तब दूसरी दफे तोला ८० सुरका डालना । इसी तरह ३ वरत सुरका डाल, पकाना । पीछे लवणमें तो ५ माजूफळ (कांटाळा मांया), तो ५ इमलीके बीज, तो ०॥ रूमी मस्तकी, तो ०॥, अकलंकरा, लेकर सब साथ कुटकर कपडछान कर सब घोटकर रखना मुखमें घोंसना । मुखकी गरमी चाँदी मिटते हैं ।

मुखरोगहर घृत—चमेलीके पत्ते, आमके पत्ते गुलतोड़ेका पान, नीमके पत्ते, बन्धुलके पत्ते विजयसार (अजन) वृक्षके पत्ते, कर्मल और कैलीका कंद, कुष्ठ, मौआ-मधुक, मुस्ता, लोघ्र वाला, बडकी बडवाइ, अमीयाईलदी, देवदार

अदरक रसोत प्रत्येक तोला २० लेकर सुपी चीजो के कूटना सब पानीमे १५ घटा भिगोना पीछे उसमें घी घेर १५ ढालकर पकाना । पानीका भाग जल जाय तब कपडछान करना । उसमेंकपूर तो. १ पीस कर मिलाना १ से २ तोला चटा कर उपर दूध पिलाना । मुखके प्रत्येक रोग पर लगाना मिलाना ।

सुन्नसौगंध घटी—खैरकी छाल तथा मुलेठी के मूल प्रत्येक घेर १, गंधीला खैरकी छाल घेर ४, सुगंधी कुष्ठ घेर १ सबको साथ कूटकर पानी घेर ४० ढालकर १२ घटा भिगो रखा । दुसरे दिन पकाकर आधाशानी रहने पर कपडछान कर उसमें नीचे लीखी वस्तुओका कपडछान चूण ढालकर घीमी आंचसे पकाना । रबड़ी जैसा हो जब उतार कर रांग लपेटे भरतनमे ढालकर सुखाना पीछे गोली गुंठा प्रमाण बनाना । ढालनेके द्रव्य इलायची कमलपुष्प चंदन, सारिवा, पानडी, तमाल, मुस्ता, कपूरकाचली मुलेठीका मूल मौसमी गुलाब, आंवला, मोगराके फूल चमेलीके फूल, लौंग, खैरसार प्रियशु नखला प्रत्येक ६ तोला रबड़ी जैसा भरतनमे ढाला हैं उसमें सब मिलाकर पीछे उसमें जावंत्रो तो ६, कुष्ठ तोला ६, सीमसेनी कपूर तो ४ मिलाकर गुंठा, चिरोंजी जैसी गोली बनाकर छायामें सुखाना । पीछे गुलाबके अत्तरका हाथ देना और मधुवूत वूचवाली शीशीमें भर रखना । यह गोली शीतरुतु में बनाइ हो तो बहुत गुणकारी रहती है । मात्रा ३ से ८ गोली दूध के साथ देना अथवा मुखमें रख के रस उतारना इससे वायु, पित्त और कफके प्रकोपसे उत्पन्न हुये चाहे जैसे मुखके तालुके गलेके रोग नष्ट होते हैं तथा मुखको दुर्गंध मिट जाती है और मुख सुगंधी होता है ।

रसालादि गुठी (घारणी गुठिका)—पारद गंधक जामूनके रसमे पकायी लोहभस्म, आमका फूल, नीमके कामल पत्ते कथ्या, मुलेठी, अंघिया हलदी, कपूर काचली, आंवला, अम्रक भस्म प्रवाल चन्द्रपुटी सावरसांग भस्म, कपूर, बच इलायची, जायफल, वडलोचन, चिनीकवाला कुष्ठ, जायफल जायपत्री मुस्ता, जटामांशी, सब समभाग लेकर कूट के वारीक हव ले से छान कर पानीसे चने जैसी गोली, बनाना । मात्रा २ से ६ गोली दूध के साथ देना । मुखके सब रोग मिटे ।

सुन्नरोग हर गडूष कुल्ला १—पटोल, नीम, जामून, आम, चमेली इनके पत्तेका कषाथ बना कर कुल्ला कराना ।

सुन्नरोग हर गडूष कुल्ला २—चमेली के पत्ते, घमासा, बन्बुलकी छाल, खैरकी छाल, आंवला ये सब समभाग कूट फाट बनाके उसका कुल्ला दिनभरमें ५ से १० दफे करना । मुखमें चाहे पड़ गये हो रुज जाते हैं ।

मुन्नेरोगहर गंडूय कुल्हा ३—मंगुरी सुरकेका और गुलाब जल का तिलके तेलका कुल्हा करना। मुइके पते हमेशा चवाना।

प्रबालादि मिश्रण—प्रवाल चण्डुटी तोला २, जहर मोहरा पिष्टो तोला १॥, मुक्ता शुक्ती पिष्टो तो १, सुवर्ण वसंत मालती तो. ०॥, छोटी पीपल तोला १, इलायची दाना तोला १, सब साथ मिलाकर ६४ पुटी बनाना दो वखत शहद मक्खनसे देना रसालादि घटीका सेवन कराना।

जातीफलादि गुटो—जायफल, आवंश्री, मरवा, केशर, कुष्ठ, समभाग कूट मधुमे ४ रत्तीकी (प्रायः १ बालकी) गोलो बनाना मुखमे रखनेसे पस-पूय या दूसरी दुर्गंध मिटे।

कुष्टादि चूर्ण—कुष्ठ जायफल, बड़ीहराद सम भाग कूट हमेशा सुवह शाम ०। तोला चूर्ण पानीके साथ देना मुख दुर्गंध मिटे।

कृष्णादि चूर्ण—छोटी पीपल, जीरा, कुष्ठ, इन्द्रजव हलदी आंबला मेढाधींगी कचुरा समभाग कूट ०। तोला पानीके साथ दो समय देना तथा दोनों वखत भोजनके बाद १ तोला चूर्ण खूब धावकर कुल्हा करना ॥

स्रविरादि तेल—गंधीला, खेरकी छाल, रतल ५ कूटकर कवाथ बना कर मनीठ लोघर मट्टवां गंधीला खेर, कथ्या, कायफल, लाख, बड़की छाल, छोटी, इलायची, कपूर, अगर, पद्मकाष्ठ लौग, चिनीकमाला जायपत्री पतंग गेह, तज, नागकेशर, घाईके फुल, तुलसी, नागरमोथ कूष्ठ, मुलेठी रास्ना प्रत्येक ४ तोला केकर कूटकर इससे केलीकें स्थानका पानी शेर १० डाल पकाना पानीका हिस्सा जल जाय तब तेल कपडछान कर लेना इस तेलका कुल्हा (गुह्य) कग्नेसे मुखके सब रोग मिटे। मुखकी दुर्गंध दूर होती है। दांतोंके पेढे (दंतवेष्ट) और ताल, जीम, गलोफेके दरद मिटते हैं। मुख रोगमे १ से २ तोला यह तेल पिलाया जाता है।

मुखसौंदर्य घटी—खेरसार तोला ५०, अन्नक भस्म, पारद, गंधक, कोह भस्म इलायचि कमलफुल सफेद चंदन, नागरमोथ, बाला, सारिवा, तमालपत्र मबील, मुलेठी मूल, रिसामणी (लज्जाल) हरडे बेहडां, रसौत घाईके फुल, नाग केशर, लौग, गेह दाकहलदी, कायफल, कमलबीज लोघ्र, बड़की बड़वाई यमासा, जटामांघी, हळदी, रास्ना, बालचीनी, कपूर मौकधरी पुष्प। तुलसी, शकर, लाख प्रत्येक ४ तोला, काली मरिच, सेठ छोटी पीपल

प्रत्येक २ तोला घब साथ कूट मिलाय गुलाब जल में धोत गुंजा जैसी गोली बनाना । यह गोली तांबुलके साथ खानेसे मुखकी दुर्गंध मिटती है मुख सुगन्धि युक्त बनता है । जिह्वा, तालू, कंठके घब रोग मिटते हैं । मुराके सबरोगोंमें मुखमें रख १ स वतारना मात्रा २ से ६ गोली पानीसे धी जाती है ।

बीजपूर योग— बीजोरा बीजपूर कल्कि छाल छायामें श्रयाना उसको कूट कर ०। तोला घबह राम पानीसे देनेसे मुखकी दुर्गन्ध मिटती है ।

निम्बार्क योग— खैर, अशोक बच्चुल बडवाइ इन पक्षोंका दधन, करके तिलके तेलमें भिगे। कर दांत और मसूदे (पेटी) पर धोखनेको हमेशा आदत रखनेसे मुखकी दुर्गंध मिटती है ।



अम्लपित्त

कारण—बिह्न—खराब, बिगड़े हुये, रातवासी खट्टे दाहिकारक पित्तकारक अथवा पानके अधिक उपयोगसे, अजीर्ण पर मोअन करनेकी आदतसे, छातीमें, कंठमें दाह होता है। उस समय खट्टा डकार उदगार आता है। छातीमें चुचुरा चढता है। उबका आता है। भूख मंद हो जाती है। इस दद में तृषा दाह, चक्र, पसीना अधिक होना, शरीर पीला पडना, जैसे चिन्ह दिखायी देते हैं। वमन होता है। छातीसे कलेजा तक जलन होता है। वमन या डकारके साथ खट्टा पानी या पदार्थ मुखसे पडता है। वमनका रंग लौला, काला, लाल या पीला होता है। मस्तककी पीडा होती है। दस्त दृज रहता है।

पथ्यापथ्य—जव, गेहूँ, सुँग, लाल पुराना चावल, शकर चीनी, शहद, कटौली, कारेलाका शाक, वासका अचर परवल जांगल भाँष, उबालकर शोत हुआपानी, सक्तू इत्यादि कफ पित्त शामक चीजें हितकारक हैं। तैल, नये घान्य,। उबद, मेरका दूध, दही, छाँछ, सुरका, खट्टा तीखा भारी गरिष्ठ पदार्थ बाजार को भीठाइ, आमका अचार दाह इत्यादि हानिकारक हैं।

अम्लपित्तातक मिश्रण—अम्लपित्तातक लोह तोला ०॥, सुवर्ण वसत मालती तो. ०॥ प्रवाल चन्द्रपुटी तो १, आरोग्यवर्धनी तो ४ सब साथ घोट ६४ पुटी बनाना। सुबह शाम एकेक पुटी शहदसे या पानीसे लेना ?

आरोग्य वर्धनी मिश्रण—आरोग्य वर्धनी चूर्ण तोला ४ योगराज रसायन तोला २, बड़ी हरद चूर्ण तोला ३, साथ मिलाय ६४ पुटी बनाकर दो समय पानीसे लेना।

सर्वतोभद्र लोह—लोह भस्म, ताम्रभस्म, अभ्रक भस्म प्रत्येक तोला, ८, शुद्ध पारद तो. २, गंधक तो. ४ माक्षिक भस्म, शुद्ध मनशील प्रत्येक तो २, शिलजीत तो. ३, गुग्गु तो. ५, वायविडिंग, मिलावा, चित्रा आकका मूल, पलाशके मूल, भुशली पुनर्वा, भांगरा, शतावरी, चक्रमर् के बीज, गोरखसुन्दी, गुंठी, छोटो पिपली कालीमीरिच प्रत्येक तोला ०॥, सबको विविधत साथ मिलाय पानीसे तीन तीन रसीकी गोली बनाना। मात्रा ३ से ६ गोली दो या तीन समय पानीसे ही जाती हैं। चाहे जैसे उपद्रववाला अम्लपित्त मिटता है।

इसके अलावा अर्श, भगंदर, झल, कुष्ठ, पांडु, शोथ, संधिवात, गृध्र, खांसी, खास, इन दरदोमे भी गुणकारी है। रातको सोते समय सोनामखी (मीढोभावल) अणवामन सम भाग कूट ०। से ०॥ तोला गरम पानीमें लेना।

लोला विलास—रस—पारद, गंधक, लेह भस्म, अभ्रक भस्म, हरद, बहेडां आवला शतावरी निमेष छेटी पीपल नमसार, सेधानोन कूटकी सब समभाग लेकर, भांगरेके रसकी और शतावरीके रसकी या कषायकी एक एक भावना देकर घोट कर रखना, या गोली गुंजा प्रमाण बनाना। मात्रा २ से ४ रती या ३ से ४ गोली पानीसे अम्लपित्तमे देना।

अम्लपित्तान्तक लेह—त्रिफलामें पकायी हुई लेह भस्म तो २०, पारद, गंधक भंडर भस्मरक्त, प्रवाल चंद्रपुटी प्रत्येक १० तोला, साथ मिलाकर निषोथ और कूटकी के कषायकी भावना देकर घोट कर रखना मात्रा २ से ४ रती धनिया हरडे मुलैठीके मूलके कषायके साथ देने से अम्लपित्त मिटे।

अधिपित्तकर चूर्ण—सोठ पीपल कालीमिरच हरद, बहेडां आवला नागरमोथ बिडलवण इलायची तमालपत्र प्रत्येक एक एक तोला, लौंग तो. ११, निषोथ तो ४४, शक्कर तो. ८८। सब साथ विधिवत मिलाना माना ॥ से ०॥ तोला पानीके साथ देना। सब प्रकारके अम्लपित्त मिटे तथा कच्ची मदाग्नि और कषायीरमे बहुत लाभकारक है।

अम्लपित्त शमनावलेः (कुष्मांडावलेह)

मीठा कद्दु भूराकोला पका हुआ लेकर उपरसे छाल और भीतरसे बीज रेपा इत्यादि निकाल खमण करना। पीछे खमणको निचोड़ कर रस निकालना। यह खमण शेर १० को घी शेर ५ में मंदाग्निसे घीमे वादामी रंगका हो तब तक पकाना और एक बाजुरखना। पीछे मीठा कद्दु निचोड़ कर निकाले रसमें हरे आवळां बाफना। यदि आवश्यकता हो बाफनेमें जरूरी हो इतना ताजा पानी डालना। जब पका तब आवळां निकाल बीज निकाल छूटा कर रखना। उस छुदामे जरूरी घी डाल कर घीमी आंचसे भुनना। पीछे आवळां का मेदा और कद्दुका खमण मिलाना। पीछे २० रतल कूटी हुई शक्करकी चाखनी करना। पताभा जैसी धट्टी चाखनी हो जब पकाया हुआ मीठा कद्दुका खमण और आवलेका छुंदा डाल फिर पकाना। इस तरह पकाना कि जल न जाय। जब घट हो जाय तब नीचे लिखी औषधियोंका चूर्ण जो तैयार रखा हो डालकर हिलाना। धनिया छोटी पीपल नागरमोथा वशलोघन, जीरा, शंखजीरा, इसक-

गोल, बुलसीके बीज दाखचीनी हलायची, नागकेशर, हरद, कालीमिर्च सोंठ, पका हुआ टंकणखार, अपामार्ग क्षार, गिलोच सत्व, भांगरा प्रत्येक दस दस तोला तथा लेह भस्म, अम्लक भस्म, मंझूर भस्म और शख भस्म प्रत्येक ६ तोला, कपूर तो. २॥ मिलाना । शीतल हो जाय जब शहद जरूर जितना मिलाना । पीछे कांघकी घाणीमें भर रखना । मात्रा १ से २ तोला उपर बताये किसी औषधके साथ अथवा अकेला खिलाना । अम्लपित्त दाह, छातीकी जलन, अरुचि, उबका वमन, वायु, पित्त, कफके सब रोग, शोष क्षयरोग, प्रमेह, प्रदर, पेशाबकी जलन, खोटी गरमी, बवासीर इत्यादिसे उत्तम है ।



अरुचि

अरुचि—खुराकका अभाव अथवा रुचि न होना, कारण—संप्राप्ति

शोक, भय, लोभ क्रोध अप्रिय वस्तुका दर्शन चिंतन, दुर्गंध, तार इत्यादि कारणोंसे यह दृढ़ होता है। इससे दात मृदा होता है। मुख वैष्वादा नमीला कटुभा, तीखा, सटा, चीकना हो जाता है। वायु प्रधान होता छातीमें शूल निक्के छातीमें दवाव हो, पित्त प्रधान हो तो तृषा कलन शोष लगे। कफप्रधान हो तो मुख चीकना हो लाला (लाळ) गिरे।

पृथगपथ्य—पुराना चावल मूठो, वेगन, सहजनाही शोने देले, दाडिम, फणस भी लश्न, जिमीक, सुरण, प्राक्ष, आम, सीखड, वही छाछ हितकारी हैं। अनिद्रा, मलमूत्रके वेगका अरोग अप्रिय वस्तु क्रोध, शोक तथा दुर्गंध इत्यादि हानिकारक हैं।

रामबाण—पाद गंधक वछनाग लौग प्रत्येक ३ तोला, कालीमरिच तो. ६, जायफळ तो ११। सब साथ मिले इमलीके पकेहुए फलके रसमें गुंजा प्रमाण गोली करना पानीके साथ देना। अरुचि, उष्का, भंदाभि, दस्त, व इत्यादिमें दिया जाता है।

अशेषकामृत—पाद गंधक, अभ्रक मसम, चिनीकवाला जीरा लौग शाह जीरा, मुस्ता, कुण्ठ प्रत्येक तोला ४, शकर तो १२, केशर तो ०।।, कपूर तो १ सब साथ कूट मिलायकर दाडिमका रस तोला २० डालकर छायामें सुखाना। पीछे इमलीके पके हुये फल तो. १० पानीमें भिगे कर रस निकाल कपडछान कर उसमें मिलाय छायामें सुखाना। पीछे निवूके रसमें चना जैसी गोली बनाना। मात्रा दिनमें ४ से ८ गोली पानीके साथ देना अरुचि वमन, भोजन पर अभाव पेटमें गडबडाहट, वायु पेटमें पवन भरा जाना, आफा आध्मान इत्यादिमें उत्तम है।



वमन—छदि—उलटी—

कारण—अग्नि अन्न पान, बहुभोजन, आम गिरमा अजीर्ण, कृमि, सगर्भा अवस्था दिमागका दह, घृणा हो जैसे पशाय देखना, स्वादवस्तुका स्मरण, दुर्गन्ध पित्तका प्रक्षेप इत्यादिसे वमन होता है। तथा ताप कोठेरा, अतिसार, शोथ लिवरका दह पथरी गेरुह रोगोमें भी वमन होता है। वमनके दाखीमे खामो श्वास दिकका ताप तृषा, छातीमे दह इत्यादि दिखायो देते हैं। वमनमे कभी अन्न पित्त या पानी निकलता हैं। और कभी वमनमे रक्त गिरता हैं।

पथ्यापथ्य—मटर, जव, गेहू, मुंग चावल शश मृगका जांगल मांस शीतल दारुत प्रादु मन्तो, दाखीम, मेठा निवू खट्टा निवू सहत, अजीर इत्यादि हितकारक हैं, लंघन, कराना दस्तकी दवा देना। दोषका प्राधान्य और अन्य लक्षणोंको जान करके, सुराक और औषधको योजना करना।

छदि शाकर—रसगिद्ध, शुक्ति भस्म लेह भस्म अम्रक भस्म सुवर्ण माक्षिक भस्म मुल्लोका मूल, शिलाजीत वंशलोचन सोंठ छोटो पीपल, काली मरिच, तिलकी डीकी भस्म, हरद, कलौजी जीरा वायविडग, इलाम्बि, नागर-मोथ, नागकेशर, द्राक्ष समान भाग लेकर, बोलैरा के रसकी, आंवके काय क-देा भावना दे कर सुखा कर घेंट रखना। मात्रा ४ से ८ रत्ती पानीके साथ देना,। वमन उत्कलेद, अरुचि, सुराक पर अभाव सगर्भा झोठी वमन इत्यादिमें उत्तम हैं।

छर्द्यन्तक—रसगिद्ध तो. ४ सुवर्णमाक्षिक भस्म ताम्र भस्म, वंगभस्म मुक्ता पिष्टी प्रत्येक तो. १, लेह भस्म, अम्रक भस्म, तथा शुद्ध गन्धक प्रत्येक तो. ८, बीजोरा, अदरक खट्टी लुनी आंवला तथा तुलसी प्रत्येकको अक्केक भावना दे कर सुखा कर घेंटना और उसमें जौन अश्वगन्ध सोंठ, छोट पीपल काली मरिच हरद बेहडा, आंवला कलौजी जीरा, वायविडग दालचीनी प्रत्येक तो. ०। कूटकर मिलाव घेंट कर रखना। मात्रा सुबह शाम दोसे चार रत्ती पानी या शहदसे देना। किसी भी कारणसे होती वमन बंद हो जाती है।

पल्लवि चूर्ण—इलायची कलौजीरा, लौग, चीनीक बाला नागकेशर छोटो पीपल वैरक बीजकी गिरी नागमोथ हरद आंवला श्वेतचन्दन सब समभाग कूट कर कण्डछान करके ०। से ०।। तोला चूर्ण पानीसे देना।

अमरी मृह योग—भ्रमरीका मीण-गृह जो मिट्टीका होता है वह ०। तोला पानीसे या शहदसे देना। वमन दामता है।

कमल बीजादि योग—कमल बीजकी गिरी, सुपारी खाएक इलायची इव तीनोंके समान पीस कर मात्रा १० से १२ रत्ती पानीके साथ देना ।

खपरंशदि योग—खापरिया शुद्ध या खपरं भस्म, बाळा, इलायची, अमरी के बीज (गृह) की मिट्टी, मोरके पांसकी भस्म खपड़ेका जलाकर की हुई राख सबको समभाग पीस कर १२ से २० रत्ती पानी या शहदसे देना वमन मिटे ।

४ विषतिदुक्त योग—विषतिदुक्त (कुचला बिना शहद मिश्रित हुआ) पीस कर प्रायः १ रत्ती पानीमे मिलाव देना उछाळा, मोळ, कटि मिटे ।

आमलकादि—आंवला तोला १, लीचीपीपल तोला १, काली मिरच तोला १, शकर तोला ४ माथ कूट १२ से १५ रत्ती पानी या शहदसे देना वमन सबका मिटे ।

सैन्धवादि योग—सैन्धान तो १, इलायची तो. २ कूटकर १२ से २४ रत्ती पानी के साथ देना ।

पलादियोग—इलायची दाना १० से १२ रत्ती तुलसी के रसके साथ देना उछाळा वातिका शमन हो ।

अतिविषादि योग—अतीव कुटकी हरद प्रत्येक तोला एक अनार बीज तोला ३ साथ पीस ०। तोला पानी से देना ।

९ पूगोफडयोग चोकनी सुपारी तोला ०।॥, कथ्या तो. ०।॥ पानी शेर २ में उबाल कर जब पानी शेर ०।॥ रहे तब उसमें छोटी पीपल चूर्ण १ बाल छिड़क कर वह पानी पिलाना । उदावते वायु वमन उत्पलेद डकार मिटे ।

१० निबू रस तो. १।, गायका दूध तो. ५, मिलाकर पिलाना ।

११ तेल अथवा घी सरनेका चमड़ेका कुडालाका टुकड़के जला कर राख करना । यह भस्म बाल १ पानीके साथ देना । बहुत दिनोंकी वमन मिटे ।

१२ इलायची, लाल चावल लौंग, गन्ध पिप्पल प्रियशु आमका फूल (मोर) नागकेशर कमल बीजकी गिरी बेरके बीजकी गिरी नागरमोथ चंदन सब समभाग कूटकर शहद के साथ ०। से ०।॥ तोला देना वात पित्त कफकी वमन मिटे ।

१३ इलायची तो. ०।, सोठ तो. ०।, तुलसी रस तो. ०। देना वमन मिटे.

१४ लौंग, अफीम, केशर समान लेकर पीस कर पानीमें चना जैसी गोली बनाना । मात्रा १ से २ गोली दिनमें दो या तीन दफे देना । वमन मिटे ।

१५. केशर ज्वाल-१, शक्कर तो. ॥३॥, चंदना के साथ घीस कर २ दिन पिलाना उबका उलटी मिटे ।

१६ अजत्रायन तो. ०॥ कूटकर गौमुख तोला ५ से देना । ३ दिवस पीनेसे उबका, उछाला, मोठ मिटे ।

१७ गुगलका घूप कोरे घडेको ७ दफे देना । पीछे पानी पाना । वह पानी पाना । उबका उलटी मिटे ।

१८ निवूरस तो. १ में इलायची ढाना दो भासा कूट ढालकर पिलाना वमन मिटे ।

१९. मयूरपिच्छ जला कर शहद साथ ३ से ४ रत्तो चटाना । वमन मिटे ।

२० विजोराका रस तो १ शहद तोला २ मे मिलाकर देना ।

२१. अगरका काष्ठ, मालियेरकी काष्ठली, कपठ बोजकी गिरी पानीमें घीस पिलाना । ३ से ४ दिनमें वमन मिटे ।

२२ आकके पान छायामें सुखा कर पीसके उसमें समभाग जवाखार मिलाय तो. ०॥ १२ भार पानीके साथ पाना । तात्कालिक वमन मिटे ।

२३ सुलसीरस से, लैंग जीरा समभाग चूण ०॥ तोला देना वमन मिटे ।

२४. मयूर पिच्छकी भस्म, लैंग, समभाग पीस नागर बेलके पानके रसमें गुग जैत्री गोलो बनाना । २ से ३ गोली पीनीसे देना ।

२५. नागकेशर, आमकी गुठली, इलायची समभाग कूट कर ०॥ तोला देना ।

२६ जामुनके पान उवाल कर पीलानेसे वमन, उबका मिटे ।

२७. सचल, जीरा, शक्कर, कालीभिरच समभाग कूटना । तो. ०॥, शहदमें चटाना ।

२८. मोठ, पोपर समभाग शहदसे देना ।

२९. बडकी बडबाइके अंकुर जो कामल हो उनका रस गायके दूधके साथ पिलाना सगर्भा स्त्रीकी वमन मिटे ।



शरीरका दाह शोष तृषा

गला सूखना मुखमें अमी न रहना ।

पित्तके प्रकोपसे मुखमें जलन शोष आदि होते हैं । इसके चिह्न पित्तज्वरसे मिलते जुलते हैं । पित्तज्वरमें होजरी पेट विगडनेसे शरीरका ताप होता है । इस दाहरोगमें पित्तज्वरका चिकित्सा करना ।

सारे बदनमें फिरटे रक्तमें जलन होता है । शरीर मानो अग्निसे जलता हो तपता हो ऐसा लगे । शूल दट हो । शरीर और आँखें लाल हो जाय । शरीरपर अंगारे रखे हो ऐसी जलन हो । दाह बहुत पीने से दाह होता है वह पित और लोहूके विगाहटा है । यह जलन बड़ी भयंकर होती है । शस्त्र श्यादिके आघातसे, पेटमें लोहूका जमाव होनेसे जलन होती है वह प्रायः असाध्य है । तृषा रोकनेसे अथवा तृषित मनुष्यको पानी न मिलनेसे रस क्षीण होकर बड़ा हुवा तेज-आंतर-भीतरका और बाहिरका अग्नि बहका जलाता है । तब मनुष्य चेष्टाहीन हो जाता है । गला, तालू ओष्ठ सुखते हैं । जिह्वा बाहिर निकल जाती है । धातुके क्षयसे हुवे दाहमें सूखा आती है । मनुष्य कामाक्ष होनेसे भी दाह शोष होता है । तृषा लगती है, स्वर बँठ जाता है, चलन हो सक्ता नहीं । किसी भी प्रकारके जलनमें शरीर उपरसे ठंडा लगे और भीतर जलज्वर होती हो तो वह प्रायः असाध्य चिन्ह है । इसके अलावा दूसरे रोगके अतमे तथा विपरीत चीज खा जानेसे भी दाह होता है ।

यह दर्द अकेला अथवा दूसरे रोगके चिन्ह रूपमें भी होता है तब शरीरमें जलन होती है । वायुका या पित्तका प्रकोप होनेसे, जीर्णज्वरसे, बहुत श्रम करनेसे, घूपमें तपनेसे भय पानेसे, कामाक्ष होनेसे, शस्त्रादिका घाव लगनेसे क्षयसे तथा दूसरे रोगोंके कारण भी यह दूद हाता है तब बारबार पानी पीने पर भी तृषा छोपती नहीं ।

उपचार—सो बल्लत घोया हुआ घी भुने हुवे जब बेर, आंवळी, खम माग लेकर सुरकामे या खट्टी छाछमें पीस मदन करना । छाछसे मिश्रीया हुआ कपडेका टुकड़ा शरीर पर डकना । बाला और चंदन साथमें पीस का लगाना । चंदन और अलपिप्पल पीस पत्ता पर टेपकर उससे पंखा करना । बेलीके पत्ते बमल पत्र बिछाय उस पर दर्दको सुलाना । ठंडा पानी फिरपर घृत छोटना । प्रियंगु लोघ्न, बाला काला बाळा, नागकेशर पीसके लगाना । बाला, पप्पल कूलाबाला, चंदन, नागमोथ इन सबका कूटके एक पेठोमें डाल

बाल डाल उसमें बिठाना कमलका जल, चीनीका पानी, दूध, गन्नेका रस इत्यादि पिलाना । काला हंसराज, और जलपिपलीको पीस पिलाना और लगाना ।

चंदनादि क्वाथ—चंदन, पर्पट सुगंधो वाला, नागरमोथ कमल कद, कमलफूल बढीसौफ घनिया पद्मकाठ, आवलां, समभाग कूट २ से ४ तोला चूर्णमें ४० तोला पानी डाल पकाना आधा शेष रहेने पर शहद या शकर मिलाय घब प्रकारके दाहमे पिलाना । या २ से ४ तोलामे १ लोटा पानी डाल छह घंटा भिगो रखना पीछे मलकर कपड छान कर पिलाना ।

शौष्य शुटी—२ या ३ तोला शुद्ध चांदीकी गोली बनाकर उसे अग्निपर रख लाल होनेसे मुलैठी, द्राक्ष, वायविट्ग, चिनीकबाला इक्षु रस शकर नागरमोथ सब समभाग लेकर बूटना । १० तोलामे २ लोटा पानी डाल १२ घंटा भिगो रखना पीछे इस पानीमें वह चांदीकी गोली २१ ठफे बुझाना । यह गोली मुखमे रखनेसे तृषा छीपती है । मुखमे अमी आता है । दाह मिटता है ।

कुण्ठादि वट्टी—कुष्ठ, जलपिपली मुस्ता बडकी रुडवाइके कोमल अम्रभाग, मुलैठी समभाग लेकर शहदमें बाल बालकी गोली बनाना । मुखमें रखनेसे तृषा मिटे ।

पलादि चूर्ण—इलायची, जलपिपली लौग, गजपिपल, प्रियंगु शिव-लिङ्गीवीज, बेरके बीजकी गिरी नागरमोथ सफेद चंदन समभाग कूट के २ से ४ मासा शहद या शकरमें चटाना ।

पलायदि योग—इलायची चावल लौग, नागकेशर, चंदन समभाग कूट के २ से ४ मासा शहदसे देना ।

द्राक्षादि योग—काली द्राक्ष पर्पट (रेणु) शकर इसका हिम पिलाना ।

घदिरादि योग—बेरके कोमल पत्ते, आवलां पकते हुए चावलके पानीमें पीस हाथपग पर रगाना । दाह मिटे ।

आमलादि योग—आमला बडके कोमल पत्ते, रीठेके फेन हाथपग पर लगाना । दाह मिटे ।

कपूरदि योग—कपूर, बालो, इलायची, आवलां, चंदन, टटे पानीसे पीस पिलाना दाह मिटे ।

मुशल्यादि योग—सफेद मुशली, काली मरिच, शकर समभाग कूट ०। से ०।। तोला पानी के साथ देनेसे तृषा मुखका शोष मिटे ।

वालकादि योग—वाला सफेद चंदन लालचंदन काला हंसराज पञ्चकाष्ठ सब समान पीस मस्तक पर लेप करना । तृषा, शोष दाह मिटे ।

कुष्ठादि योग—कुष्ठ, चावल, बड़की बड़वाइ, मुलैठी मूल नागरमोक्ष प्रत्येक तोला ०॥, कमल बीजकौ गिरी तो. १ सब साथ पीस सबके समान शक्कर मिलाय शहदसे वाल वालकी गोली बनाना । गोली मुखमें रखना तृषा, दाह, शोष मिटे । मुखमें धमी आवे ।

लोहखट्ट योग—गजवेलके टुकड़ेको तपाकर उपर पानी छिड़कना उस पानीमें शहद शक्कर मिलाकर पाना । तृषा शोष मिटे ।

कुष्ठादि योग—छोटी पीपल, नागकेशर, दाडिमकी छाल, शक्कर सम भाग लेकर शहदमें गोली बनाकर मुखमें रखना गलाका शोष मिटे ।

चंदनादि योग—सफेद चंदन पकलेट्टण चावलके पानीसे घीस पिलाना तृषा मिटे ।

तृषणाहर रस—(यो तल) पारद १, गन्धक १, कपूर ३, शिलाजित ४, वाला ५, काली मिरच ६ और शक्कर ७ भाग लेकर कूट कर ३ गती रातवासी पानीसे देना । तृषा शोष शांत होता है ।



मूच्छा

कारण—निबलता, दोषका प्रकोप, विरुद्ध आहारविहारका सेवन, क्रोध, शौक मनपर आघात, तमोगुण, मलमूत्रादिके वेगका अवरोध, विष आघात इत्यदि कारणोंसे प्रकुपित वात पित्त कफ हृदयमें, ज्ञानेन्द्रियोंके स्थानमें, कर्मेन्द्रियोंके स्थानमें प्रविष्ट होते हैं जय मनुष्य मूच्छित होता है ।

चिन्ह—प्रारंभमें हृदयकी गति मंद होती है । मोल, वमन होनेसे श्वासकी गति मंद होती है शरीरमें कंपन हो ठंडी पड़ती है, पसीना बहुत होता है । नाड़ी मंद अस्थिर गतिवाली होती है, हाथ पाँवके और शरीरके दूसरे स्नायु खँचाते हैं, मन घमराता है । मूच्छा जड़ पूर्णरूप पर पहुँचे तब रोगी बेहोश हो जाता है, मलमूत्र हो जाता है । अम, संन्यास इत्यादि रोग इसके मिलते जुलते हैं ।

मूच्छा—पित्त और तमोगुण प्रधान हैं । अम—पित्त वायु और रजोगुण प्रधान हैं ।

तंद्रा—वायु, कफ और तमोगुण प्रधान है । निद्रा—कफ और तमोगुण प्रधान है ।

संन्यास—कुपित हुए बलवान दोष जीव स्थानमें प्रवेश कर वाणी देह और मनकी गतिदेह रुक देता है और प्राचीन हो गये हुए मनुष्यको काष्ठकी तरह पटक देता है । तब सावधानीसे उपाय न किया तों तरकाश मरण भी हो जाता है । इसको संन्यास कहते हैं ।

पथ्यापथ्य—दरदीको भूमिपर घुलाना, ठंडी हवाघोंले कमरेमें ले जाना, बल शिथिल करना । पिछा हुआ लक्ष्मण को गो धाँज को खंस सु घाना या नाकमें डालना तुलसीरस माँसमें डालना । छाँड़ी, मस्तक पर ठंडा पानी छिड़कना । मुख पर ठंडा पानी छिड़कना मुख पर पवनपंखा करना । गलेके नीचे उतरे लुंभी तरह ठंडा पानी चम्बचसे थोड़ा थोड़ा पिलाते रहना । द्रक्षासव, प्रसवनीवन सुरा, महासरस्वती सुरा इत्यादि पिलाना । मस्तकके नीचे लुंभी रक्खना । सरवा, अदरक फुसीना प्याज लक्ष्मणका रस मिठाकर थोड़ा थोड़ा, अहद डाल पिलाना और नाकमें डालना । हाथ पाँव पर मृंगराज तेल मालीश करना ।

मूच्छा नाशन घृत—झैठ, पिपल, परिच, द्विग, त्रिगुंडीके बीज और पत्ते, देवदार, हलदी मबीठ वायविट्म, चंदन, छोटी कटहरीका फल केसीका कंद शतावरी, अश्वगंध प्रत्येक तोला ५ पाँच के कर पानीमें कुबदी करके उसमें नाजका

दूध रतल ८ ढालकर हिलाना उसमें गायधा घृत ८ रतल ढाल कर पकाना । ५ नीका अंश जल जाय जब कपडछान कर लेना । यह घृत किसी भी औषधके साथ या अकेला १ से २ सेला खिलाना । इसमें भ्रम, तप्रा मिरगि अपस्मार पागलपन इत्यादि मानसिक दरद मिटते हैं ।

मूच्छान्तक रस—पारद तो. ५, गंधक तो. १०, रससिद्ध तो. ५, अधक भस्म, रौप्य भस्म, ताम्र भस्म प्रत्येक तो. २, सहजनाके बीज गिरीशकी छाल, कचनार छाल, चोपचीनी सपेखडाकी, छाल, सौंठ छोटी पिपल काटे मरिच, असगंध, शतावरी, बच रागना, ब्राह्मी, ब्रह्मवर्डी, सेधानोन प्रत्येक तो. ३ लेकर कूटकर कपडछान कर, मिश्रकर उसको असगंध, बदरख, शतावरी प्रत्येककी अवकेष भावना देकर गुळा जैसी गोली बनाना अथवा भूका रखना । मात्रा २ से ४ रती मधु और मूच्छानाशन घृत अथवा कल्याण घृतके साथ अथवा अश्वगंधावलेह के साथ देना ।

मूच्छा दृढ अंजन—सौंठ, पिपल मरिच सहजनाका बीज सिधानोन, बच हिंग लक्षुन, कर अके बीज, सपेद सरसो समभाग लेकर वस्त-वोकाका मूत्रमें पीस कर वाट (वर्त) बनाना अथवा सुखाकर भूका रखना । इस औषधका अंजन करना और सुधाना मूच्छा अपस्मार भ्रम चक्कर मिटते हैं ।

राहनादि शैथिल्य—राहना गले (गिलेय) भावली, 'नगु' की समभाग पीसना । ०॥ से १ तेला भूका क्वाथ करके लघुयोगराज गुण्ड ४ से ८ गोली अथवा महायोगराज गुण्ड ३ से ४ गोली के साथ देना ।

बौधुरादि शैथिल्य—गोख मूषाकानी घमासा, ब्राह्मी, समभाग कूट ०॥ से १ तेलाका क्वाथ पिलाना । साथ सिहनाद गुण्ड ४ गोली देना ।

अष्टाभृत पर्पटी आदि मिश्रण—अष्टाभृत पर्पटी तो ०॥, महायोगराज तो ०॥, चंद्रप्रभा तो १ साथ मिलाय ४८ पुडी बनाकर राहद और घृतमें अवकेष पुडी सुबह शाम देना ।

मद्य (दारु) से उत्पन्न होनेवाले दर्द

मद्य—आसव सुरापान विधि

मद्य मात्रापीतं दत्तं प्रियया सुसाधितैरन्नैः ।

हृष्टप्रियाय समये भक्ष्यैरमृतोपनं भवेद्विचिना । ॥१॥

निष्पन्नपूर्वक, नियमित मात्रामे समयका विचार कर हितकारक अन्न और स्वाद्य पदार्थोंके साथ प्रियाने और प्रसन्न हुये पुरुषको दिया हुआ मद्य-आसव अमृत समान गुण करता है । बुद्धिमान पुरुषोंने मद्यको अन्न जितना हि उपयोगी माना है, किन्तु जिस ऋतुमें, जिस जातका मद्य पीना हितकारक हो, तथा प्रकृति, स्वभाव, शरीरका बंधारण वगैरका विचार करके उपयोग करे तो मद्य-दाह अमृत रूप होता है । और मूखतासे हृदसे ज्यादा पीते चले तो विविध रोग उत्पन्न होते हैं और अंतमें मरण होता है ।

विधि—मद्यमूत्रोत्पन्न और स्नान करनेके बाद, सुगन्धों तैल आदि पदार्थों शरीर पर धारण कर लगाकर, मन सावधान तथा प्रसन्न रखकर सुगंधी पुष्पोंसे खींचे हुए, भ्रमर मयूरादिसे गुंजित, सुगंधित शीतल पत्रसे भरे हुये वातावरण वाले स्थानोंमें, चन्द्रकिरणोंसे घवलित और सुगंधी धूपसे सुगंधित हुयी मकानोंकी ऊर्ध्वभूमि अगामीमें मनको प्रसन्नता बढ़ानेवाले शयनासनमें हुए पुरुषोंने, सुवर्ण और चांदीके रत्नजडित पात्रमें भरा हुआ, रूप यौवनसे मदीनमत्त और वस्त्राभूषणसे भूषित रमणियां दिया हुआ मद्य पीना यह शरीरको नवयौवनयुक्त रखता है । और मद्य पीनेके बाद विविध प्रकारके फल मेवा, सुगंधयुक्त घी और दूध वाले पौष्टिक अन्नपानादि पदार्थोंका खाना यह आरोग्य रक्षण के लिये उत्तम है ।

वायु प्रकृतिवाले मनुष्यने स्निग्ध और उष्ण वस्तुओंके साथ मद्य पीना, पित्त और उष्ण प्रकृतिवालेने मधुर और ठंडे फल फूल स्निग्ध पदार्थों और शीतोपचारके साथ मद्य पीना । कफ और शरद प्रकृतिवालेने जंगली मांस रस और तृष्ण गुण वाले फल और अन्नादि खुराक देने के पीछे मद्य पीना चाहिये ।

गुण—आयुर्वेदमें विविध प्रकारके मद्य खाने आसव बनानेकी विधि है । कह आसव भिन्न भिन्न रोगोंके लिये ही उपयोगी है और कह आरोग्य रक्षणके लिये गुणकारी है । आयुर्वेदकी प्रकृतिसे बने हुये आसवोंकी मात्रा २॥ तोलासे लेकर १० तोला (१ औंससे ४ औंस) तककी एक दिनकी है । विशेष रोगके कारण

मात्री न्यूनाधिक की जाती है। युक्ति पूर्वक मात्रासे और विधिपुरस्सर पिना हुआ मद्य मनको प्रसन्नता, ओष, आरोग्य, पुष्पातन और दलको बढ़ाता है। शरीरको पुष्ट करता है। खुराक पर प्रीति बढ़ाना, भूख लगाना, हृदयको बलवान करना, स्वर स्पर्शको विकसित करना, मद्य और शोकको मिटाना, अच्छी नींदको लाना, भलमूत्रको नियमित करना वस्तुकी कठोरताको मिटाना इत्यादि गुण कर्ता है। संसारके विविध दुःख शोकसे विह्वल मनुष्योंको यह कष्ट कम करता है। मद्यपान करनेवाले लोग अमर्याद हो कर अधिक मद्य पीते हैं उनके हृदय फुफफुस आंते मूत्राशय और दिमाग आदि अवयवों विगड़ते हैं और उनकी दशा पराधीन हो जाती है।

मद्य पीनेका निषेध—मद्य-आसव किसने नहि पीना चाहिये। क्रोधमें आया हुआ, मयसोत, बहुत परिश्रम पथ आग्नि थका हुआ, शोकसे विह्वल, भूखा तृपावाला, बसत करनेसे और भार उठानेसे थका हुआ, भल मूत्रका वेग लगा हो ऐसा, बहुत रुध, बहुत ठंडे सूखे पदार्थ खाये हो, अजीर्ण पर खुराक लिया हो, शरीरमें कमजोर हो, घृण और अग्निसे तपा हुआ हो ऐसे मनुष्यने मद्य-आसव नहि पीना चाहिये। पीनेसे अनेक प्रकारके रोग होते हैं। अधिक मद्य पीनेसे मनुष्यकी जो दशा होती है यह इस प्रकार है।

प्रथम दशा—नियमित मद्य पीनेसे बुद्धि बढ़ती है, स्मरण शक्ति खिलती है, सञ्चारका सुख मिलता है, पढ़ने, गाने बजाने भाषण काने आदिमें उत्साह अधिक रहता है।

दूसरी दशा—मात्रा-प्रमाणसे अधिक मद्य प्रिया हो तो बुद्धि याददास्त और वाणीमें विकार अस्पष्टता होती है, उत्पन्न जैसी क्रिया और भावचरण करता है। क्रोध प्रमाद आलस्य निद्रा बढ़ती है। इस अवस्था वाले लोग वाहनका मोटर या बसका रेल्वे ट्रेनका ड्रायवर हो तो अकस्मात् कर देता है। आज कल टारबघोका कायदाका अमल होनेसे ऐसे लोग वहाँ जीतना मिले दांव पी लेते हैं इस कारण बहुत से अकस्मात् होते हैं।

तीसरी दशा—मात्रा प्रमाणसे बहुत प्रमाणसे मद्य प्रिया हो तो अमन्या-गपनका मान न रहे। बड़ोंकी गुरु रूप मनुष्योंकी मर्यादा न रखे। अमन्य भक्षण करे। बेशुद्ध हो जाय। अपनी शुद्ध बात कह दे और मनुष्य एकदम पराधीन हो जाता है।

चौथी दशा—बिना मर्यादा दांव पीनेसे मनुष्य काटे हुए बूझकी तरह गिर पड़ता है। चेतना शुद्धिहीन बन जाता है। किसी कार्य अकारणका जान गमाता है। जीवित रहने पर मृतवत् अपना जीवन समझता है।

मध्यजन्य रोग—शरीरमें भिन्न भिन्न अवयवोंमें पीड़ा होती है। अघ्राज्य मूत्रके रोग होता है। मुखमें शोष रहता है। अघ्राज्य प्रमेह रोग होता है। मुखपर शोथ रहता है। शरीर तपा हुआ रहे। मस्तक-दिग्भांग हड्डियों सांधोंमें दर्द। शरीरमें कंप हो। कमजोरी बहुत रहे। हृदयमें खोच हो। खांसी हिक्का बर्षा जमाई दस्त मुख और आंखों के दर्द हो। पृष्ठ भाग झकड़ जाय मयंकर स्वप्न देखे आदि होते हैं।

चिकित्सा—मद्य से उत्पन्न हुये विकारोंमें या दाबके पागलपनमें खट्टा पदार्थ, छाछ, दहिआ घोल, रबड़ी मलाइ मखन केले मुर्खनी चीकु द्राक्ष, इमलीके पके फलके पानीमें मिगोकर इसके रसमें गुड पाककर या शहद डालकर पिलाना। रोगी के शरीरमें वात पित्त कफकी प्रधानता यूँ अधिकताको देखकर चिकित्सा करना। खजूर अजौर, पके वेर, वेल-विस्वक्प के फलके रसका शर्बत आदि देना। च्यवन प्राश जीवन, अश्वगन्धादि अवलेह द्राक्षाक्ष अजुनारिष्ट आदि देना। शूराकमें चावल गेहूं जव ज्वारी मुंग उड़द आदि देना।

मुक्तादि मिश्रण—मुकापिण्टी सप्तामृत लोह, यशद मरु प्रत्येक एक एक तोला, समशर्करचूर्ण ४ तोला मिला कर १० से १२ रती शहद या घृतसे देना।

प्रवालादि मिश्रण—प्रवाल चन्द्रपुटी तोला २, बंग मरु म्येत तोला १ महालक्ष्मी विकास तोला ०॥, सप्तामृत लोह तोला १ सब साध पीस ६४ पुडो बनाना २ समान शहद से देना।

स्वर्ण वस्त मालती २ से ३ गोली अथर्वचूर्ण २ से ४ मासा और च्यवन प्राश १ से ३ तोला के साथ देना।

शरीर पर महालाक्षादि तेल अथवा सुगराज तेल मालिश करना। डीकनी सुबाना।

मद्य मंजी रस—पारद तोला ८, गंधक तोला १६, मुकापिण्टी तोला २, स्वर्ण मरु तोला १, सिलाजीत तोला ६, बंगमरु तो ४, रोथ मरु तोला ८ सब साथ मिलाय इसमें गायका घी तोला १० मिलाय माझी कालोद्राक्ष कालीहरद प्रत्येक के रस या कषायकी ओक ओक माखना, देकर सुखा कर घोट रसना। मात्रा २ से ४ रती शहद और अदरक के रससे वा तुलसी के रससे देना, मद्य दाब से उत्पन्न हुये दर्द मिटते हैं।



उन्माद पागलपन

कारण—बहुत अभ्याससे, मन के आघातसे बहुत दाक पीनेसे, जागरण से, दस्तकी कब्जोंसे, कुटुंब क्लेशसे, मालमिलकत या प्रियजन के नाशसे, व्यापार आविसे हानि पहुचनेसे, प्रेमावतासे विरहसे, अत्युक्त विषयेच्छासे, दीर्घ कालके अजीर्ण से इस प्रकार अनेक कारणोंसे उन्माद रोग होता है । औरतोंका प्रसव के पीछे आहार विहारकी अनियमिततासे या अति हर्षसे या अति शोकसे पागलपन होता है उसे सृत्तिकोन्माद कहते हैं ।

अपनी प्रकृतिसे विरुद्ध खान पानसे, धतूरे के बीज मांग गांजा आदि खानेसे, डेव गुरु ब्राह्मणों के अपमानसे, अति भयभीत होनेसे, मन पर किसी प्रकार का आघात होनेसे यह रोग होता है ।

चिह्न—कुपित घात पित्त कफ गैर मार्ग पर रहनेसे उन्माद होता है यह मनका रोग है । इसमें भ्रम होता है । मन चंचल होता है । असंबद्ध बोलता है । स्मरण शक्ति नष्ट होती है ।

वातप्रधान उन्माद—यह रोगी बिना कारण, बिना प्रसंग उच्च स्वरसे हसता है मद हास्य करता रहता है नाचता है गाता है बोलता रहता है । अपने शरीर के अवयवों को विकृत करता है रोता है । इस रोगीका शरीर रुद्ध कृश होता है । खुराक पच नाय भूख लगे जब रोग बढता है ।

पित्त प्रधान उन्माद—रोगी—केही बात सहन नहि करना । अपनी महत्ता अडवर दिखाता है । नम्रता रखता है । तिरस्कार करता है । भागता है । शरीर तपा हुआ रहता है, क्रुद्ध हो जाता है । सूर्य के धुप अग्निसे दूर रहता है । छाया ठंडे अन्नपान पसंद करता है । मुख पीलापन लिये होता है ।

कफप्रधान उन्माद—मे रोगी का बोलना चलना फिरना धम होता है । खुराक पर अरुचि होती है, खंकी तस बैठना एकांत मे रहना पसंद करता है । निद्रा अधिक रहती है । वमन होता है । मुखसे लार पडती है । मोजन के पीछे पागलपन जोर करता है । मुख नख सफेदी लिये होते है ।

देवसे अविष्ट उन्माद—हो तो मनुष्यसे भिन्न एसी वाणी बोलता है । मनुष्य मे नही एसा पराक्रम शौर्य बताता है । ज्ञान विज्ञान आविसे युक्त होता है और आवेशका समय नियमित होता है ॥ रोगी संतोषसे रहता है, बलिष्ठ रहता है, अच्छे पुष्पसुगंधी पदार्थ पसंद करता है । तप्रा रहित और पंस्कृत में बोलता है । ईशका नेत्र स्थिर रहता है । आधीर्वाद दिया करता है

ब्राह्मण पर प्रीति रखता है। इसका आवेस पूर्णिमा पूनम के दिन ज्यादा रहता है।

वैश्य आविष्ट उन्माद—में पसीना अधिक हुआ करता है। ब्राह्मण गुरु देव आदिको निंदा करता है। निभय गैरमार्गसे जानेवाला, अन्नपान बहुत खाने पीने पर भी वृत्ति नहीं रखता। इसका यादेश संध्या समय ज्यादा रहता है।

सामान्य लक्षण—रोगी बहेमी सशयवाला होता है। निर्मल्य बात पर गहन विचार, गर्मचीजको ठंडी और ठंडीको गर्म मानता है। अपना शरीर काचना बना हुआ हो फूट दूट जायगा ऐसा भय रखता है। कई लोगोको एक देशी पागलपन होता है। किसी एक-दुर्लभ पात-वस्तु के पारे से उसे पागलपन रहता है दूसरा सब तरहसे वह अच्छा होता है। किसीको आप बात काने का पागलपन होता है। खोया अपने प्रियको झखती पागल होती है। पुष्प किसी झाँके विरहसे पागल बन जाता है। किसी लोंगका धार्मिक पागलपन होता है। असबद्ध बातें करता है। कई लोग अन्नसे हि जह बुद्धिहीन होते हैं। यह भी एक प्रकार का उन्माद है। ऐसे लोंगोंका शरीर वेढाल होता है। मस्तके छोटे होते हैं। बड़े मस्तक वाले भी पागल होते हैं।

सर्वस्वती चूर्ण—कुठ असगंध सैधानेन अजशर्इन अजमेद जीरा शाहजीरा सोंठ छोटीपोपल कालीमिरच पाठा शंखाहुली-शंखपुष्पी प्रत्येक तोला, १० दस बच १२० तोला कुटकर ब्राह्मी के रस की ३ भावना देना सुखने पर छानकर रखना। २ से ४ माषाकी मात्रा शहद घृतसे देना या कल्याणघृत और मधुमे देना। इसका, सतत सेवनसे उन्माद पागलपन मिटता है। बुद्धि मेधा स्मरण शक्ति धारणा शक्ति कर्त्तृता शक्ति बढ़ती है। आस्मार चक्कर भ्रम मूर्छा में गुणकारी है।

भूत भैरव रस—पारद, शुद्ध हरताल शुद्ध मैन्धिल, शुद्ध काला सुरमा छोड़ भस्म ताम्र भस्म प्रत्येक चार चार तोला, गंधक ४८ तोला लेकर विधि वत् मिला कर गौमूत्र की भावना देकर छोड़ेकी कड़ाइमें १० तोला गाईका घृत छाल पर पपटीकी तरह पकाकर केली के पतेके उपर नीचे गोबरसे ढकाकर स्वांगशीत होने पर घोट कर रखना। ३ से ४ रती गाय के घाँसे या ब्राह्मघृत या कल्याण घृतसे देना। उपर नैचेका काथ पिलाना।

पलाशादि कषाय—ढाककी छाल या मूल, ब्राह्मी शंखाहुली शतावरी उडुवर छाल सपगंधा पुनर्नवामूल सन्भाग कुट १ से २ तोलाका

काय कर उन्माद मूर्च्छा अमरमार अम चकर आदि में बाहद डालकर पिलाना या किसी रस मरसादि के अनुपान रूपसे पिलाना ।

उन्मादहरि खट्टी—पारद गधक माक्षिक मस्य शिलाजीत गूगल कुछ इलायची लौंग छोट पीपल काली मिर्च बच हलदी अतीस शशाङ्गुली वासविडग कताकर जवांअ आंवला अभियाहलदी नागरमेथ रास्ना प्रत्येक एक एक तोला सर्पगंधा ४ तोला, त्रिफलाकी शंखा हूनीकी और शतावरीकी एक एक भावना देकर दो दो रत्तीकी गोली बनाना । ३ से ६ गोली पानीके साथ दो समय देना सद प्रकारका पागलपन मिटता है ।

उन्मादहर मिश्रण १—उन्माद गजांकुश कुश १ तोला, सर्पगंधा १ तोला, प्रवाल चंद्रपुटी २ तोला, स्मृति सागर १ तोला साथ मिलाय ६४ पुढीमा बनाना । २ वखत गाईके घी के साथ अथवा कल्याण घृत के साथ देना अथवा उन्माद शमक चूर्ण ४ मासा के साथ देना ।

उन्मादहर मिश्रण २—यहालक्ष्मी विलास १ तोला, मुक्ता विषी तोला १॥, वात त्रिव्वस तोला १ सुधा पर्पटी तोला १, अम्रक करपवटी तोला १ साथ पीस ६४ पुढी करे दो वखत कल्याण घृत के साथ अथवा चयवन स्रथ जीवन के साथ देना उर उन्माद शमक चूर्ण २ से ४ मासा देना ।

उन्माद शमक चूर्ण—ब्राह्मी शंखाहुली सर्पगंधा कुछ बच धमासा अकलकरा हलदी तमालपत्र काली मिर्च सम समान भाग छेहर कूटकर रखना । २ से ४ मासा २ वखत पानीसे देना उन्मादमे अच्छा गुण कर्ता है ।

उन्मादहर काय—लसुन पिपलीमूल सेठ भारंगी शुद्ध कुचला पुष्कर मूल चिरायता अकलकरा काली मिर्च ब्राह्मी शशाङ्गुली समभाग कूटना २ से ३ मासा किसी रस रसायनके साथ या अशुला पानीसे पिलाना ।

बवादि चूर्ण—बच सर्पगंधा पुनर्नवा मूल सम भाग कूट १ से २ मासा मात्र देठ मासा तक देना । पथ्यमे पृथ भात देना दिमागका दर्द शिरोरोगमे उत्तम गुणकारी है ।

कुष्टादि चूर्ण—कुष्ठ तोला १॥ बच तोला ३, अकलकरा तोला १॥, सर्प गंधा तोला २ साथ कूट १ से २ मासा किसी औषधके साथ अथवा अकेला पानीसे देना । उन्माद चित्तम्रम चकर मूर्च्छामे गुणकारी है ।

उन्माद गजांकुश—पारद तोला २, गधक तो २, बच ब्राह्मी आकका मूल, शशाङ्गुली कनकवीर शुद्ध कुचला प्रत्येक तोला एक एक, स्वर्णमाक्षिक

भस्म रक्त तोला १ कूट घांकार पाठा महाराष्ट्री गौमूत्र प्रत्येककी एक एक भावना देकर घोट रखना २ से ४ रती पानीसे या कल्याण घृतसे देना । उपर महाराष्ट्रनामिकाय पिलाना ।

उष्णस्थि प्रयोग—घंटकी खायी पासलो की हड्डी कूटकर रखना । यह १ रती काली मिरच १ रती साथ मिलाय कागजकी भुगली द्वारा कानमे कूक मार कर डालना तुर्न सचेत होगा मूर्च्छा उन्मादमे उत्तम गुणकारी है ।

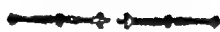
उन्मादहर घृणी—नीम १० रते हलदी गूगल लोमान बच हींग सांपकी काली बड़ी कटहरीके फल, कापुसके बीज (कपाशिया) मोर के पीछे, सरसों प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूट उपमे गाईका घृत २० तोला मिलाय रखना । सब समान भाग कूटना इसका धूम खासमे लिया जाय इस प्रकार देना । सब प्रकारकी अहवासा भूतप्रेत, पिशाचका आवेश उन्माद मूर्च्छा भ्रम चक्कर आदिमे बच्चोंके सब दोषोमे यह धूप देना बहुत लाभ होता है ।

ब्राह्मी घृत—ब्राह्मी हरी तोला १६०, भांगराहरा तोला ४०, छाछाहूली शतावरी हलदी, मूलांठीमूल अषगंध नागर मोथ, प्रियंगु प्रत्येक औषधी आठ आठ तोला, बच, काली मिरच मोठ प्रत्येक दो तोला, सेवानोन चार तोला सब साथ कूट रांग लगाये पीतलके बर्तनमे १२ रतल पानीमे डालकर रात भर भिगेकर दूसरे दिन प्रातः उसमे वैजंटेवल मिलावट न हो । ऐसा शुद्ध घां रतल ३५ डालकर पकाना पानीका अंश जल जाय जब कपडछान करके अच्छे बर्तनमे भरना । मात्रा २ से ४ तोला खाने से, बुद्धि मेधा स्मरण शक्ति बढ़ती है । भगज-दिमागके सब रोग मिटते हैं । हृदय आदि दुष्फुल्ल अच्छे होते हैं । उन्माद पागलपन मूर्च्छा भ्रम चक्कर अपामार-मिरगी आदि रोगमे धून गुणकारी है ।

कल्याण घृत—इन्द्र वाक्षणी मूल बड़ी हरद बहिडा आंवला प्रियंगु देवदार कलौजी जीरा तगर हलदी दाहहली अनन्त मूल इलायची कमल बीज दाहहली चोपचीनी इलायची दमलकद दाहमफूल मजीठ तमाक पत्र ब्राह्मी पते अतीस रुदती क्षुप वायविडग शृष्टिर्णी कृष्ट चंदन बड़ीकटहरीफल पद्म काष्ठ चमेला फूल प्रत्येक सोलह सोलह तोला लेकर कूट कर उसको रांग लगाये पीतलके टोपमे छोट पानी रतल ५० डालकर रातभर भिगे रखना । दूसरे दिन प्रातः उसमे घां रतल ३५ डालकर घीमे आंचसे पकाना जल पानी का अंश जल जाय तब कपड छान कर अच्छे बर्तनमे भर देना । यह २ से ४ तोला खिलानेसे दिमाग हृदय फेफड़ा आदि सूत्राशय रोगका शमन होता है । यह घृत अथेला या तत्तद रोगकी औषधोके अनुपान रूपमे

दिया जाता है । यह छूत—अपस्मार उन्माद भूतवाधा छगिर चिरदह एक
 देशी पागलपन मूर्च्छा चक्कर खाँसी सूजन मंदाग्नि वातस्क प्रतिगमा ममन बवाबीर
 विषमज्वर सूक्ष्मरुद्ध रक्ताशय कुष्ठमे उत्तम है । वंघ्या भी दो ३ मास तक
 खिलानेसे गर्भाशयके सब रोग दूर होकर खतान होता है । फाइन्लर प्रेशर
 हृदयके सब रोग दूर होकर हृदय बंद होजानेका भय नहि रहता ।

✓ **सपगंधा कल्प**—सपगंधा तोला ४०, प्रवालचन्द्रपुटी, मृदणी माक्षिक
 रक्त, अभ्रक भस्म प्रत्ये ५ बीघ बीघ तोला, मुक्ताशुक्ति मंगगम्भवेत, पारक
 गंधककी समभाग से की हुयी कज्जला, प्राचेक सोलह मालठ तोला सब साथ
 घोट कर मूलेठी तोला १० और ढाकके मूल तोला १० एक पा कवाय कर
 उसकी भावना देकर सुखाकर घोट रखना अथवा दो दो गोलो बनाना
 ४ गोलो प्रात दुषसे देना । १६ दिन सेवन करनेसे रक्त चाप दाहज्वर प्रेशर
 कम होकर मर्यादित होता है । पागलपन मस्तक की पीडा मूर्च्छा चक्कर आदि
 दिमाग के रोग शांत होते है ।



वातारोग, ८४ प्रकारके वातव्याधि

वायुवेदमे ८४ प्रकारके वातभोग बताये हैं । प्राणवायुके कुपित होनेसे-
विकृत होनेसे हिक्का श्वास कांभी स्वरभंग पीनस प्रतिश्याय आदि रोग उत्पन्न
होते हैं । उदान वायु कुपित-विकृत होनेसे-नेत्र मुत्र नाक कान और मस्तकके
रोग होते हैं । समान वायुके कुपित विकृत होनेसे गुल्म मदासि आदि रोग होते हैं ।
अपान वायुके प्रकोपसे अतिसार सप्रहणी गुदरोग आदि होते हैं । व्यान वायुके
कोपसे पथरी प्रमेह जवासीर मगदर आदि होते हैं ।

काण—ठंडीलगनेसे, ठंडेरानीसे स्नान करनेकी आदतसे चीनी शक्करकी
चौंजे मिष्ठान अजिक खानेसे भूख न होते भी खुराक लेते रहेनेसे, खमड़े बैगाइसे
पाचन शक्ति बिगड़नेसे, अति कमजोर होनेसे, बिना बी घूब छाँड़ खूया खुराक
लेनेसे, ठंडा रात बांछी भन्न खानेसे, अतिविषयसे, जागरण करनेसे, ठंडी मुवाफरी
करनेसे, अति परिश्रमसे अति कसरत करनेसे चौंट लगनेसे, अति चैता शोकसे, मल
मूत्रका वेग रुकनेसे, शरीरपर कोईचोत्र शिरका आघात लगनेसे हाथी घांटा उंट
पर अजिक सवारी करनेसे, अति उपवाससे शोकका या इष का म्माचार अकस्मात
सुननेसे, ठंडा पवन शरीर पर लगनेसे इत्यादि अनेक कारणोंसे वात वायुके रोग
उत्पन्न होते हैं ।

वातारोगके चिन्ह—शरीरके अंग उपांग पकड़ झट्ट जाते हैं । प्रारभमे
एक दो दिन बुखार आता है । पीछे बुखारके साथ हरवखन शरीरमें या शरीरके
किसी भागमें पसना होता है । नाडीका गति बढ़ती है । जामपर सफेद छारी
जमती है । सिरमें दद होता है । तृषा लगती है । दस्त रुज रहता है ।
पिशाब लल और कम प्रमाणसे आता है । शरीरका खून खट्टा हो जाता है ।
आगे केनी घूटन काँडा खंभा पीठ कमर आदिमें पीडा होकर वह भाग झकड़
जाता है । निद्रा कम आती है । चलने फिरनेमें तकलीफ होती है । पसीना
खड़ा होता है । वातकी पीडा बढ़नेसे बुखार १०१ से १०५ तक बढ़ता है ।
एक साधामे पीडा कम होते हि दूसरे सांधामे पीडा उत्पन्न हो जाती है । सघवा
होनेसे इसके साथ अन्य भी दद हो जाता है । दूसरे वात रोगमें नामके
अनुसार भिन्न भिन्न चिन्ह होते हुये भी उपर लिखे प्रेय कई चिन्ह न्यूनाधिक
सब वात रोगमें होते हैं ।

वात रोगमें पथ्यापथ्य

पहुत करके सब वातरोगमें चिकित्सा और पथ्यापथ्य प्रायः समान है । पानी कूआका पीना लाभकारक है । दूधका खुराक ज्यादा लेना । मिष्टान्न कम खाना । जल्दी पाचन हो ऐसा खुराक लेना । खीचड़ी, वाजरी, जव, चावल, मुग, उबद, तूरीकी दाल, गुह, अदरक, काली मिर्च लहसुन, प्याज, सेठ, छोटी पीपल लौंग, तब, हरा धनिया (कोथमोर), दूधी करेला सुरण, मीठा नीम, नमक, हलदी, पपैया, मीठा आम, मीठा मुसवी, चीकू ब्राक्ष, वादाम, काजू पीपल इत्यादि चीजे फायदा कारक हैं ।

इमली, खट्टी छाछ, खट्टा दही, खट्टा निवू, वाजारकी मीठाड चीनी के अधिक मिष्टान्न इत्यादि हानिकारक हैं । ठंडे पानीसे स्नान नही करना शरीर पर खोपेका या तिलका तैल मालिस करना । वाटो न हो इध प्रकार खुराक लेना । दस्त और पिशाबका खुलासा हो यह ध्यान रखना । भूख हो इतना ही खुराक लेना । शरबत आइसक्रीम धरफ बगैरेह नही खाना सूखी हवा प्रकाश वाले कमरेमें रहना, मकान कमरेमें इधर उधर गंठकी न होने देना । शरीर पर सीधा ठंडा पवन न लगे इस प्रकार रहना । ठंडी श्रुतुमें और वर्षामें अगंठी रखना । हिम अग पर वात-वायुसे दर्द हो जकड़ गया हो उस पर महानारायण, महालाक्षादि, महामरिचादि तैल अथवा तिलका या सरसोंका तैल मालिस कर उपर शोक करना ।

संधिवात

इस रोगको उपर लिखे नियमोंके साथ हमेशा दंत साफ हो यह ध्यान रखना । संधिवात के साथ यदि बुखार रहता हो तो बुखारका उपचार करना । वातपित्त कफादि जिस दोषका प्राधान्य हो उसका ख्याल रखकर उसको औषध देना । इस रोगमें खूनमें अम्लता-खट्टापन रहता है । वह कम हो ऐसा उपचार करना । पसीना ज्यादा हो यह लोभकारक है । इस रोगको-मद्य दाह पानेकी श्रावत हो और चा काफी ज्यादा पीता हो तो कम पीना शक्य हो तो बंद करना । खट्टे चीजे ठंडी चीजे, और खुराककी और खाने पीनेक चीज ठंडी हो गई हो ऐसा नही लेना ।

महायोगेश्वर गुग्गुलु—एरंडी बीजका गर्म, चित्रक, पीपरीमूल, अजवायन, पकाइ दुग्गी हिंग, कलौजजीरा, वायविडग, अजमोद, जीरा, देवदार,

बच्च इलायची, चैवानोन, कुष्ठ, रास्ना, गोखरु धनिया, हरद, मागरगोटा-लताका-
के बन्धकीरी आवली, नागरमोथ, सेठ, छोटी पीपल, काली भिरच, वंशलोचन,
बड़ी चट्टीके फल, लौंग, सत्रीखार, बचुरा गिलोय, शुद्ध भित्ता, असगंध,
झातावरी पुनर्नवा प्रत्येक तो २, लोह भस्म, ताम्र भस्म अथवा भस्म, वंग
भस्म रौप्य भस्म, नागभस्म, पारद भस्म रक्त, शुद्ध पारद शुद्ध गंधक, सहूर
भस्म प्रत्येक तोला ८ सुवर्ण भस्म अथवा सुवर्ण माक्षिक भस्म रक्त तो ४, शुद्ध
गुग्गुल तो १००, शिलाजित तो १६, गायका घी तो ३० सब साथ मिलाकर
एक एक रतीको गोली बनाना । मात्रा ३ से ६ गोली घी के अथवा दूध के साथ
धेना । इसके उपर महागन्धादि कवाथ पीया छय तो अधिक लाभ होता है ।

४ प्रकारके वातरोगमें यह बहुत गुणकारी है । इसके अतिरिक्त, गसा
अवाधोर, संधुही, भगदर, प्रमेह, कुष्ठ, उदावर्त-वा (गेह चढना) गुल्म, अप-
स्मा हृदयरोग मदाग्नि खास, नासी, सूत्ररु इत्यादि में भी अच्छा
गुणकारी है । रोगानुसार आवश्यकता हो तो अनुपात बदलना ।

यह वृषण युक्त महायोगराज सामान्य स्थितिवाले महंगा देने में नहीं ले
सकता है । इस कारण सुवर्ण युक्त और माक्षिक भस्म युक्त इस प्रकार दो
प्रकारका बनाया जाता है ।

लघुयोगराज गुग्गुल (योग तरविणी-वाताधिकार) सेठ पंपलिमूल,
छोटी पीपल चक्र, चित्रक मुनष्ट्र दिग, अजमोठ, ससे, जेरा शाइजीरा,
रेणुका-(निगुंड व ज) ब्रतमामो ईन्द्रजव पाठा, वायंरुग, गरुपपल, कुटकी अतीस,
भारंगी बच्च, प्रत्येक द्रव्य एक एक तोला और शिकता-तीनों मिलकर ४०
तोला । सब साथ मिलाकर शुष्क किया हुआ गुग्गुल तो ६० मिलाना । इसमें
गायका घी तो १० मिलाकर ४-५ रतीको गोली बनाना । यह औषध सब
प्रकारके वातरोगमें उत्तम गुणकारी है । यह गुग्गुल वातरोग के अतिरिक्त कुष्ठ,
फेफ गंधोर संधुही, प्रमेह, वातरक्त, नाभिश्चल, भगदर, उदावर्त, हृदय और
फेफड़े के रोग गुल्म अपस्मर, उगमठ हृदयका जकडना मदाग्नि खास नासी,
अर्वाच ओरताका ऋतु दोष मिटता है और पचन शक्ति को सतत तोंक दिलाता
तक बनेसे गर्भाशय शुष्क होकर गर्भाशय नन्तान-गर्भाधानके योग्य होता है ।

वातराक्षस—पारद गंधक, रसमिद्धर अथवा भस्म, ताम्र भस्म, लोह
भस्म, नागभस्म, प्रत्येक तोला, ६५-७५, आधके दूधमें शुष्क किया हुआ रखकर
तो २११, सेठ, छोटीपीपल कालीभिरच, लौंग, चंदन, हरद, गुजामू, चीन्डा

गौद, गन्धविरोधा प्रत्येक तोला ५, शिलाजित तो. १०, चित्रक, अदरक, एरंडा मूल, गुलरको छाल प्रत्येकका रस या क्वाथकी एक एक भावना देकर घोटकर, रखना । मात्रा २ से ४ रति घी के साथ देना । उपर महारास्नादि क्वाथ पिनाया जाय तो अच्छा । सब वातरोगमें गुणकारी है ।

चिन्तामणि स्रुतमुख रस (सुवर्णयुक्त) पारद तो. १० से सेनेका बर्त तो २॥ डालना । शुष्क गंधक तो. २० लोहभस्म अभ्रकभस्म, मागभस्म, प्रत्येक तो. १० सब साथ मिला कर गांधके घी तो. १० मिला कर निगु"ठिके क्वाथ और महारास्नादि क्वाथ की एकेक भावना देकर उसका गोला बनाकर एरंडा पानमें लपेट कर बाजरी या उदकी कौठोमें तीन दिन तक रख कर पीछे निकाल कर घोट कर रखना । दो से चार रती घी या दूधसे छेनेसे सब प्रकारके वातरोग, अपस्मार, उन्माद, आदिमें फायदा करता है ।

वात चिन्तामणि वृद्ध (सुवर्णयुक्त)

रसहिंदू तो. १२, लोहभस्म, तो. १०, प्रवाल चंद्रपुटी तो. १० मुक्तापिष्टि तो. ६, रौप्य भस्म तो. ४ अभ्रक भस्म तो. ४, सुवर्ण भस्म तो. ६, सब साथ मिलाकर कसरपाठा के रसकी भावना देकर घोट रखना या रति प्रमाण गोली बनाना । मात्रा २ से ६ रती । यह औषध सब प्रकारके वातरोगमें, पक्षघात, कफ वात, रूक्षिवात, आदि वातरोगमें उत्तम गुणकारी है और बाजीकर तथा रसायन गुण देनेवाला है । दृश्य, वृद्धन और पेष्टिक है ।

वात विह्वल रस—पारद, गंधक रसहिंदू, ताम्रभस्म अभ्रकभस्म, लोहभस्म शतभस्म, एलायची, वज्र, हरद बेडा, आवला, अजवायन, सेठ, पीपल, कालीमिरच, सिधानोन गुगल शुष्ककृष्ण कृच्छनागकाळो शुष्क हिंग लोबान, लौह तज जावत्रि जीरा, सबको समान भाग कूटकर मिलाकर एरंडोहा तैलका करमा देकर कुसरपाठा का रसकी भावना देकर घोट कर रखना । मात्रा २ से ४ रती घी या शहद से लेना । सब प्रकारका वातरोग शूल कफ रोग संप्रदणी, सूतिका वात साधवात, पक्षघात, आदिमें गुणकारी है ।

महारास्नादि क्वाथ—रास्ना तो. १०, बमसा, बलामूल, एरंडमूल, देवदार, पचुरा, ज्व, अड़पी, सेठ हरद, चवक, नागरमोथा, पुनर्नवा, गिलोय, वृद्धार (वृद्धार) मंफ, गोक्षुर, असगंध, अतीस अमलतास, शतावरी, छोटो पंपल, अजमोत (इलीम) घी, घनिया, छोटी कटहरी फल, प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर इन्हें — छोड़ना । एक ठोला घूर्णमें ४० तोला पानी छोड़, २० तोला रहनेके पछेकर दो बार पका ।

महानारायण तेल—गोखरु अरणी, अतिबला मूल, नीमकी छाल, बड़वी, पुनर्नवा, प्रसारणी, प्रत्येक तो. ४०, शतावरी तो. २५, कुष्ठ, इलायची, चंदन, मोरवेल, बच, जटामांसी सेबानोन, बलामूल, असगंध राशना, सेफ, वेवदार, दक्षमूल, और तगर प्रायःक अठ आठ तोला । सबको अच्छी तरह कूट कर सबसे चौगुना पानीमें चौबीस, घंटा तक भिगो रखना । पीछे उसमें तिन्का तेल पानीसे आधा ढाल कर पकाना । पानीका अंश जब जब तेल कपड-छान कर लेना । सब प्रकारके वातरोगमें १ से २ तोला खिलाया जाता है और रोग पर मालीस किया जाता है ।

रास्नादि घृत—रास्ना, अरजिके फूल अजमेद, अजवायन, जीरा, कालाजीरा, इलायची, तज, लौंग, सोहागा, गुगल, धनिया, सेठ छोटी पीपल काली मिरच, नागरवेलके पान, और अदरक प्रत्येक तोला १० लेकर सबको कूटकर पानी रतल १५ में २४ घंटा भिगो रखना । पीछे उसमें बकरीका दूध रतल १० और गायका या कटनीका घी रतल २० ढालकर पकाना । पानीका अंश जब जब कपडछान कर इसमें कपूर तो. ५ मिलना । यह घृत वातरोगमें १ से २ तोला खिलाया जाता है । और दर्द पर मालीस किया जाता है ।

संधिवातहर मिथुन—वातराक्षस तो. १, महायोगराज गुग्गुल तो. १, सर्वेश्वर पपंटी तो. १, वात चितामणि बृहत् तो. ०॥, योगराज रसायन तो. १, सब साथ मिलाकर ६४ पुद्दी बनाना । प्रातः और शामको एक एक पुद्दी घृत या दहीसे लेना । और महानारायण तेल मालीस करना । सब प्रकारके वातरोग, बुद्धि, संधिवा, पक्षघान, कफवात, सूतिका वात आदिमें गुणकारी है ।

वातहर चुया—गुगल तो. ५, रुमी मस्तकी तो. ५, हीराबोल तो. २०, बामची तो. २०, मालकागजी तो. २० सब साथ कूट कर पाताल्यंत्रसे पकनेसे अच्छा तेल निकलेण । उसको २-४ बुंद नागरवेल के पानमें ढालकर दिनमें दो तीन दफे खिलानेसे सब प्रकारके वातरोगमें फायदा होता है ।

नजला-अर्दित वात

कारण—ठंडी लगनेसे, ठंडा पवन लगनेसे, कान और नाकक दरदसे, कानकी ग्रंथीसे, वायुकी प्रकृतिसे, इस प्रकार अनेक कारणोंसे, यह रोग होता है ।

चिह्न—मुखका एक बाजुका चेहरा (face) बंद होकर फिर जाता है । मुखद्वारका एक ओरका कोना नीचा दिखता है । एक बाजुका गाल ढीला रहता है । होठमेंसे थूंक बिना इच्छा गिरता है । फूँक सीधी मार नहीं सकता । यह रोग भय रूप नहीं है ।

पश्यापश्या और तिष्ठित्वा—उपर वातरोगमें कहा हुआ पश्यापश्या इस रोगमें भी समझना और उसमें लिखी हुई औषधें इस रोगमें भी फायदा करती हैं।

अर्दिताकुश रस—पारद ग घट ताम्रभस्म, रस बि घूर प्रत्येक दश दश तोला, अस्य भ चेषनी दातावरी, छोटी कटहरीके फल, इंध्रापण्डे फल, मोठ पीपल, कालीमिच कचूरा हलदी, पुननवा मूल प्रत्येक तोला पांच पांच सय साथ मिलाकर रास्ना निगुदी और बला पंचांग प्रत्येकके कवाथकी एक एक भवना देकर, सूखा कर घोटकर रखना। अथवा रती रतीकी गोली बनाना। अर्दिताघात, जिह्वास्तभ और दूसरे वातरोगमें अच्छा फायदा करता है।

आफरा—पेटका आफरा—पेट फूलना

पेटमें घास भर जाना, कारण—यह रोग पेटमें, आंतोंमें वायुका प्रकोप होनेसे होता है।

सिद्धयवानी चूर्ण—नयक चढाकर भुना हुआ अजवाइन तो. ८० घाली मिरच, पीपलीमूल, हरद, बहेडा आंवला, छोटी हरद, (विना बीज वाली), प्रत्येक दश दश तोला, लौंग, ईलायची, वायविडंग, सोंठ, जीरा, शहजीरा, तज, लश्चन, चनेका खार, प्रत्येक तोला चार चार, भकलकरा, नवसादर, गुलाबका फुल, सज्जीवर प्रत्येक तोला दो दो, पकायी हुई हिंग, घचुरा, लोबान प्रत्येक तोला एक एक सोहागा तो, ०॥ केशर तो, ०१, पचलवण पाचों मिलकर तो. ५, जवाहार, तो १, कवारपाठाका रस, प्याजका रस, अदरकका रस, सहजनेकी जड़का रस प्रत्येक एक एक तोला, अजवायन के सिवाय सब साथ कुट कर कपडछान कर उसमें अजवाइन विना पीसा—खटा मिला देना। पीछे उसको निम्बूके रसकी पांच भावना देना। माथा पे से तीन माशा पानीके साथ देनेसे पेटके जीवरके आंतोंके रोग, गुल्म, बवासीर, बढी हुई तिल्ली, पेटका वायु, गैस घटना आदि मिटते हैं, भूख लगती है रट्टी साफ होती है, पेटके सब रोगमें अच्छा गुणकारी है।

उरुस्तंभ :

कारण—बहुत खटपटे, रुकावट, बासी, खानपानसे, शरीर लगनेसे, करोड़ रज्जु सूजन देने से, गिर जानेसे, ऊंचे स्थानसे गिरकर पछटाह लकनेसे, बहुत पेशाब करनेसे यह रोग होता है।

चिन्ह—कमरके नीचेका भाग रह जाता है या रूपहीन शून्य हो जाता है। कीसीके कमरसे एक सारा पग और कीसीके दो पगमें होता है। वह पग इधर उधर

फिरा नहीं सकता। धीरे धीरे सारा स्पर्श-ज्ञान चला जाता है। अगर बहुत कम होता है। पिशाच लगनेका मान नहीं रहता इस कारण बिछाने में से ही मत्सूत्र करता है। पेट पर ओर कमर पर खींच कर पाटा बधा हो ऐसा भास रोगीको होता है।

पथ्यापथ्य—गिरनेसे या चोट लगनेसे यह रोग हुवा हो तो जलुका लगाकर जमा हुआ रक्त निकालना। आरंभ करना। चलना, फिरना बंद करना। उस भाग पर महानारायण तैल मालीस करना। चपी कराना शोक करना। खट्टा अम्ल, अचार, खाद शक्करका मिष्टान्न बंध करना। साधा स्निग्ध लघु खुराक भूख के अनुसार लेना। दस्त पिशाचका खुलावा रखना। उबड़ बाजरी बना मुंग उबड़ की खीबड़ में मिलाया हुआ दूधका खुराक ज्यादा रखना। मसालेमें हल्दी, नमक, अदरक, जीरा, राई, मेथी हिंग, लालभिरव यह देना। शाकमें दूधो सुरण परबल, करेला, बैंगन देना।

उरुस्त भारि रस—रसहिंदूर, पारद-गंधक, अजक महम, वग भद्रम, शक मरूम, प्रत्येक आठ आठ तोला, काली मिरच, पीपलीमूल देवदार रास्ना, अमृगघ, जीलती फल, वलामूल नीमका गोबर, अजमोद, सैवानान, हरद प्रत्येक चार चार तोला, सब साध मिलाकर क्वारपाठाका रस, निगुडि और महाबला के पचांगका क्वाथको एक एक भावना देकर गोला बनाकर उस पर अण्डिके-पान लपेट कर घागा बंधकर रेन्थी दानेकी कोठीमें तीन दिन तक-रसकर, घोटकर रखना। पीछे २ से ४ रती हाइड घृत दूध अथवा पानीसे देना। उपर महारास्नादि एवाथ पिलाना। उरुस्तम और कमरके नीचेका-किष्ठी भी प्रलाका वातरोग मिटता है।

उरुस्त भारि लेप—राफटा वस्मीक-(Ant hill) की मिट्टि रतल-३ दशग लेप रतल १, दोषघ्न लेप रतल १, सङ्गना का मूल-रतल १, सब महीन कर मिकाकर रखना। इसमें से आवश्यकता हो उतना लेप लेकर पानी मिलाकर गरम कर मलहम जितना गाढ़ा रखकर दर्दपर लगाकर उपर रुई दाब कर पाटा बांधना।

महानारायण तैल अथवा विषगर्भ तैल, मरीचादि तैल, सरसोंका तैल, अलसीका, खोपराका, या तिलका तैल मालीस करना।

कंपवात -

कारण और चिह्न—उपर लिखे वातरोगके कारण इस रोगके भी होते हैं। शरीरका कोई एक अंग हाथ पांव मस्तक आदि कांपता रहता है। रोगीका सब शरीर पराधीन हो जाता है। प्रारंभमें कंफ थोड़ा होता है।

हाथ पोंव नाम दे सड़ता है लेकिन रोग बढ़नेमें हाथमें कोई काम नहीं हो सकता । किसीको एक या दोनों हाथोंमें कंप होता है । किसीको घारा हाथ कांपता है । बहुत करके कांढाके नीचे अंगुल तकका भाग ज्यादा कांपता है । इसमें भी स्नानपान और पथ्य वगैरह वातरोगके अनुपार समझना ।

अधघातादि रस—पारद तो १०, गंधक तो १५, ताम्रमस, रास्ना धमासा, कपूरकाचली, मुद्गपणी, प्रश्नीपणी, बिलीमूल देवदार, एरंडीका मूल, वाराही रुद्र, कुष्ठ, इलायची, मुलठी मूल, प्रत्येक तोला १० दो लेकर सब साध कूट कर इसके धमासा, असगंध, शतावरी और पाठा-पाढ, प्रत्येक दश दश तोला लेकर कूटकर कवाथ कर इसको भावना चार देना पछे घोटकर रखना अथवा रती प्रमाण गोली बनाना । मात्रा—२ से ४ गोली पानीके साथ अथवा बकरीके दूधके साथ धन । और महामारायण वगैरह तैल मालिस करना ।

अमरसुंदरी गुटिका—पारद, गंधक, सावरक्षिग रस, एलीयो-एला, अरणिमूल, पृश्नीपणी मूल, घालिपणी मूल, एरंडमूल सोठ, पीपलीमूल, पोपल, चवक, चित्रा, हिंग, वायविडग, गजपीपल, कुटकी, अतीष, अजमोड अहसा मूल, सरसी, बीरा, शाहबीरा, निर्गुडी बीज, इद्रजी, पाठा-पाढ गोखर, भारंगी, बज, अटामांसी, तमालपत्र, देवदार, कुष्ठ, रास्ना, नागरमोष, सैधानेन इलायची, बलाबील रुद्र, गोखर, धनिया, गदेडा भावळा तज, नाला जवाखार, महबलामूल, अतिमला मूल, नगधला मूल, सब द्रव्य सम भागसे लेकर, कूटकर कपडछाम कर, उसमें जल प्रस्तुतोंके बराबर शुद्ध गुगल और गुगलका घृत्न जितना हो उससे चौथा दिवस गायका घी मिलाकर पानीसे तीन तीन रसोकी गोली बनाना । दिनमें दो या तीन दफे २ से ४ गोली पीस कर पानीसे देना । इसके सेवनसे कबा, उदरगत पक्षघत, और दूसरे वातरोग मिटते हैं ।

गठिया वा-गठिया वातरोग

कारण—प्राय जून बगइनेसे यह रोग होता है । कांयोंकी अपेक्षा पुरुषोंको ज्यादा होता है । एका आरामसे, शारीरिक और मानसिक परिश्रम नहीं करनेसे, भोजन पीछे हमेशा दिनमें सोनेकी आदतसे, दाढ़के व्यसनसे, चीकने, मेंढां और नाक धक्काके पदार्थ ज्यादा खानेसे, पेटमें भूख न होने पर भोजन करते रहनेसे, उपद्रव और गमीके रोगसे इस प्रकार अनेक कार्योंसे यह रोग होता है ।

चिह्न—यह रोग एक प्रकारका वातव्याधि है । हाथमें, पांशमें अंगुलियोंमें पथिके रूपसे लगता है । बहुत दाढ़ पीनेवाले और मांस भक्षण करनेवालोंको यह

रोग अधिकतासे होता है। युरोपीयन, पारसी और मुसलमानोंमें यह रोग अधिक देखा जाता है। प्रारम्भमें इस रोगमें अग्निहीन होता है, खुराक पाचन नहीं होता, भूल एकदम कम हो जाती है। पायके अंगूठा अगुलियाँ, पाँवों तलुवा, छाथकी अगुलियाँ, हाथों की एथेटी लाल हो कर सूजन आती है। बुखार चढ़ता है। रक्त बहता होता है। कटे दफार आते हैं। छतीमें जलन होती है। पीछली रातको पीड़ा बढ़ती है। प्रातःकालमें दर्द कुछ कम पाळम पड़ता है। जीभ पर संकेद छारी लगती है। पुराने गटिये वातरोगमें बुखार और सूजन नहीं होता। परन्तु हाथपाँव और अगुलियों पर सुपारी जैसी छेटी बड़ी ग्रथिया निकलती है। संध्या और न्नायु बढ जाते हैं। कभी ग्रथिया पक कर पस निकलता है और चादा पड़ता है। वह बहुत समयके पीछे अच्छा होता है।

पथ्यापथ्य—सुल सादा लुबु खुराक लेना। स्त्रीसंग कम करना। दाह, और मास बंध करना। स्नान पानमें वातव्याधिके अनुसार पथ्यापथ्य सम खाना। हमेशां दस्त साफ आता रहे एसा करना। कपड़ा गरम और मोटा पहिना। शक्कर मिश्री वाली चीजे, बहुत कम खाना। गुडका मिष्टान खाना। दूधका खुराक ज्यादा रखना, मन्थीके उपर ले। तेल लगाकर शोक करना। ठंडे पानीसे दूर रहना।

अग्निवार्तातक रस—पारद, गंधक ताम्रमस्म, केहूमस्म प्रत्येक तोला दश दश, आक्रे दूधमें घोषा हुआ रसकपुर तो. २॥, शिलाजैत तो. ८, शिलारस तो. ४, शेषमुदर, (गघा विरीजा) तो. ३, गुणक तो. ६, समुद्रफल, हरद, काली मिर्च पिपलीमूल लेम। अजवायन, जीरा, कलोजीरा थसगंध, सैधानेन, देवदार, अतीष, शनावरी, प्रत्येक चार चार तोला कुटकी (तिका) तो. ८ नीमके पत्ते पीस कर दूध भावना देना। रत्ती जैसी गोली करण अगर सूका रखना। मात्रा ३ से ६ रत्ती गायक धोसे लेकर उपर गायका या बकरीका दूध पीना। गटिया वा संधिवा पेटके दर्द, उदावर्त, मेस चढना आदि वातव्याधिमें उत्तम गुणकारी है।

जालवा वा—घुंटेनका वातरोग

कारण निम्न—वातप्रकोप से और खुपके बिगडनेसे घुंटेनमें पीड़ाकारी खुगालके मस्तक जैसा कोथ होता है, यह कभी ज्यादा कभी कभी पीड़ा करता है। कोष कठिन होता है फिर भी कभी रक्तका जमाव और वात प्रकोप होनेसे

मृदु भी होता है। इसमें लड़कानारायण तेल महालाक्षादि तेल मालीस करना अडीके पत्तेका पीस गर्म कर पोटीस जैसा बना कर लगाना।

जानुशोथहर लेह—कलोजी जीरा असगंध सेधानेन हलदी मयूरशिखा रास्ता समान भाग ले र गौमुखमे अथवा पानीमे पीस गर्म कर लगाकर उपर एरड का पता लपेट पाटा बांधना उपर सेक करना।

जानुशोथ हर कवाथ—रास्ता कलोजी जीरा, अतीस, नागरमोथ, हरड, पाठा (पाठ) जटामांघ्री समभाग कूटकर २ से ३ तोलाका कवाथ बनाकर पिलाना।

त्रयोदशांग गुग्गुल—धन्तुलकी पत्ती, असगंध हाठवेर (हृषुषा-गु पलाशबी)- गिलोय, गोखर, रास्ता, सारिगा, कचूरा, अजवायन, रीठ प्रत्येक एक एक 'तोला' शतावरी दो तोला, और सबके बराबर शुद्ध गुग्गुल और गायक्री दो तो १० पानीसे मिलाय सब साथ कूटकर पानी सेदो दो रक्तीकी गोली बनाना। मात्रा ४ से ६ गोली पानी या दूधके साथ देना। घुटनका वा, हाथ या पांवका वा, मज्जा, स्नायु और अस्थि का वा, गृध्रसी वा, अच्छा होता है। तेल बगेरह मालिस करना।

जिह्वास्तम्भ— जीभ तुतलाना—अटकना

कारण—वाणीको बहान करनेवाली धिराओ में वायुका प्रकोप होनेसे जीभको अटकाकर मनुष्य बोलनेमें तुतलाता है जब बोलनेमें तकलीफ होती है। कई बार यह रोग बहनेसे वाणीको अटकायतः साथ खानापीना भी रुक जाता है। कई बार मनुष्य बिलकुल बोल नहीं सकता। रोगी सुन सकता है लेकिन वाणी बंध हो जाती है।

अक'पुष्प प्रयोग—शाकके फूलका बीचका भाग रविवारके दिन एक खाना दूसरे दिन दो इस प्रकार चढते चढते तीसरे दिन को तीस फूल खाना और पीछे क्रमसे उतरना। जैसे कि ३१ वे दिन ३० फूल इस प्रकार अंतिम दिनमें एक खाकर बंध करना। इस प्रकार दो या तीन मास प्रयोग करनेसे जीभ छूट जाती है। पथ्यमे खड़ा पदार्थ और नमक बंध करना।

जिह्वास्तम्भहर मिश्रण—वातविष्वस तो १, सुकापिष्टि तो. ०।, खमन' वसतमालती तो. ॥, पुनन'वा गुग्गुल तो २, सर्वेश्वर पप'टी तो ०॥ सब साथ मिलाकर ६० पुदी बनाना। प्रात साय' दो बखत गायके धी के साथ या कन्याण भूत से या दूधके साथ देना।

कटिग्रह-टचकियुं-कमर झकड जाना

कारण—भार वहन करनेमें हटन चलनेके समय पग ऊँचा नीचा खड़ामें पड़ जानेसे हड से ज्यादा काम करनेसे कमर घातका प्रक्षेप होकर झकड जाती है। महानारायण तेल मालिश करके शेक करना। प्रयोदशीग गुण्ड खिलाना प्रसारणी तेल मालिश करना। पिलाना नाकमें डालना।

छोटे प्रयोगः—

१. बलबीज तो. ३, बावची, छोटी शेर १, गुड तो १ घो तो २ सबको मिलाकर रसना। हमेशा १० तोला, खाना। एक मास खानेसे कमरका दर्द मिटे,

२. जुरवाली सेठ तो ०॥ एरंड तेल तो, १ सूखे खीर पकाकर २१ दिन खाना। दुस्तती कमर मिटे

३. कालातिल, इसपध, अजवायन, बलबीज, समभाग, कूट हमेशा तो. ४ खिलाना। कमरका दर्द हटे.

४. खजूर तो ५, सेठ तो २॥, दोनों पीस कर गोली तो. १ की खिलाना। कमरका दर्द मिटे।

५. खजूर तो. १॥, घो तो १॥, तीर बिबस खिलाना। कमरका दर्द मिटे.

मन्यास्तंभ

ग्रीवा-ढोका-झफडाती-मन्यास्तंभ कारण—दिनमें निद्रा करनेसे, कंधे देखनेकी बहुत आदतसे, ग्रीवा टेढ़ी रहनेसे अथवा ऐसे कई कारणोंसे कुपिट घात कफ संयुक्त होकर ग्रीवाके पिछले भागमें होनेवाली १४ शिराओंको झकड देते हैं।

१. दशमूल कवाय पाना। महानारायण तेल मालिश करके उपर तेल लगाये आँक्रे या एरंडाके गरम किने हुये पत्ते बाँध कर शेक करा। कुक्कुट के अडेक रसमें गायका घी और सैबानेन मिलाय मालिश करना।

मन्यास्तंभारि मिश्रण २, महायोगराज गुण्ड तो, ०१, लघुयोगराज गुण्ड तो २, वात राशस तो. ०॥, सर्वेश्वर-पर्पटी तो ०॥ सब साय मिलकर समभाग ६४ पुष्टी बनाके गायके घीमें दो दर्दें अटाना। पथ्यमेखडा पशय नहि लेना।

हनुग्रह

ठोठो (डाढी) झकड़ जाना, नीचे उतरना कारण—जोभमे ओल उतारते समय सूके पदार्थ खाते समय या किसी चीज लगनेसे डाढीमे रहा हुआ वायु विगत डाढीका नीचे उतार देता है। तब या तो मुख खुला हुआ रह जाता है। या बन्द रह जाता है। उसके हनुग्रह कहते हैं।

यदि डाढी खुली रह गई हो तो प्रथम घी या तेलसे मालिश करके चाफ दे कर नमाना-ठीक तरहसे चढा देना। पीपल और अदरक चबा कर गरम पानीसे कुगला करना। लशुनको तेलमे पकाकर मिलाना। ऊपकी वालिका भिषा कर पीस कर उसमे लशुन हिंग नमक अदरक डालकर अदाजा एक एड तोलाकी पढी बनाकर उसको तिलके तेलमे पकाकर खोराकके साथ शर नदत लाना महा-कारायण तेल मालिश करना।

पक्षाघात

कारण—दिमागमे खूब चढ़नेसे, दिमागके ज्ञातंतु कमजोर होनेसे, अप-स्मार, हिस्टीरिया, आंचकौ (आक्षेप), मूयर्विहके रोग आदि के कारण, उद्वेगसे, किसी अकस्मात्से, अत्यंत दुःख और दुःख होने से, अतिविषय सेवनसे, यह रोग होता है।

चिन्ह—घाँड़ या दाढ़िनी बाजुका आधा शरीर अस्तक से लेकर आँख नाक मुख हाथ कमर और पाव तक शरीरके एक भागमे स्पर्शज्ञान कम होते होते बिल्कुल छूटा पड़ जाता है। यह रोग कभी धीरे धीरे हो कर बढ़ता है और कभी एकदम एक साथ आक्रमण करता है। इस रोगके घीमे आक्रमणमे पहिले थोडा थोडा दर्द होता है और पीछे इस ओर के प्रायेक अंगमे स्पर्शज्ञान कम होने लगता है। और नीरोगी आधा अंगकी अपेक्षा आधा दर्दवाला अंग स्पर्शमे ठंडा लगता है। और उस अंगकी स्वाभाविक लज्जताकम होने आधा लगती है। गंगवाला अंगका गाल ढोला लगता है। आँख कूळ तिरछी होती है। मुखका केना नीचा बीखता है। उस भागके मुख के केनेसे थूक और कार गिरती है। उस ओरका होठ खुला रहता है। जीभ कूळ देखे जाती है। उस बाजुकी जीभमे स्वाद कम लगता है। ओखके उतरका ढक्कन-पापचु (Lid) आँखके बराबर ढक्कता नहीं। यह रोगका घुग चिन्ह है। बोलनेमे, हुशियारीमे स्मरण शक्तिमे तफावत हो जाता है, दिमाग पर रोगका प्रभाव हुआ हो तो बोल सकता नहीं और बोवडा बोलता (Indi, Stinct, Speech.) है या बिल्कुल

बोझ नहीं सकता। स्वभाव बीजिका हो जाता है और अंतमें सारा आधा खरीर बूझा होकर रोगी हलन चलन कर नहीं सकता, बिहानावश हो जाता है।

पट्टा पट्ट—बुलक खाया देना। दस्त दो वस्तु तक हो औषधि खा देना। पिशाच का दूधसा होना। रोगके मूल कारणकी जांच कर इसके अनुसार उपचार करना। वातरोगमें बसाये हुए ठेक सारे शरीरमें घटने का भाव समझीये बचना गरिष्ठ पदार्थ, सटटे पदार्थ खाद शक्करकी मीठाई, अजोर्ण करनेवाला खुराक, सब पदार्थ खाना नहि।

पक्षाघातारि रस—पारद, गंधक, रससिद्धा डोह मस, ताम्रमस, शत्रुक मस, मागमस, प्रत्येक तो. ८, नीमका गोद, बबूलका गोद अथवा कचूरा, सेठ, पोपल, काली मिरच, अकलकरा, गोखर, गिठाय, हिं १२६ रास्ता, देवदार, कौचा, (कियाच), बीलीमूलकी छाल, अरणोके फूल, प्रत्येक तो. ४, गुग्गुल तो. ४०, शिलाजित, तो. १०, सब साथ मिलाकर, सड़बनाकी सौंग बगरपाठा निर्गुंडी, चित्रक, अदरक, और मृगराज, प्रत्येकको एक एक भागना उधर सुखाकर घोट खाना अथवा रसो प्रमाण गेली बनाना। मात्रा २ से ६ गेली पोषकर गायके घी के साथ अथवा उंटनीके घी के साथ देकर उपर दूध अथवा महारास्तादि कवाथ पिलाना। उपर लिखे चिन्हवाले, पक्षाघातमें और म्पणजनके रोगमें और दूसरे वातव्याधिमें दिये औषधे सेवन करनेसे आराम होता है। रोगके अनुसार विशेष समय तक औषध सेवन करना चाहिये।

पक्षाघातारि रस—पारद, गंधक, रससिद्धा शुक्तिमस प्रत्येक तो. ८, सावरवि मस तो. ५, दत्तमूल, निमोष, कियच (कौचा) सेठ, वायविजग, कालीमिरच पोपलनूत, नागरमोष, जटामाषी, देवदार, सपगंधा, वरुण रास्ता पुष्करमूल, विकला, (विकत) की छाल, तज, लौग, यच, अतंस, सैधानोन, कुलिजन प्रत्येक तोला दो दो लेकर महारास्तादि कवाथ की और वायवराकी और मृगरा की एक एक भावना देकर रसो प्रमाण, गेली बनाना। दो से चार गेली दूध वा घी के साथ बना। उपर महारास्तादि कवाथ पिलाना।

बाहुशोष — अपवाहुक

कारण—कंध (Shoulders) में कुपित वायु कांधके बंधनकर स्नायुओंको सूखा देता है यह बाहुशोष है और बाहु (Arm) में रही हुई शिराओंको कुपित वायु संकोच कर देता है जब हाथका पालन हो कर

छोटा-दंका और पतला हो जाता है उसको अपचाक कहते हैं । दोनों के लिये पथ्यापथ्य और चिकित्सा बातोंगमें बताइ हुई काना ।

बाहुषोप हर मिश्रण—सवे'श्व' पप'टी तो ०॥, सुवर्ण' पप'टी तो ०॥, वातगर्जाकुश तो १, बहुत वात-वितामणी तो ०॥, अष्टवर्ग' तो ३ सब साथ मिलाकर घोटकर ६४ पुष्टी बनाना । दिनमें दो बहुत कटकारी अवहेह के साथ देना ।

बाहुषोपहर फवाथ—जटामां'गी, रा'गना, शिवलि'गी, बही कटहरीका फल, छोटी पीपल, मयूरशिखा पपरीमूल अगमध अनीस प्रमेक तोला ८५ दो, कद'ती छुप तो १० अष्टवर्ग' आठ द्रव्य मिलाकर तो १६ सब साथ कूट कर मिलाना । हवेशां १ तोलाका वराथ बना कर पिलाना ।

बाहुषोपहर मिश्रण तैल—महानारायण तैल, महालाक्षादि तैल, भृगराज तैल, महामायादि तैल समान भाग ले कर मिश्र करना । इस तैलसे दिनमें दो या तीन दफे मालीस करना । और १ से २ केटो चम्मच पिलाना ।

शिरोग्रह-मस्तक झकड जाना

कारण—मस्तकको चारण करनेवाली प्रीवामें रहती हुई शिराओंके खुलने घुसा हुआ वायु शिराओंको जड बना देता है । तब वे शिराये सज्जड और रुद्ध बनती हैं । पीटा होती हैं और कभी वे शिरामें फूलकर काला रंगकी दिखायी देती हैं । और धीरे धीरे मस्तकको इधर उधर घुमाना बंध हो जाता है ।

उपचार—महानाराय तैल, पट्टिदु तैल, और अणुतैल की शिरोवस्ति देना, नाकम और कानमें डालना और मालीस करना ।

शिरोग्रह हर मिश्रण—वातविषांस रस तो १, महायोगराज तो १, लघुयोगराज तो २, ताम्र पप'टी तो ०॥, आरोग्यवनी तो १, सब साथ मिलाकर ६४ हो बनाना । एक छूट एक शामको दूध शहद घृत या पानीके साथ देना । और कल्पाण घृत २४ तोला प्रतिदिन खिलाना ।

शिरोग्रह हर मिश्रण—अगमध अनीस कट दशमूल, जटामांसी, मेढाशिगी, वायविडस, चम्पा में कम्पा, नीमकी छाल, देवदार, प्रत्येक दो दो तोला और पुनर्नवा मूला तोला ३०, सब साथ कूट एक तोलाका वराथ पिलाना ।

रसाज्ञान-रक्षाद्वारा रोगज्ञान

कारण—दीर्घकालकी बीमारीके कारण, दुर्लभ सबकी विशेष बीमारीके कारण वक्ष घटे यदि रोगके कारण यह बात जाना है जब मनुष्यको नमकीन धार खटा, पड़ुआ, लुआ, आदि स्वयं प्रभसे नहीं लगता यह भी बात रोगका एक मेह है ।

रसाज्ञानहर घणन—ब्राह्मी, डाकका फल, कलौजी जांग कुटकी, चिरायता, इन्द्राई पपल, पोपरी मूठ, सोठ, कलौमिचै समभाग कूट कर जीभ पर दतौनसे-बच्चुनके लडवा मौनसीरीये अथवा बडवाइके दतौनका समभाग पीछी जैसा बनाकर उससे यह जीभ पर घोलना । कुटू दास चितामणी १ में २ रती कल्याण घृतके साथ खिलाना । सर्वेश्वर पर्पटी २ में ३ रती क्यमनप्रश अथवा अश्वगंधादि अडलेह के साथ देना । निलना तैल या सरसोका या महानारायण तैल मुखमे १० में १५ मिनिट तक रख कर कुगला करना । पुनर्नवा या पंचांग १ तैलाका ववाथ कर पिलाना । महारास्नादि दवाथ पिलाना ।

गुधसी वार (रांझण)

कारण—पहेले कुलामे (Buttock) में पीडा होकर पीछे एम्पर सायल (Thighs) घुटन, पिडी और पांव तक पीडा होती है जतन होता है । अग झकड जाते हैं । यह गुधसी अडेले वायुके प्रक्षेपसे हुई हो तो पीडा और दाह होता है, शरीर बक (वाका) हो जाता है । घुटन, जांघ और सायलके सांधाओं परकठे हैं और झकड जाते हैं । यदि वातकफके प्रक्षेपसे गुधसी हुई हो तो शरीर लज्जनदार भारी लगता है, मूत्र कम होती है । रानि सुस्ती, मुखसे चीन्नी लारका पडना, अघ पर अरुचि आदि चिह्न मालूम होते हैं । इस रोगमे तैलका मालिस करना । महानारायण तैल पिलाना । महारास्नादि दवाथ पिलाना ।

गुधसी वार हर मिश्रण—मुका पिटि तो ०॥, सुवर्ण भरम तो. ०॥, रत्नभागेत्तर रस तो ०॥, चितामणि चतुमुखा तो ०॥, सुधा पर्पटी तो १ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना । एक सुबह एक शामको ब्राह्मीघृत अथवा कल्याण घृतके साथ देना ।

खशि देवता चर्चा—पारद, गंधक लोह भस्म प्रत्येक तो ८, एरडभूल, नीलीमूल, छेटी कदहरीका फल, रास्ना, गुगल, शेषणुदर, राल, अमरतास, गोखरु,

हरद, सेठ, पीरु, काली मिर्च, बलावीन, गिलोय विषायरा, चमूच फल, काबकल, प्रत्येक तो ३, लक्षिका तेल तो. १० का करमा दे कर बबरीका घूष, अरनिका रस और पुनर्नवा के पचाणका बवाथ या रसकी एक एक खावना देकर गोला बनाकर अक्षिका पत्ता लपेट कर घान्यकी कोठीमे तीन दिन तक छोड़ा देना । पीछे निकाल कर पुष्क मूलके बवाथमे घेट कर गोली बना प्रमाण बनाना । ३ से ६ गोली पानी या दूध के साथ देना । वातरोगमे बताये हुए तैलका मालीस करना । गुप्तबी वात, अपशानु, शिरोप्रह, पानदोष, कटिप्रह आदि वातरोगमे गुणकारी है ।

लकवा सुप्तवात

कारण—मनुष्यको त्वचामे स्पर्शका ज्ञान स्वभाविक है वह ज्ञान शरीरके विशेष अंगसे कम हो या बिल्कुल न हो उसको लकवा कहता है अगर वह अंग वातप्रकोपसे रह गया है औषध कहते हैं । जिस अंगका स्पर्श ज्ञान नष्ट हुआ हो उसको रोगी अपनी इच्छामे हलन चलन नहीं करसक्ता । इस रोगमे नस खुलाकर रक्त निकलवाना । तैल मालीस कराना । घूप देना । आक अंडो अइसा, अरजि ईंधके पान पनीमें पोसकर तैल मिला कर लेप कर, उपर स्नेह करना । त्रयोदशीग गुग्गुलु, महायोगराज गुग्गुलु वात विषस, सर्वेश्वर पपटी, सिंहनाद गुग्गुलु पुनर्नवा गुग्गुलु इत्यादि उचित मात्रामे कल्याण घृतके साथ देना ।

सुप्तशतारि तैल—सफेद कनेरका मूत्र, सफेद गुजा, घतुराका पान, प्रवेक दश दश तोला देका पोष कर टिकीया बनाना । पीछे तिलका तैल रतल २ में वह टकिया पूरीकी तरह तलना । टकिया एकदम लाल कड़क हो जाय जब तेला नीचे ऊतारकर स्वांग शीत होने देका । दूसरे दिन कपडछान कर मालिस करनेमे उपयोग करना ।

लशून योग—एक कलीका लशून लेना जिस लशूनकी गांठमें दूसरी कली न हो । ऐसा लशून तो. ५ लेकर मेदा जैसा महीन करना । पीछे गेहूँका आटा तो. २० डाल कर उसमें लशूनका मेदा मिला कर पांच तोला गायका घी मिलाकर उसकी तोला तोलाकी टीकिया करना । पीछे उस टीकियाको पूरीकी नाई धीमे तलना । पक जानेसे वह टीकिया दनके साथ खाना और तलने के पीछे बचा हुआ घी भी खाना । इसके उपर दूसरा कुछ भी खुराक नहीं लेना । पानी गरम कर के पीछे ठंडा बना कर पिलाना । रोगीको बंध बैठरीमे रखना । बिछ नामे सुलाना । उसके

शरीर पर पवन आने न देना । उस के ठरीमें ही दस्त पिशाबकी व्यवस्था करना । इस प्रकार ७ दिन तक इमेशां पांच पांच तोला लघुनकी कच्ची खिलानेसे रक्तवा मिटता है । यदि रोगीको गरमी मात्तम हो तो लघुनकी कच्ची ४ तोला, ३ तो. या २ तोला इमेशां खिलाना और घीका खुराक रखना । यदि लघुनका प्रमाण कम किया हो तो ७ दिनकी अपेक्षा १४ या २१ दिन तक खिलाना । इस प्रकार एक कलौका लघुन ४० से ५० तोला खिलाने से रक्तवाका रोग मिटता है ।

संधिवात

कारण—मंदाग्निवालेको, खाखा करनेकी आदत वालोको, अग्नी प्रकृति निश्च अथवा तो विरक्त हानिकारक गुणधर्म वाले आहार विहार करनेवालेको, स्निग्ध पदार्थ खा कर शरीरिक परिश्रम नहीं करनेवालेको, अधिक खड़े अधिक रुख, पदार्थों और अधिक मिश्राज पर प्रीति वालेको अन्नका अपक्व कच्चा रस चमनी नसोके द्वारा संधिवातका रस उत्पन्न करता है । इससे संधिमे पीडा रह, छातीमें भारीपन, मंदाग्नि सारा बदन झकड़ जाना, आदि चिह्न होते हैं । सुखार आता है, शरीरमें स्पर्शज्ञान रसके भागमें अगर कश्लोको शरीरके दूसरे अंगोंमें कम मल्लम होता है । उपदश, चांदी, गरमीके रोगियोंको भी यह रह होता है ।

पथ्यापथ्य—उष्णहर्मे दो तीन दिन लघन करना । उस जगह पर नीमके पत्ते निगुंडो एरंडके पत्ते पानमें पकड़ कर उसकी भाफ देना । तखे, कड़वे पदार्थ खिलाना । जुलाब देना । बाजरी, चना, जव, पुराना चानल, कुलथी, बटाणा-मटर, उडद मुंग, करेली, कटोली, मेथीदाणा, मेथीकी भाजी, बेगन, परंवळ अ द फायदाकारक हैं ।

सन्धिवातारि रस—पारद तो १०, गंधक तो, २०, शुद्ध बरसनाम तो. ४, सेहागा तो ६ गुड तो ५ काली मिरच तो ३ गुणक तो १२, यादा, जवाखार, विषायश—वृद्धदारक, सेठ गोरखमुषी, रास्ता, कलौजोषीरा, कश्वा-मरुवक, निमोष, तुलसीके बीज, सैधानोन, हलीम (पु. अशेळियानां वी) अश्विवरणा, विफळा, एलिया प्रत्येक तो ३, सब घाथ मिलाकर एरंडतैल तो. १० मिला देना और पोछे बडी हरडके क्वाथकी और अजमोदके क्वाथकी एकएक आवना दे कर सुखाकर घोटकर रखना । मात्रा ३ से ६ रती गायके घी के साथ अथवा कल्याण घृतके साथ देनेसे उदावत वयु (गेस चढना), मदाग्नि, गुग्म, अम्लपित्त, दस्तकी कच्ची और सब प्रकारके संधिवात रोग मिटते हैं ।

रोगका स्वल्प देखकर औषधकी मात्रा न्यून या अधिक करना । शरीर पर महानाग तेल अथवा खोपराका तेल मालीस करना । बच्चेके बाल लम्बामें भी यह फायदा करता है ।

संधिवात हर मिश्रण—स्रवे श्वर पर्पटी तो. १, वातचिंतामणि बृम्ह तो ०॥, महायोगराज गुग्गुलु तो १, कलौजी जीरा तो. ३, अतीस तो १, सब साथ पीस धोत कर ६४ पुढी बनाना । एक सुबह एक शामको धीके साथ अथवा कल्याण घृतके साथ देना ।

संधिवात हर चूर्ण—पुनन'वा मूल तो. तो. १०, कलौजी जीरा ते. ५, हारद, सोढ, काली भिरच, अतीस लताकर जके बीज, शिबलिङ्गी, सेंधानेन, वाय-विडग, आकके सूखे फूल, प्रत्येक तीन तीन तोला सब साथ मिलाकर कूट कपड-छान कर रखना । २ से ४ माशा पानी या बकरीके दूधसे या ऊटनी के दूधसे देना ।

संधिग्रह-संधीका झकडजाना

—पकडा जाना ।

कारण—अति विषय सेवनसे, पटक जानेसे खटटे पदार्थ बहुत खानेसे, उपद्रव के दरदसे यह रोग होता है । सारा शरीर अथवा शरीरका अमुक विशेष अंगके संधा-संधि झकड जाती है । अब मनुष्य मुश्कलीसे चल सकता है । अथवा बिछानावसा हो जाता है ।

संधिग्रहहारि स्त्रोत्र—अमगंध तो. ०॥, सफेद मुशली तो. १, पीपरी मूल तो ०१, सब साथ मिलाकर दूध रतल १॥ में ढालकर पकाना । अच्छी तरह पक जानेसे उसमें घी तो. १॥ और शक्कर तो. २॥ ढालकर मिलाकर खा जाना । १४ दिन तक खिलानेसे संधिग्रह संधि वात, अन्य कई प्रकारके वातरोग में लाभ होता है ।

संधिग्रहहारि तैल—हरी शतावरीका रस तो. ६४ यह न मिले तो शतावरी तो २० को पानीमें पीस कर उसमें गायका अथवा बकरीका दूध तो. ६४ ढालकर सौंफ, देवदार, मरवा, हलौष वच चंदन, तगर, कुष्ठ, इलायचो, मालकांगनी प्रत्येक तो. ०॥, सबको, कूट ढालकर, सब मिलाकर तिलका तेल तो. १२८ ढालकर पकाना । पानीका अर्ध जल जाय तब कपड छान कर रखना । इस तेलका मालीस करनेसे और ४ से ८ माशा दूधके साथ पिलानेसे संधिग्रह, संधिवात,

किसी अंगका बेडौल-विकृत होना, झकड़ाना, स्पर्शका अज्ञान इत्यादि वातरोगमें अच्छा फायदा करता है। बाललम्बा (Polio) वाल बरचोंको घालीसके साथ छोटी एक चम्मच पिलाया जाता है।

उपदंश रोगमें बतायी हुई केशरादि या कस्तूरीदि गोली २ से ४ प्रातः काल धी या दूधके साथ निगल जाना। उपर दूध पीना। नमक, लाल मिर्च खट्टा यदाय २१ दिन तक मन्द करना। सधिमह धीरे धीरे ग्राहि नष्ट होते हैं।

मालङ्गनी का तैल बावचोका तैल नीमके बीजका तैल गहनाशादि तैल, महानाराय तैल सब सणन ले कर मिलाकर घालीस करना और १ से २ छोटी चम्मच दूधके साथ पिलाना। वो सब प्रकारके वातरोग नष्ट होते हैं।

धनुर्वात-धनुर्वा

इस रोगमें सारा शरीर धनुष्यकी तरह अगर कमानकी तरह बाँका हो जाता है। ठही मेंजवाली जमीनपर सोने में, हाथ या पाँव काटनेसे या उसपर घाव लगनेसे, शरीरपर किसी वस्तुका आघात होनेसे, हथेली या पाँवकी एड़ीमें तीक्ष्ण इर्धियार घुस जानेसे, खरबत खट्टी चीजे खाने पीनेसे खींच, तान, कमानकी तरह होती है। ताप-बुन्वार सख्त आनेसे या तापमें सन्निपात हो जानेसे धनुर्वा होता है। कभी हृदयकी ओर अंदरसे कमान जैसी खींच होती है। कभी पीठ-पृष्ठ मार्ग और कमान जैसी खींच जाती है। इस वस्तु निद्राकी दवाइ देना। रोगीको घेनमें रखकर स्नायु क्षीयन करनेकी जरूरत रहती है, अन्यथा रोगी मृत्युवश होरा है। आक्षेपक-आचकीमें स्नायु बार बार कीजाता है और ढीला पड़ता है लेकिन धनुर्वामें वह बहुत करके खींचा हुआ कमानकी तरह बहुत समय तक रहता है। अर्थात् इस रोगमें स्नायु संपूर्ण रूपमें ढँले नहीं पड़ते। और रोगी धनुष-कामठाकी तरह धर या अंदरके मार्गमें खींचा जाता है। जब आचकी आक्षेपमें जबड़ा (Jaws) का स्नायु खींचकर आराम होता है और पीछे गर्दनके स्नायु भी खींचा जाता है जब सारे शरीरमें पानी लगाता है रोगी बेल सखता नहीं। गलेके नीचे पानी भी ऊतरना कठिन होता है। छाती भी खाती है। पेटका स्नायु लकड़ी जैसा कठोर हो जाता है। तृषा बहुत लगती है। दस्त बंध जाता है, अतमें श्वास रुककर रोगी मर जाता है।

पथ्यापथ्य और उपचार—रोगीको सच्छ हवावाले स्थानमें रखना। प्रकाश कम हो, ज्यादा आवाज होने न देना। इच्छे मेरी या महानाराच या

अथचोलाका जुलाब देना । गेहूँ या बाजरीके आटाको गुड डाल कर बनयी राब पिलाना । सुंग या लड्ड खड़ा पकाकर उसके पानीमें अदरकका रस और लज्जुनका डालकर पिलाना । तीव्र मद्य अथवा मृतसजीवनी सुरा अथवा कस्तूरी अंबर देना । मुखसे दवा वगैरह न जा सके तो गुदामें पिचकारी (एनीमा) के द्वारा दवा और दूध आदि दाखना । निद्राकी दवाई देना । त्वचामें मृतसजीवनी सुराका इन्जेक्शन देना । मस्तकके तालुकेके भागमें बाल निकालकर अन्नासे छेका देकर घून निकले जब हिरण्यगर्भ, सन्निपात भैरव, रोमवेध, सूचिकभरण ८ से १० रत्ती देही निकला हो उस जगह घीघना और उस दवाईमेंसे कोई दवाई तुलसीके रसके साथ पिलाना । सूचिकभरण या सन्निपात भैरव आंखोंमें आंजना, नाकमें सुंधाना । महा नारायण तेल या तिलका तेल सारे वदन पर अच्छी तरह मर्दन करना और दो चार तोला महानारायण तेल एक एक घंटाके पीछे पिलाना या पिचकारी से गुदाके द्वारा छड़ाना ।

घनुर्वात दश मिश्रण—सांगघा तो २, अष्टामृत पपंटी तो १, ताम्र भस्म तो ०।, वातचितामणि बृहत् तो. ०।।, चितामणि चतुर्मुख तो. ०।।, सब साथ मिलाकर १४ पुदी बनाना । और पाव पाव घंटाके पीछे एक एक पुदी पुनः वादि क्वाथके साथ देना ।

पुनर्नवादि क्वाथ—पुनर्नवा मूल तो २०. हलदी, अमगध अरणिमूल, गोखसुही पटसाही मयूरशिखा प्रत्येक तोला पांच पांच, लेकर कूटकर रखना और पांच तोला भूक्कामे तीन रतल पानी डाल कर पकाना । आधा रहने पर कपडछान कर पांच पांच घंटाके पीछे दश दश तोला प्रवाही किसी औषधके साथ या अत्रेला पिलाते रहना ।

घनुर्वातांतक रस—शुद्ध गंधक तो. ३, शुद्ध पारद तो ३ देनोकी कज्जली कर उसमें सचल सोन तो ३ डालकर घोटना । पीछे उसमें सोहागा तो. ३ मिलाना । पीछे त्वमे लौंग तो ४, जायफल तो. ५, कालीमिरच्च तो ५, अकलकरा तो १ शुद्ध वल्लभाग तो १ कनकधौष तो १ छोटी पीपल, तो १० सब साथ मिलाकर केरहां-करीरके मूलके रस या क्वाथकी तीन भावना, और अदरक की ७ भावना, और निंबूक रसकी ७ भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना या घोट का भूषा रखना । रोगीकी स्थिति देखकर २ से १५ रती तक किसी क्वाथ अथवा किसी आषव या मद्यके साथ देना । पाव या आधा घंटा पीछे देते रहना । घनुर्वात, आचकी, दांत दोढमे चढ़ जाना, जडवा खस जाना इत्यादि में उत्तम गुण करता है ।

घनुर्वाताद्रि घञ्ज रस—पारद गंधक, सागरशिंग भस्म प्रत्येक तो. ८, चौठ, पीपल, कालीमिर्च, वित्रक हिंग, अजमोद कुटकि, अलीश, मीनवा, सोहागा, शुद्ध बछनाग पुनर्नवा, दलीमूल, प्रत्येक तो. ३, गुग्गुलु तो. १०, सब साथ कूट क्षपट्टान का उश्मे एरंड तैल तो. १० का पट देना । और पीछे असगंधके सवायकी दो और भागराके रस की दो भावना देकर घोंट कर रखना । मात्रा २ से ६ रत्नी । घनुर्वा, आषकी, आक्षेप, संधिवा, सधिप्रह और दूसरे वातरोगमें उत्तम गुणकारी है ।

आक्षेप—आंचकी—ताण—खेंच

कारण खिन्ह—अपधमार, मृगी, हीस्टीरोया, घनुर्वा हडक्वा, (हाइड्रोफो बिया), सुतिका रोग इत्यादिमें तथा कौसी स्थानमें जखम घाव होनेसे, बहुत खून गिरनेसे, मस्तकको खोपरो टूटने से मगजमें रक्तस्राव होनेसे, विष खानेसे, आँतों में कृमि विकार होनेसे, बहुत खट्टी चीज खानेसे, बुखारके जोरसे इत्यादि अनेक कारणोंसे यह रोग होता है । जब सारा शरीर अथवा हाथ पांव जींचता है । मुख और चहोरा लाल होजाता है । दांत जकट जाते हैं । जीभ बहर निकल जाती है । श्वासका रुंधन होता है ।

पथ्यापथ्य—रोगीको सुली हवा वाटे कमरेमें सुलाना । पख से हवा डालना । मुखपर ठंडा पानी छिड़कना । जुलाव देना अथवा गुदाके द्वारा पिचकारीसे जुलाव देना । मस्तक पर ठंडे पानीके पोते रखना । द्राक्षाख व या अन्य मद्य पिलाना । निद्राकी दवाइ देना । तिलका तेल अथवा खोपराका तेल अथवा अथवा महानाराय तेल अथवा कल्याण घृत घारे वदनमें मालीस करना और पिलाना । प्याजका रस और लहसुनका रस दो दो तीन तीन तोला पिलाना ।

आक्षेपहर मिश्रण—प्रवाल पिष्टि तो. २. मुक्तापिष्टि तो. ०॥, सुवर्ण पर्पटी तो. १, सनिपात भैरव तो. ०॥, अम्रक भस्म तो. १. छोटी पीपल तो. २, सब मिलाकर १४ पुष्पी बनाना । और प्रत्येक आधा आधा घटाके पीछे एक एक पुष्पी प्याजके रससे अथवा तुलसीके रससे साहद मिलाकर देना और आक्षेपका समय बटनेसे मात्राका समय भी बढ़ाना । शरीर पर महामारायण तैलमें समान भागमें अलसीका तैल मिलाकर घारे वदनमें मालीस करना ।

वातभोस्कर रस—अम्रक भस्म, सुवर्ण भस्म, अथवा सुवर्ण पाक्षिक भस्म, पारद, गंधक, ताम्र भस्म, रौप्य भस्म, अकीम, सोहागा, सैवानाम, पापड

खार, प्रत्येक तोला २ असगंध, लौंग, तज, सेाठ, कालीमिर्च, पीपल बलाभीज, केसर प्रत्येक तोला तीन तीन, शिलाजित तो ६, गुग्गुल तो ८, सब साथ कूट कपडछान कर, असगंध, निगुंड़ी, बलापंचांग, अरुणि पंचांग और कवारपाठी प्रत्येकका रस या कषायको एक एक भावना देकर सूखाकर घोटकर रखना या रत्ता प्रमाण गोली बनाना । मात्रा ३ से ६ गोली अदरक के रस और तुलसीके रससे देना । अक्षेप, घनुर्वा, स्नायुवात, और दूसरे वातरोगमें उत्तम ग्रण करता है । घनुर्वा आक्षेपमें घोटकर आखमें अंजन करना । पानीमें पीसकर गरमकर ललाटमें लगाना और गोलीके पीसकर नाकमें नस्य देना । अक्षेप-वाण-सुतिकाका आक्षेप, आंघर्क, घनुर्वा, पद्माघात, उस्तभ, मूर्च्छा, रुदावर्त वायु, संधिवा नम्रला हिटीरिया और हांके स्मरोन्माद इत्यादि वातरोगमें उत्तम ग्रणकारी है ।

आमवात

कारण—खानपान, रहन सहनली अव्यवस्था, भूख हर्षशां भद रहनेसे, विक्रमे पदार्थ घेवाल पदार्थ ज्यादा खांनेसे, शारीरिक परिश्रमका काम नहीं करनेसे, वायुने खींचा हुआ आम अफस्थानमें जाकर वह बिना परिपक्व हुये, अक्सं उत्पन्न हुये रस कि, जिसका खून बनना है वह बात पित्तकफसे विकृत होकर अमनियां द्वारा ओतोंक-प्रवाहो को घिगावता है । और रसको वहन करनेव ली-शिरा ओको रोक देता है । वह विविध रंगवाला बहुत चिकना होता है । इस कारण अन्नरसका खून बनता नहीं है । इस कारण भूख कम लगती है और हृदय पर बल होता है । शरीरके अवयवोंमें पीडा होती है । वायु और कफ एक साथ इस रोगमें कुपित होता है । पीठ और संधिमें घुस कर उन्हें जकड जाता है और रक्त करता है ।

चिन्ह—अगमर्द्ध अश्वि, तृषा, जमाइ, सुस्ती, शरीर कुश होते हुवे भी वजनदार लगे, भिन्न अवयवोंमें सूजन, हाथ, पांव, मस्तक पृष्ठ कमर, घुटन, कुला, मायल, संधि आदिमें पीडाकारी सूजन है । जिस भागमें ज्यादा विकार हो वहां ज्यादा पीडा होती है । सूइयां भोकने जेड़ी या बिछु काटने जेड़ी लीडा होती है । उत्प्लेद, वमन, नार पडना, किसी काममें उत्साह न रहना उदासीनता दाह अदि होते है । पिशाच ज्यादा होता है । पेट कठिन रहे, पेटमें दह हो, निद्रा अनिमित तृषा दगे । वमन चक्कर, ग्लानि, हृदय जकडना हृदय पर बोझ, दस्त कम और दस्तके साथ आम और चोकने पदार्थ पडना, अंतोमें पवन भरना, आध्मान, गेस चडना, आदि उपद्रव होता है । पित्तका प्रकोप ज्यादा हो

तो दाढ़ और कसीरमें लालाश दीले, वायु अधिक हो तो ददं और शूल निकले, कफ अधिक हो तो कसीरमें जड़ता खुजली हो और सारे जरीरमें हरबख्त सूजन उत्पन्न होवे और बिटे । यह रोग कष्टवाध्य है ।

पथ्यापथ्य—सहन कर सके इतना हर बख्त उपवास कराना । श्वराक दिनमें एक दफे लेना । दाजरी, चना, मुग, जव उबड़ करेला कटोला, दूधो, चुंगिया वालोल, परबळ आदि शाक, हिंग जीरा, धनिया, लज्जुन अदरक, सेठ कालो मिरच, लाल मिरच आदि हितकारक है ।

रसोान घटक—लज्जुन रतल १० और काला तिल रतल १० दोनोंको साथको अच्छी छछिमे पीसना । पीछे उसमें सेठ, पीपल, धनिया, धक्क, चित्रक गन्धपीपळ, अजमेद, तज इत्यादी, पीपलीमूल, प्रत्येक तो ४, शक्कर तो ३२, कालीमिरच तो ८, फुष्ठ, जोरा और अदरक प्रत्येक तो १६, घो तो ३२, तिलका तेल तो ३२, सफेद सरसों तो १६, राय तो १६, शुद्ध हिंग तो १, पंच लवण तो ५ सबको मिलाकर उसमें शहद तो १६ मिलाकर उसमें खड़ी छछ अथवा सुरक्षा मिलाकर पिंड करके हंडीमें भर हंडीका मुल बंध कर धान्यकी कौड़ीमें १२ दिन तक रखना । पीछे चार से आठ मासाकी बढी बनाना । दिनमें ४ से ८ बढी खिजना । भूज लगे जल भोजन करना । इसके सेवनसे ८० प्रकारके वातरोग, बवासीर, गुल्म, आमवात, फुष्ठ, सूजन, योनिमूल मिटता है । इसी द्रव्य गई हो वह जुड़ जाती है । शक्ति आती है । आमवातका यह उत्तम औषध है ।

आमवातारि—पाद गंधक हरद चित्रक गुणळ प्रत्येक दश दश तोला लेकर कूटकर कपडछान कर एरंड तेल तोला १० की भावना देना पीछे उसमें लेह अन्नक शंख कौड़ी प्रत्येकको मास दश दश तोला और शुद्ध किया हुआ अफीम तो १० साथ मिलाकर भांगके क्वाथकी अथवा पोस्तके डोडा के क्वाथकी भावना लेकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना । सुबह और शाम दोनों समय ३ से ६ गोली पानीसे लेना आमवात और इसके सब उपद्रव अच्छे होते हैं ।

आमवातेश्वर—पारद तो १, गंधक तो २, ताम्र भरम तो २, लोहमरु तो १ अन्नक मरु तो १, सोहाण तो १०, बाडलवण, कालीमिर्च, इमलीका क्षार प्रत्येक तो ५, सेठ, पीपल हरद, बहिडा, आवळा, लोण, तज पीपलीमूल, अजमेद, जोरा, शहजोरा दतीमूल, प्रत्येक तो १ सब साथ घोट कपडछान कर अपलतासकी छालके क्वाथकी और पंचकालके क्वाथकी और गिलोयके क्वाथकी एक एक भावना देकर सूखाकर घोटकर रखना । मात्रा ४ से ८ रतों पानीके साथ देना । आमवातका रोग मिटता है ।

आरोग्य वर्धनी गुटिका—(रसरत्न समुच्चय) पारद, गंधक, केहू-
जस्म, अश्रु मम्म, ताम्रमम्म प्रत्येक तोला १, त्रिफला तीनों मीलाकर तो. १०,
शिलाजित तो. १५, शुद्ध गुण्ड तो २०, अने चित्रकमूल तो २०, और
कुटकी (तिक्त) तो. ७० सब साथ मिलाकर कपडछान कर नीमके पत्तोंके महीन-
पीस कर उसमें पानी मिलाकर कपडछान किया हुआ रस निकाल कर दो दिन-
तक भावना देना पीछे ६ से ८ रतीकी गोली बनाना । यह गोली
आमवाके लिये उत्तम गुणकारी है । इसका घोंट कर चूर्ण भी रखा जाता है ।
यह धामयात मेदवृद्धि, मंदाग्नि, ज्वर, संधिवात, सर्वप्रकारके कुष्ठ रोग-
जलोदर, तिर्यगी लीवर, यकृत रोग, दस्तकी कञ्जी, मलावरोध आदिमें उत्तम
गुणकारी है । खुराकको दीपन पाचन करती है और तीव्र भूख लगती है ।
वात पित्त और कफ दोषसे उत्पन्न हुये विविध प्रकारके ज्वरको नष्ट करती है ।
इसकी पूर्ण मात्रा १ दिनकी १ तोला तककी है ।

इस गोलीके बारेमें स्पष्टता

रसरत्नसमुच्चय कुष्ठाधिकार अ. २० का पाठ इस प्रकार है ।

रस गंधक लोहाभ्र शुक्ल भस्म समांशकम् ।

त्रिफला द्विगुणा योज्या त्रिगुणं तु शिलाजतु ॥१॥

चतुर्गुणं पुरं शुद्ध चित्रमूलं च तत्सम ।

तिक्ता सवलमा ज्ञेया सर्वं सचूर्ण्य यत्नतः ॥

निषवृक्ष दलांभोभिर्मेदयेद् द्विदिमावधि ॥२॥

ततश्च घटिका. कार्याः राजकोट फलोपमाः ।

मण्डल सेविता सेवा इन्ति कुष्ठान्यक्षेपतः ॥३॥

वात पित्त कफोद्भूतान् रोगान्नाशनाप्रकारजान् ।

पाचयती दीपयती पथ्या हृद्या मेधाविनाशनी ॥४॥

मलशुद्धिकरी नित्यं दुर्घर्षश्रुत्प्रवर्तिनी ॥

बहुमात्र किमुक्तेन सर्वरोगेषु शस्यते ॥५॥

आरोग्य वर्धनी नाम्नी गुटिकेय प्रकीर्तिता ।

सर्वरोगप्रशमनी सिद्धनागार्जुनादिता ॥६॥

इस गोलीका सच्चा शास्त्रोक्त और ग्रन्थकारके हार्दका पाठ उपर लिखा
हुवा हो है ।

यह गौली राजकौलफल अर्थात् रक्षा अजमेरी दोर के बजनकी मापकी लिखा है इसका अर्थ १ तोलाका है अर्थात् एक दिनमें १ तोला तककी मात्रा देने का अधिकार लिखता है। तब उपर लिखे पाठके अनुसार बनाइ जाय सब हा एक दिनमें १ तोला मात्रा दी जा सको है। और इस मात्रासे रस गंधक, लोह, अभ्रक, ताम्र प्रत्येक भावी रत्नसे कम प्रमाणमें पेटमें जाता है। इस औषधमें मुख्य गुण त्रिफला शिलाजित गुग्गुलु चित्रकमूल और कुटकी इनका योग दी करता है। और इन औषधोंका रस गंधक लोह अभ्रक और ताम्र योगवाही स्वरूपमें औषधका परिणाम देने वाले है। इन सब कारणोंसे यह सिद्ध होता है कि इस औषधमें रस गंधक लोह अभ्रक और ताम्र पांच द्रव्योंसे त्रिगुण त्रिफला लेना चाहिये। अर्थात् पांच द्रव्य एक एक तोला होनेसे त्रिफला १० तोला, लोह चाहिये और इस प्रकार रस आदि पांचों द्रव्योंसे त्रिगुण अर्थात् १५ तोला शिलाजीत, और, पांचोद्रव्योंसे चतुर्गुण अर्थात् २० तोला शुद्ध गुग्गुलु और पांचों द्रव्योंसे चतुर्गुण अर्थात् २० तोला चित्रक मूल और सबके समान अर्थात् बारह द्रव्योंके समान ७० तोला तिका लेना चाहिये। इस प्रकार ही यह औषध बनाना उपयोगमें लेना उचित और लाभ समत है।

कई वैद्य महाशय इस औषधके पाठका अर्थ नीचे लिखे अनुसार करते हैं। और कामकी बातों के पास इस प्रकारकी आरोग्यवर्धनीकी मांग रहनेसे इस नीचे लिखे पाठ के अनुसार कामकीवाले भी बनते हैं। इस गौलीका नं० १ देकर वे महाशय इस पाठका रसरत्न समुच्चयका बताते है यह उचित नहि है। यह नं० १ का पाठ रस रत्न समुच्चयका नही कहना चाहिये क्योंकि प्रधिकारने यह पाठ स्वीकृत नहि किया है। आरोग्यवर्धनीका मूलपाठ रसरत्न समुच्चय के सिवाय अन्य प्रथमे न होनेसे इस नं० १ का भी रसरत्न समुच्चय का हि पाठ बता कर कामकीकार भी इसी प्रथका पाठ छापते है।

आरोग्यवर्धनी नं० १—पारद गंधक लोह अभ्रक और ताम्र प्रत्येक भस्म एक एक तोला, त्रिफला २ तोला, शिलाजित ३. तोला गुग्गुलु ४ तोला, चित्रक-मूल ४ तोला, सबके समान अर्थात् १८ तोला तिका सब साथ मिलाकर कपडछान कर दो दिन तक नीमके पत्ते के रसकी भावना देना। इसकी मात्रा ३ से ६ रत्ती जयवा २ से ४ गौली तककी है।

नोट—प्रधिकार जब एक दिनकी मात्रा १ तोला बनाता है तब इसकी १ तोला मात्रा दी जाय तो रस गंधक लोह अभ्रक और ताम्र प्रत्येक द्रव्यकी

एक दिनकी मात्रा ५ से ६ रती आ जाती है । ताम्र भस्म जिशी कज्जु १ दिनमें ५ से ६ रती पेटमें डालना और पाँचों की मिल २९ रती मात्रा १० दिनमें दे देना यह अत्यंत शान्तिकारी है । इस प्रकारका विचार करते हुये हम समझ सकते हैं प्रथकारने इस गोलकी मात्रा राजकोलफल अर्थात् १ तोला बताई है तब यह पाठ ग्रन्थकारके समत नहीं हैं यह स्वभाविक बात ही है । फिर भी न १ को गोली बनाकर कम मात्रामे देनेका प्रचार हुआ है इस लिये फार्मसी वाले भी न १ गोली बनाते हैं । लेकिन ग्रन्थकारने जो गुणवर्णन किया है और इस औषधके गुण बताये हुये विविध रोगका नाश करने वाली इसे सिद्ध औषधी बताई है ये गुण उपर लिखे प्रथकार समत १४० तोला वाले पाठसे ही होते हैं पाठमे लिखे गुण १४० तोला वजन के पाठसे बताई हुयी में मिलता है और अनुभवमे भी यही गोली गुणकारी प्रतीत हुयी हैं ।

तिकूनादि कवाथ—कूटकी, पुनर्नवा इन्द्रजो अतीस, गिलेय चित्रक समभाग कूट कर रखना । हमेशा आधा से एक तोलाका कवाथ बनाकर पिलाना ।

सुस्तादि कवाथ—नागरमेथ सेठ अतीस हरड, देवदार, अटमाषी, मजीठ पुनर्नवा गोरखमुडी सब समभाग लेकर कूट कर रखना । आधासे एक तोलाका कवाथ क १ महिना तक पिलाना ।

आमवातहर मिश्रण—आत चिंतामणि बृहत् तो. ०॥, ठोह पर्वटी तो १, मुक्तापिष्टि तो ०॥, अन्नक भस्म तो १, अमवातेश्वर तो. १ चद्रप्रमा तो. २ शिलाजित तो १, पुनर्नवा मूल तो. २, सब साथ मिलाकर घोटकर ६४ पुडो बनाना । दो समय शहद या घृतके साथ देना ।

महारास्नादि कवाथ—रास्ना तो १०, एरडमूल, अड़धी धमरघा, कचूरा देवदार वलामूल नागरमेथ, सेठ, अतीस हरड गोखरु अमलतास, सौफ, धनिया, पुनर्नवा मूल, सातावरी अहालीम, चक्र छोटी कटहरी मूल प्रत्येक पाँच पाँच तोला सब कूट कर रखना । एक तोलाका कवाथ कर एक मास तक पिलाना ।



अपस्मार—वाई मिरगी

कारण—दाह जैसी केफी चीजोंकी आदतसे, अतिविषयसे, हस्तदोषकी कुट्टेपसे, दिमागके रोगसे, कृमि रोगसे, गर्भाशयके दृढ़से और वातरोग, अक्षेप, अनुर्वा सन्निपात आदि रोगोंमें ताण-खींचका उपग्रह हो जाने से यह रोग होता है।

चिह्न—हृदय कांपता है, हृदय और दिमाग छन्न्य जैसा लगता है, स्मरणशक्ति कम हो जाती है, रोगी धरते फिरते चिल्ला कर गिर जाता है। आंख छोटनेसे काला डोला उपर चढ़ जाता है और सफेद डोला दीखता है। जीभ दांतोंमें भीस जाती है। मुखमें फेन आता है। गरदन फिर जाती है। खींच जैसे जैसे पड़ती है तब शिबल काली पड़ती है। थोड़ी मिनटके बाद ताण खींच बंद होता है जब दरदी से जाता है। इस प्रकार प्रारंभमें ६-८ महीनाके बाद एकदके आती है और पीछे समय गुजरते गुजरते फीट आनेकी मुदत कम होती जाती है। पीछे कम होते होते एक दिनमें दो तीन बार फीट आ जाती है।

वात प्रधान होनेसे शरीर कांपता है, दांत भीसता है, मुखमेंसे फेन निकलता है, श्वास बढ़ता है, लार निकलती है, अंधारा लगता है। पित्तप्रधान होनेसे आंख, मुख और फेन पीले होते हैं तथा बहुत लगती है। चारों ओर झलता हुवा दीखता है। कफप्रधान होनेसे आंख और फेन सफेद होता है, शरीर ठंडा पड़ता है और फीटकी खींचतान ज्यादा समय तक रहती है। कई रोगीका विविध प्रकारकी चीस चिल्लाना निकलता है। सारे शरीरके रंगधुमे खींच होतं है। दांतकी बत्तीसी बघ हो जाती है। श्वासका रुधन होता है। किछीके पित्ताब दस्त और वीर्यस्राव हो जाता है। हृदय फूलता है, पेटमें वायु जैलता है।

पथ्यापथ्य—इस रोगीको कहीं अकेला जाने नहीं देना। फीट आनेका समय हो जब सावधानीसे रखना। फीट आवे जब उसके हाथ पांवको इजा न हो इसकी संभाल रखना, छाती खुली रखना, पखा डालना। जीभकी रक्षाके लिये मुखमें पोची लकड़ी रखना। द्राक्षासव पिलाना। अजन-नस्यका उपयोग करना। आहार विहारमें संभाल रखना। सादा लघु पाचन हो जाय ऐसा खुराक देना। अजीर्ण बरजी न हो इस प्रकार खुराक लेना। चीकना और चाँद कवकरका मिष्ठान्न कम खिलाना। दस्त और पित्ताब हमेशा साफ हो औसी बचाई देना। ओरतेकी फीट आते हो तो उनके ऋतु-मासिक घर्म नियमित आना।

चाहिये । चिना कोब भय, शोच न होने देना । किसीको पानी या अम्रिके पास जानेसे या देखनेसे फीट आ जाता है । हरा शाक बकाला कम खिलाना ।

अपस्मारनाशक रस—पारद, गंधक, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, शुद्ध मनशीला, शुद्ध हरताल वच कुष्ठ, हिंग, अजोपाद, सेठ, पीपल, कार्ली मिर्च, रुद्रक्ष, संधानेय, चोरके पिच्छकी राख, लश्नू, ब्राह्मी, सब समान भाग लेकर इसमें मालकांगनीका तेल सबके वजनसे सोलवाश हिस्साकी भावना देकर, अज (बकरा)का पिशाब और मुष्ठा कानी और ब्राह्मी प्रत्येकके रसकी एक एक भावना देकर रती प्रमाण गोली बनाना अगर घोटकर रखना । मात्रा ३ से ६ रसो गायके घीसे या कल्याणघृत से देना एक से दो महिने तक सेवन करनेसे यह रोग भिटता है ।

भूत भैरव लघु—पारद, गंधक, ताम्रभस्म, लोहभस्म, शुद्धहरताल शुद्ध मनशीला अभ्रक भस्म, प्रत्येक दश दश तोला लेकर गौमुखमें घोटकर सुखाकर तैयार रखना, और ७० तोला शुद्ध गंधकको लोहेकी कढ़ाईमें डाल धीमी आंच से पकाना, पिगल जाने पर उपर लिखे सात द्रव्योंका मिश्रण इसमें डाल देना और हिलाकर पर्पटीकी तरह गोमयके उपर बिजाए हुवे बेलीके पत्ते पर डलकर पर्पटीकी तरह तैयार करना । बार घंटाके पीछे निकालकर घोटकर रखना । मात्रा ४ से ६ रती कल्याणघृत से अथवा गायका घी अगर दूधके साथ देना ।

भूतभैरव महा—सविंदूर, रोप्यभस्म, सुल्फर माक्षिक, लोहभस्म, अभ्रक भस्म शिला चंद्रोदक शिलजित प्रत्येक तो १० गंधक तो २०, सुवर्ण भस्म तो ५, सबको साथ मिलाकर उसमें, असगंध, पुनर्वाभूत, रुद्रक्ष, जटामांघ्री, कुष्ठ प्रत्येक तो १० कूट कपछान कर सब साथ उपरके मिश्रणके साथ मिला देना । बादमें अरणी, क्षतावरी मयूरशिखा, तुलसी, गोरखमुडी प्रत्येककी एकेक भावना देकर छयामे सुखाकर घोटकर रखना, ३ से १२ रती रोगका स्वरूप देखकर दूध, गायके घी अथवा कल्याण घृत, ब्राह्मी घृत, या उटनीके घृत के साथ देनेसे अपस्मार, उन्माद, हीस्टेरिया आदि रोग भिटते हैं । रोगका स्वरूप और रोगीका शरीर देखकर उचित समय तक औषध सेवन कराना ।

अपस्मारहर मिश्रण—भूतभैरवमहा तै. १, वात चिंतामणि बृहत् तो. ०। सर्वेश्वर पर्पटी तो ०।।, सुवर्ण वषटं मालती तो ०।।, सुवर्ण भस्म रक्त तो. ०।, रत्न भागोत्तर रस तो. ०।। सब साथ मिलाकर ६४ पुटी बनाना । दो वरुत च्यवनप्राश, अश्वगंधादि अवलेह आदि के साथ देना । रोगीकी अवस्थाके अनुसार न्यूनाधिक समय तक सेवन कराना ।

अपस्मारहर चूर्ण—सोठ, पीपल, कालीमिर्च, चवक, चित्रक, हरड़, सैधानेन वायविङ्ग अजवायन अजमोद, घनिया, जीरा, लशुन, तज, सरसों, सहजनेका बीज, मालकावनी, गोखरू, बलाशीज, असगंध पीपरीमूत्र, कुटकी, अजीश देवदार, रास्ना, जागरमोष, जटामांसी, पुनर्वासामूल, लौंग सब समभाग लेकर कूटकर रखना । दो से चार माशा पानीके साथ देना । अपस्मार, फीट, ज्वर, क्षय, क्षीणिरिया दाहसे उत्पन्न हुआ भ्रम, चक्कर और मानसिक रोगमें मदात्ययमें उत्तम गुणकारी है ।

बाई-मिरगो-फीटके सामान्य उपचार

अपस्मारहर अञ्जन—मैन्शोल शुद्ध, रसाञ्जन (रसेत), कचूरकी चरक समभाग लेकर सब साथ घोटकर रखना और फीट बाई हो जब अञ्जन करना

प्रयोग—बलामूल, हलदी, दारुहल्ली, बब, सप्तपर्ण, कुटकी, जटामांसी समभाग कूट कर ४ से १ माशा पानीके साथ देना ।

प्र. २—ब्राह्मी, मुसाकानी, मेदी पंढ, पुष्कर मूळ, हल्दी कपूर काचली, निसोय, समभाग कूट २ से ३ माशा पानीके साथ देना ।

प्र. ३—सारिवा, रास्ना, क्षतावरी, असगंध, अजमोद, पुनर्वास, सप्तगंधा समभाग कूटकर रखना । २ से ३ माशा पानीके साथ देना ।

प्र. ४—बब, ब्राह्मी, मुसाकानी, प्रत्येक तो. ५, सोठ, पीपल, कालीमिर्च, हरड़ प्रत्येक तोला २॥ डाइ, लशुन तो. ६, गुण्ड तो. १० सब साथ कूटकर रखना । २ से ४ माशा पानीके साथ देना ॥

प्र. ५ करज बीज, आवली, मालकावनी, बब, तुलसी, अमियाहल्ली, कचूरा क्षतावरी, सिद्धेश्वर (सधेसो), गिरीष (सरसो), हलदी, सरसों, कुष्ठ जटामांसी समभाग कूट कर, रखना । दो से पाँच तोला चूर्णको पानीमें पीस कर गरम कर सारे बदनमें मालीस करना ।

प्र. ६ ब्राह्मीके छायामे सुखाये हुवे पत्ते, बब, बाखाहुली, रुद्रतोक्षुप, बाँकडी, कालीमिर्च रास्ना, सहजनेका बीज, सरसों सब समान भाग लेकर कूट कपडछान कर रखना । दो से चार माशा पानीके साथ देना, नाकमें सुधाना आँखमें अञ्जन करना । श्वासमें इमका धुंवा देना ।

प्र. ७ पुराना कपड़ा एक हाथका लेकर, हाथीके पाँव और हृदयके बीच रखीना होता है उससे भिगेना पीछे छायामे सुखाकर रखना । रोगीको फीट आवे

छल पाँच छ इंचका तम्र कपड़ेका टुटखटा काटकर तीन चर तोला पानीमें भिगोकर, मसल कर उस पानीके छुंद फिट आइ हो उसे नाकमें डालना । जब नाकसे यो जंतु बहार निकल जायगे । और वाइ अपरमार सदाके लिये मिट जायगे ।

प्र ८ चमार दूधली के फल तो. १, काली मिर्च तो. १, साथ मिलाकर घोटकर कपडछान कर रखना । नस्य देना ।

प्र ९—हाथीका मस और काली मिर्च साथ घोटकर गेली बनाकर रखना । पानीमें घोंसकर नाकमें छुंद डालना ।

प्र १०—गधेका अगाड़ीका चार दांत जलाकर उसकी छुंद श्वासमें लेनेसे मृगी फिट वाय मिटती है ।

प्र ११—अरनीके मूल्की छाल, तो. १ बकरीके दूधमें पीसकर पिलाना १५ से १४ दिन तक पिलानेसे रोग मिटता है ।

प्र. १२—अरीठेके फलसे बीज निकाल का रहे हुये छीलके, इगुदीके (इगोरिया) के फल, समुद्रफल, जियापता-पुत्र जीवकके फलकी गौरी सब समान भाग ले कर पानीमें घोटकर रत्ती प्रमाण गेली बनाना । फिट आवे जब पानीमें, पीस कर नाकमें डालना ।

प्र. १३—समुद्र फलके गधेके पिंशाबमें पीसकर प्रातःकालमें छुंद डालना और इसकी छुंद नाकके द्वारा श्वासमें लेना । १४ दिन तक यह प्रयोग करनेसे साइका रोग मिटता है ।

प्र. १४—इन्द्रवाहणी के फलका रस निकालकर पाँच दश छुंद नाकमें डालना और इस फलके अग्निमें डाल इसका धुआ नाकके द्वारा श्वासमें लेना ।



वातरक्त-गलत्कुष्ठ-लेप्रसी

इस रोगको लोकभाषामें रगतपीत भी कहते हैं ।

कारण—दाहका व्यवसन अति खटे पदार्थ खानेकी आदत, जलचर प्राणियोंका मांस खानेका अभ्यास, संयोग विरुद्ध आहार करना, जैसे कि दूध के साथ मछली खानेसे, खून बिगाड़नेवाले पदार्थोंके भक्षण से, मलशुद्धि नहीं होनेसे, ठंडे रातवासी भक्षण खानेसे, हाथी घोड़े पर अधिक सवारी करनेसे शरीरका छोटी हाथ और पाँवमें खींचाकर इकठा होता है, खून वायुके प्रकोपसे बिगड़कर यह दस उत्पन्न होता है । यह दस लागू होनेके पीछे घारे वदनमें फैलता है । गरीब और भीखारी लोग जिसको बिगड़े हुये, सड़े हुये अन्नदान खानेको ज्यादा मिलता है उनको यह रोग ज्यादा होता है । मांसाहारियोंमें यह रोग अधिक देखा जाता है । बिगड़ा हुवा अथवा वासी अथवा अगले दिनके मांसको मिश्र करके मिलाया हुवा मांस कइ बहुत मिलता है ऐसा मांस खानेसे दद होता है । वनस्पति आहार करनेवालोंको यह रोग बहुत कम होता है । यह रोग चेपी अर्थात् संक्रामक है ।

चिह्न—पहिले पसीना ज्यादा होता है अगर पसीना मिलकुल नहीं होता । स्पर्शज्ञान कम होने लगता है । सांधा स्नायु शिथिल होता है । शरीर जड़ जैसा बनता है । सूई चुभती हो औसा दर्द होना है । खुजली आती है । जलन होता है । प्रस्थ गांठें और व्रण उठ आते हैं । सारे वदन पर अथवा विशेष करके कपाल मुख और अगुलियों पर सूजन और चमड़ी पर चमक झगझगाट और कुछ लाली लिये रंगी होती है । हाथपाँवकी अगुलियाँ टेढ़ी होती है । नख खट कर कम होता है और चमड़ीमें चीरा पड़ता है । चमड़ी फटती है, पानी निकलता है मांस निकलता है, मांस गिरता है, ।

वायुप्रधान हो तो शूल निकले, अंगमें कप हो, सूई चुभने जैसी पीड़ा हो, सूजन हो, शरीर रूक्ष और सूखा हो, चमड़ीका रंग कालासा हो, घोर पीसों और धमनी नसे और अगुलियोंके साधामें खींच हो, शरीर झकड़ जाय । ठंडेपदार्थोंमें अप्रीति, ठंडे पदार्थके सेवन और स्पर्शसे कपारी छूटे । स्पर्शज्ञान कम होने लगे ।

पित्तप्रधान हो तो जलन ज्यादा हो, पसीना छूटे, मूँछें तृषा लगे, रोगी पागलसा सीखे, किसी वस्तुका स्पर्श सहन न हो, शरीर लालीलिये हो, सुमन और पाक हो ।

कफप्रधान हो तो शरीर ठंडा हो और शरीरसे पानी निकले । शरीरके वर्णमें घमक हो । खुजली आवे, पीड़ा कम हो ।

गठोया वातरक्त—इसमें हाथ, पांव, घुटन, जांघ, पांवकी अंगुलियां, खोनि आदि शून्य होते हैं । मछलीके भीगलेको तरह चमड़ी परसे पपड़ी निकले, नख काला पड़ जाय, चमड़ी का दिखाव कुरूप हो चमड़ी कुछ लाली लिखे होकर फटे और उसमेंसे पस और खून रात दिन निकलते रहे । अंगुलिओंकी चमड़ी, मांस हड्डी आदिमें सड़ा होकर धीरे धीरे क्षीण हो, मुख, गाल, नाक, छान आदि अवयवोंकी चमड़ी पर घमक-चलकाट लीखे, और पीछे सारे शरीरमें फोले । पहिले चाठा हो उसमेंसे गांठे-ग्रन्थियां निकले । वे ग्रन्थियां बड़ी होकर पक कर उसमेंसे पस निकले । नाककी हड्डी सड़कर नाक चपटा हो बैठ जाय, पगकी अंगुलियां सूज कर उनमेंसे पानी निकले और क्षीण होकर गिर पड़े । हाथ पांव स्पर्शमें ठंडे दोखे, भीतरमें असह्य जलन हो । चमड़ीको स्पर्शका ज्ञान न रहे ।

शून्य वातरक्त—उपर लिखे अनुसार ग्रन्थियां नष्ट होती लेकीन हाथ-पांवकी अंगुलियां और अंगुठे एकदम बहिरे-स्पर्श ज्ञान शून्य हो जाते हैं । और कइ बहुत मछली के भीगडा जैसी पपड़ी निकलती हैं । हाथपांव और शरीरका कइ भाग निकम्मा हो जाता है । जूठा पड़ता जाता है । कइ बहुत शरीर पर फोड़ा निकल फूट कर रुज आनेके पीछे वहां सफेद ढांच पड़ता है । इस भाग को अग्निसे जलाये और घप्पूसे काटे तो भी मालूम नहीं होता ।

पथ्यायथ्य—रोगीका मकान और बिछाना अलग रखना । खाने पीनेका जर्तन कपड़ा अलग रखना । मांसका खुराक बिल्कुल बंध करना । साधा लड्डू और वनस्पतिका ताजा गरमागरम खुराक देना । दारु बंध करना । रक्तशुद्धिका उपचार करना । खुलसी हवा एकांत स्थल, स्वच्छ पानी, नहाने घेनेकी सफाई रखना । दूधका खोराक ज्यादा देना । मांस, मदिरा, सस्ते पदार्थ गरम मसाला, तैल, लालमिर्च, क्षारवाले पदार्थ अचार, अधिक नमकीन पदार्थ बंध करना । प्रसवय से रहना ।

वातरक्तांतक रस—पारद, गंधक, लेहमरस, अभ्रकभस्म, शुद्ध हरताल अथवा हरताल भस्म, शुद्ध यैनशील, शिलाजीत, पुगलं वायविद्धग, हरद, बहिरा। आवलां, सेाठ, पीपल, कालीमिरच, समुद्रकीण पुनर्नवा, देवदार चित्रक, दारु-हृदी सफेद फूलकी अपराजिता (सफेद फूलनी गरण) सब समभाग लेकर कुट

कपडछान कर शिकवा और भांगरे के रसही तीन तीन भावना देकर सुखाकर घोटकर रखना । माषा ६ से ८ रत्ती दिनमें दो या तीन दफे नीमके पचांगके चूर्ण के साथ अथवा नीमकी छालके पानीसे देना । दूधका खुआक रखना ।

कृष्ण माणिक्य रस—स्वणमाक्षिक भस्म तो. १०, गवक तो १०, पारद, तो १०, लोह भस्म, तो २०, शुद्ध हरताल तो १०, लंगली तो २॥ माणिक्य पिष्ट तो. ५ सब साथ मिलाकर लोहेकी बढाईमें ढाल चूल्हे पर मंदाग्निसे पकाना और इसमें महामंजिष्टा दि कवाथ तो. ८० और नीमका पचांग तो. ८० में पानी रत्न १० ढालकर २४ घंटा तक भिगो रखना पीछे उसे कपडछान कर धोडा धोडा पानी बढाईमें ढालते रहना और लोहेके तवेपासे हिलाते रहना । सब पानी जल जाय जब अग्नि बंद करके स्वांशीत होने देना । पीछे बढाईसे निकाल कर घोटकर रखना । मात्रा २ से १० रत्ती तक दिनमें दो या तीन दफे नीमकी छालके पानीके साथ अथवा महामंजिष्टादि कवाथके साथ देना । सब प्रकारके वातरक्त पर अच्छा गुण करता है ।

रक्तवाताशनि रस—पारद, तो १०, गवक तो २०, ताम्रभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, हरताल भस्म प्रत्येक तो ८, हरड, बहिडा आंवला सेंठ, पीपल, कालोमिच अतीस, गिलोय, नागरमेथ, अह्वी. गुगल, चित्रक, दत्तीमूल, वायविडग, निसेथ चिरायता, निम्बवीजकी गंरी, जटामांघी, मयूरशिखा प्रत्येक तो पांच पांच सबको कूट कपडछान कर भांगरका रस, गिलोयका रस, नीमके पत्तेका रस और ढोठा (कपित्थ) के पानका रस प्रत्येककी चार चार भावना देकर सुखाकर खरल कर रख छोडना । मात्रा ३ से २० रत्ती तक रोगका हाल देखकर न्यूनाधिक मात्रा दिनमें दो या तीन दफे देना । उबर नीमके पत्तेका रस पिलाना । छटूटे पदार्थ तेल लाल मिर्च, खांड शक्करकी चीजे नहीं देना । साधा ताजा खुराक देना । वातरक्त, गलक्कुष्ठ, उपदश, खून के बिगाडके रोग मिटते हैं ।

अमृता गुगळ—(भावप्रकाश) गिलोय तो १२ गुगळ तो ६४, हरडेदल तो. ६४ पुननवा तो. ६४ यहैडाणल तो. ६४, अवला तो. ६४, सबसाथ कूटकर कवाथ बनाना । चतुर्थांश रहने पर कवाथको कपडछान कर फिर चूल्हे पर बढाना । धट्ट होने पर नीचे लिखे घटक द्रव्यों कूटकर कपडछान कर ढालना । दत्तीमूल, सेंठ पीपल कालो मिच, वायविडग गिलोय इंड बहिडा आंवला ढालचनी चित्रमूल प्रत्येक दो दो तोला, निसेथ तो. १ इनका चूर्ण बलकर घीमे आयसे पकाना । एक माषा (६ रत्तीकी) की

गेली बनाना । मात्रा ४ से १२ रत्ती तक रे गका स्वरूप और शारीरिक स्थिति देखकर देना । वातरक्त, कुष्ठ, बवाश्चर, मदामि, क्षितरक्त, प्रमेह, आमवात, भगदर, नाडीत्रण, सूजन इतने रोगोको शांत करता है ।

अश्विभ्यां निर्मितश्चायं अमृतारव्यो हि गुग्गुलुः ।

क्षिप्रार गुग्गुलु—(यो. त) शुद्ध गुग्गुलु तो ६४, हल्ड, बहिडा आवळां प्रत्येक तो. ६४, गियोय ते. १२८ सबका क्वाथ कर आधा रहने पर कपडछान कर फिर पकाना । घट्ट होने पर नीचे लिखे द्रव्योंका कपडछान चूण ढालकर पकाना । हरड, बहिडा आवळां प्रत्येक ६-६ तोला, वायविडग २ तोला, पुनर्नवा ६ तोला, विसेच, दतीमूल एक एक तोला गिलोय ४ तोला । घट्ट होने पर ६ रत्तीकी गोली बनाना । मात्रा ३ से १२ गोली पानीमे बना तीनों दोषोंके रोकपसे हुवा, घरे शरीरमे फैला हुवा, खून मांस गिरता हो वैसा गीला स्वथवा सूखा वातरक्त-रगतपित्त, और कुष्ठके सब रोग मिटते हैं । इसके अलावा अल्सर खांसी पुल्ल सूजन, उदररोग पांडु प्रमेह, मदामि आदि मिटते हैं और सतत सेवन करनेमे रसायन गुण करता है ।

अश्विभूय जरादोषं वितश्ति कैशोरक रूपम् ॥

क्षिप्र इरताल भस्म—सेनपत्री इरतालके भैसके मूत्रमे कवारपाढ के रसमे, चूत के पानीमे, गरपुखके क्वाथमे, कुम'डके रसमे और निम्बूके रसमे । इस प्रकार प्रत्येकने अठारह अठारह घटा घोट कर शुद्ध करना । बादमे कुम'ड रस, ढाकड़ा रस बेरके मूलका रस, अदरकका रस गो.जिहवा (मोंपाथरी)का रस, नय छीकनीका रस, सूरजमुखीका रस दुग्धीका (दुधेलोका रस,) भांगराका रस, एरडमूलका रस ब्रह्मदहीका रस, लशुनका रस प्याजका रस, पीलुका रस बाल का रस, खुरासनी धारका दूध आकका दूध प्रत्येकको २१-२१ भावना देकर टीकीया बनाकर घुग्गे सुखाकर एक कपडमिट्टी की हुइ मिट्टीकी इडमे पोपल (अश्वत्थ) की राख आधी इडमे दबाकर भर उपर टिकिया रखकर फिर पोपलकी भस्म-राख ईड की मुख तक भर दबाकर मुद्रपर मुद्रा बेकर ६४ प्रहर तक अखंड अग्नि देना । मद मध्य तीव्र अग्नि क्रमशः देना । आगे धीरेसे टीकिया निकाल कर घोट कर रखवा । शंकरकी महापूजा कर वेव गाय ब्राह्मण वैद्यका पूजन कर भस्म सुरक्षित रखना । मात्रा ०॥ से १ रत्ती साहद घी से देना । अनुपान रोगके अनुसार बनाना । पथ्यमे लशुध, नमक, खट्टा, तीखा चिरचिरा, क्षारवाला पदार्थ और तैल औषध चलता हो जब तक नहीं खाना । उपर जिस जिस द्रव्य के रसका भावना देना लिखा है उनमेसे जिसका रस न निकल सके उसका क्वाथ कर भावना देना ।

२१ दिनमें गलतकुष्ठ वातरक्त. सफेद कुष्ठ छुन के बिगाड़के सब रोग, अपश्मारादि पापजन्य रोग, भगदर, नासुर नाईघ्नण महाघ्नण उपदश फिरंग रोग, स्लीपद, सूजन, सुतिका रोग, खास कास पेनस, बवासीर, मदारिनि संप्रदणो मधुमेह मेदवृद्धि, अर्बुद (केन्सर) कंटमाल और क्षय रोगमें उत्तम गुणकारी है।

सर्प कंचुकी योग—सर्पकी कंचलो पीसकर बारीक बरना १ मास खजुर के बीच में डालकर खिलाना उपर दशबोश खजुर का पेशी खिलाना। २१ से २८ दिन तक खिलानेमें गलतकुष्ठ वातरक्त रगतर्पित, आदि मिटते हैं।

महामंजिष्ठादि कवाथ—(योग-त पृ- १८६,)

मज्जठ नागरमेथ कूडेकी छाल, गिलेय, कुष्ठ, सोठ भारंगी, छोटो कटहरी, मूत्र, बच नीमकछात्र हल्दी, दाहहल्दी, हरद, बहिडा, आंवला, पटोल कुटकी, मोरवेल, विडंग, असन(अंजनवृक्ष), चित्रक, शातावरी, प्राचमाण, पीपल, इंग्रौ, अड़सी, मृगराज, देवदार, पाठा, खरीरछाल, चदम, निसेय, बरुण, चिरायता बावबी, अमलतास, शाछोट, बकाइन नीम, करुण अतीस, वाला, इन्द्रायण मूल, अनन्तमूल सारिवा और पर्पट सब समान भाग लेकर कूटकर रखना। एक से दो तोला. चूर्णका कवाथ बन कर दो समय ३ से ८ रसी पीपल और ८ से १० रसी शुद्ध गुगल डालकर पिलाना। १८ प्रकारके कुष्ठरोग, वातरक्त, अर्दितवात, उपदश, स्लीपद, सुतिका रोग, पक्षघात, मेदवृद्धि, और नेत्ररोगमें उत्तम गुणकारी है।

शरीर पर गायका घी अथवा कल्याण धृत मालीस कराना। फस खोलकर अथवा जलका (litch) अथवा शिगर्दसे खून निकलवाना। इस समय बयु न बड़े यह ध्यान रखना। एरड तैलका अथवा अश्चेलीका जूलाब देना। इस रोगको दो दिनको सोने न देना। मन पर किसी वातका शोक या दुःख होने न देना। परिश्रम नहीं कराना। ब्रह्मचर्य रखना। बहुत तीखा बहुत गरम, चीवना, नम कीन क्षारवाले पदार्थ नहीं बेना। एक सालके पुराने घान्य जौ, गेहूँ, चना, गुंग, मसूर, कुष्ठबी, मेथीदाणा इत्यादि देना।

गलतकुष्ठ हर मलम—नीमके पत्ते तोला ४॥ सोहागा ठो, ०॥, राल तो १, बारीक कर मर्दन कर गायका घी तो. २०, मिलाकर मलम बनाना।

प्रयोग १—नीमके पत्ते महीन पीसकर अंशुलियाँ पर और चाँवाँ पर पोटीस की तरह बाँधना।

प्रयोग २—टीडकी (Locust) चरक तोला १ सुबह तोला १ शामको पानीके साथ देना। १४ से २१ दिनमें गलतकुष्ठ वातरक्त मिटता है।

प्रयोग ३-नीमबीजकी गीरी रतल ५ और शक्कर रतल ५ दोनो कूटकर एक कर मिलाकर मिट्टीकी हड्डीमें भरना, जो हड्डी दूध घी छाछ आदिसे रीढ़ी (Seasoned) हुई हो इसमें भरकर इसके उपर बाली (Bowl) रखकर कपड़मिट्टी करना । मुख बंद कर देना । पीछे उस मटकीके एक कूँडेमें रखना और दूसरा कूँडा उपर ढकना और दोनों कूँडेकी संधिमें मिट्टी लगा देना । पीछे एक कमर गहरा खड्डा जमीनमें करके उसमें वह कूँडाका संयुक्त रख उपर मिट्टी भरना । तीन महीनाके पीछे निकाल छोट कर रखना । हमेशा चर से आठ मासा सुबह शाम सैरन करना यह औषध ८ मासासे प्रारंभ कर प्रत्येक सप्ताह बीत जाने पर बारह बारह महीनाकी मात्रा बढ़ाना । एक दिन की मात्रा ०॥ तोला होनेसे ०॥ तोला सुबह और आधा तोला शामको ४० बीन खिलाना । वातरक्त, रगतपीत, गलत्कुष्ठ, मिटते हैं ।

प्रयोग ४ नदीकी छिप (शुक्ति) कूटकर महिनकर आकके दूधमें पांच पांच तोला कि टीकिया बनाकर पकाना । इस प्रकार आकके दूधमें तीन दफे पकाकर घोट कर रखना । १ मासा मात्रा हमेशा घी या दूधसे देना । उपर मिर्गाइ हुई चनेको दाल दससे पदर तोला तक खिलाना । खुराकमें चनेको रोटी और दूध देना । छे मास तक देनेसे रगतपित्त वातरक्त, गलत्कुष्ठ खूनका बिगाड़ आदि मिटता है ।

प्रयोग ५-नीमक पत्ते अथवा मकाइन नीम (महावि) के पत्ते १० तोला छे महीन पीकर इसमें १ तोला जीराका चूर्ण ढाककर पिलाना । दिनमें प्रातः काल एक बार औषध देना । रोगका समय, शरीरमें रोगका फैलाव आदि देखकर १ से २ महीना तक देनेसे खूनका बिगाड़ मिटता है । खुराकमें चना और दूध देना ।



उपदंश (चांदी, गरमी)

हस्नामिधानाजखद तघाताइबावनाइयुपसेवनाइ ।

येनिप्रदोपाच्च भवति शिष्ने पंचोपदंशा विविधोपचारा ॥१॥

कारण—हस्तशेषकी कुट्टेयसे अंग और दांतका क्षत होनेसे, स्त्रोसंगके पीछे प्रक्षालन न करनेसे, वेदशा स्त्रीके संगसे, अनिद्रियसे स्त्रीके गुह्यभागके रोगसे, अप्रिय, इच्छारहित मुखेन्द्रियके रोग व ली और उपदंशके रोगवाली स्त्रीके सगसे, पशु जातिके सगसे, बीर्य और भूखके वेगके भेकनेसे इत्यादि कारणोंसे इन्द्रिय पर जखम-व्रण हो कर दूषित हुये वात पित्त और कफ इन्द्रिय पर पोथ सृजन करता है । यह रोग स्त्र से पुरुषके और पुरुषसे स्त्रीके लागू होता है ।

चिह्न—इस रोगवाली स्त्रीके या पुरुषके सगके पीछे दो चार दिनमें मुखेन्द्रियमें चर्पण होनेसे अथवा चेष लगनेसे प्रारंभमें फुगिस्यां होती है । पीछे वे फूट कर चांदी पड़ती है । यह चांदी प्रायः इन्द्रियके घुमट के उपर अथवा चमड़ीके उत्तर होती है । प्रारंभमें चांदी दाल के दाना जैसा गोल होता है । पीछे वह फैलता है ।

वातपित्त प्रधान कठिन उपदंश—गरमीवाली स्त्रीके सयोगके पीछे ८ से ४० दिनमें दिखाइ देता है । चमड़ीके पदमे ही व्रण होता है । प्रारंभमें फुन्सी हो कर क्षत पड़ता है । यह रोग जिदगी भरमें एक दफे होता है । प्रारंभमें नीचेके भागमें कठिन होता है और चांदीकी फिरती चार जाड़ी (मोटी) और कठिन होती है । चमड़ी फूल जाती है । चांदीकी किनारी लाल होती है । रस्सी पतली और बहुत कम निकलती है चांदीके आसपासका भाग और नीचेना भाग कुछ कठिन होता है । यह चांदीका रोग ज्यादा समय नहीं रहता और सदा भी नहीं करता ।

कफपित्तप्रधान उपदंश—गरमीवाली स्त्रीके सगके पीछे ८ दिनमें फुन्सी होती है और जहां फुन्सी हो वह भाग सडते सडते चांदी गहरी उतरती जाती है । प्रारंभमें चोरा पड़कर क्षतका रूप पकड़ता है । यह रोग जिदगीमें अनेक समय होता है व भिटता है । तख्तेमें सृष्ट होता है । आजुबाजु के भागकी किनारी अलग दीखती है । किनारी लंबी, सपाटी वैठी हुई और उस सपाटी पर निर्जीव मांसका थर जमता है और उससे गढ़ा पर (पत्र) निकलता है । आसपासका भाग और सपाटीका भाग सृष्ट होता है । इस प्रकारका गरमीका रोग १॥ से २ महिनाके पीछे भिटता है ।

पथ्यावथ्य—ब्रह्मचर्य पालन करना, परस्त्री और श्रेष्ठा संगसे दूर रहना—
सदाचारका पालन करना, प्रत्येक अंग स्वच्छ रखना, पवित्रता और श्रद्धा रखना ।
धुरे मित्र या अस्त्री स्त्रियोश्च सदवास नहीं रखना । शृंगारिक पुस्तके नहीं पढ़ना ।
दिनेमा नाटक नहीं देखना । आगरण नहीं करना । कण्ठा हमेशा बदलना ।
चेपवाले कपड़े साबूनसे या सींठेसे धो डालना । बाजारकी मोठाई लाल मिर्च
गरम मसाला, दूध (मथ) इत्यादि छेड़ना । दूध पिशाबका खुलासा रखना ।
चवल, गेहूँ चना, मूँग, जौ, दूध शक्कर आकमे परवल, कोलाई बूझी, सुरण,
हरी हल्दी, मसालम नमक ज़ोरा हल्दी, मोठा नीप आदि खाना, दूध
घोड़ा खुराक रखना ।

उपद्श हरी चटो—परद गंधक आकके दूधमें शोधा हुआ रसकपूर
अकलकरा केसर वायविडग महेदी लोग सेनामुखी समभाग लेकर घारीक कर
पानीमें पीस रत्तो प्रमाण गोली कराना । १ से २ गोली रातवासी पानी या दूध-
के साथ खड़ी हो निगल जाना । उपर १५ पीना । प्रारम्भमें १ गोली लेना
धीछे प्रतिस्साह एक एक गोली बढ़ाकर हमेशकी ३ गोली होने पर २१ दिन
तक छेते रहना । पहरेजम नमक लाल मिरच तैल, खट्टे पदार्थ खाना नहीं ।
गेहूँकी रोटी गायके दूध के साथ खाना ।

कस्तूरीदि गोली—आकके दूधमें शोधा हुआ रसकपूर लोग चन्दका-
चूरा, कस्तूरी और केसर समभाग लेकर, तांबुलके गानके रसमें मुग जैसी गोली-
बनाना । मात्रा ३ से ४ गोली घी अथवा दूधसे निगल जाना ।

केशरादि गोली—केशर, आकके दूधमें शोधा हुआ रसकपूर लौंग और
श्वद्व समभाग लेकर तांबुलके पत्तेके रसमें मुग जैसी गोली बनाना । २ से ४
गोली घी या दूध के साथ खड़ी ही निगल जाना ।

उपद्श हर मिथुण—सुधा पर्पटी तो १, वंगभस्म तो १, सुवर्ण वक्षत मालती-
तो ०॥, हरताल, भस्म तो, ०॥ किशोर गुणल तो २ आगे, १५ दधनी तो २
सब साथ मिलाकर पीस कर १४ पुटी बनाना । दो वस्तु जहद धून या दूध के-
साथ लेना ।

उपद्श कुठार—आकके दूधमें शोधा हुआ रसकपूर वंगभस्म श्वेत रोप्य भस्म-
श्वेत, माक्षिक भस्म लाल, पारद और गंधक की समभाग की हुई बज्जली लोग-
घफेद चदन, केसर जावंत्री और प्रवाल चद्रपुटी सब समभाग लेकर कूटकर
तांबुलके पत्ते के रसमें रत्नी प्रमाण गोली बनाना । दिनमें दो से तीन गोली पानी-
या दूधके साथ खड़ी ही निगल जाना ।

बिरफोदकारि प्रयोग—शुद्ध पारद ७८ दो आनीमार, शुद्ध हिंगुल ०,५ भार शुद्ध बोदारतिग ०,८, जायनत्री ०,८, बसी मस्तकी ०,८ लेना । प्रारभमें हिंगुल के साथ पाराको घोटकर मिला जाय जब दूसरी वस्तु मिला कर १४ पुडियां बनाना । हमेशा सुबह १ पुडी शुद्धमें मिलाकर गोली बनाकर खा जाना । उपर नागरवेलक्ष पान जाना । ५२ में चावल और गेहूँ की थूनी बिना नमक शक्कर डाली खिलाना । चांदी बिम्फेटक आदि मिटते हैं ।

हिमचन्द्र रस—शुद्ध पारद तो ५ को लोहेकी खरलमें डालकर उसमें पीसी हुई शक्कर तो. १५ डालकर नीमकी लकड़ीके बत्तेसे घोटना । पारा बिलकुल शक्कर के साथ मिलजाय जब अच्छा केवडोया कत्था तो २ मिलाकर दो दिन तक घोटकर बानीसे गोली रत्तो प्रमाण बनाना । हमेशा सुबह और शाम दो दो गोली घी के बीचमें रखकर अथवा शिराके बीचमें रखकर अथवा घी और शक्कर के बीचमें रखकर निगल जाना । दूध भात गेहूँ की रोटी शक्कर धो चावलका खुराक रखना । नमक लाल मिरच तेल खट्टे पदार्थ बंध करना । एक माघ सेवन करानेसे उपद्रवका रोग मिटता है । तृषा लगे जब गर्म पानि पिये । ठंडा पानेका स्पर्श भी नहीं करना । पोंना भी नहीं, मुँहमें शोष या तृषा लगे तो मीठा दाढ़िमका रस या नमका रस पिलाना । शौच जाती बखत गर्म पानी लेना और तुत पोछ डालना । शरीर पर पवन घूंघ या अग्नि लगने न देना दिनको सोना नहीं । रातको जागरण करना नहीं । ब्रह्मचर्य पलना । स्नान करना नहीं एक महीना तक दवाइ लेकर बंध करना और एक महीने के पीछे स्नान करना उपद्रव चांदी गरमी आदि मिटता है ।

उपद्रवशक्कर मलम—पारद, राल, शेषगुदर, खोपरा, काली मिरच, कुपकुम, मेथीदाया, प्रत्येक तो २॥ ढाड़ लेकर गायका घी और १ लेना । पहिले पारा और रालको साथ पीस, मिल जाने पर दूसरी वस्तु अलग अलग पीसी हुयी मिला देना । लोहेकी बडाइमें घीके गरम कर उसमें सब द्रव्य डालकर घीमी आंचमें हिलकर पकाते रहता । ठंडा होने पर घरतनमें भर देना । चांदी गरमी के व्रण पर लगाना । और हमेशा रीठे के पानीसे अथवा पकाया सोहागा मिलाये पानीसे दोकर सुबह शाम दो वख्त लगाना । यह मलहम लगाया जाय जल तक चनेकी रोटी भात दूध वगैरह खुराक देना । नमक, लाल मिरच, खट्टा पदार्थ तेल बंध करना ।

गुजा गर्म तेल—धुषची (गुजाचणोटी) धुषचंके उपरका छलका निकाल पानीमें पीस कर बडी बनाना । तिलका तेल शे. १ में सोला ५ की बडीको तलना ।

चकामा । वही लाल हो जाय जब निकलना । वही फेंक देना और तेलको श्वादी उपदंशके घरेमें लगाना या कपड़े टुकड़े पर छिलक कर बांधना ।

सिंदुरादि मलम—(कपीटो). सिंदुर हीरादखण बोदार सिंग, माजुफल, राल, कपीटो, मनशील रसपस्तकी, कायफल प्रत्येक तो १, मोम तो. ३, सबको बारीक घोट कर गायका घी तो ३० को गरम कर मोम डाल मिलाने पर दूधरी मस महीन पोसी हुयी वस्तुओंको घीमे डाल कर घोटकर मलम बनाना । उपदंश फोड़ा विस्फोटक फिंग रोग इत्यादिमें लगाना ।

तुस्थार्दि घटी—नील घोया तो ५, छोटी हरद (हिमेज) तो १५ दोनोंको बारीक पीस कर निम्बू रसकी दो मात्रा देना । पीछे निम्बू रससे उबद जैषी गोली बनाना । एक गोली मुखमें डल उपर आधा निम्बूके रसमें १० तोला पानी मिलाकर निगल जाना । इस प्रकार आठसे सोलह दिन तक देनेसे विस्फोटक उपदंशादि मिटते हैं ।

तुस्थहरातकी घटी—नीला घोया तो १०, कथ्या तो १०, छोटी हरद (हिमजी) तो. १० झल के बीज तो ११, झीलके पत्ते तो १। सब साथ महीनकर घोट कर निम्बू रसमें १४ दिन तक घोटते रहता । हमेशा ८ से १० घंटा तक घोटना और निम्बू रस बाहते रहना । पीछे उबद जैषी गोली बनाना । एक गोली मखननके साथ खड़ी ही निगल जाना । ५ से २१ दिन तक विस्फोटक उपदंश प्रमेह बवासीर मिटते हैं । पहलेमें तैल, दूध और गुड वध करना ।

विस्फोटक हर प्रयोग—गोरखमुंड़ी तो. १, पारद तो ५ दोनों तीन घंटातक पीस कर पानी मिलाकर दोनों हाथके कांडा तक एकसे दो घंटा तक मालीप्र करना, पीछे दोनों हाथ वगलमे रखकर सेना हरना फिरना, दूध आतका खुराक रखना तीन दिनमें असाध्य विस्फोटक मिटता है ।

विस्फोटांकुश घटी—शखियो शुद्ध तो ०।१, शुद्ध वछनाग १।८ तोला, शुद्ध हिंगुल १।८ तोला, चवुलका गोंद तो ०। सबको कंटा चौलाई (कांटावाले तांजळियों) के रसमें घोटकर चारों जैषी गोली बनाना । हमेशा १ गोली दूधके साथ निगल जाना । उपदंश, वातरोग, कुष्ठ व्रण, खूनका गिराव, इत्यादिमें उत्तम है ।

अश्वगघादि चूर्ण—अश्वगघ, छोटी कटहरी की जड़ चवुलके बीज, सहजनेके बीज प्रत्येक तोला दश दश और काली मिर्च तो २ सब साथ कूटकर रखना । हमेशा १ मासा सुबह गायके घी से खिलाना । विस्फोटक उपदंश मिटता है ।

विस्फोटक हर प्रयोग—हिंगुल तो ०॥२० रूमी मन्तकी ०॥२० अकलकरा तो. ०॥२० सब साथ कूटकर २८ पुढी बनाना । हमेशा १ से २ पुढी सुबह और शाम दो या दूध साथ देना । दूध मात गेहूँ का चुगाक रखना । नमक तेल लाल पिरच सदा पदार्थ नहीं खाना ।

विस्फोटक हर धुणी—हिंगुल, हरताल, इलायची सागरगोशही गोरी (काँकची) प्रत्येक पात्र पात्र तोला कूट महीन का चौद पुढी बनाना । इन्हे १ पुढे निधूम अग्नि पर छिड़क कर मारे बदनमें धुवा लगे इस प्रकार धुणी देना । १४ दिन तक कानसे फिरेग वायु विस्फोटक उपद्रव मिटते हैं । यदि मुख आ जाय तो जीरा तो ०॥ और शक्कर तो, ०॥ कूटकर पानीसे देना और बच्चुलकी छालके पानीका कुगला करना ।

उपद्रव हुक्का—जरदा याने पीनेकी तमाकु तो. ३० लेकर उसमें हिंगुल तोला आधा और गुड तो १० मिलाकर १४ गोली बनाना । पहिले सोनामुखी (मीठीभाव) के फवाथमें गुड मिलाकर जुलाव देना । पीछे उपर लीखी गोली दक्षामें डालकर उसका धुआं ७ दिन तक पीना । ७ दिनमें उपद्रव विस्फोटक मिटे । लाल पिरच सदा पदार्थ तेल नमक नहीं खाना । जरूरत लगे या दूसरा ७ दिन तक इस गोलीका धुआं पिलाना । १४ दिन तक चमेली का दहन (दतधावन) करना और तांबुल (पानकी पट्टी) मुखमें रखना । इससे मुख नहीं आयेगा । और चादी गरमी विस्फोटक मिट जायगा । यदि ७ दिनमें आराम न हो तो दूसरे ७ दिनकी गोलीका हुक्का पिलाना ।

उपद्रव हर हुक्का—हिंगुल, आकके मूलकी छाल, महेदीकी छाल प्रत्येक आधा आधा तोला तमाकु तो १५ गुड तो ५ सब साथ मिलाकर १४ टिक्की बनाना । हमेशा सुबह और शाम १ हुक्कामे, डाल पीना और धुआंको फूँध चाँदी पर लगते जाना इस प्रकार करनेसे अच्छा होता है । यदि इस प्रयोग से या अन्य प्रयोगसे मुख आवे तो चनेल का पान और जुलाबके फूलका उबाल कर कुगला करना ।

आया हुआ मुल्ल अच्छा करनेका प्रयोग—यदि पारद या हिंगुल के श्लेष्मकी दवाईमें मुख आया हो, मुखसे लार या पानी पड़ता हो तो आंवली, बहिडा घमासा प्रत्येक तैला तीन तीन, बच्चुलकी अतर छाल और चमेलीके पात्र प्रत्येक डेढ़ डेढ़ तोला लेकर कूटकर मलमलकी तीन पोटली समभागसे बनावना । पीछे एक पोटली तीन से चार छोटा पानीमें उबाल कर दिन भर उस पानीसे कुगला करना । इस प्रकार तीन दिन तक पोटलीके पानीका कुगला करनेसे

आया हुआ मुख अच्छा होता है । पीछे १२ दिन तक दूध भात खिलाना और नमक, खट्टा पदार्थ, लाल मिर्च तेल १५ दिन तक नहीं देना ।

प्रयोग—१ मनुष्यकी हड्डीको जलाकर इसकी हाथक्षी चारीक पीसकर चांदी विस्फोट पर गवनेसे अच्छा होता है ।

प्रयोग—२—हिगुल सभी मस्तकी नीलाधोधा प्रत्येक पाँच पाँच तोला लेकर चारीक कर उसके मखखन तो. २० में मिलाकर लगानेसे विस्फोटक फोड़ा मिटता है ।

प्रयोग ३—हिगुल तो. १, मोम तो. २॥ हिराकसी (कसीस) तो. ०॥ सल साथ मिलाकर उसमें घी तो. १० डालकर मलय जैसा बनाकर काँसोंके बरतनमें ढाल पानामे ७ दफे घों कर रख छोड़ना । पीछे मलमलके कपड़ेके उपर लपेट कर वह टुट्टा चांदी विस्फोटक आदि पर लगा देना । इस प्रकार ७ या १४ दिन तक लगानेसे आराम होता है ।

प्रयोग ४—अमरवेलको गायके गोबरके रसमें पीस कर लगानेसे चांदी, विस्फोटक, खरजना आदि मिटते हैं ।

प्रयोग ५—नलीकी छीप तोला २ और हींगुल सोला - ॥ मिलाकर १४ पुष्टि या बनाना प्रातः और शामको शरीर पर घुंवा देना फोड़ा मिटता है ।

प्र. ६—शुद्ध पारद टांक २॥, चित्रकमूल टांक १॥ चित्रक पत्ते टांक १॥, कथा टांक ५, तालमग्नाना टांक २॥ लोह टांक ३॥ ईलाईची छिलकासह टांक १॥, इलायची छोटी टांक १॥ ईशपन टांक १ पुराना गुड टांक ६ पहिले पाराके साथ एक के पीछे एक दवा ढाल घोट मिलाना सब दवा मिश्र जाय जब गुड मिलाय के लोहेकी कढाईमें सब ढालकर पानी स्तल २ ढाल पकाना और निमकी लकड़ी से झीलाना घट्ट हो जाय जब गोली ३ रतीकी बनाना । सुबे शाम दो दो गोली दूध से देना २१ से ३० दिनमें उपदश फेड़ा आदि मिटता है ।

प्र.—७ सुशरी माजूफल दाढमकी छाल पोस्त डोढा सब सम भाग मिलाकर हंडी में ढालना कैल्मा जैसा हा जाय जब गायका घी मिलाकर लगाना ।



श्वेतकुष्ठ (सफेद कोढ़)

कारण—यह कुष्ठ पूर्व जन्म के कृत कर्म का फल है और यह पापजन्य रोग कहा जाता है। यह रोग चैपी—संक्रामक नहीं है। क्षय आंखें बठना टपकना कातरक आदि रोग संसर्ग—संक्रामक चैपी हैं। यह रोग देखनेमें खराब होनेसे और तारकालिक औषधका परिणाम न होनेसे रोगी बहुत इलाजिका अनुभव करता है। इस रोगसे शरीरकी बाह्य चमड़ाके रंगमें परिवर्तन होनेके सिवाय और कुछ हानि नहीं है। यह रोग शरीरमें बढ जानेसे सारे शरीरमें फैल जाता है। यह रोगी धूप अग्नि सहन नह कर सकता। दीर्घकाल तक खाने और लगानेका औषध इठनापूर्वक चलाये रखनेसे यह रोग अवश्य मिटता है।

श्वेत कुष्ठहर रस—पारद १० घक हरद बहिडा आवली, मृगराज, बावची, चित्रक भिलावा हरताल भग्म लेह भग्म कांश भग्म, पीपल, नीमो ली को नीरी, अमलतास चक्रवड के बाज, पड पुनर्नवा, कुटकी, गुण्ड शिला जीत, सब समान भाग लेकर नीमके पत्ते के रसके, गावचीके कवाथको, अंजन-विषयकारके छालकी, भांगरेके रसकी एक एक मक्का और श्वेत कुन् की कायल गिरिकर्णी के पचागको दश भावना देकर घोटकर रखना। मात्रा ६ से ८ रती गहद घृत या पानीसे ठे उपर काढे तेल दो तीन तेला चाव कर खाना।

श्वित्रारि रस—बावची तो ८०, लेडर उसमें गौमूत्र डालकर भिगोना और गोमूत्र सूख जाने पर और डालना। २१ दिन तक भिगोकर पीछे उस बावची में लेह मसम तो ८ हरद तो ८ मिलाकर घूपमें सूजाना। पीछे उसमें शुद्ध पारद और गंधकी समभागसे बनाइ हुयी कजली तो ४० डालकर सबको निम्बू रसकी एक, सहजनेके मूलके रसकी एक गंवूल पादके रसकी एक और श्वेत फूलकी अपराजिता के पचागके रसकी १० भावना देकर सूखाकर रखना। मात्रा ६ से १० रती सुबह और शामको पानीके साथ देना। उपर अंजन वृक्ष-विषयकारके छालका कवाथ मिलाना। पथ्यमें खट्टा पदार्थ तेल लाल मिर्च आदि नहीं खाना। इस औषधसे सफेद कुष्ठका जगह फोडा निकले तो श्वेतापराजिता के पचागको पानी में पीसकर लगना।

श्वित्र कालानल तैल—एरंड के बीज तो ८, तुलसी बीज तो ८, चक्रवड बीज तो १०, बावची तो २०, कड़वी नाइ, अंडालक बीज, कुष्ठ, चित्रक, अमलतास, पुनर्नवा चिरौजी कसीस, वायडिग, हरताल अरणाके मूल, बथ्था प्रत्येक तोला ४ लेकर कूटकर इसमें दो रतल गौमूत्र, २ रतल दूध,

२ रतल दही, १ रतल बकरीका मूत्र और ४ रतल सरसोंका तैल सब ढालकर पकाना। पानीका अर्ध जल जानेसे कपडछान करना। श्वेतकुष्ठ पर लगाना।

श्वेतकुष्ठ हर लेप—वावची तो. ६, हरताल केपकी तो. ४, मैनशील तो. ०॥, चित्रकमूल तो. ०॥, सब साथ कूटकर गौमूत्रमें पीस कर रखना और श्वेतकुष्ठ पर लगाना।

श्वेतकुष्ठ हरी सोगठी—दाडिमके फूल तो ३०, वावची तो. ३० सोनागे६, तोला १५ गंधक आमलाधार तो. १५, सब साथ मिलाकर कूटकर घोंट सफेद कोयल अपराजिताके रसकी भावना देकर सोगठी बनाना। श्वेतकुष्ठ पर लगाकर उपर फेलीका पत्ताका पाटा बांधना।

इस सोगठीसे पानीमें पीस कर सफेद चाव पर लगाकर शक्य हो तो फेलीका पत्ता उपर रख कर पाटा बांधना। दिनमें दो दफे लगाना।

गंधक कल्प—शुद्ध गंधक, हरद, बहिडा, आवळी, भांगरा, मिलावा, कडवी तुंबीके बीज, सब समानमाग ले कर कूट कर भांगरेके रसकी और सफेद फूलकी गिरि कर्णिकी एक एक भावना देकर सुखा कर घोंट कर रखना। मात्रा ३ से ६ रती चक्करके साथ देना। रोगीको दिनभर भूखा रखकर रात्रिको भोजन देना। दिनको भूख लगे तो दूध देना। खुराकमें सुरण, दूध वेगन, उबद मुंग, जड़ और चना यह देना। खट्टे पदार्थ और हरा शाक बंध करना।

प्रयोग १—छोटा उदुवर (मोठं बरी)की छाल और बहिडा एक एक शेर लेकर क्वाथ करना। वावचीको इस क्वाथकी भावना देना। धूपमें सुखाना। पीछे पानीमें पीस कर लगाना। इससे यदि फोड़ा उठे तो वह फूट जाने पर चमरगा (आवळ) में पक'या हुआ तैल लगाना।

प्रयोग २—हरताल सोमपत्री तो ५ और वावची तो. २० साथ पीसकर भांगरेके रसकी भावना देकर रखना। पानीके साथ लगाना।

प्रयोग ३—काली तुलसीके पत्ते, कलौजीजोरा सममाग लेकर कूट कर रखना। काले तिलके तैलमें मिलाकर लगाना।

प्रयोग ४—लाल गुजा तो. ५ कथ्या तो ०॥ पानीमें पीस कर लगाना।

प्रयोग ५—सानामुखी (मोठे आवळ) की जड़को निबूके रसमें पीसकर लगाना।

प्रयोग ६—सेनामुखी और चित्रक मूल समभाग लेकर घोंटेके मूत्रामें पीसकर लगाना ।

प्रयोग ७—बावची तो ४, हरताल तो १ दाहिके फूल तो ४, क्लोजी जीरा तो ८ सब साथ मिलाकर गौमूत्रमें टिकिया बनाना । पानीमें पीसकर लगाना ।

प्रयोग ८—काले सापको कांचलो और नीमकी लकड़ो दोनोंको साथ साथ बलाकर रखना । पानीमें पीस लगाना ।

निष्ठा रसायन—तो ८० हल्दीकी खड़ी गांहे, और सेनापत्री हरताल, तो २॥ महीन पीस कर देनेको पथरकी खरलमें ढालना । वह हवे इतना मूलीके पचांगका रस ढालना सब रस सूख जाय जब दूसरा मूली रस ढालना । इस प्रकार ७ भावना देकर छायामे सुखाकर घोंटकर रखना । दिनमें, तीन दफे १० से १२ रती पानी साथ खिलाना ।



कुष्ठ—खूनका विगाड

कारण—अपनी प्रकृति को अनुकूल न होने से तुराक और शत्रु तथा देशवास के विरुद्ध खानपान, बहुत चिन्ते बहुत क्रोध, और अजीण करनेवाले अन्नपान खानेसे, वमनको करनेसे, भोजन करके खुराक भूय लेनेसे अमिश्रित भोजनसे भुगसे आकर नुर्त परिश्रम कर ठंढा पानी पीनेसे, अजीण पर भोजन करनेसे मये घान्प, या दही मच्छी, बहुत खारा, बहुत पटा, पदार्थ सेवन करनेसे, ब्राह्मण पुत्र और देवका अपमान करनेसे इत्यादि अनेक कारणोंसे मातपितृ एक प्रियुक्त होकर रस रक्त मांस, मज्जा आदि मात पितृओं को विगाड कर विविध प्रकारके कुष्ठ के रोग पैदा करते हैं।

चिन्ह—कपालकुष्ठ ओदुवर, मडलकुष्ठ, कलजिह्व पुटरिक, सिमकुष्ठ, काकण कुष्ठ, कीलाश, खैर यह आठ महाकुष्ठ हैं। चर्मकुष्ठ कटिभ वैपाद्रिक, अल्सक दद्रु, चर्मदल, पामा, त्रिफोटक रक्ष्मा दादाह, विचर्चिदा यह छुद्र कुष्ठ है।

पथ्यापथ्य—दस्त, जुलाष, वमन, रुटना नहि। लंघन, करना नहि। चावल, सुग, जांगल मांसरस, परवल, सदजनाका खोंग, कच्चे पदार्थ, गेहू, पुगने घान्प, तुरीकी दाल, शहद, दाक्कर, वेगन, करैला, आदि हितकारक हैं। कसरत, श्रम, थोडना, अजीण करने वाला, गरिष्ठ भोजन, बाजारकी मिठाई लाल मिरच, गरम मसाला, बहुत खारा और खट्टा भचार, अति स्त्रीसंग यह हानिकारक हैं।

कपालकुष्ठ—भाला, लाल मिश्रित रंगका मिट्टीकी हाँडीके टुकड़े जैसे लाली लिये रंगका, सूखा, रक्ष, शूल पीड़ावाला होता है।

ओदुवर कुष्ठ—गूलरके फल जैसा उठा हुआ पीड़ा शूल, जलन लाली लिये और खुजली वाला होता है।

मडल कुष्ठ—सफेद लाल मिश्र रंगका, जमाहुवा, मुठायम मोटा सूजन वाला, चक्काकार और इसके साथ दूसरे भी छोटे छोटे चक्काकार मडल होता है।

सिध्म कुष्ठ—नखस खणनेसे सफेद लाल चूर्ण जैसा पदार्थ गिरे। यह बहुत करके छातीमें होता है। तुंबोई फूलके रंगका होता है।

काकण कुष्ठ—चिरोजी जैसे लाल रंगका, तीव्र पीड़ावाला और बहुत समयके पीछे पकता है। यह त्रिदोष जन्य है।

पुडरीक कण्ठ—सफेद रंगका लाल किनारी वाला, कमलपुष्प जैसा काली लिये कुछ कचा होता है ।

अजजिह्व—लाल कीनारीवाला, खरसट घोंचमे काला पीडावाला, भालुकी जीभ के आकारका होता है ।

पक कण्ठ—पीडा न हो, बहुत जगहमे फंला हुआ मछलीसी चमड़ी जैसा होता है ।

गजचर्म—हाथीकी चमड़ी जैसा खरसट रक्ष होता है । खुजली आती है ।

चमदल—लाली लिये होता है । शूल निकलता है । फोड़े होते हैं और स्पश सहन नहीं होता ।

विचचिका—खुजलीके साथ काटे साववाली फुन्सिया होती हैं ।

घंपादिक—त्वचा और मांसके विगाडकर हाथ और पांवमे जमे हुये दोषसे फुन्सिया उत्पन्न होती है । उसमे खुजली, जलन चमड़ीका फटना इत्यादि होता है । और रक्ष होता है ।

पामा—छोटी घड़ी साव और खुजली वाली फुन्सिया हाथमे होती है ।

कच्छु—पामा पड़कर असह्य जलनके साथ बड़े फोड़े होते हैं ।

वर्धु—काटे लाल मिश्रित रंगके फोड़े होते हैं । अन्न सूखा भी होता है जिसमे पानी नहीं निकलता है ।

विस्फोटक—काटे लाल मिश्रित रंगके फोड़े होते हैं । और उसकी चमड़ी पतली होती है ।

किडिभ—सखे हुये व्रण जथा खरसट काला खुजली वाला होता है ।

बलस—खुजली आती है और लाल लिये छोटी छोटी बहुतसी छेन्सिया होती है ।

शतारु—पोराकारी बहुतसा चाँदावाला होता है । उसमे से लाल साव गिरता है ।

इस प्रकार उपर बताये हुये और दूसरे भी त्वचा विरोग और मन शरीरमे फैले हुये कुष्ठरोग अनेक प्रकारके हैं । नीचे बताये हुये उपचार और औषध बहुत करके सब प्रकारके कुष्ठ रोगमे गुणकारी होते हैं ।

गन्धक, रसायन—भांगरे में शुद्ध किया हुआ गंधक तो २० इलायची सोठ पीपल, काली, मिरच, तज, तमाल भागकेशर, हरब, बहिडा, आंवळा

घंझूर भस्म, कुष्ठ, चेपचीनी, वादची, पारद गंधर्ब कि सप्तभागसे की हुई वज्रकी असगंध, शककर प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर कुट कर भांगरे के रस कि भावना ले हे की बढाईमें रखकर देना । सूख जाने पर घोट कर रखना । मात्रा ३ से १२ गी तक पानी या दुध के साथ देना । सब प्रकार क कुष्ठके रोग मे गुणकारी है ।

कुष्ठकृतान्त रस—पारद तो ८, गंधक तो १६ छोड़ भस्म ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, हरतल शुद्ध रससिद्धर प्रत्येक तो ४, मिल वां हरत, बहडां आण्डा वायविडग, ढाकक बीज नीमालीकि गीरी बडीशदहरी के कल मेट सीर्गी, गुणळ, शिलाजित, बच, हल्दी, अभियाहल्दी, जटामांभी पुननं ब मूल प्रत्येक तोला दो दो लेकर कुट कपट्टान कर उसको छेरकी छाल त्रिफला, गिलेय, पुननंवा, भागरा, प्रत्येककी एक एक भावना देखर घोट कर रखना । मात्रा ४ से १२ गी रोगका स्वरूप देखकर एक या दो दफे पानीसे देना । उपर अम्नादि फांट पिलाना । सफेद कण्ठ, गलत्कुष्ठ रगतपीत आदि खून के बिगाडके रोग, पांडुरोग भगंर, कृमि सृजन आदि रोगोमे भी गुणकारी है ।

असनानि फांट--असन (बियो अजिनियो) कि छाल, दावकी छाल, बदन्ती धुप, मजीठ नीमकि छाल, बन्दुलकि छाल शतावरी सब समान भाग लेकर कुटकर रखना । एक से दो तोला रातको पन्दसे बीस तोला पानी में भिगे रखना । प्रात काल में कपट्टान कर शीशोंमें भर देना । कूचा फेक देना । आधा सुबे आधा शाम पीनेसे खून शुद्ध होता है । और कुष्ठ के किसीमी रस रस रसवन औषध के पीछे अनुपान के रूपमें पिलाया जाता हैं ।

महामंजिष्टादि कषाथ—मजीठ, कुळेकी छाल, गिलेय, नागरमेथ, बच, सीठ, हल्दी, दावहल्दी, छेटी कटारीका मूल नीमकीछाल, पटोल कुटकी चिराबती भारंगो, चिन्नाक, वायविडग, मोरवेल, देवदार, इन्डजव, भागरा, पीपल, प्रायमाण, पाढा, खैरछाल, शतावरी, हरत बहिडां, आबळा बकाइन जैम, अजमछाल अमलतास प्रिबंगु (बडला) बाबकी रक्तचदन वायवरणा इतीमूल वटुबर छाल, अहसी, पर्पट सारिवा, अतिदिष, धमासा, इन्दायण बाला, सब समान भाग लेकर कुटकर रखना । एकसे दो तोलाका कषाथ या फांट बनाकर पिलाना । सब प्रकार के कुष्ठ के रोगमे लाभ करता है कषा । कुष्ठ के औषधो के पीछे अनुपान के रूपमें भी पिलाया जाता है ।

सर्व कुष्ठ हर मिश्रण—आगेय बर्षिनी चूर्ण तो २, अष्टामृत परीटी, खो. १, मंधक रसायन तो, १, सुवर्ण पक्षिक लाल तो, २ किशोर गुण्ड तो, २ सब साथ घोटकर ६४ पुढी बनाना । सुबह और शाम एक एक पुढी पानी, दूध या सहस्रके साथ देना ।

वाल्क्य राक्षस तैल—मैन्थील, हरताल, कसीस, गवक, सैंधानेन, सेठ, चकवड बीज, वायविङ्ग चित्रक दंतीमूल, चकवडके नीमकी छाल प्रत्येक तो १०, आकका दूध तो २०, धुवरका दूध तो २० गौमूत्र रतल पांच, सरसोंका तैल रतल २०, पहिले सब द्रव्य कूटकर बारह घंटा पानी डालकर भिगो रखना । पीछे दूधरे दिन पकाना । पानीका अंश जल जाय जब कपड्डान कर रख लेना । इसका मालीब करनेसे सब प्रकारके त्वचा रोग मिटते हैं ।

कुष्ठहर लेप—बावची तो २०, सेठ, हरताल, हरड, करंजके बीज, सरसों, हलदी, सैंधानेन, वायविङ्ग, चकवड बीज, नीमके बीज बच, माल-कांगनी, पारद, गंधक, सहजनेके बीज प्रत्येक तोला पांच पांच सब कूटकर रखना गौमूत्र अथवा पान के साथ पीसकर सब कुष्ठके रोगपर लगाना ।

प्रयोग १—मनुष्यके हड्डी इमशानसे लाकर पीसकर तैलमें मिलाकर लगानेसे काला छुष्ट मिलता है ।

प्रयोग २—नीमके बीज, याने नीमेलीकी गीरी एकसे प्रारंभ कर हमेशा एक एक नीमेली बढ़ाते हुये एक दिनकी १०० तक खिदना । पीछे १९, १८ इस तरह उतरते उतरते एक गीरी आ जानेसे बच करना । सब प्रकारके कुष्ठ रोगमें बहुत लाभ होता है ।

प्रयोग ३—गद्धके ली डेको जलाकर गायके मूखनमें मिलाकर सब कुष्ठमें लगाना । साबर सिंग ।

४ सेमरका सिंग पानीमें एक तोला तक घोस कर पिलाना एक मास पिलानेसे वातरक्त रगतपीत मिटती है ।

प्रयोग ५—सरपुखाका रस तो. १, उडु बरकी छालका रस तो १, टाकके मूलका रस तो १ साथ मिलाकर देना । एक मास तक पिलानेसे रगतपीत, वातरक्त और कुष्ठ रोग मिटता है ।

प्रयोग ६—उघाफुकी के पचांगेका पीसकर मयखन जैसा चट्ट रखकर कुष्ठपर बांधना । चावी मगमें रक्त आती है और रगतपीत वातरक्तमे कायश होता है ।

प्रयोग ७ — षोषणुदर, मोनामेक गोपीचदन सब समानभाग लेकर पानीमें पीसकर मलम जसा घट बनाकर मालकांगनीके पांच सेर तेलमें पांच सेर गौमूत्रा उपर लिखे तीनों द्रव्य डालकर पकना । पानीका थोड़ा जलजाय तब तेल कपटछान कर रख लेना । यह सब खचा रोगमें लगाये जाते हैं ।

प्रयोग ८ — पारेवा (कचूतर)की विष्टा-चरक पीसकर ४ से ६ रती दिनमें देना वसंत पानासे देना ४९ दिन तक देनेसे कुष्ठका रोग मिटता है । उपर चना, मुग कुलथीकी रोटी खिलाना ।

अमृत भल्लातक (२. घं कुष्टा) भोलावा तोला ६० टुकड़ा कर के घी तोला १२० में पकानेसे भोलावाका सब रस घीमें आ जायगा । पीछे गिलेय हरी रतल ५, मजोठ रतल २ पपट रतल १ का काथ कर कपटछान कर उसमें उपर चनाया हुआ भोलावा का घी, गाय का घूष ६॥ रतल, गुड रतल ३०, शक्कर रतल २॥ मिलाकर पकाना । घट्ट होनेसे नीचे लिखे द्रव्योंका चूर्ण डाल ६ घंटा हिला कर २४ घंटे के पीछे चिनाइ भिटीकी बरणी में भर देना । डालने के द्रव्य-धीली गर्भ अतिविष गिलेय बावली चकवड मोक्ष नोंमोली की गोरी हरद वहेडा आबर्डा मजोठ काली मीरच सेठ पीपल अजवायन सेधानौन नागर मोथ इलायची वच नागकसर पाँट तमालपत्र वाला चदन, गोखरू कचूरा रक्तचंदन प्रत्येक तोला पांच पांच लेकर कूटकर उपर के अवलेह में मिलाने का है । इयेशा १ से २ तोला खाना । सब प्रकार के कुष्ठ खूनका विगड मसा बवावर आदि मिटते हैं । यह अवलेह चलता हो जबतक पहरेज रखना । कसरत नहि करना । सूर्यका घूप या अग्निका ताप नहि लेना । खट्टा पदार्थ अचार मांस दहि नहि खाना । तेल मालीस नहि करना स्निग्ध नहि करना ।

स्वायंभुव गुगल—(स्वयंभु गुगल) भाव म अ.४) बावली तो २०, शिलाजीत तोला २०, गुगल तोला ४०, मादिक भस्म तो, १२, लोह भस्म तोला ४, गोरखमुडी तो ४ हरद बहिटा आवळा करज के पत्ते खरकीछाल गिलेय निसोय दतीमूळ नागरमोथ वायविडग हलदी कुडको छाल नीमकीछाल चित्रक अमलतास प्रत्येक चार चार तोला कूट मिलाय गोळी ६ रत्तीकी करना सुवे सोम गोळी २ पानी साथे देना उपर बन शके तो गौमूत्र ५ तोला सुवे १ वस्तु पाना । कुष्ठ रगतपित्त वातरक्त के श्वित्र कुष्ठ पांडु उदररोग गुल्म आदि मिटते हैं ।



दहु-दादर

कारण—बहुत खटटे बहुत नमकीन बहुत तीखे प्रदार्थ खानेकी आदत से खून बिगाड़ने वाले आहार विहारसे यह रोग होता है। प्रारंभकी दाद लाल होती है उसमेंसे पानी निकलता है वह पुरानो होनेसे काली और सुखी होती है।

दुग्ध मिश्रण—आरोग्य वर्षनी चूर्ण तोला ३, अष्टांश पपटी तोला १ किशोर गुग्गुलु तो. २, गंधक पिष्टो तोला १, लेह रसायन तोला १ सब साथ पीस ६४ पुट्टियां बनाना। २ बहुत पानी या दूधसे देना। दाद पामा खट त्वचा विकार में उत्तम गुणकारी है। अमृता गुग्गुलु २ से ३ गोली पानीसे दो वरत देना।

दुग्ध रसायन—पारद गंधक मद्धा भ म सावरसीग मस्य ताम्र भस्म प्रत्येक एक एक तोला, आरु के दूध में घोधा हुआ रसकपूर तोला ०॥ आधा, हरद बहेडा आंवला म. १३ कचूरा पुननवा अटामाची अतमोद क्लोजीजोरा चोपचीनी अनंतमूल चदन रसोत सफेद हलदी कूटकी प्रत्येक दो दो तोला सब साथ कूट कपडछान करना।

पहिले गंधक में रसकपूर घोंट एक कर देना पीछे उसमें पारा डाल कर घोटना। घटा तक घोटकर पीछे मद्धा सावरसीग ताम्र डालकर घोटना। पीछे १५ दुग्धका चूर्ण डाल करके नीमकी छालके कण्ठको भावना देकर २ रती धीं गोली बनाना। मात्रा २ से ४ गोली पानीसे २ वरत लेना उपर दुध पीना। सादा सब खुराक लेना पहेरजमें जबकि दवा चलती हो लाल मिरच बड़ा पदार्थ बनार किं मीठाई खाद शक्कि चीजे कम खाना।

कुष्ठादि लेप—कुष्ठ, वायविडंग, बावची, चक्रवर्त हलदी, से घानोन सरसो रीठा, पारद, गंधक, सब सम भाग लेना पाटा गंधक की कजली बनाकर पीछे दूसरी वस्तु महीनकर मिलाकर रखना। पानीसे या गोमूत्र से पीसकर लगाना उपर केली के परतेका टुकड़ा ढक कर पाटा बांधना २ वरत रीठे पानीसे या साबुन से साफ करते रहना।

दरदादि लेप—हिंगूल मौनशील गंधक पारद पोपल बछनाग वायवीडंग हलदी कालीमिरच हरद सेठ नागरमेथ समुद्रफेन बावची अमलता न चक्रवर्त पीज सब सम न भाग लेना। पहिले पारद गंधक की कजली बनाकर पीछे उसमें दूसरी महिन की हुई वस्तु मिलाकर गोमूत्रसे अथवा समुद्रके पानीसे घेसकर लगाना।

दुग्ध सेगठी—गंधक वरखीहरताल नीलायोथा छोटी हरद सब समान भाग लेकर पीसकर निबू रससे सेगठी बनाना। पानी या निबू रसमें घे टकर लगाना।

गधकादि लेप—गधक शक्कर गोद सोहागा समान लेकर कपडछाड़ कर निंबूके रसमें मिलाय लगाना ।

एलियादि लेप—एलिया चक्कड़ बीज गधक लोबान प्रत्येक दस दस तोला घालुफल नग २५ अशेलिया के बीज तोला २॥ सब साथ कूटकर कपड छानकर निंबू रसमें घोट लगाना ।

रालादि लेव—सफेद राल एलियो लाख गधक प्रत्येक दस दस तोला, घनेकी दाल तोला २० को भिगोकर पीसकर उपरके सब महीन किए हुये द्रव्य मिलाकर सूख जाने पर कपड छानकर रखना निंबू रससे या पानीसे घोटकर लगाना ।

दाढ़के साथे प्रयोग

प्र-१ सेनामुखी (मीढीभावल) के मूलको निंबू रसमें घोटकर लगाना ।

प्र-२ हिगूलको निंबू रसमें घोटकर लगाना ।

प्र-३ ढाकके बीज निम्बु रसमें घोट कर लगाना ।

प्र-४ बांझ कटोलाके पत्ते पीसकर लगाना ।

प्र-५ चक्कड़ के बीज थूहरके पत्ते के रसमें ३ दिन भिगो रखना पीछे दाद पर गायथा गोबर घीसकर महीन पीसा हुआ चक्कड़ बिज लगाना ।

प्र-६ शक्कर और छोटीहरद (हीमजी) समभाग पीसकर निम्बु के रसमें घोट लगाना ।

प्र-७ बड़ीदटहरी के पके हुये फल लेकर पानाल जंत्रसे अर्क निकालके लगाना ।

प्र-८ लोबान और नमक निंबू रसमें घोटकर लगाना ।

प्र-९ टटका ताजा लीटा दाद पर घीसना ७ दिन तक हमेशा ताजा लाटा घीसना दाद मिटे ।

प्र-१० गुंजा अफीम ढाकके बीज पपई निंबू रससे लगाना ।

प्र-११ चमारदूधली का दूध ७ दिन लगाना ।

प्र-१२ चक्कड़ बीज तोला १, एलुवा तोला १, लाख तोला १, आवला तो. २ सब साथ कूट गायकी छाछमें पीस लगाना ।

प्र-१३ शेषपुदर सत्था शक्कर गधक सोहागा नवसार नीलायोथा अफीम सम भाग लेकर निंबू रसमें घोटकर लगाना ।

प्र-१४ एलोया तोला २ चक्कड़ बीज तोला १० महिन पीसकर गलगोटा पीला फुलकाके पानके रसमें घोटकर लगाना ।

प्र-१५ दाद हरी हो, खुल्लीसे पानी निभले उसपर लोबानका महीन चूर्ण लगाना ।

प्र-१६ गधक सोहागा तथा गुगल शक्कर समभाग मिलाकर कूटकर निम्बु रससे लगाना ।

प्र-१७ अफीम और राइ सम भाग कूटकर गुड के पानीमें मिलाय लगाना ।

प्र-१८ बमालगोटा की गिरी एलोया समभाग लेकर निम्बु रसमें घोट लगाना ।

किटिभ खजु खरजवा

बिन्दू—हाथ पाँव कानको किनारी प्रत्येक सिर पावके तलुओ घुटन के नीचे का भाग इत्यादि अंगो मे होता है। किसीसे फून्सीया होकर फूट कर पानी खाँव निकलता है। कोई सूखा होता है। प्रारम्भमे लाल होकर सूजन होता है। पीछे खुल्लो आते आते वह चमड़ी कठिन सूखो बालो वेढौल होती है। यह रोग २-५-१० या अधिक साल तक रहता है।

खजूनाशन मिश्रण—योगराज रसायन तोला १, अमृता पुगल तो २, बंशमनी न. १ तो. १, आगम्य बध्नी चूर्ण तो. २ लोह पर्पटी तो. १ सब साथ पीस मोट कर ७० पुडिया बनाए। २ घखन पानीसे या मद्दामंजिष्टादि कवाय से देना। अथवा सब पीसकर शोशो में भू देना। पीछे ८ से १० रती सुवे और शाप देना। १-२-५ ४ मास तक धवन करना जितना पुराना हो उतना ज्यादा समय तक सेवन करना चाहिये। खरजुआ दाद पापा विस्फोटक खुनका बिगाड आदि मिटता है।

खजूनाशन तल—गौमूत्र, कनेर के पत्तेका रस, गायके गोबर का रस प्रत्येक त्रिविध पल अथवा दो दो रतल लेकर छोहेकी कड़ाह में डालकर उसमे काली मिर्च सफेद बछनाग मनशोल नागरमोष हलदी दाहलदी निमोथ रक्तचंदन देवदार सफेद चंदन कचूरा प्रत्येक दो दो तोला लेकर कुडकर उपरके कल्क बनाकर कड़ाहमे डालकर और सरसोका तेल रतल ४ डाल कर मंद आंचमे पकाना। पानीका अंश जल जाय जब ठंडा होनेपर कपडछान कर रस छोटना। लगानेसे खरजुआ पापा दाद गजचर्म त्वचा विकार आदिमे उत्तम फायदा करता है।

नीचे लीखे हुवे साधे प्रयोग खरजुआ दाद त्वचा विकार आदिमे उत्तम फायदा करते हैं।

१ खजवाइन जलाकर पानीके साथ पीस लगाना उपर एर डका पता बांधना।
२ नीलाधोमा, फटकी एक एक तोला लेकर महोन पास कर २० तोला गाय के घी अथवा मकखन में मिलाय लगाना।

३ शाला नामक काटाबाला मूसक जसा जनावर होता है जो सर्पको अपने काटाओसे मारता है उसे जला कर और ड तेरखे मिला कर लगाना।
४ उषाफुली अंबोपुष्पी का पचोय पीस लगाना।

५ सरस काचवो कूर्म जो जमीन पर रहता है उसकी डालको कूडा मे पककर जलाकर घी मिलाय मलम बनाकर लगाना चाहे जितना पुराना खरजुआ ४ दिनमे मिटता है।

६ खारीरु के या खजूर के बीज को कटाई में जलाकर सरसों के तेल में मिलाय लगानेसे व्रण फोड़ा गुमर्दा मिटने है ।

७ खजूर तो ५, लश्न तो १। हिग तो १। एरुण्ड का पीस कर पोटांस की तरह खरजुआ पर बांधना । ३ दिन बांधने से खरजवा मिटे ।

८ मिर्च दाहलदी गंधक पारा कलौज जीरा कालीमिरच जीरा मैसील सब समान भाग लेना पारा गंधककी कूजली बनाकर उसमें दूधरी चीज एक्के पीछे एक ढाल घांट का गाय के घों से मलम बनाना खरजवा पर लगाना ।

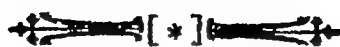
९ मोँडा के बीजका अर्क पाताल जघमे निकाल दर लगाना ।

१० कली मिरच तोला १०, आमला तो २० दोनों को साथ जलाकर उसमें दोहेके वस्त्र पर पकाया हुआ नीलाघोथा तोला १० मिलाना इसमें गायका घों मिलाकर मलम बनाना खरजवा पर उत्तम है ।

११ खाँड तोला ०॥ नीलाघोथा रत्ती ८ साथ मिलाय तामे के बिना रांग लपेटे वस्त्र में ढाल मलम ढाल तामेके छेदेमें मदन करना खरजवा में उत्तम हैं ।

१२ कडवी तुवा के बीज जलाकर गायके घोंमें मिलाकर मलम बनाकर लगाना खरजवा मिटे ।

१३ आँवला पोणिका दोहा हलदी चोकनी सुषारी प्रत्येक एक एक टांक लेकर सपुट में जलाना पछे उसमें काली मिरच टांक ०॥ नीला घोथा टांक ०॥ कंभीला टांक १ मदीन पीस गायके घोंसे मलम बना कर लगाना खरजवा मिटे ।



पामा विचर्चिका खुजली चित्री आदि त्वचा विकार

१. कारण सिद्ध—खानपानमें समाल रक्तसे यह रोग होता है। पामा बहुत करके हाथ पांव और अंगुलीयोंके बीचके भागमें होती है। यह चेरी रोग है। खुजलने रहेनेसे जाग पांव शुष्क भागमें भी फैलती है।

✓ पामाहर मलम—बावच' असीयाहलदी गंधक प्रत्येक पांच पांच तोला नीलाघोथा तो ११, सब साथ महीन पिस घतूरेके फल में भर उसे कपड मिट्टी का उपर मिट्टी लगाकर एक खड्डेमें रेतों भर उसमें रख दोतन छाणाका अग्नि देना। स्वांगशक्ति होनेसे महीन का समोका तेलमें घोटकर लगाना पामा मिटे।

दस्तादि मलम—पारद गंधक जीरा शाहाजीरा हलदी दाधलदी मैन्-सोल काली मिरच सिंदोर सब सम भागसे लेकर महीन पीस गायके घीमें मलम बनाकर लगाना पामा मिटे।

✓ अर्कतैल—अकके पके हुए पान कूट कर निकाला हुआ रस शेर १, हलदी शेर ०१, सरसोका तेल शेर १, सब साथ मिलाय लोहेकी कढाईमें डाल पकाना पानी का अंश जल जाय जब ठंडा होनेपर कपड छान कर पामा खुजली खूब पर लगाना।

✓ गंधकादि मलम—गंधक तोला ५, नीलाघोथा पकाया हुआ तोला ५, नहाने का घबून तोला २५, गोपी चंदनकी मिट्टी तो २५ सब साथ महीन पीस गायके मक्खनमें मिलाय मलम बनाना पाग-खुजली अच्छी होती है। बच्चोंकी पामा के लिये यह मलम अच्छा है।

१ जीरा तोला १६ को महीन पीस उसमें सोदूर तोला ८, घतूरेका बीज तो ४, गंधक प्रत्येक तो ४ मिलाकर पानी मिलाकर सरसोका तेल तोला ८० में पकेना पामा जाय।

२ सेधानेन चक्रवर्द्धके बीज सफेद सरसो पीपल समभाग ले कूट कर रसना निबुके रसमें अथवा घुरतेमें अगर खट्टी छाँछमें मिलाय लगाना पामा मिटे।

३ मूलीके बीजको अपामार्ग के रसमें घोटकर अथवा कैल के रसमें हलदी को पीस लगाना विचर्चिका पामा जाय।

४ पारा गधक हरताल मैनसील चावल भावची होरादखण नीलायोथा राल सिंगरफ कथा कपोल बोदार सब सम भाग लेकर पतिले पारा गधकको कज्जली कर पोछे हरताल मिलाना पीछे दूसरी सब वस्तु मिलाना निम्बूरस या पानीमे लगाना पामा जाय ।

६ निशादि चूर्ण हलदी भावची नीले पत्ते चावल समभाग कूट रखना ०। से ०॥ तोला चूर्ण गौमुख के साथ २ वस्तु खानेसे ५ दिनमे पामा मिटे ।

७ क्षमासा का चूर्ण कर उसमे मिश्री समान भाग मिलाय रखना । हमेशा शत डाल ०॥ तोला पानीके साथ लेनेसे शरीरकी खुजली खरजुआ कुसस शीतपित्त-शीलस १४ दिनमे मिटे ।

८ आंगना या रस शरीर पर मर्दन करनेसे छुसस मिटे ।

९ खारेकका २ टुकड़ा कर बीज निकाल उसको निंबूरसमे भिनाकर सुखाना ३ दफे कर पोछे निंबूरसमे से धानेन और काली मिरस पास डाल खारेक डबो रखना । हमेशा ४ टुकड़ा खा जाना । वायु पित्तकी खुजली मिटे

१० अजवायन (अजमा गु.) कूटकर उसमे गड़ घी मिला ५ गेला बनाना हमेशा १ तोला खानेसे ५ दिनमे हाथ पांवकी खुजली मिटे ।

११ हरद बहुड़ा आवला पारा गधक सि दूर समभाग लेकर गायके घोंमे मलम कर लगाना पामा मिटे ।

१२ कच्चा साह गा पीस तामेकी बडी थालीमे डाल निंबूरस मिलाय तामेके छोटेसे ६ घंटा घोटना लगानेसे अथवा मूली के पानका रस मर्दन करनेसे विचर्बिका करोलिया मिटे ।

१३ चकवडवा बीज, एरंडीके बीजकी गिरी मालकागनो भावची आवला प्रत्येक तोला १० एलीया तल सरमें से धानेन हलदी दाहलदी नीलायोथा प्रत्येक तोला ५ सबको कूट मिलाकर दही का पानी रतल १० मे रख चिनाइ मिट्टीकी बरणो मे भर मुख गधकर ३ दिन तक घुप मे रखना । पीछे शरीर पर मर्दन खानेसे चांदा व्रण विचर्बिका पामा छुसस खुजली मिटे ।

१४ कैल के पान सुखाकर उसको जलाकर राख करना उसमे सम भाग हलदी मिश्री पानी मे पीस लगानेसे पामा खुसली त्वचा रोग मिटे ।



व्रण गुमडा

व्रण गड गुमड चिन्ह—जब किसी भागकी सूजन दाह होकर अदर पड़ना है जब उसे गड कहते हैं। किसी समय तीक्ष्ण दाह होकर और कमी बिना दर्द गडकी सूजन होती है। पकने पर गाढा हरा पोला सफेद रक्त मिश्रित और कमी पतला पप निकलता है। दाह होकर गड होता है जब खुलार आता है, उस भागमें पीडा होती है। पका नहो जब तक ठिन लगता है। पकने लगे जब शूल पंढा बढ़ती है। अतमें पक कर पस निकलता है। यह सारे शरीर में और कम किम एक अगमें हाता है।

मूढ व्रण - (मूढ गुमडा) शरीरके किसी एक भागमें सूजन होकर पीडाके साथ व्रण निकलता है। कमजोर अथवा पुष्ट मनुष्यों को होता रहता है। स्वच्छता न रखने वाले वच्चेको ज्यादा होते हैं। आमरु मडे फल खानेसे, सड़ते पशुधन खानेक बादत म खून बिगडनेसे, मधुमेहसे गड गुमड हुवा करते हैं। पीछे उस स्थानको चमडी लाल होकर सूजन होता है उसमें पीडा शूल निकलता है ये डे दिनमें पक कर फूटता है अगर बैठ जाता है। पीडा बढते। खुलार आता है। निशान नहि आती।

व्रण चाँदा घारा चिन्ह—शरीर पर विविध पांठ पाठा गुमडा पककर फूटने के पीछे बहुत समय तक रुझाता नहि है चाँदा पडता है उसे व्रण कहते हैं। उसी तरह शरीरका कोई अंग काटने से मोचनेसे घीघाँसे भी व्रण होता है। जिस जगह व्रण होनेका हो वहा सूजन होकर पीछे वहा फटक वहाँ चाँदा पडता है। अदर पकने के बाद समयसर फोडका पस निकालनेमें नहि आता तो वह बस-पस नाडीओमें उतर कर नाडी व्रण उत्पन्न करता है।

गंभीर व्रण—भयलींगर—जो व्रण चाँदा बहुत गहरा दड़डी तक पहुँचा हो रुझाता नहो दड़को सदाता है वह गंभीर व्रण कहा जाता है।

भाठा लबी बंधारी से रोगीको पीठमें कमरमें हड्डीके स्थानमें भाठा चाँदा पडता है। पहिले लाल चाँदा होकर पीछे वह भाग सडकर खोण होता है।

पाठां-कारवकल चिन्ह—मधुमेह वालोंका, मूत्राशयके रोगीको, बल बिगाड वालोंको, बूढ़ोंको कमजोर को यह व्रण होता है। यह एक प्रकारका बड़ा फेला हुआ गहरा व्रण-गुमडा है। इसमें पहिले चमडी लाल होकर जलन होती है। उसके बीचमें कठिन हड्डी जैसी चपटी बडी ग्रन्थीयाँ गांठे होती हैं। वह फेलाता हुआ बडा होता है जामुन रंगका दिखता है। कर्म काचमा की पीठ

जैसे उपसा हुआ शोध होता है । वह फूटनेके पीछे छोटे छोटे छिद्र पड़ते हैं । उन छिद्रों के चारों ओर कि चमड़ी सड़कर निकल जाती है और वहाँ खदूआ पड़ता है । पाठा बहुत करके पीठ कि करोड़ गरदन धम्मर में होता है । कभी कूलाके बीचमें हाथ पांव छाती पेट पर भी होता है ।

पथ्यापथ्य—सब प्रकारके मणोमें वमन कराना जुलाब देना लंघन कराना । आवश्यकता लगते रक्त्रकर्म—ओपरेशन या डाभ—अमिकर्म कराना या क्षारका उपयोग कर फोड़ना । चावल गेहु जव जवारी मुग चना तूरी पन्वल सह जनासींग छोटी मूली तिलका या सरसोंका तेल वेगन धरेला सूण पपड़ी दो घहर दूध दितकरी है । बहुत तीखा खट्टा अचार आदिका स्थाग करना ।

मृग फोड़ने के लिये—हाथीदांत दो अंगुली की तरह धिसकर मृगके उपर एक रंग घेरके टिकिया (चांदलो) करना ॥ घंटामें मृग फुट जाता है ।

मृग फोड़ने का मलम—दतीमूल विग्रक थूहरका दूध आकका दूध मीलावा की गिरि काशीस सेधानेन सब समभाग मिलाना । लगानेमें मृग फुट जाता है ।

मृगसे बिगाड़ निकालने की पोटीस, मृग फूटने के पीछे सब बिगाड़ निकालने के लिये नीमके पत्तेको और बेर बदरी के पत्ते को पीस गर्म कर पोटीस बांधनेसे सब बिगाड़को खींचकर बहार निकालती है । ६ दिन फरनेसे मृगमें का सब मृग उ निकल जाता है ।

बिगाड़ निकालनेका लेप—तिल नमक हल्दी निसेय नीमके पत्ते सब समभाग कूट कर उसमें धी मध मिलाय गर्म कर मोटा पोटीस जेसा लगानेसे बिगाड़ निकल जाता है ।

मृग रोगण के लिये—बड़ के अंदर की छाल, पीपल (अम्रथ) की छाल गूलरकी छाल सब साथ कूट गाढ़ा लेप करनेसे रुक आती है ।

मृग रोगण लेप—पीपलकी छाल नीमकी छाल बबूलकी छाल हरद तुलसी के पत्ते मन्वा (फुलक)के पत्ते सब कूट कर लगानेसे मृगमें रुक आती है ।

मृग पकड़ने फूटकर रुक जानेका उपाय—सखिया सोमल नीलायोथा कली चूना सम भाग में प्रत्येक अलग अलग पीस पीछे मिलाव पानीमें सोंगठी बनाकर रखना । पीपल एसा लेवील लगा रखना । बरत हो जल गौमूत्रमें थोड़ा दिनमें २ या ३ रफ मृग पर लगानेसे पक कर फूट जाता है । फूट जानेके पीछे

चावलको पकाकर वहीमे मिलाकर गरमागरम त्रण पर पोटेसकी तरह बांध पाटा बांधना । एक दिनमे ४ दफे दही चावलका पाटा बांधनेसे तीन चार दिनमे रक्षणा जाती है । गड गुमड बदगांठ बांधलायी रसोली मधा भरनीगर गांठ नहि पकते हुए त्रण यथाधीर हतने दरदोमे कि जिसको पकाकर फोड कर रक्ष लाकर मिटानेकी जरूरी है उस पर यह प्रयोग करना ।

त्रण चंठा देनेकी पेटील अरणो देवदार सेांठ भार गो रान्ना छोटी कटहरीके फल मूलेठी के मूल सब सम भाग कूट कर पानी या दूधमे पोष गर्म कर पेटीष (ढोपरी) की तरह लगाकर पाटा बांधना । ३ या ४ दिनमे त्रण चैठ जाता है ।

त्रण पकानेकी पेटील—तिल अलसी कूटकर गेहूका आटा तीनों समभाग के कर उसमे नमक १ तोला डालकर दहीमे मिलाय गर्मकर पेटीष (ढोपरी) रख पाटा बांधना । ५ से १० दफे बांधनेसे त्रण पक जाता है ।

त्रण फोडनेका लेप—करज बीज चित्रक दूरी मूल भिलावारी गिरी कनेरका भूल कवुनरको चरक सब समान भाग डेकर कूट पानीमे मिलाय गर्म कर लेप कर पाटा बांधना त्रण फूट जाता है ।

आगली-घट्टो-मोम राल और घीको साथ मिलाय गर्मकर कपडेपर लगा देना पीछे त्रण पर बड़ पटी लगानेसे रक्ष आती है । यह पट्टी वातकी पीडा शूल को भी शांत करती है ।

रोपण मलम—राल मोम हीरादखण कपीला बोदार कायफल प्रत्येक आसी० कर मलाना पीछे उसमे नवसार तोला १ मिलाना पीछे गयके घीसे मलम बनाना । लगानेसे त्रण चांटा पाठा रक्षते है ।

रक्ष देनेका मलम—७फेद राल शेर १ तिलका तेल शेर ४ को गर्मकर पोखो हुइ राल डालकर पिघल जानेसे टोपमे भरे हुए ठंडे पानीमे डाल देना । मलम जेवा बन जाता है । वह जखम चांदा, अर्धन आदिसे जले हुये पर और पांठ आदि पर लगानेसे रक्ष आती है ।

लातयादि मलम—जुइ नीम, पटोल प्रत्येकके पान, घाला मुलेठी, हलदी, कुठकी मसीड, नीलायोजा, सरिवा, करंजीडी, प्रत्येक दस दस तोला डेकर कूटकर महीन करना । गायका घी रतल ५ लेना । घी गरम कर उसमे मोम तो. १० डाल पिघल जाने पर सब चीजे डालकर गूदत्र कर आधा

घंटा तक हिलाने रहना । पीछे चुल्हेम उतार कर ठंडा हो अब तक हिलाते रहना । सब प्रकारके व्रण, चाँदा, इत्यादिमें लगाना ।

जात्यादि तेल—मोमके विषयके उपर लिखे जात्यादि मद्य के सब द्रव्य १० रतल पानीमें ५ रतल घरसैक तेलमें पकनेसे जात्यादि तेल बनता है । सब प्रकारके व्रणोंपर लगाना । कपड़ेके टुकड़े पर छिड़क कर व्रण पर रख । प्रियं वृक्षका पत्ता बघकर पाटा बांधना । दिनमें दो दफे रीठे के पानीमें या सोह पा के पानीमें धो कर लगाते रहनेमें अच्छा होता है । आत्यादि मल्हमका भी इसी तरह उपयोग करना ।

व्रण हज्ज तेल—कलितारी (सफेद बछनाग) कुण्ठ गिठाय, भिगिया, (काला बछनाग) द्विग दुर्वा मजीठ करजके बीज, डाफके बीज डाकके मूत्र, अक्षय नागरमोथ, नीलाधोधा, एलुआ, (एलोयो) इन्दी, ककडाखिनी, मैनघोल, हरताल सोठ, पीपल कार्लीमिचं, प्रत्येक द्रव्य चार चार तोला लेकर गौमूत्रमें महीन पीस कर, गौमूत्र रतल चार डाल पकाना । पानीका अंश चल जाय जब ठंडा होने पर कपडछान कर रख लेना । जात्यादि तेलकी तरह इसका उपयोग करना । व्रण चाँदा, पाठा आदि मिटते हैं ।

व्रणमार्तण्ड दस्—पारद तो ४, गंधक तो ८, लोह भरसू तो २॥, ताम्र भस्म, सोठ, पीपल, कालीमिचं प्रत्येक दो दो तोला, हरद बहिडा भावली प्रत्येक चार चार तोला शिलाजित ९ तोला, गुगळ २४ तोला, नागरमोथ, कुटकी, गिठाय, चित्रक वायवडग इ द्रायण के फल, कुष्ठ, हलदी, देवदार प्रत्येक चार चार तोला सब कूट कपड छान कर नीमके पत्ते ४ इसकी और अनंतमूलके क्वाथको एक एक भावना देकर छायाय सूखाकर घोटकर रखना । ६ से १० रती पानी या भारगी पत्र अथवा श्री बाहुशाल गुड अथवा कटकारी अजलेहके साथ देना । व्रण पठा चाँद खूनका विगाह गदगूमड आदि मिटते हैं ।

व्रणहर मिश्रण—अमृत पपटी तो १, अमृता गुगळ तो २, सिंहास गुगळ तो १, पुननवा गुगळ तो १ शिलाजित तो २ सब साथ पीस ६४ पुडो बनाना । सुबह शाम पनी या महामाज्जादि क्वाथके साथ देना ।

व्रणरोपण मल्हम—कापूसके पानका रस तो. २० शंखजीरा तो १, राल तो. १॥ वग मद्य तो. २, मोम तो २, गायका बी तो २० में कापूसके पा का रस शलकर पकाना । पानीका अंश चल जाय जब राल और मोम हायर मल उनके बाद शंखजीरा और वग मद्य डालकर हिलाना । ठंडा करने पर रख छेटना । व्रण चाँदा वगैरह पर लगाना ।

सिंदुरादि रोपण मन्त्र—सिंदूर तो २ बोझ तो. २, बंग-
मसम तो. १, द्विगुल तो. ४, मुग्घो के अडेके छिलके तो ०॥, मोघ तो.
४ गायका घी रतल १, घी गरम कर मोम डाल मिल जाने पर दूसरी
महीन को हुद्द चन्दु डालकर हिलाते रहना । चादा पाठा व्रण गूमडा आदिमें
रुज आता है ।

रोपण मन्त्र—करजका तेल तो. ४८ गरम कर उसमें गुड तो ४
डालना । मिल जाने पर सिंदूर तो १२ डालकर तैयार करना । इन प्रकारके
व्रणों रुज आता है ।

व्रण के साथे उपचार

१ खजूर तो १०, और कपडा घेनेका दोनो सावुन तो. ५ महीन पीस
मिलाकर पोटीस जैसा बनाकर व्रण पर बांधनेसे फूट जाता है पीछे रोपणका
उपचार करना ।

२ गुग्गुलु जलाकर घंमें मिलाकर लगानेसे व्रण फूट जाता है और पीछे
चौद दिन तक लगाते रहनेसे घिगाह निकल कर रुज आता है ।

३ हीराबोल के पानीमें पीसकर लुबदी जैसी बनाकर लगानेसे व्रणकी
गांठें बैठ जाती है ।

४ पारद तो १॥, कथा तो २॥, राल तो. १०, मोचरस तो ३॥,
सब साथ पारद घटा तक पीस कर एक करना उसमें घी आवश्यकतानुसार
मिलाकर फिर बारह घटा तक घोटना । लगानेसे सब प्रकारके व्रण मिटते हैं ।

५ दाहिमकी छाल, करंजके बीज, आंबला, ठाकके फूल, महेदी सेराखार
प्रत्येक तो २॥ कूटकर घोटकर उसके मेडके दूधमें पीसकर लगानेसे सब प्रकारके
व्रण मिटते हैं ।

६ बन्बुलकी पत्ती पीसकर मल्हम जितना गाढा रखकर व्रण पर बांधना ।
गाढ गूमड पाठा वगैरह मिटते हैं ।

७ कथा और गुग्गुलु दोनो समभाग लेकर पीसकर नीमके पत्तों के पानीमें
झाँझा कपियाभरकी सोगठी बनाकर सुखाना । पानीमें घोंस कर व्रण वगैरह
उपर लगाना ।



नासुर-नाडीव्रण

चिन्ह—व्रणकी जगह शीथ होता है । और वह अंदरके भागमें पक्क जाने पर भी उसे फोड़नेमें विलम्ब करनेसे उसका पस (पूय)-परु-हा जाने पर नीचे उतर कर भांस शिरा स्नायु संधि हड्डी और कोटाके मर्मभागको मेर कर छिद्र पर अंदर पहुंचता है पड़े । वह छिद्र पोली गलिका (नली) जैसा बनकर उसमेंसे पस निकलता रहता है ।

नाडीव्रण हर मिश्रण १—व्रण मार्तण्ड तो १, लेह पर्वटी तो २, किशोर गुगल तो. २, काचनार गुगल तो. २, हस्ताल मसूम तो. ०।, मधुक रसायन तो. १ सब साथ घोटकर ६४ पुडी बनाना । दिनमें दो दफे पानी या मदास जिष्ठादि क्वाथ के साथ लेना । सब प्रकारके व्रण चांदा, पाठा मिटते हैं ।

प्र. १—चंद्रप्रभा गोली ३ पीसकर या चाबकर पानीसे उतारना उपर तीन गोली केदारादि दूधके साथ खड़ी ही निगल जाना । पीछे दूध पीना । रातको आरोग्य वधिनी गोली ३ से ४ पानीसे लेना । यह प्रयोग १४ से २१ दिन तक करनेसे सब प्रकारके व्रण चांदा वगैरह मिटते हैं । मल्हम तेल आदि बाह्योपचार साथ करना ।

नाडीव्रण शामक मिश्रण २—सुवर्ण पर्वटी तो १ सिद्ध हरताल तो. ०।, चंद्रप्रभा तो २, योगराज रसायन तो २ शिलाजतू प्रयोग तो. १ सब साथ मिलाकर ६४ पुडी बनाना । दिनमें दो दफे पानी दूध या घी के साथ लेना । उपर कटकासी अवलेह अथवा च्यवनप्राश जीवन १ से २ तोला खिलाना । सब प्रकारके नाडी व्रण चांदा अस्फुर खूनका विगाह आदि मिटते हैं ।

नाडी व्रणार्तक गुगल—पारद तो. १०, गवक तो. २०, दोनोकी कज्जली करना पड़े हरद वहिडां आंवली नागरमेध वायविदग गिलोय हलाजची बेवदार पाषाणमेद सरिवा इन्द्रायण के फल हल्दी दारुहर्षी सोंघानोन शिला जीत माक्षिक मसूम महर मसूम प्रत्येक तो. ५, गुगल तो. ८०, गवका घी तो. १० सब साथ कुटकर पुनर्वा क्वाथसे तीन तीन रत्ती की गोली बनाना । मात्रा १ से ६ गोली दिनमें दो दफे कल्याण घृतसे अथवा दूध के साथ लेना । नाडी व्रण और सब प्रकारके अन्य व्रण १ महिना तक सेवन करनेसे मिटते हैं । खट्टे शक्करके पदार्थ बंन करना ।

नाडी व्रण हर तेल—निर्गुंडी के पान, काला हयराज, कोठा(कथिरथके) फलका गम, बीली फलके गर्म, खजूर, वायविदग, नागरमेध, राल, शहद,

मोचरास. साह के कुक, एरंड बीज सुवरका दूध, आकका दूध, रगत रोहडा (गिहोडा) प्रत्येक दस दस तोला, लेकर कुटकर पानी रतल १० में धारद बंटा भिगेना रखना। पीछे इसमें तिलका तेल २० रतल डालकर पकाना पानीका भग जल जाय जब ततारना। कपड़ेक वर्ति बनाकर इस तेलमें भिगेकर अदर हायना। और साफ करते रहना। नासुर भग पर आदि म्रण मिटते हैं। इस तेलमें बार और सिद्धर दाने दस दस तोला लेकर घोंटकर तेलके साथ मलाना।

नाडी म्रण हर मलम—घोदार तो. २, पशु भग्म सफेद तो ५, तिलका तेल तो ४ में नेम तो ५ और क्यु तो २ डालकर तगना। मिला जाने पर बोना और म्रण भग्म, मिला देना। यह मलम नासुरक उपर लगाना जाता है।

मिगुडा तेल—मिगुडीके पचांग तो दोसो के कुटकर पानीमें धारद घटा भिगेना। पीछे इसमें तिलका तेल रतल १० डालकर पानीका भग जल जाय जब जल पकना। इस तेलमें मिगोड दुई वर्ति नाडीम्रण में डालना।

नाडी म्रणकी नालीका मार्ग—एकणी नामक शास्त्रसे दृढकर शास्त्रमें उक्त मार्गको काटकर म्रणके उपचार की तरह शोधन रेपण करना।



भगंदर

कारण और लक्षण—मलद्वारकी आस्रपास गड़ होता है। वह कभी अंदर और कभी बहर मुख करता है। बहुत दिनों तक अंदर के अदर ही फैलता है। घमजोरीसे, चोट और आघात लनेसे वहाँ चाँटा पड़कर मुख होता है और उसमेंसे रगी निकलती है। बवाभीर आग्नि में भी यह रोग होता है। उसमें मल आनेसे घषण होनेसे धाफ हो सकता नहीं और इस कारण दस्त नहीं आती। कभी एक जगह मुख न घ होकर गाजु बाजुमें दूसरा मुख होता है ध्यवा वहाँ ही फूटकर रसी निकलती है और वह अदर गहरा जा कर कुन्लाकी अदर रास्ता कर फैलाता है। किसीका एक मुख सफरामें और एक बहार इस प्रकार दो मुख होते हैं। किसीका एक मुख सफरामें होता है और दूसरेका एक बहार होता है। इसमें सला (शलाका) डालनेसे मालूम होता है। मायमछो लोनीका यह रोग ज्यादा होता है। आयुर्वेदमें लिखा है कि प्रायः किसमके भगंदरमें विशेष प्रकारका जंतु होता है। वह अदर सदा पिंग का टेढेमेढे मार्गसे गहरा उतरता है। वातप्रधान भगंदरमें लाल फेनवाला स्राव पीड़ा दद होता है और एकसे अधिक छिद्र होता है। पित्त प्रधान भगंदरमें लाल पीला स्राव होनेके साथ वह जलदी पकता है माय दाह और जलन होती है। कफ प्रधानमें खुजली गाढा सफेदाह लिये स्राव दद कम होता है। जिस भगंदरका मार्ग देठा मेठा (वक्र) होता है। वायु मूत्र विष्टा जंतु आदि उसमेंसे निकलता हो वह असाध्य है उसपर क्षयकर्म करानेसे कभी अच्छा होता है।

पथ्यापथ्य—पक गया न हो जब तक दस्त लानेका बैठ जनेका उपाय खानेकी लगानेकी दवासे करना चाहिये। लंघन कराना। फर खोल कर रक्त मिथलवाना वमन विरेचनसे शोधन कराना। लेप लगाना पकजाने पर क्षयकर्मसे, अग्निसे-दाम देकर या क्षार कर्मसे अच्छा करना। चावल मुग परवल सहजनेकी फली छोटी मूली तिल सरसोंका तेल कटोला बूझी घाड़ोळ धो शहद हितकारक है। बाजारकी मीठाह खट्टे पदार्थ अजीर्ण करनेवाकी चीजे मेदाकी मिठाह परिधम कदरत लडना दौटना चिकने पदार्थ हानि कर्ता है। हर वस्तु दस्तकी दवा लेकर उदर पेट साफ रखना, उपवास हर वस्तु करमा। खानेकी लगानेकी दवाका उपयोग कर जलशी अच्छा हो वैसे उपाय करना। भगंदरकी कुन्धीयां त्रण कच्चा हो तब बैठ जाकर पिटानेके लिये उपचार करमा। केशरादि गोली दो मुने दाम दुध से कबि निगल जाना। अमृता गुण्ड २ से ३ गोली दो वस्तु देना दशांश

जैसे पानीमें पिस कर्म का पोटीसकी तरह लगाना । विरेचन देना और फूटने पर नीचे के उपचार करना ।

स्वर्णशलाका प्रयोग—सेनेकी मलाका दश इंचकी मलाका उसे अग्निमें तपाकर, भगदर के छिन्ने डालना । पड़िले बिना तपायी सलाइ डालकर भगदर छिन्ना गहरा डगरा है जन लेना पीछे तपायी शलाका उतना गहराई तक घुसाना और धुन हि निकाल लेना । पीछे डसजगह रोपण मलम अथवा दशांग जेपकी लुहरी-बांधना सप्ताहमें रुख आ जाती है । सलाइ एक हि दिन घुसाना है पीछे अग्नि दग्धका वाष्पोपचार करना भगदर मिटता है ।

इस प्रकार स्वर्णके योग का अग्नि कर्ममें भगदरके जट्ट बन जाते हैं और रोग अच्छा होता है ।

भगदरारि मिश्रण—रुद्धेश्वरी पपटी तोला १, अमृता गूल तोला २, योगराज रसादन तोला १, अम्रक मधु तोला १, प्रवाल चद्रपुटी तो २, आरौख पानी चूर्ण तोला २, चद्रप्रभा तो १ सप्त गाय पिष्टकर ६४ पुडी बनाना दो स्थल पानी या दुधके साथ देना उपर महामांजिष्टादि वृथाय पिलाना

भगदरारि दल—पाट तो १०, गधक तो १०, लोह अम्रक हरड बहिडा आंवला नागरमेथ चोपचीनी कायविहंग चचक कुष्ठ गिलोय चित्रक हलदी दादहलदी मेघानेय बालीसी च छेठ इलायची नागकेसर प्रत्येक पांच पांच तोला, गूल ३० तोला और प्रटकी १० तोला सब साथ कूटकर कदंतो धुन के पचागके रखके एक भावना बेश्वर गुजा प्रमाण गोली बनाना अथवा चूर्ण रखना । मात्रा ५ से १० रती दिनमें २ बरतन पानीसे देना उपर नीमकी अंतर छालका पानी पिलाना । निमकी छाल दो तीन तोला कुवल पर २ कप पानीमें रातको भिगो रखना, प्रातः स्पष्टछान कर शोर्षमें भर देना, दोनो समय पुडीके उपर पिलाना ।

भगदरारि तेल—कनेरका मूल हलदी दतीमूल सफेद बछनाग योजोरा निवूकी जब आकका दूध छोटा गूलर (मोठ वंशरी) लज्जालू (रींशामणी) बस हरताल गूल चित्रक मालकंगनी मूलाग गिलोय पुनर्वा हरड बहिडा आंवला नीलाबोबा, बडकी बडवाइ चदन मूलेठी मूल प्रत्येक द्रव्य दश दश तोना लेकर कूट कर इष्टमें पानी रतल १० दश डाल कर रातभर भिगो रखे । प्रातःकाल इष्टमें तिलका तेल रतल बीस २० डालकर फिर २० बटा रख छोड़ना पीछे पीतल के रांग लपेटे बर्तनमें मंद अग्निमें पकाना । पानीका अंश जल जाय जल कपडछान कर रख छोड़ना । जिस बर्तन या टोपमें धी धी तेल पकता हो उस टोपके उपर छिपा

ठरु कर उठाते रहनेसे छेवाके नीचे पानीका बुद न जने जब पानी जल गया है, तैल मात्र बाकी है समझना, । किसी भी तेल या घृतके पकते समय पानीका अंश सघ जल गया है इसकी यह पहिचान है ।

इक्ष्वेश्वरी पपटी—गन्धक तोला २०, पारद तोला १०, ताम्र भस्म तो ४, छेह भस्म तो ६, कांथ्य भस्म तो ४, रौप्य भस्म तो २, स्वर्ण भस्म तो १ सब साथ धाँटकर छेहकी इठईमे गायका गो तोला १० डाल चुल्ही पर या भगीठी पर चढ़ा कर मँदागनि से पकाना सब पिघल जाय जब धूरे गोधरे पर बिछाये केलीके पत्ते पर जलदो से छाँटकर उपर केलीका पत्ता दाब कर उपर गोधर दाब देना । २४ घंटा के पीछे निकाल घोट रखना । माछा २ से ४ रती गायके घोसे या ब्राह्मी घृत या कल्याण घृतसे या मक्खनसे देना । उपर दूध पिलाना । दूधका खुराक उपाश रखना । कुलथी सुँग चावल गेहु शहद घृत चनाका खुराक देना । खटा पदार्थ इमरों इहाँ खाँड सककर का मिष्टान तेल बघ करना । यह पपटी भगंदर नाडीप्रण खनका दिगाद छाती फेफ्फोंका दर्द रिमाग आते के रोग सप्रहणी मदागिन बवासीर श्वास खाँसीमे अच्छा काम देती है ।

नवकापिक गुण्ड—हरद बहिडा आवला छोटी पीरल प्रत्येक पाँच पाँच तोला गुण्ड तोला २५ साथ कूट कर गायका गो तोला ५ मिलाकर गिटोय के स्वरससे गोलो ३ रतीकी बनाना । ३ से ६ गोली दिनमे २ समय पानीमे देना भगंदर नाडीप्रण मे गुणकारी है ।

भगदर शोधन प्रवाही—हरद बहिडा आवला दन्तूलकी छाल खेकी छाल अमरंगा (आवल) बलामूल ईगुरी मूल कायफल माजुनज नीमके परते कूटकी मोलघरीरी (यकुल बोलघरीरी)के परते ठाँकी छाल या मूल सब समभाग लेकर कूटके रखना । ७ से १० तोलाको ३ से ४ गेटा पानीमे रातभर भिगो रखना प्रातःकाल 'म' कर कण्ठछान कर रखना । भगदरकी जगह इस पानीसे दो समय घेकर पोछे मलम तेल आदि रगाना (भगदर) पर इसकी पोटीस भी बाँधी जाती है । ५ से १० तोला चूण मे ५ से १० तोला सफेद मिट्टी मिलाकर पानीमें पोखकर गमँकर पोटीस की तरह भगदर पर बाँधना १५-२० दिनमे अदरकी रबी-बसके खींचकर रुक जाता है ।

१ लेप—बड़के परते सफेद मिट्टी सोँठ गिटोय पुनर्गवामूल सब बार्ब कूटकर पानीमे पोख लगाना ।

२ लेप—बिल्ली (मार्जार)की हड्डी को त्रिफलाके बवाधमे पोखकर लगानी

३ लेप—कुत्तेकी हड्डी मूनाग(अण्डिसा-सराटीन) गधेका खून सब साथ मिला कर रगाना ।

४ लेप—घाका घूआ तिल हाड नीमके पत्ते हलदी सब कुष्ठ प्रत्येक दस दस तोला दोस्र तोला २० सब साथ कूट रगाना । ५ से ७ तोला चूर्ण पानीमे पीस लगाना ।

५ लेप—पुनर्वा मूक सेठ गिलोय बडके पत्ते छम भागको पानीमे पीस गम'दर पोस्टोस की तरह पाघनेसे १४ दिनेमे भग'दर मिटता है ।

६ लेप—कुत्तेकी हड्डी को महीन पीस पानीमे या सुखी हि भग'दर पर दाब कर पाटा बांध देना २४ घंटा बाद घो कर पुनः यह चूर्ण दाबना । इस प्रकार सात दिन करनेसे भग'दर मिटता है ।

भग'दर होघन लेप—बडूक की छाल में ७ कसीस कुचरा (विपनिद्रुक) नीलायोथा छम भाग कूट कर रगाना । ६ से १० तोला या आवश्यकता हो उतना केसर पानीमे पीस मलम जौषा गाढा रखकर रगाना । ३ से ४ वखत लगानेसे भग'दरका पस-पस बिगाड सिंच कर बाहर अजाता है पीछे रोपण मलम या लेप लगाना ।

८ लेप तिल बडके पत्ते सेठ सफेद चंदन मूलीकी मूक पदमकाष्ठ, एरंड बीज समभाग कूटकर पानीसे सेपली कर भग'दर पर लगाकर पाटा बांधना ।

९ भग'दर मलम—नीलायोथा काकीमिरच मीनशील आने उपलकी राख राख यशदशी मरुम नीमके बीज एरंड के बीज समभाग केसर कूटकर इसमे तिल का तेल डाल कांसीकी थालीमे या कांसीके बरतनमे घोटकर रगाना दो वखत लगाना ।

१० भग'दर मलम पकाना हुआ नीलायोथा कपीला यशद मरुम घोडा का मूत सब मिट्टीकी हड्डीमे डाल कपड मिट्टी कर अंतर्धूम पकाना पीछे निकालना गायके घोंमे मलम बनाना लगाना ।

११ भग'दर मलम—भिंदूर मौजूफल पकायी फिटकरी सींगरफ यशद मरुम कपोला नाग मरुम पारद कमीमरुकि राल पकाया नीलायोथा सब समान केना । पहिले पारदमे सींगरफ घोंटनी मिल जाने पर यशद नाग नीलायोथा फिटकरी एक पीछे एक मिलाना पीछे सब सब मिलाकर महीन कर गायके घों मे मलम बनाना ।



विद्रधि-अंतर्विद्रधि-वहिविद्रधि-केन्सर

चिन्ह गला मुख जिभ नाभि पेट पेट प्लीहा वक्रण जम्बवाहिनी शीराश्वा मूल
 अलोम गुदा द्रव्य आता आदि अवयवोंमें पुरुषोंमें और औरतों को यह रोग होता
 है। मधोके स्तनमें भी होता है। पहले उस स्थान पर ग्रन्थी साकर बढ़ता है
 इसे केन्सर कहता है। गलेमें होता है तब अन्न उतारना बंद होता है। गुटामें
 हो तो पवन छूटे नहीं। वस्तीमें हो तो मुष्कीलसे पिसाब आता है। अन्न नल्लिमें
 हो तो हिचकी (हिष्का-हेहरी) अती है। पेटमें वायु भर जाय आध्मान
 हो। पेटमें हो तो वायु प्रकोप अधिक रह। पेटमें तो पंठ और केन्सर
 झकड़ जाय। प्लीहामें हो तो श्वासका रुधन हो। हृदयमें हो तो श्वाश शरी। झकड़
 जाय, (लोवर) यकृतमें हो तो श्वस दमका प्रकोप हो। वटोममें हो तो तृषा अधिक
 लगे। नाभिके उपरके अंगोमें विद्रधिके ग्रन्थी एक कर फूटे तो स्राव मुख द्वारा
 बाहर आवे और नाभिके नीचे के अंगोमें फूटे तो गुदाद्वारा स्राव निकले। यदि
 छाव गुदा द्वारा निकले तो मनुष्य वचनेकी आशा रहे, पर मुख द्वारा स्राव निकले
 तो वचने की आशा नहीं। किन्ती भी स्थानको विद्रधि में पेट फूटे दन्त रंध्र
 हो वमन हो हिक्का आवे तृषा लगे पीडा हो शूल निकले श्वाकी गति बदे तो
 असाध्य लक्षण जानना।

यह रोग विश्वभरमें फैला हुआ है। लाखों मनुष्य प्रतिवर्ष इस रोगसे
 कराल कालके मुखमें मृत होते हैं। अमेरिका ब्रीटन रशिया आदि देशोंमें
 'राज्यकी ओरसे सेवटो वैज्ञानिक लोग इस रोगके उपायभी शोध कर रहे
 हैं'। वैज्ञानिकों की कोशिशसे मिलती है। लम्बे निवध पड़े जाते हैं, उपाय
 नहीं मिलता। इस रोग का औषध हो तो आयुर्वेदसे मिल सकता है केवल इस
 रोगके लिये आयुर्वेदमें यशोधन करनेका विचार हमारी सरकारने अभीतक
 नहीं किया। रेडीयम आदि उपायमें और विशेष प्रकारके शोके कभी किसी को
 अस्थायी थोड़ा लाभ मालूम होता है फिर जैसी कि तैसी दशा हो जाती है।
 वैद्यों के पास क्वचित् हि यह रोगी आता है। जब सब जगहसे नराश होता
 है, डाक्टरोंने वचनेकी आशा छोड़ दी है जब अंतिम उपचारके लिये वैद्य का
 मरण होता है, तब तो रोगने बेर लिया होता है। फिर भी आयुर्वेदिक
 औषध से यह रोग मिट भी जाता है। यदि सरकारकी ओरसे सब आवश्यक
 साधनोंसे सज्ज राणालय (आयुर्वेदिक अस्पताल) बनायी जाय वहाँ पचीस
 पचास बिछानाको व्यवस्था हो, भस्म रस रसायनादि विद्र औषधों जो इस रोगके

क्रिये आयुर्वेद में वर्णित है शायद विधिमें आहार निमित्तना की जाय तो सम्भव है कि आयुर्वेद और उसके रसायन औषधीय इस रोगपर विजय मिलना वातप्रतिफल अतः संभव है । हम देखते हैं कि एलेपेय पद्धतिसे बालेघनने अवशोषण स्वयं होने पर भी निष्फल मिलनेके पीछे आयुर्वेदको तत्क देना चाहिये । इसी प्रकार एक कायादीप्तिग यथा उष्ण प्रेशर हृदयदेह आदि अवाप्य माने जाने वाले रोगोंमें भी आयुर्वेद सफलता प्राप्त कर रहा है और संपूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिये विवक्षित है परन्तु सरस्वती के आश्रय आधारेके बिना चिकित्सा कर अपा । गुजारा-उत्तर पोषण करनेकी विधासे चिरा हुआ वैद्य समाज क्या कर सके ?

पट्यापट्य—'इष्टिकी' गाँठ बच्ची हो ज्वरक जुलान देते रहना । पसोमा लाना फस होना उर रुधिर निकलवाना । पुराना चावल कुन्धी, मुग्धा बी, चना, हलुत, सहजनाकी सींग, ढरेला परबल दूधो, सृण, घा, तिलक तेल गायकी बकरीका या बटनीका दूध आदि गुणकारी है ।

सर्वेभर पण्ट—रसद्वार गंधक, मासिक भस्म दिगूल अक्षरभस्म हरताल शुद्ध, मसिल शुद्ध कल सुग्मा शुद्ध रसात (रसवत) सफेद सुरमा, सोहागा राजावर (राजावर्त शुद्ध) हातलेह भस्म, फरबोरी भस्म, शुद्ध गोबर, काँच भस्म, खपर शुद्ध, पाँच भस्म बोही भस्म, शुक्ति भस्म, स्वण गौष, ताम्र, केह, नाग, मंग, यशद प्रत्येककी भस्म यह प्रत्येक द्रव्य एक एक तोला लेना । हीराकी भस्म और प्रवाल मोती पणके पीला रत्न रोहण, नेमोद, नीलम पुष्कराभ प्रत्येक की विष्टि एक एक बाल लेना । शुद्ध पारद तोला ११३ और शुद्ध गंधक तोला ५०२ केर पारद राघवकी कज्जली करना । बड़ ईंसे गाँव का चो तोला २० डाल उसमें कज्जली डाल मंदारिनिसे पकाना, पिगल जाने पर दसमं उपर लिखि भस्म आदि डालकर हिलाना और सफेद बलनाग तोला २१ पीकर खा हो । वह डालकर हिलाकर गोमटपर विष्टिये पेंडीके प-ते पर डोबर पर केडीका बत्ता और गोमय नामपर २४ घटा के पीछे निकाल डोबर रखना । १४ मैरका पूजन कर डोतरमे भा देना । भस्मा २ रत्नी प्राप्त २ रत्नी कापके कासी मिरच रत्नी २, अदरकका रस छोटी चम्मच और साहद छोटी चम्मच मस मिलाकर चिताने । रोगका स्वरूप देखकर दिनभरमे १२ से २० रत्नी तक भस्मा काप करने की जाती है । १ मास सेवन करनेसे जाहरी या अदरकी विषमि केसर बंदोका जन्मा मिटता है । रोगका स्वरूप को देखते हुए ३-४-६ या १२ मास सेवन करना है । विषमि केसरके अग्राय क्षय पांडु स भङ्गी गुणम बालेदेह को २०२६

मीठाह' प्रमेह पोमरोम प्रदर म दागिन उदावतं-गेय चटना पुष्टीरोग इन रोगमे भी फायदा होता है और बैर्य रख आश्रयकृतानुसार सेवन करते रहनेसे रोगका क्षयन होता है ।

विद्रघी हर मिश्रण नं. १—सिद्ध हरताल तो. ०१, स्वर्णभस्म तो. ०१, अम्रक भस्म तो. ०॥, गुग्गा पिष्ट तो. ०॥ अपता गुग्गल तो. २, होरा भस्म रता २, स्वर्ण पपटी तो ०॥, सर्वेश्वर पपटी तो १ सब साथ घोटकर ८० पुढो बनाना । दिनमें २ समय कल्याण घृतसे देना उपर विद्रघी नाशन क्वाथ पिलाना ।

विद्रघी हर मिश्रण नं. २ सर्वेश्वर पपटी तो. १, स्वर्ण वरत मालती तो ०॥ रत्न भागोत्तर रस तो ०॥ ताम्र भस्म तो ०॥ समरर्षीग भस्म तो १, विशोर गुग्गल तो. २ सब साथ घोट ६४ पुढो बनाना दिनमें २ समय शहद घृत दूध या पानीसे देना । उपर विद्रघी नाशन क्वाथ पिलाना ।

विद्रघी हरी चटो (टेन्सर रिल्वे) रौप्य भस्म तो ४, अम्रक भस्म तो ४, पूर्ण चन्द्रोदय तो. ५, स्वर्णभस्म तो. १, प्रवाल शणिध्य नीलम गोमेद वैदूर्य वैष्णव प्रत्येककी पिष्टो तीन तीन तोला, गोरखमुडी चोपनीनी कृती सेठ पीपळ हलदी वजुरा प्रत्येककी पिष्टो तीन तीन तोला अष्टवर्ग आठो मिलाकर १६ तोला सबको महीन कूट कर पानीसे या शहदसे मुंग प्रमाण गोली बनाना । प्रारम्भमे दिनमे दो या तीन समय दो दो गोली पानीसे देना उपर कल्याण घृत १ से २ तोला गोलीके उपर खिलाना अथवा ज्यवनप्राश १ से २ तोला खिलाना रोगका स्वरूप देखकर और कितने समयका पुराना है किस अवयव में फेरा है जान कर इस गोली के साथ सर्वेश्वर पपटी स्वर्ण पपटी रत्न भागोत्तर रस ताम्र भस्म आदि भी १ से २ रती देना ।

विद्रघीनाशन क्वाथ—रुदती क्षुप, अंकोलके बीज अजन वृक्ष, नीम रुजुन, दह पंपल वृक्ष शिरीष (सरसदा) मीलसरी प्रत्येक वृक्षको छाल राम्ना पुन्नावा गोरखमुडी, अम्रगंज हरद सब समान भाग लेकर कूटकर रखना । फांट या क्वाथ कर अकेरी या किण औषधके साथ पिलाना ।

रत्न रसायन—हीरा भस्म ३० रती, स्वर्णभस्म तोला १, गोप्यभस्म, तो. २ पारट तो. ३, गंधक तो. ४ अम्रक भस्म तो. ५ माक्षिक भस्म तो. ६ वैष्णव भस्म तो. ३, अष्टवर्ग आठो मिलाकर तोला ३२ सब साथ मिलाकर मुंग औषी गेले पानीसे करना । दिनमें २ या तीन रफे २ से ३ गोली हर समय देना । उपर क्वाथ पिलाना ।

प्रकिणं सपाय

१. अफेद गुनन का का मूल वायवरण का मूल एक एक तोला पानिमे पौष पीलाना ।

२. सदृजनाका मूल तोला एकधेा पौष उसमें से घानेन रसी ३ और हिण रसी १ सालहर पिलाना ।

सदिरादि क्वाथ—सौंही छाल दृढ बहिदा आंयगा नीमकी छाल मूली छं का मूल रुदती क्षुर, मजन बृक्षकी छाल टोला निषेथ अंकेल छाल सब मायन सेहर कूटकर रखना । २ से ३ तोलाका क्वाथ या फोट कर पिलाना ।

विद्रवि हर लेप—एलवा (एलीयो) सगसो संघानेन तिल सज्जीखार हलकी सेठ कुण्ठ घुंकरमूल प्रत्येक तोला १॥ देव कपडे घेनेका देशी सानून तोला ४, एरु वीज तोला ४ सब कूटकर रखना अदर के त्रिष अगमे केन्हर हो उचके बाध मंगमे यह लेप गौंमृषमे या केलाके स्तभके पानीमे पेष कर करना उपर केलाका पत्ता लगा कर पाटा बांधना ।

विद्रवि हर धूम—गुगल तोला १००, गुड तोना २०, अर्जुन पंपल बड दिरीश बहुत मस्येक को छाल दश २५ तोला, मीडीमें पानेका देसी जादा तोला, ५० गायका घो तो. १०, सब साथ कूटकर पानीमे पीसकर एक एक तोला को टकसा करना । हुयके मे या चिलममे धुन दिनमे ३-४ दफे पिलाना, वा निषूष अग्नि पर रख नलीके द्वारा श्वात्र मे दूध पोना केन्सर मे लाभ होता है ।



गंडमाला गलगंड कंठमाल

चिन्ह—प्रारंभम हृदयकी और कानके पीछे के भागमें छोटी छोटी ग्रन्थी होकर बढ़ती है, कभी बैठ जाती है। फिर कुछ दिनों या महिनों के बाद फिर उमड़ आती है। यह रोग कियेको जिदगीभर रहता है। रोगी कमजोर निस्तेज हो जाता है। आंखें से पाना गिरता है, होठोंमें चीज पड़ता है। दाँतोंके मसूड़ों मृदु होते हैं भूख कम नाड़ीकी गति तेज, शरीर तप १५५ इवरींग मुखार इत्यादि चिन्ह रहते हैं। किसीका पक पर फुटती है। पेटमें पेश में इसे क्षय के पूर्व चिन्ह कहते हैं लेकिन वस्तुतः यह बात ठीक नहीं है। उपचार करते रहनेसे मिटता है उमड़ता है और दीर्घ समय तक औषध सेवन करते रहनेसे अच्छा हो जाता है। यह रोग कईजोको जिन्दगी भर रहता है।

एष्टयाष्टय—चावल जौ सुग चना कुलथी गेहूँ ज्वारी आदि घन्य कटोले एक वर्ष पुराना खाना। पावल कोभी फुलावर सहनेकी फली कटोला बैंगन करेला बाटोला दूधो सूरण घी दूध बादर आदि खाना। मांसाहारी लोग मयूर मोरको छँदकर जंगली पक्षियोंका मांस या मांसरस ले सकते हैं। बहुतसा वसेला रस गायका दूध गुणकारी है। जठराग्नि दीपन करनेवाली चीजे खाना आहार विहार नियमित रखना। दस्त पिशाब साफ रहे यह ध्यान रखना। बाजारकी मिठाई बाजारका खुराक खी गढ़ानेका तेल नहि खाना। एष्टसप्ताहमें ३ दिन ब्रह्मचर्य पालन करना। शरीरपर या ग्रन्थीपर तिलके तेलमें हल्दी मिलाय मर्दन कराना। परिश्रम कषरत नहि करना, माषण कम करना। गर्म जलसे स्नान करना।

कांचनार गूगल—चूचनारकी छाल तोला ४०, त्रिफला तीनों मिलकर तोला २४ वनकी छाल तो. ४०, सेठ पीपल काली भिरच प्रत्येक चार चार तोला, तम्र इलायची तमालपत्र प्रत्येक एक एक तोला सब महन कूटकर शुद्ध गूगल तो ११० सब साथ मिलाकर गोरखमुंड़ीके कवाथमें घोट उसमें गायका घी तोला २० मिलाकर ३ रस्तीकी गोली बनाना। मात्रा ३ से १२ गोली तक दिनभरमें दी जा सकती है। पानी या दूधसे देना। शक्य होतो गोरखमुंड़ीका कवाथ या कांट उपर पलाना। आधा तोला गोरखमुंड़ीके कूट कर २ कप पानीमें रातको भिगा रखना प्रातः कुछ गर्मकर घपस छान कर दिनमें २ घंटे इस गोली पर या अन्य औषधपर पिलाना। यह कांचनार गूगल ४० ठपाल रसेली अर्बुद ग्रन्थी गुल्म कृष्ठ भग पर आदि रोगोंमें उत्तम गुणकारी है।

गंडमाला कढ़न रस—पारद तोला २, गंधक तो ४, ताम्र मरुम तो १, त्रिकटु तीनों मिलाकर तो १, पुनर्नवा तो २, सर्पगंधा तो. २, गोरखमुंडी तो. ३, कचनारकी छाल तो. १२, गुग्गुल तो १२, हरद तो. ४, हरताल मरुम तो. १, कोह मरुम तो. २, से घानोन तो १ सब साथ भिलाकर कचनारकी छालके कषायसे भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना या घोटकर रखना । ३ से ४ रत्ती सुबे और शामको पानी दुध या शहदसे देना । उपर महामंजिष्ठादि कषाय या गोरख मुंडीका कषाय पिलना । कठमाल ग्रन्थी आदिमे उत्तम गुणकारी है ।

गंडमाला हर मिथुण—ताम्र पर्पटी तो. १, अमृग गुग्गुल तो १, योगराज रसायन तोला १ सिद्ध रसायन कृत्प तो. ०॥, घांचनार गुग्गुल तो २, महालक्ष्मी विलाप तो. १ सब साथ पीस ३ से ४ रत्ती दिनमे दो समय शहर मखन दूध या पानीसे लेना ।

कठ लोकेश—पारद, तो. ४, गंधक तो. ८, ताम्रमरुम, लेहमरुम, माक्षिक मरुम, शख मरुम हरद बहिर्वा आंवला सोठ पापल कलीभिरच अतीस पुनर्नवा सर्पगंधा कटामांसी शिलाजित् चित्रकमूल, धरना कुटकी जलपिप्पली (रतवेलीये) छोटी कटहरी मूल निमकी छाल गिलेय देवदार गोरखमुंडी प्रत्येक दो दो तोला, गुग्गुल १० तोला, सब साथ कूट मिलाय नीमके परते कचनार गोरखमुंडी प्रत्येक के कषायको एक एक भावना येकर घोटकर रखना या रत्ती प्रमाण गोली बनाना । मात्रा ३ से ६ रत्ती दिनमे दो या तीन दफे पानी या दूध से लेना । गलगड कठमाल ग्रन्थी अवृंद विप्रवि अर्तद्रिधि कुष्ठ आदिमे उत्तम गुणकारी हैं ।

गलगड हर तेल—गुंजामूर गुंजापन चदन गिलेय नमके पत्ते इसराज देवदार पुनर्नवा मूल हरद कुष्ठ भांगरा प्रत्येक दस दस तोला, कचनार की छाल ३० तोला, गोरख मुंडी १० तोला सब साथ कूट पानीमे रातभर भिगोरखना । प्रातः काल इससे सरसोका तेल रतक १० डाल कर पड़ना । पानिका अथ जल जाय जब ठंडा होने पर कपड छान करना । इस तेलका बुंद नाकमे डालना, रोगपर मालिस करना । कपडे के टुकडे को तेलमे भिगोकर प्रथी पर रख उपर किसी वृक्ष का पत्ती धब रुई दाब पाटा बांध रखना ।

गलगड हर लेप—त्रिकटु (त्रिकलो) छाल सद्भाकी छाल सफेद बछनाग कांचनार छाल अरगी मूल गिलेयका कद अम्लतास चिरोजी (गुजा) ईगुरी फलका गर्भ सब सम भाग लेकर कूट कर रखना । पानीमे पीस गर्दकर लगाय उपर पान बंध पाटा बांधना ।

गलगड हर क्वाथ—दशमूल अपराजिता (गरणी) कचनार बरना इन्द्रायण मूल गिळोय हरद देवदार अषगंध सारिबा दभमूल पुननंवा मूल सेठ पीपल काली मिर्च वायविडंग रास्ना पुष्करमूल तिलपणी (तलवणी) गोरखमुंडी सब समान भाग लेकर कूट कर रखना । १ से २ तोलाका क्वाथ कर या फांट बनाकर पिलाना । किसी औषध के अनुमान रूपसे या अकेला गलगड फठमाल ग्रन्थी आदिसे पिलना ।

दोषघ्न लेप या दशांग लेप पानीसे पीस गम कर लगाना । महानारायण तेल मालोष करना ।

सामान्य उपाय

१ ब्रह्मदंडोका मूल पकते हुए चाबल के पानीसे पीस लगानेसे कंठ मालकी गांठे पक गइ हो वह फुट कर रुझ आती है ।

२ गोरखमुंडी (बोडोयो कलार) का मूल कूट पीसकर लगाना, पिलाना

३ जमालगोटा के पान को पीसकर उसके रससे सेगठी बनाकर छाया में सुखा कर रखना पानी से पीस लगाया ।

अश्वत्थुरादि मलम—बोडा का नख हणिका सींग और चमड़ा अंतर्धूस जलाइए तोला १६ लेना उषमे बैरलो तो. १॥, राल पकाया नीलाधोया फिट-करी प्रत्येक एक एक तोला सब साथ घोंठ कर पुराने घोंमें मिलाय तामे के वर्तन में डाल रामेके लेटेसे ६ घंटा मर्दन कर रख छेडना यह मलम लगानेसे कंठमाल आदिकी ग्रन्थीयां मिटती है ।



वलमीक राफी

चिन्ह—यह रोग प्रायः पाँवके नीचेके भागमें होता है। कभी हाथ कंठ खंभा काख साँधा और गलेमें भी होता है। आरम्भमें पाँवके तलुओंमें, फणामें या हड्डीमें या अन्य स्थानमें ग्रन्थी-गंठ होकर पककर छिद्र पड़ पड़के साथ काला या सफेदी लिये मुखरा या लाल दानेदार राइ जैसा पदार्थ निकलता है। खेतोमें नंगे पाँव काम करने वालोंको पाँवमें क्षत या व्रण जैसा चाँदा होता उसमें इस रोगके जंतु दाखल होनेसे यह रोग होता है। समय बँतने पर उसमें अधिक छिद्र पड़ते हैं सृजन बढ़ती है और सब छिद्रोंसे पस-पसके साथ मिट्टी जैसा पदार्थ (उकेरा) निकलता है। बहुत छिद्र पड़े हों चाँदा व्रण पड़े हो पाँव या हाथ के उपरके भाग में हुआ हो और उसमें बहुतसे छिद्र पड़े हो शोथ हो वह असंध्य है।

उपचार—रोगवाली जगह चोर कर बिगड़ा हुआ भाग निकाल व्रण शोधन क्वाथ आदिसे यारीठे के पानीसे धोकर व्रण रोगमें बताये हुए तेलसे कपड़ेका टुकड़ा मिगोकर उस भागमें दबाकर उपर ढाकधा पत्ता दाब पाटा बाँधना। उस भागमें क्षार कर्मसे अथवा मर्दिनसे वह भाग जलाया भी जाता है। पीठे रोपण रुझका उपचार करना। हाथ व्रण रोगमें लिखी रक्त शोधक दवाओंका सेवन कराना। यदि रोग ज्यादा बढ़ गया होतो पाँवको कटना पड़ता है।

वलमीकहर मिश्रण—ताम्रपर्पटी तेल १, हरताल भस्म तो. १, काँचनार गूगल तो १ सब साथ घोट ६४ पुढी बनाना। दिनमें १ समय मद्धा-म जिष्ठादि क्वाथसे देना।

वलमीकहर तेल—मैनसिल हरताल पारा गंधक भिलावा इलायची अगर सफेद चंदन अमेली के पान सबको गौमूत्रमें पीस उसमें निमोलका तेल पकाकर रखना उपर लिखे अनुसार उपयोग करना।

वलमीकहर लेप—राल सिंदूर कृत्या हीरादखण मैनसिल मौम घीसे मलम बनाना।



छाती हृदय रोग और फुफफुस रोग छाती और फेफड़ों के रोग

कारण—बहुत गर्म चीजे बहुत खाया बहुत मधुर पदार्थ खाना अधिक चाय काफी पीनेकी आवत, बहुत परिश्रम, अति मदिरा पान, हृदयपर किसी चीजका अवन लगना, अजीर्ण पर भोजन अति छोटा, चित्त मल मूत्रादिका वेगको रचना प्रिय व्यक्तिया निषेध प्रिय वस्तुका नाश या गमाना, अतिक्रोध, अतिशोक, अनेभय और आहार विहारकी अनियमितता आदि कारणोंसे हृदयका रोग होता है और हृदय कमजोर होकर बंध पड़ जाता है ।

चिह्न—वायुप्रधानमे रींच हो चीराता फटना हो औषा लगे किसी चीज मोहनी हो औषी पीडा छल हो । पत प्रधानमे तृपा लगे दाह हो जोष लगे पसीना अधिक हो बेरैनी हो । कफ प्रधानमे सुस्ती हृदय पर बेझ-मार जैसा लगे सुस्ती किसी काममे निरुत्साह कफ गिरे, भूख मंद, शरीर झट्ट जाय सुस्ते चिह्ननापन मधुरता अदि लगे । कभी छातीके मर्म स्थानमे ग्रन्थी भी होती है ।

रक्षाशय के दोहरे पल्लका शोथ—हो तो बुखार के साथ उस जगह दर्द दाये कमसे दाये दाथ में सींच (आधका) छातीमे धक्कारा (धक्का) नाड़ीकी गति तेज धमराहट कमजोरी भेद्युद्धि आदि चिन्ह होते हैं ।

रक्षाशय चढे या पीला हो सौ—बोझा भी थप करने से खाए चढे निद्रा कम हो नाड़ी अनियमित दर्द, यह भाग मोटा हो फूल जाय ।

रक्षाशय के पल्लदा के रोगसे—बायी बाजू गन्दी मोटा हो पीली हो, छाती उठते सपणी फेफड़ो मे सूजन हो, नाक या पेटसे खून गिरे हाथ पान पर शोथ हो पक्कर सून्छी निद्रा कम येछासा श्रम करनेसे श्वास चढे अदानक बेद्युद्धि हो ।

हृदयका थडका—मे छातीमे जलन हो गला मे रुधन हो गलेमे गोला चढा हो बेसा दखे मुन लाल लिये हो सिरमे दर्द हो ।

हृदय झूल—छाती के बीचसे दर्दका प्रारंभ होकर पीठ के बीचों बीच के दर्द होता है । उस समय नाड़ीकी गति मंद होती है सास लेना कठिन होता है शरीर ठठा पड़ता है । पसीना बहुत होता है एक ठो नोट दर्द उठार कुछ समय देता है फिर दर्द उभड़ता है और उपचार में शक्त होती है । इस प्रकार हर रोग के चिकित्सा उपचार मिलता है ।

पथ्यापथ्य—आक के या ऐरंड के पत्तो पर मदनारायण तेल या ऐरंड तेल लगा कर तपा कर छाती पर बांध उपर पाटा बांध शोक करना । दस्त पिशाब होने की दवा देना । शारीरिक श्रम न करना । मन शांत रखना । शोक चित्तान करना । सूखी हवा प्रकाश वाले कमरे में रखना । ठंडी या वर्षा हो तो अंगुठो आरने उपलकी रखना । कपड़े के गोटेसे शोक करना । शरीर पर ठंडा पवन लगने न देना । अजीर्णवादी पेटमें वायु गैस आध्मान आकरा नहो यह ध्यान रखना । भूषका खुराक ज्यादा रखना । पाचन में लघु हो औसा खुराक लेना । सूरण वेगन, दुधो फुलावर कोशी परवल हि । घनिया जीरा हलदी नमक भंठानीम कालो भिरच अदरक पुराने घान्य औ चावल गेहु बाजरो चना मुंग उडद तुरी आदि हितकारक है । गर्म जल से स्नान करना । महानारायण तेल मशालाक्षादि तेल तिलका तेल शरीरपर मालीस करना । मुग फलोका तेल वेजंटेबल घो बहुत खड़ा बहुत गर्म जल पदार्थ खाना नहि । बहुत ठंडा पदार्थ, आइस कीम पुन्की चे कहेट पावडरका दूध खड़ी छाछ, खड़ा दही खाना नहि । चा काफ़ीका व्यसन हो तो निखलस दूधकी एक दो दफे पीना । खंड शक्करका मिठाई कम खाना । फरसान नहि खाना । ठंडे पानीसे नहि नहाना ।

दुनियाके आगे बढे हुये देश वैदिक पद्धतिके वैज्ञानिक लोग, हृदयरोग केन्सर क्षय जैसे रोगके रीसर्वमे अद्वल्य घन खर्च रहे है । इस प्रकार हृदयरोगके पीछे भी जमानासे प्रयत्न और घनका बड़ा व्यय करते है पर इमका कोई परिणाम नहि हुआ । वर्तमान वैदिक वैज्ञानिकोंके सामने क्षय केन्सरके रोगकी तरह हृदय रोगका प्रश्न भी खड़ा है । विज्ञानमे आगे बढे हुए देशोमे क्षय और केन्सर रोगसे मरते है इससे ज्यादा लोग हृदय रोग से मरते है । हृदयके रोगियोंको रक्त देनेवाली रक्त वाहिनीओकी खराबीसे भी हृदयरोग होता है । कफके प्रकोपसे या कफकारक पदार्थो खानेकी आदतसे बढे हुए कफसे रक्त बहन करने वाली शिराओमें कफश या कफ जैसे चिक्कट पदार्थ जमनेसे वह बमजोर होती है । अंदरका रक्त बहन करनेका रास्ता संकुचित होता है इस कारण हृदयको आवश्यक रक्त नहि मिलता । अचानक दम चठनेसे रोगी हाथसे छातीको दावता है और विलायती दवाका डोझ ले लेता है । रक्त वाहिनी ओमे घुसा कफ जैसा पदार्थ दूर करनेकी या रक्त वाहिनीयाकी जडता दूर करनेकी दवाई औषतक नहि निकली । विलायती दवसे कभी तत्कालिक आराम मिलता है लेकिन रोग नहि मिटता या रोगका मूल कारण दूर नहि होता । यह कार्य तो आयुर्वेदिक दवाई हि कर सकती है । दुनिया भरके ओलोपेथ डाक्टरों और वैज्ञानिकोंको केन्फरन्से मिलती रहती है । इसरोगकी दवाइका आविष्कार करनेके श्रिये करोडो

रूपयाका खरचा प्रत्येक देशकर रहा है पर फलता नहि मिली । जब आयुर्वेद और इसके रसयन साधने हृदयके विविध रोगोंकी अपिसुनोशने से बड़े वर्ष तक अनुभव लेकर से बड़े दवाइया अपनी अपनी संहिता या ग्रन्थोमे वर्णित है इसका संशोधन करना अन्य देशोको तो सुझाना संभव नहि परच हमारी सरकारके ध्यान पर भी यह बात नहि आति यह खेदका विषय है । हृदय रोगके लिये, हृदय चलवान होकर बदन पड जाय इसके लिये आयुर्वेदिक दवाइ हि फलता प्राप्त कर रही है और इसका हि अंतिम विजय है ।

हृदयार्णव—अध्रक भस्म ताम्र भस्म पारद गंधक पीपल सब सम भाग लेकर हरच पीलु और अजुन छालका ववाथ कर भावना देकर घोट कर रखना । मात्रा २ से ३ रती दिनमे २ दफे कटकारी अवलेहके साथ देना ।

हरिहर रस—पारद तोला ८, गंधक तो. १२, अध्रक भस्म तो ६, लेह तम्र शंख कौडी शुक्ति प्रत्येककी भस्म रस, सिंदुर वंशलोचन इलायची पीपल सेठ कालोमीरच शिलाजीत प्रत्येक चार चार तोला सब साथ विधिवत मिलाय अदरतका रस, केलीके स्थंगका रस अद्वयोका रस, अजुनकी छालका ववाथ काफोटी (कैसीदरी) रस प्रत्येककी एक एक भावना दे कर छायामे सुखाकर घोट रखना । मात्रा २ से ६ रती शहद कटकारी अवलेह च्यवनप्राश दुध किशोके साथ दिनमें २ या ३ व्रत देना । हृदयकी कमजोरी, हृदयस्थ श्वास की अधिक गति पुपफुफके रोग खांसी क्षय कमजोरी स्वर नली अन्न नलीका रोग गलेसे हृदय तक किसी स्थानमें हुआ विविध केन्सर आदिमे उत्तम गुणकारी है ।

प्रभाकर वटी—स्वर्णमाक्षिक भस्म लेह भस्म अध्रक वंशलोचन शिलाजीत सब समान भाग लेकर अजुन वृक्षकी छाल के वषथमे दो दो रतीकी गोली बनाना । शहसे अथवा वासावलेहसे २ से ४ गोली दो समय देना छातीके रोगमे उत्तम गुणकारी है ।

शंकर वटी—पारद तोला ४, गंधक तो. ८, लेह भस्म स्वर्णमाक्षिक भस्म वंग भस्म शंख भस्म शुक्ति भस्म प्रवाल भस्म अध्रक भस्म प्रत्येक चार चार तोला मिला कर पीलु चित्रक अदरक अरणी अड़सां बीलीमूल अजुन प्रत्येकके ववाथ या रसको एक एक भावना देकर दो दो रतीकी गोली बनाना । दिनमे दो समय २ से ४ गोली पानीसे देवर उपर कटकारी अवलेह अथवा श्रीबहुशाल १ से २ तोला खिलना । हृदयके छातीके सर्वरोगमे बहुत फायदा करती है ।

त्रिनेत्र रस—पारद गंधक अध्रक भस्म समभाग लेकर अजुन छालके ववाथकी २१ भावना देना । मात्रा ३ से ६ रती शहदसे देना ।

हृदय रोग हर मिश्रण—रत्नभागेत्तर रस तोला १, मुक्ता पिष्टि तोला १, स्वर्ण वस्त्रत मालती. ०॥, वसंत कुसुमाकर तो ०॥, छोटी पीपल तोला २ सब साथ पीस घोट कर बीसीमे भरना। प्रातः शाम ३ से ६ रती शहद मखन या दूधसे देना। हृदयके फेफड़ोंके सब रोगमें उत्तम है। हृदयके बलवान बनाता है।

हृदय पुष्टि मिश्रण—महालक्ष्मी विलास शिलाजतु प्रयोग योगराज रसायन बंगमस्म श्वेत प्रवाल चद्रपुटी स्वर्ण माक्षिक भस्म लाल प्रत्येक एक एक तोला और छोटी पीपलका चूर्ण २ तोला सब साथ मिलाकर माशा ३ से ६ रती दिनमें २ बख्त शहद दूध या पानीसे देना। उपर पूर्ण चन्द्रोदयकी पड़गुणकी गोली २ से ३ देना। छती हृदयके सबरोगोंमें उत्तम गुणकारी है। इसके सेवनसे हृदयबन्ध पढ़नेका भय नहि रहता।

अजुनारिष्ट—अजुनछाल शेर ५, छोटी कट हरी पंचांग शेर ५ कसौदी (कासोंदरे!) के पानी शेर ५ सबके साथ मिला दसगुने अर्थात् १५० रतल पानीमें पकाना आधा पानी रहनेसे कपडछान कर एक चिनाइ मिट्टीकी बरणीमें या लकड़ीका कौठीमें भर उसमें घाईके फूल शेर. २॥, तज तमालपत्र नागकेसर इलायची लोंग कांली मीरच सेठ पीपलौमूल प्रत्येक आधा आधा सेर और गुड शेर १० डाल कर चिनाइ मिट्टीकी बरणीमें अथवा लकड़ीकी रांगदीहू पितलकी कौठीमें भरकर मुख बन्दकर रख छोड़ना दसदश दिनके पीछे खोलकर हिलाते रहना। डेढ या दो मासके पीछे खोलकर कपड छान कर पक्क न जाय ऐसे बर्तनमें भर रखना। यह आधव २ से ५ तोला तक दिनमें दो दो दफे अकेला या किसी औषधके पीछे पिलाना। छातीके रोग वरक्षत हृय खाँसी आँस फेफड़ोंके रोग आदि मिटते हैं।

हृदय भयहर गुडी—पूर्णचन्द्रोदय, स्वर्णभस्म मुक्तापिष्टी माणिक्य पिष्टी पुष्कराज पिष्टी वैकांत पिष्टी नीलम पिष्टी गोमेद पिष्टी वैडूर्य पिष्टी प्रत्येक आधा आधा तोला, महालक्ष्मी विलास तोला १, जय मंगल रस तोला ०॥, हीरामम्म रती ६ लेना। पहिले हीरा भस्मके, पूर्ण चन्द्रोदयमें डाल २ घंटा घोटना पीछे स्वर्णभस्म और मुक्ता पिष्टीडाल २ घंटा घोटना पीछे दूसरी सब चीजों डालकर ४ घंटा तक घोट कर इसके अदरखके रसकी और तुलसीके पत्तेके रसकी एक एक भावना देकर दो दो रत्तिकी गोली बनाकर रखना प्रातः काल ३ से ४ गोली अथवा चूर्ण ३ मासके साथ शहद या मलाई या दूधसे देना। पीछे दूध चाय काफी पीनेकी आदत हो पीना। पध्य खास नहि है, लेकिन हृदय रोग वालेने चा कपजोर हृदयवालेने किसी भी औषधका सेवन करते हो या न करते हो चाय काफी केका बद् न कर सके तो एकसे अधिक बख्त नहि पीना। आइस्क्रीम गुल्फी चोकलेट बाजारकी मिठाई आदि नहि खाना।

मुखके बाहरके भागके रोग

कारण—अजीर्णसे, दाढ़ पीनेसे, खराब हवा पानीसे, दस्त पट्ट रहनेसे मुखमें खील दाढ़ या चमड़ीके रोग आदि होते हैं । ज्वानके प्रारंभमें खील जैसे चमड़ीके रोग होते हैं फिर स्वाभाविक हि दो चार साल के पीछे मिट जाते हैं ।

पथ्यापथ्य—दस्त पिशाबका खुलसा हो यह ध्यान रखना । यदि दस्तकी कब्जी रहती हो तो मधुविरेचन चूण २ से ६ मासा सप्ताहमें दो तीन दफे लेते रहना । आरेखवर्धनी गोली च ध्रुवा कीशोर गुगल पुननवा गुगल अमृता गुगल में से किसी की २ से ४ गोली लेना । सफेद मिट्टी दुध या पानीमें मिलाय मुखपर मर्दन करना । दशांग लेप दस तोलामे ४० तोला सफेद मिट्टी अथवा शंखजीरा मिलाकर रखना हमेशा स्नान के समय पांच दस तोला गमणलमें मिलाय मुख पर मर्दन करना । महालाक्षादि तेल अथवा मृंगराज तेल मर्दन करना ।

कुक्षुमादि तेल—केसर चंदन लोदर पतंग रफ चंदन कृष्णागुरु मज्जीठ वाला मूलीठीमूल तमाल पत्र पद्मोकाष्ठ कमलकंद कुण्ट गोरेशचन हलदी लाख दाहहल्दी सेनागेर सरसो वच शेषगुंदर प्रत्येक एक एक तोला लेकर महीन कर उसमें पानी तोला २०० और गायका दूध तोला ८० मिलाकर १२ घंटा रहेने देना । पीछे उसमें तिलका तेल तोला ४०० डालकर घीमें आचसे पकाना पानीका अंश जल जाय जब उपवहान कर रख लेना । मुखपर मालीस करनेसे व्यंग छाया झांयो खील दाढ़ आदि मिट कर मुख सुंदर होता है ।

मुखके खील के उपाय

- १ इगोरिया (इशुर्गी) के फलका गीरी पानी में पीस मुख पर मर्दन करना
- २ लोध पत्र और धनिया सत्र भाग ले कूटकर पानी में पीस मुख पर लगाना ।
- ३ आयफल चंदन नागधेसर समभाग लेकर कूट पानी में पीस लगाना
- ४ मशूर के आटा १० तोला अंदाज लेकर उसमें घी आधा तोला डाल दूध में मिलाय मुखपर मर्दन करना ।
- ५ सरसो जी लोदर सेवानेन समभाग ले पानी में पीस मुख पर लगाना
- ६ अर्जुन की छल को गाय के दूध में पीस कर लगाना,
- ७ मसूरका आटा और बड़की केमल बड़वाई समभाग ले पानी में पीस मुख पर लगाना.

८ सेमल (शाल्मली) का फटां दूध में पास लगाना

इन प्रयोगों से स्त्री या पुरुषों के ज्वानीप्रे या अन्य कारणसे उत्पन्न हुए खीर (मुखदषिका) मिटते हैं।

मुख पर के काले छाली या सफेरी लिये डाघ आदिके उपाय

१ रफचदन मज्जीठ कुण्ड लोदर आमका मोर बडके अंकुर मसूर की बाल शेषमुंदर समभाग कूट मिलाय रखना हमेशा गाय के दूध में पीस मुखपर लगाने से मुखकी छाया डाघ मिटता है।

२ हल्दी कपूरचली प्रियंगु (घडंला) मसूर और मुंग सब सम भाग कूट रखना पानी में पीस मुखपर मालीस करनेसे मुखकी छाया काला लाल डाघ चांठा मिटे।

३ इंगुरी (इगोरिया) के बीजको पकते हुए चावज के पानी में पीस लगाते रहना काली झाड़ छाया डाघ घागा मिटे।

४ करंज बीज ठोकरे बीज कुछ हल्दी समभाग मिलाय पानी से था चावल के पानी से पीस मुख पर लगाना छाया डाघ आदि मिटे।

५ चनेकी दाल तो १० रातोंका भिगा रखना प्रातः निवुके रसमें पीस उसमें नीलाधोथा कच्चा १ म'सा मिलाय पीस मुखपर मर्दन करना।

६ कपूर हीरादण्ड राल बोदर पारद गंधक कनक बीज नीलाधोथा प्रत्येक पांच पांच तोला लेना पारा गंधक घोट कज्जबी दर पीछे बोदार डाल घोट पीछे दूसरी बीज मिलाना गायका घों तोला २०० लेकर १ म' दर उसमें सोम तोला ५ डाल पोछल जाने पर दूसरी वस्तु मिलाय मलम बनाना लगानेसे मुखकी छाया डाघ घावा आदि मिटते हैं।

७ बेर (वारी) की लाख बबुलका मूळ या छाल केसर सोहागा सम भाग लेकर कूट कर रखना। निवुके रस में धोत लगानेसे मुखकी छाया दूर हो।

८ सरसो लोदर हल्दी घडंला (प्रियंगु) तिल मसूर सम भाग कूट पानिसे पीस मालीस करना मुखकी छाया मिटे।

९ सरसो और जौरा सम भाग ले पानीसे पीस मुखपर लगाना मुखकी छाया जाय

१० अमलतासके पान पीस मुखपर मर्दन करना मुखकी झाड़ छाया डाघ मिटे।

११ तिल जीरा शाहाजीरा सरसो समभाग मिलाय दुध में पीस मुख पर मर्दन करनेसे सब प्रकार के डाघ खील मिटे।

१२ सेनागेठ मर्लठ नागरमोश, हलदी दाहलदी समभाग मिलाना ।
पानीसे या दुधसे पीस लगाना । काले डाघ आदि मिटे ।

१३ छोटी हरद्व (होमेज) बोदार गघक समान भाग त्रिलाय निंबु रसमे
लगावे काले डाघ जाय ।

१४ गघक गूगल लेगान शक्कर सफेद चदनका चूरा समान भाग मिलाना
पानीमे पीस लगानेसे कपाल के मुखके काला टाधा मिटे

मुखके मसा के उपाय

१ नवसार सोहागा फिटकीरी खंखिया सत्यानासीका मूल समभाग कूट निंबूके
रसमें घोट सुपारी जैसी सोगठी बनाना । नीबुरस मे या पानीमे घीस कर मसके
मूलमे लगाना । मुखके गलेके मसे गिर जाते है । उस जगह से खून गिरे तो
अपामार्गके पत्तेधो पीस पोटीस लगा देना रुझ आ जाती है । यह सोगठी
विपैल है ऐसा लेवील लगा देना ।

२ लाल खंखिया नीलायोधा सफेद मिट्टी मैनघील जूना पापढतार सब सम
भाग छर घोटकर निंबुरससे सोगठी सुपारी जैसी बनाना । पानीमें घीस कर
मसके मूलके लगाना । मसके उपर घीका फाँवा रखना । मसा निकल जाता है ।
पीछे उस जगह रोपण मलम लगाना ।

३ सज्जीखार शंषका कच्चा चूर्ण पानमे खानेका चूना सम भाग मिलाकर
रखना पानीमे मिलाकर लेप करनेसे मस गिरजाते है ।



दिमाग मगजके रोग

प्राणाः क्षिता हि यत्र प्राणभृतामिन्द्रियाणि सर्वाणि ॥
 सर्वाङ्गानामग्र्यं शिर उत्तममङ्गमुच्यते विद्धि ॥१॥
 घाताद् अशक्तिं शूलं स्फुरणं पिच्छात्सदाऽधृमातिः ॥
 गुरुता भ्रष्टता च कफात्पीडा प्रातस्तथा रजन्यां वै ॥२॥
 दोषत्रिकच्छिन्नुतं त्रिदोषजं क्षिप्रमिव पुनश्च शिरः ॥
 दौर्गन्ध्यकं हुनोदाति युतं वैद्या वदन्ति पुण्युतम् ॥३॥
 ॥ रसेद्वारं तत्र ॥

कारण—मल मूत्रका वेग रोकनेसे, रातको आगरण कानेसे दिनको सोनेकी अधिक आदतसे, सामनेका पवन लेनेसे, बहुत कम कानेसे बहुत अग्नि या सूर्यका धूप सेवन करनेसे, भीठाई बनाने वाले हलवाई (कंथाय) या घूमने काम करने-वालोंको अग्नि और धूप सहन करना पड़ता है । अङ्गणपर मोत्रनसे बिना भूख खाते रहेनेसे, अतिविषय सेवनसे, हस्तदोषकी कूटेवसे, दिमागका काम हृदसे ज्यादा करनेसे, क्रोधसे शोकसे मानसिक आघातसे भयसे चिंतासे दाह धरनेवाकी गरमागरम चीजे खानेसे, चाय काफी जैसी चीजोंका अधिक व्यसनसे, आवेशसे, अति आनंदसे, हृदसे ज्यादा हास्य करनेसे हसनेसे अति उपवाससे, अतिमापण करनेसे, अप्रिय अथवा विपैल वस्तुकी गंधसे घूल घुंवा ठंडी या ताप लगनेसे, अति खट्टा अति तीखा पदार्थ बर्फ आइसक्रीम गुल्फी जैसी चीजे खानेकी आदतसे रगबेरगी प्रवाही पीनेसे, दुःखका समाचार सुननेके पीछे अश्रु (आंखु) रुकनेसे-अश्रु न पड़नेसे मस्तक पर किसी वस्तुकी चीट लगनेसे, वर्षाकी ऋतुके प्रारंभसे, ऋतुबदलनेसे, मनके आघात चिंतापसे, अतिरुदनसे देशकाल हुआ पानी बिगड़नेसे इत्यादि अनेक कारणोंसे मस्तकका खून बिगड़कर वात पित्त कफका प्रकोप होकर विविध प्रकार के मस्तकके रोग उत्पन्न होते हैं ।

जातजन्य मस्तक पीडा—उच्च स्वरसे मापण करनेसे, दाह अधिक पीनेसे आगरणसे, ठंडा पवन लगनेसे अतिविषयसे मल मूत्रादिका वेग रोकनेसे अधिक उपवास करनेसे अश्रु (आंखु) रोकनेसे शोक भय प्रापसे अधिक सार शिर पर ठठानेसे पथ करनेसे इत्यादि कारणोंसे बड़ा हुआ वायु मस्तककी शिराओं से घुसने से मस्तक पीडा होती है । झुकुटी छलाट से पीडा हो, मस्तक फिरे चक्कर के साथ पीडा हो छोटी नसे फरके । बड़ी शिरोधरा नसे झकड़ जय । रातको पीडा बड़े कपडा बांधनेसे स्निग्ध गर्म वस्तु लगानेसे शोक करनेसे पीडा कम हो, यह बात अन्य मस्तकरोग है ।

पीछे पकाना घट हो जाय जब अग्नि बंद करना दुपरे दिन प्रातः कालमे फिर आधा घटा हिलाकर नीचे लिखे ११ द्रव्योका चूर्ण तैयार रखा हो डालना और फिर तीन घंटा तक हिलाना शाम तक रख छोड़ना पीछे रांग लपेटी काठीमे भर देना ।

डालनेके प्रथम-सोठ पीपल कालीमोच तज इलायची लेग नागकेसर चोपरचोनी सब शतावरी हरद महडा विदारोकद प्रत्येक चार चार तोला और भटवर्ग आठे। मिलाकर ६४ तोला सब साथ कूट कर रखना । यहाँ ध्यान रखनेका यह है कि यह अवलेह पकानेका बर्तन रांग लपेटा पीतलका लेना और हिलानेका तवेया पीतलका या लकड़ीका लेना छोटाका होनेसे अवलेह काला बन जायगा । यह अवलेह २ से ४ तोला तक दिन भर मे खाया जाता है मस्तक-दिमाग के सब दर्दमे उत्तम गुणकारी है ।

षड्विन्दु तैल—एरंडमूल तगर शतावरी जीवन्ती रास्ना सेधानोन भांगरा हलदी वायविहग चमेलीके फूल या पत्ते मूँछी सोठ ब्राह्मी पाषाणमेदनी नीमकी छाल शखाहुलो रुईती क्षुद्र तुलसीका पत्ता प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूटकर इसमे बकरीका दूध रतल १० और भांगराका रस रतल १० छाल कर भिगा रखना । काले तिलका तेल रतल १० डालकर धीमी आंचसे पकाना पानीका अंश जब जाय जब अग्नि निवालना १४ घंटा ठंडा होने देना दुपरे दिन कपडछान करना । इस तैलका छ बुद नाकके एक एक छिद्र (फरणा) मे डालकर निद्रा करना या दो घंटा सोते रहना । फानमे भी १०-१५ बुद डालना । मस्तक-दिमागके सब रोगमे उत्तम गुणकारी है ।

षड्विन्दुः प्रक्षेया प्रतिनासारभ्रमस्य तैलस्य
शिरसः सर्वाधिकारांश्च्युतकेशान् शिथिलदतवेष्टांश्च ॥१॥

सक्षुः कर्णाग्नान् हन्ति च दृष्टिं गरुडसमां कुर्यात् ॥

षड्विन्दुतैलमतुलं वायुबलं नेत्रकर्णं शक्तिं च ॥२॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

पचामृत लेश्म गुगल पारद गणक रौप्य भस्म अभ्रक भस्म आक्षिक भस्मलाल प्रत्येक चार चार तोला, छोटा भस्म आठ तोला, गुगल २८ तोला सबके कूट कर साथ मिलाकर इसमे सरसोका तेल तोला ८ डालकर कूटना मिल जानेपर भांगरेका रस डालकर छोड़ना और रती प्रमण गोलो बनाना ३ से

६ गोली पानीसे दिनमें दो दफे देना । उपर गायका दूध पिलाना । सिरमस्तकके सब रोगोंमें उत्तम गुणकारी है ।

लक्ष्मी विलास तेल—बचुरा चंपाका फूल नागरमोथ बलामूल बीली गर्म अशर्गंध बडीकटहरी के फल अहुरीपते चंदन रक्तचंदन मज्जीठ धारिवा अनंतमूल हलदी दादहलदी मूलीमूल महुदेकफूल पद्मछांठ कमल फूल वाला अमवायन गंधप्रसारणी रास्ना सुगंधी महेदी गुलाबका फूल आंवला पानदी इलायची प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर कूटकर पीतलके टोपमें ढाल उसमें शतावरीका रस बिंदरी कदका रस भूराकोला (कुम्भांड) का रस केलेके स्तंभका रस हरे गोखरके पचांगका रस नालीएरका रस दर्हीका पानी (पस्तु) बडरीका दूध लाखका बराथ द्वारा आंवलाका रस प्रत्येक साठ साठ तोला लेकर उसमें ढालना १२ घंटा भिगो रखना । पीछे तिलका तेल रतल २० ढालकर घीमी आंचसे पकाना पानीका अक्ष जल जानेके पीछे २४ घंटा स्वांगशीत हेने देना कपडछान कर अच्छे बरतनमें भर सुरक्षित रखना । यह तेल कानमें नाकमें मस्तकमें ढालनेसे मस्तकके आंखोंके कानके रोग मिटते हैं और बुद्धि स्मरण शक्ति बढ़ती है । शरीर पर मालीस करनेसे आयुष्य बढ़ता है ।

पाठादि लेप—पाठा पटोल सेांठ पुष्कर मूल सहजनाकी छाल चक्रवर्क बीज कुष्ठ सब समानभाग कूट कर छांम्मे पीस मस्तक पर गाढा लेप करनेसे मस्तकके सब रोग मिटते हैं ।

शिरोबस्ती—मस्तकमें फिट हो ऐसी खड़े काठेकी चमड़ेकी टोपी कराना टोपीका बीचका भाग खाली रखना । और उसके नीचेका कांठा ललाट तक चारोंचार फीट हो और ऊपरका कांठा बालके उपर ३ अंगूठ उंचा हो इस प्रकारकी टोपी करना । टोपीके नीचेके साघामेसे भरा हुआ प्रवाही आंख गरदन पर न गिरे इसलिये सांघमें चारोंओर उबदके आंटासे अंदर भागमें लगा देना ।

पीछे रे गौ हिले चले नहि इस प्रकार स्थिर बैठे का औषधीय तेल टोपीके उपर के कांठा तक भरना और डेढ़से तीन घंटातक रहने देना, इतने समयमें पीडा शांत होगी । यह शिरोबस्ती वायुग्रधान मस्तक रोगके और गरदन हांसडी आंख कान बाहु कमा आदिकी पीडाको शांत करती है । शिरोस्थित ५ से ७ दिन तक धी जाती है ।

शिरो बस्ति देनेके पहिले रोगीको खाने नहि देना—भूखा घेत रखना । समय पूरा होनेसे रोगीको धीरेसे नीचा नमा कर तेल ले लेना, टोपी निकालना पीछे मस्तक छल'ट मुख गरदन कमा अदि अवयवोंको मर्द'नकर पीछे गर्म पानीसे

स्नान काना । पाँछे दाल भात खी-की आदि लवु खुराक देना । वात पित्त कफ जिस् दोषकी प्रधानताका बिरुद्ध हो उस रोगको शमन करनेवाले तेलकी शिरोवर्ति देना । वायु और कफ प्रधान दुर्द हो तो तैलको कुछ तपाकर भरना पित्त गरमी प्रधान हाते ठंडा तेल भरना ।

वैसे हि वात प्रधान हो तो महानारायण जैसा तेल, पित्त प्रधान होतो लक्ष्मी विलास तेल भगवत तेल अथवा महालाक्षादि तेल, कफ प्रधान हो तो महानारायण तेलमे खे पक' तेल मिलाकर उपयोगमे लेना ।

शिरोरोग हर मिश्रण—१ मुक्का पिष्टो तोला ०॥, सप्तामृत लोह तो २, सुधा पपटी तो १, प्रवाल चद्रुटी तो २, अमृता सत्व तोला ३ सप्त साथ घोट शीशी मे भरना दिनमे दो दफे ४ से ६ रती शहद दूध या पानीसे देना मस्तक के सब रोगमे उत्तम गुणकारी है ।

शिरोरोग हर मिश्रण—१ जगहर मोहरा पिष्टो स्वर्ण बसंतमालती अन्नद भस्म बिरो रोग हरे बटी चद्रप्रभा शिलाजीत प्रत्येक एक एक तोला लेकर घोट रखना । दिनमे दो दफे ४ से ५ रती शहद घृत या पानीसे लेकर उपर च्यवनप्राश जोदन अथवा कन्याण धृत् १ से २ तोला खिलाना ।

सर्व शिरोरोग हर नस्य—सोत (रसवती) तोला १, धिष्ट कर सुखा हुआ सफेद चन्दन तोला २, मूली मूल तोला ३, शनावरी तोला ४, अष्टांग अटामिल कर तोला ८ तमाखुकी पर्ती सुखी हुई अथवा छिन्नी तोला ४० सब साथ मिलाय गलब के अत्तर कि सुगंधी मिलाकर रखना । हमेशा छिन्नी कि बरह सूखते रहनेके मस्तकके सर्वरोग मिटते है । और मस्तक के कौई रोग न हो और दिमागका काम करने वाले हमेशा इसका उपयोग कर सकते है । उन्हे दिमाग का रोग नहि होता । इसे ब्रेनटोनिक नश्यभी कहते हैं ।

अर्ध नारीश्वर नस्य—कौडी भस्म तोला १, पकाया सोहागा तोला १, काली मिरच तोला १, अतीष तोला ३, मूली मूल तोला ४, तमाखुकीपर्ती तोला १० सब साथ पैन रखना सब प्रकार के मस्तक रोगमे सुधाना ।

वात शिरोरोग मिश्रण—माणिक्य पिष्टो अन्नद भस्म सप्तामृत लोह वात विघ्नक बृहत आन चित्रामणि प्रत्येक आधा आधा तोला और मूली चूर्ण ३ तोला मिश्रकर शीशी मे भरना । माशा ६ से ८ रती दिनमे दो दफे शहद दूध या कल्याण घृत के साथ देना बालुसे उपपन्न मस्तक रोग मिटता है ।

कुष्ठाद लेप . कुछ पुकर मूल रोठ समभाग लेकर छाछो पीस ललाट रे लेप करना वात अन्य मस्तक पीडा मिटती है ।

पित्त शिरो रोग प्रयोग—मुक्ता पिष्टी तोला ०१, प्रवाल पिष्टी तो १, क्षतामृत छोड़ तो १॥, अमृता सस्य तो. २, जवाहर मोहरा पिष्टी, तोला १, स्वर्ण वसंत मालती तो. ०॥, मूलेठी मूक चूर्ण तोला २ सब साथ घोट रखना ४ से ६ रती शहद घृत च्यवनप्राश जीवन या शिरो रोग हर अवलोक्य अथवा शुल्कह के साथ देना। पित्त गरमी से उत्पन्न मस्तक रोग मिटता है।

अदनादि लेप—चदन वाला मूलेठी मूल कमल पुष्प कमलगड्ढों गीरी, धीमे तला हुआ आवली धूप समन भाग लेकर गुलाब जलमे पीस ललाट मस्तक पर डेर करनेमे पित्त गरमी से उत्पन्न हुआ मस्तक रोग शांत होता है।

कफ शिरो रोग प्रयोग—स्वर्ण वसंत मालती तोला ०॥, सावरलीग भरम तो. १, वातगर्जाकुश तो १, पुनर्वा गूल तो २, कफ कुंजर तोला १, छेटी पीरल तोला २ सब साथ पीस घोट रखना। ४ से ६ रती शहद घृत दुध या पानीसे दो समय देना। कफ शरीरमे उत्पन्न हुआ मस्तक रोग मिटता है।

त्रिदोष शिरो रोग प्रयोग—स्वर्ण भरम तोला ०॥, रोष्य भरम स्वर्ण माक्षिक भरम लाल क्षतामृत छोड़ शिरोरोगादिवज्र प्रत्येक एक एक तोला सब साथ पीस घोट रखना। दिनमे ३ या ४ तीन दो शहद या पानीसे देना। वात पित्त कफ तीनों दोषों से उत्पन्न हुआ मस्तक रोग पीड़ा शांत होती है।

सय शिरो रोग प्रयोग—महाम्बस्मी बिलास वसंतकुसुमाक्षर कभ्रम भरम स्वर्ण भरम स्वर्ण वसंत मालती अथ मंगल रस पावन म सब सम भाग लेकर घोट रखना। दिनमे दो दोफे ३ से ४ रती शहद घृत मलाई मक्खन अथवा च्यवनप्राश जीवन के साथ देना इससे शरीरकी कमजोरी से उत्पन्न हुआ मस्तक रोग मिटता है।

कृमि जन्य शिरो रोग प्रयोग—क्षतामृत छोड़ गूल तोला २, जीवितरक्षा छो १, अमृता घन तोला १॥, मुक्तापिष्टी तो ०॥, वात गर्जाकुश रस तो १, सावरलीग भरम लतीस हलदी प्रत्येक दो दो तोला सागर गोटा (काकचिया) कीगरी १ तोला सब साथ घोट रखना ६ से ८ रती दिनमे दो समय पानीसे देना। मस्तक मे कृमि हो या पेटमे कृमि के उपद्रवसे मस्तक पीड़ा हो मिटती है।

नस्य—मोठ पीपल काली मिरच कांज बीज सहजनेड़ा बीज सब सम भाग लेकर बकरी मे मूत्र से पीस कर नाभमे बुद डालनेसे कृमि जन्य मस्तक पीड़ा मिटती है।

नस्य—लसून को पीसकर उस निकालना नाकमे १० या १५ बुंद डालनेसे नाकद्वारा जंतु निघल जाता है।

कृमि शिरो रोग तैल—नायविडंग, खारा (पाण्डियो खारो), दंतीमूल क्षीण समभाग कूट प्रत्येक भार चार तोला, बड़ी कटहरी के फल तोला १० सबको गौमुख में पीस सरसोका तेल तोला ८० पकाना। नाकमे डालनेसे तीक्ष्ण शिरो विरेचन होकर कृमि जन्य मस्तक पीड़ा मिटे।

नस्य—उत्रग याने सागपानी (युग्मफला चमार दुवली) के गते २ तोला और कपूर १ रत्ती साथ पीस उस निघाल नाकमे और छानमे डालनेसे कृमिजन्य मस्तक पीड़ा शांत होती है।

नस्य—कायफल कपूर डोकामाली तमाकुकी पत्ती दो या तोला लेकर करंज के तेलमे पीस २४ घंटा के पीछे छपड़ छान करना। यह तेल नाकमे डालनेसे मस्तक के जंतु निघल जाते हैं। और पीड़ा शांत होती है।

शिरःशुलाद्रिष्वं वज्र रस—गरद गधक लोहभस्म निसेय प्रत्येक चार चार चार तोला, शुद्ध गूगल १६ तोला, त्रिकला तीनों मिलकर ८ तोला, कुछ मूलेठीमूल पीपल सेठि मोखर नायविडंग दश मूल केदस द्रव्य प्रत्येक एक एक तोला सब कूट कपड़छान कर गायका धी तोला १० गर्म कर मिला देना पीछे पानीसे रत्ती प्रमाण गोली बनना अगर जूझ रूपमे रखना। मात्रा ३ से ६ रती दिवमे दो या तीन बके पानी या दूधसे देना। वायु पित्त कफ विदोष जन्य मस्तक दर्द आधासीसी सूर्यावर्त आदि मस्तक रोग मिटते हैं।



आर्धावभेदक आधासीसी-सूर्यावर्त

कारण—चिन्हः—रघु खुराक, अर्जन पर मोजन, सफरमे सन्मुख पवन लगना, मलके वेग रुकना, अति ज्यादा परिधम अधिक व्यायाम, आदि कारणोंसे कृति धायु अकेला अगर कफे माप मिल कर यह दर्श करणा है तब गरदन झुकते, मनर, लयनां (शंख), कान आँख ललाट आदि अवयवोंके साथ संबंध रखनेवाले आधे मस्तकमे पीडा होती है । आहार विहारकी अनियमितता इन्दिमाग पर चिन्ता और योज करनेसे शोक पिता और चुस्कार आदिकी कमजोरीसे, आँखके दर्शसे जैसे अनेक कारणोंसे ये लक्षण पैदा होते हैं ।

आधा मस्तक दुखता है तब एर और ते ललाटका भाग आँखकी भ्रमरके उपरान्त भागमें दर्श होता है । इसमें दर्श घेना अभी असह्य होता है । गाली धारा मस्तक पकड़ा जाता है ।

आधासीसीमें सुषुप्त प्रातः काल चटना है और अनियमित समयपर उतरता है । सूर्यावर्तमें सूर्य जैसे चटना है वैसे दर्श चटना है मध्यह्न के समय भारी असह्य पीडा होती है और सूर्य डकता है वैसे दर्श उतरता हुआ शरीरको पीटा होता जाता है । आधासीसी और सूर्यावर्त दोनोंमें उपाय समान है ।

आर्धावभेदहर नस्य—हाली मिच पारद, गघक प्रत्येक चार चार खोला, पकाया हुआ रोटागा तो २, मैनफल तो ०॥, इलायची दाना तो १, कपूर तो ०॥, सबसे तीनगुना तमाखुका सूखा पत्ता सब साथ पीस कर उकड़ते होनेके इन्तही सुगंध लगा कर रखना । आधासीसी, सूर्यावर्त आदि बिरके दर्शमें नस्य देना ।

प्रयोग १—पदविद्ध तेल के १० से १२ बुंद नाकमे सूर्योदयके पहिले डालना और पीछे दो दो घंटा रहकर उलते रहना ।

प्र २—सूर्योदयके पहिले अतूंगका पान पीकर उसके रसका दो या तीन बुंद दहीमें अथवा दूधमें डाल कर पिलाना ।

प्र ३—सूर्योदयके पहिले घीमे बनायी हुयी गरमा गरम जलेबी वृत्ति पयं त खिलाना ।

प्र ४—धारिवा कुछ गुंठी मूल वन पीपल कमकपुष्प सबको समान भाग लेकर छालमें अथवा हकी पीसकर ललाट और मस्तकमे लेप करना ।

प्र. ५ मैनफल, और चक्कर दोनो समानभाग लेकर दूधमे पीस कर सूर्योद-के पहिले नाकमें बुंद डालना ।

प्र. ६—सोठ अफीम, लाल चावल समभाग पीसकर सोगठी बनाना ।

अरुत हो जब पानीमें घस कर ललाट से लगाना ।

प्र. ७—आकके पीले पान पर तिलका तैल लगाकर गरम करना और हाथसे मसल कर पानी निकालना, उसके पांच दश बुद सूर्योदयके पहिले नाकमें डालनेसे छोके आ कर दद' मिटता है ।

प्र. ८—अपजिता (गरणी) का पचांग पानीमें पीस कर कपडछान कर नाकमें १० से १५ बुद डालना ।

प्र. ९—काली मिरचको मांगरेके रसमें पीस कर घिर पर लेप करना

प्र. १—काली मिरच पीपल भैरवा ल समान भाग लेकर छालमें पीसकर मस्तक पर लगाना ।

प्र. ११—पीपलका चूण' रती १२, चकर मासा ३ प्रातःकाल सूर्योदयके पहिले पानीसे लेना ।

प्र. १२—शिरीष (सरसदा) का मूल और फल पानीमें पीस कर कपडछान कर १५ से २० बुद नाकमें डालना ।

प्र. १३—घच और पीपल समभाग कूट कर कपडछान कर चूण' करना । इसमें समभागसे छोडनी या तमाखुकी पत्ती मिलाना और इसका नस्य लेते रहनेसे दो तीन दिनमें दद' मिटता है ।

प्र. १४—सूरजमुखीके बीजको सूरजमुखी के पानके रसमें पीस कर ललाट और मस्तकमें लेप करना ।

प्र. १५—अपामार्ग (अघाढा), बीजको अमलतासके पानके रसमें पीस कर जलखनमें पधाना । उसका १५ से २० बुद नाकमें डालनेसे असाध्य सूर्यावत' मिटता है ।

अर्धाचमेद हर मिश्रण—शिरःशुलाद्रि वज्र, तो. १, कस्तूरी भैरव बृहद् तो. ०॥, शुक्रति भस्म तो. १, सावरप्रिंग भस्म तो. १. सुवर्ण वसत मालती तो. ०॥, वात विध्वंस तो. १, छोटो पीपल तो. १, काली मिरच तो. १; सब साथ पीस कर शोशीमें भरना । प्रातःकाल और शामको ४ से ६ रती गायके घोंके साथ अथवा अश्वगंधावलेह के साथ देना । और एक मात्रा सूर्योदय के पहिले एक घण्टा पर देकर गरम प्रवाही पिलाना ।

अनन्तवान्त

अनन्तवान्त—दीर्घकालिक पित्तवा (Glaucoma) से मिलता जुलता यह मस्तक रोग है । इसमें तीने चीजें प्रभाव' होता है । आंख झूझ्ठी

लमणो (शख) में तोष पड़ा होती है । गालके बाजुमें कंठ होता है । और लमी आँखमें अबापा आता है । यह रोग असाध्य है ।

एस खोलाना, वातपित्त कफ शामक खुराक देना शिरोरोगमें बनाया हुआ नस्य देना ।

दण्डहृदी हृदी, मज्जठ नीयकी छाल, पाठा, पद्मछाष्ट सब मममाण छेकर पानमें पीसकर मस्तक और ललाट में सब जगह गाढ़ा लेप काके उपर केनीके पान लपेट कर पाटी बांधना ।

अनन्तवातहर प्रयोग—पचाशत छेद गुगळ तो. १, रधु बसत मालती तो. १. सवेष्टा पपटी तो. ०।, वातगजकुश तो. १, शिरोरोग हरी बटो तो. १, सब साथ पीसकर रखना दिनमें दो या तीन दफे चारसे छ रत्ती मात्रा दुध या गहद के साथ देना । उपर अथगघादि अवलेह अथवा चित्रकहरीतकी अथवा अनृतमदातक १ से दो तोला खिलाना ।



शंख

यह रोग भी तीक्ष्ण क्षामर (Claucoma) से मिलता झुलता है । पित्त वायु और कफ दूषित होकर यह दर्द लमणके (Templer) के भागमें जन कर नयंकर पीड़ा दाह और सूजन होती है । पीछे आँख मस्तक और कठको रुक कर तीन या चार दिनमें रोगी मर जाता है । मस्तक पर सा दफे पानीसे या ढाकके कवापसे घोसा हुआ घी लगाना । गुलरकी, बडकी, पीपलवृक्ष. (अश्वत्थ)की छाल, ढाककी छाल सब साथ पीसकर कपाल ओर सारे मस्तक पर मुद्गन कर मस्तक और ललाट पर लेप लगाना ।

दशमूल, कमलका फूल, दूर्वा, काळे तल, पुनर्नवा मूल, सब साथ पीसकर मस्तक और ललाट पर लगाना । इसका प्रवाही नाकमें नये डालना । शिरो बस्ती देना ।

वाष्प—नीम, बकाइन नीम, अहसी, लताकरज, सहजना प्रत्येकके पान । असर्गघ, शठावरी, कीटमारी, (कीडामारी) सब समान भाग लेकर एक बड़े बतनमें भर कर उबालना । उसकी बाफ (वाष्प) मस्तक पर नाकमें और आँखमें देना ।

शिरीष (सरसंडो) के पानका रस निकालकर नाकमें और कानमें पाव चाब घंटाके पीछे डालते रहना । शिरोरोगमें बताये हुये उपचार करना ।



दिमाग-मस्तकमे रक्तस्त्राव

सिन्धु—दिमाग अग्निमे तपाया हो असा लगे आंख और कानमे जलन हो । रातको और ठंडे उपचारसे कुछ शांति मिले । मस्तकमे भार बजन जैसा लगे, चकूकर आवे, कानमे अवाण हो, आंखमे देखनेकी तकलीफ हो, नाकसे रक्तस्त्राव हो, स्वभाव क्रोधिष्ठ हो, घबराहट हो, निन्द और तद्वा बढे, बुखार आवे, पेट द्रढा हो । मूत्रविह और रक्ताशयमे दर्द हो । दारु अधिक पीने से धूपमे चलनेसे और दूसरे कई कारणोसे यह रोग होता है । रोगी बेशुद्ध हो और गलेसे औषध और प्रवाही झराक न उतरता हो तो नाक द्वारा रक्ताशयो मली पेटमे उतार कर औषधको प्रवाही बनवाकर देना और प्रवाही खोरक देना ।

आंवला, वाला, कमलपुष्प, दूर्वा, द्राक्ष, पुनर्वा, जटामांसी, अनंतमूल, सब समान भाग लेकर, गुलाब जलमे पीसकर, मस्तक और ललाटमे गाढ़ा लेप करना और उषर केलीका पत्ता बांधना ।

पुनर्वा मूल, मूली, ठो सर्पगंधा और जटामांसी सबको पानीमे पीसकर ढपडेसे निचाड कर उसके बुंद पाव पाव घंटेके पीछे नाकमे और कानमे डालना ।

पर्दिवदु तेल, लक्ष्मीविलास तेल, महालाक्षादि तेल, के बुंद कान और नाकमे हर पाव पाव घंटेके पीछे डालना ।

शिरोरक्त स्त्रावहर ग्रंथान—मुक्तापिष्टि तो. ०॥, प्रवाल चद्रपुटि तो. १, जषाहर मोहरा तो. १, सप्तामृत लेह, तो. १, सुधापपटो तो १, अतीक्ष (अतिविषा) तोला, १, हीरा भस्म रत्ती १, लेना । पहिले हीरा भस्ममे मुकुता विष्टि डालकर एक घंटा तक घोटना । पीछे दूसरी चीजे मिलाना । पुनर्वा मचाणके क्वाथने शहद मिलाकर । पाव पाव घंटेमे दो तीन रत्ती मात्रा मिला कर पिलाते रहना । दूसरे जो जो विह्व दिखते हो तनुसार उपचार करना ।



मस्तकमें ग्रन्थी

चिह्न—मस्तकके किसी भागमें विवर्ध जाँझी ग्रन्थी होती है वह पककर बस निकलता है। इस सेकान नाक और लगाटमें दर्द होता है। उपदंश वर्गरेह गरमोंके कारणसेभी यह दर्द होता है। मस्तकमें पीड़ा हो, ठंडी लगा कर खुसार आवे, पानी छूटे। आँचकी (आक्षेप) आवे, शरीर कमजोर हो।

मस्तकग्रन्थीहर प्रयोग—रसपर्पटी तो १, शिरोरैग हरीवटी तो. १, पंचानन लेह गुगल तो. १, कांचनार गुगल तो. १, रुमी मस्तकी तो. १, मुक्तापिष्टि तो. ०॥ सब साथ मिलाकर पताश की क्वाथके साथ प्रायेण आधा आधा घटाके पीछे दो से तीन रत्ती देना और उपर केशरादि गोली दिनमें दो दफे २ से ४ खड़ी दूधसे या क्वाथसे निगल जाना।

पलाशादि क्वाथ—डाकका मूल, डाककी छाल, गुलरका मूल दर्भके मूल, दूर्वा, पुनर्नवा पंचांग, सब सम भाग ले कर कूट कर रखना। दो से चार तोलाका क्वाथ करके छेला अगर किसी औषधके साथ आधा घंटाछे पीछे पिलाना। मस्तककी ग्रन्थी पिघलकर भिँती है।

मस्तकका जलोदर

मस्तकका जलोदर—इस रोगमें मस्तकमें पानी भरता है। यह रोग प्रायः बच्चोंको होता है। मस्तककी शिकल छेटी दीखे। चामडीमें खींच हो। मस्तकका वेज बढ़नेसे बालक और बड़े आदमी पिछानेमें पड़ा रहे। बैठ सके नहीं।

जलशोषण रस—रससिद्ध, जवाखार, रुमी मस्तकी, तज, तमाल पत्र, एसायची भारंगो, जटामांसी पुनर्नवा मूल, हल्ड इन्धायणके फल समुशोधके बीज, समुद्रफल, सब समभाग लेकर कूट कर गुलर (चहुँवर) मूलके क्वाथकी भावना देकर दो रत्ती प्रमाण गोली बनाना। बड़े आदमीको २ से ६ गोलीकी मात्रा आराम हो जल तक देते रहना। बच्चोंको अवस्थानुसार उचित मात्रा देना। रस्त कवज रहता हो तो आरोग्यवर्धनीका चूर्ण १ से २ माछा पानीसे एक दो दिनके पीछे आवश्यकतानुसार देते रहना। घृणिभास्कर रस भी इस रोगमें दो से चार रत्ती दिया जाता है।

मस्तकका भ्रम

मस्तकका भ्रम कककर अन्धेरा—मस्तकके तंतुओंमें बिगाड हो कर यह रोग होता है। चित्त किसी काममें लगता नहीं। आप किसी संचारिक अमानसिक बड़े दुखमें डूब गया हो। वैसा मानता है। दृष्टिकी शक्ति कमजोर,

हरते किरते सब फिरता हुआ सीखे। रोगी गिर जाय, बैठ जाय किसीको सोते हुए और और आँख बंद करे तो भी भूमि पर सब फिरते सीखे, आप आकाशमें उड़ता हो घेसा दीखे। अन्नपर अवधि दस्तकी कब्जी आदि होते हैं।

सुवर्ण वसंत मालती रत्नभांगोत्तर रस मुष्कापिष्टी प्रवाल चद्रपुटी शिरोरोग रस घटी आदि औषधोमेसे केह एक या अधिक मिलाकर उचित मात्रामें चक्कर प्राश या शिरोरोग हर अवलेहके साथ देना। आरोग्य बघनी पूर्ण २ से ४ मास तक गमजलसे देना।

दुरालभादि कषाथ—वमासा पंचांग पुनर्वा पंचांग जगमांसी, मोर शिखा प्राक्ष बाला नागरपेय रुद्धक्षुप पलाश मूल उदुंबरमूल सब समभाग लेकर कूट कर रचना। २ से ३ तोलाका वनाथ कर किसी औषधके साथ पिलाना।

मस्तकके आवरण (पड)का दाह और शोथ

चिन्ह—मस्तकमें दर्द, पीडा अधिक हो, घोंघाटसे आवाजसे प्रकाशसे या मस्तक हिलनेसे दर्द अधिक हो, चक्कर आवे मस्तक गम रहे शिकल लाल हो निद्रा कम गर्दनके स्नायु सज्जद हो थोडा बुझार रहे। चमडी रुक्ष और गम रहे। नाडी की गति बडे। दस्तकी कब्जी तृषा बगे वमन हो दो तीन सप्ताहके पीछे रोगी कम जोर हो जाता है वैसे चिन्ह भी कम होता है।

शिरोरोग हरी घटी—पंचानन लेह गुणल स्वर्ण वसंत मालती लघु वसंत मालती रत्न भांगोत्तर रस चितामणि चिंतुमुख जयमगल रस रत्न पर्पटी सुधा पर्पटी आदि औषधो मेसे एकया अधिक औषधोका योग कर उचित मात्रा रोग कालस्वरूप और चिन्ह देखकर देना। पडबिन्दुतेल मृगाज तेल या अणुतेल तेल नाक और कान में डालते रहना।

मस्तक दाह

मस्तकका दाह—मस्तककी खोपरी में जोट लगनेसे दाह अधिक पीनेसे मानविक वायु अधिक करनेसे यह रोग होता है। बूझार रहे, मस्तककी पीडा चक्कर अनिद्रा वमन आँख कानकी शक्ति कम दस्तकी कब्जी आँचकी तंद्रा बेचेनी अर्धांगघात और अन्य चिन्ह दिखते हैं। यह पित्त प्रधाम—मध्यम वात—हीन कफरोग है। चिन्ह देखकर उपचार करना। मुष्कापचा मृत, शिरो रोग हरी घटी, अम्रक कल्पवटी, जीवित प्रभावटी, स्वर्ण वसंत मालती, महाचद्रकला पूर्णचंद्रोदय मकरध्वज घटी माणिक्य पिष्टी च्यवन प्राश जीवन अश्वगंधादि अवलेह शिरो रोग हर अवलेह पडबिन्दु तेल आदि औषधोका प्रयोग उचित मात्रा में करना।

मस्तक-सिंकी पीडा

शिर. शून्त मस्तक पीडा—शरीरकी कमजोरीसे आहार विहार की अनियमिततासे दिमाग का परिश्रम ज्यादा करने कोष शोक भय उद्वेग आदिसे—पाचन शक्ति दीगडनेसे हरे वरत सिर दुखने लगता है, फिर सामान्य स्वासे मिट जाता है। कईओको २-४ या न्युनाधिक दिन तक शिर दर्द रहकर फिर ठठता है। खान पानमे नियम रखना, भूख नहीं हो तो लंघन करया। आमा खु छुराक लेना सप्ताह मे एक दिन आरोग्यवर्धनी चूर्ण २ से ४ मासा तक या मधुबिरेचन चूर्ण ३ से ६ मासा गर्म जलसे लेकर पेट साफ रखना। बढाव की गिरा दमेशा १५ से २० दाना, पिस्ता २५-३० दाना, चिरोजी (चारोली) एकाध तोला नित्य चाबकर खाना अच्छी तम खु छोकनी सुधते रहना। शरीर लगनेसे भी यह रोग होता है।

सिरदर्द के सामान्य उपाय—उपर कहे हुये औषधो मेसे दर्द मे द्रिड दोषका प्राधान्य हो समझ कर योग्य रस रसायन गूगळ गुटिका भस्म आदिका उपयोग करना।

१ कैसर को गायके, बठरी के या उटनी के घीमे पीसकर नाकमे १०-२० बुंद डालना।

२ कुछ पुष्करसूत सोंठ समभाग कूट पक्षी में पीसकर ललाट मे लगाना

३ कलौजी जीरा पानी मे पीस ललाट मे लगाने से शरीर का शिर दर्द मिटे

४ बाये हाथ की कनिष्ठिका सबसे छोटी (उचली आंगली) का नख बढावा खीन महीने के पीछे काटना शिर दर्द मिटता है।

कपूरदि चाय—अजवायन कुछ अक्लकरा कपूर काचली (कपूर काचली) तुलसी पान हलदी सोंठ जायफल मरशका पान प्रत्येक दस दस तोला लेकर पानी मे पीस घी रतल ८ मे पखाना जलका अंश जल जाने के पीछे कपडकान करना पीछे उस घृतमे कपूर तोला, २० टाक कर पिघल जाय जब हवा न जाय ऐसे शोशेमे भरना। मस्तक को पीडा शिरदर्द मे मस्तक ताछ आ कपाल में लगाना मर्दन करना। शरीर के किसी भी भागमे दर्द होता हो उस पर मर्दन करनेसे दर्द मिटता है।



मस्तक पुष्टि

मगज दिमाग कि निपलटा—कारण ओरतोक्षा पुरुषोर्द्धों विद्याभ्यास करने वालों को अनेक कारणसे मगज क्षीण होता है । चिन्ता भय क्रोध आर्थिक हानि सांसारिक अनेक उपाध, दिमाग के कामका अमह्य दोष संचार व्यवहार में आनेवाले अनेक विघ्न आदि अनेक कारणों से मगज क्षीण कमजोर होता है । आज कल कोलेजो में अभ्यास करने वाले छात्रों में दहा ५० टका इस्त थोषही आदत होती है इस कारण दिमाग हृदय आँठे आदि कमजोर हो जाते हैं । ओरतोक्षा भी खंतान न होनेसे, पतिसे संचार सुख नहीं मिलनेसे, असुरगृह में पुत्र वधु के नाते अनेक प्रकार के दुःख पढ़नेसे और संचार व्यवहारकी अनेक चिन्ताओंसे मस्तक कमजोर चिन्ताप्रस्त क्षीण होता है ।

छिन्द—सिरमें दद होता है, चक्कर आता है । सिर आँखें लशट तपत हैं, निद्र कम आती है, बेचेनी रहती है इसी काममें चित्त लगता नहीं । दस्तकी कब्बो रहती है भूख कम लगती है ओरतोक्षा श्रुतु मासिक धर्म रक्तस्राव अविक या अनियमित होता है सफेद पानी पढ़कर शुद्ध सौगम चलन होता है ।

मस्तक पुष्टि मिश्रण—मुक्तापिष्टि तोला ०॥, सुवर्ण वसत मालती तो. ०॥, प्रवाल चद्रपुटी तो. १, महालक्ष्मी विलास तो. १, पाहर मोहरा तो. १, अमृता साव तो २, सप्तामृत लेह तो १, शिलार्जत प्रयोग तो. ०॥ सब साथ मिलाकर शीशीमें भरदे । दिनमें दो समय ४ से ६ रती, चयनप्राश-जीवन श्रेयवा शब्दके साथ लेकर उपर दुध या जो पीनेकी आदत होपीवे मन्तकके सब प्रकारके रोग मिटकर पुष्ट होता है । हृदय फेफड़े छातीके रोगमें उत्तम फायदा करता है ।

मुक्ताफलप—मुक्ता पिष्टि तो. १, प्रवाल चद्रपुटी तो २, अम्रक भस्म तो. १, माणिक्य पिष्टि तो १, स्वर्ण माक्षिक भस्म रक्त तो २, रौप्य भस्म तो. १, शगभस्म श्वेत तो १, पूर्णचंद्रोदय तो. १, सब साथ मिलाकर अष्टवर्ग के जलकी भावना देकर घोटकर रचना । दिनमें एक वखत प्रातः काल ४ से ५ रती शहद मक्खन या दुधसे देना । उपर बादाम खाना । मगज पुष्ट बढवाने होता है । स्मरणली श्वासनली छाती के सब रोगमें उत्तम गुणकर्ता है ।

मस्तक पुष्टि घटी—अम्रक मास मुक्ताशक्ति पिष्टि शगभस्म श्वेत शहद भस्म लेह भस्म रौप्य भस्म सफेद मुशली इलायचीदाना चीनीकवाला वंशलोचन छोटी पीपल घामलकी मूल (शाल्मलीमूल) प्रत्येक एक एक तोला, अष्टवर्ग ८ तोल साथ मिलाकर पीस शहदमें ३ गतीकी मोली पनाना । २ से ३ गोली दिनमें एक अथवा दो दफे पानीसे या दुधसे लेना ।

मस्तकपुष्टि चूर्ण—बदामकी गिरी तोला १०, पिस्ता तोला १५, चिरोजी तोला २०, इसी मस्तकी तोला १, अष्टवर्ग आठे मिलाकर तोला १६, सफेद मुशली तोला १०, धुलका गोद तो. १०, शक्कर तो. २०, वंशलोचन तोला ५, शुद्ध कैसर तो १ तज तोला २, इलायची दाना तोला २॥ सब साय कूट रखना हमेशा प्रातः कालमें १ से २ तोला चूर्ण दूधमें डाल पकाकर पीना । अथवा ०॥ से १ तोला चूर्ण पानीमें लेना पीछे दूध पीना दिमागसे काम करनेवालोंका बहुत लाभ करता है । मगजकी सब प्रकारकी बीमारी तकलीफ भीटती है ।

नीचेके प्रयोगोंसे मगजके सब रोग मगजकी दम जोरी वम याददास्त आदि मिटते हैं ।

१ अच्छी छीकनी सुधना ।

२ पदपिंडु तेल अथवा मृगराज तेल में तइमे बालमें डालना नाकमें डुंई डालना ।

३ महालक्ष्मी विलास ३ रती शहदसे उकर उपर बदामगिरी १५ से २०० बाने चाब कर खाजाना उपर दूध पीना ।

५ सुवर्ण वसत मालती ३ गोलीमें अष्टवर्ग चूर्ण ४ मासा मिलाकर शहदसे लेकर उपर दूध पीना ।

सिरके बालकी जुंये लिखे

बालकी जुंये और लिखे—बालमें जुंये और लिखे पड़ी हो उसका उपाय—

१ बालके पान के रसमें अथवा तावूल-नागरबेलके पान के रसमें १ तोला शारद मिलाकर बालमें घीसनेसे जुंये लिखे मर जाती हैं ।

२ बालका पान तोला १० पीसना पीछे तिलका तेल तोला २० से डाल और बालके पानका रस तोला १० डाल पकाना पानीका अंश जल आय जब कपड़ छान करना यह तेल बालमें डालनेसे जुंये लिखे मर जाती हैं ।

३ वायविडंग तोला १०, छिकनी अथवा बीडोका जड़तो तोला १० पानीमें पीस उसमें सरसोंका तेल तोला ४० डाल पकाना । पानीका अंश जल आय जब कपड़ छान करना यह तेल बालमें डालना जुंये लिखे मर जाती हैं ।

मस्तक की टाल इंद्रलुप्त

मस्तककी गरमीसे अथवा दूसरे बनेक कारणोंसे मस्तकके बाल गिर जाते हैं और टाल पड़ती है । नीचेके प्रयोगोंसे टालकी जगह बाल उगते हैं ।

१. हाथीदांत की भस्म और रसेलत बकरीके दूधसे अथवा पानीसे पीस कर लेप करना ।

२. शुहरका दूध आंकका दूध बढकी बढवाइ भांगरा खफेद बछनाग हरडे बहेडा आंवला लेहेका चूरा पुषची (गुंजा) इन्द्रायणाके फल सरसो गिलेय सब समभाग कूट गोमूत्रमे पीस सरसोका तेल सबसे चार गुना लेकर पक्षाना पानीका अंश जल जाय जब कपड छानकर रखना । टाल पर लगाना ।

३ हाथीदांत की राख और आंवला सम भाग कूट कर पानीमे पीस कर लगाना ।

४ इद्रामणका पंचांग को महीन पीस टाल पर गाढा लेप कर पाटा बांधना । २४ घटाके पोछे पानीसे धोकर साफ कर फिर दूसरे दिन लेप करना इस प्रकार ७ दिन तक करनेसे टालकी जगह बाल निकलता है ।

५ चमारदूधलोका पंचांग पीस लेप करना ।

६ लेबान ५ तोला एरंड बीजकी गिरी १० तोला पानीमे पीस लेप कर पाटा बांधना ।

७ कलमो चिमीकषाला सेंधानेन आंवला बढवाइ सब सम भाग लेकर आंवलेके दूधसे पीस दो दो तोलाकी सोगठी बनाना । जहर हो जब आंवलेके पानीसे अथवा दहीसे पीस कर लेप कर पाटा बांधना प्रातःकाल । व आंवलेके पानीसे धो डालना इस प्रकार १० से १२ दिन करना ।

८ पुंठाका नवसार गंधक लकड़ीकी राख सम भाग लेकर आंवलेके पानीमे धो दो तोलाकी सोगठी बनाना । पानीमे पीस लेप करना ।

९ पकाया नीलायोथा घमासा कुंकुम ललाटमे चांडला करनेका कंकु दोदारसो ग प्रत्येक पाव पाव सेर लेकर महीन पीसकर गायका धी शेर २॥ को १०१ पानीसे धोकर उपरकी चीजे मिला देना मलमकी तरह लगाना ।

सिरका खोडा व्रण गुमडा

१ हरे केर- करीरके फलको अतधुम पका कर करजके या घरसेके तेल मे पीस कर लगाना ।

२ हिंगूल गंधक मैनखिल हरताल सोनागैर दोदार राल बावची हीरादखण विषहर कपीलो सब सम भाग लेकर अलग अलग बारीक कर सबसे दूना मोम और तिलका तेल मिलाय पका कर मलम बनाना लगाना ।

उदररोग-पेट के दर्द

कारण—जठराग्नि मंद होनेसे सब रोग होते हैं । इसमें भी पेटके रोग मदाग्निसे अधिक होते हैं । अजीर्णसे, अजीर्ण पर भोजन करनेसे ठंढा रातवाघी विगड़ा हुआ अन्नपान खानेसे आंतेमें मल जम जानेसे, आमाशय विगड़नेसे, स्वेद जलको वहन करनेवाले मार्ग विगड़नेसे, वात पित्त कफ, प्राण वायुको जठराग्निको और अपान वायुको विकृत कर पेटके रोग उत्पन्न करते हैं ।

चिन्ह—आफरा चढ़े, हरने फिरने की शक्ति कफ हो, कृशता मंदाग्नि शोथ अवयवोंमें दर्द मल का अवरोध दाह ग्लानी आदि चिन्ह सब प्रकारके उदर रोगमें न्युनाधिक होते हैं ।

वातोदर

चिन्ह—वायु प्रधान उदर रोगमें हाथ पांव नाभि और पेट पर सूजन हो दोनो करवट होअरी कम्पर और पीठमें पंछा हो, प्राग्निमें दर्द हो । सूखी खांसी आलस्य शरीरके अमुक अवयवोंमें शून्यता, मल सूख जाय, चमड़ी कासी सुखी कृश हो जैसे चिन्ह घटे बढ़े । पेट पर पतली काली शिरामे धीरे पेट फूला हुआ हो । पश्चात्काली तरङ्ग शब्द करे । आमाशयके उपरके भागमें वायु फिरता रहे ।

वातोदरारि गुटो—गंधक तोला १६, शुद्ध पारक, अन्नक ताम्र लोह श्रुति माक्षिक प्रत्येककी मसम पकाया सोहागा प्रत्येक अठ अठ तोला, सिलाजित पंचलवण प्रत्येक चार चार तोला, दिग्ग तो ६, हरड तो ६ सब साथ मिलाकर निंबु रसकी अथवा दोजोरा निम्बूके रसकी दो दो भावना देकर २ रत्तकी गोली बनाना । २ से ४ गोली पानीसे दिनमें दो दोफे देना । इसके सेवनसे वायुसे उत्पन्न हुआ उदर रोग मिटता है । शुल्म उदरशूलमें लाभ करता है ।

रसोनादि तेल—गेठ पीपल कालीमिरच हरक वहेडा आंवला दंतमूल होंग सेंधानेनचित्रक देवदार वष कुछ सहजनाडी छाल पुनर्षा सषलवण वायविक गजमोद गजपीपर प्रत्येक चार चार तोला निसेध तोला २४ कूटकर २० रतल पानीमें १२ घंटा भिगो रखना । पीछे इसमें लश्न रतल ५ पांच और तिलका अथवा सरसोका तेल रतल १५ पदद डाल कर पकाना । पानीका अंश जल जाय जब तरुधीमो आंचसे पकाना । पानीका अंश जल आनेके पीछे १२ घंटा वैसे दि रहने देना, पीछे कषड छान कर रखना । १ से ३ छोटो चमाच सुघसे या पानीसे पिलाना और उदर पर मालीस करना । वायुक उदर रोगमें शुणकारी है । और सब प्रकारका वातरोग आंधीकी पंछा, तिल्ली लीवरका रोग, चेटकी गांठ बवासीर उदरका शूल आदिमें उत्तम पुण्यकारी है ।

१ दस्तकी कच्ची हो फल सूख गया हो तो अश्वचोली अथवा इच्छा मेरीका खुलाव देना ।

२ पोपल और सेंधानेन समभाग कूट २ से ३ मासा उष्ण जलसे रूके देना ।

३ लश्मन और अदरक एकएक तोला लमे पकाकर मोहनके साथ खाना ।

४ सरसो तोला १० कूट फर बाजरी के आटा मे मिलाय भेफराजु २ गलेकी रूबर पेट पर बांधना ।

५ तिन्दकी खली (तलना खाल) की पीसकर पानी मे पकाकर पेट पर बांधना

पित्तोदर

चिन्ह—बुखार आवे बेचेनी हो शरीर मे पेट मे जलन दाह हो तृषा लगे मुख कड़वा तीखा लगे । चक्कर दस्त समझी पीली पेट हरे रंगका दीप्ते पसीना छूटे पेट फूले दह हो । खटे उकार आवे छाती मे एलन हो वमन मे पीला कफ निकले उसमे कभी लोहीका भाँस हो मस्तक मे पंडा हो शरीर शिथिल रहे अमराहट बहुत तीक्ष्ण—जलद पदाय खाने से दाह अधिक पीने से खाँया हुआ खुराक पाचन न हो फर पेट मे रहने से रुद्धकर पित्तका उदर रोग होता है ।

पित्तोदरारि घटी—पारद गंधक राख पिष्टो भुक्ता शुक्ति पिष्टो मंडुर शक्क शक्क भस्म प्रवाल चंद्रपुटी प्रत्येक आठ आठ तोला, आंवला बहेडा नागरमोथ पुनर्नशा कटामांसी कूटकी लताकरंज धीज नीसेथ प्रत्येक चार चार तोला अभ्रलताम्रकी गीरी तोला २० हरड तोला ८ सब साथ मिलाकर काली भाक और पपट (खटगलीयो पित्तपापडो) के क्वाथकी भावना देकर ३ हप्तीकी गोली बनाना । ३ से ४ गोली दिन मे दो या तीन दफे पानी सहित या अम्रकखन से दे । पित्त गरमीका उदर रोग मिटे काल के या अरणीके पान पीकर गरम कर पेट पर लेप करना ।

कफोदर कठोदर

यह कफ-शरदी प्रधान उदर रोग है । चिहने भरी पाचन मे गरिष्ठ शक्कर धान्न धान अजीर्ण पर भोजन बाजारकी भीठाइ ठंडे प्रगाही छाति अधिक खाने पीनेकी क्षमतासे गह उदर रोग होता है । अग्न प्रदाग्निमे दह हो उदरमे दह हो शरीर पर और पेट पर सूजन हो ग्लानि बेचेनी वमन अलक्ष् निद्रा खाँसी चमकी लफेदी लिये पेट कठिन हो तृषा न लगे पिशाच थोडा, दस्त थिकना थोडा निकले ।

कफोदरारि घटी—पाद तोला ८, गंधक तोला १६, ठोढ़ ताम्र शंख प्रत्येक को भस्म, सेंठ पीपल, काली मिरच पीपरी मूल तज लेंग देवदार रास्ना अम्र-मोद अजवाइन कायफळ हिंग चित्रक वायविङ्ग कुटकी, प्रत्येक चार चार तोला निसेथ १२ तोला, हरड तोला ८, सब साथ पीपल तुलसी और भदरखकी भांवेना देकर ठो रत्तीकी गोली बनाना। ५ से ६ गोली पानीसे देना। कफ शरदी से हुवा उदर रोग के लिए उत्तम है। कफ शरदी खासी श्वास पिशाचकी रुकावट पिशाचकी जलन आदिमें भी गुणकारी है। कठोदर मिटता है।

कफोदरादि मिश्रण—सर्वेश्वर पपटी कव्याद बृहत् आरेग्यवर्धनी चूर्ण समो मस्तकी सब समान भाग लेकर ४ से ६ रत्ती दिनमें दो या तीन दफे पानीसे देना।

वर्धान—गुदी केपान तमाखुके पान पंलुके पान चोलाइ समभाग देकर पीछकर गर्मकर पेट पर आधा पगुल का लेप करना।

चक्षुषण—बाजरीका आटा आरने उपरकी या छाया को राख सम भाग मिलाकर चबसे दो तोला नमक डालकर बड़ी मोटी रोटी (रोटले) बनाकर एक बजु तावडी पर शोक कर पेट पर बांधना दस्त पिशाच छूटक उदर रोग मिटता है। सप्ताह में २ या ३ दफे करना।

दूष्योदर-विषोदर-संज्ञियातोदर

अन्नपानसे विष या विषेल चीले खिळा देनेसे, दिषवाग्ना पानी दूध दाल भात खानेसे, गरोली पल्ली (ढेढगरोली) जैसे जंतु या उमकी लार मूत्र अन्नपानसे गिरनेसे संयोग विरुद्ध अन्नपान लेनेसे तीनों दोषोंके कोपसे उदर रोग होता है। सब पेट फूलता है। पट्टमे दर्द हो, कठिन हो, बभन हो, दोनो पाखी करवट होजरी कम्मर पीठमे दर्द हो, मुखमे शोष हो दस्त ज्यादा हो तद्रा-बेन बडे चेष्टा हो आदिमें पित्त आदि चिन्ह होते हैं।

विषोदरादि मिश्रण—आरेग्यवर्धनी चूर्ण पुनर्नवा मूल हरड जटामांसी सुषा पपटी सब समान भाग लेकर ६ से ८ रत्ती दिनमें दो या तीन दफे उपर गूलरके मूल का अथवा ढाकके छालका कवाथ बिलाना।

रुदत्यादि कवाथ—रुद तीक्ष्ण ढक्का मूल गूलरकामूल जटामांसी पुनर्नवा पीपल वृक्षकी छाल पीपलीकी छाल कुटकी सब सम भाग लेकर कूटकर रखना। १ से २ तोलाका कवाथ कर बिलाना विष विकारका या घात पित्त कफ प्रकोपसे रुका उदररोग मिटता है।

क्षतौदर परिचरणी उदररोग

खन्नके साथ कटक सुई आदि पेट में जानेसे छरी चप अटिका घाव लग
जैसे, आंतोंको या होजरी को मेदता हैं । जब जमें पाक होकर पानी जैसा बन
गुदा द्वारा होता है । तब नाभिके चिक्का पेट बढ़ता है । फटता हो गैसों पीछ
होती है । इससे वमन भी होता है गुदा या मुख द्वारा खून भी निकलता है ।
होजरीमें किसी एक स्थान पर अधिक सूँट होता है । पेटमें वायु भरता है । खट्टे
चकार (घचरका) आता है ।

क्षतौदरारि गुठी—पारद गंधक ३३ लिंग जालीमिश्र चपत्री (जावन्त्री)
हरद शतावरी चोपचीनी मजीठ शकर जायचंदाना प्रत्येक चार चार तोला
और आँके दूधमें शोधा हुआ रस ३२ २ तेला, केसर २ तेला सब
विधिवत मिलाकर तुलसीके रससे सुग प्रमाण गोली बनना । ३ से ५ गोली दूध
या पानीसे खड़ी हि भिगल जाना । यह जल्दी उपशान्त होती जानी के रोगमें भी
शुणकारी है । उपर पुनर्नवा का कवाथ पिना ।

बद्ध गुदोदर

कारण—चिकना सूता रुक्ष भव पान खानेसे आंतोंमें मल जमता है ।
और गुदा द्वारा निकल सकता नहि सुख जाता है गुदाके उपरके भागमें जटक जाता है ।
बड़ी मुशकिलीसे सूखा बकरीकी लीढ़ी जैसा थोड़ा निकलता है । और तेल आदिकी
पिचकारी देनेसे भी क्वचित् थोड़ा मल निकलता है । इकठ्ठा होता हुआ मल
नाभि और उसके उपरके भाग तक जमता है । इसमें इच्छानेकी ३ से ४ गेली
गम जलसे देना एरंड तेलकी पिचकारी हमेशा देना वातपित्त वफाई प्रकोप देखकर
चातो दरारि बटी, पित्तोदरारि बटी उचित मात्रामे देना । आरोग्यघर्षणी
चूर्ण २ से ३ मात्रा तक गम जलसे देना । अश्वचोटी ८ १ १ गोली देना ।
जवाज करना और रोगका स्वरूप देख कर उचित उपचार करना ।

बद्धगुदोदरारि घृत—हिण लसून अगरख पीसी हुई सब बनेकी फली पीपरी
मूल हृष्ट दतीमूल जवाखार सज्जीखार सेवानेन लताकर ज बीज शमूल नीमोद्य
हलदी देवदार प्रत्येक द्रव्य दस दण तोला कर कुचल कर द्रव्ये ह्व जाय
उतने पानीमें रातभर भिगो रखना । प्रातः काल उसमें घी रस १० टालकर
पकाना । पानीका जंश जल जाय जब कपड छानकर रखना १ से ४ तोला
अथवा रोगका स्वरूप देखकर और अवस्था दिखकर न्यूनाधिक मात्रा देना ।
अथ उदररोगकी दवाइ भी देना ।

आनाह-पेट फूलना चढना

पेट मुभी जैसा हो, पीड़ा बहुत हो, रोगी घमण की तरह श्वास कष्ट से लेता रहे, आम और मल को प्रतिरोध गति होकर बहार न निकल सके, पेटमें वायु भर जाय, तृषा, नाकसे पानी गिरना, होठों में शूल डकार, छाती झकड़ जाना, मलमूत्र सूक जाना मूर्च्छा आदि चिन्ह होते हैं। भेग उग्र स्वरूप पकड़े जब मुखसे मल निकलता है। सब उदर रोगमें कूपित वत पित्त, स्वेदवाही और जलवाही स्त्रोतोंको रुक कर प्राणवायुको, जठराग्निको और अपान वायुको दूषित कर उदर रोग उत्पन्न करते हैं। सब उदर रोगमें प्रायः यह कारण मुख्य है इतर कारण गौण है। इसे आघ्मान या आनाह कहते हैं।

आरोग्यवर्धने चूर्ण २ से ४ मासा गम जलसे दिनमें दो तीन दफे देना। इच्छा भेदी की ३ से ५ गोली देना। आकक पान पर एरड तेल स्पेट गम कर बांधना। छायाको राख और बाजरी का आटा सम भाग लेकर पानी मिलाय गरम कर पेट पर बांधा करना।

नारायण चूर्ण—चित्रक हरद बहेडा आंवला सोंठ पीपल कालीमीरच जीरा रुद्रतक्षुप बच अजवयन पीपरीमूत्र सोंफ तुलसी पता अनमोद कचूरा घनिया वायविडिंग कटौजी जीरा चोमूत्र पुष्कर मूल जवाखार रुजीखर पंचश्रवण कुष्ठ प्रत्येक चार चार तोला, दतीमूल १२ तोला, चमारदूधली १२ तोला सब साथ फूटना। मात्रा २१ से ३॥ तोला गौमूत्र या गर्म जलसे देना। आघ्मान आकरा मिटता है। जमा हुआ मल निकल जाता है। गुल्म मलाशेघ अपान वायुका अनरोध घतरोग बवाधीर पेटका शूल परिणाम मूल तिल्ली यकृत रोग आदि सब प्रकार के उदर रोगमें गुणकारी है। कौंसो प्रकारके विष विकारमें गम घी के साथ दिया जाता है। इसके कवाय की पिचकारी भी दि जाती है।

१—छोटो पीपल बीना पीसीही-खडीहि को स्तुति दूधमें भिगोकर सुखा कर चूर्ण करना रोगका स्वरूप और रोगीका शरीरका हाल देखकर २ रत्ती से प्रारम्भ कर प्रायः प्रतिदिन एक एक रत्ती बढ़ाकर प्रतिदिन ४ मासा तक दी जाती है। सब उदर रोग मिटते हैं।

दिनहुतुल—जिसोय हरद बहेडा अंवला पाठ दतीमूल फूटकी अमलतास की गिरि सोंठ पीपल कालीमीरच चित्रक छोटो कटहरी दहीकटहरी गन्नीपल प्रत्येक चार चार तोला फूट पानी रतल ५ और खुशी कूट तोला १६ और फूट तोला २०० तालडर पकाना पानीका अंश शूल जाय जब प्रपञ्छान करवा।

दूर या पान के साथ जितना बिन्दु बुँद दिया जाता है उतना दस्त होकर उदर रोग शमना है ।

उदरादि रस—यो त. लघु) पारद गंधक पीपल हरद ताम्रभस्म अम लतास सब समभाग लेकर कोटकर थूदरका (मुनी)दूधमे घोटकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना । २ से ६ गोली तक रोगका स्वरूप देखकर उस जलसे देना सब प्रकारके उदर रोगों पर अच्छे जलोदरमे गुणकारी है । औषध चला हो जब सुराकमे चावल दहीवा बोल देना ।

जलोदर—जलभर

कारण चिन्ह—उठाने में मद होनेसे बिना सूख लगे गरिष्ठ आहार लेते रहनेसे पिण्डे हुए अन्नपानमें, वमन विरेचन क्रियाये विवर्धन करनेमें, खून के फोर, नेमे रुकावट होनेसे, दारु अति पीनेसे आदि कारणोंसे अन्न रोग होता है । तृष्ण लगती है । गुदामे श्वेत होता है खांसी श्वास अन्न च लेना है । पेट पर क्षिराये दीवती है । नाभिवा भाग गोयाकार होता है । पानमें भरी पचाल जैसा पेट लगता है । दवानेमें पानी भरी पचाल जैसा शब्द करे, मुत्रका आवद विगड़ा हो आंखों पर सूजन हो, भूख मंद शरीर कृश बलिह्वन हो गया हो यह असाध्य चिन्ह है ।

पथ्यापचय—पचने और पित्तव दस्त लानेका उपाय करना । चावल दुध मुगधा पानी आदि रुचि अनुसार देना । मूट्टे पटाप गरिष्ठ सुराक खाव साकर छो चीजे बट करना । जिस दोष का प्रकेप न्युनाधिक हो जाच कर सुराक और औषध प्रयोग करना । शस्त्रवर्म—नलीसे पानी निकालने पर आराम मिलता है लेकिन तीसरी या चौथी बार पानी निकालनेसे रोग घर जाता है । जहां तक हो सके औषध से पानी निकले सुखे धैरा उपाय करना ।

जलोदरादि रस—पीपल कालीधीरज ताम्रभस्म ककनायकी छाल सम भाग लेना । सब के बराबर शुद्ध जमालगोटा लेकर लुई धूमने घोटकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना । रोग जलसे १ गोलीसे प्रारंभ कर इस का परिणाम देखकर अधिक गोली देना । दस्तमें पानी निकल कर जलोदर का रोग गायब हो । दूसरे उदर रोगमें भी यह दवा जाती है ।

इच्छामेदी गोली सेठ पीपल काल मिरच पारद गंधक सोहागा सब समान भाग लेना और सबके बराबर जमालगोटा लेकर निबूके रसमें गोली

रती प्रमाण बनाना । जलोदरमे २ से ८ गोली तक दी जाती है । प्रारंभमे १ या २ गोली गर्म अलसे देना पीछे आवश्यकता अनुसार मात्रा बढ़ाना ।

लशून द्रष्टी—लशून को कली शेर १ मे शहद शेर १ डालकर महीन पीस कर घीमे आचसे पकाना गाढा हो जाय जल रख लेना । हरेखा १ से २ तोला सिलानेसे जलोदरमे फायदा होता है ।

आरोग्यवर्धनी चूर्ण—०१ तोला से प्रारंभकर प्रतिदिन २ तोला तक दिया जाता है । दूधका खुराक रूना वा महिनेमे जलोदर छिटता है ।

जलोदरारि मिश्रण—आरोग्य वर्धनी चूर्ण १५, शिलाजीत तोला ८, शुक्ति भूष, शंखर टी, बृहत, मंजू, घटक प्रत्येक चारचार तोला सब साथ मिलाकर ४ मासासे प्रारंभकर प्रतिदिन १ तोला मात्रा दी जाती है खुराक रोगानुसार रूना ।

१ नारायण चूर्ण ११ से ०॥ तोला प्रतिदिन देना ।

२ एनीया और पुष्कर मूल सम भाग बूट कर प्रतिदिन २ मासासे प्रारंभकर ५ मासा तक बढ़ाकर पानीके साथ देनेसे २१ दिनमे जलोदर बहुत लभ होता है ।

३ उटका मूत्र (नरका) तोला १० इसरीके दूधसे देनेसे ७ दिनमे जलोदर में फायदा होता है ।



शूल, परिणाम शूल

कारण चिन्ह—वायु धरनेवाले दच्चे सतवासी सदा हुआ अपनी प्रकृति को प्रतिकूल श्रेया आहार करनेसे, बिना अप्रपाचन हुए भोजन करते रहनेसे, पित्त वात कफ के प्रकोपसे पेटमें शूलका दर्द होता है । राग विशेषसे अथवा कारण विशेषसे शरीरके अंदरके या बाह्य भिन्न भिन्न अवयवोंमें शरीर की तरह पीड़ा होती है, जिसे शूलका रोग कहते हैं । वह प्रभुः पेटमें आमाशयमें पक्षाघातमें नाभिमें या नाभिके लग्जुवाजुमें होता है । घुराक लेनेसे पीछे २ से ३ या ४ घटापर अर्थात् भक्ष पाचन होता है उस वखन शूल निकलता है पेटमें दर्द होता है उसे परिणाम शूल कहते हैं ।

नाभिके स्थानमें अथवा नाभिके इधर उधर शूल निकलता है कभी कपेजे के स्थानमें या तिल्लो की जगहमें वृक्षके स्थानमें पीड़ा होती है । तेल मालीघसे और श्रेफ करनेसे शूल शान होता है दस्त और वमन होनेसे उकार आनेसे अथवा वायु छूटनेसे शूल कम होता है या बच जाता है ।

पथ्यापथ्य—साधारण शूल शोकसे मिटता है । आकके पीछे पान पर एरुतेल लगाकर गम'कर शूलको जगह बाधकर उपर शोक करना । उस जगह वायु वक्षक तेलका मदन कराना । दस्त बंध हो तो अथचोली, इच्छामेरी का जुलावा देना । या आरोग्य वर्षनी चूर्ण २ से ४ मास गम' जलसे देना । भूय न हो अवतक खनेषा नहि देना । एक दो लवण कराना ।

शूलगलकेशरी (रस प्रकाश सुषाकर ॥ १६६ + १६६ ॥)

भागः सुप्तो गन्धकं भागमेकं मर्द्यं पश्चात्स्त्वमभ्येक्ष्य ग्रामम् ।
शूल ताम्रं चोभयोस्तुल्यभागं कन्यानीर्मर्द्यं शोका विधेयम्
तद्गोलं वै चारितं संपुटान्तः सामुद्राख्ये स्थापयित्वापि यन्त्रे ।
क्षत्वा मुद्रां भाण्डवक्त्रं निरुध्य गते कृत्वा लक्षणकैः पूरितं तत् ॥
धौन पुन्यं नागसंज्ञ पुटं हि क्षत्वा शीतं चोद्धरेत्तत् प्रयत्नात् ।
निरुत्थ तत्पर्णमण्डे द्विगुञ्जं शूलान्यष्टौ नाशयेद्भक्षित चेत् ।
हिङ्गुं शुण्ठं लीकं चोषणं वै चूर्णं कृत्वा पाययेदुष्णतोयैः ।

१ भाग पारद, १ भाग गंधक दोनोकी कज्जली कर १ प्रहर तक घोटना ।
येते उसमें दोनोकी बराबर अर्थात् २ भाग शुद्ध ताम्रका चूर्ण डालकर क्वार पाठाके
रूपमें घोट गोला बनाना । उस गोलेको शराव सम्पुटी में रख कपडगिट्टा कर
सुखाकर पीछे उस संपुटको लवण यंत्रमें रख— अर्थात् एक दूँडीमें संपुटके उपर

नीचे नमक भर हंडीका मुख षण्ड मिट्टीसे बंद कर उस हंडीके गजपुटका अभि
 देना । स्वांगशीत निकाल फिर पारद गंधकी कज्जली ताम्र चूर्णके समान ढाल उपर
 बताये अनुसार लवण यत्रमे पेककर गजपुटका अभि देना । स्वांगशीत निकाल
 कर फिर पारद गंधक कज्जली ताम्रचूर्णके समान ढाल उपर बताए अनुसार
 लवण यत्रमे पेककर गजपुट देना । जल तत्रमस्म निरुध हो अर्थात् निवूरध
 मे ढालनेसे हरा रंग न हो तब खाने योग्य सम्पन्नना । इसकी २ रत्ती मात्रा
 पानकी पट्टीमे खिलाना उपर अनुमान रूपसे हिग मेठ काली मिरच और
 औरा सम भागसे दिया हुआ पूर्ण २ से ३ म'सा गर्म जलसे देना ।
 यह सब प्रकारके शूल रोगमे उत्तम गुणकारी है ।

नोट—इस शूल गजकेसरी रसका मूल पाठ शांग'धरका है उसका उतारा
 भैषज्य रत्नावली मे इसप्रकार लिखा है पारद एक भाग गंधक दो भाग की
 कज्जली के १ मास तक घोटते रहना । पीछे देनेके बराबर शुद्ध ताम्रका संपुट
 बनाकर उसमे वह कजली ढाल उस संपुटके नमक भरी हुई हंडीमे रख गजपुट
 देना उस संपुटके प'स २ रत्ती पानके साथ देना यह एक प्रकारकी ताम्रमस्म
 हि है । इसे शूल गज केसरी नाम दिया गया है । इस प्रकार कानेसे ताम्रमस्म
 कच्ची रहती है और बान्ति आति करती है । ताम्रके भयकर विषकी उपमा
 शास्त्रकारोंने की है परच वह बांति आति रहित होता विविध रोगमे उत्तम गुण
 देती है । शांग'धर और भैषज्य रत्नावलीके अनुसार एक गजपुटमे ताम्रमस्म
 बान्ति आति रहित नहि हो सकती । ताम्र मस्मके बिंदुके रसमे ढालकर हरा
 रंग न हो अर्थात् हरा काट न लगे तब वह तैयार होती है । खाने लायक बनती
 है एक गजपुटमे ताम्र मस्म खाने लायक नहि बनती, वमन आदि उपश्व करती
 है । इस लिये पारद गंधकके योगसे लवण यत्रमे ७ से ८ या अधिक बार
 बकानेसे शूल रोगमे देने योग्य बनती है । शांग'धरमे पारद गंधककी कज्जलीके
 बामेक मर्दयेत १ प्रहर, ३ घंटा घोटनेका लिखा है । जब भैषज्य
 रत्नावलीका संग्रहकार शांग'धरका हि पाठ देता है और मासैक मर्दयेत
 एक मास तक कज्जलीके घोटनेका लिखता है यह अशान्नीय है । शांग'धर और
 उसका उतारा करनेवाला भैषज्य रत्नावली कार देनेके मतानुसार ताम्र संपुटके
 १ गजपुट देनेके पीछे २ गुंजा देनेका लिखा है यह योग्य नहि है क्योंकि एक मट्टीमे
 बिहरक बाने बांति-आति रहित नहि हो सकती । अर्थात् ताम्रमस्म पारद गंधककी
 कज्जलीके योगसे लवण-यत्रमे इतनी दफे पकाना चाहिये-जल तक बांति आति
 न हो । इन देनेकी अपेक्षा रस प्रकाश सुधाकरका पाठ अनुभवसिद्ध

विपतिभुक्तादि चट्टी—गौमुखमें शुद्ध कर घीमें पकाया हुआ शुद्ध कुचला तोला ५०, पारद तोला ८, गंधक तोला ८, सेंड पायल बानो मिरच अतीष विपरी मूल अजमेर सज्ज/रुन लोग प्रत्येक तोला नार गंध, अकरदरा कालाजीरा (काली जीरी) मूत्रके बीज इन्द्रजी लहसुन प्रत्येक तोला गेा टो, तण रंला १, सफेद बलतंग तोला ४, सब साथ घोटकर रस्सी प्रमाण मोली यगना २ से ३ मोली दिनमें दो समय रोजी देना । सब प्रकारका शुल पेटके सब दर्द मंदाग्नि परिणाम शुल गगन उच्चार पेटको प्रणो पेष्टका किर्म, गुल्म वायु गोला दिली लंवरधी रुद्ध लादि रोगोमे उगम गुण करनी है ।

शुलारि रूपाथ—एरंडमूल हरद तोला छेटी बडी कडहरीका मूल पुष्कर मूल पुननवा मूल अरणी मूत्र कमलतास का गुड सब सम भाग लेन १ से २ तोला का बबुथ बनाकर दिनमें दो या तीन बफे पिलाना । पिलाने दस्त १ से २ मास दिगंटेक चूर्ण भयना लगन गारुड चूर्ण चालना । रुक्मकार के सून पेटके रोगमे गुणकारी है ।

शुलहर चूर्ण—शुद्ध कुचला तोला ४, गुलीयो तो ४, हरद पाठा निसेय चित्रक वायविहग ईश नग मूत्र लक्ष्मीया का बीज इल बचा शौराबेल जायपत्री (जायत्री) मूत्रका बीज मेलाग पधोया खारा सीट लगन सेवनेन उपचार संचल नषमार पकायी फटकी प्रत्येक एक एक तोला लेकर कूट कर रखना । २ से ३ मास गम फलसे दना उपर ५ तोला गौमुख पिलाना । सब प्रकारका शुल गुल्म बढावर घोफेदर जठोर वान्दोग क्रिम गिंशाय के रोग रं गुणकारी है ।

हिगुल भक्ष प्रवेत—हिगुल रुद्धा तोला २ लेकर एक पक्षी अच्छी डंट मे नडहा कर पीसा हुआ भागल सा गंधक तोला २ नीचे तोला २ उपर बीच मे हिगुल रग उपर धूमरी इट डंक कच्चा ५ और छाणाका अग्नि देना । हिगुल निपाल कर फिर उपर की तरफ उपर नीचे गंधक डेडर हिगुल पकाना ६ बफे पफानेसे द्रवेद मध्य होती है । मात्रा १ से २ रस्सी गडदमे देनेसे पेटके लीवर के छोटो के रोग मिटते है । शक्ति तादात आती है । सून बढता है ।

शंखद्राघ चूर्ण—५०० निम्बू रसवाले लेकर त्वका रस निकाल कर उसमे मालवी गुड तोला २०० डाल पकाना । एक रस हो जाय जब उसमे जवाखार तोला ५५, रोहाणा तोला २५, नवमार तो. २०, सेधानोन तो. ३२ सब कुट कर डाल कर पकाना जब चूर्ण जैसा सूखा हो जाय जब उतार कर

रोग लपेटे-घरतन में डाल कर सुख जाने पर पोष कर रत्न छोड़ना । वह पकता हो जब एक ढौंडी उसमें डालना यदि कौड़ी पिघल जाय तब विविधत तैयार हुआ समझना यदि कौड़ी न पिघले तो निचुका ओर रस चाल कर पकाना । इसकी मात्रा १ मासा दिनमें दो समय पानीसे देना । शुल प्लीहा यकृत वृद्धि उदावर्त वायु गैस चढना घमन सब प्रकारके सूल पेट दर्द तद्वर रोग आदि में उत्तम गुणकारी है ।

श्रीफल छद्मा—पानीवाला नालीएर लेकर छिलका निकाल कर उसमें बीचमें छिद्र कर पानी निकाल देना पंछे पीसा हुआ नमक उसमें दाब कर भरना । पीछे उसके छिद्र में सुच देकर ७ कपड मिट्टी कर सुखाकर गजपुट अग्नि देना । स्वांगशीत होनेपर निकालकर खोपरे के साथे पकाहुआ नमक पीस कर रखना । ६ से २४ रती तककी मात्रा रोगीका शरीर और रोगका स्वरूप देख कर दिनमें दो या तीन दफे दी जाती है । खांसी कफ वायु शुल गुल्म प्लीहा यकृत वृद्धि पेटकी गाठ गैस चढना आदि में उत्तम है ।

मलशोधनी जड़ी—एकियो और काली मिर्च सम भाग लेकर पानी से पीस गांधी चना प्रमाण धनाना । १ से २ गोली गर्म जलसे देनेसे पेटना दर्द शुल मलका जमाव तिल्ली कीवरका दर्द, मिटता है, टट्टी साफ जाती है । कष्टार्थ मिटता है ।

उदरैरागशर चूर्ण—हींग सोंठ पीपल कालिमिरच पाठा कपूरकाचली हरद कुछ अक्षराव डमलीका पके फलका रस अनार के बीज पुष्कर मूल जीरा चित्रक वच संचल सेंधानेन चवक निसोब पपड़ीया खारा सब समान लेकर कूट कर बीजोरे के रसको ३ भावना लेकर सुखाकर घोट रखना । मात्रा १ से २ मासा दिनमें दो तीन दफे दिया जाता है । शुल पेट के अन्य दर्द पेटका वायु भ्रंशानि आदि में गुणकारी है ।

प्लीहाहर चूर्ण—गोंगा (अप.भाग) के पचाव की भरम तोला १, हल्दी तो ५, अजशयन तो २॥, जीरा हाशूरीरा नमक प्रत्येक सब नव तोला लेकर कूट कर रखना २ से ४ मासा पानी के साथ देनेसे १४ से २१ दिनमें बड़ी हुई तिल्ली मिटे पेटका शुल वायु में उत्तम ।

१ शर्जंसार (साजीखार) और राई (काल राई) समभाग कूटकर हमेशा १॥ तोला पानी के साथ देनेसे २१ दिनमें तिल्ली मिटे ।

२ लोण पीपलीभूल अवलकरा कालीमिराव पीपल प्रत्येक पांच पांच तोला, हरड २॥ ठई तोला सब साथ कूट कर रखना । १ से २ मास पानीसे देना मूल भटे ।

३ नमक सचल सेधानीन जवाहार प्रत्येक सवा सवा तोला, अजमोद तोला ५, हरड तो २, पीपल तो २, सोठ तो २, हींग तो १॥, वायविडग तो. २ सब साथ कूट रखना १ से ३ मास पानीसे देना पेटका वायु गेष्ट मिटे । भूख लगे सुटाक पाचन हो पेटके रोग मिटे ।

४ वातशूलमे—हींग अतीस बच सचल हरड सेधानीन पीपल काली मिराव सम भाग कूटकर २ से ३ मास गम'जल से देना ।

५ कफ शूलमे—आंवला हरड शतावरी कालीद्राड मूली मूल वाना सम भाग सब सम भाग कूटकर ॥ तोलाका वसाय कर पिलाना ।

७ पित्त शूलमे—शतावरी मूली मूल आंवला नागरमेय चंदनका घूरा रक्तचंदन चिनीबाना (चणक बाब) सब सम भाग कूट २ से ४ मास वसाय कर शहद डालकर पिलाना ।

७ शख भस्म—६ से ८ रत्ती गम' जलसे देनेसे परिणाम शुब मिटे

८ तिल सोठ हरड शख भस्म प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर कूट कपडान कर गुठ तोला २०, मे मिलाय २ से ४ मास गम' जलसे देनेसे परिणाम शुल मिटे ।

९ एल्यो तो. ५, हींग तो. २७, लाल राई पुष्पर मूल सेधानीन प्रत्येक तोला १२ सब कूटकर उसने स्वार पाठाका रस मिठाकर ६ छह रती की गोली बनाना गम' जलसे १ से २ गोली देनेसे सब प्रकारका शूल मिटे ।



उदावर्त वायु-रोग चिकित्सा

मन्त्रसूत्राधोवातोद्गाराश्चक्षुश्चुम्बन्ति वेणानां ॥

जंभा क्षुधा वृषाणां निद्राया रोधनादुदावर्तः ॥

(रसोधार तत्र)

कारण सिन्धु—अबो वायु रुकनेसे हुवा हो तो अबो वायु छूटे नहि । मल मूत्र अटक जाय पेट फूले पवनसे भर जाय । हृदयमे घमराह रहे ।

इस उदावर्तमे । एरड तेल दूधमे पिलाना अथवा महानारायण तेल अथवा महा मरिचादि तेल १ से २ तोला गर्म पानी या दुधसे पिलाना ।

मलका वेग—रोकनेसे उदावर्त हुआ होतो, पेट फूले, शूल निकल ठन्डी लगे, मल अटक जाय, और रोग बढे तो मल मुत्रसे निकले । इसे उदावर्तमे जुलाह देना पसला छुराक देना । पेट और शरीर पर तैल मालीष करना । रोगीको गर्म पानी भरे टोपमे ढँठाना । पिचकारी देना ।

सूत्रका वेग रोकनेसे उदावर्त हुआ हो तो मूत्रकृच्छ्र हो, पिशाब की नलीमे नाभिके नीचेके भागमे सूत्रकमे शूल निकले फूले । इस उदावर्तमे दुध पानी सम भाग मिलाकर उसमे बचका चुर्न १ मास डाल पिलाना । घमायाका कवच पिलाना । चर्मप्रभा धारलाली ३ से ६ गोली पीसकर पिलाना ।

जंभा-जंभाइ-रोकनेसे उदावर्त होतो गरदन गला आँख नाक मस्तकमे दर्द हो । इस उदावर्तमे निद्रा कराना । गर्दन मस्तक पर कल्याण घृत मालीष करना और १ से ४ तोला खिलाना । भागिका शर्बत पिलाना ।

क्षुध-आँसु—रोकनेसे हुआ होतो पीनस प्रतिस्थाय हो आँख और दिमागके रोग ही हिप्पीरीया चक्रकर उन्माद जैसी प्रज्ञा हो । इसमें तीव्र अग्नि आजकर आँखोमे पानी लाना शोक दुःख कलुषा रसवाली वाते कर रोगी रुदन करे ऐसा करना ।

छिंक रुकनेसे—हुआ होतो गरदन झकड़ जाय, दिमागमे दर्द हो सिर दर्द हो आवासीसी चढे । इसमे छिन्नी नस्य सुंघाकर या कपडेकी वाट बनाकर नाभमे डालकर छीक लाना । छीकणीका व्यसन करना

द्विकका द्विचक्षीका—वेग रोकनेसे हुआ होतो पेट गला तक पवन भर जाय पवन उपर या नीचे छूटे नहि बढा घमराहट हो । महालासारी तेल अथवा ब्राह्मीतेल मालीष करना । सुवर्ण वसत मालती ३ गोली चौसठ प्योरी पीपल ६ रत्ती हृदय गर्व २ रत्ती विरक्त हरीतकी १ से २ तोला में मिलाकर खिलाना ।

घमनका वेग—रोकनेसे हुआ होता अरुचि सृजन ताप पांडु कृष्ण वायटेश (आँक) आदि उपद्रव हो । इसमें हुआ पिनासा । दिव्य धूपमें गुड मिलाकर चुंगीसे या नलीसे श्वासने लेना ।

वीर्य का वेग रोकनेसे—हुआ होता लिंग और योनिमें सृजन हो पित्तम कटु आय, वर्यसाव हो वर्यको पथरीका जमाव हो ओरहोहो सफेद साव हो । इसमें मीसग करना धरीरकी मृगराज नेलका या ब्राह्मी तेलका मारीस करना पौष्टिक कारोसेज्ज औषा और सुराक देना ।

तृषाका वेग रोकनेसे—हुआ होता गला मुन सूखे, कानमें बधिरता आवे । इसमें काली दाल मोसरो खंश्री अजीर द्राक्षासव चयनप्राश-जीवन गुलकंद आदि देना ।

भूखका वेग—रोकनेसे हुआ होता मन्त्री बेचेनी आलस्य कृशता क्षीणता कमताकात टश्यधी कमजोरी कानमें बधिरता आदि हो । इसमें चीकू फेला मोसबी खंश्री दक्ष आदि फल देना स्निग्ध पदार्थ दुधपाक स्त्री आदि देना ।

श्वासका वेग दमके रोकनेसे हुआ हो या अधिक परिश्रमसे दोहनसे या अन्य कारणसे चढाहुआ श्वासका वेग रोकनेसे हुआ होता छातके रोग और छातीका घमराहट छातीका शुल आदि हो । इसमें छाती पर भिंगो हुआ कपडा रखना पत्ता करना । विछानेमें जयन करना । हाथ छाती धीरे धीरे दवाना घोडा हुआ सफेद चंदन ३ माषा ३ कष पानमें डाल शहद ५ तोला मिजाम्ब ये डा घोडा पिलाना ।

निद्राका वेग—रोकनेसे हुआ होता मस्तक आँखमें जडता सृजन हो धरीर शिथिल बेचेनी चक्कर आँखका जन्म आदि हो । तोल ०। भानमें ३ तोला वादास गौरी, १ तोला बडोसेप (बरीयाली) डोला ०।। सससस, १ माषा काली गिरच, २ तोला गुलाब फुल सफेदा महीन पीस अषो तेल पानी और १० तोला सक्कर डाल रांग लगाये घृतनमें रख छेड़ना और थोडा थोडा पिलाये रहना रोगी विछानामे हि सोता रहे अँश्र करना ।

आमाशय और पक्वाशयमें वायु का प्रकोप होनेसे जो उदावर्त होता है उसमें पवन छुटता नहि, तृप्तिहो ऐसा उकार आता नहि, पेटमें वायु भरकर हृदयको दबाता है । छातीमें मूय नलीसे शुल निकलता है । इसमें साथ श्वास खाँसी प्रति श्वाय दाह तृषा ताप घमन सिर दग् आदि उपद्रव होते हैं । इस प्रकार वेग रोकनेसे भिन्न भिन्न प्रकारका उदावर्त रोग होता है इस को जांचकर उपचार करना ।

उदावर्तानि रस—पारद तोला ५, गंधक तो १०, हरद तो. ५, सीठ तो. ५, पीपल काली मिरच सोहागा प्रत्येक ढाई ढाई तोला, और शुद्ध कुचला ३२ तोला सब साथ मिलाकर निवृ रसमे घोंटकर रस्ती प्रमाण गोली बनाना राम जल से १ से २ गोली देना । सब प्रकारके उदावर्त । गेस चढनेके रोगोमे यह गोली उत्तम गुण करती है । उदावर्तके साथके दूसरे उपद्रवको भी शांत करता है । भिन्न भिन्न प्रकार के उपद्रवमे अनुपान मेवसे देना ।

फलघटी—मौनफल पीपल कुष्ठ बच सफेद सरसों शुद्ध सब समान भाग लेकर कुटकर कनिष्ठिका (टपली) अंगुली जैसी मोटी और दो इंच लम्बी बती बनाकर छायामे सुखाकर रखना । गुदामे चढानेसे वायुको गतिका अनुलोमन होकर उदावर्त मिटता है ।

विषतिटुकादि घटी—शुद्ध विषतिटुक तोला ३२, अजवायन तोला ३२, अजमोद ३२, डेकामरी ३२, बछनाग कालो तोला ३२, पीपरीमुळ तोला ३२, तज तोला ३२, काश्चीया शेकेल तोला ६४, सीठ तोला ३२, पीपल तोला ३२, काली मीरीच तोला ३२, अतिष तोला ३२, लोंग तोला ३२, ईन्द्रजौ, ३२, सेंधानेन ३२, सब साथ कुटकर पानीमें गोली रस्ती प्रमाण करमा २ से ४ गोली पानीसे देनेसे सब प्रकारका उदावर्त, ऊर्ध्वायु, गेस चढना आदि आयुका रोग मिटता है ।



अष्टौला प्रत्यष्टौला (मुबारकी-गांठ)

कारण-चिन्ह—यह पेटमे हेनेवाली एक प्रकारकी गांठ है। वह स्थिर रहती है या कभी फिरती भी है। यह नाभिके नीचे होती है पथर जैसी कठिन, नाभिकी और लंबी होती है। इससे अघो वायु छूटता नहि है। पेट झूलना है आध्मान होता है। वही ग्रन्थी नाभिके नीचे के भागमे ठंडी बढी है, अघोवायु दस्त पिशाबको रोके बहुत पीडा करे यह प्रत्यष्टौला कहलाती हैं। इस ग्रन्थीका अभाव हो जब मुख कड़वा हो, जीभ पर छारी जमे, मुखमे, दस्त, बुझार चढे शूल निकले, दस्तमे कभी खून गिरे, नाभिमे ठंडी पीडा हो, जीभ सूखी चौकनी कफ वाला हो निंद आवे। इस ग्रन्थीमे वातपित्त या कफके न्युनाधिक प्रकोपके अनुसार चिन्ह होते हैं।

विडंगाबलेह—वायुविडंग ते ला ४०, पिपरीमूल रास्ना कूडेकोछ ल इन्द्रजै-पाठा जटामांसो आंवला प्रत्येक बीस बीस तोला लेकर कूटकर क्वाथ बनाना। उस क्वाथ को कपडछान कर उसमे गुड तोला ६०० छइसे डालकर पकाना। गांठा होने पर तब तमालपत्र ईलायची प्रत्येक आठ आठ तोला, सेठ पीपल कालीमिरच वायुविडंग प्रत्येक दस दस तोला, प्रियंगु कचनार छाल लोम्र बदंतीक्षुद्र प्रत्येक छह छह तोला सब कूट कपड छानकर गुडके पाकमे डालकर घीमी अग्नि से पकाकर गांठा होने पर स्वांग शीत होने देना। मात्रा १ से २ तोला। अष्टौला, प्रत्यष्टौला गांठ तिल्ली जीवरका मिण्ड गुल्म शूल अडवृद्धि आदिमे गुणकारी है।

१ आरेन्यवर्धनी चूर्ण १ से २ भासा गुडके साथ देना।

२ शखबटी बृहत २ से ४ गोलो पानीसे देना।

३ शखद्राव चूर्ण ६ से ८ रत्ती पानीसे देना।

४ नारायण चूर्ण १ से ३ भासा पानीसे देना।

गुल्म रोगमे बताई हुई दवा इस ग्रन्थी रोगामे फायदा करती है।

विषतियूकादि चूर्ण ६ से ८ रत्ती पानीसे देना।

कठ्याद रस बृहत २ से ४ गोलो पानी से देना।

५ कुमारासव २ से ४ तोला २ या ३ छे देना।

६ मंहर बटक अथवा सिंदनाद गूगल २ से ३ गोलो पानीसे देना।



दस्तकी कब्जो-मलाशोध-आनाह

प्रथिताभं शुष्कं मुहुर्निद्रेण पुनश्च दृपितेन कृमम् ।

नि सरति नियमशून्यं यद्विद्वानहं वेदन्ति वैद्यकाः (रस) ॥१॥

कारण चिन्ह—हर वखत जुलाब लेनेकी आदत, बहुत परिश्रम, व्यायम, कमल मृग और पवनको बकनेकी आदत, बृद्धावस्था, कर्मजोरी-निर्मलता बवालीर, वायु प्रधान प्रकृति, दुखार अजीर्ण गरिष्ठ मिष्ठान पर अधिक रुचि घोंडाभी बारी धैर्य रहनेकी आदत, दमाग पर कामका अधिक भार, ठंडा वायु अनियमित भोजन, आशुकीम सोडा चाहा गोफी दास अफीम भोग आदिको उपयोग, दस्त जानेकी अनियमितता इत्यादि कारणोंसे दस्त दक्कनो रोग होता है। दस्त निकल सके मही बहुत जोर करना पड़े, पेट और पेटुमे (नाभिके न चके भागमें) भार लगे। पवन छूटे नहि, पेट फूले, अलस्य प्रनाद मंटावित शूल पस्तक पीछा फेर स्वयंकर दुखार घास लेनेमें तकलीफ, कामकाजमें घृणा, मन चिन्तालु, उदासीनता इत्यादि चिन्ह होते हैं। इसमें दस्त, शुष्क गांठे गांठे उला होकर गदाकी कुंडलीमें अटक जाता है। दस्त सुख जाता है, बबरीकी लिंही जैसा मुश्किलमें निकलता है, और दस्त नियमित समय पर नहि आता।

पद्योपथ्य—साधा जुलाब १५ से २० दिन पर लेते रहना। खुगक साधा क्लिना पेटमें बोल नहो इस प्रकार साधा हल्का मिताहार करना। एक मासमें २ दिन उपवास करना। भोजनके पीछे ४ से ६ म सा अदरख नमक छिड़ककर खाकर पीछे भोजन करना। अथवा द्विगाक्ष चूर्ण २ से ३ मासा बीमे मिलय खाकर पीछे भोजन करना। लघुन १ तोला तिलके तेलमें पकाकर दाल गोकमें खाना। शूख हो बीसा आहार करना। दूध छाछ, पानी आदि प्याही भोजनके बीच बीचमें लेते रहना। भोजनका समय नियमित रखना। भोजन के पीछे तुत काम पर नहो बैठना। भोजनके पीछे पाव भावा घटा वामकुक्षी कर २ पीछे सब कुछ करना। भोजनके पीछे तुत दौडना नहि। एरंड तेल ८ या १० दिनके पीछे एक ठो चम्मच पीते रहना। गुदा द्वारा एरंड तेलको पीवजारी देना। दल अटक गया होतो अगुली डलकर निशानना। कूची सूरण करेला ब्रेगन पतल गींदा पपड़ी आलेख सहजना की सीमे बेधा चोलाह आदि भाजी सुग लड-तवा बोल बटाना तिल बाजरी जव गेंदू चावल आदि खाना।

सधुविरेचन चूर्ण—रोनामखी (मंटी प्यादक) को पत्ती तोला २०, मूलेडी मूल तोला २०, इन्द्र गंधक तो १०, बडीबाफ (बरोयाली)

तेला १०, शक्कर गोला ४० सह साथ कुट कर रखना । मात्रा २ से ८ मास तक गर्म जलसे दे जाता है । किसीको कम मात्रासे किसीको अधिक मात्रासे एक दो दस्त खुलासा आ जाता है ।

हरीतकी अवलेह—हरीतकी मूल मंटेरीया मूल धृशकी छाल करणीया मूल अह्वारी छाल अगमागै पंचांग पर्येक चार चार सेर लेकर कुचल कर मक्का वसाय बनना । वसायको छपट छान कर उसमे छोटी हरद (हीमेज) सेर ६ को और पांडुला सेर २॥ को धीमे तल कर चूर्ण कर वसायमे चाल पकना । गाढा हो जब गुड सेर ५० डालकर पकाना गाढा होनेपर सुखा गुलाब फूल बर्दसौक (परीयाली) धनिया दज इलायची टोम सोंठ पीपल काली नीरच शयावरी असगव पर्येक दस दस होला लेकर कुट वाक चूर्ण कर तैयार रखा हो यह पक्वे हुए गुटगुठमे डालकर हिलाना । गाढा होनेपर अग्नि निकाल कर रोगशीत होने देना । अच्छे बरतनमे भरना । पकानेका दतन रांग लगाया पीपलका लेना । और हिलानेका तवेया लड्डीका या पित्तका लेना रांग लगाये बरतनमे अथवा चिनाइ मिट्टीकी परणीमे भजना । मात्रा ५ से ४ तोला तक रागका दप देखकर देना । बच्ची मदारि बराबर नीर बटे हुई, प्लीहा व्यथीला ग्रन्थी पेटके रोग अंतर्वृद्धि शुष्म आदि रोगोमे गुणकारी है ।

शुद्धि चूर्ण—एरंड तेलमे तलाहुआ, आवला, छोटी हरद (हीमजी हरदे) एरंड तेलमे तली हुई, सेधानेन, सोनमलीकी पत्ति (मोड़ी आवल) सब खम साग लेकर कुट कर रखना । २ से ४ मास तक गर्म जलसे लेना । मलाबरोध और हृदय रोगोमे गुणकारी है ।

१ अथवेली २ से ६ गोली तक गर्म जलमे देना ।

२ यदि अधिक मल जम गया होता १ से ३ गोली इच्छा मेदीकी आककरके चूर्णके साथ गर्मजलसे देना ।

३ आरोग्य वर्धनी गोली ३ से ६ अथवा आरोग्य वर्धनी चूर्ण १ से ३ मास तक गर्म जलसे देना ।

४ शरावटी २ से ३ गोली गर्मजलसे लेना ।

५ लवण भास्करा चूर्ण २ से ३ मास गर्म जलमे लेना ।

६ चित्रक हरीतकी अवलेह, अमृतमल्लसक अवलेह, भारगी गुड, अथवा श्री बाहु छाल गुड इनमेसे कोई भी अवलेह १ से २ तोला तक खाना ।

गोलीयादि चट्टी—गोमूत्रमे पकाया हुआ एलैया तोला १६, कालीमीर तोला १२, अजमेद तोला २ सब माष कूट कर कवार पाठा के रसमें रत्तो प्रमाण गोली बनाना २ से ३ गोली पानीसे देना पवन दृढ़ता है । दस्तकी कच्ची घिबती है । भूख लगती है । ओरतेके मासिक घर्म के समय कष्ट होता हो-कक्षातव हो वह भिदकर श्रुतु साफ आता है ।

जुलाव—विरेचन

पूर्वकालये वमन विरेचन आदि पचक्रमसे शरीरका सशोधन करनेका प्रयत्न था, इस कारण लोग विमार कम होते थे अब वमनतो कश्चित हि लिखा जाता है । मात्र जुलाव लेनेका रिवाज है । पेटमे जबविमल जमा हुआ मालुम हो भूख न लगे दस्त बज्ज रहे जब जुलाव लेकर पेट साफ किया जाता है । महिनामे एक दो दफे विरेचन औषध लेनेसे शरीर नीरोगी रहता है और शरीरका प्रत्येक अंग प्रत्यांग कार्यक्षम बना रहता है । लघनसे पाषन औषधमे दवा हुआ दोष रोग कश्चित फिर उत्पन्न होता है पर जुलावसे निकल गया दोष फिर कृमि नहि होता और मनुष्य विमार कैस पड़ता है ।

जुलाव किसे देना नहि ? बालक वृद्ध क्षणसे क्षण देह हुआ हो, भयभीत हो, थका हुआ तृषावाला चरबवाला, सर्गर्भाजो दाहसे उन्माद हुआ हो हृक्ष शरीरवाला, घब लगा हो, ऐसे मनुष्यको जुलाव देना नहि चाहिये ।

जुलाव किसे देना ? जोण जबरवाला विष पिया हो गलितकुण्ठो भगंदर बन्धासीर । पांडुरोग पेटके रोग ग्रन्थो छातीके रोग अक्षि योनि रोग प्रमेह शुल्म प्लीहा व्रण गुमडा विप्रक्षि-केसर मुख गुदा मस्तकका रोगी लिंगेन्द्रियका रोगे सूजन शोथ आंखके रोग कृमि रोग वातव्याधि पेटका शूल मूत्राघात-मूत्रकृच्छ्र ऐसे रोगीयोको जुलाव देना चाहिये ।

पथ्यापथ्य—जुलाव लेनेके पीछे ठंडा पानी पीना पठि । आंखे से जलन हो तो ठंडा पानी आंखोंपर छिडकना सुगंधों पुष्प सुघना । नागर चेल तांबूल पान खाना । तृष लगेतो थोडा गर्म किया हुआ जल पीना । खुले पवनमे बठना नहि ।

अच्छा जुलाव न लगे तो—कोठा कठिन वालेको साधा जुलाव काम न करता हो, जुलाव न लगा हो तो नामि जब जैसी हो पेटमे शूल निकले, आघा हायु उर्ल मल अटके शरीरपर खुजली आवे, शरीर पर गाल काते यकते हो । आकामनाह चक्रकर वमन इत्यादि चिन्ह मालुम होने से तब जैसे चिन्ह हो उतसा उपाचार करना । और तीन चर दिक्के पीछे फेर जुलाव देना ।

जुलाब अधिक होना—मूर्च्छा वेद्युद्धि हो, गुदा बहार निकले कफ बहुत पड़े। मासके घेन जैवा (पक्षये हुए मांस के पानी जैवा) खून मिश्रित दस्त होता है। इसका तुरंत ही उपाय करना। मिर्गोवा कपडा पेटपर रखना, घोवाल लगाना। आमकी अतर छात्रको दहीमें या खट्टी छाछमें पीसकर पेटपर लेप करना। नालियर का रानी पिलाना। दहीके घोलमें खक्कर का चूड़ मिलाकर पिलाना, खीचड़ी दही खिलाना। दाक्ष सत्र या बालीदाक्ष या हनी दाक्ष खिलाना।

अच्छा जुलाब लगा होना—शरीर लघु स्फुर्तिवाला होता है। मन प्रवृत्त रहता है। शुद्ध बहार आता है। अपान वायु छूटता है। सब इन्द्रियां बलवान् कार्यक्षम होती है। बुद्धि निर्मल और अठराभि तेज होती है। मूत्र लगती है। काम काजमें हरने फिरनेमें उत्साह रहता है। धातु और रस स्थिर रहती है।

अश्वचोली—(र. प्र सु) घोट चोली—अश्वचुकी हयचोली इत्यादि इस गोलीका नाम है। परन्तु शुद्ध कल दछनाग गंधक सेनापथी शुद्ध धरता सेठ पीपल कालीमिरच हरद वेहडा आंखला पकाया सोहागा और छुद्र जमालगोटाका गिरी सब समान भाग लेकर भांग के रसमें घोटकर मुग जौनी में ली बनाना। २ से ८ गोली तक पनुषधा मृदु और कठीन कोठकी जंच कर योग्य मात्रा से देना। उपर गम' जल पीना। (आजकल गम' जलके स्थानमें गम' चाय काफी पीनेका रिवाज है बढ भी पी सकते हैं) यह मृदु जुलाब है फिर भी अधिक मात्रा से उप जुलाब का भी काम करती है। किसीको दो तीन गोल में अच्छे जुलाब होते हैं किसी कठिन कोठेगलेको छह से आठ दस गोली तक देना पड़ता है। जब दा बार जुलाब होता है। पेटके रोग पेटका शूल शोथ सूजन बुखार आदिमें योग्य मात्रा से दी जाती हैं।

इच्छा मेदी गोली—शुद्ध पाण्ड गंधक सेठ काली मिरच सोहागा प्रत्येक दस दस तोला शुद्ध जमालगोटाकी गिरी १०० तोला सब साथ घोट पीपल का निम्बू रसने घोटकर रती प्रमाण गोलो बनाना। २ से ५ गोली तक शक्करका चूर्ण चार मासामें गोलीका पीप मिलाय गम' जलमें देना। रोगीका कठीन कोठकी पांचहर योग्य मात्रा देना। अच्छा जुलाब लगता है। जुलाब होने के पीछे खीचड़ी घी खीचड़ी उहाँ खिलाना। जादा जुलाब हो तो दहीमें शक्कर या शहद मिलाय पिलाना।

मेघनाद रस—(चो. र.) दिगूळ शुद्ध, पशपा सोहागा, नंगनेन पीपल सेठ कालीमिरच हरद वेहडा आंखला कालीदाक्ष वायव्दिगदिग भरताचर चूर्ण।

प्रत्येक पांच पांच तोला और शुद्धजमाल गोटाकी गिरी ३५ तोला सबको साथ पीस निवू रसमे घोटकर रती प्रमाण गेली बनाना । रोगीका कोठा देखकर न्यूनाधिक मात्रासे जुलाबके लिये देना सब उदररेगुमे अच्छा है ।

विरेचन चूर्ण—हिगूल सोहागा कालामिरच छोटी पीपल हरड प्रामेक एक एक तोला, अल'यो इशायण मूल सचल प्रत्येक सात सात तोला, निसेय १२ तोला, शक्कर १० तोला सब साथ कूटना । गर्भ जलसे १ से ३ मासा देना ।

नाभि विरेचन—जमालगोटाकी गीरी एर डोकी गीरी नीलाघोथा सोहागा सप्तभाग लेकर घोट रखना ८ से १० रत्ती स्तुही दूधमे मिलाय नाभीपर लेप करनेमे अच्छे जुगाव होते हैं । पीछे उम्र जगहपै साबुसे धो ढालना और रेल लगाना । अच्छे जुलाब हो जानेके पीछे खिचड़ी दही खिलाना ।

१ कड़वी नाईका कंद टुकड़ा कर छायामें सुखाकर भूकाकर रखना । मात्रा ८ से ६ रत्ती तक पानीमे देना । दस्त और वमन होकर बिगाड निकल जाता है । यह उम्र जुलाब है । रोगीका शरीर देख विचार कर देना । इससे तिल्ली लीवर बढ़ी हो कमती होती है । पेटकी गांठ-ग्रन्थी, छाती पर लीवर पर अतिपर या अन्य जगह ग्रन्थिया हुई हो वह पिघल जाती है । सर्पदंशमे वमन विरेचन करानेके लिये ८ से १० रत्ती या अधिक मात्रामें दी जाती है ।

सारोश्म्यद्वयनी चूर्ण—पारद गंधक लेह भस्म अभ्रक भस्म ताभ्रमरभ प्रत्येक एक एक तोला, हरड बहेडा आवला, तीनों मिलाकर १० तोला, शिलाजीत १५ तोला, शुद्ध गुगल २० तोला, चिप्रक मूल २० तोला, कुटकी ५० तोला सब साथ कूटके नीपके पत्ते तोला २०० लेकर पानीमे पीस और आवश्यकता हो उतना पानी ढाल कपड छान कर भावना देकर छायामें सुखाना । इस प्रकार कुल तीन भावना देकर छायामें सुखाना । मात्रा १ से ३ मासा पानीसे देना । एक दो दस्त होकर पेट साफ होता है । प्रतिदिन ६ से ८ रत्ती पानीसे छेठे रसनेमे भूख अच्छी लगती है । प्लीहा लीवरकी वृद्धि मेन्वृद्धि पेटकी गांठें शोथ पांडुरोग कामला धमन मूत्रकृच्छ्र मेटते हैं आतमे रुका हुआ मल निकलता है । लंबे समयकी कब्जो घिटती है ।

२ वाजरी के आटामे—या चने के आटामे—वेसनमे थूहर (स्तुही) दुध मिलाय सुंग प्रमाण गेली बनाना विचार कर योग्य मात्रा गर्भजलसे देनेसे जुलाब होता है ।

३ सेठ तोला २ चनेका ढालिया तोला २, लोण तोला •॥ सब साथ महीनकर थूहर से दूधमें रंती प्रमाण गोली बनाना । एकसे ४ गोली तक जुलाब के लिये दी जाती हैं । पेटका त्रिगाड निकल कर रोग भिटता है ।

४ सेना मखी (मोंढीआवल) की पत्ती, हरद, निसेथ समभाग कूटना २ से ३ मासा गर्म जलसे देनेसे जुलाब लगकर पेटका शिंवार मिटे । भात दही-खोचड़ी दही खिलाना ।

५ मधु विरेचन अथवा शुद्ध चूर्ण २ से ६ मासा तक देनेसे एकसे दो दस्त होकर पेट साफ होगा है ।



शोथ-शोफ सूजन सोजा

कारण—वमन छर्दि के रोगसे, अतिशारसे तापसे उपवाससे नमकीन सट्टे तंखे पदार्थ ज्यादा खानेसे, खट्टे दहीसे, गौमाससे, बिमडे हुए अन्नपान खाने पीनेसे ब्रह्मरोगसे गर्मपात हो मानेमें सूटिका रोग (सुत्रा रोग)से घंघियासे घाव लगना अग्नि आदिसे जलना और जंतुका दश पांडुरोग आदि कारणोंसे शरीर पर या शरीर के किसी अंगपर सूजन होती है। बिगड़ा हुआ खून पित्त कफको शरीरमें की नसेमें वायु खोच कर लाता है इसका वधन होता है जब त्वचा—पसी और मांसके आश्रयसे सूजन होती है।

चिन्ह—हजारीमें बिगाड़ होता छातीके उपरके भागमें शोथ होता। पक्वा-शयमें बिगाड़ होता छाती और पेटके बीचमें शोथ होता। मल स्थान और आंतमें शोथ होता पेटपर सूजन आवे और सारे शरीरमें फैलता है। सूजनका जितना अधिक प्रकोप होता है उतना वमन दस्तकी कमी जीभपर सफेद पोली छारी नाड़ीकी गति जलद आदि चिन्ह मालूम होते हैं। जिस जगह शोथ हुआ हो वहां पंजा बरसी और वह भाग बाली लिये होता है। वायुकी सूजनमें वह भाग लाल काला पीला रंगका, अदर झनझनाहट शूल पोशा होती है, दबानेसे बड़का नहि पड़ता उपड़ आता है गर्मचोत्र लगानेसे अच्छा लगता है। पित्तकी सूजनमें शोथ काला पीला लाल रंगका या मिश्रित रंगका होता है। पक्कीना आता है तृषा बिच्छलता ग्लानि बेचेनी जलन होती है। ठंडे चोत्र लगानेसे अच्छा लगता है। कफ की सूजन पठोन दाबनेमें खड्डा पड़े, मुखसे थूक नार पड़े निद्रा अधिक हो वधन होता, मुख कम पानीकी इच्छा नही तृषा न लगे पानी पीनेमें ग्लानि होता। मांस चोट लगनेसे शूल इधर उधर लगनेसे, शरीर के किसी भागमें शूलकर्म (ओपेशन) करनेमें या धीसे अल्प कारणसे शोथ हुआ हो तो पित्तशोथमें मिलते चिन्ह होते हैं और सारे शरीरमें फैलता है। जमाल मोटा दबनेसे भी सूजन हो जाती है। शोथका कारण चिन्ह देखकर उपचार करना।

पट्यापट्य—सूजनका मूल कारण ठंडना। विरेचन मूत्रल स्वेदल औषध देना। पुराना साधा पाचन जल्दी हो ऐसा इलाका प्रप ही देना। चिकना गरिष्ठ पदार्थ मिश्रित खाद शककर की सीले बाजारकी मिठाई देना नहि। शोक करना लेप लगाना तेल मालिश करना। खट्टे पदार्थ खदी दही निंबू आदि चीजे देना नहि।

सापान्य उपचार—शोथमें हमेशा आमका प्रयोग अधिक होता है इसलिये शक्य हो उनका लघन उपवास करना। पाचन दीपन औषध देना।

मुलाब देना देशका प्रकेप और गैरीकी शारीरिक स्थिति देखकर वमन विरेचन कराना । रोगीका सुराक अन्न बंद कर दूध पर रखना । आरोग्यवधनो चूर्ण २ मांसाचे प्ररभ कर धीरे धीरे चढाकर हमेश की आठ मासा तक दी जाती है । अद्दो अद्दो अरणो पुनर्वा नीमके पत्तेकी भाफ (वाष्प) देना । और उषका मवाथ पिलाना ।

शोथोदरारि मण्डूर

रसरत्नाकरका पाठ-पाण्डुलिपि

त्रिषट् त्रिकला लाक्षा पौष्कर सज्जल शटी	॥
लोह वचा लवण च शृंगी त्वक् शतपुष्पिका	॥१॥
विडंगं घातकी पुष्पं जटामांसी पुननवा	॥
एतानि समभागानि शृङ्ग चूर्णानि कारयेत्	॥२॥
स्वर्द्धवसमंचात्र सुषकं लौह विट्ठकम्	॥
कुटजस्य रसेनापि मण्डूरं सूक्षवेत् मिषक्	॥३॥
वेष्टितं जम्बुपत्रेण मृत्सरया परिलेपितं	॥
ततो गजपुटे पक्वा स्वांगशीतं समुदरेत्	॥४॥
तन्मण्डूर समं चूर्णं त्रिकटूवादिविमिश्रयेत्	॥
माष्यं पुनर्वा क्वाथे मात्रा द्वाशदारक्तिका	॥५॥
निहन्ति सर्वजंशोथं ग्रहणं च विशेषतः	॥
उदरेषु च सन्नेषु शोथेषु खानुपानतः	॥
विविधा व्याधयश्चान्ये सेवनाद् याति सध्यतम्	॥

यह पाठ हिं शास्त्रीय है । और इस पाठने अम शंका नहि रहती २०

चटक दण्योकी गजपुट मे जलादेनेका नहि है ।

शोथोदरारि मण्डूर—मंडूर भस्मको कूदाको छाल (कुटज त्वक्) के क्वाथ में घोट कर गोला बना कर उपर जामून (जम्बू) के पते लपेट कर गजपुट देना, इस प्रकार ३ मट्ठी देने पर तैयार हुआ मंडूर इस औषधमे चालना । यह मंडूर भस्म तोला १०० सौ लेना और सोठ पीपल कालीमिरच हरद बहेडा आंवला लाख पुष्करमूल वाला कचूरा लोह भस्म बच लोग काकडा-सोणी तज बडीशोप (बरीयाली) पुनर्वा वायविडंग जटामांसी घाईकेफूल प्रत्येक औषध पांच पांच तोला लेकर कुटकर यह चूर्ण मंडूरमे मिलाकर घोटकर पुनर्वाके पचांग के रसकी जयवा क्वाथकी भावना देकर ३ रसोकी गोली

वनाना । २ से ३ गोली दो समय पानीसे देना । आवश्यकता होतो प्रतिदिन २२ गोली तक मात्रा क्रमशः बढ़ायी जाती है ।

भैषज्य रत्नावलीका पाठ

नोट—यह औषध भैषज्य रत्नावलीमें शोध भस्म लोह नामसे दिया है । इसके रसयोग सागरमें श्री प. हरिप्रपञ्जने शोथारि लोह के नामसे दिया है । पाठ भैषज्य रत्नावली का दिया है । जब रस रत्नाकर में शोथोदरादि मद्धर नाम है यह नाम यथार्थ है । क्योंकि इसमें सब औषध के समान मद्धर लेनेका है । भैषज्य २० के पाठ में द्राक्षा और विमोतक हैं वह । रसरत्ना. में लाक्षा और पुनर्ना है यह ठीक है । क्योंकि शोध के औषध में द्राक्षाका स्थान नहि है और वहेदा एक बार त्रिकला में आगया है । और जटामांसो अधिक हैं इस औषधमें भैषज्य रत्नावली के पाठमें एक विचित्रता यह है कि त्रिकटुमें लेष्टर चाईके फुल तकके सब औषध के समान मद्धर लेकर चरा औषध के साथ मद्धर मिलाकर सबको कुटज रसमें घोटकर जामून के पते लपेट गजपुट देनेको लिखा हो ऐसा भ्रम पाठ पढ़नेवालोंकी और संस्कृत अच्छा ज्ञान नही उसके होता है । वस्तुतः अद्वेला मद्धर को हि कुटज रस में घोटकर गजपुट देना है । इसप्रकार भिन्न हुए मद्धर भस्म में दुसरे २० घटक द्रव्य मिलाने के पछे हि यह औषध तैयार होकर सेवन योग्य बनता है । भैषज्य रत्नावली का सग्रहकार स्थान स्थान पर टिप्पणी में अपना मत प्रगट करता है इसप्रकार यहाँ इस बातका स्पष्टीकरण नहि दिया कि गजपुट मद्धर भस्मको हि देनेका है । और पाठमें यह पात्त नहि दी गई कि मद्धर भस्म तैयार होने के पोछे २० द्रव्य मिलाना, ऐसा लिखा होता तो भी समझ में आसकता कि २० द्रव्य मद्धर में मिलाकर गजपुट देनेका नहि है । इस प्रकार भैषज्य रत्नावली में कई स्थानोंमें शास्त्रीय पाठ में परिवर्तन और भ्रम जनक बातें हैं । इस लिये भैषज्य रत्नावली के अनुसार कोई भी औषध बनाने के पहिले दूसरे ग्रन्थ में वह पाठ होता देखकर हि बनाना उचित है ।

भैषज्य २० ने इसका शोध भस्म लोह नाम दिया है जब रस योग सागर में शोथारि लोह नाम रखा है । वस्तुतः यह लोहकी कृति नहि है मद्धर की है । परंच देना में पाठ समान है । श्री प. हरिप्रपञ्जने अनुवाद विहित किया है । क्योंकि वे १९ घटक द्रव्यका चूर्ण और उसके समान मद्धर सबको मिलाकर कुटज रस में गोला कर जामून के पते लपेट मिटी लगाकर गजपुट में पकानेका लिखते हैं । वह अशास्त्रीय है । भैषज्य रत्नावली और

रसयोग सागरके पाठमें १९ घटक द्रव्य हैं । यह औषध महरकी कृति है नेपर भी देनेवाले लेहका नाम रखा है । यह सर्व विदित बात है कि लेह अगर महर की कृतिमें में जीवित घटक द्रव्यों के बलसे हि लेह या मडुर गुणकारी होता है । महर और लेह के नामसे बताया गई औषधों में लेह और मडुर अधिक प्रमाण में पड़ता है यही उसके नामकी सार्थकता है । किसीभी मडुर या लेह की कृतिमें पड़ने वाले वनौषधों के घटक द्रव्यों जला देनेका नहि लिखा । यहा इस औषध में मडुर के समभाग १९ द्रव्यों का चूर्ण मिलानेका लिखा है, जलानेका नहि । मडुर को ह कुटज रसमें पकाकर ढालने का लिखा है । शुद्ध अथवा तो विशेष विधिसे तैयार कंडू भस्मकी कुटज रस में पकाकर पीछे इस औषध में मिलाने का ग्रन्थकारका कहना है और मूल पठमें भेषज्य रत्नावली में और उसका अंतरण देने वाले रसयोग सागर में स्पष्ट हैं सुशुद्ध या सुपक्व लेहविह्वल एक वचन है और जम्बु पत्रसे घेष्टित यह एक वचन और रसंगशोक्त यह एक वचन महर के लिये लिखा है अर्थात् शोथारि वा शोथोदरारि महर में ढालने । महर कुटज रसमें पकाया हुआ हि ढालना यह ग्रन्थ कारका वक्तव्य है । जब रसयोग सागर वालेके अनुवाद में १९ घटक द्रव्यों को भी गनपुट में जला दिया है । भेषज्य रत्नावलीका पाठ सस्छन पड़ा हुआ वैद्य सोच दिवार कर पड़े तो घण रके साथ के १९ घटक द्रव्य पिलाना लिखा है ऐसा ज्ञान हो सस्ता है ।

इसप्रकार रसयोग सागर में अनेक स्थानों में अनुवाद भ्रमक अशुद्ध और अशोध्य किया गया है । रसयोग सागर के अनुवाद के आधारसे औषध बनानेवालों को और औषधों के उपयोग करनेवाले रोगियों को बड़ी हानी पहुंचने का और वैद्यों को अपयश अपकृति मिलनेका संभव है ।

शोथ कालानल रस—लेह भस्म कश्मरुत ताम्र भस्म पारद गंधक विशाक मूलकी छल जायफल इन्द्राय गजपीपल से धानेन छोटी पांवल लेंग सोहागा सब समभाग लेकर पुनर्नवा मूल और नीमके पत्रों के रस को एक एक भावना देकर दो रत्तीकी गोली बनाना । मात्रा ४ से ६ गोली गर्म जलसे अथवा पुनर्नवा के फव्वारसे देना । प्रत्येक सप्ताह के पीछे १ से २ गोली बढाकर प्रति दिन २४ गोली तक दी जाती है । बंद करना हो जब प्रतिदिन एक दो गोली कम करते हुए बंद करना । शोथ भिद्यता है सूजन पेट के रोग अजीर्ण पांडु कामला कवाबीर में भी फायदा करता है ।

दुग्ध चट्टी—गूद चट्टनाग १२ भाग, अफीम १२ भाग, ठोह भस्म ५ भाग, अत्रक भस्म ६ भाग सब साथ मिलाय बकरी ६ या ऊंटनी के दूधसे गोली गुंजा प्रमाण बनावा । १ से ३ गोली दूधसे देना । खुराक में बकरीका या गौका दूध हि देना । सब प्रकारका शोथ सर्पप्रहणो विषपण्डर पांडुरोग आदि मिटते है ।

शोथशादूल तेल—सहजनेकी छाल शिरीशका छाल निगुंड़ी मालकंगनी सहजनेने वीज धतूरेका पान पुनर्नवा अरणो धरष छाल अहुषा कटहरी छोटी फाकडासींगी बडोशफ अजवायन कुटकी (तिष्का) पजीठ रास्ना वाला कचूरा कपूरकाबली बच पीपरीमूल कुष्ठ धनिया कायफल कूबला प्रत्येक औषध दस दस तोला लेकर कुटकर पीछे उसमे पक्का १० सेर नौमूय और १० सेर पानी डालकर १२ घंटा सिगे रखना पीछे पक्का २० सेर (४१ रतल) सरसोंका अथवा तिलका तेल डालकर घीमी आंचसे पकाना पानीका अंश जल जाय जब स्वांगघीत होने देना । पीछे कपडछान पर रखना । यह तेल १ से २ तोला तक दूधसे पिलाना और मालीस करना । सब प्रकारकी सूजन शोथ शोथ मिटना है । कभी रोग पांडुरोग वग शुल पेटके दर्द में ओ इषध उरयोग किया जाता है ।

शोथका सामान्य उपाय

- १ अद्वसी गिलोय पुनर्नवा सम भागका कवाथ मधु मिलाय पिलाना ।
- २ तिलका पिछ उसमे भैषका मक्खन मिलाय मक्खन जैसे बनाकर लगाना
- ६ हरद हल्दी भारंगी गिलोय चित्रक दारुहन्दी पुनर्नवा देवदार सेांठ सम भाग कुटना १ से २ तोला का कवाथ पिलाना ।
- ४ पुनर्नवा देवदार सेांठ सम भाग कुटकर रखना ०। से ०।। तोला चुर्च दूधमे डाल पकाकर वह दूध पिलाना ।
- ५ दंतीमूल निसेय सेांठ पंपल कळीमिरष चित्रक सम भाग कुटना ०।५ तोलाका कवाथ धर पिलाना ।
- ६ पुनर्नवाका पंचांग देवदार सेांठ सहजना छाल सरसोंका कवाथ पिलाना
- ७ बिल्वके पत्ता सेला २॥ पानीसे महीन पोस पिलाना २१ दिनमे चाहे जिस अंगकी सूजन मिटती है ।
- ८ पुनर्नवा नीमकी छाल सेांठ पटोका समभागसे कुटकर पानीमे पीछ सूजन सर लेप करना ।

९ सोधमकी छाल या लकड़ी तोला ५ को कुटकर स्वाय कर पिछानेसे १० से १५ दिनमें सूजन मिटती है ।

१० लंदेलका मूल पानीमें पीस लेय करने से सूजन मिटे ।

११ पुनर्नदा मूल को कुट समभाग गुठ मिलाकर रखना २ से ८ मास पानीसे देना शोथ मिटे ।

१२ डोटार नागरमेध कुटकी हरद बहेला भांजला छोटी कटहरी मूल पटोल हल्दी नी-दी छाल गुणल समभाग कुटना १ से २ टोलाका वनाय पिलाना ।

१३ अरणी निपुंटी पकाइन नीम भांगराया एक घड़ेने स्वाय कर इसकी माक्(बाष्प) देना ।

१४ जीरा पाठा नागरमेध पीपल पिपरीमूल चक्रक भोठ चित्रक कटहरी मूल हल्दी अर्दीष्ट समभाग कुट २से६ मास पानीसे देना सप दोषका शोथ मिटे ।

१५ क्षारोदशर्घनी चुण २ से ४ मास तक पानी या दूधमें २१ दिन रख देना ।



प्लीहा तिल्लीकी वृद्धि

कारण—पेटकी धीरे और हृदयके नीचे रफाके चटानेवाली नदीका मूल है उसे प्लीहा या तिल्ली परल कहते हैं। भस्का दूर चिकने गरिष्ठ पदार्थ सूत भिगादने वाली चिजे, कावा या विषमज्वर शीतज्वर नेलेरियाके ताप आदिसे पाँहुरींगसे कामलासे विवेकका पानी एगनेसे प्लीहा बढती है। गीर जीसे जगल या मेजवाले प्रदेश जहाँ वृद्धीके मूलके पानी पीनेमे जाता है सूखा ताप कम मिलता है इसवाटे कारणसे प्लीहा बढती है।

वायु प्रवाह होना—प्लीहाके बढनेके साथ पेट फूटना गेस बढना उदावर्तवायु बागे और दद होता है। पित्त प्रधानमे ताप जलन दाह वेनेनी यमराहट शरीरका रंग पीलापन लिये हो। कफ प्रधानमे प्लीहा कठिन हो मदाभि अरुचि उवका आवे। यह रोगी कमजोर हो शरीरके बड़ भागपर सूजन हो बड़ा हो। प्लीहाका दाग हृदय पर होता थाप लेनेमे तकलिक हो भूख कम लगे रुन्त-टट्टे साफ न हो थोटे परिश्रमसे कम चढे।

पथ्योपथ्य—सुगन्ध साधा :हल्ला लेना। बाजनीकी रोटी चावल खीचड़ी सुग चना जब वेगन खुरण दूधो चौलाई मेथीकी भाजी छाँछ दही दूध सहजना की फली करेना कटोरा परवल और जो चीज शरीरके अनुकुल हो उपयोगमे लेना।

प्लीहा णव—पारद तोला १०, गवक तोला २०, ताम्रभस्म लेह भस्म स्वर्ण मक्षिक भस्म शंख भस्म शुक्तिभस्म प्रत्येक छह छह तोला सेंठ पीपल काली मिरच कूटड़ी हल्दी निमोथ कूठ पाठा सेंधानोन जवाखार सेंधल थिलाजीत हरष सेहागा चित्रक शरपुंर प्रत्येक चार चार तोला, सब कूट निवि वत भिलाकर गिलेय और रोहीतक (रगत रोहो) के रस या कवाथी एक एक भावना देकर रस्तीकी गोली बनाना। २ से ४ गोली दिने दो दफे पानीसे देना। प्लीहा यकृत वृद्धि गुल्म वायु रफाकी पेटमे जमी हुई ग्रन्थि मन्दाभि अरुचि गेस चढना उदावर्त वायु आदि मिटते है।

प्लीहारि—पारद गंवक, लेह,अम्रक शंख सादरखींग प्रत्येककी भस्म, हींग अजवायन सेंठ पीपल काली मिरच रोहीतक चित्रक शरपुंर मूठ हरष वायविङ्ग इपुया गिलेय सेंधानोन अमोद सब समभाग लेकर ठाकका मूल अहुषा नीचू प्रत्येक की एक एक भावना देकर ३ रस्ती की गोली बनाना। २ से ४ गोली पानीसे देना। २१ दिनमे बढो हुई प्लीहा कीवर पेटकी गाँठ आदि मिटते हैं इस औषधको प्लीहान्तक रस भी कहते हैं।

प्लीहा हर मिश्रण—प्लीहाणं व रस यकृत प्लीहादरात्रि रस शिलाजिह्व
लघु वस्त्र माकती स्वर्ण माक्षिक भस्म रक्त प्रत्येक एक एक तोला टेकर
घोटकर रखना । ६ से १२ रती दिनमें दो समय पानीसे देना । प्लीहा
यकृतकी वृद्धि पेटकी ग्रन्थी आदि मिटते हैं भूख लगती है शक्ति आती है ।

रोहीतकावलेह—रोहीतक (रगत रोहडो) को छाल तोला ४०० को कुट
कर वनाथ करना । उसे कपडछान कर उसमें गुठ तोला ८०० आठसे ढालकर पकाना
गाढा होनेपर उसमें सेठ पीपल काली मिरच पिपली मूल तज तमालपत्र इलाईचो
हरद बहेवा आबला शरपुखमूल घाईके फूल प्रत्येक आठ आठ तोला लेकर कुटकर
गुठपाकमें ढाल देना । अवलेह जेसा हो जाय जब स्वांगशीत होनेपर अच्छे वरतन
में भर देना । २ से ३ तोला दिनमें दो दफे खाना । बढी हुई पेटकी तिल्ली
यकृत अण्ठला ग्रन्थी रोहीके जमावसे हुई ग्रन्थी रक्तगुल्म ओरता का वृष्टातक
शूल आदि पेटके रोग मिटते हैं ।

रोहीतकारिष्ट—गेहं तड को छाल रतल २० को कुचल कर पानी
रतल २०० दोसे ढाल कर वनाथ करना आधा रहने पर एक अच्छे लकड़ी या
बिनाइ मिट्टी को बरणी में भर कर उसमें गुठ रतल ३० और घाई के फूल
तोला ८०, सेठ पीपल काली मिरच पिपरी मूल चवक चित्रक तज तमालपत्र
इलायचो हरद बहेवा आबला प्रत्येक बारह बारह तोला कुट कर ढालना । ढेढ
पास तक रहने देना बीच बीच में आठ आठ दिनको हिलाते रहना । ५० से
६० दिन के पीछे कपड छान का अच्छे वरतन में भरना । २ से ५ तोला तक
दिनमें २ या ३ दफे पिलाना । प्लीहा यकृतकी वृद्धि पेटकी ग्रन्थी गुल्म मसा
सृजन मंदाग्नि आदि मिटते हैं ।

अर्क लवण—आकके पीले पके हुए पान लेकर एक हठीमें पान और
पीसा हुवा नमक के ३ से ४ थर डेकर उपर पान दाग हड्डोका मुख मिट्टीसे
बंद कर गज पुट अग्नि देना स्वांगशीत होनेपर पीस रखना । २ से ३ भासा पानीसे
देना तिल्ली लीवर बढी हुई मिटे कफ शरदी मिटे

महामृत्युंजय लोह—लोह भस्म तोला २०, पारद गंधक अम्रक भस्म
ताम्रभस्म प्रत्येक दश दश तोला, रौप्यभस्म मयुरपीच्छ भस्म शंख भस्म
कोडो भस्म जवाखार मज्जीखार बिड लवण सैंधानेन मैनसौल शुद्ध हरताल
चित्रक हिग कुटकी रोहीतक छाल निसोथ इमलो फल इद्रायण फल बाबला कुङ्कु
अपामार्ग मूल परब मूल भमलवेत हलदी दाबहलदी प्रियंगु इन्द्रजौ हरद

अजमाव' अजवायन शरपुख चक्रमर्द तज लहसन प्रत्येक ढाई ढाई तोला लेकर
 क्षय कूट विधिवत् मिलाय अक्षरखके रसकी और मिलोयके रसकी एकएक भावना
 दिखर सुखाकर घोट रखना । मात्रा १ से २ भासा पानीसे देनेसे बढी हुई
 रिकली और पेटकी किसी प्रकारकी गांठ मिटती है । खांसी विषम ज्वर आमशात
 श्वास बवासीर शुल्म शोथ उदररोग आदि रोगोमे भी उत्तम गुण करता है ।

नोट—इस औषधका पाठ भैषज्य रत्नावलीमे है पर ध उसमे घटक द्रव्योंके
 अंशजन नहि लिखा वह अनुबन्धसे यहाँ दिया है ।



यकृत-लीवर कलेजेके रोग

यकृतका कार्य—यह शरीरका मुख्य अवयव है। यह पेटमें पसेलीबोर्के अंदर बायें (दक्षिण) भागमें रहा है। इसकी लंबी प्रायः १२ इंच और चौड़ाई प्रायः ४ इंच होता है। इसका मुख्य कार्य रक्त को शुद्ध करनेका है। रक्त का रंग खूनी पान्चन शक्ति उत्साह यह सब गुण यकृत लीवर-कलेजापर आधार रखता है। बहुत कर के सारे शरीरका आधार यकृत है वह बिगनेसे सारा शरीर बिगड़ता है।

यकृतशुद्धि—माहार विहारकी अनियमिततासे चोट लगनेसे अधिक बीरनेसे खून बिगड़नेसे लीवर रुकना है जय श्वास चढ़ता है। भूख मंद होती है। दस्तकी कमी रहती है शरीर कुश होता है हृदय कमजोर बनता है।

यकृतका कलेजा कलेजेमें पानी भरनेसे उसका कद बढ़ता है। पानी अधिक भर जायतो पेट तुकी जीसा मोटा होता है, पेटपर शिराये सीखती है। दम मुझीलेसे ले सकता है, सोते फिरते कही सुख आराम नहि मिलता। रोगी कमजोर कुश होता है, वमन दिक्का दस्तकी कमी अधिक वस्तु ये चिन्ह होते हैं।

यकृतमें खूनका जमाव—दाह अधिक पीनेसे भारी चिकने पदार्थ बाजारका खुराक जलद मसालावाले पदार्थ खानेसे शरीर लगनेसे विषमज्वरसे मलेरियाके बुखारसे इस तरह अनेक कारणोंसे लीवरमें खूनका जमाव होना है। जब कलेजेमें भार-बोझ लगता है, पयलके नीचे और उपर दह हो, भोजनके पछे पेटमें खंच हो, पेटफूले भूख मंद जीभपर छारी जमे, दस्तकी बढी पिशाच कम और अटक अटक कर उत्तरे शिरमें दह हो। उत्साह स्फूर्ति आनंद न रहे कभी दस्तमें और उलटीमें खून पड़े। हाथ और पांवमें सूजन हो, श्वास बड़े मुक्त पर सूजन हो।

लीवरका तीक्ष्णदाह इसे सुवारकी गाँठ, ठंडीगाँठ सुझाराकी गाँठ भी कहते हैं। कलेजा मोटा हो, लप सखत बड़े मस्तकमें दह हो, दाह और झल निकले, कलेजे पर दाघनेसे दह हो श्वास लेनेसे, खाँसी या छींक खानेसे दह हो, रोगी बाई ओर (वाम भागमें) सो न सके तृषा जगे, पिशाच थोडा थोडा और उत्तरे।

श्वस कमरा जैसी पाली दिखे, श्वासकी गति, बड़े सखी खाँसी आवे, हृदयक -हिचकी आवे वमन हो पेट कठिन हो जीभपर सफेद छारी जमे दाघे कमाये दह हो कभी बायेंमें भी दह हो।

यकृतकोष—यह कलेजाका संकोच है। पेट और छाती पर खींच कर पड़ता बांधनेसे दाह पीनेसे, विषम ज्वर या अन्व ताप लगे समयतल आनेसे, आमाशयके रोगसे उपदशके रोगसे इत्यादि कारणोंसे कलेजा प्रारभमे बड़ा होकर पीछे संकोच पाकर छोटा और कठिन होता है। इसकी उपरकी सपाटी मृदु (लोधी) न रहकर सीताफल जैसी उंची नीची (खरखट) रहती है। अजीर्ण रहता है। इसी मुखसे उलटीये और दस्तमे खून गिरता है। इस रोगके साथ किर्को कामला अथवा बबका चमक कन्धो बवाखोर कमजोरी आदि उपद्रव भी होते हैं।

यकृतका विद्रधि—कलेजेमे शोथसे दाहसे या अन्व कारणोंसे व्रण-गुमहा ग्रन्थी होकर पस (पस पूय) होता है। तब ठंडी लगकर बुखार चढ़ता है पथीना हो अजीर्ण हो भूख न लगे, शिक्ल-मुखमुद्रा निस्तेज हो। बुखार उतरे हो भी झाड़मे जर्ण ताप रहे। न डोकी गति फलद हो। जीभ पर सफेद छारी लगे। श्वातकी ताप बड़े। उलटी दस्त मुरडा हो। कलेजेके भागमे छातीमे पेटमे पीठमे द्वाये कंमेमे दर्द हो। कलेजा बड़े। पाक होताहो उस जगह अधिक दर्द हो। विद्रघी ग्रन्थी पकने पर कभी अंदर फुटती है कभी वहार व्रण होकर फुटती है। तब छातीके दाया पड़खा पीठ या पांसलीके बीचमे सुजन होकर बड़ा शङ्क ग्रन्थी व्रण होता है और उसके उपरके भागमे छिद्र पड़कर खून और पस निकलता है। यदि अंदरके भागमे फूटे तो उपरके चिन्हा के साथ दम चड़े, पस दस्तमे पड़े, खांसो आवे पिकदानी भरजाय इतना खून मिश्रित कर और पस पस बड़े। आमाशयसे फूटे तो उलटीमे पस पड़े। यदि आमाशयका पस पेटमे फैल जाय तो रोगी एकदम मृत्यु पावे। पेटमे सरुत पीड़ा होने लगे, सारे पेटमे बोज भार लगे, रोगी बेहोश होवे, नाडीकी गति क्षीण हो, और मरण होवे। कलेजेकी विद्रधिमे पस पांच छ तोलासे लेकर पाच सात रतल तक-परु निकलता है। पस होनेके पीछे रोगी बलवान हो और पूय कम उत्पन्न हुआ हो तो उसका शोषण होकर आराम होता है। यदि एकाद जगह सुखकर सब पूय निकल जाता है तो आराम होता है, लेकिन कलेजा पकनेके पीछे परिणाम भयकर आता है। यह रोग दाह अधिक मर्णाश रहित पोने वालोंको अधिक होता है। शरम देगमे दाहना अधिक उपयोग करने वाले मे यह रोग ज्यादा होता है। इसे एले पेथीमे लीवरका केन्सर भी कहते हैं।

पथ्यापथ्य—साश जुलब देना। तस्त पिशाचका खुन्खा होनेसे सुजन भय होता है। साधा दलका खुराक देना आराम देना। श्रम करना नहि। दर्द पीड़ा शूल होता हो वही शोक लेप करना। सुगन्धानी चावल खीचड़ी बांजी

चनेका जोंका बाजरीका आटाकी गुठ मिल यो राख देना । दूधो सूण परबल करेलां कटोला चौलाद् मेंधीकी भजी आदि देना । पसीना लाना गढ-व्रण बहार नींदले तो पछाकर फोडकर दिण्ड निकाल देना । इस रोगके साथ जो जो चिन्ह हो उसके औषधका योग करना ।

यहृत्प्लीहोदरारि लोहो नं १—स्वर्ण भस्म तोला १, ताम्रभस्म जग भस्म अज्रभस्म माक्षिकभस्म शखभरम प्रत्येक चार चार तोला लोहभस्म १० तोला, सब साथ मिलाकर बदरख अरणीके पान वीलीके पान कुटकी तुलसी पान प्रत्येकद्वे रस या क्वायको एक एक भावना देकर घोटकर रखना या एक रत्ती की गोली बनाना । मात्रा २ से ३ गोली दिनमें दो समय पानीसे देना । लीवर के सब रोग ने गुणकारी है । तिल्लीका रोग खास खासो गुल्म सूजन पांडु कामला मे भी अच्छा गुणकारी है ।

यहृत्प्लीहोदरारि लोह नं २—इसमे स्वर्णभस्मकी जगह स्वर्णमाक्षिक टाली जाती हैं । यह भी यहून प्लीहा गुल्म ग्रन्थी आदिमे अच्छा काम देती है ।

नोँध—सामान्य भाषिक स्थिति वाले लोग स्वर्णभस्म वाला न लेवके उनके लिये स्वर्णभस्मके स्थानमे स्वर्णमाक्षिक डालकर बनाना पडता है । कभी गरीब रोगीको बिना नृत्य याने बर्मादा देनेके लिये भी माक्षिकभस्म वाला बनाना पडता है । इस लिये जानोको पाठको एक नंबर और माक्षिकवाले को २ नंबर दिया गया है ।

क्षारामृत—सबल जवाखार सुराखार खज्जीखार सेवानेन मोहागा बिड लवण वमक सब समान माग लेकर आकके दूधकी और थूहरके (सुहो) दूधकी एक एक भावना देकर एक हंडीमे आकके पानके ४ से ५ थर देकर बीच बीचमे यह बिछाकर उपर आकके पान दावकर हंडीको कपड मिट्टी कर गजपुट भग्न देना स्वांगशीत निश्चल घोटकर उसके समान नीचेका राहितकादि चूर्ण मिलाकर रख छोडना । इसकी मात्रा दो से तीन माश तक रोगका स्वल्प देखकर दिया जाता है । लीवर तिल्ली गुल्ममे गुणकारी है ।

रोहितकादि चूर्ण—रोहितक छाल अनीस लत्त परंज बीजको गिरी (काकचीयानामी ज), सेठ पीरल फालीमोरच वायविडग सरसो हरद बहेडा आंवला मेंढसोंगी पुनर्वा मूल जटामांसी अजमोठ जीरा शाहजीरा सब सम माग लेकर फूट कर रखना । यह क्षारामृतमें सम भागसे मिलाया जाता है । और यहून लीवर के सब रोगमे यह चूर्ण अकेला भी २ से ३ माश पानीमें दिया जाता है । सब प्रकारके कटेजाके रोगमे उत्तम गुणकारी है ।

महालोकनाथ रस—पारद मंघक पकाया सोहागा स्वण' माक्षिक मरु
अम्रक मरु प्रत्येक दस दस तोला, साबर सींग ताम्र शख लोह और शुक्ति प्रत्येककी
अस्म यीस यीस तोला, कौडी मरु तोला ३०, सब साथ मिलाय क्वारपाठा और
पंछके रसकी एक एक भावना देकर इसका गोला कर उपर केलीकी पत्ता स्पेट
चागा बांध कर उपर कपट मिट्टी कर पांच रतल छाण'का अग्निमे पकाना । एक
झुंढामे' उपर नीचे छाणाका दृष्टा रखकर अग्नि देना । स्वागशीत होनेसे
निकाल कर घोटकर रस छेवना ३ से ४ रती दिनमे दो समय छाछो हाइदसे
या गायके दुधसे देना । लीवर के सब रोगोमे उत्तम गुणकारी है ।

मृत्पु अथ रस—पारद तोला ४, गवक तोला ८, अम्रक लोह रौप्य
प्रत्येककी भाग चार चार तोला, ताम्र वंग माक्षिक प्रत्येककी भाग चार चार तोला,
रसविदूर चित्रक सूर्य ढाककाशीर पीपरीपूल हरद बगडा आंनला जिसे थ अपामार्गभूत
अतीव श्वेत विगिया कछनाग पुनर्नवा मूल जटामाषो मयूरगिखा नागरमोय सोहागा
हल्दी संचानेन कवाखार प्रत्येक दो दो तोला सब साथ मिलाकर अपामार्ग
पंचांग अरणी पान अदरक और बिस्वके पत्ते प्रत्येकके साथ कवाथकी एक
एक भावना देकर दो रतीकी गोली बनाना । मात्रा २ से ४ गेली पानीसे
देना । लीवरकी प्रन्थी लीवरकी वृद्धि लीवरमे खूनका जमाव लीवरके रोगोमे
उत्तम गुणकारी है । पांडुरोग कामवा पेटके रोग कृमि, गुल्म मंदाग्नि खूनका बिगाड
प्लीहाकी वृद्धि शूल इन रोगोमे भी दी जाती है ।

यकृत प्लीहादि योग—सर्वेश्वर पर्पटी यकृत प्लीहादरारि लोह शंख
जटी महालक्ष्मी विलास अरोम्यर्चनी शिलाजीत सूर्य वरु नेमालती प्रत्येक एक
एक तोला और महालोकनाथ तोला २ सब साथ घोटकर ६४ पुछी बनाना
दिनमे दो समय अमृत मलातक कंटकारी अम्लेह अथवा चित्रक हरीतकी १ से २
तोला में मिलाय कर देना । सब प्रकारके कलेजेके रोगमें उत्तम फायदा होता है ।

रोहीतक घृत—रोहीतक (रगत रोहवा) को छाल तोला ४०० और
शुठबी निकाला खट्टे बेर (बीर) तोला २४० कवाथ बनाना उसमे ककरीछा
अथवा उटनोका दूध २४० डालना और मोठ पीपल कार्लमिरच हरद बगडा
आंबला हिंग अजवायन बायविडंग शिडलवण अजमोद संचल लींग पुष्करमूक
अनारबीज देवदार पुनर्नवा मूल इन्दायणका फल अयाखार चिचिक हपुषा चवक
बच प्रत्येक एक एक तोला कूटकर कवाथमे डालना और सच्चा घी रतल २०
डालकर घीमी आंचसे पकाना । जलका अंश जल प्राय जब अग्नि निकाल
कर बीसे हि १२ घटा स्वागशीत होने देना पीछे गरम कर बी कपड छानकर रख लेना

२ से ४ तोला दिनमें दो वस्तु खिलाना और यज्ञ प्लीहा के स्थान पर बहार मालीष करना । और उपर बताये गिरी औषध के साथ अनुमान रूपमें भी देना । यज्ञ लीवर प्लीहाके रोग और उसके उपद्रव पीडाकारी चिन्ह में उत्तम गुणकारी हैं ।

सामान्य प्रयोग

१ शिलाजीत स्वर्णमाक्षिक भस्म क्षारानृत समभाग मिलाय ३ से ६ रत्ती पानीसे २१ दिन तक देनेसे अच्छा लाभ होता है ।

२ सहजनेकी छाल पीपल (अम्र'थ) छाल यच हिंग सेंधानेन समभाग कुटकर १ से ३ मासा पानीसे देना ।

३ सफेद फुल्की पुनन'वा का मूल तोला १ पानीमें पीसकर पिलाना ।

४ वरुण (वायवरणो)का मूल तोला १ हमेशा पानीमें पीस पीलावा ।

५ सौर(सदिर) की छाल हरद बहेडा आवला नीमकी छाल कुटकी मूली'ठी मूल निरोध पटोल मसुरकी दाल सब सम भाग ले कूट रखना हमेशा १ तोला का वनाय कर पिलाना ।

६ सहजनाका मूल तोला १ महीन पीस उसमें १० तोला पानी और १ बड़ा घन्च शहद डालकर पिलाना । २१ दिनमें यज्ञ प्लीहा के रोग में लाभ होता है ।

७ रज्जचंदन मश्रीठ हलदी मूली'ठी मूल सेनागेरु समभाग कूट पानीसे पिय लेप करना

८ उपरके भागमें दोषधन लेप अथवा दशांग लेप लगना



वायुका गुल्म गोला, रक्तगुल्म खूनका गुल्म ग्रन्थी

वायुका गुल्म—ज्वर अतिघार संप्रश्नका रोगी अगर इस रोगसे मुक्त, वमन बिरेचन लिया हुआ मनुष्य वायु करने वाली चीजे खावे, भूवा पेट पानी पीवे भोजनके पिछे तुरंत व्यायाम कसरत करे कूड़े दौड़े, मल मूत्रका वेग रोके इससे यह रोग होता है। ठंडे रातव सी अन्नान खावे रहेनेसे, रुख लूने—(धी दूध छाछ आदि बिना प्रवाही साथ पुराकके) ठेठे रहनेसे शोकसे चोट लगनेसे मल क्षीण होनेसे अधिक उपवाससे बलवानके साथ लड़नेसे वायु प्रकोप होकर पेटमें गुल्म गोलाका रोग होता है।

चिन्ह—प्रारंभमें बहुत डकार आवे दस्त पड़ने लगे तृषा लगे आंता में दाह हो पेट में वायुका गुडगुड आवाज हो पेट फूले वमन हो मूत्र न लगे वायु प्रधान गुल्ममें वस्ति हृदय न मि और देनेवाले पश्चिमकी पीड़ा हो घिर दद हो तिल्ली की जगह पीड़ा हो आवे शब्द करे सूइयां भोक्ती हो ऐसा दद दस्त च्छत्र हो शरीर झकड़ जाय मुखमें शोष लगे थपान वायु छूटे नई यह गोला कठिन नहि होता उपर नीचे चढ़ता उतरता हैं। पित्त प्रधान गुल्ममें जलन दाह खट्टे डकार मूर्च्छा पसीना हो तृषा लगे उपर चढ़े गुल्म उपर नीचे गति मान हो कफ प्रधान गुल्ममें अरुचि पीनस नाकसे पानी गिरे डकार गुल्म कठिन स्थिर एक स्थान में जमा हुआ मालूम होता है।

रक्त गुल्ममें—यह गुल्म प्राय ओरछा का होता है। मासिक अनियमित होनेसे, गर्भावान न होनेकी औषध खानेसे, ऋतु बाहर न गिरनेके लिये कपड़ा बंधे डालनेके कारण ऋतुका प्रवाह अटक जानेसे, प्रथम प्रसवके समय बीगड़ा हुआ खून न निकलनेसे, प्रतिमास आता हुआ ऋतु अटक नाभिके नीचेके भागमें जमा होकर रक्तका गुल्म गोला होता है।

चिन्ह—डकार आवे, शरीर कृश हो पेटमें दद चढ़ता दाह दस्त तृषा ताप शुष्क योनिसे दुर्गंधी साव आदि होता है। किसीको मासिक बंद होता है, किसीको न्यूनाधिक आता रहता है, इसी दशामें ऋतुका रक्त विशेष स्थानमें जमा होकर ओरछाका रक्त गुल्म होता है। प्रारंभमें गर्भ रहनेकी संका होती है लेकिन गर्भ फरकता है जब गुल्म स्थिर होकर शुल निकलता है। गर्भके हाथ पांव अवयव जान सकते हैं जब गुल्म गोलाकार होता है।

पथ्याध्य—जो चिन्ह मालूम हो उसका औषध देना। शोक करना रुक हो हो खुलासा होना रहे ऐसी औषध देते रहना अनुष्ठान

होकर अधो दावु छुटे वीश करना । पेट पेहु वृक्क नाभि के दोनो बाजु मालीच करानो । लघन करना, मुख न होतो नाना नहि । अल्प मिताहार हल्का खुराक सुंग वाजरी श्व चना उडद मैथी दुधी क्षन्ता वेगन सुरण कटोला आदि शाक, लाल मिरच अक्षरय लडि नमक हिग क्रेकम धनिया जीरा र'इ मेथी लेंग ठक मीठानीम आदि पचला खाना । निवूका होम्डा (करीग) फलका अघार निंबुका रस ढाल शाख मे ढाल खाना मिष्टान्न कम खाना गुडका मिष्टान्न दानि नहि करता । च'हा काफी कम पीना ।

गुल्म दावानल—पाण्ड गंधक, अम्रक सुवर्ण माक्षिक लेह तप्त प्रत्येकको अस्म झिलाभीत मोहागा नक्का मोराखार सेधानोन चनेकान्गर सोंठ पीपल काली मिर्च पच देवार ईलायची तत्र हलरी पित्रह हरड चोपचीने निसेध आकध दूध थूरका दूध सब समान भाग लेकर अरणी चिक्क मांगरा ताबूल प्रत्येकको एक एक भावना देकर सुवाकर घोट रखना अथवा दो रती की गोली बनाना । मात्रा २ से ४ गोली पानीसे देना । सब प्रकारका गुल्म गोला एक गुल्म मिटता हैं । एगोहा यकृत की वृद्धि अडवृद्धि गेस उदावर्त मे भी अच्छा फायदा करता हैं ।

मुक्ता पचामृत—मेतोकी पिष्टो १ प्रवाल २, वंग ४, शंख ८, शुक्ति १६, सप्त साध मिलाकर ईज-गंधाका रस पौडा दुध पिस्तिकद बवांगठा शतावरी इमराज तुलसी प्रत्येकका रस या पचावशी भापना देकर शराव संपुटमे कपड मिट कर कुचकुट पुटका भस्म देना पछे निचाल कर घोटका रखना ३ रती मात्रामे पीपलका चूर्ण ६ गतो मिलाकर शहद या दूधसे देना ।

मुक्ता विद्रूप वंगाः शख, शुक्तिः क्रमाद् द्विगुणितानि ।

इक्षोः सुखीपपला विदारिका कन्यका क्षतवर्या ॥

हस्तपदो द्यामाया दद्याच्च रसेन आबनैकका ।

क्षतकुट पुट्टेन पत्रं कृणा मुक्ता त्रिरक्ति मात्रा ध्यात् ।

अधुना या दुग्धेन च पद्याद् इत्फुफ्फुल क्षयगदेषु ॥

विष्वामयेषु गुणदो मुक्ता पचामृत. अदा सिद्धः

सब प्रकारका शुक्मरोग हृत्थ रोग कुष्कुम रोग अय रोगमे उत्तम गुणकारी हैं ।

कांक्षायनी गुटिका—भजरायन जीरा धनिया कालीमोच, अमरगिता अजमोद सुखीजीजीरा, प्रत्येक तोला ८ हि, तोला ६ निसेध तोला ८,

पच स्वण पांचो मिलाकर तोला ५, दंती मूल वज्ररा पुंकर मूल वायवीडंग अनार वीन हरद चित्रक अमलवेन सेठ प्रत्येक तोला १६ सब साथ मिलाय कीजोरा निम्बुके रसमे गोली ३ रत्तीकी बनाना । मात्रा ३ से ६ गोली पानीसे देना । सब प्रकारका गुल्म वात गुल्ममे मधु छाँछ या आसव के साथ, पित्त गुल्ममे दुध के साथ, कफ गुल्ममे चित्रक हरीतकी अबलेहके साथ, त्रिदोष गुल्ममे बक्षरीके अथवा चटनीके दूधके साथ देना ।

गुल्म बालानल रस—परद गंधक शुद्ध हरत ल ताम्रभस्म से हागा जवाख र प्रत्येक दो दो तोला, नागरमोय पीपल काली मीरच सेठ वज्रपीपल हरद वच कुछ प्रत्येक एक एक तोला लेकर पर्वट नागरमोय अपमाग पाटा प्रत्येकके क्वायकी एकएक भावना देकर ३ रत्तीकी गोली बनाना ३ से ६ गोली पानीसे सब प्रकारके गुल्ममे दि जाती है ।

गहननाथ रस—परद गंधक अश्रक ताम्र वंग प्रत्येककी भस्म टकण नमक बछनाथ हरद जवाखार सेधानेन सेठ पीपल कालीमिरच सब समान भाग लेकर मिलाय निबुरस क्वारपाठा अदरक प्रत्येक के रसकी एक एक भावना देकर दो दो रत्तीकी गोली बनाना । ३ से ४ गोली पानीसे देना सब प्रकारका गुल्म छोओका रक्त गुल्म पेटकी ग्रन्थी गीठ लीवर प्लीहाकी वृद्धि इसमे गुणकारी है ।

गुल्म कुठार (या र) नाग वंग अश्रक कांतलोह ताम्र प्रत्येक की भस्म सब समभाग लेकर निबू रसमे घोटकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना मात्रा १ से २ गोली अदरकके रसमे शहद मिलाकर इसके साथ देना उरर छाँछ पिलाना । सब प्रकारका गुल्मराग अजीर्ण आम रोग और हृदय १५ उदरमे निकलता हुआ गुल्म रोगमे उत्तम गुणकारी है ।

निम्बूक्षार प्रवाही—निम्बूक्षार रस घोर ५ एक बडे काचके बाटला आधा खाली रहे ऐसा भरना उसमे नवधार सोराखार टकण फिटकीरी सज्जीखार जवाखार प्रत्येक आधा आधा घोर कूटकर डालना पीछे मजबुत बुच देकर रख छोडना । एक महिनाके पछे कपडछान कर रखना । मात्रा १० से १५ बुंद अथवा छोटी आधी चम्मच अर्धांज पानी तीन चार तोलाम डालकर पिलाना । स्वादके लिये आवश्यकता होतो आधा तोला शक्कर डालकर पिलाना । सब प्रकारके गुल्म उदायत वायु गेँस चठना पेटकी ग्रन्थी आदिमे उत्तम फायदा करता है ।

हरीतकी अबलेह—चित्रक मूल अरणी आवला छोटी कटहरी अपामाग अर्धेच चखेस चालीस तोला लेकर कूटकर क्वाथ करना कपडछान कर उश्

कवाथमे सेठ पीपल कालीमीरध अवाखार हातावरी सेरा सेहाना सेधानेन नमक अजवाइन असगंध पीपरीमूल त्रांसमाण नगरमेध घमासा प्रायेकका चूर्ण चार चार तोला और बडेहरड चूर्ण तोला ८० अंघी सब चीजे कवाथमे डालकर पकाना, रखनी जैसा हो जाय तब उसमे गुड तोला ८०० आठसें रालकर अगडेह जैसा घट्ट हो जब स्वागतीत होनेसे अन्के बरतनमे भरना । रोगोका दारीरिक हाल और चिन्ह देखकर मात्रा १ से ४ तोला तक दी जाती है । कष प्रकारका गुल्म पेटके रोग उदावत' गेष चढना मंदग्नि अलावरोध वसन दिक्की दसाकी बजनी पांडु कामला आदिमे उत्तम गुणकारी है ।

केरडा और प्रगद्धी-केर कर (केरडे) का फल जिसका अचार बनाया जाता है । नमक हलदी आदि डालकर फलको ढुबे रखते हैं । वह पानी पका सेर ५ से सेठ, पीपल, मीरच, सेधानेन, अमलवैत अवाखार प्रत्येक पांच पांच तोला सूटकर डालना चुब लगा देना जब बरत हो २ से ५ तोला तक पिलाना । पेटका शूल पेटका दर्द तत्काल शांत होता है । चढा हुआ गुल्म बैठ जाता है । हमेशा १ चम्मच पीलानेमे १४ दिनमें गुल्म ग्रन्थी तिल्ली लीवरका रोग मिटता है ।

गोष्ठुम प्रयोग—गेहुका आटा आधेके दुधमे मदन कर बनाना उस पर आठसे पत्ते लपेट कर नाला बांधना । पीछे उसपर काली मीठीका सुत्ताकर जमीन १० इंच छोद कर उसमे वह रख उपर मिट्टी दाब देना उसके उपर आतः और शामको २० सेर छाना जलाना । इसप्रकार सात दिनतक करना । पीछे ८ वे दिन निकाल कर मिट्टी पान अलगकर चक्काकार को पीस रखना । मात्रा ६ से ८ रत्ती पानीसे देना ईस मात्रासे प्रारंभ करना रोगका स्वस्थ विसर योग्य मात्रा बढायी जाती है । सब प्रकारका गुल्म रोग मिटता है ।



• मूढमार

कारण—इस्तीसे मारामारी में लड़ाई से उचे नीचे स्थानसे गिर पड़नेसे चोट लगनेसे शरीरके किसी एक अंगमें या अधिक अवयवों या अंगोंमें मार पड़नेसे खून नहि निकलता और उस जगह खूनका जमाव होकर शोथ सूजन हो जाती है दर्द होता है । हृदय जैसे अंगों पर सखत मार पड़नेसे कभी मृत्यु हो जाती है । औसत मारको मूढमार कहते हैं ।

पथ्यापथ्य—सट्टा रफ आइसक्रीम शरबते खादकौ चीजे खाना नहि । मधुर पदार्थ के लिये गुठ्ठाली चीजे खाना वाजरी मुंग सब्ज आदि हितकर हैं ।

महालाक्षादि गुगल—लाख तोला ८ आठ पारस गंधक हरड भीलावा सिराहठा छान (आसोदरो-अश्मंतक) शिरीष छाल (सरसंडो) असगंध वलाबीज सता घी सोंठ पीपल कालीमिरच तज लोंग प्रत्येक चार चार तोला लेना, गुगल ३२ तोला और गायका घी १० तोला मिलाकर महीन कूटकर पानीसे गोली रत्ती ६ की बनाना । २ से ६ गोली दिनमें दो समय पानीसे या घीसे देना उपर दुध पिलाना । दुधका खुराक ज्यादा रखना । तेल लेप आदि बाह्योपचार करना ।

मुमीआई—पीछे रंगकी राल तोला ८० और भीलावाकी उपरकी टोपी होंट निकाल कर तोला २० लेकर दोनोंका साथ कूटना अच्छी तरह एकत्र हो जाय पीछे उसमें पीपल तोला १, अकरफरा तोला १, और रुमीखिंग रफ तोला २ सबको महीन घोटकर उपरके राल भीलामा के चूण में मिलाकर फिर कूटना, एकत्र होजाय जब उसमें खोपरेका तेल तोला १० डालकर एकत्र करना पीछे मिट्टीके चौड़े सुईके धरतनमें डालना (पाटीयो-ग्राम्य प्रजा जिसमें दाल आदि खाने पदार्थ पकाती हैं) उसे चुल्ही पर चढ़ाकर तीव्र अग्नि देना ढक्कन ढांकना सबका रस हो जब लकड़ीसे हिलाना उफान (उफाणो) आवे जब नीचे उतार कर १० मिनट हिलाना उफान चौंठ जाय जब फिर चुल्ही पर चढ़ाना फिर उफान आवे जब नीचे उतारना इस प्रकार तीन दफे करनेसे पक गया समझना पीछे उसे मिट्टीके ढक्कनसे ढक देना १२ घंटा तक स्वागशीत होने देना । पीछे मिट्टीका धरतन तोड़कर पर्पटो-पपट्टी जैसे आकारकी दवा निकाल कर घोटकर रख छोड़ना

यह मुमीआई दवा तैयार । इसको मात्रा रत्ती ६ में जायपत्री (जायत्री) रत्ती ३ और कोकच रत्ती ३ का चूण मिलाकर सुबे शाम घी से देना । चाहे जैसा मूढमारसे खूनका जमाव हो गया हो खून छूटा पड़ जाता है और ७ से १४ दिनमें आराम होता है । यह औषध बमन पेटका गैस उवावत कमजोरी अशक्ति

से नी दी जाती है। यह औषध बनाते वक़्त मीलावाका तेल उठकर हाथपर लग आय या दूसरे अंगपर सग जायतो छोपरा (श्री फल टोपरा) खिलाना और से परेक्षा तेल सय जगद मालीस करना। दवाई पवात समय हाथोमे घी लगाना। इसे ममाइ मुमाइ मुमई मुमीआइ इत्यादि नामसे पहिचानते है।

बंघाण—एरंडके बीज तेला १८, देशी सवून तेला १८, से घानेन तैला १५, हल्दी तैला १५, युरा खार तैला २०, घोडेकी लाद (लीडा) तैला ४० छवको छाप वृट पानी मिलाकर मेटी रोटी जैसा बनाकर पकाकर मार चोट लगी हो वर पर बाधना आधा इंच मोटा (जुंदा) लेप करना। उपर रेक करना। जमा हुआ खून छूटा पडकर पीडा मिटती है।

महालाक्षादि तेल, महानारायण तेल आदिमा मालीस करना।



हड्डी टूटना सांधेका मरड होना

कारण चिन्ह—गिरजानेसे चीट लगनेसे हाथ पांवा मरोड होनेसे किसी वस्तुका आघात लगनेसे हड्डी टूट जाती है हड्डी दो सांधेमेसे नीचे खींच जाती है। हड्डीकी जगह सख्त दही होता है। टूटा हुआ या खिस गया संधि बेगोल होता है। हड्डी बहुत करके बीचके भागसे टूटती है और अंदर कभी कटकट शब्द होता है। हड्डी टूटी है या खिस गयी है इसको जांच कर पंछे उचित उपचार करना, खिस गया होतो उसे योग्य स्थानपर जेठाकर पीछे पाटा लेप आदि करना।

पथ्यापथ्य—प्रारंभमे शीतापचार करना। लेप ठंडा लगाना। शीत पशथसे घेना और शीत प्राप्ति वराथ पिलाग। नमक तीखा क्षार वाले पशथ छेसग व्यायाम दूध लूना—घी दूध विरहित अक्षिष चीजे खाना नहि। खांड शक्कर की चीज कमखाना।

सामान्य उपचार—प्रारंभमे उस जगह ठंडे पानीकी धारा करना। काली खेनडी मिट्टी पनी मिलाय लेप करना ठपर दर्भ—(दाम) बांध कर पाटा बांधना। हड्डी नीचे खिस्क गई होतो उचे चढाना, उंचे बढ गयी होतो नीचे उतार कर ढाबकर स्थान पर बैठे देना, नीचे खींचकर अच्छा करना। पाटा बहुत खींच का बांधना बहि और बहुत ढीला शिथिल भी नहि बांधना। शीत ऋतुमे पाटा रात सात दिनके पंछे खेलना और ग्रीष्म ऋतुमे तीन तीन दिनमे खेलना। १ मास बीतने पर पाटा पांच पांच दिनके पीछे खेलना महुडा (मधुर) गुलर सरल पीपल (अमृत) बड (बट) ढाक इत्यादि वृक्षकी छालके बूटकर गाढा आधासे १ इंच मोटी (जाड़ा) लेप कर ठपर उरी वृक्षकी छाल रस पाटा बांधनेसे टूटी हुई हड्डी और साधा जलही मिल जाता है।

वाक्सा शुगळ—बच्चुलकी पत्ती छाल मूल फल गेद, लाख असगंध महा बला (खपाट)के बीज, सेंट पीपल कालीमिरच हरड बहिडा आंवला हाडसांकल अनेथु (अगथिया)की छाल, आसेंधवराकी छाल गूलरकी छाल प्रत्येक दस दस तोला लेकर कुटकर महीन चूर्ण बनाकर सबके सप्पन अर्थात् ९० तोला शुद्ध गुग्गुल डालकर उसमे गायका घी तोला २० डालकर कुट मिलाना और बच्चुलकी छालके कषायकी भावना देकर ३ रसीकी गोली बनाना। दिनमे दो या तीन समय ४ से ८ गोली पीवकर या चावकर पानीसे या दूधसे देना। १४ से २१ दिन तक देनेसे टूटी हुई हड्डी जूड जाती है। खिस्क गया संधा अने स्थान पर स्थिर हो जाता है।

भगनाशाय तैल—बच्चुलकी छाल मूल फल पत्ती गेद, पीपल (अमृत) की छाल ढाककी छाल दर्भ मूल लाख राल असगंध शतावरी बलामूल बहाबला

अल बालिपणि पृथ्वीवणि अरणीपान अगेयूकी छ'ल गूलरकी छाल बेलकी छाल
अनेक दस दस तोला लेकर कूचलकर उसमे दूध तोला ४०० और पानी तोला
४०० डालकर १२ घंटा रहने देना । पीछे तिलका तेल रतल ४० डालकर घीमी
आंवसे पचाना । पानीका अंश अल जाय स्वांगशीत होनेके पीछे प्यठछान कर
रखना । यह तेल मालीष करना कपदेका टुकड़ा भिगेकर उस अगह लगाकर उपर
केलीका पत्ता दावकर पाटा बांधना । यह तेल १ से २ चम्मच देा वरत दूधके
साथ मिलाया जाता है ।

भग्न संधान लेप—हीराबोलको पीसकर उसमे मुरघके अडाकी सफेदी
मिलाय मलमल जैश बनाकर लगाकर पाटा बांधना ।

भस्मशान्ति लेप—गुगल तोला ४०, हीराबोल तोला ८०, एलीयो, रघीमस्तकी
आख भरम प्रायेक एक एक तोला सब कूट मिलाय दारपाठाके रसकी भावना देकर
झुखाकर रख छोडना । आवश्यकता हो जब पानीमे पीसकर लगाना पाटा बांधना ।

चा रुझ छडी—सावंतवाडी कोफणकी ओर मालेबंघ नामक औषधी
छोती है उसे सधिनी भी कहते हैं । इसकी पहिचान यह है कि उसका पत्ता
जोचमेसे या वहीसे तोड़ कर काटकर जुकनेसे बांधा मिलकर पत्ता आना हो जाता
है, वहांसे तूटा था यह भी मालूम नहि होता । इस के पत्ते पीसकर घावपर लेा
करनेसे खून निकलता बंध हो जाता है और घावकी रक्षा आ जाती है ।

भस्मारोग्य मिश्रण—सुवा पर्यटी, जहर मोहरापिष्टि, प्रवाल चंद्रपुटी,
अश्रप्रभा न १ शिलाजीत प्रत्येक तोला एक एक असृनासत्व तोला ३ सब
साथ मिलाकर ४ से ६ रती सुवे शाम शहदसे या घृतसे लेकर उपर दूध पीना ।

लेप—१ आमरा मूल सहजनाके पान पुनर्नवा मूल बडकी छाल सम-
अग भाग कूटकर पानीमे या दूधमे पीस लगाना ।

भस्महर कवाथ—लाख, बडकी छाल, आसेधराकी छाल, अगेयू
(अगत्य)की छाल, बड्बुलका मूल सब समभाग लेकर कूटकर दो तोलाका कवाथ
कर किसी औषधके साथ पिलाना ।

लेप—२ मजीठ, मट्टूडेका फूल सरसडा (शिरीष) की छाल चावलका
आटा सब समभाग लेकर पानीसे धेया हुआ घृत मिलाय मलमल बनाकर लगा-
कर पाटा बांधना ।

३ दशांगलेप—पानीमे पीस लगाना ।

४ महालाक्षादि तेल—अथवा सुगराज तेल मालीष करना ।



पानी लगना दुर्जलजन्य रोग

कारण—देश परदेशमें—अपनी जगम भूमिसे अन्य पट्टेमें रहनेसे वहाँका पानी लगनेसे, आहार विहारका नियम न रगनेसे, जगल झाड़ीमें रहनेके कारण वहाँके वृक्षोंके मूलसे प्रधार होनेवाले जल पीनेसे, मुँहमें गौसे गाँच वस्त्रोंके सहारेसे रहनेसे तालाब आदिका यद्ये ज पानी पनेसे पानी लगता है ।

चिन्ह—शरीर फिक्का निस्तेज होता है । चलते फिरते कागकाज करते दम चढ़ जाता है । खुराक पादन नहि होता, दस्तकी वृद्धी—मलादरोष रहता है । कभी पतला दस्त होता है । दिमाग फिरता है । दाहि छीन होकर धमजोरी आती है । वीर्य पतला होता है । कभी पिशाचमें निद्रा में स्वप्नमें वीर्य स्राव होता है । स्वभाव गर्म चीटिया होता है । सेचेनी रगानि निरस्राह रहता है, किसी वस्तुपर प्रीति नहि रहती । पेटमें मल—विगाह जमता है । पेट मोटा होता है । नाड़ीयां स्थूल हो जाती हैं । पानी लगनेवाले मनुष्यको संप्रहणी क्षय ऐन्डर ब्लड प्रेशर डायामीटीस आदि रोग हो जाता है । कभी उसे रोगीका हृदय भी बंद हो जाता है ।

पथ्यापथ्य—भूख हो इतना अल्पप्रमाणमें खाना—पिप्ताहार करना । चिकना पदार्थ मीलका आटा मैदाकी चीजे बाजारकी मिठई बटाटा मांस लाल मिरच भैंसका दूध घी आदि नहि खाना । गायका गकरीका दूध बाजरी चना मुंग तुवेर दाल नमक सेंधानेन जैरा घनीया राई मेथीदाना हींग अशरख कालीमीरच दूधो परवल घरेला कंटेला आदि शाक खाना ।

दुर्जलजेता रस—पायस, गंधक, काला शुद्ध पछनाग प्रत्येक तोला दो दो, कौडी गन्ग, काली मीरच, सोठ, पीपल, नागरमेथ चित्रक, गिलेय प्रत्येक चार चार तोला, कुटकी ८ तोला सब साथ कुट विधिवत मिलाय अदरकके रसकी भावना देकर रस प्रमाण गोली भावना मात्रा २ से ४ गोली पानीसे देना ।

अपूर्व मालीनी वसंत—(यो. र.) वैक्रांत, अम्रक, ताम्र, स्वर्ण माक्षिक रौप्य बग प्रवाल, रस पिप्पर, टकण, लेह सब समभाग लेकर विधिवत मिलाय पीछे वाला, शतावरी, हलदी तीनों समभाग लेकर इसके वक्थकी भावना देना । और राश्रीको चंद्रकी चांदनी के प्रकाशमें खुली रख छोड़ना । इस प्रकार ७ भावना देना । मात्रा ३ गोली है । शहर और पीपलका चूर्ण मिलाय खिलाना उपर दूध पीना । घातुगत जीर्णोत्तरमें देना । गिलेयका सत्व २ मासों और शकर ४ मासोंमें ३ गोली मिलाय सब प्रकारके प्रमेह रोगमें दिया जाता है । बीजोरा

निबुका मूल १ तोला पीस इसके साथ देनेसे मूत्रकृच्छ और पथरीमें फायदा होता है । पानी लगा हो उसको मात्रा ३ से ४ गोली प्रातः शहद या दूधसे देना एक मास तक सेवन करनेसे उत्तम गुण होता है । शरीरका पिकापन मंदाग्नि, एस्तकी कन्धी कमजोरी आदि मिटते हैं खून बढ़ता है ।

अपराजिता गुटिका—शुद्ध पारद, गंधक लेह, अभ्रक, मझर, शुक्ति, शक्क, ताम्र प्रत्येककी भस्म चार चार तोला, सेण्ठ, पीपल, काली भिरच, गुग्गुलु, हरद, दहेडा, आंबला, टंडण, चित्राक, गिलेय, अतीव प्रत्येक आठ आठ तोला, कुंटकी ४० तोला साथ मिलाय भागरेखी २ और नीमके पत्तेके रसकी १ दो भावना देकर ३ तीन रत्तो की गोली बनाना । मात्रा ३ से ६ गोली प्रातः पानीसे देनेसे पानी लगा हुआ मनुष्य अच्छा होता है और पानी लगे धीसे स्थानमें रहनेवाला इसका सेवन करता रहे तो पानी नहि लगता ।

दुर्जल हर निभण—अपराजिता गुटिका तोला २, वृद्धि वाषिका वर्दी तोला २, लेह पपंटी तोला १, अग्नितुंडी तोला २ सब पीस रखना । ६ से ८ रत्तो प्रातः पानीसे देना ।

आरोग्य वर्धनी चूर्ण २ मासा प्रातः पानी या दूधसे लेना । पंद्रह दिन के पीछे एक मासा बढ़ाकर तीन मासा प्रातः एक समय लेना । १ मास लेनेसे शरीर अच्छा होता है । किसीका मृदु कोठा होने से अधिक दस्त होता हो तो मात्रा कम करना ।

लता करंजके बीज (कांदचिया) ५५ गिरी अतीव जटोमांसी हरद प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर साथ कूट २ से ४ रत्तो पानीसे लेना ।



ब्रध्न वदगांठ बावलाई

शरीरके अवयवोंके सांधोंमें होनेवाली ग्रन्थी गांठ

कारण—वदगांठ प्रायः पांती गरमीके दरदीके अवयव उपदंशका विष शरीरमें रह गया होता होती है। सांधलके मूत्रमें कम्परके नीचे सांधलका प्रारंभ होता है उस संधिमें प्राय होता है। पांती गरमी उपदंशके साथ होनेवाली वदगांठ प्रायः पक्ती है। उसमें पीड़ा ज्यादा होती है। इसके साथ बुखार भी रहता है। कम्परके नीचेके छिन्नी भागमें चोट लगनेसे भी यह गांठ होती है। उसमें बुखार भी रहता है। अवयवमें पोछा कम होती है वैसे इसके साथ हुई गांठ भी कम होती हुई मिट जाती है। अति विषयसे जननेद्रिय पर गलम या सूजन होनेसे लिङ्गमें तीक्ष्ण पीचकारी मारनेसे ओरतोंको पुत्र इन्द्रियमें सूजन होनेसे संधिवातसे इस प्रकार अनेक कारणोंसे वदगांठ याने सांधलके मूत्रमें ग्रन्थी होती है। यह ग्रन्थी काखमें भी होती है। उसे पांढलाइ कहते हैं। उपदंशके कारण भी कई वदगांठ काखमें ग्रन्थी होती है। इसका और काखकी गांठ-पांढलाइका उपचार समान है।

वदगांठसे या अन्य कारणोंसे छानीकी एक ओर वात पित्त प्रधान ग्रन्थी गांठ होती है उसे देयादोही कहते हैं। इसका उपचार भी वदगांठकी तरह किया जाता है।

जिध जगह वदगांठ या पांढलाइ सांधलके मूलमें, काखमें या अन्य स्थानमें गांठ होनेकी हो उस जगह दधानेसे या घिना दवाये दद होता है श्रीरे घीरे बडी होकर लालिलिये या चमडीके स्वाभाविक रंगकी होती है और घीडा करती है। रोगी कमजोर होता है और पीडा बढती है। गांठ पड़नेपर आती है जब ठंड लगकर बुखार आता है। दाढ़नेसे पस-पस हुआ मालम होता है पकनेके पीछे वीचमेंसे फूटती है। कई वदगांठ एकसे ज्यादा गांठें निकलती हैं पक्ती है फूटती है।

पथ्यापथ्यं—गांठ निकल न आयी हो जबतक लेप शोक आदि उपचारसे ठा देनेका उपाय करना। बैठे नहिजव औषधसे पकाकर फोड़नेका उपाय करना। आवश्यकता होता शस्त्रसे छेका देकर फोड़ना। गरम जलका या कपडेके गोटाका शोक करना। रोगीने चलना फिरना नहि धाराम करना। प्रारंभमें जुलावकी दवा लेकर ५-७ दस्त हो बैसा करना पीछे हमेशा एकदो दस्त और पिशाब साफ आवे बैसा करना। जब चना मुंग घावल बाजरी दूध घी करेला कटोला करवल तुरिया मेयो चौलाइकी भाजी लहसुन बनिवा जीरा भीठानीम (बडीनीम)

कालीमिरच अदरक सेंधानेन मधुरी-मीठा पदार्थमे सहद गुड इत्यादि पश्य है । खट्टा पदार्थ नमक लालमीरच अचार बजारकी मिठाई खांड शकरकी चीजे कम खाना ।

ब्रध्न नाशन रस—पारद तोला १०, गंधक तोला २०, मंझर भस्म तोला १०, कचनारकी छाल तो १०, अपराजिताका मूल कायफल गिलोय नीमेलीकी गिरी हरड पारीसपीपलका पल सोठ पीपल काली मिरच कुटकी वायविड ग चापचीनी प्रत्येक चार चार तोला गुग्गुल तो २०, शिलाजीत तो १० सब साथ मिलाय घी तोला २० डाल कूट कर पानीसे तीन रत्तीकी गेली बनाना १२ से ६ गोली पानीके साथ देना सब प्रकारकी गांठे ग्रन्थियां मिटती है ।

ब्रध्नहर मिश्रण—ढोह पपंटी सर्वेश्वर पपंटी अमृता गुग्गुल कांचनार गुग्गुल आरोग्य वधूनी चूर्ण प्रत्येक एक एक तोला साथ मिलाकर दिनमें दो दफे ४ से ५ रत्ती कल्याण घृतसे, दूधसे या सहदसे लेना ।

ब्रध्न हर मलम—पारद गंधक क्षिद्र रेवदचीभी असगंध सहजनेका वीज सफेद सरसो प्रत्येक दश दस तोला राल पांच तोला, मोम १० तोला, नीमेलीका (निम बीजका तेल) हरंजका अथवा तिलका तेल तो. ४० सबको विधिवत् मलहम करना । चाहे जिस प्रकारकी गांठ पर लगानेसे बैठ जाती है दर्द पीड़ा मिटती है । गांठ फूटनेके पीछे भी यह मलम लगानेसे रुझ आती है ।

१ लेप-सफेद सजसो सरसश (शिरिष) की छाल अलसी शंखभस्म समभाग मिलाकर पानीमें मिलाय गमक पर पोटीस रखना । फूट जाती है ।

२ लेप मुरघीकी चरकको या पारावतकी चरकको सहदमे मिलाय लगाना ।

३ केशरादि गोली अथवा कस्तूरीदि गोली उपदंश रोगमें बताया हुई २ से ४ गोली घी या दूधसे खली ही निगल जाना चाखना नहि या पीस कर लेना नहि उपर दुध पीना दिनमें १ समय लेना ।

४—आरोग्यवधूनी चूर्ण १ से २ मासा तक प्रतिदिन पानीसे देना उपर बीमकी छालका पानी पिलाना ।

५ फूटनेके पीछे हमेशा रीठेके पानीसे अथवा सोहाणा मिलाया गमकले अथवा नीमके पत्तेको उबालकर उस पानीसे घोत्रे रहना और जात्यादि घृत अथवा रेपण मरहम आदि लगाना ।



मेद वृद्धि चरबी बढना मेदा रोग

आध्यासुप्त दिन निद्रा व्यायामात्यंत कफकर पदार्थः ॥
अति मधुर स्निग्धाद्याहार विहारविध्वंते मेदः ॥१॥

रस संहिता

कारण—शारीरिक परिश्रम व्यायाम—कसरत नहि करनेवालों को बैठे रहने की आसत या व्यवसाय वालोंको, चरबी बढती है । दिनमें सोनेसे, स्निग्ध पदार्थ खायाश खानेकी आदतसे मेद बढता है । चावासे सोत रुक जानेसे रक्त मांस आदि आतुओंका पोषण कम होनेसे चरबी बढती है जब मनुष्य शारीरिक काम करनेमें प्रायः अशक्त होता है ।

चिन्ह—चरबी शरीरके कई अवयवों में जमती है खास कर चमड़ीके नीचे होती है । पेटमें उसका जमाव ज्यादा होता है । चरबीवालोंको चलते फिरते शारीरिक काम करते दम चढ़ता है । तृषा लगती है । छातीमें घमराहट होती है । निंद अधिक आती है । पसीनेमें बद्बू रहती है । वह चलने क्षीण हिमत रहित स्त्री सगमें अशक्त होता है । चरबीसे वायुको शरीरमें फिरनेका मार्ग रुक जानेसे वायु त्रयः उरर आमाशय पक्काशयमें ज्यादा रहनेसे जठराग्निको बढाकर खुराकको सुखा देता है, इस कारण रोगीको सुगन्धकी इच्छा होती है । चरबी और मांस बढ़नेसे पेट कुला स्तन आदि अवयव मोटा—स्थूल और बेडोल बनता है । चरबी वालोंको कुछ रतवा बंसप भगदर प्रमेह बवासीर हाथीपग आदि रोग होना शक्य हैं ।

पथ्यापथ्य—पुराना चावल मुंग कुलथी के दरा कांग हुक्का का धूपपान खव गेहु चना उपवास कठिन शय्या श्रम चिता खोसंग मुसाफरी जागरण वेगन मैथीकी चोलाइकी भाजी सेठ गदरख कालीमिरच लालमिरच हींग छाछ आदि हितकारक है ।

लोह रसायन—पारद तेलो ८, गंधक तेलो १६, शुद्ध मैन्डिल तेलो ४, स्वर्णमालिक भस्म तेलो १६, शिलाजीत तेलो २४, लोह भस्म तेलो ८, अभ्रक भस्म तेलो ४, ताम्र भस्म तेलो ४, वीरविडग खोसार चित्रक मूल भीलावा पलाश मूल सफेद आकका मूल सफेद फुलकी पुनर्गवा बावला गोरखमुडी आंगरा विषायरा वीज गिलेय अतिबला मूल रास्ना वफेद सुगली कताघरी मैनेकल आतामासी मूलौठका मूल हरड़ वहेवा बावला सेठ पीपर कालीमिरच प्रयेक चार

चार तोला सबको विधिवत मिलाकर त्रिफलाके कषाथकी भावना देना घोटकर रखना । मत्वा १ से २ मासा शब्द घृतसे अथवा दूधसे देना ।

लोह रसायन

जम्बूतरौ पक्व लोहं भरुम श्यात् पलक्षितः ।

द्विपलः पारथो बन्धश्चतुष्पल प्रमाणतः ।

मनःशिला पलैका श्यात् माक्षिकं च च तुण्पलम् ।

शिलाजतुः पट्पल श्यात् अभ्रकं च च पलद्वयम् ।

ताम्रमूत्रं पलेकं श्यात् विहंग खौत्साकः ।

चन्द्रिर्भल्लातकं श्वेतसूर्यमूल पलाशकम् ।

धुननं वा सोमराजी मुडिका केशराजकः ।

वृक्षदास्य बीजानि गुडूच्यतिवला तथा ।

रास्ना वरी तालमूली मदन च शतावरी ।

जटामांसी यष्टिमयु हरीतकी विभीतकः ।

फलमामलकी जात शुंठी मरिच पिप्पली ।

प्रत्येक पलमात्र श्यात् द्रव्यं सूक्ष्मीकृत शुभं ।

समिश्रय विचित्रत्वं सर्वं त्रिफला कषाथभावितं ।

मेदोरोगहर वन्यं वृष्य लोहरसायनम् ।

कामलायां पाण्डु रोगे शोथेर्लसि भगंदरे ।

देवं पहरत्तिकामात्र प्रातः सायं भिषगुचरैः ।

॥रत्न संहिता॥

सेदः शोथो रस—पारद तोला ८, गंधक तोला ८, लोह अभ्रक ताम्र प्रत्येक दोस्र, रस सिंदूर प्रत्येक तोला ४ पार, शिलाजीत तो १२, एगल तो. १६, कुटकी २०, चिक्क गिलेय वायवीडंग नागरमोथ निर्गुंटी बीज निसेय कुछ अमलतास नम्रक संधानेन प्रत्येक तोला चार मय साथ मिलाय नीमके पत्तोके पीस इसके रससे गेली रती २ को बनाना २ से ४ गोलो पानीमे पना । २ से ३ मास सेवन करनेसे चरबी कम होती है । आतो के रोग नेग चढना उदावत वयु येड चढना कृजी बजासीर पिशाबको रुकावट आदि रोग भी लाभ होता है ।

स्थौलपापकर्षण तेल—निसोय गिलेय सहजनाकी छल लेाध सफेद चंदन अहूषी छाल शिरीष छाल हरद नीमके पान अनारकी छाल कुष्ठ बहेबई आंवला भमरुतास तुलसी हलदी अमियाहलदी बीली मूल प्रत्येक तोला ८. कूटकर पानीमे मिगे कर उसमे बकरीका दूध तोला ३०० डाल १२ घंटा रहने देना । पोछे उसमे ८०० तोला तिलीका अथवा सफेद सरसोका तेल डाल पकाना । पानीका भाग जल जाय जल १२ घंटा स्वांगशीत होने देना । पीछे कपडछान कर लेना । यह तेल १ से २ चमच पिया जाता है और शरीरको मोलीस करना चरबी छम होती है ।

१. आरोग्यवर्धनी गोली २ से ४ शहरदके पनीरे लेनेसे चरबी कम होती है । दो तीन मास पर्यंत लेना चाहिये । शहरद तोला २॥ से पानी तोला २० डालकर पीना ।



शीतपित्त उदरद कोठ उत्कोठ शौलस

कारण सिद्धि—आहार विहारकी अनियमिततासे अतृप्त्य यह रोग होता है। इस रोगमें सारे शरीरमें खुजली आती है साथ ही सारे शरीरमें काँसा उभर आता है। खुजलीके पीछे उस स्थानमें जलन होता है और थोड़ा देर दिनमें उपचारसे या वैसे ही बंठ जाता है। फिर चार आठ पक्षों दिनमें उभट आता है इस प्रकार वर्षों क रहता है। उदर और कोठमें काँसा उगड़ा उभड़ आता है और टरफाठमें खुजली के साथ जलन भी होता है।

शीत पित्त शमनी वस्त्रो—पारद गंधक शुद्धमम्बू तम्र मस्र इन्द्रायणका मूल इन्द्रायणका फल वाली मीरच पोपल सोठ गुग्गुलु प्रत्येक दस दस तोला मोहाणा तोला ८ मूलीका मूल महूडाका मूल गीठेय हल्दी भमासा शरपोखा सफेद चंदन अम्रोदा लश्न अरणी मूल प्रत्येक तोला पांच सय साथ मिलाकर निसुंडो के पत्ते भाँगा और हलदी दो दो भावना दूध २ रत्तीकी गैली बनाना। ३ से ४ गोली पाना देना। महानारायण तेल सहामरिवादि आदि तेल मालीष करना। एक मास सेवन करनेसे यह रोग मिटता है।

शीतपित्तशम मिश्रण—शीतपित्त शमनी गैली आरोग्य त्रिषंठी गोली विष तिदुहाद वटो धयेश्वर पर्पटो अमृता गुग्गुलु सब समान भाग लेकर कूटकर रचना ८ से १० रत्ती पानीमें लेना। एक मास सेवन करनेसे यह रोग मिटता है।

शीत पित्तहर कषाय—गिलेय, घमासा, इन्द्रायणका फल, वसायन नीमके पत्ते अनीस, अजवायन अम्रोदा कोकी मीरच पीपल अरणीका मूल लता करज बीजभी गिरी सब समान लेकर कूट कर १ से २ तोलाका कषाय कर अ ला अथवा किसी औषधके तार मिलाया और शरीर पर मर्दन करना।

१ कायफलके चूर्णको पानीमें पीव गम जलमें मिलाव शरीर पर मर्दन करना।

२ श्रोणपुष्पी (कुंघो)के पंचांगको पीव शरीरपर मर्दन करना, और धुआ देना

३ जीरा हल्दी बज इन्द्रायणफल कासीमिरच समभाग कूटकर २ से ४ भासा पाना देना।

४ सफेद सखी हल्दी चक्रवर्तके वंज तिल समभाग कूट सरसोंके तेलमें मिलाव सारे शरीर पर मर्दन करना।

५ छोट्ट पाना चूर्ण १ से २ मासमें एक साइदा पुना मुड मिलाका खाना।

विसर्प-रतवा

कारण—घट्टे नमकेन अतिउष्ण गुणवाले पदार्थ^१ खानेसे अनियमित आहार विहारसे गर्भमहान्दमे रस्तेसे पिल जलका दशवीसरी वाले रोमीका चेर लगनेसे ऐसे अनेक कारणोसे यह रोग होता है। यह एक प्रकारकी सूजन है। वह एक जगह उत्पन्न होकर दूसरीमें फैलता है। और चमड़ीको लाल करता है। इस लिये उसे लालवात रतवा रक्तवात कहते हैं।

वात विसर्पमे—वात ज्वरसे मिलते चिन्ह होनेके साथ सूजन मस्तक छाती धामिमें शूल, चमड़ीके उपर या अंधर अग्निका तणखी गिरता हो चिराता हो, सुई जैसी चीज धूँसता हो ऐसी पीड़ा होती है।

पित्त विसर्पमे—पित्त ज्वरसे मिलते चिन्हके अलावा शरीरके एक भाग में उत्पन्न होकर दूसरे भागमें फैलता है। चमड़ी अत्यंत लाल होती है।

कफ विसर्पमे—कफ ज्वरसे मिलता चिन्हके अलावा एक स्थान पर उत्पन्न होकर खुलती ज्यादा आती है। चमड़ी लाली लिये होती है।

आग्नेय विसर्पमे—ज्वर बमन मूर्च्छा दस्त तथा चक्र मदमि दहड़ियों में दद^२ होता है। सारे शरीरमें अग्निदाह जैसी खलन होती है। शरीरके जिस जिस अंगमें फैले वह भाग दुल स्याम आसमानी रंगके साथ एकदम लाल होता है। अग्निसे जले गफोके फुल्ले समझ आता है। इसकी गति ज्यादा होती है। और हृदय तक फैलता है। श्वास बढ़ता है। निंद कम होती है। शरीरका भ्रम कम होता है। गंभी तडफडता है। बेचेन रहता। कर्हि सुख नहि पाता।

ग्रन्थी विसर्पमे—इफसे रुका हुआ वायु बिगड़े हुवे खून और कफके बमंडी नाडीयां स्नायु प्रांस तक खींचकर गोल लवंगोल खडबचडो ग्रन्थीयां उत्पन्न करता है। इनमें सणका शूल सुई धूँसती हो ऐसी पीड़ा होती है। इसकी पीड़ा से ताप बढ़ता है। साथ खास खासी हिचकी बमन मूर्च्छा आदि होते हैं।

आगन्तुक विसर्प—चोट लगनेसे जनावरोके नख दाँत लगनेसे विषारिजंतु के दाँससे दासका घा लगनेसे विसर्पका ओपरेशन करते बहुत बड़ दास अपने शरीर पर लग जानेसे विसर्प उत्पन्न होता है। इसमें प्रारंभमें वायु कुपित होकर खून के साथ पित्तके बमंडी जगह लाकर विसर्प उत्पन्न करता है। इसमें छोटी छोटी फुन्डियां होती हैं। सूजन शूल ताप असह्य वेदना होती है। नाडी क्षीण चलती है। जीम सुखकर काली होती है और अदरसों बढ़ता है। यह आगस्त्य विसर्पके तात्कालिक उपचार न होतो रोगीका मृत्यु थोड़े दिनमें हो जाता है।

पथ्यापथ्य—रोगीको अच्छे स्वच्छ हवावाटे कमरेमे रखना । पवन अच्छा न्ह्यो तो पखासे पवन ढालना । उबाल कर ठंढा किया हुआ पानी पिलाना । कपड़ा धिछाना हमेशा गर्म पानीसे धोते रहना । यह अक्रमक चेपी रोग है सो किसी रोगसे पीडित रोगीको इस आदमीसे दूर रखना । कमरेमें दो तीन बार धूप करना सादा हल्का खुराक ज्यादा देना । इसमें फस खोलकर खून निकालना और आवश्यकता हो तो शस्त्र फर्मा करना ।

कालाग्नि रुद्ध रस—पारद तोला ५, गंधक तोला १०, अभ्रक भस्म तो. ६, रौप्य भस्म तो. ४, यशद भस्म तो. ५, बछनाग शुद्ध तो २, मूलेठी मूल तो ५, तज इलायची लैंग हरद बहेडा आवला हलदी शक्कर बाजफटोलाका कंद, चिनीकवाला वायविडंग चिरायता मजीठ भगलिंगी प्रत्येक तीन तीन तोला, खबकूट भिलाय भिलोय द्राक्ष जलपिपली (रतवेलियो) प्रत्येकके रसकी एक एक भावना देहर रत्ती प्रमाण गेली शहदसे देना । उपर पुनर्वा मूलका क्वाथ पिलाना + सब दोषका वीसर्प मिटता है ।

घोसपहर क्वाथ—घमासा गिलेय वाला सफेद चंदन नीमकी छाल मजीठ गुगल कमल फूल हरद जलपीपली (रतवेलियो) अमलतास सम भाग लेकर कुटना । १ से २ तोलाका क्वाथ कर पिलाना ।

लेप-१ शींगोडा शैवाल कमल पुष्प देवदार चंदन महुडेका फूल बलामूल जलपीपली समभाग कूटकर दूधमे पीस लेप करना । वातवैसर्पमे लाभ हो ।

लेप-२ रास्ना, चंदन लतावरज के बीज, हलदी, भांगरा, वाला, जलपीपल समभाग कूट पानीमे पीस लेप करना ।

लेप ३ रास्ना कमल पुष्प देवदार चंदन महुडेका फूल बलामूल जलपीपली समभाग कूट दूधमे पीस लेप करना । वात वैसर्पमे लाभ हो ।

लेप ४ हरद बहेडा आवला पद्मकोष्ठ वाला रुजखुर् कनेरकी जड़ जलपीपली अन तमूल दममूल समभाग लेकर पानीमे पीस लेप करना ।



नारु-स्नायु वालाका रोग

कारण चिन्ह—यह रोग प्रायः पीनेके पानीमें इस रोगके जंतु होनेसे होता है। कई घघियार पानीके कुआमें यह जंतु क्यादा उत्पन्न होते हैं। शरीरकी वात पित्त वक् प्रकृतिके अनुसार इस रोगमें भी चिन्ह सादृश पड़ते हैं। हाथ पांवमें शोथ होकर छिद्र पड़ता है, उस जगहके स्नायुमेंसे त्रण द्वारा धागा जैसा गोल जंतु उत्पन्न होकर धीरे धीरे बहार निकलता है। यदि वह धागा—(टोरा) गलतीसे टूट जाय तो पीड़ा बढ़ जाती है। परनेसे शोथ मिटकर दूसरी जगह निकलता है। दाहूमें यह जघामे नाह टूट जाय तो हाथ पांवमें खोट आती है, लंगड़ापन पैदा होता है। वात प्रधान हो तो काली छायावाला सफेद टोरा होता है। पीड़ा करता है। पित्त प्रधान होतो पीलायन लगे होता है और दाह जलन होती है। कफ प्रधान होतो सफेद मोटा-स्थूल धागा होता है।

व्यथापथ्य—जिस गांवमें यह रोग उत्पन्न होता हो वहांके जिस जलाशयसे पानी पिया जाता हो उस कुआसे जल खींच कर विकाल देना और उसका सशोधन करना। उस कुआमें निमकी छाल कुचल कर डालना। पानी उबालकर दो तीन दफे षण्डछान कर पीना। आहार विहार तथीयतके अनुकूल हो बैसा रखना। प्रारंभमें जुलब देना, पीछे हमेशा दो एक दस्त होना रहे वैसा साधा विरेचन लेना।

स्नायु जयंती दटी—पारद गंधक रसविश्रु रौप्यभस्म लोहभस्म अभ्रक भस्म प्रत्येक तोला ८ आठ, वायविडंग गोरखमुंडी चोपचौनी लताकरजबीज (कांक्चिया) इन्द्रजौ हरड इन्द्रायणका पल अथवा मूल कायफल प्रत्येक चार चार तोला सब साथ कुट गोरखमुंडीके वषाथ में गोली दो रत्तीकी बनाना। २ से ४ गोली पानीसे देना नाह निकल जाता है। और दूसरा शरीरमें उसका जंतु हो वह भी मर जाता है।

स्नायु शूलारि रस—पारद गंधक रौप्य भस्म सावरसींग भस्म सुवर्ण माक्षिक भस्म अतिस्र सागरगोटा (कांक्चिया) चंदन गोरखमुंडी बाला सांडविडंग चोपचौनी हलदी दाहलदी मिर्च मीठ अजमोद खजवानन हरड शतोवरी असगंध सारिवा सशभाग लेहर अधिवत १५ ला कुट गोरखमुंडी के वषाथ की भावना देकर ३ रत्तीकी गोली बनाना। १ १ ६ गोली पानीसे देना।

सामान्य उपचार

१ अक्षीस नागरमोष भारंगी सेठ पीपल बहिवा समभाग कूट कर २ से ४ मासा पानीसे देना ।

२ महाबला (खपाट) के पत्तों की पंस पेटीस बांधना ।

३ दधुल के बीज को गौसूर में पीस लेव करना ।

४ पाताळ गड्ढी (वेवढी) का मूल २ से ४ मासा पीस कर पिलाना ।

५ तिर्गुंडो का पान १ तोला पानी में पीस पिलाना ।

६ पारेवा (पारावत) को चारक के पीस ६ से ८ रती गुड के साथ खिलाना ।

७ बैशनको अग्नि पर पकाकर (भवथु करी) उसमें दही मिलाकर पीस कर पोटीस की तरह लेव करना ।

८ मिर्छों के बीज और गेहु समभाग पीस उस आटाकी पुढी बनाकर धीमे तल कर गुडके साथ खिलाना दूध का कुछ खुराक देना नहि तीन दिन में नाह निकल जाता है ।

९ कुकूट को चरक तेल १ गिलोय तेल २ गुड तेल ३ साथ पीस २४ गोली बनाना हमेशा ३ समय एक एक गोली पानीसे लेना ।

१० अक्रोम तेल ०॥ हींग गुड तेल ०॥ साथ घबुरेके रसमें पीस बांधना ।

११ काथफल तेल पांच को पीस पानी में बडी पोटीस (लापसी) कर बांधना डेढ दो घंटा के पीछे पोटीस निकल कर रनायु को धीरे धीरे खींचना, टूटे नहि यह समाल रख धीरे धीरे खींचना तो सारा घागा बेरा निकल जायेगा ।

१२ एरंड पत्र के पीस उसका रस तेल ५ में घी तेल २॥ मिलाकर पिलाना घाला निकल जाता है ।

१३ नारु का शीय हुआ हो उसको चारो ओर गेहू के आटाकी पाउ कर उसमें तमाखुके हरे पानका रस भरना अथवा वह रस काचकी नलीसे बुंद बुंद कर नारु के छिद्र में डालना, दो एक घंटा में सारा देरा निकल जायगा और अंदरके जलु मर जायगा ।

१४ आकड़ा पीलापान १ और नागर बेलका पान १ बिना कर्षा चूना लगाया दोनो चाबुडर खिलाना तो वाला निकल जाता है ।

१५ धतूराका पान तोला ५ दिंग तोला ०१ साथ पोस बाळा पर बांधना तीन दिनमे निकल जाता है ।

१६ नदोकी छौपनी (शुक्ति) को जलाकर भस्म करना, अजवायन (अजमा) जटाना और बिरुही (टींडोरी घोल) का पाक तीनों समभाग पोस लेप लगाना ।

१७ करेला का सूख पता फल पंचांग को पोस पोटीस बांधना ।

१८ गवधार पोस ३ से ४ गासा गुड के साथ मिलाव खिलाना उपर धतूराक से सुंग चावलकी खिचड़ी से खिलाना ९ दिनमे वाला निकल जाय,

१९ इमोरिया (हंपुदी) की जड़को खट्टी छछ मे पोस गाढा लेप करना या पोटीस की तरह बांधना ३ दिनमे वाला निकल जाय ।



हंथापांव—श्लीपद

कारण चिन्ह—जिष्ठ प्रदेशमें वर्षा-बारीष बहुत होता है और ऋतु हमेशा भेजवाली रहती है जैसे प्रदेशमें यह रोग अधिक मालुम होता है। प्रारंभमें बुखार आकर नाभिके नीचेके भागमें या दो वज्रु शोथ होकर वह पांवमें चढ़ता है पीछे वह बढ़ता हुआ स्थिर होता है। यह हाथ या दूसरे अंगोंमें भी होता है। यह पकता है जब पीड़ा करता है। क्लमिक (राफडा) जथा हो स्थान स्थान पर ग्रन्थियां हो, कांटा जैसे अंकुर चारों ओर फैलकर घाव निकलता हो, खुजली आती हो वह असाध्य है।

पथ्यापथ्य—पुराना चावल कुलथी मुग जब चना लसुन सहजना वेगन करेला बहुतो पदार्थ लंघन जुलाब जौका खुराक ज्यादा रखना सरसोका तेल और कूमका मांस हितकारक है।

श्लीपद गज केशरी—पारद गंधक रस सिंदूर अभ्रक भस्म ताम्र भस्म टंकण प्रत्येक तोला ६ छह, सोठ पीपल कालीमीरच बच गोरख मुंडो चोपचीनी लोम निसेय कचुरा पाठा (कालीपाठ) वायविडग प्रत्येक तोला ४ चार, चित्रक भांगरा अदरक गोरखमुंडी प्रत्येककी एक एक भावना देकर दो रत्ती प्रमाण गोली करना। मात्रा २ से ६ गोली पानीसे देना। दो चार मास तक सेवन करनेसे यह रोग भौटता है।

श्लीपदारि लोह—लोह भस्म, तोला ४० चालीस, पारद गंधक अभ्रक शंख, भस्म प्रत्येक तोला ६ छह, गुगल तोला २० बीस, निमबीजकी गिरि वकाइन नीम बीजकी गीरो हरद बहेडा आवला शिलाजीत चित्रक निसेय अड़वाकी जड़ अरणीमूल बच सोठ पीपल कालीमीरच गोरखमुंडो जटामांघी प्रत्येक तोला ४ चार कूटकर भांगरा, निगुंठी, कांचनार, गोरखमुंडी, प्रत्येककी एक एक भावना देना। ३ पत्तीकी गोली करना २ से ३ गोली पानीसे देना। ३ से ६ मास तक सेवन करनेसे यह रोग भौटता है।

निरयानंद रस—पारद गंधक वांस्व भस्म बंगभस्म लोह भस्म ताम्रभस्म तुल्य भस्म शुद्ध हरताल शंखभस्म कौडी भस्म प्रत्येक चार चार तोला, सोठ पीपल काली मिरच हरद बहेडा आवला वायविडग चवक पिपलीमूल इथुपा (पलायवी) बच कचुरा पाठा देवदार इलायची विनायरा (वृद्धदार) प्रत्येक ४ चार तोला पंच लवण पांचो मिलकर विष तोला साथ मिलाय, निसेय चित्रक

और दंती मूलके क्वाथमे एक एक भावना देना और पीछे हरदके क्वाथमे गोली ३ रत्ती प्रमाण करना । २ से ३ गोली पानीसे देना । सब दवाका सारे शरीरमे फैला हुआ श्लेष्म मिटता है । यह औषध कठमाल गंडमाला ग्रन्थी अबुद अत्रवृद्धि शुक्लके रोग कुम्भि बदगांठ काखका बायलाइ अदिमे भी उत्तम गुण करता है । जठराग्नि प्रदेस होता है । भूख लगती है बल बढ़ाता है ।

सोरेश्वर घृत—तुलसी देवदार सेठ पीपल कालीमीरच हरद बहेडा आवला पंच लवण वायडिङ्ग चित्रक चवक पिपलीमूल गूगळ हपुषा बच यवक्षार पाठा कचूरा इन्गची धीधावरा प्रत्येक एक एक तोला पीस करके बर्नाकर पहीका पानी तोला ६४ धनियाका क्वाथ तोला ६४ दश मूलाका क्वाथ तोला ६४ डालका और उसमे वो तोला ६४ पकाना पानीका अक्ष जल जाम जब कपडछान कर रखना । इमेशा २ तोला घृत पिलाना सारे शरीर मे फैलाहुआ मांस रक्त मेद मे रहा हुआ श्लेष्म मिटता है । रसेली कंठमाल अत्रवृद्धि वृषणवृद्धि अबुद ग्रन्थी आदिमे उत्तम गुण करता है ।

१ छेप—दशाग और दोधनछेप मिलाकर पानी मे पीस लेा करना

२ देवदार और चित्रक समभाग कूट पानीसे लेन करना

३ सफेद सरसो और सहजना छाल गौमूत्र से पीस गर्मकर लेन करना

४ मजीठ मूलेठी मूल रास्ना पुनर्वा तिलपर्णी (तलपर्णी) चयमर्द बीज समभाग कूट गर्मकर लेन करना

५ काचिनार छाल मजीठ धिधावरा समभाग कूट १ तोला का क्वाथ नित्य पिलाना

६ करंज बीज डाकशी छाल मूलेठीका मूल हलदी गोरखमुडी काला हंसराज (हसपदी) कूटकी समभाग कूट १ तोलाका क्वाथ पिलाना ।

हडकना पागल कुत्तेका दंश

कारण—गड़ेका कुत्तेका या घेडाका रक्ता हुआ मांस खानेसे कुत्तेका पिलोको या शृंगाल (शियाळ) का हडकना चलता है। इसके काटनेसे मनुष्यको गाय भेड़ गेढा, बगैरे जनावरों को भी हडकना चलता है। कुत्ता हडकना न हुआ हो ऐसे अच्छे कुत्ते के फरदसे भी कभी हडकना चलता है। हडकाया कुत्ता अपना पुच्छ पीछे फेंके दो पाँवके बीच रखे डबल उधा दौड़ता है, भयता रहता है। सड़करोमे अस्तालेमे इसका रसी (इन्जेन्शन) देते हैं यह तारकालिक उपाय है वरंच छोटे प्रांमोमें जहाँ यह सुलभ नहि है वहाँ तारकालिक उपाय करना। कुत्ता काटने के पीछे पंधरा बीस दिनमे या कभी ठा चार मास के पीछे भी हडकना होता है। गाय भेड़को कुत्ता काटा हो और उसका दुध पीनेसे भी हडकना चलता है।

चिन्ह—प्रारंभमे बेचेनी अनिद्रा मस्तक फिरना चक्कर आना सांघोमे बरं डर्यादि होते हैं। दिन बीतने पर मुख मुद्रा भयभीत होती है, गरदनमे बड़ होता है, मुखसे कां पड़ती है। सुगन्ध और पानी गढेसे मुक्कीलसे उतरता है। दूसरे तीसरे दिन तृषा बहुत लगती है फिर दरदी पानी नहि पी सकता। पानी पीनेसे पानीके स्पर्शसे पानीमे या दर्पणमे मुख देखनेसे दूरसे पानीका आवाज सुननेसे आँचड़ी की माफक रोगी कंप जाता है इससे ईश्वरोगका नाम अजग्रास कहा जाता है। पंछे तुफान करता है ओरका दांतसे काटनेकी चेष्टा करता है पीछे बेचुद्र होकर मरण पाता है।

जिस जगह दवा हुआ हो उस जगह के आसपास धी चमडों काटकर उसमे छाल मिरच का चूर्ण दाग दाब कर लगाना अथवा अग्नि दाह करना। रोगी खुराक न ले सके तो गुदासे पिचकारीसे प्रवाही खुराक शिरीषासव या औषधको प्रवाही बनाकर गुदासे पीचकारी से चढाना।

प्राचेतस चूर्ण—सप्तपण (सत्विण) कुड्केकी छाल नीमकी छाल नागरमोक्ष कुष्ठ मन्थसल मूल छोग्र रौप्य माक्षिक सप्तसप्त भाग लेकर कूटना ०॥ से १ चोला तक गर्मपानीसे देना १ मास तक देते रहना।

श्वान विषहर चूर्ण—सागर गोटा (शंकुचियानी मीन) सप्तपण वरुण छाल या मूल (वायवरणो) इन्द्रणी निम्बबीजकी गिरी कुटकी चिरायता नागरमोक्ष सिन्धोय अमरतास वाला कचूरा छोटी कटहरी मूल अपामार्ग पचोग सेवानोन

कालीमिरच पीपल सेंठ पीपीमूल सब समभाग कूट ०। से ०॥ तोला पकाने चावलके पानीसे देना ।

श्वान विषहर क्वाथ—छोटी कटहरी मूल चारिसपीपलका फल पाताल गड़ढीका पंचांग (वेवढी) अपामार्ग मूल क्षतावरी कुटकी ढाकका मूल गुलरकामूल आकका मूल सब समभागसे कूट पांच तोलाका क्वाथ कर पिलाना ।

विष प्रकरणमे कहे हुए अजितागद भीमरस रस मृत्युपाश छेदी घृत आदि औषध उचित मात्रामे देना ।

१ ढाकका मूल तोला १० का क्वाथ पिलाना ।

२ महा सुरक्षान चूर्ण तोला ३ का क्वाथ कर भीमरस रस ४ से ६ रती देना । १ मास तक पिलानेसे श्वान विष नष्ट होता है ।

३ बिठा छोटा गुलर काकोटुयरीका (वैठी उंबरी) का मूल तोला पांचमे घल्लरेका बीज एक आनी भर दोनोको पकते हुए चावलके पानीमे पीस पिलाना २१ दिन देनेसे श्वानविष नष्ट होता है ।

४ इन्द्रायण—पंचांग तोला ४, ककोटकी मूल (कंकोढी मूल) तोला ४ दोनो पीस पिलाना । ७ से १४ दिन तक पिलाना ।

५ शुद्ध कुचलाका चूर्ण ६ रती पुरुषभूष तोला १० के साथ १४ दिन तक पिलाना ।

६ इच्छामेदी गोली ३ से ५ गर्मजलसे देना । बस्त होकर जंतु निकल जायेगे । पीछे दूसरा औषध बेटे रहना और ३ से ४ दिनके पीछे इच्छा मेदीका खुलान देते रहना ।

७ ओंगा (अपामार्ग) मूल ३ तोला पानी मे या चावल के पानीमे पीस पिलाना ।

८ सच्ची कस्तूरी रती ८, बटुलकी पति तोला ४ को पीस प्रवाही कर उसमे कस्तूरी मिलाय पिलाना ।

९ कुचलाकी सरक, आकका दुध शुद्ध तेल सब साथ पीस लेप काना ।

१० क्वारपाठाकाके पानको चौर कर उसमे पीसा से घानोन छिड़क कर दक्ष पर बांधना ।

११ अपामार्ग मूल तोला ५ को क्वार पाठा के रसमें पीस उसके एक दो मापा से घानोन डाल पीस दक्ष पर बांधना ।

१२ कुकडाकी चरक तोला २ में गाजरवन (मोपावरी) तोला १० पीछे कर दश पर बाधना ।

१३ आफके दुधमे बाजरीका आटा को पीस मुंग प्रमाण गोली बनाना । हडक्वा चलता हो उस मनुष्यको २ से १० गोली और पशुओंको १५ से २० गोली देना ।

१४ कटे तिल को प स आफके दुधमे घोट मुंग प्रमाण गोली करना । ३ से ४ गोली पानीसे देना जुलाब लगकर सेंकड़े बाजरीके दाना जैसी इडार अंडे निकलती है । ३ दिन तक देना । छोटे बच्चोंको २ गोली देना । मुप चावल को खीबड़ी घी डाल कर खिलाना । खड़ा नमकीम खाना नहि । दश होनेके पीछे इसका ७ जुलाब देना हडक्वा चले नहि ।

१५ देवदाली (कुक्कुटवेल) का बीज पहिलेदिन १, दूसरे दिन २, तीसरे दिन ३ इस प्रकार ७ दिनतक चढकर ७ वे दिन सात बीज पानीमे पीस कर पिलाना । १३ दिन खिलाना होतो तेरहवे दिन १३ बीज देना इस प्रकार प्रतिदिन चढना । २१ या ३० दिन तक भी खिलया जाता हैं ।

१६ गेठी या खांडी कटहरी के फल दोर १ में गुठ दोर ०। मिलाय महोन पीस २ म'साकी गोली बनाना । ३ से ४ गोली पानीसे देना ।

१७ शरप'साका प'चांग तोला ५ पीस कर ७ से १४ दिनतक पिलाना ।

१८ समुद्रफल सचल इंध्रयण मूल हरड अपराजिता का बीज सब साथ पीस तीन रतीकी गोली बनाना ३ से ४ गोली पानीसे देना ७ से २१ दिन तक ।

१९ बजुराका बीज तोला ४ जुना तोला ४ पानीमे पीस कर दशपट बाधना ।

२० काली भिरच मासा ३, कुकडाकी चरक मासा ३ साथ मिलाय ७ से १४ दिन तक देना ।

२१ कंकाडी कर्कटको तोला २॥ पानी में पीस पिलाना ।

२२ धूर का दूध मंशपर लगाना नीमके पत्र तोला १५ और सच्ची रींग तोला १ पीसकर दशपर लगाना ।

२३ हडक्वा चलता हो जब बजुराका प'चांग तोला २॥ को चावलके पानीमे पीस पिलाना विद्यामे जलु जैसे क्रमि पड़े ।

वृद्धि अंडवृद्धि अंत्रवृद्धि

वृषणवृद्धि सारण गांठ आंत नीचे उतरना

वृषण वृद्धि कारण सिद्ध—सूजनसे पानी मरानेसे चोट करनेसे वायु करने वाली चीजे गानेसे नख फुलनेसे छति दाख पीनेसे यह रोग होता है। सूजनसे हुई है तो गोली से और उसके मूलमे जो दारा जिसी नाडीओमे गोली लटक रहा है उसमे दर्द होता है, यजन लगता है। गोली परका चमड़ीका आवरण सजकर मोटा स्थूल होता है। अंडकोश को उठाने वाली मांसियां देता जिसी स्थूल मोटी होती है। इसके साथ कमी ताप बमन मलाबरोबर भी होता है। वृषण मे पानी मरता है तब सीध होती है, बाह्य भागकी चमड़ी काशती है। अंडकोश नालीएर और धौफल जैसा या उसमे भी घटा होता है। अंडकोशमे स्त्रुषा समाध देनेसे भी अंडकोश घटता है तब दाखनेसे कठिन लगता है। खदर दर्द होता है।

अन्त्र वृद्धि सारण गांठ आंत उतरनां बहू दौटनेसे पांवमे मुसकरी करनेसे कूदनेसे वजनदार वस्तु उठाने अत्यंत जोर करनेसे भारी चीज लीवनेसे खाईकलकी सफर ज्यादा करनेसे रहनेसे आहार बिहारकी अनियमिततासे यह दर्द होता है जब आत अंड कोशकी कोथली मे उतरता है पड़ता उतरता है। यथा लगानेसे अथवा घेतीसे धम्मर बांध रखनेसे आंते उतरता नहि। उतरता है तब दर्द होता है। बच्चेको नाभि के नीचे यह दर्द होता है।

पथ्यापथ्य—अंडवृद्धि और अंत्रवृद्धिकी चिकित्सा प्रायः समान है। बमन विरेचनादिसे पेट साफ करना। हमेशा दस्त साफ लानेका हरब ऐरंड तिल शुद्धिचूर्ण मधुविरेचन चूर्ण अश्वचेली आदि लेते रहना। नीमके पतेकी भाफ देना, दिव्य धुप से धुप देना। जौ पुराना चावल कुल्थी बाजरी मुंग मठ उडई मेथी खाना आदि धान्य, वेगन परवल सहजना कौ सींगे चौलाई मेथी की भाजी खुरण आदि शाक, कसून प्याज हिंग जीरा काली मीरच काक मिरच ममक छलदी अदरक टोंग आदि मसाला हितकर है। उपवास या एकाशन शक्य हो उतना करना। खांड शाकर की मिठाई अजीर्ण करने वाली चीजे पाखे खुपाफरी हानि करता है।

वृद्धिवाधिका घटी—(मैर.) पारब गंधक लोह बंग ताम्र कास्य शंख केडी खरकी भरम, शुद्ध हरताल गुण भरम सेठ पीपल काली मिरच हरब बहेडा

आवला वायविलंग विघारा कचूरा पिपलीमूल पठा हनुषा (पलासनी) वच इलायची देवदार पंच लवण सब समान भाग लेना, पंच लवणका पाच भाग लेना सब साथ विघित्त मिलाय यही हरद के कवाथ से गोली २ रती की बनाना, ३ से ६ गोली पानीसे देना । अंशुद्वि अंशुद्वि मिटती हैं ।

अंशुद्वि हर रस—पारद तेला ५ गंधक दो. १०, ताम्र शंस्य शुक्ति शंख कौडी प्रत्येक की भस्म, आवला मेंठ पीपल कालीमिरच विपरीमूल बारपुंजा सागरगोटा गिरी (शंकचिथा) अतीस से घानेन सचल इलायची देवदार प्रत्येक चार चार तेला, हरद ८ टोला सब साथ विघित्त मिलाय निर्गुंडी के पत्ते नीमके पत्ते और हरद प्रत्येककी एक एक भावना देकर ठोठा रती की गोली बनाना । ३ से ६ गोली तक पानीसे देना । अंशुद्वि अंशुद्वि मिटती हैं ।

अंशुद्वि नाशन रस—पारद, गंधक शिलशित प्रत्येक दश दश तेला, चूना १५ तेला, कुटका २० तेला, सेठ, पीपल, काली मिरच, चित्रक चवक कुंठ हरद, देवदार मँढापींगो वायविलंग, गोरसमुडी, से घानेन सचल निसेथ जवाहार प्रत्येक छह छह तेला लेकर साथ मिलाय कटहरी के फलकी और हरदकी एक एक भावना देना । मात्रा ४ से ८ रती पानीसे देना । अंशुद्वि, अंशुद्वि एपेंडोसाइटिस और बच्चेको वधभावल मिटती है ।

अक्षोत्तरीय रस पारद गंधक अत्रक भस्म लोह शिन्धुजित् कालह सुरमाकी भस्म शुद्ध हरताल शुद्ध मैनसील पीपल पंचलवण कज्जीवार यवशार टंकण हण्ड वहेडा आवला अजमाद अजवाइन वच दतोनूत्र निसेथ नागर मेथ नीमके बीज पटोल विघायरा प्रत्येक एक एक तेला और घटूरा बीन दो तेला लेकर सब साथ मिलाकर हरदके कवाथकी भावना देकर रखना । मात्रा ६ से ८ रती पानीसे देना । अंशुद्वि मिटती है । इसे अक्षोत्तरीय चूर्ण भी कहते हैं वस्तुतः वह रस है ।

नौच—इस औषधका नाम मेघज्य रत्नावलीमे अक्षोत्तरीय चूर्ण दिया है, वस्तुतः जिसमे पारद गंधक और भस्म आदि नहि पड़ते और केवल वनौषधि द्रव्य पड़ते हैं उसे हि चूर्णका नाम देनेकी शास्त्रीय प्रणाली है । इस औषधमें शत कनक बीजनि लिखा है इसका अर्थ शास्त्रीय प्रक्रिया प्रणालीके अनुसार दो तेला अथवा बीजकी गिनती अष्टात १०८ बीज गिनकर कोई समझे ४ यदि दो तेला बीज लिया जाय तो भस्म रत्नावलीसे लिये हुए घटक द्रव्य ३५ तेला होता है ३०, कनक बीज मिलाये

१३५ तोलाका घण हुआ। भेष्य रतनाबलीके संप्रहकारने इसको मात्रा १ मास बताया है। उसकी मान परिभाषाके अनुसार २ मासाधी २४ रत्ती होती है। अर्थात् १ दिनकी मात्रामें १६ रत्ती कनकबीज हुआ यह वडा क्षानि कर्ता है। अर्थात् १०० तोला नदि लिया जासकता।

रस योग सागरमें यह पाठ देकर उनके अनुवादमें कनकबीज १०० सौ लग्न बताया है यह भी योग्य नहि है शाल्मोय पाटमें जहां नंग या घंस्या बताया हो वहां वह लेना योग्य है परन्तु अन्धत्र तौल हि लिया जाता है। अन्य ग्रन्थमें शतं कनक बीजानि के स्थानमें द्विकं कनक बीजानि लिया है वही ठीक है। हमने यह पाठ स्वीकार कर अन्य घटक द्रव्य एकएक तोला और कनक बीच २ दो तोला लिया है। और अनुमयसे भी यह औषध उत्तम गुणकारी मालुम हुआ है। और इसमें पारद गंधक अम्रक क्रीडा शिलाजीत आदि पत्थरसे रस अभिधान उचित है।

महातैलघवादि तेल—(भैर.) सेधानन मनफन (मीठाल) कृष्ण सौंफ जलामूल वच बाळा महुडा का फुल भारगी देवशर सेठ कायफल पुष्करमूल श्लेधा चषक चित्रक कचुरो वायविड ग अतीव निसेय निगुं डी बीज पर्ली-नीली शालपर्णी बिन्दूमूल अजमेद पीपल दत्तोमूल राधना अजवाइन प्रत्येक चार चार तोला कूट कर सब व्य दूध जाय इतना पानी डलकर १२ घंटा भिगे। रम्भना। पीछे तेल तोला १२०० बारासौ डालकर पकाना। पानीका अंश जल जाय पीछे १२ घंटा स्वांगशीत होने देना पोंछे कपडछान कर रखना। १ से २ तोला पिलाना और मालीस करने अत्रवृद्धि अत्रवृद्धि बदगांठ उदावर्त गुल्म बवासीर प्लीहा आनाह मूत्रारोम आदि में भी दिया जाता है।

वृद्धिदरी वटी—लोग सेठ चिरायता मालकांगर्जीबीज पीपरीमूल आगफेर निगुं डी बीज प्रत्येक तोला एक एक, पारावटकी चरक तोला ५ गुड तोला ५ सब साथ कूटकर ३ रत्ती की गोलो बनाना। २ से ४ गोलो पानीमें देना। अत्रवृद्धि अत्रवृद्धि मिटे।

वृद्धिनाशन मलम—शेषमुदर तोला २० गुण्ड तो २०, शिलारस अन्ध्रायण के मूल एक गीज सेठ जोरा पारावट की चरक लाकड़ा मूल प्रत्येक सब दस तोला मोम तोला २० ऐरंड तेल में पका कर मलम करना।

१ लेव गोरखमुडी ऐरंडी के बीज वच सफेद सरसो सहजना की छाज शिवद्वंद्व बीरा समभाग पानी में पीस लेव करना।

२ हरद रास्ता भारंगी मेंढाईगी कचूरा वातावरी इन्द्रावणमूल अमरगंध समभाग कूट २ से ४ मासा पानीसे देना ।

३ रास्ता मूँठो मूल गिलेय वलामूल अमलतास गोखरु भगलिंगी फल (आखिफूटासफा) समभाग कूट २ से ४ मासा पानीसे देना ।

४ काली मुसली का चूर्ण २ से ४ मासा बेलके मूत्र से देना । ३ दिनमें आराम होता है । बेल खसो न किया हो उसका मूत्र लेना ।



पथरी-अश्मरी मूत्रग्रन्थी

कारण—मूत्रधा वेग रोकनेसे आहार विहारके कुपथसे वास्के व्यसनसे यकृतके बिगादसे मूत्र पिछमे क्षार युक्त पदार्थों के जमावसे वीर्यका आया हुआ वेग रोकनेसे ककर या रेती वाला पदार्थ अटा बिगरे खानेसे इत्र प्रकार अनेक कारणोंसे यह रोग होता है। कई वर्षोंमें हाथकी चक्की प्रयः निकल गइ और मशीनकी चक्कीका आटा खानेका नसीब चल रहा है इसमें पथरीकी चक्कीके घर्षणसे आटामे मिलती हुई बारीक पथरीकी रजसे भी इस रोगकी वृद्धि हो रही है।

चिन्ह—नाभि सीवन, मूत्रनलीमें दर्द हो, २ या ३ धारवाला पिशाब हो, पथरीको घोंसकर निकलनेका भाग हो, जब चामनी जैसा गाढा अथवा बारीक ककर युक्त पिशाब हो। पथरीके क्षोभसे क्षत-व्रण पर तो पीडा के साथ रक्त मिश्रित पिशाब हो। वाताश्मरी हो तो पीडा अधिक हो। दांत कचड़े, घृजे, लिंगको मर्दन करे नाभिको दबावे पिशाब बुढ़ बुरसे निखले। इस पथरीकी सपटी काला भूरा रगकी खरसट बांटा जैसा हो, दाह अधिक पीनेसे शरीरकी कमजोरीसे यह पथरी होती है। पित्ताश्मरी-ग्रन्थि वात अजीर्ण ताप-क्षति मांसाहार आदि कारणोंसे पित्त प्रकोप होकर एक प्रकारकी खटाईमें यह पथरी जमती है। यह लालीजिबे पीछे बढ़ामी रगकी होती है। क्ष्माश्मरी और शुक्राश्मरी सफेद में टी पोची होती है। यह सरलतासे मिटती है। मूत्राशयमें पिशाब रुकता है दुर्गन्धयुक्त होता है और पक-पस पैदा होना है वह वायुसे खूब कर पथरीका रूप लेता है। वैसे ही वीर्यका वेग रोकनेमें आटा हुआ वीर्यको अटकनेसे पथरी जमती है। शर्कराश्मरी पथरी जगती हो उस समय वा जम आनेके पीछे उसपर दाब देनेसे या अन्य कारणोंसे होती है, वायुके दाबसे-अनुलोम वायु हो, जब गेती जैसी हांकरी पिशाबके साथ निकलती है। यह मूत्राशयकी पथरी। कही जाती है। वात प्रक्षेप रहता है वैसे मूत्राशयमें पीडाके साथ पथरी जमा होती है। मूत्र-पिंडाश्मरी पिशाबमें विशेष प्रकारके क्षार तत्वोंकी वृद्धि होनेसे मूत्राशयमें अथवा मूत्रपिंड-गुदामें अथवा मूत्रपिंडकी पश्तीमें यह पथरी जमती है। पथरी बढी होने लगे वैसे शुरदाका नाश होता चलता है, जब मूत्र पिंडमें अस्थि दर्द होता है। पक पस उन्न होकर पिशाबके साथ निकलता है। कई वर्षों तककी आसपास गठ ग्रन्थी होकर कम्मरकी पीठमें या पाश्व के भागमें या नाभिकी आसपास फूटकर वहांसे पक्के साथ पिशाब निकलता है। पथरी चनासे लेकर अंधके फल-भेरी त्रितनी रट होती है। सौराष्ट्रके हलार भाग हलाराट पच्छ और मारवाट में यह रोग अधिक प्रमाणमें होता है।

पथरीका उपद्रव—पथरी बढी हो और मुखपिंड मेसे मूत्रमली द्वारा मूत्राशयमे उतरे तो कृत्ति पीडा होती है, जब पेटमे दद अधिक हो, वमन हो, मूत्र पिंडमे दद हो, रोगी को देवेनी घमराहट हो पप्पना अधीक हो, वृषगमे असह्य पीडा हो, पिशाव लाल खून पत्र मिश्रित आवे, ताप घोर हो गहे । यह पीडा कई घंटोतक या दिनोतक रहती है और पथरी मूत्राशयमे पहुँचे जल पीडा बंध होतो है ।

पथ्यापथ्य—जुलाब देना । आग्नेयकृत्ता होतो पिचकारी-एनीमा डेकर वस्त लाता । पीडा ज्यादा होती हो तो अफिमबन्दी दवा या आमव या भाग पिलाना । पेटपर या कम्मर पर शोक धरना । रईका लेव करना । रोगीको कम्मर तक गर्मजलमे बैठाना । रुई शक्करको चीजे लालमिश्र तेल खट्टी चीजे मसाला दाक अजीर्ण करनेवाला खुगाक बंद कराना । भूख हो जब भोजन कराना । इल्का प्रवाही खुराक देना । इदेशा २ वस्त टट्टी जाना । कमल पुष्पको पानीकी मटकीमे डालकर वह पानी पीना मूत्रल दवा देना । पथरी बढ गडे हो औषधसे न भिटे तो शल्य कर्म कराना ।

त्रिविक्रम रस—वांतिप्रातो रक्षित ताम्र भस्ममे २० गुना बदनी का दुध डालकर पकाना । सुब जल जाय जब ताम्रभस्ममे ८ गुना गायत्री घोलकर पकाना घी जल जाय जब यह ताम्र भस्म इस औषधमे डालना । ताम्र भस्म-तेला १०, गंधक तो. १० पारद तो १० साथ मिलय घोट निगुंडो के रस या कवथ मे गेलाकर कपड मिट्टीकर बालुकायंत्रमे ३ घंटा तक पकाना पीछे निकाल कर पीछ कर उपयोगमे लेना । मात्रा १ से २ रत्ती गायत्री घसे लेकर चप्पर ०॥ से १ तोला चींओराका मूत्र अथवा खट खट्टुवाके पान ५ पीछकर पिनाना । १ मासमे पथरी पिघल कर धीरे धीरे निकल जाती है ।

अक्षमरी मेशी रस—(यो र) पारद तेला ४ गंधक तेला ८, शिलाजीत तेला ४, तीनों साथ पिलाकर श्वेत पुननवा लड्डुघी श्वेत अपराजिता (गरणी) प्रायेकके रसमे एकएक दिन घोटना पीछे गोला बनाकर सुखानेपर श्वेत पुननवा वासा श्वेता अपराजिताके क्याथसे टालिका यत्रमे ३ प्रहर बाहर रखा । पीछे निशाल घोटकर रखना । मात्रा २ रत्ती भुइ आवली और इद्रावगो पल्लव क्याथसे देकर दुध पिलाया जाता है । इस औषधके पाषाणमेदी रस भी कहते हैं ।

पाषाणवज्र रस—पारद तो. १०, गंधक तेला २० खट्टी कर श्वेत पुननवाके पचांगके रसको तीन भावना देना । पीछे मूत्र पुननवा मंदा अग्नि

देना । पीछे पापाण भेदका चूर्ण तोला ३० मिलाकर १ से ८ रत्ती २ तोला खाट खट्टवाके पानके पीसकर अनुपान दधमे पिलाना ।

अश्वरी सेदी कषाथ—मुई धातु अह्वयोपान पुनर्वा मूल पापाण भेद सप्त सप्त भाग कूट २ से ३ तोलाका कषाथ कर पिलाना ।

१ गोखरु इलायची वरुण (नावरुणो) पोषक पापाण भेद मूलंठो मूत्र घनिया पुष्कर मूल सप्त सप्त कूट २ तोलाका कषाथ कर पिलाना ।

२ नीमकी नीमालीकी गिरी तोला ०॥ दफकर तोला १ साथ मिलाव वासी पानीके साथ ७ दिन देना पथरी पिघलती है ।

३ सोहागा पकाया हुआ और शक्कर सप्त भाग मिलाकर ०॥ से ०॥ तोला दिनमे दो दफे पानीसे देना, २१ दिनमे पथरी पिघलती है ।

४ चक्षुप्रभा शिलाजीत पकाया सोहागा शक्कर सप्त सप्तभाग मिलाकर, ३ से ४ मासा दिनमे १ या २ दफे देनेसे २१ दिनमे पथरी पिघल निकल जाती है ।

५ नालीएरका फूल, मासा ३ और सोरा खार मासा १ साथ पंच पानीसे देना ।

६ जुई या चमेलीका फूल तोला ०॥ शक्कर डाल धकरी के दुध के साथ देना ।

७ हरड कमलतास गोखरु पापाणभेद पुष्करमूल खाट खट्टवा पान सप्तभाग कूटकर २ मासा पानीसे या शहदसे देना ।

८ सोराखार तोला ६, सोनारकी कुलहीमे पिघालकर इसमें शुद्ध नंबक तोला ३ डालना पिघल जानेपर थालिमे डालना पपड़ी हो जायगी उसे पीस तोला ०॥ छाछ के साथ देना । ३ या ७ दिनमें पथरी पिघल जाती है ।

९ तिलकी ठंडी (तलहरा) अपामार्ग पंचांग कैलीका स्तंभ हाककी लकड़ी आवलाकी लकड़ी सबको सुखाकर अलग अलग चलाया, सबको भस्म सप्तभाग मिलाव पानी डाल प्रवाही बनाकर कपडछान कर छोटेके बर्तनमे पकाना पानी जल जाय जब चूर्ण रूप धार लेवेगा । २ से ३ रत्ती बरारीके मूत्रसे या बरारीके दधसे देना पथरी पिघलती है ।



उष्णवात पिशाच जलना उनवा

कारण-चिन्ह—धूपमे सफर करनेसे, नंगे पांव धूपमे चलनेसे, धूरसे चपपी हुई रेती या जमीन पर पिशाच बरनेसे, गर्म चीजे खाने पीनेसे यह द्रव होता है जब जलनके साथ पिशाच पीड़ा या लाल उतरता है। तब क्षरीर दिमाग तपता है। तृषा लगती है। हाथ पांवका तणिया जलता है।

उष्णवात हर मिश्रण—प्रवाल चद्रपुटी तोला १, जवाहर मोहरा तोला १, मुकापिष्टी तोला ०॥ अमृतामृत तोला ४, दूध साथ पीस ५ से १० रत्तो गुलकदसे या दयवनप्राश जीवनसे देना।

उष्णवात हर चूर्ण—समुद्रफल तोला १, नागकेसर, हरद, शकर, पुनर्नवा मूल प्रत्येक दो दो तोला कोठा वर्षिकका फलका गर्भ बीजी शोफ (वरियाळी) खाँडला, ठाकका फूल, कमफूल, इलायची, मनीठ, जीरा शिलाजीत, मीढोनावल गिलोय, कपासका फूल इत्येक पांच पांच तोला साथ कूट ०॥ से १ तोला पानी से देना उपर गुडका पानी अथवा खजूरका पानी पिलाना।

१-गोखरु पचांगका काथ, गायका दूध चालकर पिलाया।

२-मधु विरेचन चूर्ण ०॥ से ०॥ तोला गुडके पानीसे देना।

३-रसायन चूर्ण २ से ३ मासा पानीसे देना।

४-चौलाइ मूल तोला १, चावल के ओसामण से पिस पिलाना।

५-ठाकका फूल, पाषाणभेद पुष्करमूल बच्चूलका फल, शकर समभाग कर ३ से ४ मासा पानीसे देना।

६-हरद, चना, धमासा, पाषाणभेद, गोखरु समभाग कूट २ से ३ मासा पानीसे देना।

७-एक साल के पुराने गुडका पानी १० दूधे अपदछाब पर पिशाना।



मूत्रकृच्छ्र—रूपसे पिशाच होना

यह ऐसे जलनके साथ होता होता पिशाच निकलता

कारण—यह अधिक पीन्य व्यायाम ज्यादा करनेसे तीक्ष्ण जलन रहने पर पदार्थ खानेकी आदतसे, दौड़नेसे, पच्छ खानेसे, भोजन पर भोजन करनेसे, अधिक गरमी या अधिक धारपी में व्यायाम करनेसे ऐसे अनेक कारणोंसे यह रोग होता है। मूत्रागमनमें शिथिलता के कारण तब मूत्र बहुत-बहुत निकलनेका मार्ग वह मूत्र मार्ग का जाता है। वह प्रायः ८ इंच लंबा है और छिद्रको चौड़ाई में मिल जा सके इतनी है। यह मूत्रमार्ग में नसे प्रस्थान या अन्य कारणोंसे संकुचित होकर पिशाच बन जाय, मूत्र मार्ग के र्नाएडा सकोच हो उसे मूत्रकृच्छ्र या मूत्रप्रन्थी कहते हैं। अधिक दाह पीनेसे, धूल खानेसे, हिस्तीरिया चक्री आनेसे और प्रमेह के कारण मूत्रमार्गकी रचना खूब जानेसे अथवा मूत्रमार्गके आसपास गह प्रन्थी होनेसे मूत्र मार्ग संकुचित होता है। इससे पिशाचकी धार बहुत पतली होती है। अथवा बहुत जार करनेसे बुद बुद म पिशाच उतरता है अगर मूत्रमार्ग बिल्कुल बंद हो जाता है तब चाहे जितना जोर करनेपर भी पिशाच निकलता नहीं है। प्रमेहके कारण मूत्रमार्ग में बहुत समय तक दाह रहनेसे उसकी आसपास रक्तताव होकर भी संकुचित होता है।

चिन्ह—यह रोग होने के लिये पीन्य पतला पड़ता है, पिशाचकी इच्छा (खण्ड) रहा कभी है इस कारण रोगी गति गिरने अना पड़ता है। मूत्र जैसे जैसे अटकता है वैसे मूत्र मार्ग का (पहेले) होकर मूत्र मार्गमें सूजन होकर पिशाचमें कफ उत्पन्न होता है। पित्त प्रधान मूत्रकृच्छ्र में पाथलके मूलमें सूक्ष्मयुक्त और शिथिल तीव्र पीडा होती है। पित्त प्रधान मूत्रकृच्छ्र में पीला रक्त मिश्रित पीडा दाहके साथ गुण लार करने मूत्र निकलता है। कफ प्रधान मूत्र कृच्छ्रमें शिथिल और वर्णावनाधान होकर उस पर सूजन होती है। मूत्र का रंगका तेज जीवा और विकृत होता है।

पथ्यापथ्य—खान पानमें समस्त मूत्रना स्वाही खुशक लेना सुगन्ध और स्वाद भण छाँड़ सात खीचडी सुध बना के मूत्र कुत्थी शाकमें सुधी चौलाईकी भाजी सरस रक्ताल (रक्ताल) परवल करेना मूत्र में मेघानेन हल्दी जीरा धनिया हरा धनिया (काशमीर) कहीनीम, पत्र केला मोसवी संतरा द्राक्ष आदि देना। रोगाधा प्रमर तक घट्टा करके मूत्र पानीमें पाव आधा घटा

सलाइ (शलाका) डालना—होता उस दिन रोगीको, तबवाप कपाना नामि के नीचेके भागमे और अजु बाजुमे शोक करना । डाकके-फुटके धाफका सारे पेट पर बांधना । मधुविरेचन तोला २ से ४ मासा देना । शलाई डालनेसे गठ है या नहि अगर कहा है इसका पता लगता है और पिशाच सलाइ द्वारा निकलता है । औषधोसे पिशाच न छूटे तभी शलाई डालना । तेल लाल मिरच चटूटे पदार्थ दाह मांस वगैरे बंद करना ।

मूत्र शलाका—यह सली चांदीकी लेखककी रस्वरकी वा अन्य पदार्थ की बनती है । चांदीकी और रस्वरकी नली पोली होती है । उसमे चंदीका एक बाला रहता है । वह पिशाच निकालनेमे सहायक होता है । मूत्र मार्ग के बा वरमेके लिये भी सलीका उपयोग होता है । सली १ से १२ नयरीकी होती है । सली डालनेके पहिले उसे दोनो हाथके बीच घोंसकर साइ लगाना । डाक्टर लोग शीशरीन लगाते हैं रोगीको सुलाकर घूटन नमाकर खड़ा रखना । पेट ढीला रखनेको कहना । रोगीकी बाये और खड़ा रहकर सलीको तेल लगाकर बाये (वाम) हाथमे धिध पकड़कर दावे (दक्षिण) हाथसे मूत्रमार्ग के छिद्र मे सली दाखल करना । जैसे जैसे सली अंदर घुसती जाय मूत्रमार्ग खुल जायगा जब तक सलाइ अदृचण बिना अंदर घुसेगी । सलाइ डालते डल करना नहि, आरते आरते डालना, जोर करनेसे मूत्रमार्ग पट जानेका भय है । शलाका डालते समय रोगीको थोड़ा दर्द होगा चलन भी हो । कभी खून भी निकलता है । परतु वह ठंडा पानी का पोता रखनेसे बंध जाता है । सलाइ डालनेसे रोगीको कभी ठंड या बुखार जैसा कंप होता है, बुखार भी चढ़ जाता है तो सलाइ निकाल देना । सलाइ डालनेसे कभी रोगी वैशुद्ध भी हो जाता है, कभी वृषण सूख जाता है । कभी अधिक सकेच के कारण सलाइ घुस नहि सकती अटक जाती है तब शलाक कम करना पड़ता है ।

मूत्रकच्छान्तक रस बृंहत—शुद्ध पारद गंधक और अन्नक चैत्रात स्वर्ण कांतलेह प्रत्येककी भस्म, मुक्तापिष्टी प्रवाल पिष्टी सब सम मग लेकर निंबू रसमे घोटकर मूसमे संघ रक्ख औषध दूमे इतना निंबूरस डाल संगडीपर नूथ घरना निंबुरस जल जाय जब फीर निंबू रसमे घोट उपर के माफोके पड़ाना २५ बार पकानेसे औषध तयार होता है । हरवखत औषध मूत्रमे डालने के पीछे औषध देने इतना निंबूरस डालते रहना ।

मूत्रकच्छान्तक रस लघु—धामान्यलेग के लिये स्वर्ण मूस और

सुक्ता पिष्टिके स्थानमें दण' माक्षिक और सुक्ताशुक्रियाला दूतैयार किया जाता है। इस लिये बृहत् और लघु रखा है इसमें भी किया उपर लिखी यह है।

मूत्रकृच्छ्रारि रस—पारद गंधक शस पिष्टे शुक्ति पिष्टी बंग मरम यशद लक्ष्म, मोखर हरड आंवला नागरमेथ शतावरी कुटकी शिलाजीत कालीशक्ष पर्पट (खडसलीयो) जवाखार लेह मरम सब समभाग लेकर बहुफली गोशुर पचांग सहदेवी कालीप्राज्ञ प्रत्येकके क्वाथकी एक एक भावना देकर दो रत्ती प्रमाण गोली बनाना। ४ से ८ गोली पानीसे देना। मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रपिंडका रोग मूत्रनलीकी सूजन आदि मिटते हैं।

क्षौवेयी गुटिका—पारद गंधक वन भस्म, क्षारहृत् अम्रक भस्म सूर्यक्षार जवाखार गोखर हरड शिलाजीत शतावरी शक्कर तिलपर्णी (तिलवणी) अमलताष पाषाणमेद तालमसाना आंवला मूलेठीमूल सेनामखीकी पत्ती पीओख निंबूका मूल सब सम भाग लेकर हूँतका रस और घमासाका क्वाथकी एक एक भावना देकर दो रत्ती प्रमाण गोली बनाना। २ से २ गोली पानीसे देना मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रपिंडका रोग मूत्रनलीकी सूजन आदि मिटते हैं।

सामान्य उपचार

१- कुप्तांठ (भुराकेला) का रस तोला १० से २॥ तोला शक्कर और १०-से १२ रत्ती जवाखार डालकर पिलाना।

२ दूर्धमूल कास (काण्डो) मूल इसमूल गोशुर मूल घमासा बहुफली समभाग कुटना। २ से ४ तोलाका क्वाथ कर शक्कर डाल पिलाना।

३ अमलनाथ गिरी दूर्धम मूल घमासा गोखर पर्पट (खडसलीयो) समभाग। २ से ४ तोलाका क्वाथ पिलाना।

४ आंवला कालीशक्ष विदारीकंद शतावरी मूलेठी मूल दूर्धममूल बहुफली समभाग। १ से २ तोलाका क्वाथ पिलाना।

५ हरड गोखर अमलताष पाषाणमेद घमासा बहुफली समभाग। १ से २ तोलाका क्वाथ शक्कर डाल पिलाना।

६ गुग्गुली गोदजैसी कणिका चुनकर मासा २ से ४ दहीके पानीमें पीस प्रवाही बनाकर पिलाना।

७ जवाखार २ मासा शक्कर ८ मासा पानीमें पीस पिलाना।

८ अमलताषकी किरि गोखर घमासा रोठ अहूषाकी छाल पाषाण मेद समभाग कुटना। तोला ०॥ में पानी रतल २ डाल उबालना आधा पानी रहे जब पिला देना पिलाव छूटे।

९ चिमट-(चीमटा) ११ गम-गिरी निकाल करनामिपर बांधना ।

१० इलायची शिलाजीत पाषाणमेद पीपल समभाग । २ से ३ मास तकते हुए चावल के पानीसे देना ।

११ छोटी कटहरीका पचांग कूटकर उसका स्वरस तोला १ में सड़द तोला चार मिलाकर पिलाना ।

१२ भुदुगिका (मोडुधेली) जो भूमिपर फैलती है बबूल जैसे छोटे पत्ते होते हैं, पत्ता तोड़नेसे दूध निकलता है इसका पचांग तोला २ को गायके दूधमें घोस पिलानेसे पिशाच छूटे ।

१३ पाषाणमेद १२ रत्ती, शिलाजीत १२ रत्ती, इलायची ०॥ तोला, शकर ०॥ तोला साथ मिलाय ३ पुर्दी बनाना प्रातः काल दुपहर शामको सम-बलसे देनेसे पिशाच छूटे ।



मूत्राघात मूत्रावरोध

कारण—मलमूत्राणिका वेग रोकनेसे, रुध्र पदार्थ खानेकी आदतसे, पथरी रोगकर मूत्र मार्ग रुक जानेसे गर्भाशयका अथवा प्रन्थीका दाह होनेसे चोट लगनेसे अफीम गांजा भांग अति पीनेसे, शस्त्र प्रयोग करनेसे आदि कारणोंसे वात पित्त कफ दूषित होकर पिशाच रुक जाता है।

चिन्ह—मूत्रच्छर्मे मूत्रमार्ग संकुचित होता है और मूत्राघात में मूत्राशय बर्धित होता है अगर पिशाचकी उत्पत्ति दिखेंद हो जाती है। बस्तिका मुख नीचा है दृष्टकों चारों ओर मूत्रा वहन करने वाली शिराओं के सूक्ष्म मुख हैं उनमेंसे मूत्र गिरता है। वातादि दोष के प्रक्षेप से मूत्रगद्दि शिराओंके मुख संकुचित या बंद होकर यह रोग होता है। वातकुटलिदा में चक्करकी तरह वायु नाभिके नीचे और घेना और फिरता है इस कारण मूत्रच्छिन्न रुक जानेसे पोंडा के साथ थोड़ा थोड़ा पिशाच उतरता है। मूत्राघात में वायु मलमूत्राका रोक मूत्राशय और गुर्दा पुनःकर अपोवायु बंद कर कठिन फिरती प्रन्थी होती है। वायवस्ति में भूत्र वेगरोकनेसे पेटमें का पेटसे दबा हुआ वायु मूत्रवाही शिराओंके दबा येता है। मूत्रातीत में पिशाच करने की इच्छा (हाजत खण्ड) रहा करे लेकिन पिशाच उतरने में बहून देरी हो और थोड़ा थोड़ा उतरे। मूत्रजठर में मूत्रका वेग रुकनेसे कुपित अपान वायु पेटमें जम कर नाभिके नीचे पोंडा कर और मूत्रवाहि शिराओंका रोक है। मूत्रोत्सर्ग में पेट में या इन्द्रिय की नसेमें आया हुआ मूत्र रुक जानेसे और पिशाच करने के लिये जोर करनेसे लिङ्गका छिद्र फट कर पिशाच खून जलन के साथ थोड़ा थोड़ा उतरे, शरीर के रस रक्त आदि घातु सुख जानेसे शरीर रुक रुक सुखा हुआ होता है। जब पित्त और मूत्राशयमें रहा वायु मूत्रका नाश करता है जब शूल के साथ जलन होकर थोड़ा पिशाच निकलता है। मूत्रप्रन्थी में गोळ कठिन आंखला जैसी गांठ होती है उसमें पथरी जैसी पोंडा होती है तब पिशाच बहुत कष्टसे उतरता है। मूत्रशुक्र में पिशाच की हाजत होने पर भी पिशाच न कर सौमग करता है तब स्थान भ्रष्ट हुआ वायु बीर्यको दूसरे मार्ग में चढाकर पिशाचको रुकता है जब राख जैसे रंगका पिशाच कष्टसे छूटता है। विट्चिघात में दुर्बल कृश मनुष्यों को मलका वेग रोकनेसे मल और अपान वायु दूसरे मार्ग में खींचा कर मल मूत्रा मार्गमें आ जाता है जब पिशाच बहुत कष्टसे उतरता है और पिशाच के

मल मिश्रित हुआ होता है और पिशाचकी गंध पिष्टा जैसी आती है। वस्त्र कुडल में बस्ती में पड़ने में गोल कठिन गठ होती है उसमें सूख निकलत है मूत्र बुद बुद से आता है स्निग्ध में सूजन होता है। बहुत पेशाब चलने की वजहसे रक्तमल से चोट लगनेसे भी यह ग्रन्थी होती है।

पथ्यापथ्य—अनुकूलता होती क्रियाकुशल वैद्यमें नलीसे पिशाच निकलवाना। जो दोष प्रधान हो जो चिन्ह देखनेमें आवे उसके अनुसार उपाय करना। गर्मजलकी कुडी में रोगीका बैठाना। शोक करना। मूत्रशलाका चालना। यदि मूत्र शलाका दाखल न हो मूत्रघात ज्यादा समय रहे तो मूत्र भाग फटनेका भय रहता है। तब मूत्र दूसरी जगहसे निकालने की जरूरत रहती है। दिनमें एकदो दफे सला डालना और उसके द्वारा गर्म पानीकी पिचकारी डालकर मुद्राशय घेरना। पुराना चानल जब मुग आदि राश खुराक देना। रोगीका करीर और रोगका चिन्ह देखकर आहार विहार रखना।

मूत्राघातारि रस—पारद गंधक अभ्रक मर्मम दग्धमस्य प्रत्येक पांच तोला पाषाण मेद शिलाजीत जवाखार सौराखार सेधानोन कडवीके बीज श्रीमंठाका बीज हरद गंधक गरुडका प्रत्येक चार चार तोला कुट विधिवत मिलाय घमासा अइसी अम्ल पर्णों के पत्ते इखका रस प्रत्येककी एक एक भावना देकर २ रत्तीकी गेली बनाना या घोट कर रखना। मात्रा २ से ४ गेली दिनमें दो या तीन दफे दम के मुल को कवाप से अथवा नीचे लीये किसी कवाथसे देना।

सामान्य उपाय

१ पाषाण मेद हरद घमासा अमलतासकी गिरि गोखर बहुफली समभाग कुट १ से २ तोलाका कवाप पिलाना।

२ बिम्बी (टोडरी) की गाठ के खट्टो छालमें पोसकर नाभिपर लेप करना

३ कुष्मांड (मुहकोकू) का रस तोला २० गुडका पानी तोला १० जवाखार १२ से २० रत्ती दूध तोला २० साथ मिलाय पिलाना।

४ अम्लपर्णी (खाटखट्टो) के पान ६ पोसकर दिनमें दो या तीन वस्त्र पिलाना—मूत्रकी रुकावट मिटती है और पथरी भी पिघलती है।



मूत्राशय के रोग

कारण—वस्तीके आगेके भागमें मूत्राशय है और मूत्राशयके पीछे के भागमें मलाशय है। मूत्राशयके ऊपर आते हैं। मूत्राशयमें मूत्र एकत्र होकर जखम-व्रण होता है। मूत्राशय के प्रारंभमें पिशाच बहुत दफे थोड़ा थोड़ा उत्तरता है। पिशाच होजानेके पीछे दर्द होकर पूरा खून या सफेद चिकना पदार्थ पड़े, कम्पमें दर्द होता है। प्रमेह रोग होनेमें, यकृत या अन्य शक्ति डालनेमें, पथरीसे या शर्कराके कारण यह स्वरित शोथ होता है। पथरीसे मूत्रकृच्छ्रमें हथीभार डालनेमें कुरोह रज्जुमें चोट लगनेसे कठमालसे या प्रध्वनी वातसे जीर्णशोथ होता है। इसमें पिशाच हर वक्त हो, पिशाचमें सफेद चिकना पदार्थ ज्यादा पड़े, उसमें बहुत दुर्गन्ध आवे, पिशाच करते वक्त बहुत पीड़ा हो, पिशाचकि हाजत अटकाना अवश्य हो तब पिशाच साफ आवे या खुल जाय वैसा उपचार करना। पकाया हुआ टंकण १० रत्तीमें २॥ तोला णनी मिलाय पिधल जानेपर कपडछान कर शिम्भमें पिचकारी देना। दूधमें १० रत्ती टंकण मिलाय पिलाना।

मूत्राशय रोगान्तक रस—शिलाजीत तोला १०, पारद तोला ५, गंधक तो, १०, पाषाणमेद पुनर्नवा मूल विदारीकंद दममुल फास मुल रौम्र काला हसरात्र शतावरी प्रियंगु (घउंको) तालपखाना गोखर छोटी कटहरी मुल पौछा बीजोरा निंबूका मूल मुलैठी मुल सेराखार टंकण जवाखार सेधानीन प्रत्येक चार चार तोला लेकर कूट विधिवत मिलाय इसमें १० तोला एरंड तेल की भावना देकर गोजिह्वा (मोपाथरी) के रसकी १ भावना देकर सुखाकर घोंट कर रखनी अथवा ३ रत्तीकी गोली बनाना। मात्रा ६ से ८ रत्ती अथवा २ से ३ गोली यानीसे देना। मूत्रकी अटकायत मूत्राशयकी जलन दाह सूजन आदि मिटते हैं।

सामान्य उपचार

१-बड़ी कटहरी, घाइफुल, पाठामुल, मुलैठी मुल महुडेका फुल इंदौरी अमरपणी समभाग कूट २ से ४ तोलाका काथ कर पिलाना।

२ बड़ी कटहरी के पंचांग कूटकर ४ तोला रसमें बाइस डालकर दिनमें दो या तीन दफे पियाना।

३ बालाके मुरका कषाथ पिलाना।

४ रोगीके सारे शरीरमें तिलका तेल अथवा महालाक्षादि तेल मालीके कर वरुण (बाबरणो) की छाल या पंचांगकी भाफ (भाण्य) देना।

५ बीजोरा निंबूका मूल तोला १ में हलदी तो. ०। पीस पिलाना।

मूत्रका वेग रुकनेकी अशक्ति

निदमे या जाग्रत दशामे पिशाव हो जाना

कारण—मुत्राशयके मुखका स्नायु शिथिल होनेसे बिना इच्छा और निदमें पिशाव हो जाता है। यह रोग बच्चेको ज्यादा होता है। और जाग्रत होती है जब बंध हो जाता है। किसीको पिशाव बुंद बुंदसे गिरा करता है और रुकनेका प्रयत्न करने पर भी अटक्ता नहि। ग्रन्थों कृमि, करोर रज्जुके रोग और जैसे अन्य रोगके कारण भी पिशाव गिरा करता है।

मूत्रातिसार हरी वट्टी—पारद तो २॥, गंधक तो. २॥, रससिद्धर तो. २॥, कपूर तो. ३, अफोम लताकरंजके बीजका पंग (कांश्चीया), इन्द्रजद प्रत्येक तोला दो दो सब कूट कपडछान कर तुलसीके रसकी भावना दे कर रती प्रमाण गोली बनाना। हमेशा १ से ३ गोल दूधसे देना। उपर पानकी पछी खिलाना। इस गोलीसे प्यास लगे तो दहीका घोल कर उसमें शकर और घी मिलाकर पिलाना।

२—माजुकल तो. १०, पकाइ हुई फिटकरी तो ५ साथ कूट १२ से १५ रती पानीसे देना।

३ खेरसार, इद्रजव, हरड, वहिडा, भावळा, सोंठ, पीपल, काली मिरच निसोस सब समभाग लेकर कूटकर १२ से १६ रती शहदके साथ देना।

४—सौंफ तो. १, भांगके बीज छांटे टिल खसखस, भजराइव प्रत्येक तो ४॥ सबकूट कर कपडछान कर गुठमें गोली ६ रतीकी बनाना। २ से ४ गोल पानीके साथ देना।

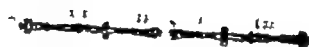
५—सफेद चंदन, घनिया, वायविडंग, नीमकी छार, इलायची, नागकेशर, नागरमोथ सब समभाग कूटकर एक तोलाका क्वाथ बनाकर शहद पाँच सक्कर डालकर पिलाना।

६—हरड, भावळा, नागरमोथ, घनिया, चाइके फल, बादामकि गोरी, तारमखाना, कमलकंद अमळसाब, कालीमिरच प्रत्येक पाँच पाँच तोला सातावरि बोळा. १०, गोखरु पंचांग तो. १५, सब साथ कूटकर एकठे दो टोल, सा क्वाथ कर शहद मिलाकर पिलाना।

७ शहजनोका मूल तो. २ से ४ कूटकर उसका क्वाथ कर शकर मिलाकर पिलाना।

८—भाकड़े फूलको छायामें सूखाकर तो. १० और काटे तिल तो. १०
धहीन कूट कर गुठमें ६ रत्तीकी गोली बनाना । २ से ४ गोली रातवाली
पानीके साथ देना ।

९—दूधके पान (मीठी दूधेली के पान जो बार चौद इंचका क्षुप
होता है और पान तोड़नेसे दूध निकलता है) वहाँ ४ तोला पानीमें पोस कर
खसमें १० से १२ तोला बकरीका दूध डालकर पिलाना ।



मुत्रपिंडके रोग

मुत्रपिंड गुर्मा किडनी यह दो हैं। प्रत्येक मुत्रपिंड कोरककी बाजुमें कम्मर के भागमें पेटके पीछेकी दीवार पर रहता हैं। वह लंबा ४ से ५ इंच और चौड़ा २ से ३ इंच हैं। ११ वी पसलीसे वह जुड़ होता है। दाहिने मुत्रपिंडके उपर तिल्ली है और ऊर्ध्व मुत्रपिंड सूक्ष्म मुत्र नलियोंसे बना हुआ है।

कारण चिन्ह—पहल दाह पीनेसे, मुत्रपिंड पर दौट लगनेसे, ताप, कालेरा, गठिया वा, पथरी जैसे दर्दसे, जलद दवाओसे, जलद पदार्थ मानेपीनेसे, अधिक ठंडी लगनेसे, उम्र तापसे, मुत्रपिंडका दर्द होता है और उसमें सूजन होती है। प्रारंभमें ठंडी लगकर ताप आता है। कम्मरमें दर्द होता है। मुत्रपिंडके आगे वजन जैसा लगता है। कभी वमन होता है, शरीर पर और मुख पर सूजन होती है, पेटमें पानी भरता है। दृग्गण्य और मुखमुद्रा पर सूजन होती है। आंत और उसके पोषके (Lids) में भी सूजन होती है। वृषण और पांडु को चमड़ी फट कर पानी निकलता है। खुराक पर रुचि नहीं होती है। बिरमे दर्द होता है। वमन और उष्णता आता है। मुत्रपिंडको आजुबानुई जगहमें दर्द होता है। मुत्रपिंडको जिस बाजुमें सूजन हुआ हो वहां भार जैसा लगता है। वृषणको गोली उची चढ़ती है। तृप्ता लगती हैं। दन्त क्वत्र रहता है। शिवाय लाठ धोखा-सा ऊतरता है। दर्द कम होता है जब शिवाय साक ऊतरने लगता है। मुत्रपिंडके आजुगानुमें शोधसे घिरा हुआ हो तो आंखका तेज कम होता है। निद्रामें पक्काद, याद दास्त कम, विचार शक्ति नष्ट होना, वेदुद्धि आदि चिन्ह मालुम होते हैं। दर्द घट जानेसे रोगका मृत्यु होता है।

पथ्यापथ्य—मुत्रपिंडकी सूजन होते रोगीको स्वेदल और विरेचन दवा देना। सप्त्र जगइ लेा कर शोक करना। जबका पयंटका नागरमोधका या घम सा का औटाया हुआ पानी ठंडा करके पिलाना। सप्त्र जगइ शरदी या ठंडी लगने न देना। सूखी जगइसे रोगीको रखना। तेल लाल मिरच, खट्टे पदार्थ अजीर्ण करनेवाली चीजे, बाजारकी मोठाइ वगैरह बंद करना।

मूत्रपिंड रोग घर रख—पारद, गघक, रघुषिंदूर अत्रक भस्म, लेह भस्म, प्रत्येक पांच पांच तोला शिलाजीत १० तोला, कुटकी २० तोला, हरड १० तोला, मोक्षधुल, रसोत, सौत्रानेन दासहस्दी अमियाहल्दी धर्म सुक घनिया वंशलोचन, इलायची, जीरा, मूत्रांघ्रि, हरदी प्रत्येक पांच पांच तोला, सप्त्र घाव मिलाकर मोमके पत्रका रख, तलवारी का रख शीण-पुष्पी (कुच) का रख प्रत्येककी एक

एक भाषना देकर तीस रत्तीकी गोली बनाना । भाषा १ से ३ गोली पहले कुछ खासलके पानीसे अथवा ईरके रससे देना । मुत्रादिका दाह सूजन और मुत्राशयके शीत मिटता है ।

सामान्य उपाय

१-मागसोथ, हरत, आवला, मुगैठीमुख, गुटकी, दिप्रपत्ती (बहुफलो) समभाग कुटकर ३ तोला क्वाथ पर शर्द डालकर पिलाना ।

२-सातावरी, लाटका फूड, कुट, देगना, बहुफलो, समभाग कुट १ से २ तोलाका क्वाथ कर पिलाना ।

३-लाल उलकेमुल, घनिया, जीरा गिलेबला पान अट्ट्रीका पान बहुफलो समभाग कुट क्वाथ कर पिलाना ।

४-अमिया हल्दि (भाया हलदर) पिगयता कालीदास एरंडके मूल मूँव औवली बहुफलो समभाग कुट क्वाथ कर शर्द मिलाकर पिलाना ।

५-गोमद सातावरी एवँड मुल समभाग कुट १ से २ तोलाका क्वाथ कर पिलाना ।

६-अट्ट्रीके पान तोला ४ पीसकर पानी मिलाकर रस निकालना । उसमें शर्द डालकर पिलाना ।

७-कपिरय (कोठा)के पान, धमासा मजीठ समभाग कुट क्वाथ कर पिलानेसे मुत्रादि में जमा हुवा पद पिसाव द्वारा निकल जाता है ।



प्रमेह

अतिविषयाद् दुष्टस्य रजस्वला संगमादधिकमघात् ॥

हस्तक्रियया दूषितरक्तादायन्तच्छाहपानेन ॥१॥

क्रामोत्तेजक मातृक सीनेमादर्शनाद् दिवाभ्यासात् ॥

नाशामेहा पुंसामास्यासौख्येस्त्रिदोषकोपात् ॥२॥

रसोद्धारतश्च ॥

कारण—प्रमेह अनेक प्रकारका होता है। एलाभेह सान्द्रमेह पिष्टमेह शुक्रमेह उदकमेह रक्तमेह मणिष्ठामेह वस मेह मधुमेह इत्यादि। मर प्रभारके प्रमेह के सामान्य कारण चांदी गरमीवाली और शत्रुपत्ती स्त्रीका संग, अति गरम खुराक, खुनका शिगाह, अधिक दाग धिनेकी आदत, शिथलमें हर वरुन सलाई डालनेसे आर्गंदा सकाच, हस्तदेवकी छुटेव, विदय वासना बढानेवाला शृंगारिक वाचन, विकार उत्पन्न करानेवाला नाटक छिनेमा आदि प्रश्य, अति विषयवासना, जागरण इत्यादि कारणोंसे यह रोग पैदा होना है।

चिन्ह—सब प्रमेहमें प्रायः नीचे लिखे चिन्ह होते हैं। प्रारंभमें शिथलके कुलके अप्रमाणमें खुजली आती है। पीछे चीकनी रसो निकलती है। प्रतिदिन वह रसो अधिक निकलने लगती है। प्रारंभमें रसो पानी जैसी निकलती है। चोटे दिनके पीछे वह दूध या पद जैसी सफेद और पीछे रंगलिये निकलती है। पीछे पिशाब करते वरत जलन होता है। प्रमेह शुरू होनेसे पीछे पाव दस दिन में इन्द्रियके कुलके उपरकी पतली धमडी लाल हो जाती है। और कभी वही सूख जाती है। मूत्रमार्गका सफेच होता है। रसो ज्यादा निकलती है। कइ जोगोके वो रात दिन रसो के बुंद टपकते रहते हैं। वह पद जैसी पीली होती है। इन्द्रियमें जलन और दर्द ज्यादा होता है। पिशाब करते वरत घारी मूत्र मलीमें पंढा होती है, कारण कि मूत्रमलीका अंदरका भाग सभनवाला होनेसे मूत्र के क्षारका स्पर्श और घर्षण होता है। मूत्र जानेसे मूत्रमलीका तथा शिथलके कुलना पडता है इस कारण वरदी उष्ण दम खेनकर धीरे धीरे पिशाब करनेका प्रयत्न करता है। कइ वरत पिशाबको नली पूय पय (पद) से सर जाने से पिशाबकी धाराये दो तीन होती है। निद्रामे दर्द हो जानेसे अकरभात जाग्रत होता है। इसमें स्त्रासनकी इच्छा होनेसे उसके पद होता है कइ पंढा ज्यादा बढती है। और वरदी बढा होना होता है। शिथल ठेढा होजाता है। कभी पिशाबके साथ साथ भी मिरता है। अंदर छोटी छोटी प्रनमिया चांदा पय भी होते हैं। इस रोगके

सागलके मूलमें अथि या सुजन होती है। औषधोपचार करनेसे उपर धड़े हुके चिन्ह कम और पिडा कम होती हैं, रसी बहून घट हुई हो वह पतली होने लगती है, और एक के पीछे एक चिन्ह कम होनेमें रोग मिटना है। प्रमेहवाले पुरुषके मगमे स्त्रीके गर्भ नहीं रहता है। और उपदश-गरमो के रोमी पुष्पसे रहा हुवा गर्भ गिर जाता है। प्रमेहवाले स्त्री पुष्पोंके गुप्त व्यभिचारसे यह रोग प्रजामे खुब फैला हुवा है।

पृथग्पथ्य—सब प्रमेहमे सामान्य रीतिसे रोगीको शारीरिक परिश्रम कम करना ज्यादा फिरेना नहीं, चप्पना नहीं, एफर बरना नहीं। इसके अन्वयोडा संकोच विकास होनेसे रोग बढना है। कडे से रोगी चक्ते फिरते कामकाज करते औषध सेवनसे प्रमेह मिट जाता है। रोग मिटे जब तक ब्रह्मचर्यका पालन करना। विषय नासना बढने वाला साहित्य पढना नहीं। नाटक प्रियेमा देखना नहीं। धार्मिक पुस्तके पढना। खुशक सादा हलका लेना। दाल भात खीचडी बिना मसालाको शाकभाजी धी दूध सुंग चावल गेहू जवारी मकाइ कुब्धी टमाटा दूधो सुरण रताल परवल करेवा चौलाइ मेथीकी भाजी मोसंबी केला सररजन दाहीम द्राक्ष वादाम पिस्ता चारोली आदि खाना। लाल मिरच सीखा क्षार वाला पदार्थ गरमागरम चीज अभीम दाह चा आदि छोड़ना। इन्द्रीयका जुत्ताव (मुत्र विरेचन) देना। डोकटर ले ग कह वस्तु इस रोगीको शिश्नमें पिचकारी से साफ करते है इससे कभी हानि पहुचती है। निकलती हुई रसीको कड़ा ग कड़े से रुकना नहि। रसी टपटती होठो कपडेकी छे टो घेनी (कोथली) में लपटा या रुई डालकर इसमें शिश्न अक्षर लटकता रहे इस प्रकार करना ताकि रसोके बुंद उस घेनीमे गिरे। यदि अक्षरके भागमे जलन होता हो तो इन्द्रिय उपर और पेडु उपर पानीका ठंडा पोता रखना दस्त हमेशा दो दफे साफ आवे एसी औषध लेते रहना और वात पित्त कफमेसे जिस दोषका अधिक प्रवेश हो उसके ध्यानमे रखके औषधोपचार करना।

१ लालामेह—इसमे अतिलाला रेषावाला चीरना पदार्थ शिश्नसे निकलता है। इसमे कफदोष प्रधान रहता है।

रुतिपिच्छिलमतिलालं दोषमिव तत्तुवज्ज मेहनि यः ॥

तियाललामेहं मलेप्राधिक्याद् मवत्यय दोगः ॥१॥

॥रसोद्धारतंत्र ॥

२ लालामेह—पिशाब ग्लासमें रखनेसे नीचे गाढा भाग जमता है और पिशाब उपरके द्रव्य भी सूख नहीं होता। यह कफप्रधान प्रमेह है।

घटपदाथसमं वा घटपदाथेन मिश्रितं मूत्रं ॥

अबनेच्छमुपरि किञ्चित् कफातिरेकेण सादमेहोऽसौ ॥१॥

॥रसोद्धार तत्र॥

६ पिष्टमेह—पिशाब करते समय रोगीको रोमांच हो जाता है कांप उठता है । पिशाबके साथ आटा जैसी चारीक कणिकायां गिरती है । पिशाब सफेद रंगका और हर वस्तु होता है ।

श्वेतं पिष्टममं वा मुहुमुहुमूत्रमुत्सृजेत्पुरुषः ॥

शुष्कं मिष्टवदधस्थं क्षीणं विद्याच्च पिष्टमेहोर्त्ति ॥३॥

॥रसोद्धारतत्र॥

४ शुक्रमेह—इसमें पिशाब अधिक हरवस्तु आता है । रोगी बेचेन निस्तेज और क्षीण बनता है । पिशाब गाढ़ा सफेद और वीर्यमिश्रित आता है ।

वीर्ययुतं वीर्याम मेहति मूत्रेण चलचदुःस्थम् ॥

चिकित्काचसमं वा क्षीणनरं शुक्रमेहिनं विद्यात् ॥४॥

॥रसोद्धार तत्र॥

५ वालुका मेह—पिशाबमें चारीक रेती जैसी कणिकायां आती है और इसमें पिशाब धरनेसे नचे रेती जैसी कणिकायां जमती है । यह रोगी दिनेदिन क्षीण होता है, जठराग्नि मंद पड़ता है । दस्त अनियमित होता है । पिशाबकी हाजत हरवस्तु रहती है । शिश्नको मसलता है । इससे शिश्नपर सुजन होती है ।

कंकरिकाभा कणिका मूत्रेणाऽऽयांति सुस्थिरे मूत्रे ॥

क्षीणवलाग्नेः पुंसेऽघस्ताद्रेतीनिभा विलोक्यन्ते ॥५॥

॥रसोद्धार तत्र॥

६ रुक्म मेह—(बहुमूत्र)—पिशाबमें गंध नहीं होती, पिशाब सफेद और ठंडा आता है । पानी जैसा स्वच्छ होता है । रोगीको पिशाबकी हाजत हरवस्तु रहती है । रोगीका शरीर निर्बल कुश और निस्तेज बनता है । पाचन शक्ति मंद होती है, खुराक पर या किसी कामकाजमें रोगीको प्रीति नहीं रहती ।

मुहुर्छं शीतं सितमुदकोपममूत्रमुत्सृजेत्पुरुषः ॥

निर्गन्धं रुक्ममेहो मदाग्निनिर्बलो ह्युक्ममेहो ॥६॥

॥रसोद्धार तत्र॥

७ रुक्ममेह—पिशाबके साथ उष्ण खून गिरती है अगर खूनमिश्रित पिशाब उतरता है । शिश्नके अंदरके भागमें दाह जलन होती है, रोगीको मुखमें शीघ्र चूषा आने और हृदयमें जलन, दस्त पतला और कभी कभी होता है । यह पित्त प्रधान प्रमेह है ।

सक्षारमुष्णमस्रं विचित्रं मेहेन्नरः सदाहं वा ॥

पित्तात्सदाहृद्गलनेप्रोऽसौ रक्तमेहवान्मनुजः ॥७॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

८. मांजिष्ठ मेह—(त्रणमेह—जलतरा प्रमेह)—खून जैसे रंगका या कैसरी रंगका या मजीठ जैसे रंगका लाल रंग जलनके साथ पिशाब-उत्तरता है। पिशाब नहीं करनेके समयमें भी अंदरके भगमें जलन रहता करता है। पिशाब करते वस्तु अस्थ जलन होती है। इसके साथ कभी खून भी गिरता है। रोगी बिबल, दीन बेचेन होता जाता है। यह पित्त-गरमजन्य प्रमेह है। यह प्रमेह बहुत करके खराब खीरे-संगसे होता है।

मंजिष्ठा रक्त सदृशं चोष्णं दाहेन संयुतं मेहेत् ॥

तप्तशरीरः पित्तप्रमेहो मांजिष्ठसंज्ञकः प्रोक्तः ॥८॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

९. वसामेह—इस प्रमेहमें ज्यादा वातप्रकोप रहता है पिशाबके साथ चरबी जैसा गाढ़ा, चौकना पदार्थ गिरता है अथवा चरबी मिश्रित पिशाब निकलता है। यह रोगी क्षीण अशक्त कुश अगर कमजोर हो जाता है। चलने फिरनेकी शक्ति नहीं रहती। खुराकका पाचन नहीं होता। दस्त अनियमित होता है।

मेहति तरो वसामेः मुहुर्बलाभिश्च संयुतं मूत्रम् ॥

तमसाध्यमाहुरार्या वसामेहं क्षिप्रं वातकोपेन ॥९॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

१०. ओजोमेह—यह रोगी वक्रीके दूध जैसा पतला पिशाब करता है। पिशाब करनेके पीछे शक्ति बल और उत्साह क्षीण होता हुआ रोगीको मालूम होता है। इस रोगीके प्रत्येक अवयव क्षीण होनेसे अपने अपने काम करनेमें कमजोर होते हैं। प्रारंभमें रोगी चलता फिरता है, लेकिन थोड़े दिनोंके पीछे बढ़ बिछाना बग हो जाता है। पिशाब हर वस्तु होता है।

मेहति मुहुर्मनुष्यश्चोजो मेहत्यजापयप्रतिमम् ॥

वातजमसाध्यमाहुश्चोजोमेहं पुरातनं पापिः ॥१०॥

॥ रसोद्धार तंत्र ॥

मधुमेह

मेहाः सर्वे कालादुचितप्रतिकारहीनमनुजस्य ॥

मधुमेहत्वं प्राप्ता प्रायः कष्टेन साध्यतां यांति ॥११॥

॥ इसोद्वारतंत्र ॥

११ मधुमेह-कारण—दीर्घकालके अजीर्णसे, चा, काफी कैके अधिक पीनेकी आदतसे चिता शोकरसे, धीरे धीरे से, घी शकरके मिष्ठान्न ज्यादा खानेकी आदतसे, शरबते, गुल्फी आइसक्रीम आदि ज्यादा खाने पीनेसे दिमरके अधिक कामसे, मित्राद से प्रहनेसे, कठेजेके रागसे, दाह अधिक पीनेसे, प्रमेहका रोग बहुत समयसे रहनेसे यह रोग होता है। ब्रह्मणादिकमें शरबिजडा काम करनेवाले ब्राह्मण वर्ग बहुत दिनोंतक खडि शकरवाली चीजे खाते रहते हैं उनको भी यह रोग हो जाता है। बैठे रह कर कामकाज करने बीले व्यापारी या ओरिसमें काम करनेवाले लोगमें यह रोग ज्यादा होता है। खोली अपक्षा पुरुषोंमें यह रोग अधिक देखता जाता है।

चिह्न—यह रोग कभी भयकर रूप पकड़कर थोड़े वर्षोंमें रोगीको मृत्युवश पहुंचाता है। जब बहुतसे रोगियोंको यह रोग बहुत वर्षोंतक चलता है। पिशाबका वजन २४ घंटेमें १० से ३० रतल तक बढ़ता है। इसमें शकर सैकड़ा १०० सेले पिशाबमें आधा टकास १० टका तक जाती है प्यास ज्यादा लगती है। पिशाबका रंग फिक्का पानी जैसा और स्वादमें मधुर रहता है। गलासमें थोड़ी देर रखनेसे फेन (फोण) निकलने लगते हैं। पिशाब जमीन पर पड़ता है तब वहां चोटियां और कीड़ी मकोड़ी लगते हैं। मुख जीभ गला तल सुखा रहता है, मुखमें अभी नमी रहती, जीभ लाल होती है। दांतके मसूड़ेसे कमी खून या पस निकलता है। दन्त कम रहता है। यूरेमें और मुखमें मधुरता, अजीर्ण और वायु, चमड़ी सूखी रक्त और सुखमुद्रा चित्तातुर बीखती है। कमजोरी बढ़ती है। विषय शक्त कमी होती है। नींद कम होती है। हाडमें जोर्णज्वर कमी रहता है। शरीर कमजोर होता है। पांच टेला पिशाबमें १० से २० रती शकर मौलूम हो तो वह असाध्य मधुमेह समजना। रोगीको साध्यता असाध्यता और रोगके चिह्न शारीरिक स्थिति आदि ध्यानमें रखकर उपचार करना।

पथ्यापथ्य—खुराकमें रोगीने सभाल रखना चाहिये। शकर गुडवाले, आटाके पीवाले चरबी वाले पशु मांस चीकने पदार्थ गेहूं चावल बटाटा रताल

वाजारकी मीठाइ आदि नहीं खाना चाहिये । चा काफी आइसक्रीम बारबत गुल्फ्री वगैरह बध करना । दूध मखन, जब वाजरी कुल्ही गुंग मठ मेशीदाना चौलाइकी भाजी मेशीकी भाजी वेगन करेला तुरिया दूध आदि खाना । जहां तक बन सके बिना शक्कर डाला अगर धारोण दूध उयादा पिना चाहिये शेकेरीनका उपयोग करना । नहि यह चीज एक प्रकारका विष है । शेकेरीन हृदय दिमाग आते फुफफुस मूत्राशय आदि अवयवोंको बढा नुस्सान पहुंचाता है । और बहुत वर्षोंतक इसका उपयोग करनेवालोंका हृदय बढ हो जानेका किस्सा बनता हैं । तृषा लगे जब बरफका पानी नहीं पीना लेकिन एक मिट्टीकी काली हंचीमें पानी डालकर उसमें नीमकी छाल या बाला आदि डालकर वह पानी पीते रहना ।

भिन्न भिन्न प्रकारके प्रमेह रोग पर गुणकारी औषधें

संद्रप्रभा—बावची बच मोथ चिरायता गिलोय देवदार इलदी दाहइलदी पीपलीमूल चित्रक धनीया हरद बहेडा आंवला चवक बामबिडगः गजपीपल सोंठ पीपल काली मिरच सुवर्ण माक्षिक जवाखार सजीखार सेबानेन सचळ पानकी प्रत्येक चार तोला । निसेध इतीमूल तमात्पत्र सज एलायची वशळेचन प्रत्येक सोल सोल तोला । लेह भस्म ३२ तोला । शक्कर ६४ तोला शिलाजित १२८ तोला शुद्ध गुणळ १२८ तोला सब विधिवत् मिलाकर तीन तीन रत्तीकी गोली बनाना । मात्रा २ से ६ गोली पानीके साथ देना । एक प्रकारके प्रमेहमें गुणकारी है । विशेषमें लाला मेहमें अधिक फायदा करती है । इसके अलावा मूत्राशय पथरी वृषणवृद्धि, अंडवृद्धि, अंत्रवृद्धि पांडु कामला मलाबरोध बवाधीर तिल्ली भगदर ओरतेके ऋतुदोष पुरुषोंके वीर्यदोषमें उत्तम गुण करती है और सामान्य पौष्टिक है ।

प्रमेहारि घटी—शातावरी कमलबीजकी गोरी इलायची काली मुसली कपित्थ (कोठ) के फलका गर्भ सफेद मुसली पुनर्नवा मूल रोहिष तृण के मूल अजमोद और इलदी प्रत्येक पांच पांच तोला, काली मिरच चीनी काला नागकेसर प्रत्येक एक एक तोला असगंध ४ तो लेहभस्म ५ तो, गिलोय ५ तो, शक्कर गुणळ शिलाजित इगुदी (इगोरिया के फलका गर्भ) प्रत्येक दश दश तोला सब साथ मिलाकर कपित्थ के पानके रसमें ३ रत्तीकी गोली बनाना । ३ से ६ गोली पानीके साथ देनेसे लाला मेह और अन्य कफ प्रधान प्रमेह मिटता है ।

भीम पराक्रम दस्त—पारद तो. ८, गंधक तोला ८ नागभस्म तो. २, मिलाकर पपटी तरह पकाना । पीछे पीस कर उसमें अभ्रक भस्म लेह भस्म

नाजावत' भस्म शीलाजीत निम'फलीके गम'प्रत्येक दो दो तोला मिलाकर गुंजामूल कपित्थके पान नीमके पान प्रत्येकका रसकी एक एक भावना देकर पीछे त्रिफलाके क्वाथकी सात भावना देना । पीछे लज्जालुका पंचांग और बन्बुलके गुंद दोनों समभाग कूटकर ५० तोला उपरके औषधमें मिला देना । मात्रा ६ से १२ रत्ती रातवासी पानीके साथ देना । घान्द्र मेह पर उत्तम गुण करता है और दूसरे प्रमेह रोगमें घातुसावमें ओरतोंके सोमरोग रक्त प्रदर और सफेद लावमें उत्तम गुणकारी है ।

हरिश्चंकर रस—रसविंदुर और अन्नक भस्म समभाग लेकर और पके चुये हरे आंवलेकी सात भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाना । १ से २ गोली घ्यवनप्राश जीवनके साथ देना । यह पिष्ट मेहमें अधिक गुणकारी है और दूसरे प्रमेहमें दिया जाता है ।

बगेश्वर लघु—बगमस्म श्वेत रसविंदुर शुद्ध गवक्ष प्रत्येक १०-१० तोला । शोमलका गोद बन्बुलका गोद शोमलके मूल बलावीज चौकनी सुगरी अन्नक भस्म प्रत्येक ५ तोला लेकर कूट कर विधिवत् मिलाकर घीस्वारके रसकी और गिलेयके रसकी एक एक भावना देना । मात्रा ३ से ६ रत्ती पानीके साथ देना । पिष्टमेहमें उत्तम गुणकारी है । इसके अलावा बहुमूत्र मधुमेह घातुसाव प्रदरमें गुणकारी है और शक्ती प्रद है ।

बगेश्वर बृहद् (महा बगेश्वर)—(स्वर्णयुक्त) शुद्ध पारद तो १० में सेनांका बल तो. १ मिलाना । पीछे उसमें गंधक तो. १० चालकर कज्जली कर पपंटीकी तरह पकाकर छोटना । पीछे उसमें बंग भस्म तो. ५ और डेह भस्म अन्नक भस्म मुक्ता पिष्टि प्रवाल पिष्टि बन्बुलका गोद शोमलका गोद चीनीकवाला एलायची शोमलके मूल प्रत्येक ढाढ़ ढाढ़ तोला मिलाकर केलीके कंदके रसकी एक भावना दे कर सूखजाने पर उसमें सीमसेनी कपूर तोला ढाढ़ और जायपत्री (जावंत्री) तोला ढाढ़ मिलाकर छोटकर रखना मात्रा ३ से ६ रत्ती पानीसे देना । यह शुक्रमेह में उत्तम गुणकारी हैं । इसके अलावा सब प्रकारका प्रमेह मधुमेह बहुमूत्र ओरतोंके श्वेत रक्त प्रदर आदि में गुणकर्ता है और पौष्टिक है ।

गुगुल घटो—गुगुलमें गोद जौंशी पीली चमकती कणिकाया चुनकर शेर १ देना । पीछे उसमें घड़जनेका पान सहजुर (शेदुर) के पान चमेलीके पान मोगरा के पान बिम्बापरका पान देशी चायका पान और गुलर (उड़ुवर-उमरो) के पान

प्रत्येक एक एक शेर लेकर सब पानीको साथ मिलाकर भयङ्कर कूटकर पानीका चूनी आधा नीचे ढ़ककर उपर गुगल रखना और गुगल के उपर बचा हुआ आधा पान दाब देना । पीछे हँदीका मुत्र मिट्टीसे बँध करके हँदीके चुन्नी पर चूढ़ाकर तिलका तेलका दीया हँदीके नीचे देना । एक शेर तेल जल जाम जब हँदीका बारह घंटा स्वागशीत होने देना । पीछे खोलकर हँदीके सब चीज निकाल कर पीसकर चार से पाँच रत्तीकी गोली पानीसे बनाना । चार से छ गेली गायके घी के साथ देनेसे शुक्रमेह धागुलाव और अन्य प्रमेह मिटता है और शीतल आती है ।

वृक्षत तिलक रस—लोह भस्म, बंगभस्म, सुवर्णभस्म, अभ्रक भस्म, रौप्य भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, प्रवालपिष्ट, मुक्तापिष्ट, प्रत्येक चार चार तोला तज तमालपत्र इलायची नागकेशर प्रत्येक १०-१० तोला सब साथ मिला कर त्रिफलाके कषायकी भावना देकर सूख जाने पर उसमें जायफल चार तोला और जावत्री चार तोला डालकर कूटकर घोटकर रखना । मात्रा ३ से ६ रत्ती शहद या दुध के साथ देना । यह वालुका मेह-सिकता मेहमे उत्तम है । इसके अलावा दूसरे सब प्रकारके प्रमेहमें मधुमेहमें यह मूत्रमें श्वेत रक्त प्रदरमें दिया जाता है और पौष्टिक है ।

प्रमेहांतक वटी—शुद्ध द्विगुल केशर लोह जायफल चीनीकावाला काली मिरच इलायची अफीम अकलकुरा सब समभाग लेकर नागरदेव के पान के रसमें रत्ती प्रमाण गोली बनाना । एक से तीन गोली पानी या शहदसे देना । यह सिक्ता मेह वालुका मेहमे अधिक गुणकारी है और दूसरे प्रमेहमें भी हो जाती है ।

मस्तकयात्री—हमी भरतकी तज जावत्री सफ़ेद मुगली काली मुगली और पेंपली मूल प्रत्येक दो दो तोला और अजवण आठो मिलाकर १६ तोला केसर १ तोला पंजाबी शालम अथवा सफ़ाकूल मिश्री ४ तोला सब साथ विघिवत् मिलाकर कपटछान कर रखना । मात्रा ३ से ४ मासा पानी या शहदसे १४ दिन तक देने से सिक्तामेह और अन्य प्रमेह रोग मिटते हैं । खट्टा खारा तीखा पदार्थ औषध चालू हो जब तक नहीं खाना स्वप्नमे या अन्य रीते से शुकपात होता हो उसमें भी यहा दवा फायदा करती है ।

इन्द्र वटी—रसविदुर बंग भस्म अभ्रमंतककी छाल शक्कर सब समान भाग मिलाकर सेमल के मूल के रसमें घोट कर रत्ती प्रमाण गोली बनाना ।

२ से ४ गेलो पानी के साथ देनेसे उदक मेह बहुत सूख और अन्य प्रमेह में गुणकारी है ।

शुक्रमातृका चटो—पारद गंधक अम्रक भस्म लेह भस्म प्रत्येक चार चार तोला, गोखरू हरद यहैदा आमली तैमाल पत्र इलायची रसौत घनिया चवक जीरा तालीस पंजा टंकण अनारकी छाल प्रत्येक दो दो तोला, गायकां धी ५ तोला सब साथ विधिवत मिलाकर बकरी के दूध में २ रती प्रमाण गोली बनाना । २ से ४ गेलो पानी या अनार के रस के साथ अथवा बकरी के दुध के साथ देना । बहुमूत्र आदी प्रमेह रोगमें उत्तम गुणकारी है ।

रक्तमेहांतक रस—शुद्ध पारद गंधक वंगभस्म यशद भस्म रौप्य भस्म मुक्ता पिष्ट वशलोचन प्रत्येक दो दो तोला, प्रवाल पिष्ट ८ तोला, सब साथ मिलाकर केलीका कंद शतावरी रजालु रक्षित चिरौजी (गुंजा) की पत्ती प्रत्येककी एक एक भावना देकर तीन रत्तकी गेली बनाना । २ से ३ गेली पानीसे देकर उपर पके हुये हरे अंजीर पांच दश खिलाना वह न मिले तो सूखे अंजीरको बारह घंटा पानीमें भिगो कर मर्दन कर उसका रस पिलाना अथवा गुदर के पके हुए फल पांच दश खिलाना इस फलमें जल न हो यह देख लेना ।

महा वसंत कुसुमाकर

द्वौ भागौ ऐमभूतेश्च गगनं चापि तत्समम् ॥

लोहभस्म त्रयो भागाश्चत्वारो रसभस्मनः ॥१॥

वृद्धभस्म त्रिभागं स्यात्सर्वमेकत्र मदयेत् ॥

प्रवाल मौक्तिक चैव रत्नसाम्येन दापयेत् ॥२॥

भावनां गव्यदुग्धेन रसौष्ठुवाटरूपकः ॥

हारिद्रावारिणा चैव मोचकन्दुरस्त्रेन च ॥३॥

शतपत्ररस्त्रेनापि मालत्याः स्वरस्त्रेन च ॥

छायया क्षोपयेत्पश्चात्तुलस्या रसमाधितः ॥४॥

कर्पूरस्य स कस्तूर्या भागैकैक विनिक्षिपेत् ॥

संमिश्र्य मददपेत्स्त्रये दिनेक द्वादशमुष्टिना ॥५॥

सिद्धः सर्वरोगेषूक्तो वसंत कुसुमाकरः ॥

गुंजाद्वयं वदीतास्य मधुना सर्वमेहमुत् ॥६॥

वृष्यो बल्यो वृंहणश्च कामसंजीवन परः ॥

नानानुपानमेदेन सर्व रोगापहस्समृतः ॥७॥

महा वसंतकुसुमाकर—सुवर्ण मसम २ तो, अन्नक मसम २ ठोला
 डोहमस ३ तो, स्वविदूर ४ तो, बंम मसम तो, ३ प्रवालपिष्ट तो ४ मुक्ता
 पिष्ट तो, ४ सब विधिवत मिलाकर गायके दूधकी अड़घोके रसकी हल्दीके क्वथनकी
 अथवा हरी हल्दीके रसकी केलीके कंदके रसकी गुलाबके फूलके रसकी चनेलीके
 और तुलसीके रसकी एक एक भावना देकर सुख जानेपर सीमसेनी कपूर १ तो,
 और कस्तुरी १ तोला डालकर घोटकर रखना यह सब रोगों में उत्तम गुणकारी हैं ।
 मात्रा २ रती शहरसे देनेसे माजिष्ठ मेह अर्थात् जलनवाला प्रमेह व्रण प्रमेह
 मिटता है और सब प्रकारके प्रमेहमें उत्तम गुणकारी है । भिन्न भिन्न अनुपानसे
 सब रोगोंमें भी दिया जाता है वृष्य बल्य वृहण और कामोत्तेजक है ।

वसंत कुसुमाकर—सुवर्ण मसम तो, १, रौप्य मसम तो, ४, बंग
 मसम तो ६, नाग मसम तो, ३ डोह मसम तो, ३, स्वविदूर तो, ६ प्रवालपिष्ट
 तो, ६ मुक्तापिष्ट तो, ६ बौकान्त पिष्ट तो, ४ सुवर्णमाक्षिक मसम लाल तो, ६
 विशरी कद ४ तो, शिमलका गोंद ४ तो, केळकद ४ तो, अड़सी कंद तो, ४ हल्दी
 ४ तो, कपळ कंद ४ तो सफेद मुसली ४ तो, गुलाबके फूल तो, ४ चनेलीके
 फूल ४ तो, तुलसीके बीज तो, ४ सब साथ कूटकर गायके दूधकी भावना देकर
 सुखाकर उसमें सुख जाने पर जायफल तो ४ सीमसेनी कपूर तो, ८ जावत्री
 तो ४ डोंग तो, ४ कस्तुरी तो, १ मिलाकर घोटकर कपडछान कर रख छोडना ।
 मात्रा ३ से ६ रती शहर घृत या मखनसे देना सब प्रकारके प्रमेह स्वेत
 रक्त प्रर सोमरोग धातुक्षीणता हृदयरोग कमजोरीमें उत्तम गुणकारी है । क्षयरोग
 फुफफुसके रोगमें गुणकारी हैं । वृष्य पौष्टिक और शक्तिप्रद है ।

सारिखादि अवलेह—सारिखा नागरमोथ डोम्र बडकी अतरछाल पीपल
 (अमरुथ)की अतरछाल नीमकी अंतरछाल कचूरा अनंत मूल पद्मकाष्ठ वाला पाठा
 आवलां गिडोय चंदन रसोत अजमेद कूटकी तमालपत्र मजीठ डाकके फूल मीठी-
 आवल हरड प्रत्येक १६-१६ तो, द्राक्ष १२० तो पानी दो मन डालकर पकान
 आधा रहेने पर कपडछान कर गुड मण एक डालकर फिर पकाना षट् हेने पर
 इलायची कुछ हल्दी सेठ पीपल कालीमिरच तमालपत्र डोंग नागकेशर वायविडंग
 लताकरंज बीज प्रत्येक ८-८ तोला डालकर अवलेह जैसा हेने पर रंगशीत हेने
 देना । सब प्रकारके प्रमेहमें २ से ४ तोला दिया जाता है । खूनके बिगाडमें
 चांदी उपदंश भगदर प्रमेह पीडिका में उत्तम गुणकारी है ।

धातुपौष्टिक अवलेह—अमरुथ तो, २ पीपल तो, ५, जायफल जावत्री
 अकलकरा टकण विंगरफ काली तुलसीके बीज कसुंभाका बीज बलाका बीज इसपन

कनकबीज कमल बीजकी गोरी लोण इलायची असंगंध नागरमोथ समुद्रशोष के बीज अजमोथ भारगी क'ला तज प्रिय गु' चीनीकडाला प्रत्येक तोला पांच पांच, काली मिरच तोला ०॥, केसर ता १॥, सेनिका वख' तो ॥', अफीम तो १, माल-कांगनी तो ०॥, क्षणक धौज तो १॥, लेवानके फुल तो ०॥ कस्तुरी रती ९, चांदीना वख तो ०॥', गोखर तो १०, कौबच तो १०, सफेद मुसल तो १०, सोंठ तो ५ बन्बुलका गोद तो १, पूर्णचंद्रोदय तो २, सब' ओषधीका कूटकर कण्डछान कर दून पकका शेर १० में डालकर पकाना । घट हो जाय जब खांड पकका शेर २० का चासणी कर उसमें डाल देना और फिर धीमी आंचसे पकाना । चाटन जैसा हो जाय जब उतारकर ठंडा होने देना । इसमें कस्तुरी केशर लेवानक फूल और जायफल जायत्री तज सेनारुगाका वक' डानी च'जे अबलेह ठंडा होनेके पीछे डालकर हिलाना । माशा १ से २ तोला, खट्टा पदार्थ और अचार लाल मिरच बंध करना । १८ प्रकारका प्रमेह, ११ प्रकार के घातुविकार गर्भाशयके रोग प्रद आदि मिटे । बल पराक्रम बढे शक्ति अवे, मूत्र रने अन्न पाचन हो । यह कामोत्तेजक और पोष्टिक अबलेह है । यह खानेके पीछे पानकी पट्टी एक दो खिलाना खुराकमे दूरी और मिथुन पदार्थ खिलाना नहि ।

बहु मूत्रांतक रस—रसविद्व' लाहमरस बगमरस उधालपेष्टि मुष्ठापिष्टे अफीम शेमलक मूल केलका कद जौठ गुलर (जौठा उंधरी) ५१ मूल सब समभाग मिलाय, चमेलीके पंचांग के रसकी भावना देकर घोट रखना मात्रा २ से ४ रत्ती पानीसे देना । बहुत दफे पिशाब होना मधुमेह अन्य प्रमेह प्रर ऋतुदोष मिटना है शक्तिप्रद है । निद्रामें विशास होता हो मिटता ।

प्रमेह कुलतिका वटी—ताम्रमरस अभ्रक मरस पाण्ड गंधक प्रत्येक पांच पांच तोला कदली कद नागकेशर कवारपाठा का मूल श्वेत कनेरका मूल प्रत्येक छह छह तोला, आंकेके फल दुधिया हिमकद अरुलकरा उकंटक मूल सफेद बछनाग जायफल जायत्री बहुफलो, सफेद और काली, मुसली गोखर बलबीज लोण इलायची अजमेद प्रत्येक सात सात तोला अफीम चार तो और भीमसेनी कपूर तोला ५ सब साथ मिलाय पानीमे रती प्रमाण गोलो बनाना । ३ से ४ गोलो दिनमें दो दफे पानीसे देना । सब प्रकारका प्रमेह मूत्र रोग स्त्रियोंका ऋतु दोष मिटता है ।

कामघेनु रस—रसविद्व' अभ्रक नाग माक्षिक यशद रौप्य प्रत्येकको भरम दश दश तोला लेकर कदली कदके रसकी भावना देकर सूखजाने पर भीमसेनी कपूर तोला ५ मिला देना । मात्रा ३ से ४ रत्ती पानीके साथ देनेसे शुक्रमेह यशमेह प्रदर जीर्ण उग्र और हृदय रोगमे गुणकारी है और शक्तिप्रद पोष्टिक है ।

मालती कुसुमाकर—सुवर्ण भस्म १ तो. रससिद्ध तो. २, बंग भस्म नाग भस्म और लेह भस्म, प्रत्येक तीन तीन तोला, अन्नक भस्म प्रवाल पिष्टि मुष्कापिष्टि प्रत्येक चार चार तोला सब विधिवत् साथ मिलाकर गायका दूध कदली कदका रस इखका रस कमल फूलका रस और पके हुवे अजीरकी रस प्रत्येककी एक एक भावना देकर सूखाकर घोटकर रखना । मात्रा २ से ४ रत्ती गहद मद्धन या पानीसे देना । सब प्रकारके वातप्रमेह वसामेह शुक्रमेह मधुमेह श्वेतमेह प्रदर गर्भाशयके विकार भिद्यता है और गर्भाशय गर्भधानके योग्य बनता है । इसके सेवनसे हृदय बलवान होता है । छाय, कुफकुवके रोग, खाँसी, दर्मा इनमें भी गुणकारी है ।

महाभ्रष्टी दृहत्—अन्नकभस्म, तोला १०, पारद गंधक लेहभस्म सुवर्ण भस्म, प्रत्येक तोला पाँच सको भांगरा क रसकी २१ भावना देना और त्रिक्ताके कषाथकी एक भावना देकर रती प्रमाण गेली बनाना । २ से ३ गोलो पानी मधु या मद्धन के साथ देना । सुवर्ण भस्मके द्यानमें स्वर्ण माक्षिक भस्म डालनेसे महाभ्रष्टी लघु बनती है / गुण लिखे हुए है । सब प्रकारके प्रमेहमें मात्रिष्ठ मेह जलनवाला प्रमेह सूत्र नलामे व्रग दोह में गुणकारी है । सुवर्ण भस्मके द्यानमें सुवर्ण माक्षिक भस्म डालनेसे महाभ्रष्टी लघु बनती है । गुण मात्रा लिखे हुए है ।

मधुमेहार् चूर्ण—जामुनके बीज तो. ११, कलोजी जीरा ७ तो. आबला तो. ५, हरडे तो. ५, नजीष्ट तो. ५, गोखरु तो. २० लोंडी पीरर दो. २०, चाय कूटक चूर्ण बनाना । २ से ४ माशा भोजनंतर पानीसे देना । २१ दिनतक देनेसे मधुमेहमें बहुत फायदा होता है । दर्द पुराना होता तो एक दो महीनों तक सेवन करना ।

चन्द्र कांति गुटी—इलायची भीमसेनी कपूर शक्कर जायफल गोखरु सेमलके मूलके रसकी एक एक भावना देकर २ रत्तीकी गोली बनाना । २ से ३ गोली प्रमेहमें देना ।

शतावर्षादि चूर्ण—शतावरी सफेद मुशली कांठा (कपित्थके फल)का गर्भ पुनर्वा नागगवा अजोत्र हीरावेल पाषाण मेद इलायची नागकेशर अक्षर प्रिय गु (घडंटे) लेहभस्म अन्नकभस्म गिलोयका सत्त्व और शक्कर सब समभाग लेकर कपडछान कर रखना । मात्रा ०१ से ०॥ तोला पानीके साथ देनेसे प्रमेहके रोगमें उत्तम गुणकारी है और पौष्टिक है ।

धातु पौष्टिक गुटिका—अमोद कांठी मुशली सफेद मुशली गोखरु अक्षर मोठ पीपल काली मीरच तज शिलारस रुमी मस्तकी जावत्री जायफल डोंग धलवीज तालमखाना केशर भौवचके बीजकी गीरी इलायची बदामकी

औरी प्रत्येक तोला पाँच पाँच, फस्तूरी रती १५, चांदीका दख तो. ११, झीलाजीत तो ५ लेपानका फूल तो. ११॥ गिलेयका सत्त्व तो १॥ सब साथ मिलाकर तर तांबूलके रसमें देा रत्तोकी गोली बनाना । मात्रा २ से ३ गोली सुबह और शाम दूधसे रना । और उपर दूध पिलाना । खुगकमे दूधकी चीजे मिष्टान्न पदार्थ खिलाना और पान्चीदा खाना । सब प्रकारके प्रमेह वायु खोटी गरमी भीटे । शरीर पुष्ट हो भूख लगे कांति बल बढे ।

गोधुरादि अवलेह—दूरे गोखरुका पंचांग तोला ४०० को कुचल कर उसमें द्वजय उतना पानी ढालकर १५ घंटा भिगो रखना । पीछे खुब मसल कर कपडछान कर उसमें असन (आजनीयो वीयो विजयसार) की छाल चारोली खेरसर र मोठ पीपल कालीमीरच हरद बाइके फूल मूलेठीका भूल गिलेय इलायची नागकेशर तज आवंथी वंशलेचन आंसेधरो सोमलका मूल गिलेय मजीठ आगेथू (अस्त्य-अगनीयो)का फूल यज्जूका गोद बला वींग तुलसीवींग इन्दी आवला अतीव नागमोय वींगीगम कचूरा कपूरकवरी कसौदी प्रत्येक दस दस तोला शतावरी तोला २० असगव तोला १५ गोखरु चूर्ण तोला ३० सबको कपडछान कर प्रवाहीमें मिलाकर पकाना घट्टेहोनेपर शक्कर रतल ८० अक्षी की चाखणी कर उसमें उपरका मिश्रण ढालकर पकाना च टने जघा हो जानेसे स्वांगशीत होने देना । पीछे रांगलगाये बरतनमें भरना । मात्रा २ से ४ तोला खिलानेसे सब प्रमेह श्वेत रक्त प्रसर गर्भाशयके रोग आदि मीटता है शक्तिप्रद पौष्टिक है ।

मस्तक्यादि चूर्ण—रुमीमस्तकी बहुफली गिलेयसत्त्व गोखरु वटीजाण इंग्रजी चीनीकवाला सफेद मुधली वाली मुधली कौचा तालमखाना सब समान लेकर कूटकर मात्रा ३ से ६ मासा पानीसे वेनेसे वीर्यसाव ध तुलाव शुक्रमेह मिटे ।

खदनासध—चदनका चूरा तो. ४०, वाला, नागरमोथ, महाभला मूल कमल कद प्रियशु लेप प्रकाश मजीठ रक्तवदन पाठा विरायता वडकी छाल पीपलकी छाल कचूरा पाण्ट मुलेठी रास्ना परवल बावनार आमकी छाल मोचरस प्रत्येक चार चार तोला सब कूटकर एक चिनाइ मिट्टिके बरतनमें भर ढाल उसमें पान रतल २०० ढांसे और शक्कर रतल २५ पचीस ढाकके फूल तो, ६० कालीप्रक्ष तो २००, कूटकर ढालना । आठ आठ दिनके पीछे हिलावे रहना । २ महिनेके बाद कपडछान कर रखना । सब प्रकारके प्रमेह श्वेत रक्त प्रसर और खूनो बगसीर किसी भी स्थानसे मुखसे या दस्तमें गिरता हुआ रक्त और पित्तप्रधान रोगोंमें फायदा करता है ।

देवकुसुमादि पाक—गायका दूध पक्का हो १६ से मलमलके कड़ेको ढोली पोडली (घेली) में लोंग तो. २० ढालकर थेलीका मुख धागेसे बंध कर दे और दूधमे ढालकर दूधको पकाना । अच्छा तरह गाढ़ा हो जाय जब थेली नीका लें। पीछे दूधका भावा बनाकर वीर्य पकाना । पीछे बादामकी गीरी तो. ८० कूटकर मोला देना और मल वीर्यकी गीरी तो ५, सफेद चंदन चूरा तो. १॥ केशर तो १, कपूर तो ०॥, अगर तो. १॥, चन्दन तो. १॥, लेह भस्म तो. ५ वंग भस्म तो ५ ढालकर शक्कर पक्का हो. ४ चासणों करके उपरकी सब छोले उसमें मिलाकर दो तीन तोलेका गूड़ बनाना अथवा परतनमें जमाकर चकते बनाया हमेशा २ से ४ तो. यह पाक खाकर उपर दूध पीना । सब प्रकारके प्रमेह वातरोग मिटते हैं । बल क्षान्ति शक्ती बढ़ती है पौष्टिक है ।

पौष्टिक आयो—जायफल जावत्री लोंग इलायची इम्रजव दूधोया वच लेहभस्म तगर अगर सफेद चंदन वंशलोचन तपखीर रक्त चन्दन प्रत्येक तो. ढाढ़ ढाढ़ । दस्तूरी रती २१ भीमसेनी कपूर तो १। बादामकी गीरी तो ५ कीसमीस हो २।, सब कूटकर मोलाकर पीछे उसमें पीसो हुई खाद शेर २॥ बी शेर ५ मोलाकर चीनाइ मीशोके बरतनमें रख मुख बंध कर ७ दिन तक गेहू की धोलीमें रखना । पीछे निकाल कर २ से ४ तोला खिलाना । उपर दूध पीना । प्रमेह धातु जाव पीटे स्तभन हो । बल शक्ति बढ़े । सब प्रकारके प्रमेह गुणकारी है ।

सामान्य उपाय

१ दूधकी पत्ती दुधीक्षुरके पचांग सेनागेह खुराखार समभाग कूट २ के ३ मास पानीसे सब प्रमेहमे दना ।

२ हीरवर्णी कपास के पान का रस तो. ५ मे शक्कर ढाल पिलाना प्रमेह वीर्य दोषमे लाभ हो ।

३ काळे तिल तो. ४ कूटकर गुडके साथ खिलना १४ । दिन खिलानेसे निंदमें होता हुआ पिशाव पद हो ।

४ तालमखाना तो १, वटीगण तो. १॥, कालीमुखकी तो २॥ सफेद मुखकी तो २॥ शक्कर तो ५ सब साथ कूट ४ से ८ मास पानीसे देना बहुभूत्र रोग मिटे ।

५ नदीका सेबाल लाकर सुखाकर कूट कर चूण करना २ से ४ मासामे शक्कर तो १ मिलाय पानीके साथ देनेसे ३ दिनमें बहुत रफे होता हुआ पिशाव मिटे ।

६ हलदी दाढ़हलसी हरद बड़ेबी औरली समभाग कूटना आषा तो, चूणमें

१० तो, पानी २ तो, शहद डाल रातको भिंगो रखना प्रातःकाल कपडछान कर पिलाना । ७ दिनमें सांद्र मेह मिटे ।

७ मैदा लक्ष्मीके कूट कपडछान कर २ से ४ मासा दुधके साथ देनेसे पिशाचमे निद्रामे स्वप्नाने होता हुआ नीय छाव बंद होता है ।

८ सडीदुधेली और ओटीगण समभाग कूट कर बेना के समान पाककर मिलाकर ४ से ८ मासा पानीसे देनेसे रक्त प्रमेह मिटे ।

९ लड्डाके पान तो ०॥ नागकेशरका चूर्ण तो, ०॥ और शक्कर तो, १ मिलाकर पानीसे देना ७ से १४ दिनमें पिशाचके साथ गिरता रक्त अटके गरमीका प्रमेह मिटे ।

१० पुष्पिकेगान अनारकेपान मैदीके पान प्रत्येक चार चार तोला लेकर कूटकर मिट्टिके छोट्टामे रखना उसमें पानी तो, ४० डाल छोटका पर कौहिया डककर अगशीमे रातपर रखना प्रातःकालमे पानी कपडछान कर उसमें शक्कर तो, २ डालकर पिलाना गरमीका प्रमेह मिटे ।

११ गोखर तो, २ कूटकर मिट्टिके बर्तनमें डाल उसमें पानी तो, २० डाल अगशीमे रखना प्रातःकालको कपडछान कर शक्कर मिलाकर पिला देना । ७ दिनमे रक्तमेह गरमीका प्रमेह मिटे ।

१२ सोगखार कलमी से २ रेवंचीशीरा तो, ०॥ चीनीकवाला इलायची जीरा सांड प्रत्येक एक एक तो कूट कर १४ पुडि बनाना हमेशा १ पुष्प पानीसे देना पिशाचकी जलन मिटे, पिशाच साफ आवे ।

१३ वग भस्म ६ रत्ती त्रिकला ८१ तो मिलाव पानीसे देना ।

१४ इच्छूलके पके फल (बावल्का पडीया) तो ४ पीप शक्कर तो, ४ मिलाव पिलाना १४ दिनमें प्रमेह मिटे ।

१५ रसेत टोला २ गुलाब जल तो, ४० साथ मिक्काया कपडछान कर शिश्नमे पिचकनी देनेसे दाह जलन मिट अंदर की चाँदी भीटे ।

१६ शेष गुदर वग भस्म सीगोडा प्रत्येक तोला ११, शीलाजित तो ०॥ साथ मिलाव ६ से ८ रत्ती पानीसे देना सब प्रमेह मिटे ।

१७ हीर बोल हाली खान्खार कूटकी अरणी पंचांगका भस्म समभाग कूटकर ३ से ६ मासा गांधके बछ्छेके मूत्रसे पिलानेसे १८ प्रकारके प्रमेह भीटे ।

१८ चमेलीका पंचांग और त्रिफला समभाग कूटकर १५ से २० साला के रसे २ छोटा पानी डाल रातको भिंगो रखना प्रातःकाल एक बरतनमे वह प्रवाही भर उसमे शिश्न और वृषणको डूबो देना । अंदरका जलन दाह मिटता है और अंदर के व्रण चाँदा रह जाता है ।

१९ बच्चुलका गोद तोड़ा १ का पानी कर उसमें १ से २ मासा जवाहार डालकर पिलाना । पिशाचकी जलन पित्त प्रमेह में लाभ होता है ७ दिन तक पिलाना ।

२० भांगका पान छाया में सुखाकर धोतकर रखना । मात्रा ३ से ६ मासा गायके घी के साथ देनेसे पित्त गर्मीका प्रमेह मिटता है ।

२१ तालखाना कूटकर तो ०॥ के पानी १० तोलामें डालकर उसमें शक्कर तो २॥ और अण्ड की लकड़ी चूँडन की तरह प्रायः ६ से ८ रत्ती घी और उसमें मिला पिला देना । इस प्रकार ७ से १४ दिन तक देनेसे सब प्रकारका प्रमेह मिटता है ।

२२—पाषाणमेद जवाहार इलायची सेठ हरद बहेरा आलू और पुराना शुद्ध सब समान भाग लेकर ८ रत्तीकी गोली बनाना । ३ से ४ गोली दिनमें दो बार देने से सब प्रकारके प्रमेहमें फायदा होता है ।

२३ उतकटकका पचांग सुखाकर महीन पीसना । इस चूर्ण तीनमें चार मासामें आधा तोला शक्कर मिलाकर दूधके साथ देना । बहुत दफे लेना हुवा पिशाच मिटे ।

२४ शेमलका गोद तोड़ा १९ जायफल तो १२ पानीमें पीस कर ६ रत्तीकी गोली बनाना । ३ से ६ गोली पानीके साथ देनेसे २१ दिनमें प्रमेह मीटे । यह गोली कामोदक और पौष्टिक है ।

२५ मनशी में बनायी हुयी नाग मर्म, सेठ पिपल जायफल और जावत्री सब सम भागमें मिलाकर शहदमें गोली २ रत्तीकी बनाना । दिनमें दो के दो गोली पानीके साथ देनेसे प्रमेह रोगमें उत्तम फायदा होता है ।

२६ हातावरीका चूण और चनेका आटा समभाग मिलाकर उसका भजीयां तिलके तेलमें बनाकर तृप्ति पर्यंत खाना । दूसरा कोई खुराक नहि लेना । ३ से ७ दिन तक खिलानेसे प्रमेह मिटता है ।

२७ बडका टेड़ा (बडका पका हुवा फल) सुखाकर चूर्ण करना । १ से २ तोला चूर्णमें शक्कर मिलाकर पानीमें लेना । ७ से १४ दिनमें प्रमेह मिटता है ।

२८ बच्चुलका फूल छाया में सुखाकर चूर्ण करना । उसमें समभाग शक्कर मिलाकर रखना । मात्रा ०॥ तोला पानीके साथ देना सब प्रमेहमें उत्तम हैं ।

२९ भुइ दूधी (भूमिदुग्धका) जिसके छोटे पत्ते होते हैं और छाता जमीन पर फैलता है तोड़ने से दूध निकलता है उसको छाया में सुखाकर ५ तोला चूर्ण लेना, उसमें ५ तोला लाल चावल और ५ तोला शक्कर मिलाकर रखना मात्रा ०॥ से १ तोला पानीके साथ देने से ७ दिनमें प्रमेह मिटता है ।

३० जायफल तोला १ लोग तोला १ तज तो ५ नागकेशर पीठा तो. ५ चादामकी गीरी तो. ५ राल तोला ५ नीमकी नीमेलीकी गीरी तो, १ शकर तो, १० सब साथ कुट कर पानीमें ६ रत्तीकी गोली बनाना १ से २ गोली पानीके साथ देना प्रमेह मिटे ।

३१ गुलाबी रंगका खजूर १५ से १६ तोला हमेशा खिलाना । १४ दिन तक खिलानेसे प्रमेह मिटता है ।

३२ धालंमिरच तज चीनीकवाला खसखस प्रत्येक पांच पांच तोला भांगका चीज ४० तो नाग भस्म १ तो. सब साथ कुटकर ६ रत्तीकी गोली पानीसे बनाना २ से ४ गोली देना ७ दिनमें प्रमेह मिटता है ताकात आती है ।

३३ तालमराना तो. २० धौवचकी गीरी तो ५ ऊर्दोगण तो ०॥ काली मुशली तो. ५ खैरका गोद तो १ सब साथ कुटकर खांड शे ॥ और घी शेर २॥ सब साथ मिहाकर चीनाई माटीके बरतनमें रख छोड़ना । २ से ४ तोला खाना उपर दूध पीना । प्रमेह नपुंसकता मिटता है ताकात आती है ।

३४ रायगुदा (पका हुआ बड़ा गुदा) के बीजकी गीरी निकालकर शे, १ चाइका गोद शे, ०॥ (बावलीके गोद) भुईं दूधी शे. ०॥, तिलके पत्तेका चूर्ण शे. ०॥, शकर शे. १ सब साथ कुटकर उसमें गायका घी शे. ०॥ मिलाकर शहदसे गोली रत्ती ६ की नाना ४ से ८ गोली हमेशा खिलाना । खट्टा नमकीन पदार्थ बघ करना । १४ दिनमें प्रमेह मिटता है ।

३५ भांगरा बहुली वाडियो कलार (गेरखमुदी) प्रत्येक दश दश तोला, गोखर तो २ मुलौठी मूल तो २, वायविडंग तो ११, डलायची तो. ११, खैरका गोद तो ५, पापाणमेद तो २॥ शकर तो २०, सब साथ कुटकर रखना । ३ से १२ मासा पानीके साथ देना । उपर पोस्त के ढोडाका पानी पिलाना । आधा तोला पोस्त का ढोडा कुटकर उसमें एक से दो घप पानी डालकर रातको भिगे रखना और सुबह कपडछान कर इस चूर्णके उपर पिलाना ।

३६ सफेद मुशली पचाया हुआ टकण जावत्री लगभग कालीमिरच अकल कर सेंट अफीम समिपस्तकी ऊंटकटा लोत्रान सब समभाग लेकर कुटकर तांबूळ पत्र के रसमें ३ रत्तीकी गोली बनाना । २ से ४ गोली पानीके साथ देना । सब प्रमेहमें उत्तम फायदा होता है ।

३७ रगतपेदवाकी छाल तो ०॥ से १ के पीस कर उसमें शकर तो. २, डालकर १ से २ घप पानी मिलाकर पिलाना । उपर एक से दो लोटा रुचि हो इतनी छाछ पिलाना । दोसे तीन घटा पीछे एक दो जुलब लगेगा । खुराक खट्टा नमकीन तीखाना हो अथा खाना । ७ से २१ दिन तक देनेसे सा प्रमेह मिटता है ।

३८ कुष्ठ सफेद मुशली कौवच बीजकी गीरी आवलां सातावरी तालमखाना-
प्रत्येक दश दश तोला, शक्कर १२० टोला सब साथ कूटकर मिलाकर रखना ।
१ से २ तोला पानीके साथ देनेसे लाला मोह मिटता है ।

३९-जामुनकी गुठली गुडमारकी पत्ती और सोठ तीनों समभाग लेकर कपड
छान कर घी क्वारपाठाके रसमें मटर समान गोलों बनाना । दो से तीन गोले
भोजनके पीछे पानीसे देना । प्रधुमेह टायामोटीसमें बहुत फायदा होता है ।

४० बिल्व पत्र १ से १।। और तक पानीमें घड़न पिस कर रस निकालना ।
यह रस गाढ़ा चीकना निकलेगा । ५ से ८ तोला यह रस शर्करा ३ से ५ तोलामें
मिलाकर पिला देना । ४० दिन तक पिलानेसे प्रधुमेह मिट जाता है । यही
प्रयोग गलित-कुष्ठ वातरक्तमें भी बहुत फायदा करता है ।



नेत्र रोग-आंखोंके रोग

मनुजश्चक्षुरक्षी कुर्याद्यावच्च जीविताकांक्षा ॥

रात्रि दिनं तुल्यानामघानां निश्यतुल्यमिह विश्वम् ॥(१८)

बीनेकी आशा हो वहाँतक मनुष्य नेत्रकी रक्षाके लिये प्रयत्न करना रात और दिन समान हैं ऐसे अब मनुष्यों चाहे दूसरी बातसे सुखी होवे लेकिन आँख बिना जगत उन मनुष्योंको नर्क समान है ।

नेत्र रोगोंके सामान्य कारण

धूपमें फिरनेका अभ्यास, शीत जलमें अधिक स्नान करना पदार्थोंको स्थिर दृष्टिमें देखते रहना अतिशय मद्यपान, मलमूत्र और अधो वायुका वेग रोकना, बहुत सट्टा बहुत तीखा, बहुत गरम खुआक लेना औरामे सामनेका पवन लगना, अतिविषय, अतिक्रोध और अतिपक्व करना बारीक सूक्ष्म पदार्थ देखते रहनेकी आदत जैसे अनेक कारणोंसे नेत्रके रोग होते हैं ।

१ आँख उठना

कारण विन्ह—मिट्टीका तेल (केरे'सान) से पढ़ना, आँखोंमें धुआ लगना, धूपमें फिरना, आँखमें कुछ पदार्थकी चोट लगना, सूक्ष्म पदार्थ आँख में गिरना, गर्म चीज खाना, दूसरेकी उठो हुई आँखका चेर लगना, इत्यादि कारणोंसे और कोयला मसूरिका ताप आदि रोगोंके साथ यह दर्द होता है । जब आँखका सफेद भाग लाल हो जाता है और आँखमें सफेद कफ रुक हो कर ककर और रजकी तरह खटकत है, प्रकाश सहन नहि होता, आँखके पोपचा (आवरण) सूज जाते हैं ।

मुक्तादि अजन—(मेतीका सुआ) मुक्ता पिष्टि तो १॥ हलदी, पकाई फिटकरी लोघ्र काला खुआमा इलायची दाना यज्ञा भस्म, एरडतेलमें पकाई हुई छोटी हरड बड़ी हरड, प्रवाल पिष्टि प्रत्येक द्रव्य एक एक तोला, शुद्धखपर तोला २ छे टो पपल ०।, लोण तो. ०। सेांठ रती ११, शक्कर तो २।, सब साथ महीन पीस, कंठपछान कर अजन करना । आँखके बहुतसे रोगोंमें फयदा होता है ।

विमलांजन—शक्कर तो ४, छोटी हरड (हिमेज) कच्चा नग ४, चीनीक बाला के दाना १०, सेधानेन रती १२ सब साथ घोटकर अजन करना । आँख पर जमा हुआ खून, छारी फुला आदि मिटता है ।

आद्रोदया वर्ति—बड़ी हरड, बच छोटी पीपल, काली मिर्च, बहेडेके बीजकीगोरी, बाखनाभि, मैन्शील, समभाग घोटकर गायके घूमें सोण्ठी बनाना । पीपल कर अजन करनेसे आँख खुजली पड़ल भबुंद फूला, रूढ़ा हुआ मांसुरनीच और उठी हुई आँखमें अच्छा गुण करता है ।

प्रकीर्ण प्रयोग

१. हलदीको निबूके रसमें ४९ दिन तक रखना पीछे सूखा कर रख छोड़ना। आख आई हो जब पानीमें पीस कर अंजन करना।

२. शक्कर और लेप्ट दोनोंको महीन पीस कर रखना। सुमाकी तरह अंजन करना।

३. देवदारकी लकड़ीको बरुके पिशाबमें घीस कर अंजन करना।

४. नीमके पत्ते तोला १० और सेठ रती १२ साथ पीसकर आख आई हो उस पर पोटीस की तरह बांधना। आखके सब रोगमें लाभ होता है।

५. ऊटकी डाढकी गायके दूधसे पथर पर घीस कर अंजन करनेसे आखके बहुतसे रोग मिटते हैं।

६. समुद्र फळको अदीके तेलमें घीस कर अंजन करनेसे आख आई हो, खुजली आती हो उसमें फायदा होता है।

७. हल्दी बडो सौफ (वरियाळी), सौफ (सुवादाणा), शक्कर, लेप्ट, रसात, अफीम छोटी हरड (हिमेज), प्रत्येक एक एक तोला कूटकर रखना। इसमें से १ तोला चूणमें २० तोला पानी डालकर गरम करना। पीछे कपडेकी पोटीस उस पानीमें डूबा डूबा कर आख पर क पाकरना।

८. कुण्ठादि सोगठी नागरमेथ छोटी पोपल, अंखकी नाभि, नील येथा, हीराबोळ, खापरिया सब समभाग लेकर बारीक पीसना और निबूके रसकी भावना देकर सोगठी बनाना। गृहमें घीस कर अथवा औरतके दूधमें तानेके पात्रमें घीस कर अंजन करनेसे आखकी पीडा खटका जलन आदि मिटते हैं।

९. रसात लेप्ट, बडो हरड, सोनागे, हलदी समभाग लेकर निबूके रसमें महीन पीस कर सोगठी बनाना, पानीमें घीस कर आखके रोगोंमें अंजन किया जाता है।

१०. निर्मलीके बीजको महेंदीके रसमें घीस कर अंजन करनेसे आखको बहुतसे रोगोंमें फायदा होता है।

११. नेत्रशलाका—त्रिकला, भांगरा, अदरखका रस, घी, गौमुख बाहद और बकरीके दूध प्रत्येक रसमें पिघाला हुआ घीसाका एक एक-दफे बुझाना पीछे उसकी सलाइ बनाना यह सलाइ हमेशां सेती वस्तु आखमें फिरानेसे आखका तेज बढ़ता है और कोई रोग नहीं होता।

१२. मूलीका पान तो १० में ३ रती नमक मिला पीस पोटीस जेसा बनाकर कपडेमें रख आख पर पाटा बांधना। आख आई हो दो दिनमें मिटती है।

१३ बावोलु (Pustular Ophthalmia) आँख भाइ है। इस प्रकार जाल होती है। पानी गिरता है, प्रकाश सहन नहीं होता। कृष्णमण्डलकी किनारी पर छोटी-राय जैसी फुन्सीयाँ होती हैं। बहुत काले यह दोनों आँखोंमें होती है। कभी कृष्णमण्डलके उपर भी फुन्सीयाँ हो जातो हैं। कंठमालके रोगीको भी यह रोग हर वक़्त होता है। बच्चेमें ज्यादा होता है। बच्चे आँख पर हाथ रखता रहना है। खटका होता है। थोड़े दिनके पीछे यह फुन्सीयाँ कूट कर अच्छा हो जाता है।

१४. वेल्(Pterygium) यह रोग ३० सालकी उमरके पीछे के प्रनुष्योंको ज्यादा होता है। आँखका रसपटल एक के नसे मोटा (कुछ स्थान) हो कर स्नायुकी भाँड़ बढ़ता है और कृष्णमण्डलके उपर चढ़ता है इसे देल कहता है। यदि यह कीचड़ीके उपर आ जाय तो देख नहीं सकता।

१५ तपोडियाँ—खोल(granulations) आँखकी पाँपणके अवर(Lids) पोपचामें होता है। उपरका पोपचा उलटानेमें बारीक लाल दाना दिखाई देता है, वह छोटे खोल कहा जाता है। जब उसका रंग सफेद होता है। उसे सच्चे खोल कहते हैं जब आँख खोल उठी हो ऐसी लाल हो जाती है। सूजन आता है। प्रकाश सहन नहीं होता। खटका आता है। कृष्णमण्डलके उपर बारीक भूरे रंगका तपोडियाँ भी होता है। कभी लाल बारीक रेखाएँ फैली हुई दिखाई देती है। पाँपण (Eye-Lash) के खीलका डोलके साथ घर्षण होनेसे डोला मलिन दीखता है। दृष्टि टंका होती है। पाँपणके भाग पर सूजन होनेसे और जाल गिर जानेसे श्वेतमण्डल और कृष्ण मण्डलके साथ उसकी किनारी घीसती है और आँख छोटी और चूची होती है।

१६ आँख का चाँदो कृष्णमण्डलका सूजन होकर सफेद या पीला ढाँच पड़ता है और उसमें अल्सर अस होता है।

१७ कृष्णमण्डलका गड (Keratitis) बहारको कुछ छोटी बड़ी चीज आँखमें गिरनेसे आँख किसी भी कारणसे सिगदनेसे या अन्य कारणसे कृष्णमण्डल जाल हो जाता है। उस पर लाल रेखाएँ देखनेमें आती है। प्रकाश सहन नहीं होता। आँख कहते हैं। पोपचामें सूजन पीड़ा खटका होता है। कृष्णमण्डल निश्चयेन रेखा वाला होता है। कभी उस पर गड छोटी-प्रन्थो जैसा होता है। भाराम होनेके पीछे उस जगह फूला पड़ता है। कृष्णमण्डलके जाल १५ रसमें पूय होकर फूटता है और पूय उसमें जम जाय तो आँख बँठ जाती है अथवा गड-प्रन्थो जैसा भाग बहार निकलता है।

१८ फूला—अध्रग गुक कारण मंडलके त्वर चादा पदनेके पीछे अगर सूजन होनेके पीछे उस पर सफेद दाग रह जाता है। वह रायके दानेसे लेकर कभी कृष्णमंडल स्थितना भी बढा होता है। पीधमें रीकी त्वर आनेसे देखनेमें तकलीफ होती है।

१९ आंखका डैया-कारणचिह्न चादा अववा सूजनसे कृष्ण मंडल कूट जाता है अगर वह रुज जानेके पीछे अर्थात् रोपण होनेके पीछे बटने लगता है। वह बोरकी गुठलीकी तरह बाहर निकलना है और कठिन होकर बढता है। उससे पोडा नहीं होता। लेकिन वह जप बढता जाता है। तल पोडा होती है। मस्तक दुखता है। आसु बहते है। पापणे वष नहि होती।

१. मोतीया चिन्ह पटल तिमिर Cataract

कारण चिन्ह—आंखका जल रूप रस पारदर्शक होता है वह जब अपार दशक होता है उसे मोतीया कहते है। बहुत धरके ४० या ५० वर्षकी आयुके पीछे यह दद होता है। प्रमेद के रोपणसे अर्थात् लकडो कांटा सुइ आदि लंगनेसे या कमजोरीसे भी यह राण होता है। बच्चेका भी कभी यह राण होता है। अगुलियो न गिन सके वह मोतीया पदनेका चिन्ह है।

२ झामर वा (Glaucoma)—कारण चिन्ह—इस र्द में मस्तक पीडा होती होती है। पडा नहीं जाता। आंखमें छांव बढती जाती है। आंखका डोला कठिन और भारी होता है। आंखकी शिराओ खूनसे भरी हुई और फूली हुई भोखता है। रीकी मद और विवृत होती है। दियाक सामने देखनेसे आस-पास इन्द्र धनुष जैसा मंडल दीखता है। आंखको सप्तर नेन कपाल नम्रणामे दद शूल होता है। ये चिन्ह कमी दश जाता है और कभी ऐक वा महिनेके पीछे उभडता है। और यह समय धीरे-धीरे कम होकर एक दिन अण्ण पीडा उत्पन्न हो कर आंख चली जाती है। किसीको यह झामरवा जिरणी भर रहता है, मिट जाता है, फिर उभडता है। इस प्रकार चलते-डुबते और आंखका तेज कभी होता है। आंख वेडाल और फुका हो जाती है। पापणे कृष्ण मंडल पर घाम्ती रहनेसे उस पर सफेद-फूला जैसी घारी जमती है। दिनादिन नजर टको हो कर दृष्टे कम होती है। प्रत्येक त्वस्तु स्पष्ट नही देखो जा सकती। यह राण आरतेमे अधिक देखा जाता है।

३ नाकसुर-नासुर (Lachryma abscess and Fistula) कारण चिन्ह—आंखके दोनो पोपंचेके नाकके ओरके दोनोमें छद्र होता है। उस छिद्रसे नाककी और सूक्ष्म रास्ता है उस रास्ताके द्वारा आंखका स्वाभाविक पानी

आँखों में आकर बाष्प हो कर श्वासेच्छ्वास के साथ उड़ जाता है। उस रास्ते में प्रतिबन्ध होनेसे आँख के कोनेमें पानी गाल पर बहते हैं। कभी बड़ नली पकनेसे पस निकलता है। इससे कानोंमें छोटो फुन्सी होकर बरबार फुटती है और पस निकलता है।

४ आँजणी—(Sty) कारण चिन्ह आँख की पाँपणोंपर छोटो फुन्सी होकर पड़ती है इस कारण उस जगह घोरा दर्द होता है। यह कभी एक पाँपण पर कभी दोनों पाँपण पर होती है। इस आँजणी अथवा अँजनन मिश्र कहते हैं।

५ आँख का कण—(Foreign body in the eye) (आँख में बहारा हुआ कोई वस्तु गिरना)।

कारण चिन्ह आँख में धूल रेतीके कण या लोहा या किसी धातु की कण आँख में गिरता है तब आँख से पानी बहता है। पाँपण पटपटाने अथवा पानी छेड़कनेसे कणिकाएँ अथवा बड़ वस्तु निकल जाती हैं लेकिन बड़ वस्तु कृष्णमटल में अथवा रक्खेद डोलावे घुम रहा हो तो नहीं निकलती पाँपण में घुस गई। हो तो पोपचको डलट कर निकाल देना। परन्तु डोलावे घुस गया हो तो निचालनेमें सावधानी रखना।

६ लम्बी नजर-दीर्घ दृष्टि (Long Sight) कारण चिन्ह इससे आँख की दूर की वस्तु स्पष्ट दीखती है लेकिन नजीक की वस्तु नहीं दीखती। इसे दीर्घ दृष्टि कहते हैं।

७ टूँकी नजर दृग्घ दृष्टि (Short Sight) इस दृष्टिवाली आँख से नजीक की चीज स्पष्ट दीखती है। लिखने पढ़नेमें तकलीफ नहीं होती। लेकिन दूर की वस्तु या मनुष्य स्पष्ट नहीं दीखता।

छोटो उमरमें प्रियाथी दशाने लिखने पढ़नेका बोझ उधाग रहनेसे और शुद्ध घी दूधका घुआक नहीं मिलनेसे टूँकी दृष्टि होती है। वर्तमान शिक्षणमें विद्यार्थी और विद्यार्थीनीवाँको टूँकी दृष्टि बहुत प्रमाणमें देखी जाती है। इसका कारण सच्चे घी दूधके घुआकका अभाव और लिखने पढ़नेकी हदसे ज्यादा तकलीफ यह है। टोट प्रामो, कि जहाँ सच्चा घी दूध मिलता है, और आँखोंको परिश्रम कम पड़ता है वहाँके छोटे और बड़े लोगोका दृष्टि टूँकी नहीं होती। जब नगरोंमें सपर लिखे कारणोंके साथ चश्मा-अनक पहिननेकी फेशन सीनेमा देखनेको आदत इलेक्ट्रीक लाइट आदिसे भी आँख टूँकी दृष्टिवाली बनती है।

८ निर्घल कमजोर दृष्टि—नरोगी आँख नजीक की चीजसे आकाश तक देख सकती है लेकिन बहुत लिखने पढ़नेकी आदतसे सच्चा घी दूध और नहीं

मिलनेसे आँखें कमजोर होती हैं। तब लिखने पढ़नेसे खिरमे बढ़ जाता है चक्कर आता है और हृदय में भी कमजोरी मालूम होती है। कई कारणोंमें आँखोंके भीतरके तंतुओं कमजोर होनेमें भी आँखें निबळ होती हैं और पढ़ने देखनेमें आँखें लगती हैं।

९ आँखोंकी सूजन—देने पोपचां सूज जाते हैं और देने लालधुम हो जाते हैं। शरीर और मगजभी गरमीसे जमाल मोटा जैसी चीजके स्पर्शमें जहरीली दवाइ के भावसे चोट लगनेसे आँखें पर सूजन होती हैं।

१० रतौन्धापन नक्षतांध्य—इस रोगका दिनमें अच्छा तरह दीखता है लेकिन रातको बिलकुल नहा दिखता। रातको प्रकाश या अंधेरा आदि मालूम होता है।

सुखावती वृत्ति—निर्मलों के वील, शखका नागि मोठ, पीपल काली मिरच, बौधानेन, शककर, समुष्केन रसौत वायबिडंग, मनकील कुक्कुट'डका कवच सब समभाग लेकर कूट कर महीन कर कपडछान करना। पीछे ताँबे अथवा काँसीके घरतनमें डालकर पानीसे महीन घोट कर वृत्ति करना और छाया में सुखना। पानीसे घोस कर सेते वरून अंजन करना। इसके उपयोगसे वेल (Pterygium) घोसा कर आँखें साफ होती हैं।

नागार्जुनी वृत्ति—बड़ो हरद छाल बहिडाकी छल आँवळां सोठ पीपल कली मिरच सेधानेन मुलैबो मूळ पकाया हुवा नीलां थेथा रसौत प्रबौडरीक वायबिडंग लोध्र तांबेका काट सब समभाग लेकर घोट कपडछान कर पानीसे वृत्ति बनाना। तपोडियां, खील पटल, भायीं हुयी आँख इत्यादि में पानीसे या गौभूयसे या ढाककें फुलके पानीसे घोस कर अंजन करना।

नयनामृतांजन—सीसा (Lead) तो १० के पिघालकर उसमें पारा तेला १० डालकर ठंडा करना पीछे उसे घोट कर उसमें शुद्ध भिया हुआकात्रा सुरमा मिलाकर महीन अंजन जैसा हेनेके पीछे उसमें ढाई तोला भस्मसेनी कपूर मिलाकर झींझीमें भरना। तिमिर पटल काच अमर शुक्र अंजुन आदि आँखोंके रोगों में बड़ा गुणकारी है।

पुष्पांजन—भस्मसेनी कपूर तो १, ईलायची दाना रती २४, लौंग रती २४, नवधार रती ८, काली मिरच रती ८ सबको गुलाब जलमें घोटकर लोबान के फुलकी तरह फुल पाटना। पीछे उच फुलको घोट कर अंजन करना कृष्ण मंडलका दाढ़, गढ़, सूजन मिटता है।

गुठिकांजन—छेटी पीपल हरद, बहिर्बीज पत्ता, लाख, लोहेका काट से धानेन समभाग बारीक कर भांगराक रसमें दो दिन तक घोट कर बर्तना बनाना । हमेशा पानीमें घोंस कर अंजन करनेसे मोतो बिदमे फायदा होता है । लाख फूला खुजली बेल भावला में लाभ होता है ।

लोध्र पटली—लोध्र अनारको छाल डेढ डेढ तोला लेकर वहीके पानीमें पीस कर लुबडी बनाना, कपड़ेमें पोटाही बांधकर अखपर वह पोटली बांधना रातभर रखना इस प्रकार पंद्रह दिन करनेसे फूला कटता है ।

फूलाका सामान्य उपचार—

१ खारेकके गुठली पानीमें घोंस कर आंजना ।

२ सगेमरमर पानीमें घोंस कर अंजन करना ।

३ कपूर और शक्कर समभाग कांसीके परतनमें घोटकर रखना ।

अंजन करना ।

४ समुद्रफेनादि बर्तन में मसैनी कपूर माशा ४ फनक बीज, सेण्ट, काली मिरच, पीगलीमूल समुद्रफेन प्रत्येक एक एक तोला सबको महीन कर उसमें कमेलीके फूल दोस्रो पीस कर महीन कर बर्तन में घोंस बनाना । घोंस कर अंजन करते रहनेसे फूला कटता है ।

५ पकड़ हुड फिटकरी तो १ और घोंके दिघेसे बनाइ हुई मशी तो, २। दोमैकि गायका घी तो १० में मिलाकर तावेके बरतनमें डालकर कांसीके कटोरेसे तीन दिन तक घोटते रहना हमेशा ८ से १० घंटा तक घोटना । पीछे छसतकी दिव्यांमें भरना । अंगुलिसे अंजन करना । अखोकी खुजली आयी हुई आंख, छाया, फूला इत्यादिमें फायदा होता है ।

६ इंगुरीका (इंगोरिया) का गर्म अंगुलिसे आंजते रहनेसे फूला कटता है ।

७ इंगोरियाके बीजको गोरि शाकका लीरा पारीष पीपल के बीजको गिरी सब समान भाग लेकर महीन कर बहरीके दूधमें चार प्रहर तक घोट कर पीछे बर्तोंया गेली बनाना । पानीमें घोंस कर अंजन करनेसे फूला कटता है ।

८ गधेकी ढाढ महीन पीसकर छोके दूधमें मिलाकर अंजन करना अथवा छोके दूधसे पथपर पर घोंसकर अंजन करना फूला कटता है ।

९ इमली (चिंचा) के बीज, कापूसके मूल और गधेका दांत प्रत्येक अलग अलग महीन कर समभाग मिलाकर पानीमें बर्तना बनाना । पीछे पानीमें घोंस कर अंजन बनाना । फूला कटे ।

१० नीला घोथा और साठो पायल समभाग पीसकर रूंदी के दूध से तेन घटा घोट कर बर्तनी बनाना । पीछे पानीमें घोंघ कर अंजन काना । फूला मिटे ।

११ कालो मिरच अफीम और कपूर समभाग घोटकर महीन करना पीछे इमली (चिचा) के पांके रसमें घोट कर बर्तनी बनाना । पानीमें घस कर अंजन करना फूला मिटे ।

१२ गंधके नख जलाकर महीन कर वहीमें मलम जैसा बनाना । फूलाने अंजन करना ।

१३ काँको जलाकर महीन करना पीछे तीन चार गती आराममें डल कर सो जाना । इससे मनुष्यके और पशुके भी फूला मिटता है ।

१४ तिमिर हरी बर्ती तिलके तेलमें पकाया हुआ घोडेका घान तो २, तिलके तेलमें पकाया खजूरके बीज तो २१, काश खापरिया सफेद सुरमा, अफीम, हरडकी छाल, छोटी हरड, (हिमेज) अलची दाना, लवंग चीनीक्याला, रंगीत पकायी हुयी फिटकरी और शक्कर प्रत्येक दो दो तोला सब महीन पीसकर नीचूके रसमें काँसीके बरतनमें काँसीके कटोरेसे दो दिन तक घोटते रहना । सूख जाने पर तुलसीके पत्तेके रससे बर्तनी बनाना । छायामें सुखाना । पानीमें घस कर अंजन करनेसे छाला फूला तिमिर मिटे ।

१५ अरणाके पातेका रस अंजन करनेसे शीतलाका फुग मिटे ।

१६ उटकी डाढ पानीमें घोंघ कर अंजन करनेसे छया फूला तिमिर मिटे ।

१७ गद्धेका दाँत और शेमाका शिग-साबरसिग दोनो बारिक महीन पोष झ के दूधसे बर्तनी बनाना स्त्री के दूधमें घोंघ कर अंजन करनेसे फूला कटे ।

१८ युनानी कवाथ— उशने खुश, गुले वनफशाह, हरडका दल छोटी हरड (हिमेज) गुले खेब, काशनी प्रत्येक साढे सात सढे सात तोला, उनाब दाना १०५, काली शक्कर साफ की हुई तो ११ शक्कर तो, ३० सब साथ कूटकर समभागसे १५ पुडिया बनाना । हमेशा १ पुडिका कवाथ पिलाना और उपर बड़ी हरडका मुरब्बा हरड न १ खिलाना, नजला मोतिया मिटे ।

१९ धिरोजी गुजाका मूल बकरीके दूधसे घोंघ कर अंजन करनेसे मोतिया मिटे ।

२० शखनामि पानीमें घोंघ कर अंजन करनेसे तिमिर पडल मोतिया मिटे ।

२१ जीमके मूलकी छाल छाया में सुखाकर महीन कूट कर घोडे के पिशाब में बर्तनी बनाना । हमेशा घोडे के पिशाब में घोंघ कर अंजन करनेसे पटक मिटे ।

२२ कृषा-द्रोणपुष्पी के पानको साठो चावलके ओषामण में पीस कर रस निकालना और हमेशा नकमे १५-२० बुंद धीरे धीरे डालना । २१ दिन तक बालनेसे पटक मिटे ।

२३ खप्ताभृत लोह—लोह भस्म जामूनके रसमें पकायी हुई, हरड बहेडा आंवला मूलीठी मूत्र, प्रवाल पिष्टि, यशद भस्म सब सम भाग लेकर मिश्र करना । तीनसे छ रती दो समय महर और धोके साथ लेकर उपर दूध पिलाना । इससे जामरवा (Glaucoma) और आंखके दूसरे बहुत रोग मिटते हैं ।

२४ लेप—अभियाहली (आम्रहरिद्रा) मेढाशिंगी, काकड़ा शिंगी, रघौत समभाग लेकर कूट कर रखना । बकरी के दुध में खीस कर थोड़ा गरम करके आंखके बाहरके मार्ग में और उलाट में लेप करना । इससे जामरवा में फायदा होता है ।

२५ देवदारकी लकड़ोको बकरीके मूत्र में चन्दनकी तरह घोंस कर अंजन करनेसे परवाळा खोल मिटे ।

२६ देशी काली शादी अथवा कपूर काचली अथवा अभिया हल्दी अथवा केसरसिग घोंस कर आंजणी के उपर लगानेसे दो दिनमें मिट जाती है ।

२७ नयनचन्द्र लोह—लोह भस्म तो ८, अम्रक भस्म तो ८, छोटी पौपल, कली मिरच, हरड, बहेडा, आंवला काकड़ा शिंगी (ककटशृंगी) कचूरा, रास्ना, शाल कमलकेद, शतावरी, विदारीकद, मूलीठीमूल, केशर, छोटी कटहरी मूल, सोठ प्रत्येक चार चार तोला लेकर कूट कर महीन कर दोनो भस्मों में मिलाकर त्रिकलाके क्वाथकी और मांगराके रसकी एक एक भावना देना । आगमें सुखाना । घोट कर रखना । मात्रा ३ से ६ रती महर और घोंसे लेकर उपर दूध पीने । आंखका तेज बढे और टुंकी दृष्टि मिटे ।

२८ अरिठके (रीठा-अरिष्टक)के फलकी छालको महीन कर खी के दूधमें मिलाकर अंजन करनेसे रतीघापन मिटे ।

२९ ओबले के बीजकी गीरी और बहेडे के बीजकी गीरी समभाग लेकर महीन कर सोते वस्तु एक ठो रती भरण की तरह आंखमें डालना । रतीघा में फायदा होता है ।

३० गायका खीरा (ग्याइ हुई गायका प्रसूवके समयका दूध देया जाता है यह) रतल १ में शकर तो ५ डालकर पिलाना । हमेशा सुबह और रात दो दोके पिलाना । रतीघा मिटे ।

३१ शक्कर और समुद्रफेन समभाग लेकर महीन कर भरणकी तरह तीन चार रतौ आखमें ढालनी सात दिन में रतौवा मिटे ।

३२ जीयापोता—पुत्रजीवक कायफळ, ठाककी जड़, वीरल फलका गर्भ, समुद्र फेनका गर्भ सब समभाग लेकर महीन कूट कर काढछान कर रखना । रातको सोते वरुत अंजन करनेसे रतौवा मिटे, फूला और परवाळा कटे ।

३३ गावजवान (मोपाथरी) का भूल, पीस कर आखके केनेमें नासुर पर लगाना अथवा सांपकी कांचलौ (सर फंजुकी) को जलाकर उसकी राख नासुर पर दवाना । ५-१० दिन करनेसे नासुर मिटता है ।

३४ नासुरहर लेप—रसी मस्तकी तो ०॥, राल तोला १॥, कथ्था, हिंगुल, वेदार, खिन्दूर, कच्ची सुवर्ण माक्षिक, खपरिया और बेरजा प्रत्येक दो दो तोला लेना । पहेले प्रत्येक द्रव्य अला अलग घोट कर महीन का पीछे सब साथ मिळाना कवार पाठा के रसमें मिलाकर नासुर पर लगानेसे नासुर मिटता है ।

३५ चक्षुरक्षान्तन—शोधा हुवा शोशा (LEAD) तो ८ के। पिचालकर उसमें पारा तोला ८ के। ढालकर ठंडाकर पीछे महीन पीस कर उसमें काला सुरमा तो ८ मिलाकर दो दिन तक घोटना । पीछे उसमें जसतका फुल्ले अथवा भस्म छोटी पीपल, मांगराका रान, शंखही नाभि हल्दी निर्मली बोज वीसो हुवा चन्दन, लाख, शक्कर, मैन्शील समुद्रफेन चोनीकाला, इत्रायचो दाना, रसौत, घड़े के बीजकी गीरी, नमक, प्रत्येक आधा आधा तोला और भीमसेनी कपूर एक तोला लेकर सब साथ महीन कर घोटकर शीशीमें भरना । आंख आनी हो, आंखसे पानी गिरना, आखका सफेद डोला लाल होना, बावला बेल तपेडिया खोल, चांदा, कृष्ण मडलकी सूजन, फुला परवाला, झांख पडल और दूसरे आंखके रोग अजन करनेसे अच्छे होते हैं ।

महामुक्तान्तन कृष्ण—मोती चूरा, काला सुरमा पारद, कपूर, अगर, कालीपिराच छोटी पीपल, सोठ, सैधानेन, चोनीकाला, हल्दी, मैन्शील, शंखनाभी, नीलायेभा, कुकुरेके इडाकी फोतरी, घड़े के बीजकी गीरी, कांस्य भस्म, वग भस्म, अत्रेक भस्म, केसर, बड़ी हरदकी छाल, मूलेठीमूल, राजानर खुदका फूल तुलसी के बीज, अजन वृक्षकी छाल करज के बीज, नीमके पत्ते खिरहरा (अश्व तककागन, नागरमेथ, ताबेका काट, लेहेक काट, कपूर सब साथ मिलाकर महीन कर तीन दिन तक घोटते रहना । साहद के साथ अथवा आकेला अजन करना । आंखके सब रोगमें अजन किया जाता है । हमेशा अजन करनेसे आंख नीरोगी रहती है ।

अमृत काजल—तिल के तेलका दिया कर तावड़ी में मस पावना यह मस ठोठा १ फिटिरी पकाइ हुई रती ६ भीमसेनी कपूर तोला ०१, काला सुरमा बारीक घोटो तोला ३ सवसाथ एक कर उसमें शायका घी भर कितना मिलाय बांसाकी थाली में ढाल ताबेके छोटोसे तीन दिन तक घोट पीछे शीशी में भर लेना । इसका अंजन अगुलीसे किया जाता है । आंखके सब रोगोंमें लाभकारी है । बच्चे को हमेशा आंजनेसे आंखें तेजस्वी रहती हैं ।

ममोरा मुक्तांजन—घीरा (नाग) तोला ५ को पिघाल कर उसमें पारा तोला ५ ढाल कर सांगशात कर पोखना महीन होजने के पीछे उसमें शुद्ध काला सुरमा तोला १० ममीरा तोला ५, मुक्ता पिष्टो तो २॥ प्रथम पिष्टो तो ५, कच्ची सुवर्ण माक्षिक, महिन पीसी हुई तो ५, शुद्ध, समुद्रफेन गर्भ तो. ५, बशद मरुम तो. ५, शस्त्रनाभी तो. २१, ईल यचीदाना तो १, चीनीबाला तो. १, सेवानोन तोला ०॥ सब साथ कूट महीन पीसकर कैली के स्थभक्ष रस, गुलाबजल, नीमके, पस्तेका रस निवूका रस इमले के पान कारण प्रत्येकको एक एक भावना देना सुख जाने पर भीमसेनी कपूर तोला २॥ मिलाकर घोटकर रखना आंखके सबरोग में अंजन किया जाता है हमेशा अंजन करनेसे आंखकी रोगनी घटती है चक्षमा अनेकका नष्टर वम होता जातो है ।

बर्बिंदु तेल—एरडका मूल अगर कतावरी जीवती (खरखोदी) कल रास्ना सेधानेन भांगरा बायबिंदु मूलैठी सोठ प्रत्येक बार चार तोला कूट कर उसमें काठे तिलका तल बकरीका दुध भांगराका रस प्रत्येक चार चार कच्चाघोर तल ढाल कर पकाना पानीका अंश जल जाय जब कपडछान कर रस छोडना सोती वलत नाकमें छे छे बुब, ढालनेसे आंखका तेज बढ़े, चक्षमा का नंबर कम हो, दाँत के रोग मिटे एक साल तक ढालनेसे बाल काला हो, बालके मूल दृढ हो ।

नयनामृत लोह—जामूनमें पकायी हुयी लोहभस्म तोला ३२, सूँझी मूक छोटी पीपल बंशलोचन प्रत्येक तोला चार, चार आबली तो. ३२ शक्कर तोला ३२, बड़ीहाड तोला ८, बहेडा तोला १६ सब साथ घोटना । भाडा ६से१२ रती तक शहद घृतसे देनेसे दिमाग आंखके रोगमें बड़ा लाभ होता है ।

जागाजुनी बालाका सीसा (नाग) को पीघालकर त्रिफलाके स्वाधमें १०० बके दुधाना पीछे उसकी सल इ बनाना यह आंखमें फिरानेसे तेज बढ़ता है आंखके बहुतसे रोग मिटते हैं ।

मात गी वर्ती-बाखनाभी तोला १६ को वकरी के दूधमें घोंट सुखाना ।
 मौनशील तोला ८, को गायके दूधमें घोंट सुखाना । काली मिरच तोला ४ को
 ओरतके दूधसे घोंट सुखाना । सेधानोन तोला २ सहजना के पानके रसमें घोंट
 सुखाना । पीछे सब चीजे साथ मिलाकर वकरीके दूधमें घोंट वर्ती करना पानीमें
 घोस अंजन करना । सुरमा जैसे पावडर रखा होता घलाइसे अंजन करना ।
 आंखके बहुतसे रोगोंमें लाभ होता ।

नेत्ररोग हर मिश्रण १-सप्तामृत लेह तो १, अमृतासव तोला ३,
 मुक्तापिष्ट, तो ०१, क्षिलाजित तोला १, सुवर्णवपुत मालती तो ०॥ सब साथ
 मिलाय शीशीमें मरना । प्रातःकाल ३ से ६ रती शहद घृतसे देनेसे नेत्ररोग मस्तक
 रोग हृदय रोगमें लाभ होता है ।

नेत्र रोगहर मिश्रण— २ प्रवाल पिष्टी तोला २, स्वर्ण माक्षिक भस्म
 तोला १, बौद्धय पिष्टी तोला ०१ मूलेठी मूल तोला २ सब साथ मिलाय ३ से ४
 रती च्यवनप्रास जीवन के साथ देनेसे नेत्रके मगजके हृदयके रोग उष्णता दाह
 अम्लपित्त रोगमें लाभ होता है ।

नेत्र रोग हर मिश्रण ३, मुक्ता पिष्टी तोला १, निलम्ब पिष्टी तो ०॥,
 पुखराज पिष्टी तो ०॥, सप्तामृत तो २ ज्वाहर मोहरा पिष्टी तो १ सुवर्ण भस्म तो ०॥
 सब साथ मिलाकर घोंटकर रखना प्रातःकाल ३ रती मात्रामे प्राप्ति अवलेह
 १ से २ तोलाके साथ लेना ।

उपर लिखे मिश्रण चल्ता हो तब महा मुक्ताजन कृष्ण अथवा ममीरा
 मुक्ताजन अथवा नयनसुधा आंखमें आजते रहना ।

पलाशमूलाक पलाश (ढाक-खाखरा) के मूलसे निकाला हुआ यह
 अक जल है इसमें आल्कोहोल नीलकृल भदि है । श्लिष्का यंत्रसे खींचा हुआ
 जल रूप यह है यह प्रातःकालमें १ चम्मच दुध के साथ लिजाती हैं और
 सोती वरुन एक दो बुंद आंखमें डाले जाते हैं या घलाइ हुबोकर आंखमें
 फिरी जाती है ।

सहिफेनादि लेप अफीम तोला २॥, बोदार घींग तो २॥, केसर तो १॥,
 पशायी फिटकीरी तो ०१, सब साथ पीस सेगठी बनाना पानीमेंया निंबुररसमें
 घोंसकर आंखके रोगमें बहार के भागमें लेप किया जाता है ।

वासादि फांट, अड़सी सेठ गिलोय दासुहलदी रसेत चित्रक अतिविषा
 नीमकी छाल कुटकी हरद बहेडा भांवला नागरमोथ हलही इन्द्रजौ कुठेकी छाल
 बदतीक्षुप विजयघार (अंजनघर) की छाल सब सम भाग लेकर कुटकर रखना ।

१ से २ तो चूर्ण में १ से ३ कप (प्रायः ३० तोला) पानीमें भिगा रखना प्रातःकाल कपड्डालन कर उबमें २ से ४ तो. शहद मिलाकर दिनमें दो दफे पिलाया । अकेला अथवा नेत्ररोग पर दो जानेवालीं किली औषधके उपर भी पिलाया जाता है ।

हरिद्रा—योग—हलदीकी खडी गूँठ निचूमें डालना त्रिषुख जाय जब निकालकर दूसरे निचूमें डबना इस प्रकार तीन निचूमें डालनेके पीछे त्रिषुख जानेपर हजदीकी गांठ रखडोबना । आंख लाल हो—आयी होतो पनीसे या शहद में घोषकर अदन करना । आंखमें खुजली आती हो आंखको किनारी लाल हो तो मांगरा के रसमें घिसकर आंजना । आंखमें झंक हो कम दिखाता हो तो सीके टुन (घण्टण) में घीघ आंजना । पटलमें ढाकके मूकके अर्कमें घिस आंजना । रतौंघा (नकाध्य) में गर्म जलसे घिसकर आंजना । आंखमें परवाळा खील तपो दिया—पुष्प कुन्धीयामें पुननवा मूकके रससे घिसकर आंजना ।

कपूर—पुष्पांजन कपूर तो १ और छोटी पीपल पीपरीमूल इलायचीदाना चिनोक्वाला मूलेठी मूल प्रमेक आधा आधा तोला छेकर सबको महीन पीस पीतलके थाल में बीचमें रखकर उपर कांशीका शडा कटेरा ढक कर गेहुं के आटे से रुंधि बंध करना । पहिले पीतलकी थाली में कांशीकी कटेराको पक किया हैं ढक जप । इतनी रेनी डालना पीछे गीया जलाना पीछे ईंटका चुला बनाकर उसपर पीतलकी थाली रखकर नीचे तिलके तेलका दीवा जलाना दीवाकी शिखा थाली के तल्ल परलमे इस प्रकार दीवा जलाना । २. तो तेल जल जाय जब राग गीत होनेपर समाल कर रेती निकाल देना और कांशीके कटेराको गेहुका धाटा लगाया है वह समाल कर निकाल देना पीछे कटेरा पर लगा हुआ फूल के डेग वह अजन करने के बात पित कक जन्म वेव रोम फूला परयाळा खील कुन्धीया आदि मिटेते है ।

सिद्धांजन—श सनामी मैनसील सुरती खापरिया (सुरती खपर) सेधानेन गवेका शत इलायचीदाना सुराखार कपूर भीमसेनी कपूर चिनोक्वाला लवंग छेटी पीपल पिपरीमूल पकायी फिटकीरी पकाया नोलायोथा लेप्र कालोपोरच अगेलोयाका बीज जोरा चीमेंड हलदी छोटी हरद बरीहरद निमलीका बीज प्रायेक एक एक तोला सुग्मा २ तोला और सरस के तेलकी मही काजल १ तोला सबराय घोट कर तामे-ताम्र के बडे थालमें डाल उरमे भरणीका रस डाल कर तामे के छोड़ेसे घोटना महीन हो जाय जब बतीयो सोगठी करना पानीमें घोष अंजन करना आंखके सब रोगमें उत्तम लाभ होता है । आंख उठना आंख लाल होना

चीरवा जमन' सुजली परवाळा खोल कुम्बो कुवा पटक देन भादि मिटये है और हमेशा अजन करनेसे आदि तेभरवा रहतो है। घरवा के खेल का काजक ईस प्रकार पाठना इन्की बरतका बाट कर आठ के दूध मे मिठा का सुधवा पीछे उब बनी से घरवा के तेलका दिया जमन काजक पाठना बट काजक इस अजन मे चलना।

कृष्णसर्प चशाशंख कतशाफळ मंशरं ॥

रसक्रियेयमपिदाधानां दशनमश ॥ घागभट ॥

भुजगवसंजन—कचनानी और निर्मली के मीज बीच बीच तोला देकर बहुत महीन पीस मिलाना। सांघके मुहमे १० इंच काटकर पीछे के अगले अंगुली चरमी लेना। गोला बनाना ओर डिके परमे स्पेट का मुहमे बिठा कर पीछे उपर फेद मिट्टी एक इंच मोटी लपेट कर सुगाना पीछे उसे एक बट्टे कटेमे रन उपर नीचे रेती छाल ठंठ देना। पीछे चुल्हेपर चढाग अमि नलाना नव घंटा अमि देकर स्वागशीत होने देना। पीछे मिट्टी पते निकाल कर अंगुली गोम संमालकर पीस कर काजक घोट कर रत्तना। जरूरत लगे तो कृष्ण घरकी चरमी और मिलाकर अंजन जैसा बनानेना। यह अंगुलीसे अंजन करनेसे आन्धके खरोग मिटते है। और वागभट के अनुसार गंधोफे दष्टि मिलती है। निर्भूम अग्निपर दो चार रती काजल छालकर उषध घुषा देनेसे भी लाभ होता है।

सर्वांजन—काला सांघ तुर्ग मरा हुआ लेकर उसको मुनसे १० से ११ इंच काटकर फेंक देना। बाकी के सांघका दृष्टाकर एक मिट्टीक मटकी मे टटना और उसमे गायका घी दो. १ छालकर मटकी का मुह बपट मिट्टीकर बंद कर गज पुटकी अमि देना। पीछे निकाल मटकीमे भस्म बनो हो बट १ तोला देना। उससे नीलाधेत्या १ तोला कच्ची सुवर्ण माक्षिक १ तोला और खाशरीश १ तोला महीन पीसकर मिठाना और दिनभर घोटकर अधिक महीन करना ईन्में से १ एक तिल बीजना आखमे आगना। आन्धके अंधापन मिटता है (पुगनी वहीमेसे)

माक्षिकांजन वर्तनी—कच्ची सुवर्ण माक्षिक काली मिरच पीपल सोठ निर्मलीबीज क्षपूर कुष्ठ समुद्र फेन काला सुग्म वायविडंग शककर प्रत्येक एक एक तोला लेकर महीन कर पक्षरीका सुध तोला ४० मे घोटना दूध सुखजाय जब वर्तनी या सोगठो बनाना। पानी मे घीस अंजन करनेसे तिमिर पटल सुजली स्त्रील परवाळा मिटे।

कलशंजन—एक तामेका बड़ा छोटा डेहर उसमें पानी शेर १॥ और गायका घी शेर १॥ डाल कर मुख बँधकर कपड़ मिट्टी कर जमीन में एक खड्डा खोद कर उसमें रख उपर मिट्टी दाबना जमीन में उसे गाढ़ना । माग'क्षीर्ष'शुक्ल १५ पूर्णिमा से लेकर ज्येष्ठ शुक्ल १५ पूर्णिमा तक जमीन में रखना पीछे उसमें से घी निकाल कर क्षीरामे भर रखना सलाइ से अंजन करने से छाया पटल तिमिर और आँखों के अन्य रोगों में लाभ होता है ।

अर्कदुग्ध प्रयोग—आक का दुध पाँचके १० नखों पर और हाथ के के १० नखों पर लगाना । नख के मूल से जहाँ बमर्दा के पाससे नख शुरू होता वहाँसे सारे नख पर लगाना ३ दिन करनेसे आँखें खुद आँख मिटती हैं ।

प्रकीर्ण प्रयोग

१ बड़ो हरडकी गुडली निकाल कर १० तोला शक्कर ५० तोला देने के पीछे बकरीके दूधमें घोंट कर एक एक तोलकी सोगठी बनाना पानीमें घोंस कर अंजन करनेसे मोती बिंद मोतीया आता है तो अटक जाता है आया है वह पिघल जाता है ।

२ खपरिया तो ९, सोराखर तो ९ साथ तीन दिन तक घोंटना पीछे उसमें ४ पूर तो. ०। तथा कस्तूरी रती १२ मिलाकर घोंटकर रखे । अंजन करनेसे छाया पटल तिमिर खुजली मिटे ।

३ ग्लिय पुराना शहर से घानोन प्रत्येक तो ९ मिलाकर महीन कर क्षीरामे भर रखना । अंजन करनेसे छाया छारी मिटे,

४ आँखके दुधमें बड़की बत्ती मिगे कर सूझाना । पीछे उस बत्तीके सरसोंके तेलमें डालकर काबल पाहना । उस काश्लको गायके घीमें मिलाकर अंजन करनेसे आँखके बहुतसे रोग मिटते हैं ।

५. बच कुछ शखनाभि बड़ेके बोजकी गोरी छोटी पोपल प्रत्येक आधा आधा तोला, कालीमिरच तो. ०। दो दिन तक बकरीके दूधमें घोंट कर सोगठी बनाना । पानीमें घोंस कर अंजन करनेसे पटल, स्त्रीके दूधमें घोंसकर अंजन करनेसे खुजली, गायके दूधमें घोंस कर अंजन करनेसे आँखके बहुतसे रोग मिटते हैं ।

६ पारेवां (पारावत) की चरफ और सोठ समभागमें पीस कर अंजन करनेसे छाया और पटल मिटे ।

७ घनीया सोठ प्रत्येक चार चार तोला । नेहू का सत्त ४० तोला । सकर ८० तोला, सब बीमें मिलाकर दो तीन तोला खिलानेसे आँखका तिमिर रोग मिटे और तेज बडे ।

नासा रोग-नाकके रोग

कारण—बहुत पानी पीनेसे, धूल श्वासमें जानेसे बहुत भाषण बहुत निद्रा बहुत जागरण करनेसे बहुत पानीमें नहाना इत्यादि कारणोंसे, वमन तथा अश्रुका वेग रोक्नेसे, दूसरे कई कारणोंसे नाकके रोग होते हैं ।

चिन्ह—शरीरमें जीर्ण ज्वर रहता हो अंग लगता है । मस्तक भारी हो जाता है । मस्तकमें, लगणामें, गलमें बारीक दर्द होता है । उसक उपर कपड़ा रखनेसे या दबानेसे अच्छा लगता है । नाकसे या मल पानी गिरता है । नाकसे श्वासेच्छ्वास लेना कठिन होता है । दस्त कबज रहता है । भूख कम लगती है ।

पथ्यापथ्य—एक सप्ताहमें एक से दफे जुलाब लेना । भूख अच्छी ऋगे जब भोजन करना । कपड़ा पहिन रखना । ठंडे पानीमें नहाना नहो । प्रवाही पदार्थ कम खाना । दाभभात खीचढो दूध भैसा लघु खुराक लेना । लेग पीस कर गरम कर ललाट पर लगाना । कान पर कपड़ा बांध रखना । शरीर पर पवन न लगे यह ध्यान रखना । चना और कुलथीका ओसामण लेना । अदरख लशुन प्याज सेठ काली मिरच आदि मसाला खुराकमें लेना । इस रोगोके पवन न आवे ऐसे स्थानमें रखना और मस्तकपर गर्म और वजनभार कपड़ा बांधना शरीर पर खोपा (टोपा) अथवा सरसोंका तेल दिनमें दो दफे मालीस करना ।

पीनस-प्रतिश्याय

कारण—ऋतुके फेरफारसे, वर्षाका ताजा पानीमें, अविठ नहानेसे, वर्षाऋतुमें खुली हवा लेनेसे, मेजवाली और सीमेंट बिछाई जमीनमें सोनेसे, मलमूत्रका वेग रोक्नेसे, अजीर्ण, बहुत बोलना, क्रोध जागरण, अतिनिद्रा आदि कारणोंसे यह दर्द होता है ।

चिन्ह—वात प्रधान पीनसमें फिर भारी रहता है, जकड़ जाता है, भालस्य आती है, रोमांच होता है, श्वासेच्छास बंध हो जाता है गला और ओष्ठ सूखता है मस्तकमें लगणोंमें पीड होती है, स्वर बैठ जाता है । पित्तप्रधानमें पीला साव होता है, । गनुष्य दुर्बल और पांडुवर्णा होता है । शरीर और मस्तक गर्म रहता है नाकसे जलन और धुआ निकलता है । अंग भास होता है । कफ-शरदी प्रधान दर्दमें ठंडा सफेद चीकना साव होता है, आंखें सूज जाती है, मला ताल और मस्तकमें खुजली आती है । त्रिवेष जन्म दर्दमें तीनों दोषोंका न्यूनाधिक चिह्न मालूम होते हैं ।

पीनस-पुराना सखममें खास कष्टसे लिया जाता है । नाक सुखना है । बुढ़ा पौधा निकलता है । अच्छे बुरी गंध नहीं जान सकता और प्रतिश्याय जैसे चिह्न मालूम पड़ते हैं ।

विहगादि नस्य—वायविहग सेधानोन, हिग, गुगल, मनशील और बच (वर्चा) समभाग कूटकर कपडछान कर रखना । पीनस और प्रतिश्याय गालोंको सुधाना । तीन चार दिन सुंधनेसे आराम होता है ।

पीनस हर नस्य—छौंकी (सुंधमेकीतमाकु) तो २०, छोटी पीपल, सहजानाकेबीज वायविहग प्रत्येक तो। १०, कालीमिरच तो २॥ सबसाथ कूटकर कपडछान कर रखना और पुराना और नया पीनस प्रतिश्यायमें सुंधाना ।

चित्रघंटावटी—पाद तो १०, गंधक तो १०, ताम्रमस, लोहमस, खंखमस, अन्नकमस, पक्या हुआ टकण, कालीमिरच, सेठ पीपल, लवंग, दालचीनी, प्रत्येक पांच पांच तोला, अजवाइन अजमोद, हल्दी, सेधानोन, प्रत्येक तो. ४, सब साथ मिलाकर फोडीनाके रसकी और अदरकके रसकी एक एक भावना लेकर गुंजा जूँधी गोली बनाना । मात्रा ३ से ६ गोली गरम पानीके साथ अथवा तुलसीके पानके साथ देना ।

खिन्नकहरितकी—चित्रक रतल २०, छोटीकटहरी पचांग, अरणी पचांग, अहो पचांग, और कटहरीके फूल प्रत्येक दश दश रतल, बड़ी हरद रतल १०, अस्थानाशी (स्वर्णक्षीरी) का पंचांग रतल २॥, नागरवेल्लया पान रतल २, सब साथ कूटकर सबसे १६ गुना पानी डाल पकाना । चतुर्थांश रहने पर उतार कर कपडछान कर रखना और हरदको अलग कर सुखाकर बीज निकालकर उसका चूर्ण बनाना । और क्वाथमें हरदका चूर्ण डालना । और सेठ पीपल काली मिरच, दालचीनी, लवंग, वसलोषन, वायविहग, बहिडाछाल अजवाइन अजमोद अहवाइन हल्दी आम्रहरिद्रा पाठा सेधानोन गजपीपल अह्वीके पान प्रत्येक तो ४०, लेकर कूटकर हवालासे छानकर क्वाथमें डालना । और अभ्रक मसम रसहिंदूर, साबरसिंग मसम प्रत्येक तोला ८ डालकर पकाना । घोड़ा घट हो जब उसमें गुड रतल २०० डालकर पकाना । मात्रा दोसे चार तोला दी जाती है । उपर गरम दूध पीना । प्रतिश्याय पीनस नाकके अन्य रोग, क्षय कफ खास खाँसी हृत्प रोग, पेटके जन्तु आदिमें गुणकारी है ।

कलिंगादि नस्य—इन्द्रजव, हिग, काली मिरच, बेरकी लाख, कायफल, ऊँठ, बच, सहजनेके बीज, वायविहग सब समभाग लेकर महीन कूट कपडछान कर तपाइकी तरह सुंधना ।

पीनहर मिश्रण—१ रत्नपर्पटी तोला. ०१, साग्रमस्य तो. ०१॥, अष्टाशुत पर्पटी तो. १, चोसठपोसी पीपर तो. २, शाररविंश मस्य तो. १ सब साब पीस चार से छ रती सुख और शामको चित्रक हरीनकी के साथ लेना ।

पीनसहर मिश्रण—२ सुवर्ण वर्त मालती तोला. ०१, मुक्ता पिष्टि तो. ०१, अग्नि रस तो. १, शुक्ति मस्य तो. १, सेठ तो. १, सब साब घोटकर रखना । ४ से ५ रती सुख और शामको अमृत मल्लातक अजडेह के साथ दो घण्टे देना ।

प्रयोग—१ खसखस तो १० अग्निपर धीमी भाँचसे कच्चेपत्रके पकाना । हमेशा धावासे एक तोला तक खिलानेसे प्रतिश्याय मिटता है ।

२. केसर छोटी पीपल सेठ समभाग कूट कर रखना । उसमेंसे ३-४ रती लेकर गुठका पानी मिलाकर नाकमें पाँच दश बुँद छालसे नाकके बहुतसे गेग मिटते हैं ।

३ नवशर और कल्लिचुमा समभाग लेकर एक क्षोशीमें डालकर उसमें पानी डालना और मजबूत घूँच दे रखना । आवश्यकता हो जब सुँघना ।

४ कुष्ठ तोला ५, कूट कर उसमें १५ तोला बीड़ीका जरदा मिलाकर बीड़ी बनाना । पीछे वह बीड़ी पिलाना ।

५ वरुण-वायवरणाकी छालका वनाथ पिलाना ।

६ फायफल काकडाशिंगी पुष्कामूल सेठ पीपर कालीमिरच घमासा कालीजीरी सबको कूट कर १ तोलाका स्वाय पिलाना ।

पीनस हर धूम—शुद्ध हिंगूल तो ११, काली मिरच ते. ११, बारीक कर महीन पीस आकके दूसरे घोट कर महीन पीस दस दस इंचके कपड़ेके टुकड़े पर लपेट कर सूखाना । पीछे उसकी बत्तीको अग्नोमें जलाकर नाकमें उसका धुवा लेना इस प्रकार एक दिनमें चार पाँच दफे लेना । एक बती ४ दिन तक पहुँचाना ।

मरिचादि घट्टी—काली मिर्च, चित्रक, हरड, जीरा चीनकवाला, पीपली मूल कनकबीज, तपखीर, कथपा, अनारकी छाल सेठ सब समभागसे लेकर कूट कर कपडछान कर गुठमें एक भाशाकी गोली बनाना । दिनमें दोसे चार गोली गरम पानीसे लेनेसे पीनस मिटे । नाकसे गिरता हुआ पानी भीटे ।

रत्नपर्पटी—पारद तो. १०, गंधक तो. २०, प्रवाल पिष्टी, सुक्तापिष्टि, स्फटिक पिष्टी, गोमेद, वैकान्त, अम्रक अरु प्रत्येक तोला पांच लेकर पर्पटीकी तरह पकाकर ढालना, पीछे उसे पीटकर पतूरेके पानका रस, सहजनेका रस, चित्रकमूलका क्वाथ और अदरकका रस प्रत्येकको एक एक भावना देकर सूखा कर रखना । नात्रा २ से ४ रती शहदसे नाकके सब रोगमें, छातीके रोगमें खांसी आस संप्रहणी प्रदर प्रमेह आदि रोगोमें गुणकारी है ।

नास्यारोग हरी घटी—पारद गंधक अम्रक अरु, विषायरा अकलकरा चोपचीनी दूधिया बब, चित्रकमूलको छाल, इलायची तज लवंग, सेठ पोपर मरी कायफळ पुष्करमूल, जवासा, सब समभाग लेकर कूट कर तुलसी रस और अदरक रसकी दो दो भावना देकर दो रतीकी गोली बनाना । दो से चार गोली पानीसे अथवा चित्रक हरीतकी अथवा कंटकारी अवलेहसे देना । नाकके सब रोग, खांसी, आस, स्वरभंग, हृदयरोग, दवा आदिमें बहुत फायदा होता है । पूतिनस्य, नाकमें पून-पून, नाकका पाक, छींकका रस, सुगंधको नहीं पहिचाना नाकका, दाह, आसका रुधिर, नाकका ज्वर, नाकका मस मांसभूँद, नासुर, नाकसे रक्तस्राव आदि नाकके रोगोमें, गुणकारी है ।

कर्णरोग कानके दर्द

कारण—कानके बाहरका भाग, अंदरका भाग पड़दा अदिमें सूजन होकर पंढा होती है। पस गहता है, शूल निकलता है। और ऐसे दूसरे भी दर्द होते हैं। कानमें चीज फंकर आदि घुस जानेसे कान पकता है। वायु का प्रकोप होता है। पीछे उसमें पित्त कफका संघट्ट होनेसे अनेक प्रकारके उपद्रव होते हैं। मस्तक पर चोट लगनेसे, कानपर हाथकी थपट (चोट) लगनेसे, जलमे डूबकी मारनेसे, कानमें घण होकर पकनेसे पूय पस और पानीका स्राव होता है और अन्य भी रोग होता है। -

कानका शूल—(चसका)-बारदीसे बारिच-वर्षाऋतुकी हवासे, ठंडा पवन लगनेसे, ठंडा पानी कानमे जानेसे, कानमें मसा होनेसे, कानमें बहारकी कोई चीज जानेसे कारणों से होता है।

कल्याण तेल—लशुन, इद्रायणके फल, मूली(मूला), को सूखाकर को हुई राख, सौंफ सुवादाना, अदरक, हिंग, घोंठ, बच कुछ देवदार, सधजनकी छाल, रघौत, संवलक्षार, जवाक्षार, सज्जीक्षार, बौदलवण, सेंधानेन, मोक्षपत्र, नमक, नागरमोक्ष प्रत्येक, चार चार तोला लेकर कूटकर उसमें इन्हे इतना नलीके स्थंभका रस और उतना ही गौमूत्र, डालकर और दससे बारह रतल पानी और दस रतल सरसोंका तेल और एक रतल निवृक्ष रस डालकर घबघा साथ पकाना। पानीका भाग जल जाय जब कपड छानकर रख छोड़ना। कानमें डालनेसे कानका शूल, स्राव और अन्य दर्द मिटता है।

प्रयोग १ घोंठका पल लींछाका रस तोला २० में सरसोंका तेल तो. २० डाल पानीका अंश जल जाय जब कपडछान करना। कानके शूल दर्दमें कानमें डालना।

प्रयोग २ आंठके पीलेपान पर एरंड तेल लगाकर अभिपर गर्म कर हाथसे मसल कर रस निकालना जरा गर्म कर कानमें डालनेसे कानका शूल मिटता है।

प्रयोग ३ बच और चिरायता (करीयातु) दो दो तोला लेकर पानीमे घिसकर १० तोला सरसोंका तेलमें पकाकर वह तेल कानमे डालना शूल मिटे।

प्र ४ बेज(वृषभ)कामूत्रा गर्म कर कानमे डालनेसे कानका शूलपीडा मिटता है।

कान पकना कानसे पूय- पस निकलना

कारण—कोई वस्तु कानपर लगनेसे, शीतळा आदिकी कमजोरीसे बच्चोंको बहुतकर यह दर्द होता है, बड़ेके क्वचित् हि होता है।

प्र १—कल्याण तेल अथवा शर्णाश्रित तेल कानमें डालना और कान हमेशा साफ करना।

प्र २ सखीकट तोला १ को गोमूत्रमें पीसकर २० तोला धरसोके तेलमें पकाना । यह तेल छाननेसे छाव बंध होता है ।

प्र ३ उंटकी पसलकों हड्डी मलाकर मसम करना । पीछे कागजकी नलीसे यह मसम ४ से ५ रत्ती फूंकमार कानमें डालना ।

प्र ४ मजीठ देवदार से छानेन हीन कुछ प्रत्येक चार चार तोला लेकर बकरीके मूत्रमें पीस रखनी जेना कर उपमें सरसोंका तेल तोला ४० पकाना पानीका अंश जल जाय उप रख छोड़ना । कानमें डालनेसे कानका पाक पत्र अच्छा होता है ।

कानका मसम—यह कभी आँखसे देखा जाता हो इतना नजोक होता है और कभी अंदरके भागमें होनेसे दीखता नहि । इसका मूल पतला अथवा मोटा होता है । सख मोटा थल आवाज पत्र रहना आदि चिन्ह होते हैं । इससे बहिरापन (शुष्य) भी होता है । कल्याण तेल अथवा कर्णामृत तेल अथवा महानारायण तेल कानमें डालना और रत्न पर्पटी २ रत्ती कर्णरोग हरीवटी २ गोली साथ मिलाकर चिराकहरीतकी १ से २ छोटी चम्मच के साथ देना ।

कानमें चहारकी चोख खुस जाना—कानमें काइ बीज आदि चीज खुस जानेसे पीटा जाती है पौनकारीसे या अन्य बाधन से निकालनेकी कोशीश करना कर्णामृत तेल महानारायण तेल आदि डालना ।

कानमें नाद—आवाज (भणकारा) कानमें मोरली (गोमूत्री) बजती हो ऐसा और दूसरे प्रकारका आवाज हुआ करता है । यह बात प्रकोपसे होता है । महानारायण तेल, कर्णामृत तेल कल्याण तेल आदि डालना और चारिवादि गोली और कर्णरोग हरीवटी शिरो रोगहर अवलेह के साथ देना ।

बाधिय-बहिरापन—कानमें मेल भर जानेसे पक्का द्रव्यसे, काइ बीज खुस जानेसे, पक्का मोटा होनेसे, पक्कने, मस्तिष्कके रोगसे शरीर बड़ावल्या ओरतीकी प्रभव कुछ सूतिका रोग, बुखार ताप रोकने लिये चिनाइश अगर क्विनाइन मिश्र पक्का अधिक उपयोगसे अथवा हाथका तमोचा लगनेसे, अथवा पक्का अवाज सुननेसे कमजोरीसे यह पद होता है ।

बिरुव लेक—मोली(मिलकके पत्ते) रतल १, अपामार्ग चार तोला ५ गोमूत्र तोला ५० बकरीका दूध तोला ५०, बिरुव मूल अरणी मूल बड़ी कटहरी मूल गोखर मूल अइसके पान प्रत्येक आठ आठ तोला । सब छूट कर सप हूय जाय इतना पानी डालना और सरसोंका अथवा तिलका तेल रतल ५० डालकर पकाना पानीका अंश जल जाय जल कपडकान कर रखना । कानमें हमेशा डालनेसे बहिरापन मिटता है ।

वाय्वियंहर मिश्रण—सुवर्ण वसंत मालती तोला ०१, रत्नपर्पटी तोला ०१, सप्तमृत पर्पटी तोला ०१॥ अमृत भस्म तो. १, साबर सींग भस्म तो. १ छेटी पीपल तोला २ सब साथ घोटकर रखना । प्रात काक ३ से ४ रती सौभाग्य छुठी के साथ अथवा अमृत मिलातकके साथ देना । अथवा ३ से ४ रती शङ्ख अथवा मृग हरीतकी १ से २ छेटी चम्पचसे सेवन करना ।

प्र १ एरंड पत्र बिल्वके पान मूलीके पान, सहजनेके पान टाकके फूल प्रत्येक बीस बीस तोला लेकर उसमें सरसोंका अथवा तिलका तेल तो १२० डालकर पकाना । सबपान कढ़क हो जाय जल स्वांशीत होने देना कपडछान कर रखना कानमें हमेशा सोती धक्त थोड़ा गरम करके डालना । बहिरापनमें लाभ होता है ।

प्र २ निगुंडीके पानका रस निष्कास कर ५ से १० बुंद कानमें डालनेसे बहिरापन मिटता है ।

प्र ३ प्याजका रस तो. १०, पुदीना (फोदीना) का रस तो. १०, तिलका या सरसोंका तेल तोला २० डालकर पानीका अंश जल जाय जब कपडछान कर रखना । कानमें डालना । बहिरापन मिटे ।

प्र ४ उट (नर) के पिशाबका बुद कानमें डालनेसे एक महीनामें बहिरापन मिटे ।

कुमिकर्ण—कानमें पड़ होनेसे और सड़ा होनेसे जंतु पड़ता है । अगर मच्छी (मछिका) कानमें बैठनेसे जंतु होता है जब मगजमें दर्द होता है । कानमें छुजली आती है और कानमें भार जैसा लगता है ।

कुमिकर्णारि तैल—कट्हारी (सफेद वस्त्राग), सोंठ गोबर मूरी, वायविष्ण, वच, तिलपत्नी प्रत्येक पांच पांच तोला, निगुंडीका मूल अथवा बीज १० तोला, अमर वृक्षकी पान १० तोला सबको पानीमें पीस खड़ी जैसा बनाकर सरसोंका तेल तोला ४० डाल कर पकाना । पानीका अंश जल जाय जब कायमें डालते रहेनेसे जंतु निकल जाता है ।

प्र. १ नीमके पत्तोंका रस तोला २०, बडोफटहरीके फल तोला २ केसर भर उसमें तिलका तेल तोला २० डालकर पकाना । पानीका अंश जल जाय जब कपूर ठोड़ा ०६ डालना । यह तेल कानमें डालनेसे कानमें जंतु घुस गया हो वह निकल जाता है ।

प्र. २ शिंकातरा एलिया (जो क्वारपाठासे बनता है) तोला ५ को अमर वृक्षकी पानके रसमें घोटकर उसमें सरसोंका तेल तोला २० डालकर पकाना । पछे वह तेल कानमें डालनेसे जंतु निकलता है ।

प्र. ३ प्याजका रस निकालकर कानमें डालनेसे कानमें घुसा हुआ जंतु निकलता है ।

प्र. ४. करेड़ा (जो हाकके रूपमें खाया जाता है) उसके पानका रस कानमें डालनेसे बर्गा खजूरा आदि जंतु निकल जाता है ।

कानमें ग्रन्थी

बिल्व—कानमें किसी वस्तुका घाव लगनेसे ग्रन्थी या गठ होकर पकता है और लाल पीला छुन युक्त घाव निकलता है और शूल जैसी पीड़ा होती है । पिप्प प्रकोप हो तो जलन और दाह होता है ।

कर्णामृत तेल—केली के स्वभका रस तो. ४०, नींधुका रस तो. ४०, नौमूत्र तो ४०, मुलेठी मूल तो. ८, दाहहृत्वी तो. ६ अभिया हलदी तो ४, अरणीमूल बहुवायुकी छाल, छोटी कटहरीका मूल और फल, प्रत्यानाक्षी (दाहवी) का मूल और फल, देवदार जयाखार, रजनीखार वीडलवण, कलिहारी, वायविडग, सेंधानेन, नमक, सौंफ (सुवादाना) सहजनेकी छाल बच, सारीश, कुण्ठ, पारद, गंधक प्रत्येक दो दो तोला । आकके पानका रस तो. २० । सब साथ मिलाकर उसमें तीलका तेल अथवा सरसौका तेल रतल पांच डालकर पकाना । घानीका अंश जल जाय कपडछान कर रखना । कानका शूल, आवाज कर्णनाद, कानपकना, कानमें जोबजंतु या बीज घुसजाना, बहिरापन, कानकी सूजन कानका मसा आदिमें उत्तम गुणकारी है ।

कर्णरोगहारी घटी—(स्वर्ण युक्त) रससिंदूर तो. ४, पारद तो. २ मंथक तो ४, अन्नक भस्म तो. ३. लोह भस्म तो. ३, शिलानित तो. ५ शुभ्र तो. ६, स्वर्ण भस्म तो ०॥, ताम्र भस्म तो १, सारिवा, रासना, गुंजामूल तज, तमालपत्री, इलायची सेांठ पीपल, मरी टंकण सेंधानेन संचल प्रत्येक दो दो तोला, सब साथ कुटकर भांगरा शिरीष और अगस्य (अगधिया) के रसकी एक एक भावना लेकर घागुंज जैसी गोली बांधना । मात्रा ३ से ४ गोली पानी के साथ देनेसे कानके सब दर्द मिटते हैं ।

पृथ्यापृथ्य—कानके धब दरदे में साधा खुराक लेना। कान पर कपडे के गोटेसे शोक करना । दस्त कब्ज रहता हो तो सादा जुलाब लेना । कानपर कपडा लपेट रखना । ठंडा पानीके स्नान मही करना । पर्स खाता हो तो हर बखत कान साफ करना और रुईका फोआ कानके आगे रखना । कानमें उपर लिखे हुए कोई भी तेल डालते रहना ।

स्त्रीयोके रोग

स्रो जब १३ से १५ वर्षकी तृणावस्थाकी ओर जाती है तब प्रतिमास ऋतु आता है। वह ३० साल तक अर्थात् ५० वर्षकी आयु तक चालू रहता है। प्रसवसे पीछे दो छ या बार महीना के पीछे ऋतु आता है। स्तनमास करनेवाला बच्चा गुजर जानेसे ऋतु बल्दी आता है। शोक रद्द हो चिता दस्तकी बच्ची अर्जुण पेटके जलु इत्यादि कारणोंसे ऋतु अनियमित या कम आता है। इषापानी स्वभाव संसारमुख, संसारकी सुरुदुःखमय घटना, रोग, मानसिक भाव या शोक आदि कारणोंसे भी ऋतु अनियमित होता है। ऋतु के दिनेमे नीरागी स्त्रीके ८ से १० तोला तक और प्यादासे ज्यादा २० तोला तक खून गिरता है। परिश्रम करनेवाली प्रायः स्त्रीयोका खून कम पड़ता है शारीरिक श्रम नहि करनेवाली कमजोर शरीर वाली हरनाफिरना नही करनेवाली और आगम गुराही या गदी तकिया पर बैठे रहने की आदतवाली शहरोंकी स्त्रीयोके खून जगता पड़ता है। ऋतु तीनसे सात दिन तक आता है। प्रथम ऋतुके समय स्त्रीको थोड़ा ताप पेट कमरमे दर्द, जननेन्द्रियमे सूजन, भार स्तनमें दर्द आदि चिन्ह देखते हैं और ऋतु आनेके पीछे सब चिन्ह स्वयंही बंद हो जाते हैं।

१ नष्टोत्पत्ति अल्पावधि अनात्पत्ति—ऋतु न आना, ऋतु कम आना, ऋतु बंद हो जाना.

कारण—पांडुरोग, मनमें चिता शोक उद्वेग, दस्तकी बच्ची अर्जुण मंडाग्न वायुका प्रसेप शरीरकी कमजोरी किसी भी रोगसे हुई अगच्छि कृमि विकार अतिविषय ऋतुके समय खून अधिक गिरना, शरीर, खूनका बिगाड, कुष्ठरोग, अंडाशय न होना या अंडाशयमें गर्भाशयमें दुष्टभागमें किसी रोगका होना आदि कारणोंसे यह दर्द होता है।

चिन्ह—ऋतु के समय प्रतिमास पेडु में नाभिके नीचे) मंठा दर्द होता है। और घंट के साथ ऋतु आता है। वैद्य ही दूसरे महीने भी होते हैं। कई मास के पीछे खूनका अभाव होनेसे गर्भावान हुआ हो अंधा दिखता है। दस्त पिशाचका खुलासा नहीं होता गर्भस्थान की गाजु में प्रस्थि जैसा दिखता है। बुखार आता है। वमन होता है। गर्भाशयमें ऋतुका अभाव होनेसे गर्भाशय मोटा दिखता है। इस दर्द से ऋतुका पांडु होता है। आंखें होठ मुख फीका पड़ता है। मुख पर थोड़ी सूजन मालूम होती है। मिरमे दर्द भूख बंद निद्रा बंदी, छातीमे थोड़ा दर्द, वमन और सांधोंमे थोड़ा दुःख होता है।

पश्यापश्या—लौकी सारे शरीरमें खोपरेकी अगर सरसोंका तेल मर्दन करना और नाभिके नीचेके भागमें सारे पेटमें जयादा मर्दन करना। ऋतु के समय ठंडा पवन ही लेना। ठंडे पनीसे स्नान नहीं करना। धीमा और ठंडी शरीर पर लगने नहीं देना। मन प्रीतिमें रखना शरीरको थाराम देना। परिश्रम नहीं करता। दस्त निशाय साफ आवे ऐसीआ आहार विहार रखना। ठंडा रातवासो खुराक नहीं खाना। मांस बंध करना घो कम खाना।

२ कण्टातव-पीडितार्तव

कारण—गर्भस्थानकी वक्र स्थिति, अतिविषय, दस्तकी वजह, वायुका प्रकोप नेत्र, अजीर्ण वसुधावृद्ध (कम महिला में) गर्भका गिरजाना, शरीर लगना, प्रसव के पीछे किसी रोगका होना, इस प्रकार ऋतु (आर्तव) को विकृत करनेवाले अनेक कारणोंसे यह र्द होता है।

चिन्ह—ऋतु के समय कमरमें र्द शूल, मस्तक पीड़ा, बेचैनी होती है। यह र्द कमरसे लेकर पेटमें होकर जाघ (Thigh) तक फलता है। यह र्द होनेके पीछे एक दो दिनमें ऋतु आता है। ऋतु आवेके समय कमल सूजन-वाला और मृदु दीखता है। वातकोषके पीडितार्तवमें ऋतु आनेके पहिले एक दो दिन तक बारबार पीड़ा होती है। और प्रसवकी वेण (labor pains) तरह र्द होता है। कई वकत यह पीड़ा असह्य होती है। साथ-मस्तक र्द हिचकी चक्कर आनेकी जैसे चिन्ह भी मालूम होता है। ऋतु आने लगता है जब ये उपद्रव कम होने लगता है। गर्भ रहने के पीछे ये सब उपद्रव बन्द होते हैं। बहू स्त्रियोंके इन उपद्रवों के कारण गर्भ नहीं रहता प्रत्येक मास में ये उपद्रव थोड़ा बहुत प्रमाणमें होता रहता है। उष्ण उपचारसे शिकसे तैल के मर्दनसे वेदना कम होती है और ठंडे उपचारसे बढ़ती है।

३ शोकाशय पीडितार्तव—खून जमनेसे अथवा गर्भाशय पर शोथ होनेसे ऋतुके समय पीड़ा होती है। सूजन से गर्भाशय के मूत्रका रास्ता सङ्कुचित हो कर ऋतु आवे होनेमें बाधा होती है और पीड़ा होती है। कष्ट के साथ बाह्य निकलता हुआ खून गांठा गांठा वाला और चापनी जैसा घट होता है। गर्भाशय पीछेकी ओर या आगेकी ओर झुकनेसे और बाहरकी सूजनसे गर्भाशय जड़ हो जानेसे अथवा अरमुर्खका स्तकोच होनेसे संयोग के समय पीड़ा होती है। ऋतु के समय नाभि के नीचे के भागमें र्द होता है। कगर और

आँध में दर्द होता है और ऋतु अच्छी तरह आ जाने के पीछे यह पड़ा कम होती है। फलवाहिनी के मार्ग में अवरोध होनेसे और अङ्घ्राय के विकारसे भी पीडितार्थ होता है।

पृथ्यापृथ्य—गर्म पानीसे पवन न लगे ऐसे स्थानमें स्नान करना। गर्म पानीमें भरे हुये टबमें गले तक गरम पानी भरके बाफ देना। पीघना पानी भरना, रंघाइ बनाना चकूकी पीघना, कूटना इत्यादि घरकामकी कसरत करना। नाभि के नीचे के भागमें कपड़े के गोटेसे अथवा रन्धरी बेगसे श्लोक करना। ब्रह्मचर्यका पालन करना। दन्त पिशाच साफ हो औषध औषध लेना। रातराखी सूखे वायु करनेवाले अन्नपान स्नाना नहि। मधुर पदार्थ कम खाना जागरण करना नही। आहार विहार निद्रा और मोत्रन में नियम रखना। एक सप्ताहमें या ८ से १५ दिनमें १ उपवास करना। अजीर्ण नहो इस प्रकार भूख के प्रमाण में खुराक लेना।

पलीयादि गोली—एलवा (शिकेतरो एलियो) जवाखार, कवारपाठमें पकाइ हुई छोड़ भस्म, सेधानोन, वायबिडग, इन्द्रायणका मूल प्रत्येक ६५ दस तोला, घब कूटकर कवारपाठाके रसमें चोट कर तीन रतीकी गोली बनाना। दिनमें ३ से ६ गोली पानीके साथ देना। दो तीन गोली जननेन्द्रियमें रखना। कष्टार्थ, नष्टार्थ, पीडितार्थ मिटता है और ऋतुका खुलासा होता है।

ऋतुकरी बटी—सोठ, निशोय, हीराबोल, हिंण, सेधानोन, चित्रकमूल, इन्द्रायणका मूल, इन्द्रायणका फल, जवाखार, सज्जीखार, टंकण, हल्दी समुद्रफेन प्रत्येक एक एक तोला और शिकेतरो एलियो तो. १३ घब कूट कर पानीमें चना जैसी गोली बनाना। दो से चार गोली देनेसे चढ़ा हुआ ऋतु आता है।

प्रयोग १—इन्द्रायणका मूल-६ से ८ इंच जननेन्द्रियमें रखनेसे ऋतु आता है।

प्र २—सोठ पीपल कालीभिरच मारगी समभाग कूटकर ०१ से ०५ तोला लाल तिल तोला ५ को कूट कर उसके कवाचके साथ देना।

प्र ३—इन्द्रायणका मूल तो. २ पानी रतल १ में पकाना। पाव से रहनेसे कपडछान कर उसमें तिलका तेल २ से ४ तोला मिलाकर पाना।

प्र ४—तुलसी करफ तो. ०१, बडी धौक (वरियाळी) और मजोठ, एक एक तोला कूट कर सब साथ मिलाकर उसका कवाच करे उसमें १ से २ तोला खाना मिलाकर पिलाना।

३ रक्तप्रदर—अत्यार्तव (लोहिवा)

कारण—गर्भाशयमें अशुद्ध या प्रवाही होनेसे, लोके अंडकोशमें सूजन होनेसे, शरीरमें खून ज्यादा बढ़नेसे, प्रसवके पीछे गर्भाशयका संकोच अच्छी तरह न होनेसे, गर्भाशयमें जखम होनेसे प्रसवके पीछे गर्भाशयमें निगाह रह जानेसे या दाहसे खून गिरता है ।

चिन्ह—रुग्णभारिक रीतिसे ऋतुसमयमें जितना रक्तस्राव होना चाहिये उससे ज्यादा समय तक और अधिक प्रमाणमें होता है । कुछ कुछ दिनोंके पीछे ऋतुस्राव हुआ करता है । शरीरकी स्थूलता या कृधताके कारण भी अधिक रक्तस्राव होता है । प्रसवके पहिले या पीछे जो रक्तस्राव होता है उसे अत्यार्तव कहते हैं । खून ज्यादा गिरनेसे शरीर कुछ फिकका पीला सफेद होता है । मस्तकमें दाह होता है, तृषा लगती है, चक्कर आता है, दम चढ़ता है, मुख पर सूजन होती है, भूख कम लगती है, दस्त कंज रहता है । अति रक्तस्रावसे मृत्यु भी हो जाता है ।

पथ्यरपथ्य—तभीयतको माफक हो औषध साधा खुराक लेना । गर्भ सीले दाह करनेवाले, दस्त कंज करनेवाले पदार्थ या औषध नहीं लेना ।

रक्तस्राव हरी खटी—पारद तो. ६, गंधक तो. ६, जामुनमें पकाई हुई केहूअम तो. ५, अज्रक भस्म तो. ५, रौप्य अमश्वेत तो. ४, रसोत, चौलाईका मूल, कूड़ाकी छाल, केलीका कंद, कमलका कंद, कमल बीजकी गरी, इन्द्रजव खातावरी, बुधिया हेमकंद अथवा बाराही कंद प्रत्येक चार चार तोला लेकर निबिबत्त मिलाकर कूबेकी छालका और अंजन वृक्ष (बियो) की छालके कवाथकी एक एक भावना देकर दो गुंजा प्रमाण गोली बनाना । १ से ६ गोली तक पकता हुआ चावलके पानीके साथ एक दो चम्मच शहद डालकर देना । रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर आवि मिटते हैं ।

बोल पर्वली—पारद तो. ४ गंधक तो. ४ की पर्वली बनाना पीछे चोटकर उसमें हीगबोल तो. २, खेरबार कथ्या शिलाजीत, यशद भस्म प्रत्येक एक एक तोला साथ मिलाकर अंजन वृक्ष (बिजय चार-बियो) के छालकी कवाथकी भावना दे कर रख छोड़ना । मात्रा ३ से ६ रती शहद और मखनसे अथवा श्ववनप्राश जीवनसे अपवा कूटजावलेहसे देना । छातीसे, दस्तसे गिरता हुआ रक्त और रक्त प्रदर श्वेत प्रदर आदिमें गुणकारी होता है ।

प्र. १—केरडा (करीर) की छड़ को जलाकर वह भस्म और सोनागेर समभाग मिलाकर ८ से १० रती शहद के साथ या पानीसे देनेसे रक्तलावमें लाभ होता है ।

प्र. २—कध्या, माजुकर (कीटाळी माया) अमृता सरस् श्वेत लेप, सेमलका गोंद, बदन्ती धूप, दूधेरी (दूधी) धूप, खैरका गोंद, सफेद मुशली, तालमखाना, डाकका गोंद या कूक सब साथ कूटकर सबसे दूनी (द्विगुणीत) शक्कर डाल कर रखना । आधासे १ तोला मात्रा पानीसे ७ दिन तक देना । सब प्रकारके रक्तलावमें फायदा होता है ।

पलवि गुटीका—इलायची तो ५, नागकेशर तो १॥, इमली (चिंचा भामली) के फलका गर्म तो १०, सोनागेर तो. ५, गोखर तो. १५, पाषणमेद तो १५, सब साथ कूट कर भांगरेके रसमें ३ से ४ रतीकी गोली बनाना । १ से २ गोली देनेसे सब प्रकारके रक्तलाव मिटता है ।

प्र. ३ रक्तलाव हर मिश्रण—सुकता पिछी तो. १, महाचक्रला तो १, जवाहर मोहरा तो १, सप्तमृष लेह तो १, अमृता सरस् श्वेत तो ३, प्रवाल चद्रुतो तो. १, सबसाथ मिलाकर शीशीमें भरना । ६ से १० रती तक दिनमें दो दफे च्यवनप्राश अथवा कुटभाबलेह अथवा गुलकद अथवा शहदके साथ देना । किसीभी जगहसे गिरता हुआ खून अटकता है ।

प्र. ४—नीली (गली)का मूल ०। से ०॥ तोला पकटे हुए चावलके पानीके साथ देना ।

प्र. ५—चौलाइका मूल, रसेत, समभागमें कूट कर रखना, ०। से ०॥ तोला, चावलके पानीसे दश दिन तक देना ।

प्र. ६ मुलैठीका मूल, सफेद चदनका चूरा, वैरकी लाख, कमलका फूल, रसेत (रसाजन) सब समभाग कूट कर रखना । ०। से ०॥ तोला तक शहदके देना ।

प्र. ७. सहतूत (शेतूर) के पके हुये फल हमेशा पाच से छ तोला खाना । अथवा पके हुये अंजीर ८ से १० नंग खाना । १५ दिनमें रक्तलाव बंद होता है ।

श्वेत प्रदर सोमरोग

कारण—किसी भी-भागको कमजोरीसे, गुप्ताभागको स्वच्छ नहि रखनेसे, गुप्ताभागमें दाह होनेसे अतिविषमसे, उपदंशसे, प्रमेह और उपदंशवाले पुरुषके संगसे, अति मदिरापानसे, बहुत तीखे, बहुत खट्टे पदार्थ बहुत जल्द खानेसे अत्रण पर भोजन करनेसे, गर्भापातकी दवा लेनेसे, बहुत शोकसे, बहुत उपवाससे, मन पर आघात लगनेसे आदि कारणोंसे श्वेतप्रदर सोमरोग और रक्तप्रदर होता है। यह बढता है जब प्रवाहकी तरह बहार निकल कर कपडा बिगड़ता है। इस खावका रंग मन्न भिन्न कारणोंसे काला, पीला सफेद मिश्रित रंगका घट्ट और चिकना भी होता है।

चिन्ह—कमलके भागमें सूजन होती है। सूजन ज्यादा हो तब प्रवाह चौकना और घट पड़ता है। कपडे पर पीला और लाल दाघ पड़ता है। शरीरमें थोडा बहुत बुखार रहता है। कमर और जाघमें दर्द रहता है। नाभी और जीवेके भागमें मार रहता है। पित्त हरवहन होता है। गर्भस्थानमें थोडा बहुत दर्द होता है। भूख कम लगती है। अन्नका राचन कम होता है। दस्त अनियमित रहता है। कमर और शिरमें दर्द, अशक्ति चेहरामें फोकापन मनमें उदासीनता, कामकाज करनेमें हरने फिरनेमें अनिच्छा, पेट वायुसे फूलना इत्यादि चिन्ह मालूम होते हैं।

पथ्यापथ्य—जड़ोंतक हो सके ब्रह्मचर्य रखना। मद्य मदिरा, मांसगरिष्ठ पदार्थ, ठंडे पदार्थ वासी पदार्थ नही खाना। साधा लघु खुराक लेना गरम पानीसे नहाना। दूधका खुराक रखना। गुप्ताभाग दो दोफे गरम पानीसे धोना, ठंडा पानी अच्छा लगे तो उससे धोना। आहार विहार नियमित रखना।

प्रदरांतक लोह—लोह भस्म जामून में पकाई हुई तो २०, पारद, गंधक रससिंदूर वगैरह, रौप्य भस्म, यशद भस्म शंख भस्म, अफीम, इन्द्रजौ, वायबिडग, सेमलका गोंद, बन्बुलका गोब, नौमका गोब प्रत्येक ढाई ढाई तोला और बन्बुल के पके हुये फलडा रस तो १। सब साध मिलाकर कूडेकी (कुट्टा तक) के कवाथ में घोट कर दो गुज प्रमाण गोली बनाना। ४ से ६ गोली शहर के साथ देना। सफेद लाल पीला प्रदर में किसी स्थानसे हृदय गुदा या इन्ग्रीसे होता हुआ रक्तप्राय बंध होता है।

प्रदरारि लोह—लोह भस्म तो १६, पारद तो ८, गंधक तो ८. स्वर्ण माक्षिक भस्म तो १ धंग भस्म, यशद भस्म, रौप्य भस्म, प्रमेह दो दो तोला लज्जालु (रीक्षमणि) का पंचांग तो १२, सेमलका मूल, पाठा, बीलीफल

(बिल्व) का गर्भ आमकी गुठली इन्द्रजौ, पाषाणमेद रसौत, कमलकंद, अतेश, शतावरी, दूधिया हेमकंद, सोंठ काली प्रास, मुलैठीका मूल, महापलाका मूल दाककर, बहुफली, नागरमोथ, घाईके फूल प्रत्येक आठ आठ तोला, सबधाब घोट कर कुदेही छाल अशोककी छाल बट (बट) की छाल उकुवर (गुलर) की छाल प्रत्येक के कवाथकी मावना देकर ३ रतोकी गोली बनाना। मात्रा ३ से ६ गोली चामरके ओसामण के साथ अथवा शहदसे देना। सब प्रकारके प्रसर, सोमरोग, पानी गिरना गुहा भांगकी सूजन खुजली पुष्पका वीर्यसाव आदिमें उत्तम गुणकारी है।

अशोकारिष्ट—अशोककी छाल पकड़ा शेर ३० को कुचल कर उसमें पकड़ा ६ मण पानी डाल कर पकाना। आधा पानी रहनेसे एक लकड़ीकी पीपमे भर उसमें शकर या पुष्ट मण २ और घाई के फूल शेर ढाई, द्राक्ष शेर १० और कमलफूल चमेली के गुलाबका फूल, शतावरी, असगंध, बलाभूष आमुतकी गुठली अद्वी जीरा, कलौजी जीरा सफेद चंदन, नागरमोथ, सोंठ दाद हर्दो, कपूरकाचली, गुलरके मूल सेमरके मूल, कथ्था प्रत्येक शेर आधा आधा डालना और कौठीका मुंह बंध करना। दर सप्ताहके पीछे हिलाना और मुख बंध कर देना डेढ़ महिने के पीछे सबको कपछान कर अच्छे बर्तनमें भर देना। मात्रा ४ से ८ तोला दिन भरमें पिलाना। सब प्रकारके प्रदर रक्तप्राव, अतीसार, मुग्धा संवर्णी खून बवासिर पित्तके दर्द, पुष्पों के सब प्रकार के प्रमेह आदि मिटते हैं।

सोमजीवन रस—पारद तो ५ में सोनाका धक तो. १ मिलाकर पीछे उसमें गंधक तो. १० डालकर कजली करना पीछे उसको पपाटी बनाना। उसको घोट कर उसमें पूर्ण चंदोदय लोह भस्म अभ्रक भस्म, समुद्र शोषके बीज प्रवाल पिष्ट, माणिक्य पिष्टि स्वर्ण माक्षिक मरम बंग भस्म, यशद भस्म बन्बूलका गोंद कौरका गोंद सेमलका गोंद प्रत्येक एक एक तोला मोटी पिष्टि छोटी हरद. शकर, बन्बूलके पके हुये फलका रस, लवंग इलायचो कालिमिरच सफेद चंदन रसौत मुलैठी मूल बिल्वफलका गर्भ प्रत्येक दो दो तोला रस साथ मिलाकर सेमलके मूलका और नीमकी अंतरछाल के कवाथकी एक एक मावना देकर उसमें कस्तुरी तो १ मिलाकर दो रस्ती गोली बनाना ॥ मात्रा ३ से ६ गोली पानीके साथ देना। सब प्रकार के प्रदर सब प्रकारके प्रमेह पारीकी क्षीणता, कृशता कमजोरी स्त्रीका अद्रुतशेष, गर्भाशयका विकार हिस्टोरिका दिमागकी कमजोरी पुरुषके वीर्यदोष आदि मिटते हैं।

यूनानी जुलाब— गुठे बनफशा तोला ०॥, गुलाबका फूल तो. ०॥, चुबमे खतमी तो. ०। खवाजी तो. ०।, फकडीके बीज तो. ०।, मीठीभावक (सोनामुखीके) पत्ती-मेना) तो. ०॥ सब साथ कूटकर ८० तोला पानीमें बवाब करना । ३० तो. पानी रहे जब उसमें अमलतासकी गीरी तो. ५ और सुखेय तो. ३ रातभर भिगो रखना पीछे प्रातःकालको कपडछान कर उसमें बदामका तेल तो ०॥ डालकर पिलाना । औरतोके फूलके उपर सूजन होकर दाढ़ चलन होता हो उसमें तथा पुष्पोंके इन्द्रियमें दाढ़ चलन होता हो उसमें पिलानेसे जुलाब लगकर पीछा शांत होती है ।

प्रदरके और प्रमेहके सामान्य उपाय

प्र. १ मूलीके पानका रस तो. ५ में एक खट्टा निंबू निचे'ड कर पिलाना । इस प्रकार तीन दिन पिलानेके पीछे खैरका गोद, डाकका गोद, मोचरस, समुद्र कोषके बीज और शक्कर सब समभाग घोट, पावसे साधा तोला पानीके साथ देना । ७ से १४ दिन देनेसे औरतोका सफेद साव और पुष्पोंके घातुलाव मिटता है ।

प्र. २ बन्बूलकी पत्ती, बन्बूलके पके हुये फल, छोट्टीहरद और शक्कर समभाग कूटना । पावसे साधा तोला प्रातःकाल रातभासी पानीके साथदेना ।

प्र. ३. रातरानीके पानको पीसकर सुवारी जैशो गेली बनाना । मलमलके कपड़ेमें रबकर गुल्लभागमें रखना । यह रातरानी ४ से ५ फूट तक लंबी होती है, फूल सफेद होता है, उसकी सुगंध रातको फैलाती है, उसको हरणी भी कहते हैं ।

प्र. ४ बैरकी, लकड़ी (बदरीकी) राख ०। तोला, अशोककी छाल तो. १, आइका फूल तो. ०। सबको साथ कूट कर बवाब कर दाढ़द डाल कर पिलाना ।

प्र. ५ मूलीठीका मूल कमल फूल प्रत्येक भाषा भाषा तोला पानीमें पीस दाढ़द डालकर पिलाना ।

प्र. ६ चूँकाइका मूल तो. ०॥, रसीत तो. ०॥, चावलके औसामनमें पीस कर पिलाना ।

प्र. ७. पके हुये गुलरके फल अबबा पके हुये अजीर हमेशा १० से १५ खाना ।

प्र. ८ भूइ इमली (भूभ्यामलकी) तो. ०॥ पानीमें पीस दाढ़द डालके पिलाना ।

सगर्भा स्त्रीका रोग

१२ वर्षोंको उम्रके पीछे और ५५ वर्षकी उम्रतक स्त्रीको प्रतिमास ऋतु आता है रजःस्त्रवा होनेके पीछे १६ दिनके बीचमें याने ४ थे दिव स्नान करने के पीछे १२ दिनके बीचमें गर्भाधान होता है ।

रजःस्त्रवा नियम—ऋतु दर्शन होनेके पीछे तीन दिन तक अश्लेषा ब्रह्मचर्य पालन करना । जर्मोनपर सेना । एकांत स्थानमें रहना । गर्म मसाला वाला तीखा बहुत खट्टा जलद खुराक नदि लेना । याचा खु मोजन करना । गाना नहि । बदन करना नहि । शरीर पर तेल माजौष करना नहि, बालमें तेल डालना नहि । स्नान करना नहि । आंखोंमें अंजन भरना नहि । दिनको सेना नहि । रातको जागरण करना नहि । उच्च स्वरसे बोलना नहि । हास्य करना नहि । बहुत खेलना नहि । बहुत परिश्रम करना नहि । शरीरपर चमन लेना नहि । जो निषेध किया है, करनेसे गर्भको हानि पहुंचती है । रजःस्त्रवा स्त्री बदन करे तो बच्चाकी आंखें खराब होता है । तेल मालीसे कुछ रोनी होता है । दिनको सोनेसे उषण, कठोर तम शब्द सुननेसे बधिर, हास्य करनेसे गीत ताल और जीमके रोगवाला, बहुत बोलनेसे प्रलापी, परिश्रम करनेके पागल बच्चा होता है । पुरुष रजःस्त्रवा स्त्रीका संग पहिले दिन करे तो आयुष्यका क्षय होता है । दूसरे दिन करे तो बुद्धि मग्न होती है, तीसरे दिन करे तो शक्ति नाश होता है, इस लिये ४ थे दिन स्त्री ऋतु स्नान करे पीछे द्वि स्त्री संग शास्त्री समत है ।

कैसी स्त्रीका संग नहि करना ? ऋतु आता हो किसी रोगसे पीड़ित हो, काम वासना न हो, मलीन हो, सगर्भा हो, क्रूर हो, अथवा स्त्रीसे संग नहि करना । पुरुष भी जिसने बहुत मोजन किया हो, धैर्य रहित हो, सुधातुर हो किसी रोगसे पीड़ित हो, पानीकी प्यास लगी हो, मलमूत्रा दिका वेग आया हो ऐसे पुरुषने स्त्री संग नहि करना चाहिये ।

गर्भाधानके नियम—भोरतने ४ थे दिन स्नान करके पहिले पतिका मुख देखना । शास्त्रमें लिखा है कि स्त्री ऋतुस्नानके पीछे पहिले जिसका मुख देखती है उसके आकारका गर्भ रहता है । पति गैर हाजर हो तो पुत्रका या पवित्र पुरुषोंकी लक्ष्य कराना । ४ थे दिन ऋतुलाव बंद हो गया हो तब स्त्रीने उत्तम मद्य अलंकार पहिनकर सुगंधी पदार्थ गरीबोंके लगाकर पौष्टिक खुराक लेकर पुत्रको इच्छावाली स्त्रीने पतिके पास जाना । पुरुषने भी स्त्री को पर प्रेम स्नेह रख कर पौष्टिक पदार्थ खाकर सुगंधी पदार्थ शरीर पर लगाकर अच्छे ढंगसे पहिन कर स्त्रीके पास जाना ।

गर्भाधान—शुक्र और ऋतुका संयोग होनेसे उसमें जीव प्रविष्ट होकर गर्भाधान होता है । अंतर्वायुसे स्त्री पुष्प के बीजका दो या तीन विभाग हो जानेसे दो या तीन बच्चा बेलटा बेलटा होता है । वीर्य अधिक होनेसे पुत्र, ऋतु अधिक होनेसे पुत्री और शरीर समान होनेसे नपुंसक होता है ।

गर्भ रहनेके तात्कालीक लक्षण—यह है कि स्त्रीको शुक्र शोणितका स्त्रव-महि होना अमर लगता है सायल फटता है प्यस कगे वेचेनी हो गुह्य भागमें स्फुरण हो पछे दिनेग्नि स्तनोका अमर भाग सूखता है, रोमांच होता है, आंखोंका पापणो धीचाया करे अच्छा खुगाक लेनेपर भी वमन होता रहे, अच्छी चीजकी सुगंध भी पसंद न हो, दूसरे या तीसरे मासमें लड्डुके आकारका गोलाकार गर्भ होतो पुत्र समझना और लंब गोला आकार होतो गर्भमें पुत्री समझना ।

गर्भिणीकी स्थिति—गर्भाधान के पछे मुत्ताकृति फिर जाती है । ऋतु बंद होता है । गर्भाधान के पछे कई स्त्रियोंको अंक डेढ मासमें वमन होने लगता है वह ४ से ५ मास तक रहता है, किसीको गर्भ-घोडा-मद जलन के साथ पिशाब हर बखन होता है, दस्त बहुत करके पड्न रहता है, गर्भ रहनेके पीछे कमलका मुख बंद हो जाता है ।

आहार विहार—साधा जलदी पाचन हो अथवा लघु तथीयतमें माफिष हो देना लेन । ठंडा रातवाहीं खाना नहि । खाद शक्करका मिष्टान्न कम खाना । दास पीना नहि । शीनेमा नाटक कम देखना । जागरण नहि करना । दो समय भुज हो । इतना प्रमाणसर खाना कोई भी चीज गरमा गरम खाना पीना नहि । पान सुपारीको आदत होतो भोजन के पीछे और चा दुध पीनेके पीछे खाना । शक्य होतो चा काफी कोसे बंद करना यदि बंद न कर सके तो एक या दो बखन हि पीना । शरीरको बहुत परिश्रम न पड़े ऐसा घरका कामकाज करना । पांवसे ज्यादा चलना नहि, पौडना नहि, कुदका मारना नहि, वृक्षपर या बहूत लंची जगड पर चढ़ना नहि । मलमूत्रका वेग रोक्ना नहि । बिल गाढीमें या घेडार मुटाफरी करना नहि । स्मशानमें उजळ घर शुन्य देवालय में जाना नहि । मलमूत्र रखना सब प्रकारकी रहन रहनमें नियम रखना । सगर्भा स्त्रीको दस्तकी बच्ची हमेशा रक्ती है सो दस्त पिशाब साफ हो यह ध्यान रखना । कुचका खुगाक ज्यादा रखना । शामको हमेशा मुंग चावलकी खीचडी दुधके साथ खाना । मरकी कैलेरा जैसा संक्रामक रोग चलता हो । बच्चासे दूसरे स्थानमें चले जाना । दूसरी स्त्रीका प्रसव देखने नहि देना ।

गर्भस्त्राव-गर्भपात (कसुवावट) तीन या चार मासका गर्भ गिरे वह गर्भस्त्राव कहा जाता है। चौथे माससे गर्भके शरीरका बघारण हो जाता है सो चार में नव मासके बीचमें पड़े वह गर्भपात याने कसुवावट कहा जाता है। स्त्रा-बाह्यर विहारकी समाल न रखे तो तीन मासमें गर्भस्त्राव हो जाता है गर्भ-स्त्राव अथवा गर्भपात के पीछे खून अधिक गिरनेसे और वह बंद न होनेसे मरण भी हो जाता है। मल मूत्रका वेग रोहनेमें, भयजनक वस्तु देखनेमें कप्रातसे चोट लगनेसे गिरजानेसे भयजनक या आघात जनक समाचार अकस्मत् सुननेसे क्रोधमें गिरजानेसे, अप्रिय वस्तु देखते रहेनेसे बहुत भार उठानेसे भयकर स्त्री आनेसे शोच क्रोध भय उद्वेग बहुत दृश्य पढ़न ताप उपवास विषैक वस्तु खा जाना अजण जुगाव भयंकर अवाज बिबिलोका कडाका आदि कारणोंसे गर्भस्त्राव या गर्भपात हो जाता है।

चिन्ह—गर्भस्त्राव या गर्भपात होने वाला हो जब प्रारम्भमें गर्भाशय में दर्द पीडा होती है। पीछे रक्तस्राव होता है। पीडा शनैः शनैः बढ़ती है नाभि के नीचे के ठोना बाजू में पीठ में पीडा होती है। साथमें फटता है। यह दर्द वह गर्भको सहार निकालने वाली वेण है। बहुत रक्त के साथ गर्भका पिंड निकल जाता है। गर्भ तीन मासका या ज्यादा मासका होता पीडा ज्यादा होती है। साथ छुट्टी होती है मुखमें अभी नहि रहता मुख सूखता है, पानी बहुत हरबखत पीना पड़ता है। ताप चढ़ता है पेशीना बहुत छुटना है। इस समय कपकपा मुख खुल जाता है वेण्य बढ़ती है और गर्भ गिरजाता है। गर्भ मरा हुआ आता है अगर बाहर आकर मर जाता है। गर्भ पेटमें मर जाय तो स्त्रीको अंदर भार बोझ जैसा लगता है औषित गर्भ भार रूप लगता नहि गर्भ मर जाय तो नाभिके नीचेका भाग ठंडा होजाता है, शरीर कांपता है, बच्चा फराकता नहि है, पेटकी उचाई कम होती है। ऐसे चिन्ह होता गर्भको तुल्य बाहर निकालनेका प्रयत्न करना इसमें प्रमाद करने से मृत गर्भ के विषसे स्त्री मर जाती है। गर्भ निकल जाने के पीछे कई स्त्रीओको ओरका कुछ भाग अंदर रह जाता है किसीको गर्भका आवरण रह जाता है किसीको दुर्गंधयुक्त स्त्राव, गर्भाशयमें सूजन, अत्यातंत्रव, मस्तकमें चक्कर भूख मंद आदि चिन्ह दिखते हैं।

पथ्यापथ्य—स्वच्छ कमरेमें स्त्रीको रखना कसुवावटसे अमुक स्त्रीको ऐसा हुआ अमुक स्त्रीको ऐसा कष्ट हुआ इत्यादि बात नहीं करना। घराहट हो अथवा वाते नहीं करना। हिमत् देना, खुराक साधा जल्दी पाचन हो ऐसा

लघु देना। बाजारकी मीठाई चीकना पदार्थ नहीं देना। कसुवावटके चिन्ह बहुत जोर में न हो तो गर्भका स्थिर करने के उपचार करना। यदि वेण सङ्गत हो और गर्भ नहीं टिकेगा अथवा मलुप होतो तब उस पीड़ासे हल्दी मुक्त हो तो ऐसा उपचार करना। जिस स्त्रियों ३-४ महिना श्रुत चढ़ जानेसे गर्भ रहनेका भ्रम होता है यदि ठीका हो तो गर्भाधान के समय घमन सुखार आदि चिन्ह नहीं होते यदि मासिक चढ़ गया होगा तो रक्तस्राव होनेसे दर्द कम होता जायगा और कसुवावट (गभपात) होनेसे होगा तो रक्तस्राव के साथ दर्द बढ़ता जायगा।

गभपाल रस—पारद गंधक मंड़र सुवर्ण माक्षिक रौप्य प्रवाल और शुक्ति प्रत्येककी भस्म चार चार तोला सोठ पीपल काल मिर्च जंजीरा शहमीरा अनिया तनू इलायच नगकेसर शुद्ध कुचला रससिद्ध, लेह भस्म बलाभीज हरद, आवला, शतावरी असगंध देवदार, अमोया हल्दी कुटकी प्रत्येक दो दो तोला लेकर कुटकर नीमके पत्तके रसमें गुंजा प्रमाण गोली बनाना। मात्रा १ से ४ गोली। सर्भी छोका अतिसार मरह दस्तकी बच्ची सूजन पेटका दर्द घमन ताप खाँसी आदि दर्द मिटते हैं और हनेशों एक दो गोली लेनेसे गर्भका रक्षण होकर नव महिनेके पीछे सुखपूर्वक प्रसव होता है।

गमेन्दु होखर—प्रवाल चंद्रपुटी तो. १० शिलाजीत, अन्नक भस्म, पारद गंधक रससिद्ध लेह, यशद वंग, माक्षिक और रौप्य प्रायेककी भस्म, जायफल, जावित्री, शतावरी बलामून असगंध कुटकी सोठ, काल मिर्च, हल्दी कर्पूर काचनी, मूलेठी मूल प्रत्येक तीन तीन तोला सब साथ मिलाकर भागरा, अरहड़ी, ब्रह्मी प्रत्येकके रसकी एक एक भावना देकर गुंजा प्रमाण गोली बनाना। मात्रा—१ से ४ गोली शहद दूध या पानीमें देना। सर्भी छोके सब रोग मिटते हैं और सुखपूर्वक प्रसव होता है।

गभचिन्तामणि वृहत् (स्वर्ण युक्त)—पारद, गंधक सुवर्ण भस्म, लेह भस्म, रौप्यमाक्षिक भस्म, वंग भस्म, अन्नक भस्म, मुक्तापिष्टी प्रायेक चार चार तोला और प्रवाल चंद्रपुटी आठ तोला सब साथ मिलाकर ब्रह्मी, अरहड़ी भागरा और खरपिपली (रतवेनिया) काला हसराण (हसपदी) प्रायेककी तीन तीन भावना देकर एक गुंजा प्रमाण गोली बनाना। शहद मखन दूध अथवा च्यवनप्राशके साथ देना। सर्भी छोके सब रोग मिटते हैं और बच्चा नीरोगी जन्मता है। जिसको गर्भाशयमें विषय (रतवा) या गर्भके कारणसे गर्भ का ह्रास अथवा पात

हो जाता हो अथवा प्रघातके पीछे तुरन् बच्चा मर जाता हो त्रीन् खोने शक्य हो तो गर्भ रहनेके एक या अधिक पड़ियेसे यह औषध चालू करना और बच्चाका जन्म हो जय तक चालू रहना । अनुमानके लिये अष्टम चूर्ण एक से दो माशा इय औषधके साथ लिया जाता है ।

सप्तमी स्त्रीके भिन्न भिन्न रोगके घरेलू उपचार

१ तार—एरुण्ड, गिलोय मज्जीठ रणचदन, मन्दार समभाग कूट कर ॥ में १ तोलाका बराब कर शहद मिला कर पिठाना ।

२ आनिम्बार और संत्रणो आमकी अंतराल जामुनकी अंतराल दोनों कूटकर १ तोलाका बराब कर शहद मिलाकर पिठाना । अथवा सुशर्ण पपटी १ से २ रती शहदसे देना अथवा वाला भड़्डी, रक्तचदन मूलीठी मूळ, घनिया गिलोय, नागरमोष धमाका, पपट (खट्बलियो पीतापट्टे) अनीस सब समभाग कूट १ से २ माशा शहदसे देना ।

३ पेटका शूल—हिंमाष्टक अथवा लरण भाभर १ से २ माशा देना । अथवा शंखवटी १ से २ गोली अथवा बृहद कण्ठाद १ से २ गोली पानीसे देना ।

४ स्नाखी—सिगापलादि चूर्ण १ से २ माशा अथवा कंटकारी अरुंड १ से २ छेटी चम्मच खिलाना और खेपारादि गोली मुखमें रखना ।

५ रक्तस्राव—पद्माचन्द्रकला २ से ४ गोली शहदमें देना । अथवा प्रशाक चंशुपटी १ से २ रती च्यवनप्राश के साथ देना । अथवा गर्भपाल १ से २ गोली शुक्रद साथ देना ।

छातीका दाह—अम्लपित्तक १ से २ रती च्यवनप्राशके साथ देना । अथवा आंवलाका मुरब्बा खिलाना । अथवा सप्तामृत लेह २ रती और मुक्ता पिष्टि १ रती च्यवनप्राश अथवा शहद के साथ देना ।

७ दस्तको कब्जी—आरोम्यवर्षनी १ से २ गोली पानीसे देना । अथवा मधुविरेचन चूर्ण १ से २ माशा पानीसे देना । अथवा शमशानी नं ३ २ से ४ गोली पानीसे देना ।

गर्भस्राव तथा गर्भपात रोकनेका उपाय

१ कमलका फल कालातिल, कमल बीजको गंरी शकर सब समभाग कूट कर २ से ३ माशा शहदके साथ देना ।

२—शिगोटा कमल फूल काली दाख, मूलीठी मूळ रसेत, समभाग कूटकर २ से ३ माशा शहदसे देना गर्भका पेंबण हो ।

शुष्कगर्भ-नागोदर

कारण—शोक, उपवास, रुग्ण चर्याका सेवन, प्रत्यमागसे अतिस्त्राव, वायुका प्रकोप गर्भ रहनेसे विरुद्ध आहार विहार इत्यादि कारणोंसे गर्भ की वृद्धि न होकर कुछ महिनेतक गर्भाधानके चिह्न दीखाइ देते हैं और पीछे गर्भ सूखने लगता है और गर्भका हलन चलन बंद होता है। गर्भके आच्छादन (पट) के बीचमें रक्तस्राव होकर गर्भ पिड़ जैसा बन जाता है। लेकिन उसमें जीव रहता है। उसे नागोदर अथवा गर्भका छोट हो गया ऐसा कहते हैं।

चिन्ह—प्रारम्भमें तीन चार महिनेतक गर्भाधान जैसे चिन्ह देखते हैं। पीछे अपनेआप ही बंद सूखता जाता है। अगर स्राव होकर सूखने लगता है। वमन स्तनमें दूध इत्यादि गर्भाधानके चिन्ह भी पद पड़ते हैं। यदि नागोदर (छोट) गिरनेका होता है तब गर्भपत जैसा चिन्ह दीखते हैं। यदि वह छोट गिर जाता है तो स्रको आराम होता है। किसी स्त्रीको पांच दश या पन्द्रह महिनेके पीछे छोट गिर जाता है और किसी किसीको दश पन्द्रह या बीस महिनेके पीछे वह छोट पल्लवित पुष्ट होता है। पीछे यच्चाका जन्म होता है। कई स्त्रीको छोट पेटमें होने पर भी प्रत्येक महिने या न्यूनाधिक समय पर श्रुत दीखता है और किसीको श्रुत बंद होता है। यदि छोट पेटमें हमेशाके लिये रह जाता है तो फिर उस स्त्रीको संतान नहीं होता।

पथ्यापथ्य—छोटवाले गर्भका पतन होनेका उपचार करना। कमलका मुख चौड़ा हो ऐसा उपाय लेना। इससे पहिले गर्भ पहिलेकी नाइ बढने लगे ऐसे गर्भपापक उपाय करना।

शुष्क गर्भका पल्लवित करनेका

(पालववाना) उपाय

१ शतावरी असगंध केलीका कद बलाका मूल माष पणी मुदगपर्णी गोक्षुर रास्ना सारिवा प्रत्येक पाँच पाँच तोला और गुणक तो. २०, कालीद्राक्ष तो. २०, सब साथ कुटकर एक एक माषाकी गोलो बनाना दोसे चार गोली दूध या पानीके साथ देना।

२ रास्ना और गुणक समभाग लेकर दोनोंके समान शतावरी मिलाकर दो से तीन माषा दूध या पानीसे देना।

३ चक्षुषमा २ गोलीमें दो माषा शतावरीका चूण मिलाकर शहदके साथ देना और दूधका खुराक रखना।

४ गन्नेन्दुशेखर तो ०॥, गमं चितामणि वृहद् तो ०॥, अटाम' तो ४॥
सब साथ मिलाकर १ से २ माशा गड़से देना । दूधदा गुणक रखना ।

५ महालक्ष्मी विलास २ रती, लक्ष्मणा डोह २ रती, नट्टप्रभा १ गोली
और अष्टवर्ग २ माशा सब साथ मिलाकर दूध या गड़से देना ।

६ रत्नमोगोत्तर रस १ रती, वज्रत कुडुमाक' २ रती, शतावरी २ माशा
मिलाकर च्यवनप्राग अथवा दूधसे लेना ।

७ कलौजों जीरा, नागदेणर, शतावरी, समभाग कुटका १ से २ माशा
दूधसे देना ।

८ कायक ६ से ८ रती दूधके साथ देना ।

९. उत्कटक (ऊटकंठ)की जड़ और मुलैठीकी जड़ समभाग कुटकर २
माशा पके हुए चावलके पानी (ओषधमण) के साथ देना ।

१० मयूरशिखा, गुदका फल और विषयरा (शुद्धारक) समभाग कुटना ।
१ से २ माशा गायके दूधके साथ देना ।

छेड़ निकालनेका उपाय

छेड़ याने पेटमें सूखा हुआ गम' या पेटमें भरा हुआ गम' या गम'के
भरनेकी तैयारी हो उस समय छोड़के बचानेके लिये गम'को बहार निकालनेका
आवश्यकता रहती है । छेड़ पेटमें सूखकर अनेक उपाय करनेके पीछे पल्लवित
नहीं होगा और ज़िंजीव दायकी तरफ छोड़के कष्ट देता है और छेड़ सूख कर
अंदर भर गया है ऐसा चिह्न मालूम पड़ता है तो छोड़के बचानेके लिये
जीवित या मृत छेड़को निकालनेका उपाय करना ।

प्रथम—१ विषखापरा (जिसको गुजरातीमें साटोडो भी कहते हैं) उसको
छाँकी जड़ लेकर उसके साक भीषी करके उपर शिकेतरी एलीचो और खीरणी
(रायण) के बीज दोनोंको समभाग लेकर कुटकर कपडछान कर पानीमें म द्वा
बोझ बनाकर उस बड़ पर लेप करना और सूखावा । दूधसे पद्रह लेप करना और
प्रत्येक वखन सुनाते जाना । पीछे उस जड़के अंतमें दोरा बांध कर वह जड़
छोड़के गुह्य भागमें रखना । सात दिन तक करनेसे सूखा या मृत छेड़ निकल
आता है । हमेशा नयी नयी जड़ रखना ।

२ नीमकी अंतर छाल, सहजनेकी अंतर छाल और गुण्ड प्रत्येक एक
एक तोला और साँरकी साँचली ०॥ तोला । सबको चारीक कर पानीमें गोलों
बनाना । उस गोलीकी धुइ गुणमागमें देना । उरी गोलीको उबालकर क्वाभ
कर पिलाना ।

३ बाँधोके द्वारा पान तो २ और में घाने न तो. ०। दोनोंके वासीक पीछे चर पिलाना ।

४ इन्द्रायणका मूल, सौफ (सुवादाना), मेथीदाना गाजरका बी, हरे बांसकी जड़, सज्जोखार कुर्जीमन, हरद, प्रयेक ढाई ढाई तोला लेकर उसको सात पुष्पी चवाना । हमेशा १ पुष्पीका क्वाथ कर पिलाना । इस प्रकार ७ दिन तक बिलाना ।

५ इन्द्रायण मूल लंबा लेना उसके उत्तर एलियाका लेना करना । पीछे उसके अंतने दोरा बाँध कर वह पृथ भागमें रखना ।

६ गाजरका बी तो ०॥, गड़ तो ०॥ दोनोंको फुट कर तिलका तेल तो ५ में डाल पकाना । उसमें गुड़ ते. ५ मिला कर खिलाना ।

सूतिका (प्रसूता-सुवावडीकी मावजत-प्रसूतिशास्त्र)

बच्चाका किसीभी प्रकारकी बिना तकलीफ प्रसव हो वह सुखप्रसव कहा जाता है । किसी प्रकारकी तकलीफसे और परेशानीके साथ प्रसव हो वह कष्टप्रसव कहा जाता है । गर्भ टेढ़ा हो अगर यथा योग्य स्थान पर न हो और गर्भागमनी दूसरी किसी क्रिया के कारण कापकुष करना पड़े या दूसरी तरह गर्भका बाह्य निकलना पड़े उसे विषम प्रसव कहा जाना है । कष्ट बहुत और (मेढी-अपरा) अंदर रह जाती है । गून बहुत पड़ता है और बच्चे कष्टसे या शास्त्रविगमे या अंदर हाथ डालकर गर्भको बाहर निकालना पड़ता है ।

प्रसव-प्रसूति सुवाडके लिये

प्रारंभिक व्यवस्था

सुवावड (प्रसव) करनेका कमरा स्वच्छ हवा प्रकाश आवश्यकता अनुसार आ जाया करे ऐसा होना चाहिये । शांतकाल हो तो कमरे में गरम गालीचा या सेत्रांजी बिछाना सूतिकाको मलमूत्रोत्सर्गके लिये कमरेमें ही व्यवस्था करना और सुत साफ कर धूप करना ।

नववा मास बैठे अब सुयाणी (दायण) के साथ परिचय कराना और हर वक़्त आती जाती रहे अनजान अपरिचित सुयाणी दायण अकम्पात आगाने से ओरत को सकोच शरम आती है इसकारण वेण्यका वेग कम होना संभव है ।

तेयार रखनेकी वस्तुएँ-बिछाना चटाई ओछाड गर्भ और ठंडा नाल बांधने के लिये वा तीन सुतर या रेशमका दोरा, नाल काटने के कातर छरी या अस्त्रा, नालको बांधने का पपड़ाका पाटा, पेटपर बांधनेका पाटा, चच्चा के लिये छोटी गोइडोया कपडाका टुकड़ा (बाळोतीया) चच्चाको स्नान कराने के लिये बड़ा

घरतन, तिलवा तेल बच्चापे गिटो बनेके निते कपडा, आरने उपलब्धो (छागानी) सगही और आवश्यक दव डया इत्यादि वस्तु तैयार रखना चाहिये ।

प्रसव होनेका मुख्य आधार गर्भाशयका संकोच है । और पेटके स्नायुओं के दाबकी है । वेण आना यह गर्भाशयका संकोच है । और वह कमलकी ओर दबाव करता है । गर्भाशय तपरके भागसे संकुचित होता हुआ नीचे उतरता है । वेण आती हैं जब कमर और पृष्ठभाग पीठ में दर्द होता है । गर्भस्थान में पटले पदकी थेली में पानी भरा रहता है वह गर्भाशय कहल जाता है । इस कारण गर्भको धक्का नहि लगता । वेमे हि प्रसव के समय गर्भाशय के मुखको थोडा-विस्तृत करनेमे वह सहायक होता है । गर्भके शरीर का मुख्य अंग मस्तक है वह बडा हो या रोगसे बडा हुआ हो तो प्रसवको कष्ट होता है । गर्भाशय में मूत्राशय गुदा और वस्ति है । वह अनेक छोटे बडे अवयव और दूसरे स्नायु बन्धनोंसे भरा हुआ है । उसके उपर के भाग के आगमन द्वार और निर्गमनद्वार कहते हैं । आगमन और निर्गमन के बीचके मार्ग को वस्ति प्रदेश अथवा वस्ति कक्षा कहते हैं । प्रसव के समय कमल का मुख ६ से १० घंटा में पूर्णविस्तृत होता है ।

वेण्य आने जाता है जब सबबाजु के दबाव गर्भाशय कमलकी ओर करने लगता है और जिसे जैसे वेण्य बढी जाती है जैसे कमल विस्तृत होता है । इस प्रवाही पदार्थ के कारण कमल के सब व्यास पर समान दाब होकर बिना तकलीफ खुलता जाता है । कमल संपूर्ण खुल जानेसे गर्भाशय की थेली टूटती है । कई बखत कमल पूर्ण विस्तृत होनेके पहिले हि थेली टूट जाती है जब गर्भके मस्तकका दाब कमल पर होता है इससे कमल पर शोथ होता है । पहिले प्रसवसे कमलका भाग बहुत कठिन होता है इस कारण पहिले प्रसव में (पहिलो सुत्रावडमें) संको जयादा कष्ट होता है । कमल स्वाभाविक कठिन होता है । यदि उसपर शोथ सृजन हुई होती विस्तृत होने में बहुत समय लगता है । कमल विस्तृत होने के पीछे गर्भको वस्ति पिंजरसे बाहर निकलने का है । गर्भाशय जोरसे संकोच पाने लगता है प्रारंभ की वेणसे काटता हो ऐसी पोंछा होती थी अब स्त्री करांजना पता है । अर्थात् अपनेसे बल धरना पडता है । पहिले मस्तक निकलने के पीछे दूसरे भागको निकलने में ज्यादा समय नहि लगता । कभी भ्रूणभाग फटता भी है परच पीछे थोडे दिनमें सज्ञ आ जाती है । बच्चा बाहर आ जाने के पीछे १० या १५ मिनट के पीछे वेण बंद पडती है बच्चेमें थोडा बहुत खून गिरता है । सं शिथिल हो जाती है । पीछे फिर मंद वेण आने लगती है जिससे रक्त प्रवाह के साथ ओर (सगा) बाहर पडती है । इस प्रकार गर्भका पूरा प्रसव १ से २४ घंटा में होता है ।

प्रसव करनेवाली स्त्री की रक्षा करनेके लिये प्रार्थना करना कि " हे बुद्धिमती बाई पृथ्वी पानी अग्नि वायु और आकाश प्रज्ञा विष्णु शंकर और शन्वतरि तेरी रक्षा करो । तुझे जल्दी गर्भसे मुक्त करो हे सुंदर मुखवाले बाई कार्तिक स्वामीसे रक्षा किये हुए पुत्रका तू प्रसव करे—हे श्री अमृत चित्रभातु चंद्र सौर उच्चैः प्रदा अग्नि वायु सूर्य वरुण देव यहाँ आकर तेरी रक्षा करो समुद्रमे निकाला हुआ अमृत तेरे गर्भको जल्दी पहार निकले " । पीछे स्त्री के हाथ में रक्षाके लिये श्री भुवनेश्वरीमांका भंगलसूत्र (नाडछट्टी) बांधना । स्त्रीको पहना तू धीरे धीरे उच्चैः नीचे आनेकी कोशांश कर । बिना वेण आये जोर कानेसे उच्चैः विकृत अगबाला होगा । तेरे मुखपर सुंदर कानि दिखती है सो तू जरूर पुत्रका हि प्रसव करेगी । इस प्रकार आनंद उत्पन्न करनेसे स्त्रीको शक्ति उत्साह और बल आता है । प्रसव होनेमे कष्ट होता हो तो कांडे सांपकी कांचलेका अथवा मैतफलका धुवा सोनीके देना ।

प्रसव हो जानेके पीछे मेलो—और न पड़े तो मोजपत्र कलीहारी कड़वीतुवी के बीज सर्पको कांचली कुष्ठ सरसों इनमेसे जो चीज मिले उसका धुंवा गुह्य भागको देना और पानीमे पीसकर गुह्य भागमे लेप करना । कलीहारीके मूत्रको देना बांधकर गुह्यभागमे रखना प्रसव जल्दी होता है । देना मजबूत बांधना और वह देना पहार पावके साथ बांध देना ताकी वह मूल अंदर न घुस जाय । जल्दी निकाल सके । मूत्रको अथवा छोटी पैपल और बच पानीमे पीस उसमे एरंड तेल मिलाय नाभो पर गाढा लेप करनेसे जल्दी प्रसव होता है ।

सूत्र प्रसव—नीचे के मंत्र पढ़कर ७ बके पानी मंत्र कर पलानेसे सूखसे प्रसव होता है ।

इहामृतं च सोमश्च क्षिप्रभानुश्च भामिनि ।

उच्चैश्च वाश्च तुरणो मन्त्रिरे निवसन्तु ते ॥

इदमभृतमपां समुवृत्तं वै लघुतर गभमिषं विमुञ्चतु स्त्रि ।

तदनलपवनाकवासवास्ते बह लयवर्णाबुधरे दिशन्तु शान्तिम् ॥

जुक्ता पाशा विषाश्चः मुक्ताः सूर्येन्दुरश्मय ।

मुक्तः सलभयाद् गर्भं पट्टि मां क्षिर मा चिर ॥

नीचे बताया हुआ पदरिया अथवा शीशा यत्र अष्टगवसे अथवा केसरसे काँचीकी धाली मे लिखकर स्त्री को बताना और उसमें थोड़ा पानी डाल वह पिलाना ताकि जल्दी प्रसव होता है ।

पद्धतिया यंत्र

८	३	४
१	५	९
६	७	२

त्रीशो यंत्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

सुखप्रसव चूर्ण—सोठ पीपल काली मिरच अजमोद रास्ना कुटकी सेमनान लीरा शाहाजीरा होंग अजवायन प्रत्येक पांच पांच तोला और अमगन्ध तोला २८ सब साथ कूट २ से ३ तोला चूर्णका क्वाथ कर पिलाना ।

सुख प्रसव लेप—पाठा कलहारी अइसी मूल अपामार्ग मूत्र मध माग पानी मे पंच गर्भकर नाभि जननेप्रिय और नाभि के नीचे के पेटके आजुआजु लेप करना और १ मासा को क्वाथ कर पिलाना ।

सुख प्रसव अजन—सोपकी कांचलीको गाय के दूधमे ३ घंटा भिगो रख सुखाना, पीछे उसको जलाकर राख कर उसको आंजनेसे अथवा घोड़े के नखड़ा बुचा गुह्यभागमे देनेसे जल्दी प्रसव होता है ।

प्रसवके पहिले सच्ची वेष्य उपडे जब सुयाणी (दायण)ने ज के पास रहना । स्त्रीके बाये पार्श्व (पडखे) सुलाना । स्त्रीका घूटन पेटकी ओर करना (द्वियुं बलावनी) पीछे सुयाणने अपनी स्वच्छ की हुई २ अंगुली चेनिमे डाल कर कमल तक ले जाकर अदर गरमी कितनी है, और पानीवाला पदार्थ कितना है और कमलका मुख कितना खुला है यह जानना । स्त्री सोती हि रहे गर्भमृतका स्वास होनेके पीछे प्रसवका समय हो जब पुष्प वाचक फल स्त्रीके हाथमे देना । स्त्रीके शरीर पर तिलका तेल मर्दन करना । गेहु बाजरीको गुडवाली राख गरम गरम पिलाना । स्त्रीके चीतो सुलाना । पावकी पेनी कुलाके लगे इसप्रकार पांव रखना । नाभिके नीचे तेल मर्दन करना । मोजपत्र और राखका धुवा देना । पसली (पार्श्व) पीठ कपर साथलमे गर्भ किया हुआ तेल मर्दन करना । कच्चा पार्श्वमे (पडखामेघुंस) गया हो तो धीरेसे हथेलीसे मर्दन का नीचे उतारना । वेष्य उपरा उपरि आने लगे जब योनिद्वारको तेल लगाकर उसका मुह विस्तृत करना । पीछे स्त्रीके धीरेधीरे बल करनेको कहना इस प्रकार प्रसव हो जायगा ।

प्रसन्न होनेके पीछे गर्भस्थानके दबाकर मजबूतना जिससे वह सँकोच पाकर पैरुमें एक पिंढी तरह जम जायगा और मेली-अपरा अलग होकर गुह्यद्रोमे आ जायगी । अक्षरत रूगे तो अंगुलीसे स्पर्श कर खावी कर मेंजीके अंगुलीसे स्पर्श कर ओरको ओर पढ (आवरण) को बाहर निकालना । बच्चा बाहर आजाने के पीछे दस मिनीट के पीछे एक दो वेण्य धाकर ओरको अलग निकाल देता है । यदि ओर न गिरे तो आवे घटे की राह देखकर अंगुलीया हाथ गर्भस्थान में डालकर ओरको बाहर निकालना । ओर न निकले जबतक स्त्रीके ब्रिये भय सङ्ग्रहना । बच्चाका श्वासेच्छात्र चालू हो जाय और मेली निकल जाय पीछे नाल काटना । अपरा-मेली वहार निकली न हो और नाल काटा जाय तो मेली कलेजेमें चढ़ कर शोका मृत्यु होता है । इसलिये यह ध्यानमें रखना कि मेली (अपरा) निकल पढ जानेके पीछे हि बच्चाका नाल काटना । नाभिसे ६ से १० इंच दूर पर नालको दोरा बांधना और उस बांधे हुये दोरासे दूसरा दोरा दो इंचके दूरीपर बांधना और उस दो दोराके बीचमें कातरमें या अन्नासे काटना । नाल काटकर बच्चाको एक बाजु रखना गर्भाशयमें पूर्ण सँकोच पाकर कठिन हो जब उस जगह अच्छी दई डालकर उपर पाटा बांधना । पाटा बहुत ढीला नहि और बहुत कठिन भी नहि, प्रसूता स्त्रीको अच्छा रूगे इतना तग बांधना । पाटा बांधकर प्रसूताको अच्छी चार पाइ पर सुठाना और गुह्यद्वारपर अच्छा कपड़ा रखना । वह थको हुई होनेसे उसे निद करने देना ।

ओर-अपरा को जमीनमें गाढ़ने के लिये १ हाथ गहरा खड्डा करना उसमें ५ सेर नमक डाल उपर ओर डाल ओर मेली के उपर ५ सेर नमक डाल उपर मिठी दालकर उपर मजबूत पत्थर दाबना ताकि जनावर मेली निकाल न सके । ओरको नमकके साथ गहरे खड्डेमें गाढ़नेसे वह बच्चा भाग्यशाली बुद्धिशाली धिद्वान चतुर होता है । यदि मेलीको जनावर निकाल खाजाय तो बच्चा कमनसीब भूख निर्मल्य बुद्धिहीन होता है ।

बच्चाको स्नान कराकर कपड़ा पहिनाना नालको कपड़ेमें बिटालकर उपर दई दाबकर उपर पाटा बांधना । प्रसूताके कमरेमें आजूबाजू घोंघाट नहि करने देना । उसके कमरेमें अंधेरा रखना रात्रीको कम प्रकाश वाला दिया रखना । उसकी पाख सुयाणीके सिवा किसीकी जाने नहि देना । निद करनेके पीछे वह हुशीयासीमें आती है । स्तिथको ४ चार दिन तक बिछानेमें सोती हि रखना, इससे गर्भाशय अपने ठिकाने आता है । बैठने देना नहि या खड़ी होने नहि देना । इससे

खून गिरनेका भय है। प्रसवके पीछे ६ से ९ घंटाके पीछे पिशाब काड़ेकी याद दिलाना। प्रसवके पीछे २४ घंटातक पिशाब बिछानेमें हि हो तो अच्छा। पिशाब करनेकी याद दिलानेका कारण यह है कि शुद्ध भाग जलनेके भयसे पिशाबको दब ये रखती है, इससे बुरा परिणाम होता है। प्रसवके पीछे उसे ४ घंटातक दन्त न हो तो एरब तेल ३ से ४ तोला देकर दस्त लाना। उन्हे कमरे में ठहा पवन आने न देना और उसकी चारपाई के नीचे छायाका मिर्चम अम्लि थोड़ा डाल कर शोक चालु करना। शीतकाल और वर्षा ऋतु हो तो कमरे में सफाई रखना।

प्रसूता को खान पान में समान रखना। प्रारम्भ में भारी गरिष्ठ पदार्थ खाने नहि देना। बाजरी या गेहू के आटा को घी में भुनकर गुठका पानी डाल बनायी हुई राख देना। भुख बढे जब गेहू के आटा का घी गुठ से बनाया शिरा खिलाना। बाजरी के आटा में घक्का मोन देकर नमक वाले पानी से रोटीका बनाकर वेगन मेथीकी भाभी के साग खिलाना। केर (करीर) अदरक हरी हलदी हिंग धनैया ओरा काजी मिरच वगैरे मन्नाला दाल शाकमें खिलाना। मुगकी दाल चावलकी खीचडी बनाकर काली मीरच वैसे वपार कर देना। १० दिन के पीछे काटलाका पाक खिलाना। मांस खाने वालोने प्रसूताको १ मास तक मांस खाने को नहि देना। शरीर वायु प्रकृति हो, ठंडी ऋतु हो तो पुराना अष्व अष्व मद्य थोड़ा देना। हमेशा महानारायण तेल अष्व तिलके तेलमें वायविडग और मालकांगनी बीजको पकाकर वह तेल हमेशा सारे शरीरमें मालीष कराना। प्रसूताको ९ या १० वे दिन पहिला स्नान कराना। खट्टा प्रदार्थ तेल इमली दही केले ककड़ी सीताफल जमरुख फनरु नीबू केरी वगैरे खानेको नहि देना।

प्रसूताका कपड़ा हमेशा बदलना, धोकर साफ रखना। आठ आठ दिनके पीछे शरीरपर हलदी मिलाया तेल मालीष कर गमजलसे स्नान कराना। स्नान कराकर तुं हि शरीर कोरा कर डालना। सगडी तैयार रखना शोक देना। २० दिनके पीछे हमेशा या एकांतरा नहाना। दो महिना बीतने पर चाहे जैसा वर्तन करना। ३ महिना पूरा हो जलतक ब्रह्मचर्य पालना। १ महिना तक दुध देना नहि। चायका ग्यसन हो तो गम मशालीवाला पानीका चाय थोड़ा दूध डाला हुआ देना। बच्चाको छोटी चार पाईमें अलग सुलाना। उसकी गोदडी या बालोतिया (बिछाने ढकने के कपड़ाका टुकड़ा) एक एक घंटाके पीछे बदलते रहना।

प्रसवके पीछे औषधीमे नीचे लिखी चीजोमेसे जिसको जो अनुकूल लगे आरामकरना हो वह देना । पहिले दिनमे खदार्वादि कत्रथ पिलाना प्रारंभ करना । ०॥ तोला क्वाथ के चूर्णमे २० तोला पानी डाल १० तोला रहनेसे कपड छान कर पिलाना । हमेशा प्रातः कालको १५ से २० दिन तक यह क्वाथ पिलाना । हमेशा खान पानके पीछे नमक चढाकर पकया सैफ (सुवादाणा) मुखवासके लिये खिलाना । शक्तिके लिये सुवर्ण वसंत मालती, महालक्ष्मी विलास, यवत कजुपाकर, अम्रक भस्म, पूर्ण चन्द्रोदयकी गोली आदिमेसे योग्य लगे वह शहरसे अथवा बीमार्य सुंठा अबलेइके साथ देना ।

बच्चेकी समाल-नाल-नारङा जो छ से दस इंच डुटी (नाभि)को लगा हुआ है उसपर रुई बांधकर पाटा बाँधना । पाटासे पेटपर दाब न हो यह ध्यान रखना । नाभिके उपर नालके मूलमे तिलका तेल हमेशा डालना । वह नाल ५ या ६ दिनके पीछे सुख कर गिर जाता है । बिचमे वह नाल खोँचा जाय तो बच्चा रोता है । और नमी भी उभर आती है । पीछे बच्चेके शरीरमे खून भर जानेसे आप हि बैठ जाती है । यदि नाल ज्यादा खोचा जाय तो नाभी (डुडो) पकती है । यदि नालको नाभीके नज्दीकसे काटे या घागा घिना बाँधे कटे तो खून बहुत गिरकर बच्चा मर जाता है । बाल लवा रखकर काटा जाय तो वह बच्चा दीर्घायुष बुद्धिमान नीरोगी रहता है । नाल गिर जाय जब शीशीमे रख शीशी पर बच्च की जन्मतिथि लिखना । बच्चा १० सालका हो जब तक बीमार पड़े तब यह बाल धीस कर पिलानेसे आराम होता है ।

बच्चाका जन्म हो उस समय थाली बजाना ताबे पतलकी थाली पर कीसी वस्तुको ठोकरकर अवाज करना । इससे वह मनुष्य कभी कीसी प्रकारके आवाज आदिसे डरता नहि है । जन्मके समय उसका शरीर चरबीसे भराहुआ चीकनाइ वाला होता है सो साबुनसे या रीठे के पानीसे गरम पानीसे स्नान कराना, पीछे दो दो दिनको स्नान कराना । बच्चाको एकराम प्रकाशमे नहि लाना । धीरे धीरे प्रकाशमे लाना । जन्मके पीछे ५-से-६ दिनतक गलसूदी पिलाना । गुड एक दो तोलामे ५ से ८ तोला पानी डाल पीघल जानेके पीछे कपडछान कर उध पानीमे गर्म किया हुआ गायका घी छोटी आधा से १ चम्मच डाल पानीके थोडा गर्म कर इइके फोयासे धीरे धीरे खिलाना । इससे ९ मास तक पेटमे जमा हुआ कास मल निकलता है । यदि मल नहि निकलता हो वह सारी जीदगी बिमार रहता है । कहावत है कि बच्चा पहिले दिन जिसके हाथसे गलसूदी पीता है उसके स्वभाव जैसा बच्चा होता है । बच्चा नवमासका हो जबतक घनगवना

स्तनपान कराना । पीछे धीरे धीरे खुराक पर चढ़ाकर घावण बंद करना । यदि स्त्रीको भीवमे गर्भाधान होता बच्चे को घावण छुड़ा देना । क्योंकि गर्भाधानके पीछे बच्चा स्तनपान करता है तो कपजोर बनता है । घावन छुड़ानेके पहिले गायको दूध थोड़ा थोड़ा पिला कर बढ़ाना और खुराक भी देना ।

प्रसूता—सूतिका सुवावडीके रोग

क्लेशाद्विषमाजीर्णाद्विषमात्स्वाद्यादयोग्यचर्यातः ॥
अद्वितोपवाशदेवात् कुपितैर्देवैर्भवन्ति विधिघरुज ॥
बलहीनतांगमदं काशो गुरुगात्रताय मुस्रघोष ॥
रोगाश्च सूतिकाया विषमा बहुकालकष्टशानारः ॥
क्षयसग्रहणोश्वासा पभ्यो रोगेभ्य एव जायन्ते ॥ र तं ॥

किसी प्रकारके दाहसे सूजनसे या अन्य कारणसे प्रसूताको ज्वर आता है, वह ४ से ८ दिनमें उतर जाता है । कभी लंबे दिन भी चलता है । प्रसवके पीछे २४ से २८ घंटाके पीछे ज्वर आता है । प्रसवके पीछे प्रसूता की कुत्चे दिनमें भारी गरिष्ठ खुराक खाने लगती है तो वह पाचन न होकर अजीर्ण होता है तब ताप लागू हो जाता है । प्रथम ठंड लगकर ताप चढ़ता है पसीना आता है । सिरमें दर्द होता है छाती में गभराहट ग्लानि मन उदासी वमन शरीर में रुक्षता दस्त कब्ज आदि चिन्ह मालूम होते हैं । पेटमें गर्भाशय में या आजु बाजु में दर्द होता है । पेट फुलता है जीभ सूखती है । जीभपर छारी लगती है । प्यास लगती है वमन होता है । खांसी कफ दम दन्त प्यादा होना अतिशय संप्रहणो शुल सांवाकी पीडा मस्तक में चक्कर रक्छ्राव गुह्य भाग में या शरीरमें खुजली सूजन कामला पांडु वाह आदि रोग प्रसूताको अनेक कारणोंसे होते हैं । ज्वररोग के साथ दूसरे जो जो आनुषंगिक चिन्ह दिखते हो उसपर विचार कर एक या दो चार औषधका योग कर देना । आगे लिखी दवायां प्रसूता के सब रोगों में गुण करती हैं ।

देवदारवादि कषाथ—देवदार बच कुष्ठ छोटीपीपल रोठ कालफल नागरमोथ सिरायता घनिया बड़ीहरद गजपीपर जमासा मोखद अतीस गिलोय कदवासंगी, शाहाजोरा कौबचबीज छोटी कटहरी मूल सब सम भाग लेकर कुटकर रखना ०॥ से १ तोलाका कषाथ कर पिलाना । प्रसव के पीछे दूसरे दिनसे २० दिन तक पिलाना । यदि प्रसूताको कुछ दर्द हुआ तो इस कषाथके साथ रोगके अनुसार औषधी देना ।

सुतिका मिश्रण १—अन्नक भस्म, महालक्ष्मी नारायण, सुवर्ण वसंत मालती, मुक्तापिष्टो, प्रताप लंकेश्वर, कस्तुरी सब सम भाग लेकर घोटकर पीसी में भरना पीछे हमेशा ३ से ४ रती सौभाग्य छुंठी अवलेह के साथ ऐक या दो समय देना खांसी संधिका दर्द चकका भ्रम छाती में घमराह आदिमें देना ।

सुतिका मिश्रण २—वसंतकुसुमाकर सुवर्ण भस्म सुवर्ण पर्पटी सुतलेखर सब सम भाग लेकर घोट रखना । हमेशा २ से ३ रती २ समय कंटकारी अवलेह से या वासावल्लेह से देना सुतिकाका दस्त अम्लपित्त कफजोरी छातीका दर्द आदिमें देना ।

सुतिका मिश्रण ३—रत्नभागोत्तर रस तो ०१, जय मंगल रस तो ०११, चोगराज रसायन तो १, सप्तामृत लेह तोला ०११, लेह पर्पटी तो १ शोलाजीत तो १ सब साथ मिलाकर ३ से ४ रती शहदसे अथवा च्यवनप्राश जीवन के साथ देना प्रसूताके सब रोगमें दिया जाता है

सुतिका रोगातक—पारः गंधक अन्नक भस्म मुक्तापिष्टो सावरसीन भस्म सेठ पीपल कालीमरीच लेह भस्म स्वर्ण माक्षिक भस्म प्रत्येक एक एक तोला और स्वर्ण भस्म ०१ पात्र तोला सब साथ मिलाकर घोटकर रखना मोत्रा २ से ३ रती सौभाग्य छुंठी से देना । प्रसूता स्त्रोका पेटका शुल छातीका दर्द चकर वायु पित्त प्रकोप आदि में उत्तम है ।

श्रीफलादि चक्रोष्ठ काटलु पाक—बबुलका गोंद तोला १०. खोपर्रा (टोपरा) तोला २०, बादाम गोरी पिस्ता सेठ प्रत्येक पाँच पाँच तोला बला चीज तो २, मेथी दाना चीमेर खसखस बडीशोफ (करीयाळी) सौंफ (सुवादाना) चोखर काली मुसली वाकुना धनिया तालमखाना अशोलीया बीज छेटी पीपल सफेद मुसली कौबज बीजकी गिरि काली मिरच प्रत्येक एक एक तोला जायपत्री पीपरीमूल तज जायफल तातावरी नगकेशर तमालपत्र वायविडग कुली जन जीरा हलदी प्रत्येक आधा तोला गोंदका आटा ८० तोला घी १०० तोला गुड १०० तोला सबका त्रिविध पाक बनाना । सुगंध प्रव्य अलग कूट रखना चह उपर छिड़कना । गुड घोंका पाक कर सब डाल कर थाळी में दाब देना या लड्डू बनाना । ४ से ६ तोला प्रसूताके हमेशा खिलाना । शक्ति आती है मुख लगती है कोई दर्द नहि होता ।

शुठगादि वज्रोसु काटलु पाक—सोठ तोला ४० चोप चीनी समुद्र-
चोप यीज घनाघा डोह भस्म चीनी के बाला खेरसार मुशळी तगर समीमस्तकी
भगर गजपीपल वायव्हिंग विषायरा आयपत्री अकरकरा केसर अजवायन-
कलोजीजीरा पाषणमेद तपस्यौर चंदनसफेद कालीमीरच जोरा भांग प्रत्येक
एक एक तोला चषक चिथा असगव दाहलदी लवंग जायफल घनैना प्यात्र
मे पकाया हि गुल मोढीभावळ (धानामुखी की पत्ती) प्रत्येक दो दो तोला,
भागदसर इलायची सोठ पीपल काली मिरच हरड प्रत्येक ढाई ढाई तोला, तज
हमाल प्रत्येक पांच पांच तोला, बशद भस्म तोला ०॥, शककर और घो १००
औ १५० तोला खडका पाक बनाना अथवा अवलेह जेसा कारना। हमेशा ३ से
४ तोला तक प्रसूतको खिलाना। शक्ति आती है सब प्रकार के दर्द में यह
अच्छा खुशक का काम करता है।

होभाग्य शुठी अवलेह—कच्चा मण ४ गुडकी चासणी रांग लगाये
बरतनमे करना चासणी घट्ट होनेसे नाचे लिखे इयका चूण तैयार रखाहो डाल
कर लहरीके तवेधासे हिलाना।

डालनेके द्रव्य—सोठ तोला १६०, खोपरा—श्रीफळ सुखा तेल १६०
सोफ (सुवावाणा) तोला ६४, चारोली तो ४०, कचूरा नागरमोथ छोटीपीपल पीपरी
मूल बहीसोफ (वरीमाला), तज जायफल जावत्र शाहाजीरा अजवायन (अजमा)
झिंगोडा हरड घनोया असगव सफेदमुसली नागकेशर आवला इलायची लवंग
सफेदचंदन शतावरी अजमोद प्रत्येक बारह बारह तोला लेकर सब कूटकर हवालासे
छानकर रखना और गुडकी चासनी हो जानेखे सब डालकर हिलाना। घो तो.
३२० लेकर दबुलका गोद तोला १६० को घोमें पकाकर कूटकर गुडपाकमे
डालना और बचाहुवा घी भी अवलेहमें डाल देना। पीछे २ घंटा तक हिलाना
पीछे चुलेसे उतारकर १२ घंटा के पीछे इपने तो १२ रससिद्धुर अन्नक भस्म
तो १२ गीमसेनो कपूर चार तोला डालकर २ घंटा हिलाना। २४ घंटा
के पीछे अच्छे बरतनमें भरादेना। मात्रा ३ से ४ तोला खाना प्रसूत के सब रोग
मिटते हैं सुखपूर्वक सुवावळ होती है और बच्चा भी निरोगी रहता है। प्रसूता को
एक महिनाके पीछे बाहर आती है जब हृष्टपुष्ट तेजस्वी और स्वरूपवती बनती है

सूतिका चिनोद रस—पारद गंधक रससिद्धुर अन्नक भस्म प्रत्येक
दस दस तोला, ताम्रभस्म २॥ तोला सोठ पीपल मरीच पीपरीमूल सेवानेन
जायफल जावत्री तज लोण हलदी बच अतीस सौंफ अशोकीयाका बीज प्रत्येक-
चार चार तोला साथ मिलाकर देवदार्वादि कषायकी ३ भावना और निगुंडो-

के रस या क्वाथकी १ भावना देकर सुखाकर घोट रखना । मात्र ३ से ४ रती शहदसे देना । प्रसूताका ताप अतिसार स प्रहणी धमन छूट उदावर्तवायु हृदय रोगमें गुणकारी है भुख लगती है खुराक पाचन होता है शक्ति आती हैं ।

प्रताप लंकेश्वर—१५ बिंदू टोला १०, ताम्र भस्म माक्षिक भस्म शिवाजीत पारय गंधक प्रत्येक पांच पांच टोला, शंख भस्म शुक्ति भस्म अन्नक भस्म टोह भस्म सोठ पीपड मरीच पीपलीमूल प्रत्येक अठ अठ टोला, आरने उलकी भस्म कपड छ न की हुई २० टोला सब साथ मिलाय वेवशर्वादि क्वाथ की भावना देकर सुखाकर घोट कर रखना । ३ से ४ रती शहदसे देना । प्रसूता के बहूनसे रोगमें लाभ होता हैं ।

सूतिका वल्लभ रस—पारद गंधक अन्नक भस्म माक्षिक भस्म रौप्य भस्म स्वर्ण भस्म हरताल भस्म अफीम जायफल जीवन्त्री प्रत्येक चार चार टोला लेकर नागरमेथ बलापंजांग सेमलका मूल प्रत्येक के क्वाथकी एक एक भावना देकर छाया में सुखाकर पोंछे मीमसेनी कपूर टोला ४ मिलाकर घोट कर रखना । मात्रा २ से ३ रती शहदसे देना । प्रसूताके अतिसार स प्रहणो योनीशून्य ताप खांसी पेटका दर्द छती के रोग गर्भाशयका दाह गुह्यभागसे रक्तस्राव या सफेद स्रव मितते है ।

सूतिका भूषण रस—पारद गंधक स्वर्णभस्म रौप्यभस्म प्रवाल पिष्टो अन्नकभस्म हरताल भस्म शुद्ध मेनघील सोठ पीपल मरीच निगुड़ी बीज सब सम भाग लेकर अर्क दूबकी चंत्राकके क्वाथकी और अहूसी के रसके एक एक भावना देकर क्षराव स पुटमे कपडमिट्टी कर बालुका चंत्राका ४ प्रहर (१२ घटा) अग्नि देना स्वांगशीत होनेपर निकाल घोटकर रखना । मात्रा १ से २ रती शहदसे देनेसे प्रसूताके बहूनसे रोगमें गुणकारी होता है ।

अपरा पातन धूप—यही और(आवल)न पड़ी होतो बलवी तुब के बीज काँकी काँचली अमलतास सरसोका तेल समभाग मिलाकर गुह्य भागमें धुवा देना ।

अपरा पातन लेप—कलीशरी (सफेद बछनाग) को पीस हाथ पाँवमें लेप करनेसे और (आवल) पड़ती है ।

मूढगर्भ

ठेडा-वक्र—वच्चा ठेडा, वक्र मस्तक शिवायका शरीरका भाग पहिले आवे तो उसे मूढगर्भ कहते हैं। इसमें मस्तक न आकर पग गुदा गुटन या बल्ल खमा या हाथ दिखता है, जब वच्चा ठेडा आया (आहुआवुं) कहा जाता है ऐसा हो तो हुशीयार सुयाणीने अदर हाथ डाल कर वच्चाको सीधा कर बहार निकालना पड़ता है। इस कामके लिये वृद्ध अनुभवों और बहुत ज्ञेयोंको सुनायक की हो औषधी सुयाणी होनी चाहिये। ग्राम प्रदेशमें औषधी कुशल सुयाणी होता है। जो वच्चाका योग्य स्थितिमें लाकर प्रसव करा सकती है। जब असातानमें रहने वाली नहसें या लेडी डाक्टर लोग वच्चाको यथास्थित करनेकी कोशिश न कर कापकूट करनेकी तैयारीमें पड़ते हैं। उचित यह है कि पहिले हाथसे बुद्धिपूर्वक वच्चाको सीधी कर प्रसव करानेकी कोशिश करना चाहिये। सुयाणी जब निरुपाय हो तब प्राज्ञ कर्मसे निकाल करनेको डाक्टरके ताबेमें छोड़ा देना।

कुच्छू प्रसव—इसमेंसे वेण्य आकर बीचमें ४ से ८ घंटा बढ़ पड़ जातो है, फिर वेण्य आकर उठती है। इस प्रकार एकसे अधिक दिन निकल जाता है। जब सुयाणी बौध या डाक्टरने जल्दी प्रसव करानेकी कोशिश नहि करना। क्रूरवी रीतिसे प्रसव होनेके लिये धैर्य रखना। पहिला प्रसव हो तो गर्भाशयका भाग सख्त होनेसे, गर्भका मस्तक और प्रसव भाग छोटा बड़ा होनेसे, गर्भाशय वक्र होनेसे, छाका मन उदास रहनेसे, हिस्टीरिया ताप खासी दस्तकी कच्ची आदि दृढ़से, रुद्ध अस्तिग्ध पदार्थ खानेकी आदतसे, दूध घीका खुराक न मिलनेसे—न लेनेसे, पछाती खोका सुयाणी दायग कभी, अपशब्दी बोल कर छत्र के मनको आघात पहुँचानेसे इत्यादि कारणोंसे गर्भाशयका मुख मोवा या येनि सकुचित होकर प्रसवके समय छोका अधिक रुष्ट होता है।

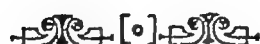
इस प्रकार हो तो बुद्धिपूर्वक समझकर गर्भके पडमें छिद्रकर गर्भामृत घीरे घीरे बहने देनेसे गर्भाशय विस्तृत होकर वेण्यका जोर बढ़कर प्रसव होता है। धैर्य देना, छाके मनके समाधान करनेका उपाय करना। प्रसवके पहिले जुलाब देकर पेट साफ कराना, पीडा शामक औषध देना। कई डाक्टर लोग प्रसवके कष्टके समय एकस्टेकट अरगत देते हैं यह बड़ी भारी भूल है। प्रसवहो जानेके पीछे और अपरा-मली पड़ जानेके पीछे वह दियाजाना चाहिये, ताकि गर्भाशय सकुचित हो असली स्थिति में आवे बिगाड़ निकल जाय और खून ज्यादा बढ़ न जाय। छी पछाती हो उस समय अरगत देनेसे विपरीत क्रिया

होकर प्रसन्न अटक जात है और स्त्री मृत्युके भयमें आ जाती है। बच्चा मर गया है और मालूम हो तो उसे जल्दी निकालनेका प्रयत्न करना। ब्राह्मी के घंटे तोला १० सेवानेन तोला १ पौंस पिझाना तो मृत बच्चा गिर जाता है।

कई डाक्टर लोग दूसरेके शरीर पर चीरफाटकर अखतरा (एक्स्पेरीमेंट) कर अनुभव लेने की इच्छासे अथवा कष्टानी खर्च न देख सकनेसे, घरके मनुष्यों के मनकी विह्वलताका लाभ लेने के लिये बिना समय बिना उपक्षे बच्चाको बाहर निकालने की कोशिश करते हैं और स्त्री मर जाती और। ऐसे मौके पर सपझगर सुयाणी डाक्टरको कहती हैं लेकिन उसे जगली कहकर डाक्टर अपना काम करता है, ऐसे अवस्थ किन्हे बन गये हैं बन रहे हैं।

इस लिये घरके मनुष्योने भी कष्टाती स्त्रोको देख कर डाक्टरको बुलानेकी उतावल नहिं कर्ना। शांति धर रख कुम्हरी रीतीसे प्रसव होने देना। कुछसे थोड़े समयके लिये बिलंबसे प्रसव हो लेकिन इससे स्त्रोका मृत्युका भय नहिं रहता है। कई सुयाणी और नरसे भी आने बांधे हुये डाक्टराको बुलानेके लोये प्रसव घावा खरल हो तो भी घरके मनुष्योको घमराट कर डाक्टरको बुलाती हैं और अपने लाभके लिये स्त्रोको मृत्युके मुखमें धकेलती हैं।

बच्चा सोचे भागपर (नालमे) है कि कर्षा यह देखना, पीछे तेल मालोस कर नीचे उतारना, वेण्य ठही हो तो हो तीन रती कस्तूरी गर्म दुध के साथ पीस कर पिलाना, आवश्यकता हो तो थोड़ी ब्राही भी पिलाना।



योनि रोग जननेन्द्रियरोग

कारण—गर्भावस्थामे आहार विहारकी अनियमिततासे प्रसव पीछे दो महीना के पहिले पुरुष संगसे बहुत गम' पक्षाय' बहुत चाप पीनेकी आदत उपरक्ष प्रमेहवाले पुरुषके संगसे गर्भपात करनेवाले पदार्थके उपयोग करनेसे भिन्न भिन्न योनीरोग उत्पन्न होता हैं ।

योनिरोग का भेद—उदावर्त वंध्या विप्लुता परिप्लुता वातला टाहितसरा प्रलसिनी वापनी पुत्ररुनी पित्तला अत्यानदा कर्ण' नीति चरणा अतीचरणा-पट्टी अंघिनी मदती सूची वक्त्रा आदि योनों रोग है ।

वातप्रधान योनि रोग—उस जगह पीडा दर्' हो श्रुतु फेन वाली आवे श्रुतु बहुतही कम आवे उस समयमे पीडा शूल सवाका होता बहुत आता रहे स्पर्श रुक्ष हो पुरुष संगसे दर्' हो ।

प्र १ गुह्यरोगेश्वरी २ से ४ गोलो पानीसे देना ।

प्र २ सर्व' स्त्रीगदा तका बटो २ से ४ पानीसे देना ।

प्र. ३ चंद्रप्रभा २ से ३ गोलोको पोस उसमे ६ से आठ रती शिलाजीत मिलाकर सौभाग्य शुंठी अवलेहके साथ देना । महानारायण तेलमें कपड़ेकी बत्ती भिंगोकर गुह्यभाग के अंदर रखना ।

पित्तज योनि रोग—जलन हो रक्तस्राव हो प्रसवमे कष्ट हो गर्भावान बहुधा न हो। अगर गर्भाधान हो तो कम मास मे गर्भस्राव या गर्भपात हो । साथ उस जगह चांदा पड़े ।

प्र. १ प्रवाल चंद्रपुटो तोला १, सुकता पिटी तो. ०।। अमृता परवन्धेत तो ३, सतामृत लेह तो-१ साथ बिलाय पोस ६ से ८ रती च्यवनप्रास के साथ अथवा गुल्फंदके साथ देना रोपण मलम अथवा शामक मलम लगाना अथवा महालाक्षादि तेलमे कपड़ेकी बत्ती भींगोकर रखना ।

कफज योनि रोग—पुरुष संगसे वृत्ति न हो खुन्नको आवे, संगसे सूजन हो । चिकना पानी गिरे । शिथिलता हो ।

प्र १ सुवर्ण वधंत मालती तोला ०।।, छोटी पीरल तो. १, सावरक्षींम अन्नक भस्म योगराज रसायन प्रत्येक एक एक तोला सब साथ घोटकर ६ से ७ रती मृगहरीशकी अवलेह के साथ देना ।

योनिकडु-खुमली—उस भागमे बहुत खुमली आवे, खुमलनेके पीछे जलम हो । उस भागपर शोक करनेसे गर्म वस्तु रखनेसे अच्छा लगे ।

प्र. १. किशोर गुगल, अग्नि तुडो, विषतिंडुकादि वटी आरोग्यवर्धनी चंद्रप्रभा इनमेसे एक या दो प्रकारकी गोली योग्य मात्रामे प्रात और शामको देना ।

हयमारादि तेल—धनेरका मूल गिलेव सोठ पील कालीमिरष सेवानेन डरड रसोत निसोम दंतीमूल हन्दी कामफल नागरमोथ इद्रायणका फल पाठा मागकसर चित्रक प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर कूटकर उसमें पानी डाल ११ घंटा भिगो रचना पीछे दूसरे दिन उपमे ४०० तोला घरसेंका तेल डालका पानीका अंश जल जाय जब तक पकाना कपडकान कर रखना । इस तेलमें रुईका फोथा अथवा कपडा भिगोकर गुश्म भागमे रखना रातीको रखनेसे रातभर रहनेसे लाभ होता हैं ।

योनिकाह जलन—महालाक्षादि तेल अथवा मृगराज तेलका फोथा भिगोकर गुश्म भागमे रखना । गुश्म रोगेश्वरी गोली ३ से ४ पानीसे देना । सुवर्ण चण्ड त मालती ३ स ४ गोली क्यवनप्राणके साथ देना ।

योनिशूल—महा विषगम तेल अथवा महामरिचादि तेलमे कपडाका टुकड़ा भिगोकर अंदर रखना और महारास्तादि क्वाथ पिलाना और उपका धुवा देना । वातविवश रस वातचिंतामणी बृहत शूल गजदेशरी समभाग मिश्र कर ३ से ४ रती घोंसे देना । तिमकी नीमेली और ऐली बीज समभाग कूट कर धुवा देना ।

योनिसै अश मशा—अर्शकुठार शाकर लोहमरुम सांरसीग मरुम अत्रक कल्पवटी समभाग पीस ३ से ४ रती बाहुशाल गुडके साथ देना । महाकासीकादि तेलमे अथवा महालाक्षादि तेलमें कपडा भिगोकर अंदर रखना । आरोग्य वर्धनी अथवा संशमनी नं. १ को गोली ३ से ४ पानीसे देना ।

योनिस्रश-षट्कार आना—बडकी छाल मुई आवली नीमकी छाल अजीठ दाह हल्दी नागरमोथ सम समभाग कूटकर १० तोलामे ३ छेटा पानी डाल उबालना पीछे कपडकान कर इससे वह भाग घेना । काचनार गुगल लक्ष्मणा लोह प्रवाल पिष्टी चंद्रप्रभा समभाग मिश्रकर ६ से ८ रती कुटजावलेहके साथ अथवा चांगेरी घृत अथवा ब्राह्मी घृतके साथ देना ।

योनिशोथ—गुश्म रोगेश्वरी आरोग्य वर्धनी वृद्धिवाधिका वटी सम भाग पीस ६ से ८ रती कटकारी अवलेह अथवा मृगहरीतकी अवलेहके साथ देना ।

हयमारादि तेल महानारायण तेल भद्रलाक्षादि तेल सेसे काइ लगाना कपडा भिंगो कर अंदर रखना ।

योनि स्नान—पीरल-अश्वत्थके पान नीमके पान अशोक छाल दव्युलकी छाल बेरकी छाल अंजन त्रक्षकी छाल समभाग कुट १० तोलाको पानीमे दणाल पिशाच काते वल्ल डब पानीमे और दिन्नेसे ४-५ दफे घेना । महाल्क्ष्मी विलास तोला ०॥, सुधा परतो तोला १, प्रसर रि टोह तो १ पर्वत तिलक तोला ०॥, दिश कर ३ से ४ रत्तो चयनप्राशसे लेना ।

योनिशैथिल्य—प्रसारे ज्यादा कष्ट होनेमे प्रसवके समय वह भाग फटनेसे गर्भ विकृत रूपसे बहार आनेसे अथवा बाद पित्त कफके प्रकोपसे यह रोग होता है । इस कारण गर्भ रहता नहि । समये देनोया कम आनंद जाता है ।

प्र १ अनारके फूल और सरसो समभाग लेकर पानीमे पीसकर अंदर लेप करना अथवा कपड़ेमे पोतली कर वह अंदर रखना ।

प्र. २ हल्दी दादहल्दी कमल पुष्प देन्दार समभाग पीस लेप करना ।

प्र. ३ घाइके फूल हरद बहेडा आंवला जामुनकी गुठली नीली (गळी) के पान सब समभाग लेकर पानीमे पीस लेप करना ।

प्र. ४ आंवला और करेलीका मूल सम भाग पानीमे पीस लेप करना ।

प्र ५ माजुफल और शिलारसत्री समभाग पीस मासा प्रमाण सेगठी बनाना गुह्य भागमे रखना ।

संबाधनी सेगठी—मांग तोला ११, माजुफल तोला ५, कचूरो १, महेदी तो १॥, असगध तो २॥, सेमलका गोद तो. १॥, जायफल तो. २ दादहल्दी तो २ सब साथ पीस १ मासाकी सेगठी बनाना । मलमलके कपड़ेमे रख गुह्य भागमे रखना ।

गुह्यरोगेश्वरी घटी—पारद गंधक रससिद्धर प्रत्येक पांच पांच तोला, टंकण दादहल्दी शक्कर हल्दी बावची हरद वंशलोचन आंवला खैर बहुफली बभंका मूल गोखर गिलोय मजीठ लोघ्र सोठ पीपल कालीमरीच स्वर्णमाक्षिक पीपरीमूल वषण छाल कांचनार । अतीव वायविहंग सेवानेन शिलारस प्रत्येक छडे छडे तोला लेना । सबको विचित्रत मिलाय देवदारवादि क्यायकी भावना देकर ३ रत्तीकी गोली बनाना २ से ४ गोली पानीसे देना । योनीके सब रोगमे लाभ कारक है ।

फल घृत—मजीठ मूली मूल कुष्ठ हरद बहेडा आंवला बलामूल गमेटी मूल प्राक्ष अजमेर हल्दी दादहल्दी प्रियगु (घठंठा) कुटकी कमल फूल कमलकंद-

विदारी कंद प्रत्येक पांच पांच तोला, शतावरी तो ४०, अश्वगंध तो ४० समको कूटक सब द्रव्य दुब जाय इतना पानी डाल कर १२ घंटा भिगो रखना । पोंछे छत्रमे गायका दूध पक्का १० सेर डालना और गायका घों कच्चा पण १ (रतल ४१) डालकर पकावा । पानीका अंग जल जाय जब कपडडान कर लेना । घृतका स्वर पाक नहो जाय और पाक कच्चा भी न यद ध्यानमे रखना । प्रत्येक घृत और तेलका पाक स्वरपाक होनेमे द्रव्योका गुण क्षीण होता है और पाउ कच्चा रहेनेसे द्रव्योका गुण नहि आशकता इसलिये प्रत्येक तैल घृतका पाक मध्यम रखना ।

मात्रा १ से ४ तोला । गर्भाशयका घीसर्ज (रतवा)से गर्मभाव या गर्भपात हो जाता है, गर्भाशयकी सूजन, कमल अयोमुत्र हो गया हो, रक्षात्व, लोके ऋतुके रोग प्रदर श्वेत रक्त रक्तवा योनीके सब रोग मिटते हैं । इसका सेवन करनेसे पुष्पोके वायु दोष मधुमेह प्रमेह सन्धावस्था आदिमे लाभ होता है । यह घृत लोकोके भिन्नभिन्न रोगोंमें अन्य औषधीके साथ अनुपान करा से भी दिया जाता है

वंध्यात्व—वर्जपन

ल्लोको संतान नहि होनेका कारण और उपाय

जंतुसे बंध्यात्व—ल्लोको शुद्ध भागमे विशेष प्रकारके जंतु उत्पन्न होनेसे बंध्यात्व इसमे सगके समय और पीछे मस्तक पीडा हो ।

ऋतुकालके पहिले दिनसे तीन दिन तक कद (कपास)के फूल तो ०।। को चुरगोंके पित्तमे पिच कर मलमलकी पोटलीमे घों गुच्छ भागमे रखना ।

(२) बीसप (रतवा)से बंध्यात्व—शुद्धभागसे गर्भाशयमे रतवा हो तो सगके समय या सगके पीछे गला-कठ और मुत्रमे दर्द हो ।

मजीठ और मूलेठी मूल सम भागसे कूटकर तिलका तेल मिलाय मलहम लेखा बनाकर मंदाग्रीसे पकाकर मलमलकी पोटलीमे रख शुद्ध भागमे ऋतुके समय पहिले दिनसे तीन दिन तक रखना ।

रक्षणा लेह ३ रती, रत्न भागोत्तर १ रती, शतावरी चूण २ मासा साथ मिलाय शहदसे या गायके घोंसे ऋतु स्नानके पीछे सेवन करना ।

३-चरबी चढावेसे बंध्यात्व—शुद्ध भागमे और गर्भाशयमे चरबी चढ गई हो तो सगके समय लोका रुदनने दद हो ।

शाहजीरा शिवालिंगा- शतावरी विदारी कद सम भाग कूट ४ से ८ मासाकी पोटली कर ऋतुके समय तीन दिन शुद्ध भागमे रखना ।

प्रमदान द रस २ रती चंद्रप्रभा स्वर्ण वसंतमालती ३ गोली शतावरी-
चूर्ण २ मासा साथ पीस शहदसे ऋतु स्नानके पीछे लेना ।

४-सूजनसे वक्ष्यत्व-गुह्यभागमे और गर्भाशयमें सूजन हो तो वगके-
समय या पीछे मस्तक केणी हाथका कांडा में ददं हो ।

सर्जखार हल्दी बहेडा कनेरकेबीज समभाग लेकर पीसकर उसमे
महानारायण तेल डाल कर गुह्यभागमें पोटाजीकर ऋतुकालमे ३ दिन रखना ।

शिलाजीत ६ रती सशमनी गेली २ गुह्यरोगेश्वरी गेली २ साथ मिलाय
ऋतु स्नान के पीछे प्रारंभ करना ।

५ शरदीसे वक्ष्यत्व-गुह्यभागमे शरदी हो गइ होतो वगके पीछे पांवको
आघोमे खुजली आती है ।

मेगरीके बीज, आसेंदराके बीज छोटीपीपल सब सम भाग कुटकर भाषा
तोला चूर्णकी कपडेमें पोटाजीकर गुह्यभागमे ऋतुकालके तीन दिन रखना ।

सुवर्ण वसंतमालती तोला ०॥, अभ्रक भास साबरसींग भस्म चैसठ
प्रहरी पीपल प्रत्येक एक एक तोला लेकर पीसकर शीशीमे भरना रात काल ३ से
४ रती सौभाग्य झंठी अवलेह १ से २ तोला के साथ दिनमे १ समय लेना ।

६ गुह्यभागमे गरमीसे वक्ष्यत्व-गुह्यभागमे गरमी अधिक होतो वगके
समय अदरके भागमे ददं पोषा होती है ।

मूलेष्टी मूल बहेडा मजीठ सम भागसे कुटकर कवथ कर उसमे बड़का
फेया भिगोकर गुह्यभागमे रखना ।

मुक्तापिष्ट तोला ०॥, गुह्यरोगेश्वरी तोला १, चंद्रप्रभा लेह शिलाजीत
युक्त १॥ तोला, शिलाजीत १ तोला साथ पीसकर ५ से ६ रती शहदसे अथवा
व्यवनप्राश जीवन से देना ।

७ भूतप्रेतके उपद्रवसे या किसीके अभिचारसे बध्याव-
होनेसे मन उदासीन हो किसीसे बातचीत अच्छी न करे पुरुष संगमे इच्छा न हो

दिग्घुप का घुंवा भासमे और गुह्यभागमे देना । नीमके पत्तेकोउबाल
कर उसमे हल्दी डालकर गुह्यभागको घोते रहना । श्री भुवनेश्वरी नायबीकी माला
कर उसका पानी पिलाना रक्षाक्षमें माला सेनासे मढाकर गलेमे पहिनाना ।

माणिक्य पिष्ट वसंततिलक मुक्तापिष्टी रत्नभागोत्तर रस सम भाग लेकर
पोटाकर २ से ३ रती रासके बी से देना ।

संतान नहि होनेके ७ अन्य कारण

१ स्रंगके पीछे ये निमेष कंठ हो ता होता कमल फिर गया जानना । इसमें कगसीया एक भाग, मोर पीछ २ भाग, कुटकर कवाय कर गुह्यभाग तीन दिन घेना ।

२ स्रंगके पीछे कम्पर से दर्द हो तो गुह्यभागमें गर्माशयमें वायुका प्रकोप अधिक समझना । ऋतु स्नान पीछे ४ दिन तिलके तेलमें हिंगका पकाकर उसमें कपडा भिगेकर गुह्यभागमें रखना ।

३ स्रंगके पीछे पाँचवीं पिंडी (घुटणके नीचेके भाग) में दर्द-पंखा होता कमल पर मांस बढता है समझना । शहजीरा और हाथीका नख समभाग पक्ष सरसोंके तेलमें पकाकर उस तेलसे गुह्यभाग ३ दिन घेना ।

४ स्रंगके पीछे हृदयमें दर्द हो तो कमलमें जंतु जानना । शकर हरद बहेडा कुट भिगेकर उस पानीसे ३ दिन गुह्यभाग घेना ।

५-स्रंगके पीछे दाह जलन हो तो कमलमें गरमी और तपा हुआ रहता है समझे । उसमें ऋतुसाधने खून काळे रंगका गिरता है । हरदे बहेडा आंबला चना बडीशोप (बरीयाली)का कवाय कर ३ दिन गु भाग घेना ।

६ स्रंगके पीछे पक्षीना आये शरीर ठंडा पड़े तो कमलमें कफ पित्त समझना । तिल तोला १० में काली मिरच तोला १० कवाय कर उससे जनेन्द्रिय घेना ।

७ स्रंगके पीछे बोल सके नहि घबराहट हो हिस्तीरिया जैसा चिह्न होता भूत प्रेत जाबा जानना । इसमें कपूर केशर बदन गोरोधूनसे मोजपत्रपर भूष नेहरी गायत्रीका मन्त्र लिख गुगलका धूँ देकर तावीजमें डाल गले या काहुमें बांधना और हमेशा गुगलका धूँ देना । अथवा सफेद कटहरीठा मूल १० तो, चावल के पानीमें पीस पिलाना । गुह्यभागमें क्षिप्तधूपका धुवा देना । पुत्रप्रद रस २ रती और स्वर्ण पर्यंटी २ रती गायके घोंमे देना ।

पुत्रप्रद रस—अम्रक मसम तो ५, पूर्णचंद्रोदय तो. १, लोहमसम तो. ५, स्वर्णमसम मुक्ता पिंडी रौप्य मसम त्रिवंग मसम स्फाटिक पिंडी इलायची चिनीकबाला लवंग तज केशर कस्तूरी प्रत्येक एक एक तोला, शिलाजीत १॥ तोला, सबको विधिवत मिलाय शतावरी रस शिवलिंगी पंचांग विदारी कंद प्रत्येक के रसकी एक एक भावना देकर छागमें सुखाकर घोटकर रखना अथवा २ रतीकी गोली बनाना ३ से ६ रती में अष्टवर्ग चूर्ण २ मस मिलाय शहदसे अथवा दूधसे अथवा ज्यवनप्राश-जीवनसे देना ।

गर्भधारण चूर्ण—असगंध शतावरी विदारीकंद शैमला नू सफेद मुसली सफेद बटहरीका मूल शिवलिंगी बिजया बीज नागकेसर यलावीच भैरफल सब समभाग कूट कर प्रातः २ मासा गायके दुधसे ऋतु स्नान के पीछे देना ।

गर्भचारिणी चट्टी—शिवलिंगी बीज तोला १०, बिजया बीज तो १५, पूर्ण चन्द्रोदय स्वर्ण रौप्य लोह बंग त्रिबण प्रत्येक की भस्म, प्रवात पिष्टी मुक्ता पिष्टी स्फाटिक पिष्टी भैरफल शरपुख मूल मूलेठी नूल सफेद धवन प्रत्येक एक एक तोला, असगंध शतावरी वाराहीकंद केलाकंद महुफली नागकेसर कृष्ण प्राणी तलवणी (सुक्चला) अड़सी फूल सफेद प्रत्येक डेढ डेढ तोला, अष्टवर्ग १२ तोला विधिवत मिलाय शतावरी रसकी और विदारी कंद रस प्रत्येक को एक एक भावना देकर पीछे कस्तुरी और केसर आधा आधा तोला मिलाकर दो रतीकी गोली बनाना । गर्भाशय के मरोग स्यदेय मिट कर सतान होता है । हमेशा प्रातःकाल स्नान कर सूर्य के सामने खड़ी हो प्रणाम कर ३ गोली चाबकर दुधसे लेना । ऋतुकाल के ३ दिन गोली बंद करना । गर्भाधान होने पर भी गोली चालू रखना । गर्भाशय के गुदा भाग के सब दोष-विकार मिटकर गर्भाधान होता है ।

गर्भप्रदा वट्टी—अन्नक भस्म तो ५, भैरफल तो ४, नागकेसर शतावरी असगंध मयूर शिखा लक्ष्मण अथवा सफेद बटहरी मूल मूलेठी मूल बलमूल शिवलिंगी बीज प्रत्येक तीन तीन तोला अष्टवर्ग १६ तोला शिवलिंगी पंचांग के रस में ३ रती की गोली बनाना प्रातःकाल ३ गोली दुधसे लेना गर्भाशय के सब रोग दूर होकर गर्भाधान होता है ।

लक्ष्मणा लोह—जामुनमें पकायी लोह भस्म तोला २०, रससिन्दुर तो २॥ अथोक लाल दममूल महुडा (मधुक) पुष्प मूलेठीमूल बला बीज पाठा मिल्गर्भ शतावरी असगंध भैरफल प्रत्येक चार चार तोला, साथ मिलाय शिवलिंगी के पंचांग के क्वाथकी भावना देकर छायामें सुखाकर घोंट रखना । ४ से ६ रती जहदसे अथवा । ऋतु काल के ३ दिन बंद रखना दुधसे देना । गर्भाशय के विकार मिटकर कमल यथायोग्य स्थिति में आकार गर्भाधान होता है ।

सौमघृत—शरपुख मूल सरसो प्राणी शम्बावली पुनर्नवा मूल शतावरी कृष्ण मूलेठी मूल कुटकी इलदी मजीठ पाठा भांगरा देवदार तलवणी अड़सी प्रत्येक एक एक सेर, हरद बेडा आंबला प्रत्येक दोशे सेर, सारिवा ३ सेर सबको कूट पानीमें १२ घंटा भिगे रखना पीछे उसमें गायका दुध सेर २० और घी सेर ८० डाल कर पकाना पानी का अंश जल जाय जब कपकलान कर

रखना। माशा २ से ४ तोला। इस के सेवनसे स्त्री के ऋतु के सबदोष गर्भाशयका विकार शुष्कभाग के रोग प्रस्र सोम रोग सफेद स्राव आदि और पुरुषों के मूत्रदोष योनिदोष मिटते हैं।

स्त्री और पुरुष के ऋतुमें अथवा वीर्य में संतान होने नहि होनेकी पहिचान

कुत्ताने अथवा जमीन में दो खाँडा कर मिट्टी ढाल दोनो में राई नोना पीछे एक में स्त्री और एकमें पुरुष हमेशा पिशाब करे। तीन दिन करना स्त्री और पुरुषका खड्डा पर निशान रखना। पीछे जिसके कुँडमें या खड्डे में राई उगे उसके ऋतु और वीर्य में संतान होनेका जीवाणु हैं। ऐसा समझना और न उगे उसके ऋतुवीर्य में नहि है। यह जानकर औषध सेवन कराना और एक दो तहिये पर उपर लिखी पहिचान करा ले रहना। ऐसा समझ कर जिसके पिशाबमें राई न उगी हो उसके मग्न पाठ पूजा आदि संतान देनेवाले प्रयोग कराना और औषध सेवन कराना पुरुषकी कम ताकत होती वजोकरण पौष्टिक शक्ति पर औषध सेवन करना।

जलपरिवर्तन पुत्रीका पुत्र हो। गर्भाधान के पीछे दो मास के पीछे ६१ ६२ ६३ तीन दिन और ८१ ८२ ८३ तीन दिन भाग के बीच २४ रती तकने दुध के साथ खिलाना। और २४ रती पानी में पीस शुष्क भागमें लेप की जा सुत्री होती हो उसके पुत्र हो ऐसा शास्त्रमें लिखा है।

काकज या प्रयोग—काकज वा यह है कि एकबार संतान होकर पीछे नहि होता काकज वा जहां किस स्थान में है यह जान लेना पीछे स्त्री ने रविवार के दिन शामको संध्या समये काकज वा क्षुपकी पास जाकर क्षुप के नीचे चारल पैसा सूजा सुपारी धर कर कहना कि हे काकज वा देवी संतान के लिये मैं अगणनी रविवार को तुझे ठेजाठंगी मेरी मनकामनां पूरी करना, कह वर मांग देना। और प्रतिदिन उसके मूलमें ७ दिन तक दुध डालना। पीछे रविवार के दिन काकज वा का क्षुप मूल सब उखाड़ ले आना और छाया में सुखाना पीस कूट कपडछान कर चूर्ण कर रखना एनिवार के दिन घमासा को आम टाण दे आना और मूल में दुध डालना सुपारी पैसा चावल घरना। दूसरे दिन रविवारके प्रातः कालमें घमासा को ले आना कूट कर कपडछान चूर्ण करना। पीछे काकज वा चूर्ण और घमासा चूर्ण साथ मिलाय गहदसे २ मासा की गोली बनाना। हमेशा २ गोली दुधसे लेना ७ दिन तक नष्टक नहि खाना। दुध चावल गेहूँकी गेटी खीरका भोजन कर ऋतु स्नान के पीछे ४ से ५ दिन आरंभ कर १४ दिन तक सेवन करना काकज वा का संतान होता है।

गर्भ प्रतिबंधक

कारण—बड़ संयो को बहुत संतान होनेसे शरीर क्षिणिल कृश कमजोर होता है इस लिये संतान बंद करने का उपाय करना ।

गर्भनिग्रह चूर्ण—छोटी पीपल सोहागा वायविडंग समभाग पीस कर रखना । ऋतु आवे जब पहिले दिनसे ४ दिन तक प्रातःकाल मे २ मासा चूर्ण पानीसे लेना ।

गर्भनिग्रह मलम—ढाक के बीज तोला २०, सोहागा तो ४, वाय—विडंग तो ४, फिटकरी तो १ अनार के फूल तो २ सब पीस घोट महीन कर भी घाढ़ मे मलम करना । ऋतु स्नाता होने के पीछे गुह्य भाग मे लगाना ।

१ आमुद के फूल ३ सुरकामे पीस ऋतु आवे जब १ ले दिनसे ४ दिन तक खाना उपर ३ से ४ तोला गुड खाना ।

२ ढाक के बीज कोजला कर वह मसम २ से ३ मासा पानीसे देना ।

३ सेनागेरु इलायची हलदी कचुरा तज सम भाग कुट कर ऋतु स्नान के पीछे ४ थे दिनसे ४ से ८ मासा रातवासी पानी के साथ ७ दिन तक देना ।

४ सेंवानेन का टुकड़ा को तिलका तेल लगा कर गुह्य भाग मे २ घंटा रख कर पीछे पुसव संग करने से गर्भ नहि रहता ।

५ ऋतु स्नान के पीछे ४ थे दिनमे निमकी छालका धुवा गुह्य भागको देना धुवा अंदर जाय इस प्रकार जल द्वारा देना । तीन दिन तक देनेसे संतान नहि होता ।

६ मासा ४ फिटकरीको १० तोला पानीमे पीवालकर सग के पीछे इसकी पिचकारी देनेसे गर्भ नहि रहता ।

स्तन पाक

१ कांटा अशेलीया के पानको पानीमे पीस घीमे जरा पका जर चांदा पाक पर पोटीसकी तरह लगाना ४ दिनमें रक्ष आती है ।

२ नीम के पान बड़की छाल हलदी बकाइन नीम के पान कीडामारी सम भाग कुट कर उबाल कर उस पानसे घेना ।

३ जात्यादि मलम या जात्यादि तेल अथवा महालाक्षादि तेलमे कपडा मिगेकर स्तन पर रख उपर पीपलका पता दाबाकर पाटा बांधना ।

४ लोह पर्वटी कीशोर गुणल आरौपयर्षनी केसरदि गोली मे से किन्नीका स्वेदन कराना ।

स्तन क्षोथ सूजन

१ दशांग लेव पानीमें पीस गरम कर लगाना ।

२ सोनागेरुमे घघ मिलाय गर्म कर लगाकर पाटा बांधना ।

३ इन्द्रायण मूल और फल और मैमकलको पीस गर्म कर लगाया ।

४ हलदी और घतुराका पाप या मूल पीस गर्म कर लगाना ।

स्तनकी शिथिलता

कारण—गर्भपात गर्भस्त्राव होनेसे, कृशतासे अधिक संतान होनेसे सतत चिन्ताप्रस्त मन रहेनेसे पोषण स्निग्ध पुराक न मिलनेसे, प्रवेत रक्त प्रदर सतत रहनेसे स्वाभाविक शरीरका बांधा निर्बल होनेसे पड़ा या कपड़ा स्तनपर दबा कर बांधने रहेनेसे अतिविषयसे स्तनका विकास होना रुक जाता है इत्यादि कारणोंसे कई स्त्रीओंके स्तन शुष्क कम विकसित और शिथिल होते हैं ।

कटकारी मलम—छोटी कटहरीके बीज पलामोज सरसों कुछ असगंध बच गज पीपल समभाग कूट महीन कर घीमे मिलाना हमेशा मालीस करना स्तन और शिश्न पुष्ट मोटा होते हैं ।

कुष्ठादि मलम—कुष्ठ असगंध बच गजपीपल सम भाग कूट महीन कर घीमे मिलाना । हमेशा मालीस करना । स्तन और शिश्न पुष्ट मोटा होता है ।

श्रीपणी तेल—श्रीपणी (शीणवी) के फल और छालको दुधमे पीस तिलका तेल पकाकर मालीस करना ।

लोधादि तेल—लेप सफेद कप्रीस असगंध गजपीपल सम भाग ठेकर तिलके तेलमे पकाना ।

बन्दादि तेल—बघ अमार छाल गोरखमुंही सम भाग कूट कर १२ घंटा पानीमे भिगो रख सरसोंका तेल पकाना ।

स्त्रीके दुध (धावण)का विकार

कारण—उपदंश धादि रोगसे, प्रमेह उपदंशवाले पुरुषके संगसे प्रसूता अवस्थामे योग्य सारधार नहि मिलनेसे, आहार विहारकी अनियमिततासे स्त्रीका धावण बिगड़ता है अल्प हो जाता है ताकी बच्चाका पोषण नहि होता ।

दुग्ध वर्धन चूर्ण—अतीस तोला २॥ शतावरी तो १०, विशारी कंद तो. १० असगंध तो ५, शक्कर तो. २५, इलका मूल तो. ५ आंवला तो ५, बलाधीज तो १०, तालमखाना तो ५ सब कूट कर मात्रा ०। से ०॥ तोला श्री शहद या दूधसे देना ।

स्तन्य सुधा रस—पारद गंधक रौप्य भरम प्रवाल पिष्टो अभ्रक भरम माक्षीक भरम कुटकी आंवला त्रिदारीकंद अतीस नीमके बीजकी गरी अमीया हल्दी कुष्ठ शतावरी असगंध सब सम भाग विधिवत मिलाय सारिया और प्राज्ञो और शतावरी के रसकी भावना देना । खोका धावन शुद्ध होकर बढता है ।

सौन्दर्य वर्धन

कांतिप्रद—रक्त चंदन डावका फूल मूलेठी मूल बीजोरा निबुका केसर कुसुम (कसुबो) प्रियंगु (घउलो) मेंदी हल्दी दावहलवी गोरोचन मैन्थोल शतावरी विदारीकंद पद्मकाष्ठ कपल फूल बडकी बडवाइ चंदन कांग सरसो कुम्भागेर केसर प्रत्येक द्रव्य आठ अठ तोला वैर पदरीपी लाख तो. २० सबको कुटका बडरीके दूधमे मिगोना पीछे आवश्यकता हो उतना पानी और तिलका तेल पक्कासेर २० डाल कर पकाना । पानीका अश जल जानेसे कपडछान कर रखना शरीरका बण' (वान) अच्छा होता है । मुख सुंदर होता है । खीर मसा काला बाग मुखकी झई आदि मिटते है ।

सौंदर्य वर्धन लेप—लोघ्र भूलेष्टिका मूल सरसो कले तिल शाहजीरा जीरा समभाग कुटकर रखना बडरीके दूधसे अथवा पान'मे पीष मुखपर मालीस करनेसे मुखका काला बाग ब्यंग झाई खील आदि मिटाकर मुख सुंदर होता है ।

शरीरको सुगंधी करने

नर मोहन लेप—इलायची कचूरा तमालपत्रा सफेदचंदन वाला हरद सह जानाकी छाल नागरमोथ कुष्ठ सम भाग कुटकर रखना स्नान करनेके पहिले पानीमे मिलाय मुख और शरीर पर मर्दन कर स्नान करनेसे शरीर अच्छा सुगंध युक्त रहता है ।

मुख सुगंधकर चूर्ण—केसर कुष्ठ अटामासी इलायची सम भाग लेकर रखना १ मासा पानी से डेनेसे मुखकी दुर्गंध मिटती है ।

शरीर सुगंध लेप—हरद लोघ्र नागकेशर हलवी सफेदचंदन नागरमोथ नीमके पत्ते सांतिवण अनारकीछाल कचूरा सम भाग कुटकर स्नान करनेके पहिले पानीमे मिलाय सारे शरीर पर मर्दन करना । शरीरमे आती हुई दुर्गंध

पेसीना की दुगंध मिटती है। काखमें मर्दन करनेसे काखकी दुगंध मिटती है। स्त्रीकोके शुष्कभागमें आति दूध दुगंध इस चुर्चका कषाय कर प्रक्षालन करना।

सर्व स्त्रोगदांतकी घड़ी—पारद गंधक लोह स्वर्ण माक्षिक वग अत्रक प्रत्येकी भस्म प्रवाल पिष्ट वंशलेखन प्रत्येक सोलह सोलह तोला, शिलाजिन् ३२ तोला गुग्गुलु तो. ३२ सौंठ पीपल मिरच हरद बहुवा आंवला वायविडंग नागकेशर शिवलिखीज तज तमास्पत्र इलायची नागरमोथ जटीमाषो पीपरीमूल सेंधानेन चित्रक सारिवा कपूरा अतीस कपूरकाचलि भच देवदार वायवरणा (वर्षणछाल) मजीठ शकर इलदी निमचीरकी गिरी प्रत्येक चार चार तोला सब साथ विधिवत मिलाय मांगग के रस में घोट ३ रतीकी गोली बनाना २ से ४ गोली पानीसे देना। ओरतोके ऋतुदोष गर्भाशन विकार गर्भाशयका (रतवा) हीस्टीरिया कमजोरी चक्कर भ्रम मदामि पेटका वायु प्रसूता स्निग्धाके रोग सगर्भाके रोग दिमाग हृदयका रोग आंतिका रोग स्तनध रणका रोग माक्षिक धर्मकी अनियमितता रक्त प्रदर सफेद चिहना पानी पड़ना आदि रोगोंको मिटाता है।

प्रदोराक्षर रस—(स्वर्ण युक्त) पारद गंधक लोह भस्म अत्रक सावरसीग माक्षिक लोह रौप्य प्रत्येकी भस्म प्रवालपिष्टी मुक्ता पिष्टी प्रत्येक चार चार तोला स्वर्ण भस्म १ तोला, वंशलेखन सौंठ पीपल कालीमिरच तज लवंग इलायची चीनीकदाला नागकेशर तुलसीबीज अमर बकेंद चंदन रक्तचंदन अतीस कपूर काचलो काला हंसराज हरद बहुवा आंवला सारिवा मजीठ प्रत्येक एक एक तो. विधिवत मिलाय केवडा के जलकी भावना देकर सुखाकर रखना। मात्रा ३ से ६ रती पानीसे स्त्रीओंके ऋतुके गर्भाशयके रोग श्वेत रक्त प्रदर और इसके कारण होते हुवे उपश्रव शांत होता है।

प्रमदानंद रस (स्वर्ण युक्त) पारद गंधक स्वर्ण भस्म शिलाजीत रौप्य भस्म बंग भस्म प्रवाल पिष्टी सब सम भाग लेना, चित्रकका कषाय त्रिफलाका कषाज की भावना देकर रती प्रमाण गोली बनाना। २ से ३ गोली पानीसे देना। स्त्रीओंके ऋतुके गर्भाशयके रोग श्वेत रक्त प्रदर हिस्टीरिया दिमाग हृदयके रोग मिटाता है।

स्त्री नपुंसक—कामनाश

कारण चिन्ह—जैसे पुरुष नपुंसक होता है इस प्रकार स्त्रीको भी शुष्कभाग के लिय अवयवके विकारसे कामवासना नष्ट होती है। पुरुष जिस प्रकार हस्तदेश से विषय वासना तृप्त करता है उसी प्रकार स्त्री लिंगाकृति वस्तुसे काम वासना

चूत करती है इस कारणसे और किसीको जन्मदेहि कामवास नहि हेती और पुष्प खगळे प्रति लम्बाइर अविच्छा होती है । इससे जो आनंद उत्पन्न होना चाहिये यह नहि होता ।

पुष्प नपुंसक के लिये जो औषध दिया जाता हैं सब औषध लोको भो मुणकारी होता है । पूर्णचंद्रोदय को गौलीया वसंतकुमार महालक्ष्मी विलास वंग भरन लोह भस्म स्वर्ण भस्म आदि उचित मात्रा में मिश्रण प्रथम तत्र देनेसे लाभ होता है ।

रूमोन्माद हिस्टीरिया

कारण—गर्भाशय के रोग दिमागकी कमजोरी मग शोक कामविकार लिंगाकृति वस्तुसे दस्तशेष, विषय वागनाकी तृप्ति न होना इष्ट पुष्पसे संगकी तीव्र इच्छा पूर्ण न होना अरबी बढना आँसो में पेटमें वायु प्रकोप इत्यादि कारणोंसे दिमाग मस्तिष्क पर धुका घबडा पहुँचकर और दिमागमें खूनका वक्ता लगनेसे यह बा दर्श होता है ।

मुकुटेन्द्री घडी—पारद गंधक रसविदूर लोह भस्म अन्नक भस्म शिलाजीत पाचनार । वायविष्टंग भोलावा का मगज (गिरी) काठे तिल पुष्कर मूल सोंठ पौषल काली मिरच नागरमेथ इलायची गोखरू गिलोय हरड निसेच अजर्होद यच प्रत्येक पांच पांच तोला गुणल ८० तोला मिलाव साखावली के रस या पत्राथ की भाषणा देकर २ रती की गोली बनाना । लोओका हिस्टीरिया दिमागकी कमजोरी आदि मिट ते है ।

जिह्वादी गुणल—पारद गंधक रसविदूर प्रत्येक पांच पांच तोला, माक्षिक भस्म शिलाजीत सोंठ पौषल काली मिरच वक्ताकी छाल कौनर हार कनक बीज गिलोय चित्रक निसेच दत्तमूल नागरमेथ वायविष्टंग बलामूल दातावरी मिश्रदरा गुंजाफा मूल हल्दी धनीया रास्ना प्रत्येक चार चार तोला गुणल १०० तोला दक्षमूल के कवाथकी भाषणा देकर ३ रती की गोली बनाना २ से ३ गोली पानीसे घेना । सब प्रकार के वातरोग संधिवा हिस्टीरिया आँसो के रोग पक्षघात आदि में गुणकरी है ।

अश्वनधारिष्ट—असगंध तोला ३००, सफेद मुशली तो ८०, मजोठ हरड हल्दी महुडा का फूल रास्ना विदारी कंद अजुन छाल नागरमेथ मथूर शिखा प्रत्येक चालीस बाल १ तोला, अनंत मूल सारिवा सफेद चंदन रक्खंदन यच चित्रक प्रत्येक बत्तीस बत्तीस तोला कूट ५ मण पानी में उबाल कर पोछे अच्छा

कोठी में सब द्रव्यों के साथ चला कर उसमें धई के फुल तोला १२८, सहस्र सेर १०. नागकेसर तथा तमाल प्रियंगु सेाँठ पीपल प्रत्येक सेाँद सेाँद तोला और गुड सेर ४० डाल कर कोठोका मुह बंद कर आसवकी रीतिसे सौवार करना २ से ४ तोला मात्रा । हिस्टोरिया मूर्च्छा भ्रम चकर अपस्मार सुभी उत्प्राद वल्ल प्रेशर आदिमें गुणकारी है ।

सुतसेखर (स्वर्णयुक्त) पाद गंधक स्वर्ण भस्म टंकण शुद्ध वल्लनाग सेाँठ पीपल कालोमिरच कनक बीज ताम्र भस्म तमाल नागकेसर एलची शंखभस्म बिन्दवमज्जा कचुरा सब समभाग डेकर विधिवत मिलाव भांगरी के रसकी माबना देना गोली १ रती प्रमाण करना बात पित्त कफजन्य रोग अल्पपित्त हिस्टोरिया स्मरेण्माद वल्लपेशर गेस चडना द्राव दाह आँतोका रोग इन्में गुणकारी है ।



नाल रोग बच्चों के रोग

जन्म कृत्य—बच्चोंकी जन्म समयकी सारवार—

बच्चा जन्मते हि पहिले श्वासेमें राने लगे वह बहुत अच्छा है । रानेसे शरीर पर अच्छी असर होती हैं । उसके फेफड़े फूलते हैं और श्वासेच्छ्वासकी मदद मिलती हैं । खीची मेली—अपरा सब निकल जानेके पीछे हि बच्चाकी नाल काटना, यदि मेली बिना गिरे नाल काटा जाय तो मेली कटनेमें चढकर श्वासका रुकन होनेसे खी भर जाती है । इस लिये बच्चाका जन्म होनेके पीछे मेली न गिरे जहाँ तक बच्चाको जमीन पर बिछाये कपड़ेपर सुलाये रखना । मेली गिर जानेपर बच्चाकी नाभीसे ६ या ७ अंगुल दूर सुतरका धागा बाँध कर मेलीकी ओरके भागमें दो भांगल दूर अस्त्रासे वा कातरसे काटना । नाल नाभीसे जितना दूरसे काटा जाय बच्चा आरोग्यशाली होता है । पहिलेके समयमें ८ से १० इंच दूरीसे काटते थे परन्तु इतने लंबे नालकी रक्षा करना कठिन होता है इस लिये चार पाँच इंचके दूरीसे काटा जाता है । काटते बखत नाभीसे लगा नाल खींचा न जाय यह समाल रखना । खींचानेसे कभी नाल टूट जानेसे रक्तस्राव होकर बच्चा भर जाता है ।

बच्चेकी मुलायम चमड़ी पर एक प्रकारका चिकना तेल जैसा पदार्थ चुपचा हुआ होता है यह निकालते वक़्त समाल रखना । पहिले खोपरेका या तिलका तेल धीरेसे लगाकर कपड़ेसे सारा शरीर पोछ डालना ताकि चिकना पदार्थ निकल जाता है । पँछे थोड़ा गर्म जलसे अच्छे साबुनसे अथवा सीठे के पानीसे स्नान कराना पीछे शरीर पोछकर कपड़ामे बिटाल कर दो तीन छोटी चम्मच पानी पिलाकर छोटी चारपाइ (खाटली) मे सुलाना और उसे शांतिसे सोने देना ।

नाल काटनेके पीछे मेलीको एक हाथ गहरा खड्डा कर रखा हो उसमे चार पाव सेर नमक डाल उपर मेली डाल फिर उपर नमक चार पांच सेर डाल मिट्टी दाबकर उपर पत्थर रखना । गहरे खड्डे मे मेली डाल उपर अच्छे प्रमाणमे नमक डालनेसे वह सुरक्षित रहेनेसे बच्चा भाग्यशाली होगा है । खड्डा फम गहरा हो और मेलीको अनावर निकाल कर खा जाता है तो वह बच्चा कमनवीर बुद्धिहीन होता है । आदमीको 'विना नमकका' ईस प्रकारकी गाली देनेमे आती है इसका रहस्य यह है । बच्चाको स्नान कराकर नाल पर रुई दाबकर पाटी बाँधना वह तगमहो । नाभी पर नाल लगा हो उस पर हमेशा तिलका तेल अथवा बालमे डालनेका घुपेल तेल डालते रहना और रुई भी हमेशा बदलता रहना । १०से१२ दिन पँछे नाल आप ही गिर जाता है । वह सुखा हुआ नाल एक शीशीमे भर बच्चेका जन्म समय लिखना । बच्चा विमार हो जाय जब उसका नाल घोंघकर पिलाया जाता है ।

प्रसवके पीछे स्त्रीको इतनमे ३ या ४ दिनमे दुध-बाधण आता है इस लिये वही तक गलसुधी पिलानेका रवाज है । एक साल पुराना गुड १ तोला को पांच सात तोला पानीमे ढ़ाल मिचाल कर उसमे गायका घी ५ तोला डालकर कुछ ताता कर (थोड़ा गर्म कर) रुईको फोयास पिलाना, दिन मे ३ या ४ दफे पिलाना । हर समय थोड़ा गर्म कर लेना इससे बच्चाको पोषण मिलता है और पेटमे जमा मल निकलता है । किसी बच्चाको मल कम निकले या निकलता हुआ अटके तो बच्चा रोता है तब गलसुधी मे दो चार बुद एरंड तेल डालकर पिलानेसे मल निकल जाता है । जो मनुष्य बच्चाको प्रथम गलसुधी पाता है उसके स्वभावका बच्चा रोता है । गलसुधी पिलानेके पीछे मुख गला पानी भोगोबे कपड़ेके टुकड़े से पोछ डालना । यदि पिलानेके समय गलेपर गुडका पानी उतरा हो गिरा हो तो वहाँ कीड़ी (पिपीफिका) लग जाती है और बच्चा रोता है वह व निकाली जाय तो गहरी उतर गलेमे छेद पाडती है और बच्चा मर जाता है । इस कीड़ीको गुजरातीमे घामेल अथवा घामेलियु' कहा जाता है ।

बच्चाको तीसरे दिन धवरावना (स्तन पाल कराना) पड़िटे हाथसे स्तनसे थोड़ा दूध निकाल कर पोछे स्तनकी डीठकी बच्चाके मुखमें देना जब आप ही भावने लगेगा और डीठको पाना छुटेगा अर्थात् हँस से स्तनमें दूधका वेश आयेगा । कभी बच्चा धावता नहि है जब हरद घीसकर उसमें सोंघानौन रतीभर डालकर अँगुलीसे बच्चाकी जीभपर घिसना 'जब तुत' धावने लगता है । किसी स्त्रीका स्तन मोटा और लंबा होतो धावते वरुन बच्चाका नाक दबा न जाय और श्वास रुक न जाय यह ध्यान रखे । धावण स्तनमें दूध भा जानेसे और उस समय जो दूसरेसे बातचीत कानेसे बच्चा धावते वरुन अक्षतशाय जाता है अर्थात् दूध श्वास नली में चढ़ जाता है । और पोछे बच्चा को शरदी खासी जैसी तकलीफ होती है इस लिये स्तन पान शांतिसे कराना । धावण कम भावेतो दुग्ध वर्धक औषध खीको देना और बच्चाको गायका या बशीका दूध पिलाना । सातवा आठवा माससे साधा खुराक देना प्रारंभ करना ।

२ ग्रहबाधा

कारण बिन्ध—जिस कुटुम्ब में देवता पितृको ब्राह्मणो ब्राधु सत गुरु अतिथि का सत्कार नहि होता, होम हवन होता नहि, शौच आचार पवित्रता रक्खी नहि आती, दान नहि दिया जाता, उनसे बच्चेके रुकड़ाई ग्रहोको थोड़ा होती है । ग्रहबाधावाला बच्चा मुंझता है रोता है चमक जाता है । जब और दाँतसे माँका और अपने शरीरको काटता है । उंचे देखा कर चौंस पाडे बर्गासा (जूंमा) खाया करे, भुङ्कटीको उंची नीची करे, मुँहमे फेन आवे, शरीर कृश बनता जाय, रातको जागे, शरीर पर सजन हो, दस्त प्यादा हो स्वर बैठ जाय खता पीता नहि शुद्धि कम रहे ।

सब ग्रह बाधामे उपचार

स्कंद, स्कंदोपस्मार शकुनी पूतना गंधपूतना शीत पूतना सुखमंडिका जैगमैय आदि ग्रहोकी बाधासे बच्चाको मिन्न मिन्न बिन्ध होते है ।

सब ग्रहबाधामे तुलसी हलदी गोरखमुंडो और धाला को समभाग कूट कर रखना थोड़ा चूर्णको उमाल कर नवसेका पानीसे बच्चाको स्नान कराना ।

सामान्य रीतिसे चूँडीपाठका पाठ कराना । गुगल शेषगुंदर नीमके पत्ते डोबान हलदी चंदन समभाग कूट घी मिलाय ३ समय बच्चाको धुप देना और बच्चा वाले कमरे में धूप करते रहना ।

सर्वप्रह हर धूप—घर्पकी काँचली लशुन मोरवेक नीमके पान मेंठा घोँबो वच हलदी सरसों लोबान चानक पामही चंदन देवदार चीँछके बाल सब सम भाग और सबसे दूना गुगल लेकर कूटकर घोका करमा देकर रखमा । यह धूप दिनेमें २-३ दफे बच्चाके शरीर को देना और कमरे में करना ।

सातच्छादादि लेप—सातवीण कुष्ठ हलदी चंदन सम भाग कूटकर पानी में मीलाव शरीर पर लेप करना ।

अष्टमंगल घृत—वच ब्राह्मी कुष्ठ सरसों काली तुलसीके पान सारिवा सेंचानेन पीनक प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूटकर १२ घटा पानी में भिगोकर पीछे उसमें गाय का घी शेर पाँच पकाना । यह घी बच्चाको १से२ छोटी चम्मच गम'का पिलाने से सब बाल ग्रहो को पीडा नष्ट होती है और बच्चा बुद्धिमान नीरोगी स्वामण शक्तिवाला होता है ।

बालरोग का कारण—बच्चाको स्तनपाद कहाने वाली माता खान पान में नियम नहीं रखती आहार विहार में अनियमित रहती है बहाने घाने की स्वच्छता नहीं रखती, कपड़ा बिछाना मलिन होते है जब उस के शरीर में कुपित व त रित रुक से वाय्वण विगडनेसे बच्चाको विविध रोग होते है ।

१ तृषा प्यास—बच्चाको शोष पडता होता अष्टमंगल घृत अथवा ब्राह्मी घृत थोडा थोडा देना, माताको खिलाया सर्ताभृत लेह तोला १, अमृता सत्व तो ३, प्रवाल चंद्रपुटी तोला १ मिलाकर ६ से ८ रतीमें च्यवनप्राश जीवन २ तोला मिलाव माताको देना ।

२ गला पडना तालुकुंठरु—बच्चा गिर जानेसे बहुत रानेसे तलु के माँष में कफ दोष प्रकूपित हैं कर यह रोग होता है । जब मस्तक के उपर के तालु में खड्डा पडता है । स्तन पान नहीं करता पतला दस्त होता है, । तृषा लगती है । गरदन पतली हो, शरीर कुश होने लगे ।

बालारोग्य घटी—२ गोली पानी में पोष देना अष्ट मंगलघृत अथवा कल्याण घृत एक दो छोटी चम्मच पिलाना । अंशमनी गोली पानी में पोष देना कुमार कल्याण रस ०। से १ रती घृत या शहद में मिलाकर देना । इन्द्राँ इलायची अजमोद कोठा-कपित्थ का गर्म वायविडंग सम भाग कूट कर इसका क्नाव कर शहद डाल थोडा थोडा पिलाना ।

गल शोष हरी वडी—इलाइची, जायफल, जावत्री, लवीग, हरड, राक, घाईका फुल, मोचरघ, बीलीगर्भ, अजमोद, अजनामन पोपल, अतीस, अफीम, शकर हलदी कृष्णागर रक्खपर, रुमीमस्तकी शुद्ध हिंगुल, सेठ, केसर,

किरमाणी अजमो, वागविहंग, ईन्मजव, वाकूभा, अजुन छाल, सब समभाग कूट कर दाहिम के रसमे एक रतीकी गोली बनाना । पानी में पीस घुवह और शाम उभके अनुसार गोलीको मात्रा देना । इस गोलीसे बच्चाको पला पड़ा हो और इस कारण जो कुछ चिन्ह होता हो सब शांत होता है । और बच्चा नीरागी और पुष्ट होता है ।

३ बाल विसर्प बाल रतवा-पद्मा—बच्चेको मस्तक मूत्राशय जननेन्द्रिक के भागमे विसर्प रतवा हुआ हो तो बच्चाका मृत्यु होता है । विसर्प मस्तक के लम्पणमे हृदय मे और वहाँसे गुदा मे ऊपरता है । वैसे ही मूत्राशय में विसर्प हुआ हो तो गुदा में जाकर वहाँसे हृदय मे होकर मस्तक में जाता है ।

रासनादि लेप—रासना, कमल पुष्प चदन, मुलैठी मूल, देवदार समभाग कूट कर, गाय के दूध में पीसकर उष्ण में थोड़ा घी मिला कर लगाना ।

बालविसर्पहर कवाथ—गिठाय छेटी अड़ुसी, पटोल, नीमके पान, हरड, बहेडां, आंवला, केरदार अमलताका गुड़ समभाग लेकर कवाथ कर पिलाना ।

४ नाभिका दोष—नाभिका मूल खोचनेसे अथवा नाभिके उपर कुछ चोट लगनेसे सूजन होता है ।

निशादि तेल—हलदी लेप प्रियंगु, मुलैठी मूल समभाग कूट कवाथ कर उसमे तिलका तेल पकाना और लगाना और उन्ही द्रव्योको कूट कर पानीमें पीस कर गर्म कर नाभि के उपर लेप करना ।

५ गुदाका पाक—पित्त प्रकोपसे यह दद होता है । जात्यादि मलम, शामक मलम, रोपण मलम लगाना । पीपलकी छाल और बड़की छालका कवाथ कर वह भाग घेना । रसांजन लगाना ।

६ गुदाका व्रण—बच्चों के मलमूत्रकी जगहमें घावर साफ न रहने से उस जगह पर खुजली आकर गुदाकी आसपास फुसियां और व्रण होता है । उस में से स्राव निकलता है और योग्य उपचार न करने से वह व्रण भयंकर हो जाता है । कच्चे शंखका पीसा हुआ चूर्ण, काला सुरमां मुलैठी भूल समभाग कूट कपड़ छान कर पानी में पीस लेप करना बालारोग्य वटी अथवा शंशमनी बटी देना ।

७ हांत आते समयके रोग—दांत आते समय बच्चेको ताप अतिघार खाँसी सिरदद विषय आँख ऊठना कृशता आदि दद होता है । यह हाँति कर्ता नहीं हैं । हांत आजाने के पीछे आप ही आ सव उपग्रव मिट जाता है ।

दूतोदमेक गवांतक घटो—अभ्रक भस्म, वात्र भस्म, टोहभस्म, माक्षिक भस्म, पीपल, पीपरीमूल, चक्रक, बिष्मक, सेठ अजमोद, अजव इन् हलदी, बासहलदी, मुलेठी मूल, देवदार, रसाजन, वायविक ग, इलायचो नागकेशर, वाला, कचूरा, ककडाशिगी, सेधानोन समभाग लेकर गाय के दूध में मुग जैसी गोली भगाना । दांत आनेका शीर म हो ७ वसे सब दांत आ जाय जब तक एक से दो गोली पानी में पीस कर देना ।

मसूरिका ओरी अछवडा Measles Chickenpox

कारण—तीखा, खटा नमकीन क्षारवाला अजीर्ण करनेवाला सदा हुआ रातभाँची खुराक लेनेसे बालप्रहरी पीडासे समग्र देशका वातावरण बिगडनेसे पवन और जल विकृत होनेसे खूनमें मिश्रकर यह दद होता है ।

चिन्ह—ताप आवे खुजली हो, शरीरमें बेचेनी, फेर चकर, चमड़ीमें अन्य रगडा शोथ, आँखें लाल होती है । वायुप्रधान होता काला लाल कृष्ण पीडाकारी कठिन और देरसे पकनेवाला मसूरकी दाल गैषा दाना होता है । पित्तप्रधान होता साँधा और हड्डोमें दद होता, खाँसी आवे, शरीर कपे बेचेनी हो, तालु, ओष्ठ, जीभ सूखे, प्यास बगे, दाना लाल पीला हो और जलदी पके । कफ प्रधान होता दाना सफेद मुलायम खुजली वाला कम पीडावाला होता है । इसका स्थान चमड़ीमें ही होता पानीके परपोटा जेषा दाना होकर फूटकर पानी निकले । खूनमें उतरा होता लाली लिये फुन्धियाँ हो । इस प्रकार मांस चरबी अस्थि मज्जा और वीर्य तक उतरता है । यह ओरी प्रथम अस्तुमें छोटे बच्चोंको होती है । यह दद संक्रामक—चेपी होनेसे गाँवमें एक दो बच्चोंको निकलनेके पीछे गाँवके सारे बच्चोंमें फैलता है । इससे बच्चोंके आँख और नाकसे पानी गिरता है, कफ होता है छाँक आती है बेचेनी होती है, श्वासका वेग बढ़ता है मस्तक दुःखता है दूसरे तिसरे दिन गला छापी और मुख पर लाली लिये दिखायी देता है और पीछे सारे शरीरमें फैलकर जामुन के रंग जेषा होता है । दाना निकलनेके पीछे ताप का वेग कम होता है, जब खाँसी और अतीघार होने लगता है ।

ताप जबर हो जब तक पतला खुराक देना । प्रारंभमे तीन दिन तक खुराक काजी नहीं देना । पतली बाजरीकी गुब्बाली राग या मुंगका पानी देना । दाद हो तो दाक्ष मुखमें रखना और दादका पानी पिलाना । दस्त बज्ज होतो हरदका पत्राप पिलाना । चावल मसूरकी दाल, मुंगकी दाल, बाजरीकी रोटी इसका खुराक देना ।

मसूरी शीतला रक्षक घटी—गरद गधक अभ्रक मरम प्रवाल पिष्टो ज्योह मदन रससिंदूर टंकण हरद बहेडा आंवला हलदी चदन मूलीठी छोट पिपल दाली मिरच जिपु'ही बीज प्रियंगु मामेज्जवा टोबान प्रत्येक पांच पांच सोना शिलाश्रीठ गूल गोरखमुंडी निमबीन गौरी वातावरी अषग घ कुटकी विनायता प्रायेक दस दस तोला सय विविधत मिलाकर गायका घो तोला ४० मिलाकर अहूसी चमेरी पप'ट (खटसलीयो पितपापडो) कौशानारी नीमके पान प्रत्येककी एक एक भावना देकर तीन रतीकी गोली बनाना २ से ३ गोली पानीमे पीसकर मसूरिका शीतला आदिमे देना । इस रोगका वातावरण फैला हो जब अच्छे धत्तोंको देनेसे इस रोगका आक्रमण नहि होता ।

शीतला शाली माता निकलना

कारण चिन्ह—शीतला शाली सात प्रकारकी है उनमे महती नामक शाली हि प्रचलित है । प्रारंभमे ताप आता है । दाना सात दिनमे निकल जाता है दूसरे सात दिन पूरा भर जाता है और तीसरे सात दिनमे सुखाकर पपडों (सीगडी) उखड जाता हैं । इस प्रकार २१ दिनकी मर्यादा है । जो फेन्डे फूटे छपर आरने उपल (अढायाछाणा) की राख कण्ड छानकी दुइ दापते रहना और नीमके पतेसे मक्खियाँ उढाते रहना । तापसे प्यास लगे तो ठंडा पानी देना । रोगीको स्वच्छ एकान्त जगहमे सुलाना । रक्तस्रला खीने और अपवित्र मनुष्यने रोगीका स्पर्श करना नहि इसमे बहुधा औषध नहि दिया जाता फिरभी मसूरिका शीतला रक्षक गोली आयु के अनुसार १ से ३ तक दीजाय तो लाभ होता है । यह रोग आक्रमक है इसके चेपसे बड़े मनुष्यो कोभी होता है । यह बहुत करके वसंत ऋतु में होता है । कभी चाहे जिस ऋतु मे फैल जाता है ।

शीतला शीतलीका विष शरीर से प्रविष्ट होने के पीछे १२ से १४ दिनमें उड़ भरपी शिरदर्द पोंठ में पीडा उलटी आदि चिन्ह देखते हैं। पीछे गले में शोथ थूँक की वृद्धि आँख के पेपचा लाल हो आँख में दुर्गंध आती है। बड़े बच्चीको घेम और छोटेको आँचकी-आँसेप आता है। तापके पीछे शीतलाका दाना पहिले मुख और गरदन पर दिखाई देते हैं पीछे मस्तक ललाट छाती और पाँवमें मालुम पड़ता है। दाना दिखनेके पहिले ताप शीतलाका है या साधा यह नहि जान सकते। डम्पर और पीठमें बहुत बड़े हृदयकी गतिका अधिक वेग अधिक वमन ये चिन्ह ज्यादा होतो शीतला भयकर रीतीसे निकलेका संभव हैं। सुगर्माँको शीतला निकले सो गर्मपात है।

दाना बाहर निकलजाने के पीछे ताप कम होता हैं। दाना पक कर मराता है जब फिर ताप आता हैं। ताप आनेके पीछे तीसरे दिन शीतलाका दाना दिखाता हैं वह कठिन छेटा होता है। उस दाना पर मोती जमता है उसमें पानी मराता है और दानाके उपरके भागमें छोटा सड़वा पड़ता हैं और इसके आसपास की चमड़ी लाल होती है। दो दिनके पछे उसमें पड़ होनेसे वह पानी घट और सफेद होता है और वह मोती फुनसीका रूप लेता हैं। दो दिन पीछे उस फुनसीका उपरका भाग काला पड़ सुखने लगता हैं और ४ से ५ दिन पीछे पपड़ी बनकर गिर जाती है। आँखमें शीली निकलनेसे सेकड़ा ७१ टका रोगीको आँखमें फूला पड़ता है अथवा अन्धा होता है।

बिछानेमें कमरेमें चारोंओर नीमके पत्ते बांधना उच्छिष्ट मुखवालेको और अशुद्ध मनुष्यको रोगीक पास नहि आने देना फून्सीमें दाह जलन होतो आरने उपलकी राख छिड़कना डालना।

तापमें चंदन छोटी अड़घी पान नागरमोथ गिलोय और द्राक्षका क्वाथ पिलाना।

रोगी सुन शके इस प्रकार ब्राह्मणसे अष्टाध्यायी रुद्रीका पाठ चंडोपाठका पाठ कराना। स्वस्तित्वाचन शंकर पार्वतीका पूजा शीतलास्तोत्रका पाठ कराना। शीतलाका उपश्रव गाँवमें चलता है जब उस रोगसे बचनेके लिये प्रातः सायं धूप करना। और श्री भुवनेश्वरीमाँकी छत्री और चिंतामणी यंत्रकी छत्रीको धूप दीप कर स्तुतिपढ़ाना और शीतला स्तोत्रका हमेशा ९ पाठ करना। भुवनेश्वरी स्तोत्रका और लघुस्तवका पाठ कराना। इसमें शीतलाका दरदी रोग मुक्त होता है और अपने घरमें यह रोग आता नहि है।

शीतला स्तोत्रं

अस्य श्री शीतला स्तोत्रस्य महादेव ऋषिः ।
 शीतला देवता । अनुष्टुप छन्दः । शीतलोपद्रवशात्पद्यं अपे विनियोगः ।
 स्कन्ध उवाच ।

भगवन् देवदेवेश शीतलाया स्तवं शुभम् ॥
 वक्तुमहं स्यक्षेपेण विस्फोटकभयापहम् ॥ १ ॥
 ईश्वर उवाच ।

वदेहं शीतलं देवी रामभस्यां दिगंबराम् ॥
 योमासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभय महत् ॥ २ ॥

शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्वाहपीडितः ॥
 विस्फोटकभय घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥ ३ ॥
 यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा संपूजयेत्तरुः ॥
 विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ४ ॥

शीतले ज्वरवृक्षस्य पुतिगंध गतस्य घ ॥
 प्रणष्टकक्षुरापुणस्तस्वामोहुजी वितप्रदा ॥ ५ ॥

ममामि शीतलं देवी रासभस्यां दिगंबराम् ॥
 मार्जनीकलक्षोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥ ६ ॥

शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्तरान् ॥
 विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेवामृतवर्षिणी ॥ ७ ॥

गलगण्डप्रहा रोगा ये वा न्ये दारुणा नृणाम् ॥
 त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यांति ते क्षय ॥ ८ ॥

न मंशो नौषधं किंचित् पापरोगस्य विधत्ते ॥
 स्वमेका शीतले घात्री नान्यत्पश्यामि देवतम् ॥ ९ ॥

मृणालतंतुसदृशो नाभिहृन्मधमसंस्थिताम् ॥
 यस्त्वां संचिन्तयेद्देवी तस्य मृत्युर्न जायते ॥ १० ॥

अष्टकं शीतलादेव्या यः पठेन्मानवः सदा ॥
 विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ॥ ११ ॥

श्रीतल्यं पठितव्यं च जनैर्भक्तिसमन्वितैः ॥
 उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ १२ ॥

बच्चेकी खांसी-ससणी बुराध भराणी

कारण चिन्ह—शरदी लगनेसे, श्वास नलीमें धूल बाह्य रजकोंमें जानेसे, धुंवासे गद्दी हवासे तापसे रक्षाशय के रोगसे और खोंधीवाले बच्चेके स्पर्शसे यह रोग होता है। जब श्वास लेनेसे श्वासनली सूजकर लाल होती है। पहिले फेनवाला पीछे पकनेसे पीला या सफेद कफ गिरता है। इस सूजनसे खांसी आती है। श्वास चढ़ता है। इससे ताप आवे, दस्त कब्ज हो जीभ पर छारी छाती हृदयका सकोच हो छती उची होती है। पांसला और पेट उछलता है। ८ से २४ दिनमें आराम होता है। यदि यह उम्र रूप पकड़े तो ८ से १० दिनमें बच्चा मरजाता है। यह रोग ६ माससे २ वर्ष आयुके बच्चेका होता है।

बालकफाटी घड़ी—पारद गंधक ककड़ाशींगी कपूर काचली सागर गोटाकी गीरी लवंग प्रत्येक दस दस तोल १० काली मिरच सेठ वायविडंग जशखार पकाया टंकण पीपल प्रत्येक आठ आठ तोला, छोटी हरड २४ तोला, कथा ५६ तोला, जमालगोटा तो २० भांगराके रसमें जमाल गोटाको घोट कर पीछे सब सथ मिलाय भांगराके रसकी भावना देकर मुंग प्रमाण गोली बनाना।

बालकफारिददी—पारद गंधक ककड़ाशींगी कपूर काचली सागरगोटाकी गीरी लवंग प्रत्येक दस दस तोला काली मिरच सेठ वायविडंग जशखार पकाया टंकण पीपल प्रत्येक आठ आठ तोला, छोटी हरड २४ तोला, कथा ५६, जमाल गोटा तोला २०, भांगराके रसमें जमालगोटाको घोटकर पीछे सब वस्तु साथ मिलाय भांगराके रसकी भावना देकर मुंग प्रमाण गोली बनाना।

आयुके अनुसार १ से २ गोली पानी में पीस देना। गले में कफ जमा गया हो निकल नहि सकता तब यह गोली देनेसे दस्त और वमन होकर कफ निकल जाता है। और बच्चा अच्छा होता है यह गोली ४ से ८ दिन दी जाती है।

लवंगाष्टक—लवंग लछुन अपामार्गबीज अरारजिता (गरणी) बीज बच तज अजवायन वायविडंग हरड समभाग पीस रखना २ से ४ रती पानीको देना।

ताबुल के, पानको पीस बिना पानी डाले निचाड कर रस निकालना उसमें अदरक का रस २ मास डाल इसमें दो लवंग पीसकर यह रस थोड़ा पिलानेसे यह रोग मिटता है।

बड़ी खांसी कुकडिया खांसी उट्टाटियु

कारण बिन्हु—यह रोग आक्रमक चेपी होनेसे एक बच्चाको होनेसे उसके सङ्कास में आनेवाले या स्पर्श करने वाले दूसरे बच्चाको होता है। बहुत कर के प्रत्येक बच्चाको एक बरत यह रोग होता है पंछे कभी नहि होता। २ से १० वर्षकी उम्र के बच्चे को होता है।

इस रोगमें खांसी आवे जब घिसोटो पावा जैसा आवाज होता है। पहिले आठ दिन तब थोड़ा थोड़ा ताप आता है पीछे प्रतिश्याम (सबलम) होकर खांसी आती है। खांसी आते वक्त मुख लाल हो जाता है। खांसी बंद होती है जब बच्चा रुकने लगता है। फिर १५-२० मिनट के पीछे या एक दो घंटा के पीछे खांसी आती है। दिवस की अपेक्षा रात में खांसी इतने जोरसे आती है कि बच्चाको दस्त पश्चात् हो जाता है। यह रोग १५ से ३० दिनोंमें मिटता है।

बालकास डरी घटी—एनीया लघुन हिंग इद्रायणमूल सेवानोन समभाग केकर अदरख के रसमें मुग प्रमाण गोली बनाना २ से ३ गोली पानीसे देना।

वाढसत भद्र चूर्ण—अतिविष चाइ के फूल बिस्व फलका गर्भ, वाला मोय हाड ककडाशोण सप्तभाग कुट ३ से ८ रती शहद से अथवा पानीसे देनेसे इस रोग में लाभ होता है।

बच्चोंके आरोग्य रखने वाली औषधें

बालारोग्य घटी—वायविडंग हरड मंडुर भस्म प्रत्येक पांच पांच तोला, अतिविष १० तोला, लता करंज बीज गिरी १० तोला, गिलोयका घन ५ तोला, कुडकी छाल ५ तोला, लवंग जायफल वायविडंग अजवाइन अजमोद प्रत्येक तीन तीन तोला पोस्त के दोहाके क्वाथ में गोली मुग प्रमाण बनाना २ से ३ गोली पानीसे देना सब रोग में गुणकारी है बच्चा निरोगी पुष्ट होता है।

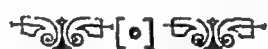
बालागोली—जायफल बच वायविडंग हरड लोधान प्रत्येक पांच पांच तोला, कपूर बीज गिरी लता करंज बीज गिरी मुंई आंवली प्रत्येक ढाई तोला, साबरश्री भस्म वंशलोचन चंदन गिलोय घन इद्रजौ मंडुर भस्म अतिविष इलायची प्रत्येक दो दो तोला, तुलसी रस तथा फुरीना के रस की एक एक आयना केकर मुंग प्रमाण गोली बनाना। २ से ३ गोली पानीसे देना बालक निरोगी रहता है। बच्चोंके सब रोगों में गुणकारी है।

घालाक—यथा मसम तोला २०, साधरीग भस्म तो २० गोरान्न तो, ५, अतीविष कळो तो २०, प्रवाल चंद्रपुटी तो. २०, शुद्ध हिंगुळ तो, २०, कचुरो तो, २०, केशर तो ३ सब साथ पीलाय तुलसी के रसमें भोंट मुंभ प्रमाण गोली बनाना । बच्चोंको खायां बरी खादी शरबी ताप दस्त आदि मिटे । पुष्ट होने ।

वाल पौष्टिक सोगठी—गोला गोली के द्रव्यों के सोगठी के रूप में बनाना १ से २ रत्तो पानीमें पिघकर देना, बच्चा पुष्ट होता है ।

वाल पौष्टिक अवलेह—दशमूल ८ सेर लेकर ध्वाय कर कपड छान कर उसमें गुड़ जो २० डाल पकाना । चासणी जैसा बने जब हरक बहेका आवला मुहली अदग्घ शतावरी बरीसाफ तुलसीबीज हलदी काकडासींगी कौबच बीज पला बीज बिल्व फल गर्भ लवंग सीठ पीपल प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर कुट कर हवालासे छान कर रखा हो वह गुड़ को चासणी में डालकर पकाना । घट्ट होने पर उतार कर स्वांगशीत होने देना । १ से २ छोटी चम्मच बच्चेकी उम्र के अनुसार खिलाना बच्चा पुष्ट नीरोगी होता है ।

सर्पपथी स्नान—नीम के पत्ते मेढाभींगी बच कुष्ठ बिस्वपत्र हलदी दाबहलदी कचुरा चंपाका फुल मोथ समभाग कुट कर रखना यह चूर्ण चार पांच तोला काढेकी शिथिल थैली में डाल कर वह पानी में डाल गर्म कर उस पानीसे बच्चेको स्नान काने से बच्चे के बहुत से रोग मिटते हैं । १ मास में एक दो रफे स्नान करानेसे बच्चा नीरोगी रहता है ।



क्षुद्ररोग—छोटे प्रकीर्ण रोग

१ अग्निदग्ध

कारण—प्राइमस से तेजाबसे गर्म तेल और पानीसे ग्यासलेट तेल या पेट्रोल से अनेक कारणोंसे मनुष्य जल जाता है । हमारी सरकारने हिंदुओंके लिये एक स्त्री पर दुसरी नहि करनेका कानून बनानेसे दूसरी स्त्री करनेके लिये पहिली स्त्रीको जला देनेकी घटना संख्यातीत बन रही है । यूरोप में कानून के पीछे २५ गुना स्त्रीओंको जला देना या अन्य प्रकारसे मार डालनेका किस्सा बन रहा है । यह कानून स्त्री के कल्याण और हिन्दुओंकी संख्या न बढने के ली

दृष्टिसे किया हो पर जोओका विनाशक बन रहा है और यह पाप सरकार पर चढ़ रहा है। वतमान जमाना में विलास के साधन बढ़ रहे हैं जैसे लकड़ें मृत्तु भी बढ़ रहे हैं। प्राइमस से जलना तो प्रति दिनकी बात हो रही है। बिजली से जलना तो उसी क्षण मृत्तु के भेटना है। खानुन और विलास से जोओ का अधिक नाश हो रहा है।

चिन्ह—जलनेसे सारे शरीर में पीड़ा होती है। बड़े मनुष्यों की अपेक्षा छोटी उम्रवालोंको ज्यादा पीड़ा होती है। शरीरका अधिक भाग मस्तक छाती प्रस्रभाग जलनेसे मृत्तु होता है। साधारण जलनेसे चमड़ी के ऊपर का भाग लाल होता है। इससे ज्यादा जलनेसे रफोट (फोडला) ठठता है, इससे ज्यादा जलनेसे ऊपर की और नीचेकी चमड़ी जलती है। इससे ज्यादा जलनेसे स्नायु घमनी रक्त वाहिनी क्षिरा जलकर वह भाग काला पड़ता है, इस के पछे अस्थि तक पहुंचता है।

पहिली अवस्थामे—ग्लानी दाह अदर के अवयवों में खूनका जमाव हो। यह स्थिति अधिक समय रहेतो शरीर ठंडा पड़ने लगे, नाड़ी क्षीण पड़े, चेहरा हो इस दशा में दिमागमें खून चढ़ कर मृत्तु होता है।

दूसरी अवस्था में—ग्लानी कम हो कर कुछ हुशीयारी आवे दाह उत्पन्न हो, यह स्थिति आठेक दिन रहे, अंग गमर रहे कमी ताप पड़े, पेट और छाती में दाह हो, आंत्र आंतों में व्रण पड़े खून मिश्रित दस्त व व्रण हो, कभी वह दाह पेट में रक्त वाहिनी क्षिरा में उत्पन्न होनेसे रक्तस्राव होकर रोगीका मरण होता है। बहुत दफे इसमें घुनुवा या घोघप रतवा का विकार उत्पन्न होता है। जोओको छाती स्तन और गुण्य भाग जलने से ३ से ६ घंटेमें मरण होता है।

उपचार—शरीर पर या जले भाग पर पवन आने देना नहि शरीरपरका कपड़ा जले तो एक दम दोड़ना नहि जैसे हि खड़ा रहना नहि एकदम आलोटने लगना (आलोटवा मरिनु) ओर जो कोई मोटा (जाड़ा) कपड़ा रजाइ या जोहाथ लगे इससे जलते कपड़ेको शरीरपर बिटाल देना इससे पवन रुक कर अधिक जलता रुके।

अग्निदग्ध शामक मलम—एकरींग लगाये बड़े बरतनमें एरंड तेल अथवा तिलका तेल शेर ५ में पोसी हुई राल शेर २ डाल कर मंद अग्निसे एकता राल विषक जाय जब उसमें मोम आवा सेर डालना वह विषल जाय जल चुलासे नीचे उतार कर उसमें पानी थोड़ा थोड़ा डालते रहना और लकड़ीके

बंदासे नीरसे हिलाते रहना मरुधन जैसा सफेद मलम होगा वह जले हुए पर-
लगाता और कपड़े पर लगाकर वह कपड़ा जले भाग पर लगा देना ।

महाचक्रला गोली प्रवाल चद्रपुटी जवाहर मोहरा पिछो मुष्का पिछो-
सप्तावृत लोह आदि श्रेष्ठ मात्रा में देना ।

घोड़ा जला होता उस भागके पानीमें डुबा रखना । मृगराज तेल घोपराका
तेल तिलका तेल अथवा महालाक्ष्मि तेल में कपड़ा भिगोकर जले भाग पर
लगा देना और पवन न लगे इस लिये रुई दाब कर कपड़ा बिटोलना । और
उपर घोड़ा घोड़ा तेल छिड़कते जाना ।

कली चुना १ तोला एक बोतल में डाल उधमें पानी पीने के रतल
(७० तोला) डालकर मश्रुत चुच देकर १-४ मिनीट छिलेना पीछे चुच देकर
३ घंटा रख छोड़ना पीछे उपरसे स्वच्छ पन दूसरी बोतलमें डालकर रख
छोड़ना जले भाग पर लगाना हो जब चुनाका जल और तेल मिश्र कर कपड़ा
भिगोकर जले भाग पर लगाना । जलाकर उसकी राख तिलके तेलमें मिलाकर
अथवा रेशमके कपड़ेको जलाकर उसकी राख तिलके तेलमें मिलाकर अथवा
त्रिफलाको एक भटकीमें भा जलाकर उसकी राख तिलके तेलमें मिलाकर जले-
भाग पर लगाना ।

६ शस्त्राघात

चपु अरु तलवार या अन्य वस्तुसे कटनेसे घिसनेसे खींचनेसे पथर
आदिसे छुटनेसे खंजर सोह आदि घुंघनेसे अथवा पशु आदिके नख दातसे
कटनेसे घाव पड़ता है खून गिरता है । अधिक खून गिरनेसे मृत्यु होता है ।

शस्त्राघात रोपण तेल—बबुलकी छाल गौद राजन अस्थिसंहारी
(हाडसाकल) शिरीषकी छाल अंजन धृक्षकी छाल ठाक्षकी छाल प्रत्येक आधा आधा
शेर, काख १ सेर अपामार्गका पंचांग दो शेर पीपलके कोमलपान नीमके पत्ते
सी दूर ठाक्षकाचबाकी छाल मजीठ बकराकी सींग प्रत्येक एक एक सेर सबको कूट
कर पानी डालकर १२ घंटा भिगो रखना पीछे उसमें तिलका तेल सेर ६०
डालकर पकाना । इस तेलमें कपड़ा भिगोकर घाव पर लगा देना ।

३ निद्रामें पिशाव हो जाना

यह रोग बहुत करके बच्चोंको होता है । कभी इसे पन्द्रह सालके बच्चोंको
होता है । ज्यादा होता है । मधुर पदार्थ, इंस, चहा पीनेकी ज्यादा आदत
इत्यादि कारणोंसे यह रोग होता है ।

मूत्रांशु रस—ठोढ़ मसम, बगमसम, अफीम वित्त फलका गर्भ, चीनीकाला मागकेशर, आमकी गुठली की गिरी, जमुन की गुठली, अजीर, शक्कर, रस बिंदू सब समभाग लेकर जामुन के पके हुये फल के रस में घोटकर दो रती की गोली बनाना । १ से २ गोली पानी या दूधके साथ देना । बिना इच्छा होता हुआ या निद्रिमे होता हुआ पिशाच भटकता है । मधुमेह, पथुमूत्र, सोमरोग, हृदय और प्रमेहमे भी यह अच्छा गुण फर्ता है ।

४ अनिद्रा निद्रा कम आना या नही आना

कारण चिन्ह—ताप से तापकी गरमी, वायु प्रकृति खांसी, श्वास चढना, पेट के जंतु, पेट फुलना अम्लपित्त, बीमागकी कमजोरी, उन्माद, पागलपन, विचार वायु क्रोध शोक भय, आघात इत्यादि कारणों से यह दर्द होता है ।

निद्रावर्धन रस—पारद गंधक, सुका शुक्ति पिष्टि, बग मसम, प्रवाल पिष्टि प्रत्येक पांच पांच तोला । शिलाजित त्रिकला गुग्गुलु, कुटकी प्रत्येक दस तोला गन्धपीपल, सेठ. चीनीकाला, इलायची, लेग, आयफल, तज, रास्ना, कताकरज बीजकी गोरी (काकचिदाना मीन), कुष्ट वायविडंग, सेंचानेन, प्रत्येक पांच पांच तोला, सब साथ मिलाकर मेरी के रस में दो रतीकी गोली बनाना) आठवा २ से ६ गोली पानीसे अथवा चावनाश जीवन से. शहदसे, मखनसे अथवा गुलकंदसे देना । एक महिना तक सेवन करनेसे लाभ होता है । यह औषध अम्लपित्त, पिशाचका ज्वन मे लाभ करता है ।

- १ रखाजन १ रती गुठके पानी मे घीस कर आँख मे अंजन करना ।
- २ महामुक्ताजन सेती बख्त अंजन करना ।
३. काकजंघा (बैठी अघेडी) का मूल मुख में रखनेसे निद्रा आती है ।
- ४ खसखस दोसे तीन भाशा शक्कर के साथ खिलाना ।
५. सापकी कांचलीको रुई में बिटाल कर तिलके तेलसे दीप जलाकर काजल (पशो) पाटना । वह गायके घी में मिलाकर अंजन करना ।

निद्राप्रवृद्धि रस—नागरमोय, वायविडंग, नागकेशर, चीनीकाला, इलायची, तज तमाल पत्र, अतीश कवंग, गिलोय बबकी बडवाई, शक्कर खजूर, पर्यट पके अंजीर, जरदालू, सब समभाग कूट कर दो तोला मे २ या ३ कप पानी डाल रातमे रस छोडना प्रात कालको मसूर कर लपकछान कर उसमे शक्कर या शहद काकर दिनमे दो दूके पिलाना ।

५- अतिनिद्रा निंद बहुत आना घेन

कारण—कफ प्रकृति से शायी लगनेसे, कफ प्रघन तापसे सन्निपात ज्वर से और जन्मसे ही निद्रालु स्वभाव होनेसे निंद बहुत आती है।

निद्राताशन रस—पारद, कषक, सोंठ, पीपल, काली धिरन, अम्रक मरम, कोह मरम सफेद बछाग, टकण, सेधानेन पीड लवण, तज, लविंग प्रत्येक पांच पांच तोला और मुना हुवा बुंद १० तोला साथ मिलाकर निगुंटी भांगरा छोटी अडुसी अपामार्ग, आहु, पवार कुवाडिया के बी भुना हुवा बुंद प्रत्येक कवाथ अगर रक्षी ऐह एक भवना देकर २ रतीकी गोली बनाना। २ से ३ गोली पानी के साथ देना।

निद्रारि कवाथ—सोंठ पीपल, मरी, तज, लविंग, रास्ता, अम्रगंध, गुमा तुलसीके पान पीपरीमूल मलामूल, वायविडंग प्रत्येक दश दश तोला और भुने बुंद १०० तोला सब साथ कुट कर रखना। एक तोलाका कवाथ कर उसमे गुड डाल खिलाना।

६ अफीमका व्यसन छुड़ाना

अफीम व्यसनहरी बड़ी—जायफल जावंत्री अम्रक मरम, लाल कनेरकी छाल सफेद करेनकी छाल दाडिमके मूककी छाल चतुराका नीम चतुराका मूल प्रत्येक पांच पांच तोला, शुद्ध कुचला १० तोला सब साथ पीप पोहके डेढेके कवाथमें घोटकर रती प्रमाण गोली बनाना। जितना अफीम हमेशा लिया जाता हो उससे दूने वजनसे गोली देना। और हमेशा थोडा थोडा अफीम कम करते हुये बंध करना। इस गोलीसे मुखमें शोष पड़े तो शहदका पानी अथवा चपवनप्रास जीवन अथवा गुलकंद अथवा अंजोर द्राक्ष अथवा दूधका मावा(खोवा) खिलाना।

७ खोलीं-हाथ और पांवमे खोलीं निकलना

हाथ पांव अंगुलीओमें पोचामे पांवके तालुओमे हाथ पांवके किसी स्थानमे खोली निकलती है, उस खोली को जगहमे थोडा बहुत रद्द रहा करता है, चप्पु आदिसे सखेडकर निकाल देते हैं तो फिर वहा जमतो है।

१—तिलकी दहीयां (तलसरी) को राख और कलचुना समभाग मिलाय खोलीपर बांधना पोल्टीकी तरह बांधना। ३ या ४ वरत लगानेसे मिट जाती हैं।

२—मुरगीकी चरक हुक्काका गुड कलचुना समभाग मिलाय गौमुखमे पीछ छोटी पोल्टीकी तरह बांधना।

३—बाइके फूल सेनागेरु घट्टाकापान पानीमे पोष भगाना ।

४—आंफका दूध तोला १ एरंडी भीमकी गिरी तो ०।, देशी साबून तो, ०।, बाब पोड पोटे कर बांधना ।

५—आंफलाको रातको भिगा रखना, सुबे महीन पीस पोटीस बांध पाटा बांधना ७ दिन करनेसे शत पडवाली खोली अंशर घडकर निकल जाती है ।

८ हाथ पांवकी व्या फटना—पाददारी

कारण—किसीको क्षीतकृमुमे और किसीको पारो मास हाथ पांवके तालुओं में पेनीकी कंवरी पर बमही फटती है वहां थोडा दूद होता है पांव फटनेसे चलने फिरनेमे कष्ट होता है ।

रोपण मलम—एरंड तेल घेर १५, राल घेर १०, मेम घेर, २॥, तेल बम होनेसे राल डालना यह पिघल जाय जब मेम डालना पिघल जानेपर नीचे उतार कर खुब हिलाना यह लगानेसे जुत आराम होता है । किशोर गुणक, भारोम्यवर्गनी गोली, बद्रप्रभा योग्य मात्रा से देना ।

हिमूठादि मलम—सींगरफ राल गंधक टंकण सिद्ध नीलायोथा शीरास्त्रम कर्पूरा कुंकुम (ललाटेमे टीका करनेका) प्रत्येक ठाई ठाई तोला, मेम १० तोला, घी घेर ३ साथ विभि वत मिलाय मलम करना । हाथ पांव पर लगानेसे फटा हुआ भाग दस्त छाता है और पीस मिटती है ।

९ मसा-मस

यह आंख गला काढी मुख गरदनपर ज्यादा होता है शरीरके अन्य भागमे भी होता है । मस सजीव और निर्जीव होता है । निर्जीव मस तंतुओंसे या सूत मांस कणिका ओसे बना हुआ होता है । सजीव मसको शस्त्रसे काट कर उस भागमे दाम देना-अग्निसे जलाना ।

सैधवादि घर्पण—सैधानेन संचल सेठ पीपल काली मिश्र च मेनकील निशामूल नीलायोथा लाल सोमल सब साथ घोट रखना मसा पर घी लगाइ यह चूण लगाना । मूसे मस सूख जाता है ।

टंकणादि घर्पण—टंकण बरंजुना नमक बमभाग पीस रखना । घुटकी भर रसपर बंधना घसलना तीन दिन करनेसे मस मूलसे निकलजाता है ।

१० काखकी लावलाइ

दशांग टोप अथवा दोषन लेप अथवा महारास्ता दे कर्षण अथवा मंजिष्टादिक गण पानी में पीस गमक पर पोटीस माफिक लगाकर बंधाव कर पटा बिंबना । ओषध धुंधनी किशोर गुग्गुलु केशरादि गोली कस्तूर्यादि गोली आदि औषध सेवन करना ।

११ अंशुघात-लू लगना

सूर्य के तापसे चलनेमें, धूपमें गर्म हवा लगनेसे धूम में नंगे पांश फिरेसे लू लगती है । सब कपड़ा निकाल ठंडा पत्र पंखा करना । कैलीके पान बिछाकर सुलना, ठंडे पानीसे भिगोया कपड़ा शरीर पर लगाना गुदका पानी कर कपड़ा छान कर थोड़ा थोड़ा पिलाना । सफे चंदनका चूरा पानीमें पीसकर शरीर पर मर्दन करना । मस्तकपर पानी छेड़कना ।

हिमाद्रि रस—(स्वर्ण युक्त) मुष्का प्रवाल वैकृत माणिक प्रत्येककी पीछी पारद गंधक प्रत्येक एक एक तोला, सोनीका वर्क ॥ तोला, चांदीका वर्क २ तोला चीनीकवाला इलायची हरड बहेडा आवला भीमसेनी कपूर प्रत्येक आधा तोला मूलेठी मूल २ तोला जलपिपली गांवजबाज (मोषाथरी) सागरा शातावरी विंदारी कंद प्रत्येक चार चार तोला, लेकर कूमाद रस आवलाका रस हरी दाक्षार रस प्रत्येककी एक एक भावना लेकर २ रतीकी गोली बनाना । २ से ४ गोली पानीसे अथवा गुदके पानीसे दो दो घंटाके पीछे देना २ दिनमें लू लगी हो वह आराम होता है । पित्तप्रकोप किसी भी जगहका शरीरका दाह आंखोंकी जलन छातीका दाह अम्रपित्त किसी भी स्थानका रक्तस्राव खुनी मसा प्रदर प्रमेह पिशाचकी जलन इत्यादि पित्त गरमी प्रधान रोगोंमें यह उत्तम कायदा करता है ।

१२ गुदभ्रंश—आमण निकलना गुदा बहार निकलना

कारण—यह रोग बहुत करके बच्चोंमें होता है । बड़ी उम्रवालोंको भी फूटती होता है अति दाह पीनेसे उबनेसे कुदनेसे गरमी से यह रोग होता है । दस्त आते वखन गुदाका भाग बहार निकलनेके पीछे दस्त आता है । दस्त आजानेके बाद धीरे धीरे अंदर बैठता है । किसीको बहुत दशनेपर बैठती है ।

चांगेरी घृत—वैठो गुजरका मूल जलपिपली छोटी पीपल चिचक शातावरी विंदाकी गौरी हंसराज हराधनीया अदरक अजमेद इन्द्रजी गोखर पाठ केलकंद प्रत्येक दस दस तोला कूटकर इसमें दही घेर ४०, खट्टी छणी (चांगेरी) घेर १० और घे घेर २० सालकर पकाना । पानीका भाँसा जल जाय जब शुद्ध

कपडकान कर लेना । मात्रा १ से ४ तोला गुदभ्रंशमे उत्तम गुणकारी है । यह प्लुत खनी मर्या सप्रहणी पेट फूलना पिशाचकी जलन इनमे भी गुणकारी है ।

गुदभ्रंश शामक मलम—पाठा बेल फलकी गिरी इलायची चीनीक बाला प्रत्येक चार चार तोला, खट्टी लुणी—चागेरी तोला, ८० सबको कूट इसमे घो २ सेर पकाना पीछे उस घीमें शसजीरा तोला २ कपूर तोला ॥, शक्कर तो १॥ को महीन पीस मिलना । यह मलम लगाना ।

१ खेरका गोद तोला ॥ मुंगका आटा तोला १ घीमे मिलाय ७ दिन खानेसे आम्रण निकले नहि ।

२ कमलके कोमल पत्तेका पीस शक्कर मिश्रकर पिलाना ७ दिनमे यह रस मिटे ।

१३ पानी लगना—दुर्जल जन्य रोग

दुर्जल जन्य रोगी बम्बइ जैसे बड़े शहरोमे रहनेसे अथवा देश परदेश खानेसे पानी लगता है, तब दस्त वज्र रहता है, भुख कम होती है, खून चक्का पड़ता है शरीर कमजोर होण होता है ।

आरेख वधनी गोली, दुर्जल जेता, सुशण वषंत मालती, पूर्णचंद्रोदयकी गोली, योगराज रसयन, नवायष लोह, लोह रसायन, सप्तामृत लोह औभाग्यशुद्धी अमृत मरुतांतक आदि औषध दिया जाता है ।

१४ अकाल मरण

जलमग्नेो वृक्षादेः पतितो वज्राग्निना हतो मनुजः ॥

आयुष्ये सत्यपि वा मृत्युवश याति मानवो नूनः ॥१॥

श्वासानयनक्रिययाऽऽनीते श्वासे प्रयत्नतो जीवेत् ॥

याषष्ठिथिलावयवश्चोष्णशरीरश्चिकित्सितु योग्यः ॥२॥

जलमग्नमधः शिरसं कृत्वा निःसारयेज्जलं सद्यः ॥

पाश्वे शाणितमास्ये स्वमुखेन घमेघ्रलीययन्त्रेण ॥३॥

सीमांजननस्यौषधयोगा योज्याश्च सन्निपातोक्ताः ॥

तालुनि हिरण्यगर्भे घर्षेद्यावच्च रक्तसयोगः ॥४॥ (रसोद्धारतंत्र)

आयुष्य रहते हुए भी मनुष्यका मरण होता है यह अकाल मरण है । पानीमे डूबनेसे गरम पाश खानेसे बिजली पड़नेसे भयंकर भय लगनेसे भयंकर अप्रिय दुख बारक बनाव सुननेसे किल्ला—बृक्ष मकान आदिसे गिरनेसे छातो दबनेसे श्वास नलीमे बाध पदार्थ हुए जानेसे श्वासकी गति रुक जानेसे हृदय बंद

पहनेसे धमि आदिसे जलनेसे जला देनेसे प्राइमस आदिके अकस्मात्से इस प्रकार अनेक कारणोंसे आयुष्य होते हुए भी मनुष्य मर जाता है ।

इनमेंसे जीमके शरीरके अंगोंके अवयवोंके हानी न पहुँची हो जैसेका उपचार करनेसे पुनः जीवित होनेका संभव है ।

पानीमें डुबकर मरण पाये हुयेको बहार निकालनेके पीछे उसको उभे मस्तक टांगकर पानी बहार निकालना अथवा मस्तकका भाग नीचा रखकर मुख खुला पर जीम चिपीयासे पकड़ खेच रखना ताकी पानी निकल जायगा श्वास बंध होतो कृत्रिम श्वास चालू करना । रोगीका कपड़ा निकाल ढाकना पीछे सज्जिनातमें और सर्पदंशमें बताये तीव्र अंजन नस्यका उपयोग करना । नलीद्वारा फूक मार कर नस्य चढ़ाना । तालुमें अन्नासे छेद देकर खुन निकले तब जगद दिग्ग्य गर्भ चन्निपात भैरव त्रैलोक्य वितामगौ अवोर वृषिंह आदि औषध चिड़ना । चिपीयासे जीम पकड़ कर नाक बंध कर गलेमें नलीद्वारा फूक मार मार कर या अन्ना रीतीसे श्वास चालू करनेकी युक्ति करना । जीमको हर वक़्त खेचना ढोली करना इससे छाँक भावे वमन होतो जीमको खेच रखना इससे श्वास चालू होगा । इस प्रकार जीमको खींचना ढोली करना यह किया अेक मीनीटमें ८-१० दफे करना । छाती पीठ पसलीमें महानारायण तेल अथवा तिल तेल या सरसोका तेल जोरसे मर्दन करना । पेटके नीचे भोषीका रख उष्ण सुलाकर पीठ-पृष्ठके भागमें दाबना । तेल मर्दन करना इससे छाती दबेगी फिर पार्श्वोंका (पट्खावो) धर फिर उष्ण सुलाना इस प्रकार १ मीनीटमें १०-१२ दफे करना फिर मनुष्यको चौता सुलाकर पीठमें अेक दो उधीका रख चौता सुलाना और पेट दाबना तैलसे मर्दन करना जीम चिपीयासे पकड़ रख मुख खुला रखना इस प्रकार १ मीनीटमें १०-१२ दफे करना । मस्तक पर पानी छंडकना पीछे वैद्यने मस्तककी और खडा होकर दोनो हाथ कांथासे पकड़कर लंबाकर पायाकी और खींचना और छाती उपर रखना इस प्रकार एल मीनीटमें १०-१२ दफे करना ।

भुंगली अथवा नली गलेमें उतार मुखसे सखत फूंक मारना और नलीद्वारा मृत जीवनी सुरा अथवा उची कीसमकी ब्रांडी अंदर दाखल करना इस वक़्त जीमको चिसियासे पकड़ रखना । सारे शरीरमें सेठका चूर्ण मर्दन करना घ्रांठोका मालीस करना । इस प्रकार दो तीन घंटा पर्यंत उपचार करनेसे मनुष्यमें श्वासकी गति होकर बच जाता है । इस प्रकार उपचार करनेपरभी श्वासकी गति चालू न होतो जीवित होनेकी आशा छोड़ना ।

भय शोक आघात आदिसे अथवा अकस्मात् हृदय बंद पड़जाता है तब उपर लिखा उपचार सारवार करना ।

विष प्रकरण

प्राणिज विष वनस्पतिज विष खनिज विष

१ सर्पदंश-साँप काटना

बिम्ब-झहरीला सर्प काटा होता करड्डी जगह दो छिद्र होते हैं, यदि तीन-तीनकी दो लाइनमें छ छिद्र होते। वह साँप झहरीला नहि है ऐसा समझना । साँप काटते वह झनझनाहट होती है, चकर आता हैं, वमन उभका करनेका मन होता है, पांवमें जोर नहि रहता खासका रंधन होता है, कष्टसे साँव ले सकता है, नाडीकी गति बेगवाली और आँचका खाती हुई चलती हैं । भाल सक्तता नहि जीम छोटी पढ़ने लगती है । थुक गिलनेकी शक्ति नहि रहती, जीम बहार निकलती है किसीको मुत्तमें फेन आता है । ठंडा पसना होता हैं । बेगुद होकर धीरे धीरे कमजोर होकर मरण पाता है । झहरी सर्प हो तो २ से ४ घटामें मृत्यु होता है

तुर्त की जानेवाली सारवार

साँप काटते हि जल्दमेंसे १-४ इंच उपर के भागमें मजबुत पीटा बांधना जिससे खूनकी गति रुक जाय । पीछे किसी मजबुत आदमीसे विष चूसाना । चूसने वालेके मुहमें चाँदा नहो और दाँतके मसूढ़ोंसे खून निकलना नहो चूस चूस कर थुक डालना और सर्प विषहर क्वाथका कुन्ला करते रहना । चूसनेका न होतो वहाँ छेका देकर खून बहाना । घेरी नस न कटे यह ध्यान रखना । पीछे दंशवाला भाग ग्यासरेट तेलसे भरे हुअे बरतनमें अथवा केलीके स्थाभके रससे भरे हुअे बरतन में डुबाना । विष वज्रपात रस अथवा औलोह चिंतामणि अथवा रोमवेध रस अथवा हिरण्यगर्भ रस मेंसे किसीको पीसकर दशपर दावना और औषध माशा पानीसे अथवा ढाकके मूलके क्वाथसे देना ।

पीपल(मन्वत्थ) पत्र प्रयोग—पीपल वृक्षकी छोटी शाखा तोड़ लाना जिसमें २०-२५ बड़े पान हो । सर्पदंश वाले रोगीको बैठाना इसके पीछे दो आदमी उसके दो हाथ पकड़े एक आदमी मस्तक पकड़े, दो आदमी दो पाँव पकड़े और एक आदमी सामने बैठकर पीपल के दो परतकी लंबी दंडी हो वह दोनो कानमें घुसा दे धीरे धीरे कानमें जाकर अटक जाय जब डहीयो दो कानके साथ दाबकर रखना । थोड़ी देरमें रोगी चिरलाने लगेगा तो सी उसे छोड़ना नहि डही नीकालना नही । पाँच दस मीनीटके पीछे वह परते एक बाजु रख दूसरे लंबी डहीके परते डेकर डही कानमें घुसाटना और कानके साथ मजबुत पकड़

रखना। इस प्रकार ५-७ ढही बदननेसे सब सहर ढही चूष लेती है और रोगी बच जाता है। विपैल ढही वाले परते फो जला देना वह पतता पशु खा जाय तो मर जाता है। रोगी जेष्ठ हो गया हो वह भी बच जाता है। गैश डाकटने मरा हुआ बता दिया हो उस पर भी यह प्रयोग करना बच जाता है। यह अद्भुत प्रयोग है।

गरुड वृक्ष अथवा गरुड गच्छ वृक्षका प्रयोग

इस वृक्षके बारेमें हमारे मित्र श्री टोकराजी कालीदास C/o प्रमुदास बाघजीभाई एन्ड कंपनी बंही पतताके ब्यपारी राजनगरगांव मध्य प्रदेश। इनका गुजरती नम्रका अनुवाद देते हैं। वे लिखते हैं कि मैं आपसे सर्प विष निवारक अद्भुत औषधी मेजता हू इसका नाम गरुड अथवा गरुड गच्छ, गरुडका वृक्ष जंगली लोग कहते हैं। वह जंगलका पहाड़ी वृक्ष है। ओरीसा और मध्यप्रदेश जंगलों में पहाड़ों पर कहीं कहीं देखनेमें आता है। यह वृक्ष बहुत लंबा और सीधा होता है, पत्ते बिल्व पत्रकी तरह एक ढंढीमें पांच सात लगे रहते हैं। पत्ते लंब गोठ होते हैं। इसकी एक दो हाथ लंबी फली होती है। फली जब वृक्ष पर लटकती है तब मानो सर्प लटकते हैं। ऐसा भास होता है। फलीगत नीचेका भाग कुछ बक (नमाहुआ) होता है। सुखने पीछे वह फटती है। तब उसमेंसे सर्पकृति फली जितनी लंबी लकड़ी जैसा निकलता है। उसके अग्रभाग सर्पका मुखको विलकुल मिलता जुलता है। इसकी आलुबालु कागज जैसे पतले सेकड़े बीज निकलते हैं। इस फलीका सर्पकी हड्डी जैसा गर्म और छाल सर्प विषका औषध है। जहां सर्प कांटा हो वहां फलीके गर्मका टुकड़ा पीसकर लगा देना और पानीमें पीस कर पिलाना। इस वृक्षकी फली जंगली लोग लाकर बाजारमें बिकते हैं। और सर्प विषकी अमोघ औषधी के नाते लोग ले जाते हैं। मैं पहाड़ पर खुर जाकर श्री गे लाया हू जो आपकी पास मेजता हू। जंगली लोग सर्प विषमें इसका उपयोग करते हैं और शत प्रतिशत रोगी अच्छे हो जाते हैं।

यह वृक्ष भयंकर सर्पविषका औषध होने पर स्वयं विपैल-सहगिला नहीं है, नीरोगी मनुष्य भी खा सकता है। इसके गुणकी मात्रा १ से २ मास और छालकी ३ से ४ मास पानीमें पीस कर दी जाती है। पत्ता भी ४ से ६ मास पीस कर दिया जाता है। रोगी शुद्धिमें होते तो फलीके कवचका टुकड़ा कूटकर अथवा गुदाके कूटकर पानिसे पीलादे रोगी जेष्ठ हो तो तालुमें छेद कर खून के साथ पीसे और फलीका वृक्षकी छालको या गुदाके पानीमें पीसकर सारे बदनमें मर्दन-

करे। उससे बुद नाक से आँखमें डाले और रोगी अपनेसे पी नहि सके तो नलीके द्वारा मुखसे और पीचकरी-वस्ति द्वारा गुदासे प्रवाही पर डाले रोगी बच जाता है। यह अद्भुत वृक्ष है। यह वृक्ष अन्य किसी स्थानमें होता जगलके अधिकारीोंने हुंढकर प्रकाशमें लाना कि लोग सरलतासे लाभ ले सकें।

विषवज्रपात रस—सोमल बलनाग टकण पकाया नीलाघोथा काली भरच मैनसीक हरड अम्रक मसम कलिहारी (लागली) सब सुम भाग लेकर केलीका १२ देवदाली-कुदरवेले रस अपामार्ग रस शिरीश रस प्रत्येककी एक एक भावना देना। सप्तदश वाणको दशपर घाव जरा चौड़ा कर लगाना। २ से ४ रती पाव पां। घटाके पीछे ढाकड़े मूलके कव यसे अथवा अग मार्गके रससे अथवा केलीके रससे देना। आँखमें अंजन करना। नाकमें सुंघाना। बीछुके दशमें तथा दूसरे स्थानवर अगम विषमें गुणकारी है। इसकी मात्रा देनेके पीछे गर्म किया हुआ आयका घी ५-१० तोला पिलाना।

सृन्धु पाशच्छेदी घृत—आकके मूल देवदाली अपामार्ग पंचांग ढाकका मूल बिस्व पता शिरीश मूठ केलीका कंद प्रत्येक चालीस तोला, मुवाकानो घाघा लज्जतु पानाल गन्दी शतावरी लागली मजीठ रास्ना तुलसी सरवा प्रत्येक बीस तोला, कुष्ठ गोगोवन बाह्यो हस्दी प्रत्येक पांच तोला सबको कूट कर केलीके थभके पानीमें १२ घंटा भिगे रखना। कच्चा एक मन घी डालकर पकाना पानीका अंश जल जाय जब कपडछान कर लेना। पांच पांच घंटा पीछे ५ से १० तोला घृत गर्म कर सप्तदशवालेको और विछुदशवालेको पिलाना। प्राणिज वनस्पतिज खनिज सब विषमें यह गुणकारी है।

सर्पविषहर क्वाथ—आकका मूल देवदाली वमासा विगुंडी विरायता कच अरणीपत्र शिरीष पते अतीस नागरमोथ हरड ढाक मूल केलीका कंद सेधानोन समभाग कूट रखना ५ से १० तोलाका काथ कर रोगीको पिलाना।

अरिष्ट योग—रीठका फल १५ लेकर उसमें पानी १० तोला डालकर उबालना पीछे नीचे उतारकर हाथसे मसल कर छान कर चमची चमची करके ४-५ तोला पानी पिना देना। पांच घंटामें उलटी-वमन होगा। यदि वमन न हो तो दूसरा ४-५ तोला पानी पिलाना, वमन होगा। यदि सांप झहरी होगा तो वमनमें हरे रंगकी झाड़ होगी वह सर्प विष है। इस प्रकार निकल आयका। यदि हरी झाड़-न दिखे तो सर्प विषैल नहि है। वमन हो जाने के पीछे चम' कहा काको दूध पिलाकर रोगीको सुलाना।

सर्प विषके साधे प्रयोग

- १ कुकटवेल देवशलीके पन पानीमे पीस कर पिलाना.
- २ इंगुदी फलका गिरी खिलाना
- ३ कच्ची हिंग ४ मे ५ रत्ती हर पाव पाव घटा में पानी मे पीस पिलाना-
उपर गम' घो पिलाना.
- ४ समुद्र फल घिस कर नाक मे बुंद डालना.
- ५ शिरीषका मूळ २ से ३ तोला पानी मे पिष पिलाना।
- ६ पीला फूलकी अथवा लाल फुलकी कलहारी (लांगली)की जड़ को दक्ष
पर दाब कर रखना विषको खींचकर गांठ फट जायगी और रोगी बच जायगा।
- ७ पफेद फुल के साकड़ा मुल १ तोला पानी में पीस कर पिला देना-
उबटो दस्त हो कर विष निकल जायगा।
- ८ कुबो (द्रोणपुष्पो) का पचांग तो. २० को २ सेर पानीमे उबालकर
दर ०। से ०॥ घंटा पीछे दस दस तोला पानी पाये रखना।
- ९ लशुन कबी तोला ४, साँपकी काचली तोला ४ थूहरका दूध तो १
नमक तो १ छोटी पीपल तो १ सब सथ कुट बिना रांग लगाये ताँबे के कटोरेमें
डालकर निचू रख मे घोंट कर गोली बनना। पानी मे घोष कर अंजन करना-
- १० विषधूप इमैशा करने से घर मे सर्प आता नहि.

। सिद्धधूप-कपिल्लुफलं मुस्ताऽर्कफलं सिद्धार्थकृष्ण संजंरलः ॥

भल्लात धूपोऽयं समभागकृतश्च सिद्धाख्यः ॥१॥

मूपकमत्कुण्डर्षा नश्यन्ति विषैल कीदृकाः सर्वैः ॥

चांचड मच्छर खांसा विषोर्णनाभाश्च जंतवोदृश्याः ॥२॥

कवच फली (कवि कच्छु फली) त्रिषको भैरव सींग भी कहते है नागरमेख-
आकका फल सरसों शल बलावा सम भाग कुट कर रखना धुप करनेसे सर्प-
बीछु मच्छर आदि जाग आते है।

बिल्लूका दंश वृश्चिक दंश

बिल्लू—बीछु काटता है जब सुदं दुखो हो भेसा लगता है। बोली देर में
दर दं डटता है जलन होती है ५-१० मिनट मे सारे शरीर मे फैलता है। झहरीला
बल्लू होता पीढा के साथ पसना छूटता है और रोगी का शरीर ठंडा पड
जाता है। काले पहाडी बिल्लूमे यां बीछुसे कई रफे मृत्यु होता है।

१ विषदंशपात २ ३ ३ रती अपमाग के पान के रस के साथ पिलाना

२ भणामाग का मूळ लेकर उ० ही भुवनेश्वरी वद वद वृश्चिक
विष नाशय नाशय ही फट्ट स्वाहा । यह मंत्र पठ ते पाय और दश के
भागको मूलका स्पर्श कर नीचे उतार जमीन पर छिड़कते जाय इस प्रकार ७
बर्फे करनेस वृश्चिक विष उतरना है ।

३ यदि छोटे बच्चे को कड़ा काटा यह मालुम न हे तो दाँडके मूलको
अथवा शिरोष के फूल पते के अथवा कुंग (द्रोणपुष्पी) के पचांगको पीस कर
सारे बदन पर मर्दन करना ।

४ सीठे के फलमे बीज निकाल कर छिड़के। उबाल कर वह पानी
गिखाना और छोलके को पीस कर दश पर लगाना ।

५ पाण्डे पान को मचल कर पानी निकाल कर नाक मे बुँद डालना
छोके आकर झहर निकल जायगा ।

६ गरुड वृक्षकी फली के गोरी को पीस कर पिलाना लगाना ।

७ कलोहारी की गाँठ पीस कर दश पर लगाना ।

८ पल्ली गोगली (देहगरेली) को तेल मे पका लेना पीछे उस तेल का
बुँद दशपर लगानेस छेर निबल जाता है ।

९ इद्रायण का मूळ पीस कर दश पर लगाना,

१० विष दज्जपात ०। तोला पानी मे पीस दशपर लगाना ।

चिल्लीका काटना-करड

चिल्ली—माजरी बहूचा काटती नदि लेकिन इसको कुछ करनेसे, वह मर
जाय इस तरह सतानेसे कभी काटती हैं, उससे आर्मा मर जाता है । इसका
भार भयंकर होता है । कुदरतने उसमे भय-विदनपना है, इस कारण उसका
काटना अवचित हि बनता है । यह रूष्ट हो जबनार लगती है, इसमे विष नहि है,
दाँतमे पिप है । ३३ साल पहिले छकलपेटके पेढेमे चोकंदार को चिल्ली
काटी थी वह अर्क मर्क करने लगा था, आँखे पीली पड गई थी इधर उधर
भरसे छुपने लगता था चिल्ली जेसा भयभंत (बीबण) स्वभाव पुन हे गया था
चिल्ल-मुस कृति विचित्र कृत हो गयी थी और ओढे घंटमे मर गया

उपचार—इसका कोई उच्चा शास्त्रमे लिखा नहि है पर च साँपके पक्षा
उपचार इसके भी जाना । वि दज्जपात ०। से ०॥ तोला घी के साथ देना ।
गरुडसके ४ ते ला गुदाको पीस १ से २ रतल पानीमें पीस प्रत्येक पाव घटाके पीछे
देना । मृत्यु पाहच्छेदी घृत । इत्याण घृत रस कर पिलाना । उसके पयड कर उसके
कानमे अथवा पीपट दूध के पासेकी दही घुसावना जिसकी विधि सर्पदशमे दि है ।

गरनाशन—पारद दस तोला, गंधक २० तोला लेना । स्वर्गका वरुं तो, ५, पारदमे मिलाकर पीछे गंधक डाल कजली कर पीछे स्वर्ण माक्षिक कचोको पिष्टो तोला १० मिलाना । इसमें सफेद फूलके अंकका मूत्र शिरीश मूल मयूरके पांवकी हड्डी निमबीज गिरी ढाकके मूत्रभी छाल हलसी मजीठ प्रत्येक पांच पांच तोला मिलाय फरारपाठाका रस और पीपलके पत्ते डही के साथको कुटकर उसका रस और पुनर्नवा मूलका क्वाथ प्रत्येक की एक एक मात्रा देना । साप बिछु और अन्य स्थावर जगम विषमें ६ से १० रती प्रत्येक पांच पांच घटामें देना ।

पलंडी-गरेली (ढेढ गरेली) यह खान पानमें पड़ जानेसे सृष्टु होता है । बीठा (कपित्थ) फलका वनकुलथी गर्म चीमेड आकके बीज सेठ पौरक कालीमीरच करजबीज लताकरजबीज हड्डी दूधदूदी ढाकका मूत्र समभाग कुट कर ३-४ तोलाका क्वाथ कर पिलाना शिरोष वृक्षके पर्चागका क्वाथ पिलाना ।

अफीम विष

अफीम यह पीरा शामक औषध है, ज्यादा लेनेसे मरण होता है । इसके विपैल चिन्हमें चक्कर आता है बेचेनी मुखशोष शरीर ठंडा पड़े जीभ गहरा उतरे वैद्युद्धि श्वास गत क्षीण हो स्नायू खींचे । १ से २४ घटामे सृष्टु होता है ।

उपचार—तुर् दस्त पिशाव कराना, इच्छामेदी ६ से १० गोली गम जलसे देना और गुदा द्वारा चढ़ाना । मैन फलका क्वाथ पिलाना । विषाज्जात ८ से १० रती प्रती आधा घंटाके पीछे गर्म घोंसे या ढाकके मूत्रके क्वाथसे देना । चोलाइ शरपुख नीमके पत्तेका क्वाथ देना । गरनाशन ६ से ८ रती प्रत्येक पांच घंटामे पिलाना । मांगराका रस तोला १० तुलसी रस तोला ५ मिलाकर पिलाना ।

घटूराका विष—घटूरेका बीज क्षेरी है खानेसे आधा घंटाके चिन्ह दिखते हैं । चक्कर मुखमें गलेमें शोष प्वास आंखोंकी कीड़ी चौड़ी हो आंखें मुख लाल हो वैशुद पागल पन हो श्वासक्षी गती मरता है । घटुतेको सृष्टु नहोता हृदयके लीये पागल बन जाता है ।

उपचार—इच्छा मेदी ४ से ६ गोली गर्म जलसे देना । वमन वीरचन होकर निकल जाता है । समुषफल तोला १ गौमूत्रके साथ पिलाना । घी गम कर पिलाना । ढाकके मूलका क्वाथ पिलाना शिरीश मूलका क्वाथ पिलाना । गामकी छाँठ पिलाना । कापूस (वण)के मूलका क्वाथ पिलाना ।

चछनाग—विषमें मुख जीभ होठमें झनझनाहट होता है पेटमें जलन गला जल गया हो ऐसा लगता है आंख कानकी शक्ति कम होती है शरीरके रसायु क्षील होता है, कमी आक्षेप-ताण आता है इसका उपचार भी अफीम घटूरेके विषके समान करना और वमन विरेचन कराना ।

सोमल

यह भयंकर विष है। इसमें स्वाद नहीं है। इस लिये दगासे दिया जा सकता है। पेट में जाने के पीछे एक घण्टा में विषैल असर होनी है। पहिले पेट में दह और झुन होता है। उबका आता है, वमन हो। दस्त हो। दस्त में खून पड़े, पित्त में जलन हो। प्यार लगे, आँख लाल हो, नाडो और श्वास की गति बदे, मुख लाल हो।

उपचार—इच्छामेरी गोली ५-७ या उदादा लेकर वमन विरेचन कराना। नीलाइ के रस में दही और शक्कर मिलाकर पिलाना। शरपुख के पचाव के कवाय में शक्कर और दही डाल पिलाना। नीम के पत्ते के रस में शहर डालकर पिलाना। डाक के मूल में कवाय पिलाना। सोहागा कच्चा आधा तोला नींबू का रस ४ तोला मिलाकर पिलाना। अपामर्ग मूल १॥ तोला, इमामन मूल तोला १॥ पीसकर पिलाना।

मूषक चुआके मारने की दवा रेट (रट)

सरकार आयुर्वेदिक निर्दोष दवा पर प्रतिबन्ध लगाती है। और रेट रट मूषक मारने का भण्डार झट से बजार में रखती है। जिसे सस्केड चाहे जब लेसते हैं और अपने को और दूसरों की शरणा आसानी से कर सकते हैं। बेकारी भुख मरो अथवा तोप कलेश या अन्य कारण से आत्मघात करना चाहे जब लेकर उपयोग कर लेते हैं। इस प्रकार मूषक कितने मरे यह तो कोई जान नहीं सकते लेकिन देश भर में से बड़े बड़े पुरुषों की हत्या हो रही है। दूसरी बात यह ध्यान देना चाहिये कि इस दवा से मूषक मरते होंगे लेकिन उन मूषकों को खानेवाली हजारे दिलीयाँ मर रही हैं क्योंकि झट खाने हुये मूषकों को खानेवाली दिलीयाँ भी झट से मर जाती है।

चुआ की उत्पत्ति वृद्धि नाश अनादि काल से चलता है। अधर्म वृद्धि से विकृत अनाचार से अनपेक्षा हो जाता है और उसके चिन्हों में मूषक वृद्धि भी एक है। और कुदरत से ही उनका नाश भी हो जाता है। दिलीयों के नाश से मूषकों की वृद्धि हो रही है। रेट रट से जितना मूषक नहीं मरते दिलीयों के मरने से वृद्धि हो जाती है। आयुर्वेद में कई ऐसे घुप हैं। जिससे चुआ टोकर आदि बहुत मर जाते हैं। पर च इस बारे में संशोधन करने का उत्तेजन आयुर्वेदज्ञों को नहीं दिया जाता।

उद्धार—रोमल विष के लिये जो उपयोगी है वह इस रेट रट के जहर से भी लाभकारी होना समझें । यह दवा खाली हो तो तुर्न वमन विरेचन कराना । इच्छा मेदी ५-७ गोली या अश्वचाली १० से १२ गोली गम जल से देना । एक घंटा राह देखकर हस्त न हो तो फिर देना । विषज्वात ४ से ८ रती गम घ के साथ देना शिरीष वृक्षकी छालका अथवा ढाँक मूँका क्वीथ पिलाना । चौलाइका रस अथवा केलीका रस पिलाना । एलीया तोला ०।, बच तोला ०।।, गुग्गु तोला ०।। नमक तो १, सब साथ छोटमे पीस छोट के साथ पीखाना । जगान पुष्प-१ पिशब ३० से ४० तेला पिलाना ।

हृदय बंध रोग—हार्ट फेल्योर

अपने को सुघारावदी कहने मनाने वाले, सुखी जीवन बिताने वाले, मोटर विमान में फिरने वाले बंगला में रहने वाले बड़े बड़े अधिकार मोगने वाले प्रभुः बाह्य में रहने वाले, फेमौली डाक्टरों की रक्षा पानेवाले गृहस्थ श्रीमंत लोग और छुट्ट डाक्टर लोग भी मृत्यु के आधीन हो जाते हैं । मानो हृदय बंध रोगका जमाना चरु रहा है । जैसे किस्से सुन्ने मनुष्यों में और बाह्यो में हि अधिक घनते हैं । हिंदुस्थान और विश्व के सभी देशों में यह दशा है । जमाना आगे बढ़ रहा है, नयी शोध खोज वैज्ञानिक लोग कर रहे हैं, जीवन ध्वरण लंचे लाने की मगहरी सत्ताधारी कर रहे हैं जैसे हि क्षय केन्द्र रगतपिन-कुछ श्वेत कुछ डायबटीस हृदय बंध सम्प्रहण आंत्रक्षय और अन्यान्य नये नये रोग फल रहे हैं और दिनेदिन ऐसे रोगियोंकी संख्या बढ़ रही है । प्रत्येक रोग के लिये विश्वके वैज्ञानिकोंकी कोशिशसे मिलती है । रोग बढ़ने रहे हैं और लखे मनुष्य इन रोगोंके बलि पड़ रहे हैं । यह कमनसेब दशा बाह्योमें ज्यादा है । पार्लामेन्टके मेम्बर पुकार करते हैं कि सरकार प्रायोमे डाक्टरोंकी और विलायती दवाकी व्यवस्था सरकार नहि करती इत्यादि कहकर प्रयोमे डाक्टरोंका लभ दिलवानेके लिये प्रयत्न करते हैं, परंतु उन्हें यह सोचना चाहिये कि प्राय रोगोंमें विलायती दवा और डाक्टर नहि पहुँचे और सरकार नहि पहुँचा सको यह प्राय प्रजाके लिये सहाय्यता बिन्दु है । सरकारी अधिकारी वर्ग के वीकृत किये अनुषार हिंदुस्तानकी प्रजामें से रुका १५ से २० टका प्रजा एलोपैथी-त्रिलयती दवाका लाभ ले सकती है इसका अर्थ यह है कि से रुका ८० टका प्रजा आयुर्वेदके आधारमें रोग मुक्त हो रही है और अना अरोग्य बचा रही है । उपर लिखे रोग और हृदय बंध बाह्योमें से रुका

२० टका और प्रम प्रजाने से कछा २० टका होता है । इस प्रकार विचार करनेसे मालूम होता है कि शहरोकी अपेक्षा प्रम प्रजाका आरोग्य अच्छा होनेका यश और रोगमुक्तिसे साधनका यश हिस्से वासी व्यक्तियों में जाता है । प्राम प्रजाका आहार विहार वंश परंपरासे चले आते पचीन पद्धतिका हि हैं । जो कि जमानोंके अनुसार खानपानसे और भीनेमा जैसे मानसिक अधोगति करनेके रत्न प्राम प्रजामें प्रविष्ट हो रहे हैं । डेरी जैसे कारखाने स्थान स्थानपर निकलनेसे प्रामोंसे दूध खींचा जा रहा है इस कारण प्रम प्रजाका आरोग्य बिगड़ने लगा है फिरभी शहरोकी अपेक्षा प्राम प्रजा आरोग्य दृष्टिसे अच्छा है । बेशकालके वातावरणसे, दुष्काल आदिसे पशुभोका नाश बढ़ रहा है गौओं में सोका कतलख नामे असख्य घट रहा है, पड़ गो अच्छा पड़ रही हैं और डेरी निर्गरेने प्रम प्रजाके दूध खींचता रहा है इत्यादि कारणोंसे प्राम प्रजाका आरोग्य गिर रहा है वह आगे किछु दशाके पहुँचनेवा भावोंके गम में है । आजतकका अनुभव कहता है कि दूध यद्यपि रोग प्रामोंकी अपेक्षा शहरोमें ज्यादा है ।

हृदयामृत योग—१ अजक भस्म तो १, सुवर्ण वसत मालती तो ०॥ चैवठपोरी पीपर तो १, बग भस्म तो १ मिश्र कर घोटकर ५ से ६ रतों मधुमें अथवा च्यवनप्राशसे ले ।

हृदयामृत योग—२ महालक्ष्मी विलास तो १, अजक भस्म तो १, लोह भस्म तो १, त्रिकटु तो २ मिश्र कर ५ थो ६ रतों च्यवनप्राश अथवा आरुण्य हरीतकसे ।

हृदयामृत योग—३ रत्नमागोतर रस तोला ०१, वसतकुसुम कर तो १, सुवर्ण पीपरी तो १, रत्नामृत लोह तो १ मिश्र कर ६ थो ७ रतों मधु अथवा सौमं य शुठो अवलेहसे ।

हृदयामृत योग—४ होरा भस्म १ रतों, रत्नमागोतर ०१ तोला सुवर्ण वसत मालती ॥ तोला, स्वर्ण भाष रक्त ०॥ तोला, पूर्णचंद्रोदय ०१ तोला, मिश्र कर ४ से ५ रतों च्यवनप्राश ।

हृदयामृत योग—५ सिद्धरसायन कल्प २ से ३ गोली अष्टवर्ग चूर्ण २ से ३ मासा म मिलाय शहदसे अथवा दुधसे ।

हृदयामृत योग—६ मुक्ता पिष्टी तो १, पूर्णचंद्रोदय तो ०१, वैकृत भस्म तो १, सुवर्ण पीपरी तो ०१ मिश्र कर ३ से ४ रतों मधु या राजवशी च्यवनसे ।

रसोद्धार तंत्रे

॥ भस्म पिष्टि प्रकरणम् ॥

अकीक भस्म पिष्टिश्च (रसोद्धार तंत्र)

न शोधनमकीकस्य शुद्धमेतत्स्वभावतः ।
 चूर्णीकृतमकीकं च कुमारी केतकी रमैः ॥१॥
 जलपिप्पलिका रंभा रसैर्मर्द्यं पुनः पुनः ।
 कुक्कुटारव्य पुटैः पक्वमुत्तमं भस्म जायते ॥२॥
 उपर्युत्तरसैर्घृष्टं शुष्कं सूर्याशुभिर्मुहुः ।
 भवेत् पिष्टिकीकस्य सौम्या हृद्दाहनाशिनी ॥३॥
 मधुना पित्तरोगेषु वातरोगेश्वगन्धया ।
 शृंगवेरसैः कासहृदयाक्षिशिरोगदे ॥४॥

अभ्रक भस्म निश्चन्दं (आयुर्वेद प्रकाश अध्याय २)

शोधनम्

अथदा बदरीकवाथे ध्यातमन्नं विनिक्षिपेत् ।
 मर्दित पाणिना शुष्कं धान्याभ्रादतिरिच्यते ॥५॥
 धान्याभ्रकं ह्यथादाघ शोषयित्वा तु मर्दयेत् ।
 अर्कक्षीरैर्दिनं मर्द्यमर्कपत्रद्वयेण वा ॥६॥
 चक्राकारं ततः कृत्वा शोषयेदातपे खरे ।
 वेष्टयेदमर्कपत्रैश्च सम्प्रगजपुटे पचेत् ॥७॥
 दुग्धमर्द्यं दुग्धं पाच्यं सप्तवारं प्रयत्नतः ॥
 ततो वटजटाकाथैस्तद्बद्धं देयं पुष्टत्रयम् ॥
 म्रियते नात्र संदेहः सर्वरोगेषु योजयेत् ॥८॥

अभ्रक भस्म १०० पुष्टितं

(रसोद्धारतंत्र)

पत्राभ्रकं च नो ग्राह्यं चिकित्सायां रसायने ।

वज्राभ्रकस्य पापाणाः कृष्णास्तेजस्विनो वराः ॥९॥

गुरवश्चाश्मगर्भाश्च तच्च वज्राभ्रकं विदुः ।

वज्राभ्रं वह्निना तप्तं न किञ्चिद् विकृतिं व्रजेत् ॥१०॥

शोधनं धान्याभ्रकं-

वज्राभ्रं बदरीकवाथे बन्धितप्तं विनिक्षिपेत् ।

मर्दितं पाणिना शुष्कं ग्राह्यं शूपेण सर्वशः ॥११॥

सहस्रशो वहिः कुर्यात् कणिकाश्चाश्मसंभवाः ।

अन्यत्, शोधनः-

अग्निताप्या वज्रखंडा निषिञ्चेद् बदरीजले ॥१२॥

पश्चात् शणपटे बध्वा मर्दयेत् पाणिना बहु ।

अभ्रं जले सवेदस्मवालुकाः पटमध्यगाः ॥१३॥

जलादभ्रं च निष्कास्य शोषयेदातपे खरे ।

ततोऽप्यवप्रकणाः सूक्ष्मा युक्त्या निष्कासयेद् भिषक् ॥१४॥

भारणं

धान्याभ्रमिदमर्कस्य दुग्धैर्वा पत्रजे रसैः ।

शंमर्गं चक्रिकाः कृत्वा भानुपत्रैश्च वेष्टयेत् ॥१५॥

पचेद् गजपुटे पश्चात् क्वाथैर्वटजटाभवैः ।

रंदती वासरी मुस्ता मजिष्ठा च कुनारिका ॥१६॥

मूर्वा शिखिशिखा भूम्यामलकी दुग्धिका वरी ।

तगरामलकी चैवापामार्गो गोजलामृताः ॥१७॥

जटामांस्पर्कपत्राणि रसैः क्वाथैर्मृदुमृदुः ।

देयाः शतपुटाः सम्यक् वैद्यैर्गजपुटान्ध्रयोः ॥१८॥

अभ्रक भस्म सहस्र पुटितं (आयुर्वेद प्रकाशः अध्यायः २)

श्री गोवेन्दपादास्तु अन्यान्येष गगनमारुहाणि मेघजानि लिखन्ति
यथा.- अर्कदुग्धं १, वटदुग्धं २, होतुण्डदुग्धं ३, घृतकुमारी ४,
पंचांगुलमूल पत्राणि ५, काकमाची ६, मुस्ता ७, वटप्ररोहः ८,
अस्तशोणितं ९, शिखिमूलपत्राणि १०, अग्निपथ ११, ओषणी १२,
टिण्डुकः १३, पाटली १४, शालिपर्णी १५, पृश्निपर्णी १६, कण्टकारी

१७, रुद्रम्बः १८, बृहती १९, लोक्षुरः २०, तिलपर्णी २१, खट्-
मंजरी, २२, गुड २३, सिद्धार्थके-धवलः २४, पाटङ्क्या २५,
मालती २६, नौमूत्र २७ हरीतकी २८, धात्री २९, विभीतका ३०,
कालोत्पन्न ३१ चित्रक मूलपत्रं ३२, जलकृन्मो ३३, ताडमूली ३४,
वृषः ३५, वातिगन्धा ३६, अगस्त्यपत्रं ३७, भृंगराजः ३८, कदली-
कन्दरसः ३९, सप्तपर्णः ४०, देवदारु ४१, गुडूची ४२, घन्तः ४३,
यासमर्दक ४४, मानुलानी ४५, लोध्र ४६ तुलसी ४७, दूर्वा ४८,
आरीपः ४९, मूषकपर्णी ५०, दाडिम पल्लवा ५१, घोंण्टा ५२,
शंखरूषी ५३, नागवल्ली ५४, पिण्डीनगरं ५५, श्वेतपुनर्नवा ५६,
हिलमोखिका ५७ मण्डूकपर्णी ५८ तिक्तिका ५९, मदनः ६०,

इत्यादिभिर्मर्मर्दनपुटनैरेककेनाप्यभ्रको मारणीयः इति अभ्रक मार-
णीयगणः । आभिर्यथालाभ सङ्गत्रपुटा देया । यथासंख्यं च प्रत्येकस्य
सप्तदशपुटाः प्रायशो भवन्ति । एवं सहस्रसंख्या पूर्यते ।

इति अभ्रक सहस्रपुटित ॥१९॥

अभ्रक सत्व भस्म— (आयुर्वेद प्रकाश अध्याय २)

अथाभ्रकसत्वनिकासनविधिः कथ्यते ।

चूर्णीकृतं गगनपत्रमथारनाले

वृत्ता दिनैक्यदशोऽथ च सूरणस्थ ॥१९॥

भाव्यं रसैस्तदनु मूलरसैः कदल्याः

पादांशटकंणयुतं शफरैः समेतम् ॥२०॥

पिण्डीकृतं तु बहुधा महिषीमलेन

सशोऽथ कोष्ठगतमाधु धमेद्द्विडाग्रा ।

सत्वं पतत्यतिरसायनजारणार्थं

योग्यं भवेत्सकललोहगुणाधिकं च ॥२१॥

एव पतिते सत्वे ततः किं कार्यं तदाह—

कणशो यदूभवेत्सत्वं मूषायां प्रणिधाय तत् ।

मित्रपंचकयुग्धातमेकीभवति घोषवत् ॥२२॥

घृतमधुगुग्गुलुगुंजादेकमेतत्स्यात् मित्रपंचकं नाम ॥

मेलयति सप्तधातुनंगाराग्नौ तु धमानेन ॥२३॥

अथास्य सत्वस्य शोधनमारणमाह—

अयोवत्शोधनं तस्य मारणं तद्वदेव तु ।

मारितं ताम्रवद् गन्धपारदाभ्यां नियोजयेत् ॥२४॥

पिण्डोक्तं तु बहुधैत्यस्य व्याख्या-तिन्दुकप्रमाणान् बहुपिण्डान्

नोक्तान् कृत्वेत्यर्थः । कोष्ठगतमिति व्याख्या-अधःपातकोद्भूयां

स्थापितम् । मारणं तद्वदेव तु व्याख्या-त्रिकलादि भित्तिद्वद्भाषित्वा

चिंशतिवारं षष्टिवारं शतवारं वा पुटयित्वा सत्वमस्म संपाद्य

असृणार्थं, रसे आरणार्थं तु शोधयित्वा नार्थम् ॥

अथास्यगुणाः— शिशिरं सत्वमभ्रस्य त्रिदोषघ्नं रसायनम् ।

विशेषात्पुंस्त्वकारि स्याद्वयसः स्तम्भनं परम् ॥२५॥

नानेन सदृशं किञ्चिद्भैषज्यं पुंस्त्वकृत्परम् ।

सत्त्वसेवी बयःस्तम्भं लभते नात्र संशयः ॥२६॥

आयुर्वर्धनमभ्रं दृढयति देहं च शुक्लं शुद्धिकरं ।

मृत्योर्भीतिं दूरीकुर्यात् सततं हि सेवनेनेदं ॥२७॥

हृद्दार्ढ्यल्यस्य कृमिमेहयकुष्ठीहकुष्ठहृद् वल्यं ।

दोषत्रिकसाम्यकरं रसायनं बृहणं परं बृष्य ॥२८॥

कान्तं पाषाणं भस्म—(रसेदार-तत्र) (र. तं)

कान्तं पाषाणं खण्डाश्च कान्तगर्भाश्च चुम्बकाः ॥

आरक्ता मृत्तिकागर्भा तप्ता रंभारसप्लुताः ॥२९॥

शुद्धाः कुमारिका द्रावैर्घृष्टा गजपुटेः प्रचेत् ॥

सप्तवारं वरं भस्म रक्तं स्याद् गुणवर्धनं ॥३०॥

टिप्पणी— नृमूत्रस्थाने वृषभमूत्रं । गंगापुत्रं भद्रमुस्ता ।

अजारक्तस्थाने अजामूत्रं ।

देयं द्रुपितरक्ताय मेदोपाण्डूदरादिषु ॥

बल्यं हृद्यं क्षत क्षीणे वृष्यं पुष्टिमदं भवेत् ॥३१॥

दुग्धेन मधुना मात्रा चतुर्गुणा मिता भवेत् ॥

अनुभूय रसोद्धारतंत्रे चोगः प्रकाशितः ॥३२॥

कान्तलोह भस्म १०० पुटितं (रसोद्धार तंत्रं)

शोधनं—कान्त चूर्णमश्रितम् निपिचेत् त्रैफले जले ॥

भृंगराजरसे पश्चात्कटकारीरसे ततः ॥

तैले तत्रे कुलत्थोत्थक्वाये शोधयं भिषग्वरैः ॥३३॥

भारणं—पलद्वादशकं कांतं पलं द्विगूलमेव च ॥

दिनं सप्तमर्चं कन्यादुभिस्ततो गजपुटे पचेत् ॥३४॥

एव सप्तपुटा देया द्विगुलांतर्गता बुधैः ॥

पुनर्नवाद्रिकर्णी च भृंगराजोऽम्लपर्णिका ॥

प्रपुत्राढो निशा दार्वी मूर्वा पाठा च पर्पटः ॥३५॥

देषडाळी हंसपादी बंध्याकर्कोटकी तथा ॥

दुग्धिका द्रोणपुष्पी च गोजिन्हा जलपिप्पली ॥

मत्येकस्य पुटाषट्स्युः कांतभस्म प्रजायते ॥३६॥

गुणाः—ग्रहणीमतिशारं च यकृत् पांडु च कामला ॥

वातरोगास्तथा शूलं परिणामभवं जयेत् ॥३७॥

कान्तं श्वासं वमिं पित्तं मतिशयाय भगंदरं ॥

अर्शःकुष्ठशिरोरोगान् प्लीहमेदोहरं परं ॥३८॥

टिप्पणी—अद्रिकर्णी श्वेतापराजिता गरणीति ॥ अम्लपर्णी चांतेरी

खाटी लुणी ॥ प्रपुत्राढ कुवाडीयो । हंसपादी हंसराजः ।

द्रोणपुष्पी कुबो । जलपिप्पली रतवेलेयो ॥

कान्तलोहं भस्म

(आयुर्वेद प्रकाशः अध्यायः ३)

चक्षुणम्—यत्पात्रे न प्रसरति जले तैलविदुः प्रतप्ते ।

हिं गुग्गुलुं च त्यजति च निज तित्कतां निम्बकलकः ॥३९॥

तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमौ ।

कुष्णांगः स्यात् सजलचणकः कान्तलोहं तदुक्तं ॥४०॥

जीर्णशस्त्रादि खंडा वा पुराणयंत्रखंडकाः ।

तीक्ष्णजास्ते हि गृह्णन्ति मारणार्थं भिषग्वराः ॥४१॥

आणोद्धान्तः लोहचूर्णं गृहीतं चुम्बकाश्मना ।

शस्त्रकृत्वलोहकाराणां गृहे तद् बहुलं भवेत् ॥४२॥

तच्चूर्णं तु समानीय सुघोतं निर्मलं शुचि ।

युक्त्या संशोध्य शास्त्रोक्तविधिना तत्तु मारयेत् ॥४३॥

शोधनम्—शस्त्ररक्तेन संलिप्तं किंवा कपयसायसं ॥

दलं हुताग्ने ध्मातं सिक्तं त्रैफलवारिणि ॥४४॥

त्रिंशः कान्तस्य संशुद्धिरित्येवं परमा भवेत् ।

सर्वाभावे निषेक्तव्यं क्षीरतैलाज्यगोजले ।

शुद्धस्य शोधनं ह्येतद् गुणाधिक्याय समतं ॥४५॥

मारणम्—संशुद्धं लोहचूर्णं तु समानीय भिषग्वरः ।

समर्दयेद् दिनं चैकमामतिन्दुकजै रसैः ॥४६॥

त्रिफला भृगराजस्य कटकारीरसस्य च ॥

पुटानि त्रीणि दत्तानि सत्य वारितं भवेत् ॥४७॥

कासीसं भस्म

(रसोद्धार तत्र)

कासीसं पुष्पसंज्ञं च नेत्रास्यगदनाशनं ॥

व्रणश्लेष्मविषघ्नं च केशरंजनकारकं ॥४८॥

भादितं भृंगराजेन कासीसं शुद्धिमाप्नुयात् ॥
 पलषोडशमानं तत् त्रिफलातोयमार्दितं ॥४९॥
 पक्वं गजपुटे पश्चाद् भृंगराजरसैस्त्रिधा ॥
 कुमारिका रसैर्घृण्डवा वाराहपुटपाचितं ॥५०॥
 सिद्धं गुंजात्रयं प्लीहगुदामयहरं परम् ॥
 पांडौ गुल्मे मूत्रकृच्छ्रे देयं च मधुसर्पिषा ॥५१॥

कासीस गोदंती भस्म— (रसोद्धार तंत्र)

कासीसं षोडश पलं भृंगराज रसप्लुतं ।
 गोदंती हरितालं च तावद् ग्राह्यं सुपाचितं ॥५२॥
 द्वौ सम्मिश्रय हरीतक्याः क्वाथैः समदयेद् दिनम् ।
 वाराहपुटपक्वं तत् कन्याद्रवैः पुटत्रयं ॥५३॥
 पुटैकमश्वगंधायाः सिद्धं क्षोद्रार्द्रसंयुतं ।
 चतुर्गुंजामितं दद्यात् श्वासे कासे हृदामये च ।
 पांडौ शूलेतिसारे च दद्यात् छर्दिगदेनिष्ठे ॥५४॥

कुक्कुटांडत्वक् भस्म (रसोद्धार तंत्र)

कुक्कुटांडत्वचश्चूर्णं मर्द्य निम्बूकवारिणा ।
 वाराहपुटपक्वं तत् पुनः कन्याद्रवैः पुटेत् ॥५५॥
 ततः शतावरीक्वाथे मर्द्य पाच्यं पुनः पुनः ।
 देयं त्रिरक्तिकामात्रं मधुनाद्ररसेन च ॥५६॥
 कासश्वासकफाध्मानछर्दिहिकामदोषहृत् ॥५६॥

कांस्य भस्म (रसरत्न समुच्चयः अध्यायः ५)

निर्माण विधिः—अष्टभागेन तस्मिन् द्विभागसुरेकणं च ॥

विद्रुतेन भवेत्कांस्यं तत्सौराष्ट्रभव शुभ ॥५७॥

तीक्ष्णशब्दं मृदु स्निग्धमच्छं श्यामकं शुभ्रकं ॥

निर्मलं दाहकं च षोढा कांस्यं प्रशस्यते ॥५८॥

घृतमेकं विना चान्यत् सर्वकांस्यं गतं नृणां

भुक्तमारोग्यं सुखदं हितं साम्यकरं तथा ॥५९॥

गुणः—कांस्यं लघु च तिक्तोष्णं लेखनं दृक्प्रसादनं ॥

कृमिकुष्ठहारं वातपित्तघ्नं दीपनं हितं ॥६०॥

शोधनं मारणं—तप्तं कांस्यं गवां मृत्रे वापितं परिशुद्ध्यति ॥

त्रिघटे गंधतालाभ्यां निरुत्यं पंचभिः पुटैः ॥६१॥

त्रिसारं पंचलवणं सप्तधाम्लेन भावयेत् ॥

रुद्ध्वा गजपुटे पक्वं शुद्धभस्मत्त्वमाप्नुयात् ॥६२॥

खर्परं भस्म (रसोद्धार तत्रं)

खर्परौ बीजपूरस्य रसे जंभस्य मज्जितः

अम्लतक्रेथ संतप्तत्रिवेलं परिशुद्ध्यति ॥६३॥

रसको नरमृत्रेषु स्थितो मासं च रंजयेत्

ताम्रं च पारदं तारं स्वर्णवर्णं ध्रुवं भवेत् ॥६४॥

रसकं कदलीकन्दं कृमार्पजुनवारिणां ॥

पक्वं भस्म भवेत् शुद्धं दद्याद् गुंजाचतुष्टयम् ॥६५॥

चक्षुष्यं कफपित्तघ्नं शिरोनेत्रगदापहं ॥

शिवाचूर्णेन मधुना दद्याद् वा नवनीततः ॥६६॥

गोदंती भस्म (रसोद्धार तत्रं)

गोदंती द्विविधा प्रोक्ता मृद्धी च कठोनापरा ।

लघ्वग्निसहना मृद्धी तीव्राग्निसहनापरा ॥६७॥

चूर्णीकृतारनालेन जम्भाभस्तापयेद् दिनम् ।

पश्चाद्वटजटामुस्ताक्वाथैर्गजपुटे तपयेत् ॥६८॥

चतुर्गुणामितं दद्याद् वातपित्तकफामये ।

प्रमेहे मदरे कासे श्वासे गुल्मे गुणपदम् ॥६९॥

गोमेद भस्म (रसोद्धार तत्र)

गौमूत्रसमवर्णं स्यात् स्वच्छं स्निग्धं च निर्दलं ॥

निंबूरसे दिनं पिष्टं निशाक्रवाये कटाहके ॥७०॥

पक्वं पश्चाद् दिनं घृष्टं सुस्तया भस्म जायते ॥

वज्रं विडाय रत्नानि पिष्टिरूपाणि सर्वशः ॥७१॥

रोगे रसायने युञ्ज्यात् न पुटे पाचयेत् क्वचिन् ॥

गुणहीनानि पक्वानि स्युर्वै गजपुटादिषु ॥७२॥

हृद्रोगश्वासकासघ्नं स्मृति मेषामतिपदं

वातपित्तकफेद्रेकान् रोगान्प्रशमयेदिदं ॥७३॥

चतुर्वंग भस्म (रसोद्धार तत्र)

यशद पारदं नागं वंगं सर्वं तमं भवेत् ।

वह्निना गाळयेन्नागं तत्र वंगं विनिक्षिपेत् ॥७४॥

रसरूपं यदा जातं यशद तत्र दापयेत् ।

पारदं मक्षिपेत्पश्चात् निंबदण्डेन चाळयेत् ॥७५॥

मधूकस्याथ चिंचायाः त्वचाचूर्णं मुहुः क्षिपेत् ।

यावत्सर्वं भवेद् भस्म कृष्णाभमवतारयेत् ॥७६॥

पिष्टं कन्यारैश्च कुर्यात् चक्रिकाः शोषयेत् ततः ।

पक्वं गजपुटे पश्चात् कवाये वटजटोद्भवे ॥७७॥

चतुर्वंगं भवेत्सिद्धं गजाख्यदशभिः पुटैः ॥

गुजाद्वयं समधुना सर्पिषा पयसाथवा ॥७८॥

प्रमेहं मदरं वातं मधुमेहं प्रणाशयेत् ॥

कुष्ठकृमिहरं शक्तिपदं संधिरुजापहम् ॥७९॥

जहरमोहरा पिष्टिः (रसोद्धार तंत्र)

युनानी वैद्यके प्रोक्तं द्रव्यं जहरमोहरा ॥
रक्तपित्ततृषादाहं दुर्नामं शमनी मता ॥८०॥

वर्गे चोपरसे प्रोक्ता चूर्णीकृत्यार्जुनत्वचः ।
कवाथे दटजटायाश्च केतकीपुष्पवारिणा ॥८१॥

भावयित्वा भृशं घृष्टा प्रतिद्रव्यं दिनं दिनं ।
त्रिगुजामात्रया क्षौद्रैः दत्ता पिष्टिर्गुणप्रदा ॥८२॥

जहरमोहरा भस्म (रसोद्धार तंत्र)

पिष्टिरूपेण बहुधा देया जहरमोहरा ॥
भस्मनास्या गुणाः प्राये हीनाः स्युः परिवर्तिताः ॥८३॥

अर्जुनस्य त्वचाकवाथैस्तथा दटजटांकुरैः ॥
वाराहपुटपक्वेयं मंजिष्ठायाश्च वारिणि ॥८४॥

सिद्धं भस्म भवेन्मात्रा क्षिरक्तिपरिमाणतः ॥
श्वासहृद्रोगकासघ्नी रक्तपित्तार्शसां हिता ॥८५॥

ताम्र भस्म (रस रत्नाकरः पार्वतीपुत्र नित्यनाथसिद्ध उपदेशः ८)

नागेन स्वर्णं रजतं च ताप्ये
गघेन ताम्रं शिलया च नागं ।
तालेन वगं त्रिविधे तु लोहे
नागीपयो इति च हिंशुलेन ॥८६॥

शोधनं-अशुद्धं ताम्रमायुधनं कांतिघ्नं सप्तधातुहा ।
वांति मूर्च्छाभ्रमोद्वेगकृदपक्वं च शूलकृत् ॥८७॥
स्तुत्सर्कशीरलवणकांजिकैस्ताम्रपक्वं ।
किप्त्वा प्रताप्य-निर्गुण्डो रसैः सिच्यत् पुनः पुनः ॥८८॥

जपाकुसुमसंकाशं स्निग्धं मृदुघनक्षमं ।

लोहनागोद्घितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥८९॥

वारान् द्वादश तंशुद्धं लेपात्तापाच्च सिंचनात् ।

खटिकावर्णैस्तकैरारनालैश्च पेपयेत् ॥९०॥

षड्वारमम्लतक्रांतनिर्गुन्धियाश्च विशुद्धये ॥

शुध्यन्ति नात्र सदेहो मारणं च अथोच्यते ॥९१॥

भारणं- गंधेन ताम्रतुल्येन हृम्लपिण्डेन लेपयेत् ॥

कण्टवेधीकृतं पत्र धमयित्वा पुटे पचेत् ॥९२॥

उद्धृत्य चूर्णयेत्तस्मिन् पादांशं गन्धकं क्षिपेत् ॥

जन्धीरैरारनालैर्वा मृगदूर्वास्थितैर्द्रवैः ॥९३॥

पिष्ट्वा पिष्ट्वा पचेद् रुद्धं सगंधं च चतुःपुटैः ।

मातुलिं गरसैः पिष्ट्वा पुटमेकं प्रदापयेत् ॥

समशर्करया चैकपुटो देयो मृतं भवेत् ॥९४॥

अनुभवः-पाषाणभिच्याम्लपणीं कुष्ठं शिखिशिखा क्षिवा ॥

प्रत्येकेन पुटो देयो शतैकं वा यथान्वि ॥९५॥

पश्चात् मूरणकन्देन गोलकं प्रणिधाय च ॥

पाच्यं गजपुटे गोलं मृत्तिका वस्त्रवेष्टितं ॥९६॥

शुणः-ताम्रं त्रिकृताम्बुधुरं कषायं शीतलं सरं ।

कफं पित्तं क्षयं पादुं श्रमयेच्च रसायनं ॥

परिणाम शूलमर्शांसि मंदाग्निं च विनाशयेत् ॥९७॥ (र. त.)

तुथ्य भस्म (रसोद्धार तंत्रं)

कापोला विट् दशांशा स्यात् टंकणं च दशांशकं ॥

मर्द्यं निवृकजद्रावे बाराहे च पुटे पचेत् ॥९८॥

घृतैः शर्करया दध्ना दध्ना च मधुना पुटं ॥
 प्रतिवेकं चतुर्थींशं टंकणं मक्षिपेद् पिपक् ॥९९॥
 बांतिभ्रान्तिहरं श्रेष्ठं निरुत्यं भस्म जायते ॥
 तुत्यं लघुकषायं च चक्षुष्यं भेदि छेदनं ॥
 कुष्ठकटुकपिघ्नं च पित्तमेदोविनाशनम् ॥१००॥

त्रिवंग भस्म (रसोद्वार तंत्रं)

नागं वंगं च यशदं समभागेन कल्पयेत् ॥
 कटाहे द्रावयित्वाथ आढरूपस्य दंडतः ॥१०१॥
 अश्वत्थस्य त्वचाचूर्णं मक्षिपेच्च मुहुर्मुहुः ।
 चाक्येत् सततं क्षेपः कृष्णं चूर्णं भवेच्छुभम् ॥१०२॥
 कुमार्याश्च रुदन्त्याश्च रसेन चक्रिकाः कृताः ।
 शुष्का गजपुटे पक्त्वा पीतामं भस्म जायते ॥१०३॥
 ममेहं मदरं सोमरोगं पित्तं कफं कृमीन् ।
 श्मयेन्मधुमेहं च हृद्यं बल्यं रसायनम् ॥१०४॥
 रक्तित्रयं समधुना नवनीतेन दापयेत् ॥
 नानानुपानयोगेन योगवाहि गुणावहम् ॥१०५॥

तृणकांतमणि पिष्टिः—भस्म रसोद्वार तंत्रं

पिष्टिः तृणकांतमणिः शुद्धः स्वभावेनैव विद्यते ॥

श्वेतापराजितोमूळक्वाथैश्चूर्णीकृतश्च सः ॥१०६॥

घृष्टो दिनं च जंवीररसेनाश्वत्यजत्वचा ॥

श्वतावरीरसैर्मध्यं पिष्टिः स्याद् रोगनाशनी ॥१०७॥

भस्म पुनर्वायाः पंचागरसात्पिष्टिश्च मर्दयेत् ॥

अधोपुष्पीरसैः पश्चादंजनस्य त्वचारसैः ॥१०८॥

कुक्कुटोत्पुटी देवो घृष्ट्वा रोगेषु दीपयेत् ॥

गलग्रह गलग्न्यि वातपित्तकफोद्भवा ॥

द्विगु जममृतासत्त्वः षड्गु जमं धुसपिषा ॥१०९॥

नाग भस्म (रसरत्नाकर नित्यनाथ सिद्ध उपदेशः)

पाकहीनो नागवंगो कुष्ठ गुल्म रुजाकरो

पांडुमोह शुल वातकफशोफोदरादिकृत् ॥११०॥

शोधनं निर्गुदी मूलचूर्णेन अर्कदुग्धेन लेपयेत्

नागपत्रं तु तत् शुष्कं तापयित्वा निषेचयेत् ॥१११॥

निर्गुदीद्रवमध्ये तु ततः पत्रं च कारयेत्

लिप्त्वा द्वेयं पुनः सेच्य सप्तवारं विशुद्धये ॥११२॥

भारणं चि चाश्वत्थत्वचो भस्म नागस्य चतुरशतः ।

क्षिप्त्वा चुल्यां पचेत्पात्रे चोळयेल्लोहदंडकात् ॥११३॥

यावद् भस्म तदुद्धृत्य भस्मतुल्या मनःशिला ।

जंघीरिवारनालैश्च पिष्ट्वा रुध्वा पुटे पचेत् ॥११४॥

स्वांगशीतं पुनः पिष्ट्वा विंशत्यंशं शिलाम्लिके ।

एवंविंशपुटेः पक्वं नागं स्यात्तु निरुत्थकं ॥११५॥

नीलम पिष्टिः भस्म (रसोद्धार तत्र)

गुणाः इन्द्रनीलं वारिनीलं श्वेतगर्भं मापि क्वचित्

वारिनीलं हीनगुणमौषधेषूपपुज्यते ॥११६॥

तेजोमयं कृष्णगर्भं स्निग्धं स्वच्छं च मध्यतः ।

उत्तमं नीलमेतत्स्याल्लघुभारं च चिप्पटम् ॥११७॥

सूक्ष्माभिः कणिकाभिश्च स्मृतं हीनगुणं बुधैः ।

व्यवहार्यं भवेत्सर्वं रोगवारणकर्मणि ॥११८॥

वाते पित्ते कफे आसे दौर्बल्ये हृदयस्य च ॥

हृच्छले रक्तपित्ते च - दाहे शोषे गुणावहम् ॥११९॥

अवहार्या पिष्टिरेव दीनं स्याद् बहुनिपातितम् ।

वज्रं विहाय सर्वेषु रत्नेषु निश्चयस्त्वयम् ॥१२०॥

पिष्टिः सर्वेषु रसशास्त्रेषु गुणाः श्वनेः प्रकाशिता ॥

भस्म पिष्टिर्न कुत्रापि रसशास्त्रेऽस्य दृश्यते ॥१२१॥

अस्माभिरनुभूत्यात्र भिषक् हिताय दीयते ॥

अवहार्या पिष्टिरेव कार्यं भस्म न रत्नजम् ॥१२२॥

गुणात्रिका भस्मवश्च पिष्टिः सर्वत्र युज्यते ॥

पिष्ट्वा सम्यक् चेन्द्रनीलं द्रोणपुष्पीरसैर्दिनम् ॥१२३॥

दिनं कुमारिकाद्रावैः केतकीकुसुमैर्दिनम् ॥

अतपत्रीभवैः पुष्पैः शतावर्या रसैर्दिनम् ॥१२४॥

समर्थं विधिवत् सिद्धा पिष्टिर्नीलमरत्नजा ॥

रक्तपित्तं कफं कांसं आसं हृच्छलेऽमुत्कटम् ॥१२५॥

वातपित्तकफोद्भूतान् समयेद् बहुलान् गदान् ।

वर्त्या रसायनी वृष्या मेघास्मृतिमतिप्रदा ॥१२६॥

भस्म-मर्दितं चक्रिकां कृत्वा रंभापत्रैश्च वेष्टयेत् ।

वस्त्रमृत्तिकयावेष्टय शुष्कं गोधूमकोष्ठके ॥१२७॥

चार्यं दशदिनं यावत् ततो निष्कास्य पाचयेत् ॥

कटाहे बालुकापूर्णं गोलं तत्र निवेशयेत् ॥१२८॥

दद्याद् ग्रामाष्टकं वह्निर्स्वागशीतं च मर्दयेत् ।

इन्द्रनीलभवं भस्म द्विगुणं मधुसर्पिषा ॥

विषघ्नं वृष्यमायुष्यं दोषत्रिकनिवारणम् ॥१२९॥

पद्मा पिष्टिः भस्म (रसोद्धार तत्र)

गारुमत् इरिद्वजं ताक्ष्यं मरकतं गुह ।

पन्नाख्यं मसूणः स्निग्धं रश्मिवद्भासुरं शुभं ॥१३०॥

चिपिटं कर्कशं नीलं कपिलं पांडु कायवम् ।

कुण्ठाभं सेवनानहं गुणहीनं तदुच्यते ॥१३१॥

ताक्ष्यं च मधुरं शीतमम्बुपित्तहरं गुह ।

जीर्णज्वराग्निमाश्यामवातं श्वासं विषापहम् ॥

पांडुदुर्नामशोफधनमायुष्यं बृहणं स्मृतं ॥१३२॥

रसग्रन्थेषु पन्नाया भस्म पिष्टिश्च नोदिता ॥

परं प्रयुज्यते वैद्यैः क्वचिदरुग्णेष्वतो मया ॥

उच्यतेऽनुभवेनैव रसोद्धारारव्यतत्रके ॥१३३॥

पिष्टिः ताक्ष्यं सुकक्ष्णं ग्राह्यं सूक्ष्मवृणीकृतं पुनः ।

सारिवाकाकर्जं धाय तिलपर्ण्यादरुषिकं ॥१३४॥

तत्तत्क्षवाथै रसमर्थं प्रत्यहं च पृथक् पृथक् ।

मद्यन्तं च दिवसे रात्रौ खल्वे चन्द्राभुसेवितां ॥१३५॥

पिष्टिर्मरकतस्येवं वृष्ट्या चर्त्या रसायनी ॥

मधुना रक्तिका मात्रा दुग्धेन सर्पिषाथवा ॥

हृत्फुफ्फुस शिरोरोगे दद्यादायुष्यवर्धिनी ॥१३६॥

भस्म-कर्षाष्टकमिता पिष्टिर्गन्धकं तालकं तथा ।

चतुःकर्षमितं ग्राह्यं मर्दितं कन्यकारसैः ॥१३७॥

गोकं कृत्वा भवत्थपत्रैरावेष्टयात्तपशोषितं ।

कृत्वा मृत्कपटं सम्यक् पुनश्चात्तपशोषितं ॥१३८॥

पचेत्तद्बालुकाय त्रे सततं महाराष्टकं ।

स्वांगशीतं समादाय खल्वे सूक्ष्मं विमर्दयेत् ॥१३९॥

श्वेतापराजिता मांसी रुदन्ती सारिवाजलैः ।

एकैका भावना देया सर्वरोगेषु दापयेत् ॥१४०॥

गुणैकं चाष्टवर्गस्य चूर्णं द्वादशरक्तिकं ।

मधुह्रैयं गवीनाभ्यां दद्यान्नानानुपानतः ॥१४१॥

हृच्छले विद्वधो मेहे भयरोगे प्रयुज्यते ॥

जराभृत्यहरं वृष्यं वयःस्थैर्यकरं परम् ॥१४२॥

पित्तल भस्म (रस रत्न समुच्चय अध्यायः ५)

व्याख्या रीतिका काकतुंडी च द्विविधं पित्तकं भवेत् ।

शुणः संतप्त्वाकांजिके क्षिप्त्वा ताम्राभा रीतिका मता ॥१४३॥

एवं या जायते कृष्णा कांकतुंडीति सा मता ॥

रीतिस्तिक्तरसा साक्षाज्जतुंधनी सास्त्रपित्तनुत् ॥१४४॥

कुमिकुष्ठहरा योगात् सोष्णवीर्या च शीतला ॥

काकतुंडी भतस्नेहा तिक्तोष्णा कफपित्तनुत् ॥१४५॥

यकृतप्लीहहरा शीतवीर्या च परिकीर्तिता

शोधनं तप्त्वा क्षिप्त्वा च निर्गुंडी रसे श्यामारजोन्विते ॥१४६॥

पचवारेण संशुद्धिं रीतिरायाति निश्चितं ॥

भारणं निम्बूरसशिलागंधवेष्टिता पुटिताष्ठया ॥१४७॥

रीतिरायाति भस्मत्व ततो योज्या यथासुखं ॥

ताम्रवन्भारणं तस्याः कृत्वा सर्वत्र योजयेत् ॥१४८॥

पोखराज पिष्टिः (रसोद्धार तंत्रं)

सास्त्रकारैर्गुणाः प्रोक्ता उत्तमाधमभेदतः ।

पुष्परागस्य भस्माथ पिष्टिरुक्ता न कुत्रचित् ॥

भिषक् हिताय चास्माभिः प्रोक्ता रोगानवृत्तये ॥१४९॥

स्थूलं स्वच्छं गुरु स्निग्धं मसृणं कोमलं तथा ॥

उत्तमं पुष्परागं तत् निष्पन्नं श्यामकं तथा ॥१५०॥

तोयदीनं दोषयुक्तं तत्प्रकीर्तितम् ॥

वैतपित्तकफान्दन्ति कुष्ठोदरवमिं तथा ॥१५१॥

रक्तपित्ते तु मन्दाग्नेौ मूत्रकृच्छ्रे गुणावहम् ॥

शोधनं नोपयुक्तं स्यात्पिष्टिर्नीलमवदू भवेत् ॥१५२॥

पाच्यते बालुकायत्रे भस्माशा विद्यते यदि ॥

बाराहादिपुटेः पक्वं रत्नं हीनगुणं भवेत् ॥१५३॥

पोखराज भस्म (रसोद्धार तत्र)

चूर्णीकृत पुष्परागं हरिद्रा-त्रिफला रसैः ॥

घृष्टं दिनत्रयं यावद्गोलं रम्भादलैस्ततः ॥१५४॥

वेष्टयित्वा सूत्रवद् वस्त्रमृत्तिकया ततः ॥

तप्तं सूर्याशुभिः शुष्कं बालुकायत्रेण पचेत् ॥१५५॥

यामद्वादशपर्यन्तं स्वांगशोतं समुद्धरेत् ॥

मर्दयेद्दिनमेकं च छिरक्तिमात्रया ततः ॥१५६॥

मधुना नवनीलेन घृतेन पयसाथवा ॥

उक्तरोगेषु सर्वेषु सम्यगस्ति गुणावहम् ॥१५७॥

पञ्चलोह भस्म (रसोद्धार तत्र)

व्याख्या-नामो वंगस्तथा लोहं कास्थं रीतिः समं समं ॥

स्यादुत्तमं पञ्चलोहं द्रावितं सर्वमेकतः ॥१५८॥

वर्तुळं वर्तलोहं च भर्तु पंचरसं तथा ॥

पञ्चलोहस्य नामानि पात्राण्यारोग्यदानि वै ॥१५९॥

सर्वमेव पचेद् भांडे चाम्बलद्रव्यविवर्जितम् ॥

तत्पात्रे पाचितं भुक्तं शुभं तैलघृतादिकं ॥१६०॥

शोधनं-पत्तलीकृतपत्राणि तेले तत्रे च कांजिके ॥

गोमूत्रे च कुलत्थानां कषाये च त्रिधा त्रिधा ॥१६१॥

पतमानि निषिंचेत घावच्चूर्णीभवन्त्यल

शुद्धं भवेत् पचलोहं पश्चात् भस्म समाचरेत् ॥१६२॥
संतप्तं चाश्वमूत्रेषु सप्तवारं निषेचयेत्

वर्तुलं शुद्धिमायाति भस्म योग्यं भवेद् ध्रुवम् ॥१६३॥

भारणं भर्तृपूर्णं बलान्घण्टो पले गन्धकतालके ॥

अर्कक्षीरेण संपिष्टं पचेद् गजपुटान्हये ॥१६४॥

अर्कक्षीराकपत्राणां रसेन निंबुकस्थ च

कुमार्या बटशुगानां मर्द्य गजपुटे पचेत् ॥१६५॥

भवेद् रोगहरं भस्म प्रत्येकस्य त्रिभिः पुटैः ॥१६५॥

गुणाः वातपित्तकफाद्भूतान् देहान् हृत्फुफ्फुसां व्रजान्

हन्त्युदावर्तप्लव्हेषं छर्दिकृमिरजं तथा ॥१६६॥

मलशुद्धिकरं नेत्र्यं श्वासं कांसं ममेहजित्

कुष्ठत्वचाविकारघ्नं कृहघ्नं रुचिद्वर्धनम् ॥१६७॥

प्रवालं पिष्टिः चन्द्रपुटोऽथ (रसोद्धार तंत्रं)

विद्रुमस्य गुणाः प्रोक्ताः शास्त्रकारैर्भिषग्वरैः

न तदभस्माथ पिष्टिश्च निर्दिष्टा कुत्रचित्क्वाचित् ॥१६८॥

अस्माभिरनुभूत्यात्र दीयते वैद्यहेतवे

प्रवालं चूर्णयित्वाथ द्रोणपुष्पीरसान्वितं ॥१६९॥

शतावरी च मंजिष्ठा शतपत्रोपसूनकं

प्रत्येकस्य रसैर्भर्ग्यं देजं दिनं यथाविधि ॥१७०॥

जलेन शतपत्राश्च पुष्पाणां मर्दयेद् दिनम्

प्रवालपिष्टिका सिद्धा शीतवीर्या गुणावहा ॥१७१॥

चतुर्गुञ्जा मिता मात्रा दद्याच्च मधुसंपिषा

चरःसर्वं रक्तपित्तमर्शाभ्युन्मादजान्गदान् ॥१७२॥

इमां चन्द्रपुटिं माहू राज्ञौ चन्द्रांशुसेवितां

तप्ता मूर्यांशुभिः पिष्टिस्तां च सूर्यपुटिं विदुः ॥१७३॥

प्रवाल भस्म [रसोद्धार तंत्र]

उक्तपिष्टिं प्रवालस्य कन्यागर्भे मर्दयेत् ॥

बटाङ्गरसैः पश्चात्पुटेद्वारादजे पुटे ॥१७४॥

त्रिगुञ्ज मधुना दद्यात्कासश्वासकफामये ॥

उष्णवीर्यमिदं भस्म दद्यादुदरजे गदे ॥१७५॥

वंग भस्म (योग रत्नाकरे)

व्याख्या-खुरकं मिश्रकं चेति द्विविधं वंगमुच्यते ।

शोधनं खुरं तत्र गुणैः श्रेष्ठं मिश्रकं न हितं मत ॥१७६॥

धवलं मृदुलं स्निग्धं द्रुतद्रावं सगौरवं ॥

निःशब्दं खुरवंगं स्यात् मिश्रकं श्यामशुभ्रकं ॥१७७॥

द्रावयित्वा निश्चायुक्ते क्षिप्तं निर्गुडिकारसे ॥

विभृद्धयति त्रिवारेण खुरवंगं न सशयः ॥१७८॥

भारणं मृत्पात्रे द्राविते वंगे चिचाश्वत्थत्वचो रजः ।

क्षिप्त्वा क्षिप्त्वा चतुर्थांशं छोहदव्यां त्रिचालयेत् ॥१७९॥

ततो द्वियामपात्रेण वगभस्म प्रजायते ।

अथ भस्मसमं तालं क्षिप्त्वाम्लेन मर्दयेत् ॥१८०॥

सतो गजपुटे पक्त्वा पुनरम्लेन मर्दयेत् ॥

तालेन दशमांशेन याममेकं ततः पुटेत् ॥

अत्र दशपुटेः पक्वं वंगं तु त्रियते ध्रुवं ॥ ८१॥

मयूर पिच्छा भस्म [रसोद्धार तंत्र]

शिखिपिच्छभवं भस्म कुत्रचिन्नं च दृश्यते ।

भिषगभिर्युज्यते यस्मादस्माभिस्तद्विधीयते ॥१८२॥

संग्रहं शिखिपिच्छानि हण्डिकायां निवेशयेत् ।

पचेद्गजपुटे पश्चात्पस्थं प्राणं च भस्मनः ॥१८३॥

पक्काश्मृजैः कवाथैः द्रोणपुष्पीरसैस्तथा ।
 चक्रमदरसेनाय घृष्ट्वा गजपुटे पचेत् ॥१८४॥
 ताम्रगमै भस्म चैतद् विषं वातं क्षयं कफं ।
 हृद्रोगं गुल्ममर्शांसि मलत्कुष्ठं च नाशयेत् ॥१८५॥

मल्ल भस्म [रसोद्धार तंत्रं]

गौरीपाषाणजं भस्म विधिवन्नैव दृश्यन्ते ।
 रसशास्त्रेषु कुत्रापि ततोऽत्रास्माभिरुच्यते ॥१८६॥
 रोगप्रशमनार्थाय श्वेतः प्रोक्ता गुणावहः ।
 चतुर्भागाथ गोदन्ती मल्लो भागैक एव च ॥१८७॥
 मर्दयेद्दिनमेकं तत् पश्चाद्भस्म विधीयते ।
 मेघनादरसंघृष्टः तण्डुलीयरसैस्तथा ॥१८८॥
 अर्कदुग्धैः गवां मूत्रे ततो गोलं विधीयते ।
 पत्रैरेरण्डजैर्वेष्ट्य सूत्रबंधं च कारयेत् ॥१८९॥
 एकांगुलप्रमाणेन मृत्कपर्दं विधीयते ।
 प्रवेश्य बालुकायंत्रे अग्निं दद्यात्क्रमेण च ।
 यामषोडशकं यावत्स्वांगशीतं सगृह्येत् ॥१९०॥
 भस्मगोलं पृथक्कृत्वा दुग्धिका रसमर्दितं ।
 पश्चात्सूर्याशुना शुष्कं रक्तिकैका प्रदीयते ॥१९१॥
 मधुना शृंगवेरेण दद्याच्च श्वासकासयोः ।
 कफरोगेषु सर्वेषु ज्वरेषु विविधेषु च ॥१९२॥

माणिक्य पिष्टिः भस्म (रसोद्धार तंत्रं)

पिष्टिः रसशास्त्रेषु कुत्रापि पिष्टिर्माणिक्यभस्मच ।
 दृश्यते न तथाप्यत्र व्यवहाराय दीयते ॥१९३॥

माणिक्यं मञ्जरागारुयं स्निग्धं स्वच्छं गुह्यं रक्तं ॥

पद्मपुष्पमभं श्रेष्ठं रोगप्रशमनं त्वरं ॥१९४॥

पिष्टीकृतं च माणिक्यं मेषशृङ्गीरसाप्लुतं ।

भृङ्गराजरसैर्घृष्टं रसैश्चिस्त्रिस्त्रिस्त्रिभवेः ॥१९५॥

जलपिप्पलिकाद्रात्रैः प्रत्येकस्मिन्दिनं दिनं ।

पिष्टिरेषा भवेत्सिद्धा माणिक्यस्य गुणप्रदा ।

आयुष्या वृहणी वृष्या कफवातहृदातिनुत् ॥१९६॥

पापरोगप्रहर्ति च नाशयेद्योग्यमात्रया ॥

भस्म - द्रोणपुष्पी रसैः पिष्ट्या सम्यग्गोलं विधाय च ॥१९७॥

वेष्टितं कदलीपत्रैश्च कपटं विधाय च ॥

वालुकायन्त्रमध्ये तत्पाच्यं द्वादशश्यामकं ॥१९८॥

स्थान्गशीलं च निष्कास्य भस्म व्यवहरेद्भिषक् ॥

इदं किञ्चिदुष्णवीर्यं विसेपात्पिष्टिवदगुणाः ॥१९९॥

माक्षिक सत्त्व भस्म [रसोद्धार तंत्र]

स्वर्णारुयं माक्षिकं पिष्ट्या समभागेन दापयेत् ।

गुंजा क्षौद्रं टकणं च तैलमेण्डजं तथा ॥२००॥

मर्दितं तस्य दापेन सत्त्वं माक्षिकजं भवेत् ।

तच्च चूर्णीकृतं तत्र समभागेन गन्धकं ॥२०१॥

मेषशृङ्गीद्रवैजम्बूरसेनं परिमर्दयेत् ।

बन्ध्याकर्कोटकी मूलैर्बहनिं दद्याद्राहजं ॥२०२॥

चतुःषचपुटैर्भस्म भवेन्माक्षिकसत्त्वजं ॥

वृष्यं रसायनं वल्यं चक्षुष्यं पांडुमेहनुत् ॥२०३॥

कुष्ठं शोफं च दुर्नामरोगं सद्यो विनाशयेत् ॥

रक्तिकैकामितं दद्यात् सव्योषं मधुसर्पिषा ॥२०४॥

मुक्ता पिष्टिः (रसोद्धार तंत्रं)

रसशास्त्रेषु सर्वेषु मुक्ता पिष्टयाथ भस्मनः ॥
 विधिः कुत्रापि नैवोक्तः रस चास्माभिरिहोच्यते ॥२०५॥
 मुक्ताचूर्णं विधायाय रसैर्गांगैरुकीभवैः ॥
 शतावरीरसैश्चाथ शतपत्रीमस्तनजैः ॥२०६॥
 प्रत्येकेन दिनं मध्यं रात्रौ चन्द्रांशुधारितं ॥
 मुक्तापिष्टिर्भवेत्सद्धा द्वित्रिरक्तिकमात्रया ॥२०७॥
 मधुना नवनोतेन सर्पिषो पयसाथवा ॥
 दद्यान्मस्तिष्करोगेषु रक्तपित्तेश्च सो गदे ॥
 शीतवीर्यगुणैर्युक्ता ग्रहदोषनिवारिणी ॥२०८॥

मुक्ता भस्म (रसोद्धार तंत्रं)

विल्वपत्ररसैर्मुक्तापिष्टया गोलं विधाय च ॥
 विल्वपत्रैश्च सर्वेष्ट्य कुर्यान्मृत्कपटं ततः ॥२०९॥
 शुष्कं तद्दालुकायंत्रे दशयामावधिः पचेत् ॥
 स्वागशीतं च निष्कास्य घृष्ट्वा सम्यग्दिनावधि ॥२१०॥
 द्विगुं जापयितुं दद्याद्वातपित्तकफामघे ॥
 भस्म किञ्चिच्चोष्णवीर्यं हृद्वागक्षयकासनुत् ॥२११॥

मुक्ताशुक्ति पिष्टिः भस्म (रसोद्धार तंत्रं)

व्याख्या—संक्षेपाद् रसशास्त्राणि मुक्ताशुक्तेर्गुणान् जंशुः ।
 न तद्भस्मकृतः कैश्चित् स्वस्वग्रन्थेषु वर्णिता ॥२१२॥
 मुक्तावदेवं तत्शुक्तिः प्रायः स्वल्पगुणा मता ।
 न युक्तं भस्म मुक्तायास्तथा शुक्तेर्निबोधत ॥२१३॥
 अस्मन्मते शुक्तिपिष्टिर्व्यवहार्या भिषग्वरैः ।
 अथापि तत्कृतिं वच्मि शुक्तिभस्म पचारतः ॥२१४॥

शोधनं-शुक्तयः खंडशः कृत्वा प्रक्षाल्य चारिणा ततः ॥
 धूलिकंकरजान्तत्वान् निष्कास्य शुद्धिमाहरेत् ॥२१५॥
 पिष्टिः-पश्चात्सकुट्टय संमर्द्य वस्त्रगालं च कारयेत् ।
 अश्वत्थोदुधरज्जक्षपकाशनिम्बुभावितम् ॥२१६॥
 एकैकं दिनं पर्यन्तं शुष्कं सूर्याशुना शुभं ॥
 शुष्कं शुष्कं इतर्मर्द्यं वस्त्रपूतं ततः कुरु ॥२१७॥
 चतुर्गुणा मिता मात्रा तत्रेण मधुनाथवा ।
 नवनीतमितायुक्ता पातपित्तकफं जयेत् ॥
 रक्तपित्तं वमिं मेहं प्रदरं पित्तजान्गदान् ॥२१८॥
 भस्म-शुक्तिं पिष्ट्वा र्जुनत्वक्शालमलिकवाथमर्दिता ।
 चक्रिकाः सूर्यतापेन शुष्का गजपुटे पचेत् ॥२१९॥
 तथा पंचपुटाः देया खल्वे सम्पद्य विमर्दयेत् ।
 भावनात्रितयं पश्चात् जंवीरस्य रसेन वै ॥२२०॥
 मात्राद्वित्रिचतुर्गुणा तत्रेण मधुनाथवा ।
 कासहृद्दोग शूलघ्नी गुल्मोदरकृमीन् जयेत् ॥
 कचिकृत्कफवातघ्नी किञ्चिदुष्णगुणा स्मृता ॥२२१॥

मण्डूर भस्म (रसोद्धारं तत्र)

व्याख्या-पुराणं खनिजं किट्ट मंडूरं यंत्रकारजं ॥
 शोधनं-त्रोटिते रजतच्छायं रक्ताभं गुरु चोत्तमं ।
 विधिवल्लोहं किट्टमस्य क्वापि भस्मकृतिर्नष्टि ॥२२२॥
 चूर्णीकृत्य खरांगारैस्तप्तं क्षिपेच्च गोजले ॥
 तत्रेण त्रिफला क्वाये निम्बुनीरे क्षिपेद बुधः ॥२२३॥
 तेन किट्टेभ्यः सयोगो नश्येत् शुद्धं भवत्यलं ॥
 मारणं-काकमाची शस्त्रपुष्पो कुमारी त्रिफला निशाः ॥२२४॥
 प्रत्येकस्य रसैः क्वाथैर्घृष्ट्वा गजपुटे पचेत् ॥

पंचामृतैस्ततः पक्वं मण्डूरमुत्तमं भवेत् ॥२२५॥
 बालपुष्टिकरं पांडुं कामलां श्वयथुं जयेत् ॥
 शीतवीर्यं रुचिकरं यकृतप्लीहोदरापहं ॥२२६॥

मृगशृंग भस्म (रसोद्धार तंत्रं) सावरसिंग भस्म

अटन्त्यरण्यमध्ये ये हरिणीमिद्युता मृगाः ।
 तत् शृंगाणि न योग्यानि चिकित्साभस्मकर्मणि ॥२२७॥
 महांतश्च वृहत्काया मृगा ये वनचारिणः ।
 वृषभाभा महशृंगास्तेषां शृंगाणि गृह्यतां ॥२२८॥
 इस्तिदंतसमानि स्युः श्वेतगर्भाणि चूडिकाः ।
 क्रियन्ते शुभकार्येषु बालिका धारयन्ति च ॥२२९॥
 लोके सेमर सिंगं च कथ्यते तद् गुणपदम् ।
 बहुशाखायुतं शृंगममौ क्षिप्तं दहत्यलम् ॥२३०॥
 त्रिनाश्रमं भवेच्चूर्णं कृष्णाभं श्वेतमिश्रितं ।
 संकुट्य निम्बुकद्रावेश्वक्रिका धर्मशोषितां ॥२३१॥
 पश्चाद् गजपुटे पक्त्वा श्वेतं भस्म भवेद्भुवं ।
 बरुगस्याथ चैंगुद्या अगस्त्यस्य रसप्लुतं ॥२३२॥
 पुनर्गजपुटे पक्वं श्वेतं भस्म प्रजायते ॥
 श्वासे कासे क्षये शूले हृद्रोगे कफजे गदे ॥२३३॥
 आमवाते उरुस्तमे दीयते चोदरे गदे ॥

यशद भस्म (रसोद्धार तंत्रं)

रसशास्त्रेषु मुख्यं हि गणना सप्तधातुषु ।
 नभस्मादिकृतिः क्वापि यशदस्यहि विद्यते ॥२३४॥
 चित्रमेतद्भिषक्चित्तमस्माभिः कृतिरुच्यते ।

यश्च दं शुद्धमायाति विदेशात् पट्टिकाप्रभं ॥२३५॥
 कटाहे लोहजे क्षिप्य चुल्यामग्नौ मत्तापयेत् ॥
 गलितं निम्बकाष्टेन चालयेत् तत्र च क्षिपेत् ॥२३६॥
 अपायाम्गस्य पञ्चांगं चिन्वायाश्च त्वचारजः ॥
 यामद्वाभ्यां भवेद् भस्म प्रक्षेपेण मुहुर्मुहुः ॥२३७॥
 कृष्णाभं निम्बुकद्राक्षैश्चक्रिकाः सूर्यतापिताः ॥
 वाराहार्धगुटे पक्वाः पुनर्वटजटाङ्कुरैः ॥२३८॥
 अर्जुनस्य त्वचाक्वार्थः स्याद् भस्म-चेत्तमं गुणैः
 त्रिगुंजामात्रया दत्तं मधुना पयसाथवा ॥२३९॥
 शीतल कफपित्तघ्नं मूत्रदोषहरं परं ।
 शिरोरोगं तथेन्मादं मुखनेत्रगदापहं ।
 वृषादाहादिकाः पित्तभवा रोगाः शमं ययु ॥२४०॥
 रजता भस्म (रौप्य भस्म) आयुर्वेद प्रकाशः आध्यायः ३)

व्याख्या-रूप्यं शीतं कषायाम्लं स्वादुपाकरसं सरं ॥२४१॥
 गुणाः-दयसः स्थापनं स्निग्धं लेखनं वातपित्तजित् ॥२४२॥
 प्रमेहादिकरोगांश्च नाशयत्यचिराद् ध्रुवं ॥
 घृटिकास्य घृता वक्त्रे वृष्णा शोष विनाशिनी ॥२४३॥
 शोधनं तैलवक्त्रादिशुद्धस्य रजतस्य विशेषतः ॥
 शोधनं सुनिभिः प्रोक्तं तद् यथाचेन्निगद्यते ॥२४४॥
 सूक्ष्मपत्रीकृतं रूप्यं प्रकृतं जातवेदसि ॥
 निर्वापितमनस्तस्य रसे वारत्रयं शुचि ॥२४५॥
 विधाय पिष्टिं सूतेन रजतस्याथ मेलयेत् ॥
 सारज-तारुं गन्धं समं शुद्धं तन्मघं निम्बुकद्रवैः ॥२४६॥
 नीलकीकृत्य संशुद्धं मृषायां स्वर्णवद् दृढं ॥
 त्रिभिः पुटैर्भवेद् भस्म योज्यमेतद् रसादिषु ॥२४७॥

भारण-तारपत्रं तुयभागं भागैकं शुद्धतालकं ॥
 एतज्ज्वारेजद्रावैः कल्कीकृत्याखिलं मिषक् ॥२४८॥
 तेन तारस्य पत्राणि लेपयेत् शोषयेत्ततः ॥
 शगावसंपुटे तेषामूर्ध्वाधो गन्धकं क्षिपेत् ॥२४९॥
 तारतुल्यं ततस्तानि रुध्वा गजपुटेपचेत् ॥
 त्रिंशदुत्पलकैर्वापि विंशद्भिस्तारपंचता ॥२५०॥

लोह भस्म (रसोद्धार तंत्र)

शोधनं-शशरक्तेन लिप्तं हि सप्तवारेण तापितं ।
 कान्तादिमवलोहं हि शुद्धमत्येव न संशयः ॥२५१॥
 सागुदलेवणैस्तद्वत् लेपितं त्रिफलाजले ।
 निर्वापितं भवेत् शुद्धं सत्यं गुर्वचो यथा ॥२५२॥
 भारण-लोहचूर्णं पलद्वन्द्वं गुडमधौ लमांश्चकौ ।
 खल्वे त्रिमर्द्यं नितरां पुटेद् विंशतिवारकं ॥२५३॥
 पेयणं तु प्रकर्तव्यं पुटः पश्चात् प्रदीयते ।
 अनेन विधिना मम्यक् भस्मीभवति निश्चितं ॥२५४॥
 सर्वरोगान्निहन्त्येव नात्र कार्या विचारणा ॥
 श्वेता पुनर्नवापत्रतोयेन दशसंख्यकाः ॥
 पुटान्तत्र प्रदेयाश्च सिन्दूराभं प्रकायते ॥२५५॥

लोहाभ्र भस्म (रसोद्धार तंत्र)

समभागं मिषक् कुर्यात् लोहं निश्चन्द्रमभ्रकं ।
 द्रवैः कुमारिकायाश्च घृष्टमर्जुनपिप्पलैः ॥२५६॥
 प्रत्येकस्य रसैः क्वाथैर्घृष्ट्वा गजपुटे पचेत् ॥
 एकविंशपुटैः पक्वं भस्म जंबूफलद्रवैः ॥२५७॥
 वल्चमायुष्यमारोग्यप्रदं मेध्यं रसोयनं ॥

वलीपलितहृद् हृद्यं हृत्फुफ्फुम चलावहं ॥२५८॥
चतुर्गुजमितं खादेत् नित्यं च मधुसर्पिषा ।

वराटिका भस्म [रसोद्धार तंत्र]

वराटिकागुणाः मोक्ता रसशास्त्रेन शोधनं ।
मारणस्य कृतिर्नोक्ता तदस्मामिनिस्पृश्यते ॥२५९॥
श्वेता पीता द्विभेदेयं पीताधिकगुणप्रदा ।
वराटाः खड्गः कृत्वा निष्कास्या धूलिकंकराः ॥२६०॥
मक्षाल्य चारिणा पश्चात्सुक्ष्मचूर्णीकृतास्ततः ।
निंबूकवारिणा पिष्टा दिनैकं दृढदंडतः ॥२६१॥
चक्रिका द्विपलेन्माना शुष्काः सूर्याशुना च ताः ।
पश्चाद् गजपुटे पक्त्वा स्वांगशीनाः समाहरेत् ॥२६२॥
ततश्चिंचात्वचा क्वाथैरुद्वरत्वचाभवे ।
हरिद्रावारिणा पश्चात् पुटेद् गजपुटे पृथक् ॥२६३॥
भावना निंबूकद्रावैः त्रिवेळं दापयेद् भिषक् ।
चतुर्गुजामिता मात्रा दद्यात् च मधुसर्पिषा ॥२६४॥
उष्णवीर्या वराटीय ग्रहणीकफवातहृत् ।
दीपनी पाचनी तक्रैः दद्यात् तुलसीजै रसैः ॥२६५॥

वज्र भस्म (आयुर्वेद प्रकाशेअध्याय ५)

शोधनं—गृहीत्वा हि शुभं वज्रं व्याघ्रीकन्द्रे विनिक्षिपेत् ॥
माहिषीविष्टया लिप्त्वा करीपाग्नौ विपाचयेत् ॥२६६॥
त्रियामं वा चतुर्ग्रामं यापिन्यन्तेश्वमूत्रके ॥
सेचयेत् पाचयेदेव सप्तरात्रेण शुद्ध्यति ॥२६७॥
भस्म—त्रिसप्तचारं संतप्तं खरमूत्रेण सेचितं ॥
मत्स्यैस्तालकं पिष्ट्वा तद्गोले कुल्लिंक्षं क्षिपेत् ॥२६८॥

मध्मावं वाजि नृजेण सिक्तं पूर्वक्रमेण च ॥

भस्मीभवति तद् वज्रं शंखशीतांशु सुन्दरम् ॥२६९॥

वज्रं च यद्दरसोपेतं सर्वरोगापहरिकम्

सर्वाघशमनं सौख्यदादृष्यकारि रसायनम् ॥२७०॥

वज्रं सप्तीर्यकृपित्तगदान्निहन्त्यात्

वज्रोपमं च कुरुते वपुर्गुत्तमश्चि ॥२७१॥

शोषश्रमभय भगन्दरमेहमेदो

पाण्डुरश्वययुहारि रसायनं च ॥२७२॥

वैक्रान्तः भस्म (रसोद्धार तत्र)

श्वेतः कृष्णस्त्वर्था रक्तः पीतोऽथ मिश्ररंगकः

षट्कोणो वाष्टकोणः स्यात् मसृणो गुरुतायुतः ॥२७३॥

निमलः सिद्धिदः स्वर्ण रोष्यादिकरणे शुभः

तप्तस्तप्तो हि वैक्रान्तो ध्यातः सिक्तोऽथमृषके ॥२७४॥

शुध्यति त्रियते गंधनि नुकटं वमर्दितः

सम्यगष्टपुटः सिद्धो वज्रस्थाने नियोजयेत् ॥२७५॥

वज्रवद् गुणदशायं देहसिद्धिकरं परं

मेरुकुष्ठक्षयश्वासकास जीर्णज्वरापहः ॥२७६॥

वैदूर्य पिष्टिः भस्म [रसोद्धार तत्र]

पिष्टिः वैदूर्यस्य गुणाः शास्त्रे प्रोक्ता शोभनं मारणे

नोक्ते क्वापि ततोऽस्माभिः कथ्यतेऽनुभवेन च ॥२७७॥

शुभ्रं गुरुं समं स्वच्छं श्यामाभं शस्यते हृणैः

यज्ञोपवीतवदरेखास्त्वस्तत् शोभनं विदुः ॥२७८॥

यार्जाराक्षिसमापि गच्छन्ति वै दक्षवर्जितं

चिप्पटं ककशां श्यामतोयच्छन्ति च हृष्यते ॥२७९॥

रुक्तेखागर्भमेतद् गुणैर्हीनं प्रकीर्तितं ।

तप्तमग्नौ धिल्वतोये सेचितं सप्तवारकं ॥२८०॥

शुद्ध चूर्णीकृतं पश्चात् तोये शिखिशिखाभवे ।

जटाभांसी कषायेथ पत्रकंदरसे ततः ॥२८१॥

कदलीकंदतोयेय रुदन्तीक्षुपजे रसे ।

प्रत्येकस्मिन् दिनं मद्यं वैदूर्यं पिष्टिका भवेत् ॥२८२॥

देया द्विगुक्तिका मात्रा नवनीतसितायुता ।

रक्तपित्तवृषा दाह सर्वपित्तगदेषु च ।

घृष्टं रसायनं वल्यमायुष्यवर्धनं परं ॥२८३॥

भस्म द्रोणपुष्पी रसेष्टृष्टा प्रोक्ता वैदूर्यपिष्टिका ।

गोलं रंभादलैर्वेष्ट्य कृत्वा मृत्कर्पटं शुभं ॥२८४॥

शुष्कं तद् बालुकायंत्रे सततं प्रहराष्टकं ।

स्वांगशीतं सष्टद्वत्य मर्दयेद्दजनोपमम् ॥२८५॥

किचिदुष्णगुणं चैतत्कासश्वासकफापहं ।

वातं पित्तं हरेन्ननानुपानात् सर्वरोगहृत् ॥२८६॥

शुक्ति भस्म (रसोद्धार तंत्रं)

प्रोक्ता सुक्ता शुक्तिकाय तत्रोक्ता भस्मनः कृतिः ।

सा एवेयं शुक्तिपिष्टिः शुक्तिभस्म तदेव हि ॥२८७॥

क्रियया च गुणैरेतद् भिद्यते नेति निश्चितं ।

भिन्नभस्मकृतिश्चास्या नोक्ता चेति विदांकुरु ॥२८८॥

शंखभस्म (रसोद्धार तंत्रं)

पाचिन कविभिः क्वापि शंखभूतिश्च नोदिता ।

सांपतं व्यवहारोऽस्ति ततो वक्ष्ये यथातथं ॥२८९॥

शंखांश्च शकलीकृत्य दूरीकुर्याद्रजःकणान् ।

धातांस्तान्धारिणा सम्यक् पश्चाच्चूर्णीकुरुष्वपि ॥२९०॥

दूर्वारणी पिप्यलाक्ष कवायैर्गजपुटाः पृथक् ।

त्रिभङ्गना निवृकस्य रसैः सम्यक् च मर्दयेत् ॥२९१॥

त्रिस्तिका च तत्रेण भातः सघृत सन्धवैः ।

अन्येन वानुपानेन यथादोषं प्रयोजयेत् ॥२९२॥

ग्राही देयो ग्रहण्यर्शोप्रिमांधारुचिवायुषु ।

गुल्मोदरामदोषघ्नः कम्बुः कंठयः शुभः स्मृतः ॥२९३॥

अपक्वो नेत्ररोगाणामंजने मुखलेपने ।

तारुण्यपिटिकाः सर्वा दरीकुर्याच्च वर्णदः ॥२९४॥

शृंग भस्म (रसोद्धार तंत्र)

बृहत्सावरशृंगस्य व्यवहारोऽस्ति भस्मनि ।

पूर्वाक्ता तत्कृतिर्ज्ञेया नो भिन्ना कृतिरस्य वै ॥२९५॥

सप्तरत्न भस्म [नवरत्न भस्म] (रसोद्धार तंत्र)

[नवरत्नभस्मन एव व्यवहारः न सप्तरत्नस्य]

वज्रभस्मायेतरेषां रत्नानां पिष्टयः स्मृताः ।

आणिक्य मोक्तिकं चैव विद्रुमं तार्क्ष्यमेव च ॥२९६॥

शुष्परागं च वज्रं च मोमेदं च विडूरकं ।

इमानि नवरत्नानि तवनिष्कमितानि च ॥२९७॥

वज्रं निष्कमितं ग्राह्यं सर्वाण्येकत्र कारयेत् ।

निवृकस्य जयत्याश्च तंडुलीयस्य चारिणा ॥२९८॥

नील्याश्च त्रिफलायाश्च भावनैका पृथक् पृथक् ।

समभासकृतं ताल शिला गंधकज रजः ॥२९९॥

पंचमष्टिकनिष्कं च सप्तरत्नेषु मेलयेत् ।

संपेष्य लकुचद्रवैः कपोतपुटपाचितं ॥३००॥

अेवमष्टपुटा देयाः कपोताख्या मिषग्वरैः ।

तालादिमिश्रणं चैकवेळमेव प्रदीयते ॥३०१॥

रत्नान्येवावशिष्यन्ते नश्येत्तालादिपिश्रण

नवरत्नाभिधं भस्म जायते सुरसायन ॥३०२॥

वृष्य वृहणमारोग्यप्रदमायुर्विवर्धन

वातपित्तकफोद्भूतान्नाना रोगान् विनाशयेत् ॥३०३॥

कासं श्वासं च हृच्छूलं क्षयोरक्षतमं जसा

ग्रहणीशूलगुल्मादीनुदावतोदरान् जयेत् ॥३०४॥

नवरत्न पिष्टिः (रसोद्धार तत्र)

स्वर्पाणिक्यमिन्दाश्च मुक्ता मोमस्य विद्रुम

बुधे ताक्ष्यं पुष्पराम गुरोः शुक्रस्य वज्रक ॥३०५॥

शनेनीलं च गोमेदं राहोः केतोविद्रुमक

वज्रस्य भस्म चान्येषां रत्नानां पिष्टयः स्मृताः

समभागानि गृहणीयात् केतकी पुष्परारिणा ॥३०६॥

श्वेतपत्री मसूनानां जकैष्टृष्टवा दिनद्रयः

स्थितं चन्द्रांशुभी रात्रौ दिनमेकं च पेषयेत् ॥३०७॥

मधुना सर्पिषा मात्रां दद्याच्चैवार्धरक्तिका

वातपित्तकफोद्रेकाः प्रशमं यान्ति सत्वर ॥३०८॥

आयुष्या वृहणी वृष्या पिष्टिरेषा रसायनी

कायाकल्पकरी चैव स्मृतिमेधामतिप्रदा ॥३०९॥

उरःक्षत क्षयं जीर्णज्वरहृद्रोगनाशिनी

नवग्रहाणां पीडां च शमयेत् तुष्टिपुष्टिदा ॥३१०॥

सुवर्ण भस्म १ (आयुर्वेद प्रकाशः अध्यायः ३)

सुवर्णेनो द्रुते सूतं दद्यात् सीसं कलांशकं

अम्लेन मर्दयेत् तत्तु चूर्णयित्वा शनैः शनैः ॥३११॥

पश्चात् तद् गोमूत्रं कृत्वा तुल्यगंधरजोगतं

शरावसंपुटे स्थाप्यं स पि रुद्ध्वा पचेत् ततः ॥३१२॥

विशदं वनोपकैः सम्यक् समधेव पुनः पुनः ।

अम्लेन गोलकं कृत्वा पचेत्स्वर्णमृतिर्भवेत् ॥३१३॥

सुवर्ण भस्म २ (रसमकास-सुधाकरः अध्यायः ४)

हेम्नः सूक्ष्मदलानि भूर्जसदृशान्यादाय सलेप्य वै ।

वज्री दुग्धकहिगु हि गुल्मसमैरेकत्र पिष्टीकृतैः ।

सत्यं संपुटके निधाय दशमिश्रैश्च पुटैः कुक्कुटैः ।

पाच्यं हेमचरुस्तगैरिकसमं संजायते निश्चितं ॥३१४॥

अेतत्स्वर्णभवं करोति चरिजः शौन्दर्यतां वै सदा ।

रोगान् दैवकृतानि निहन्ति सकलान्येवं त्रिदोषाद्भवान् ।

यः सेवेत नरैः संपानं द्विदश कानि वृद्धः च नो जायते ।

दोषाश्चैव गरोद्भवा विषभवा आगन्तुका स्युर्न च ॥३१५॥

स्वर्णमाक्षिक भस्म (आयुर्वेद प्रकाशः अध्यायः ४)

स्वर्णभं स्वर्णमाक्षिकं निष्कोणं गुरुतायुतं ।

काळिमां विकिरेत्तत्तु करे घृष्टं न संशयः ॥३१६॥

स्वर्णवर्णं गुरुं स्निग्धमीप्लीलच्छवि स्फुटं ।

कषे कनकवद् घृष्टं तद् वरं हेममाक्षिकं ॥३१७॥

शोधनं-माक्षिकस्य त्रयो भागा भागेकं सैध्वस्य च ।

मातुलुंगद्रवैर्वाथ जंबीरस्य द्रवैः पचेत् ॥३१८॥

चाछयेच्छोले पात्रे चावत्पात्रं सुषोहितं ।

भवेत्ततस्तुं सशुद्धं स्वर्णमाक्षिकमेव च ॥३१९॥

भारणं-माक्षिकस्य चतुर्थांशं दत्वा गंधं विमर्दयेत् ।

उरुवृक्षस्य तैलेन ततः कार्याथ चक्रिका ।

शरावसपुटे घृत्वा पुटेद् गजपुटेन च ॥३२०॥

धान्यस्य तुष्यध्वाघो दत्त्वा शीत-समुदरेत् ।

सिन्दुराभं भवेद् भस्म माक्षिकस्य न संशयः ॥३२१॥

सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं दृष्यं रसायनं ।

चक्षुष्यं वस्तिहृत्कंठं पांडुमेहद्विषोदरं ॥३२२॥

अर्शः शोफं विषं कंडुं त्रिदोषमपि नाशयेत् ।

अनुपानं वरा व्योषं वेल्कं साज्यं हि माक्षिके ॥३२३॥

संगे यशव भस्म [रसोद्धार तंत्र]

युनानी वैद्यके प्रोक्तं संगे यशव नामकं ।

द्रव्यं चूर्णीकृतं नीलीगोक्षुरक्वाथभाविता ॥३२४॥

विल्वपत्ररसैरेतत् शुद्धं भवति निश्चितं ।

समहिंशुल चूर्णेन घृष्टं निंबूकजैर्द्रवैः ॥३२५॥

कुक्कुटाख्यपुटे पक्वं विशदारण्यकोत्पलैः ॥

त्रिभिः पुटेर्भवेद्भस्मोपरसंस्थास्य निश्चितं ॥३२६॥

रक्तिद्रव्यं च भधुना पयसा वा घृतेन च ॥

हृद्यं रुचिकरं स्नीतवीर्यं पित्तविनाशनं ॥

रक्तपित्तप्रहण्यशीं गुदामयहरं परं ॥३२७॥

स्फाटिकमणि भस्म [रसोद्धार तंत्र]

व्याख्याः खंभाते गुजरातस्य खंडाः स्फाटिकं संभवाः ।

प्राप्यन्ते शोधनानर्हा उज्ज्वलाः स्वल्पमूल्यतः ॥३२८॥

शोधनं चूर्णीकृत्याग्निसंतप्ताः क्षिप्ता भूम्यामलीजले ॥

कृष्णादिक रसे क्षिप्ता शुध्यन्ति स्फटिका ध्रुवम् ॥३२९॥

मारणं शतावर्यश्वगंधा च जटामांसी प्रियंगुकः ॥

प्रत्येकस्य रसैर्घृष्टं पुटेद् वाराहजे पुटे ॥३३०॥

नवनीतपोडशांशं दत्त्वा निंबूकवारिणा ॥

भावना त्रितये दद्यात् स्फाटिक भस्म सिध्यति ॥३३१॥

गुणाः चटुर्गुजं रक्तपित्ते दाहे शोषे मुखामये ॥
 गळरोगेतिषारे च ग्रहण्यामर्शसां गदे ॥३३२॥
 जराक्षते गुदभ्रंशे पित्तरोगेषु दीयते ॥

हरताल भस्म (रसरत्न समुच्चये)

चवाख्या हरितालं द्विधा मोक्तं पत्राद्यं पिंडसंज्ञितं ॥
 स्वर्णपत्रं गुरु स्निग्धं तनुपत्रं च भासुरं ॥३३३॥
 तत्पत्रतालकं मोक्तं बहुपत्रं रसायनं ॥
 निष्पत्रं पिंडसदृशं स्वल्पपत्रं तथा गुरु ॥
 स्त्रीपुष्पहरणं तत्तु गुणालयं पिण्डतालकं ॥३३४॥

शोधनं सिक्नं कुष्माण्डतोये वा तिलक्षारजलेपि वा ॥
 तोये वा चूर्णसंयुक्ते दोलायन्त्रेण शुद्ध्यति ॥३३५॥
 मारणं १ मधुतुल्ये घनीभूते कषाये ब्रह्ममूलजे ॥

त्रिवारं तालकं भाव्य पिष्ट्वा सूत्रेण माहिषे ॥३३६॥

उपलैर्दशभिर्देयं पुटे रुध्वाथ पेषयेत् ॥

एवं द्वादशधा पाच्यं शुद्धं योगेषु योजयेत् ॥३३७॥

मारणं २ (बृहत् योगतरंगिणी ४१ तरंगे) ॥

सदलं तालकं शुद्धं पौनर्नवरसेन तु ॥३३८॥

खल्वे त्रिमास्येदेकदिनं पश्चाद्वि शोषयेत् ॥

संवेष्ट्य गोलकं पत्रैर्मृत्कपटं विशोषयेत् ॥३३९॥

ततः पुनर्नवाक्षारैः स्थाल्यर्धन्तु प्रपूरयेत् ॥

तत्र तद् गोलकं धृत्वा पुनस्तेनैव पुरयेत् ॥३४०॥

आकण्ठं पिठरं तस्य पिधानं धारयेन्मुखे ॥

स्थालीं तुल्यां समारोप्य क्रमाद् बन्धिं विवर्धयेत् ॥३४१॥

दिनान्यन्तरशून्यानि पञ्च बन्धिं प्रदापयेत् ॥

एवं तु त्रियते मात्रा तस्यैकरक्तिका ॥३४२॥

अनुपानान्यनेकानि यथायोग्यं प्रयोजयेत् ॥

गुणाः हरिः कटु स्निग्ध कषायपाण्डुरिदं विषं ॥३४३॥

॥ कटुकुण्डलस्य रोगाश्च वातः पित्तकफप्रणान् ॥

तालकं हरते रोगान् कुष्ठं मृत्युं जरापटुं ॥

रक्तं च शोथयेद् दीप्यं कान्तिं वृद्धिं तया युषः ॥३४४॥

हिगुलं भस्म (आयुर्वेद प्रकाशः अष्टांगः २)

पारुषी-हिगुलं दारुं म्लेच्छं हिगुलं चूर्णपारुषम् ॥

सुरंगं रसगन्धं च वर्ज्यं रक्तप्रप्यथ ॥३४५॥

गुणाः दारुद्विविधः मोक्षधरः शुक्रतण्डकः ॥

॥ हंसपादस्तृतीयः स्याद् गुणवानुत्तरोत्तरः ॥३४६॥

तिक्तं कषायं कटुं हिगुलं स्थायज्ञेयमयधनं कफपित्तहारि ॥

॥ हृल्लासकुष्ठज्वरं कामलाग्रं प्लीहाप्रवातो च गरं निहन्ति ॥३४७॥

शोधनं मेघीक्षीरेण हिगुलं अम्बुवर्णेण भावयेत् ॥

॥ सप्तवारं मधुत्वेन शुद्धिमाप्नोति निश्चितम् ॥३४८॥

भारण-हिगुलं तनुषल्लकचूकं गतं कृत्वा पटरंजनकं कन्य

मध्यस्थं कृत्वा मृदा संवेष्ट्य पुटपाकं विधानेन दशवनो

पलं पुटेत् एवं शतपुटानि । ततः शतपुटान्येषं नष्टं

कस्यं । ततः शतपुटान्येव मन्दारफलस्य । ततः

शतपुटान्येवं इन्द्रवारुणिका फलस्य ।

ततः शतपुटान्येवं अम्लवैतसफलस्य ।

ततः सिद्धो जातश्चारुणवर्णो भवति

रक्तिकैकप्रस्य पर्णं खण्डेन त्रिगन्धादि

सुगन्धिं द्रव्यैर्यथाह्वयं भक्षयेत् द्विगुणाग्निः ॥

द्विगुणकामः कासश्वासश्च ज्वरादिनाशश्च ॥३४९॥

रसायन वाजीकरण

अथ तात्पर्यं व्याख्यानं सुबुद्धो नृणां

अथ तात्पर्यं व्याख्यानं सुबुद्धो नृणां ॥१॥

मलीगलितहृत्काया कल्पप्राणी परः

भूयोभूयो नमस्कृत्य मे भूदिव्यरसायनम् ॥२॥

शुभे काले देहशुद्धिं कृत्वा सेव्यं रसायनम् ॥

करास्ययुविनाशाय इदमुक्तशुभाय च ॥३॥ रसेद्वारं तं च

वाजीकरण—और रसायन दोनोंको परस्पर संबंध रखता है इस लिये दोनों एक पहरण में दिये गये हैं ।

आधुनिक के रसायन शास्त्रमें आधुनिक बढ़ाने वाले रसायन औषधों छेपे हुए ग्रन्थोंमें और हस्तलिखितोंमें सेवकों की सहायाने विद्यमान है । श्री मदन मोहन मालवीयाजीने अपने शरीरपर यह प्रयोग करवाया जब सारे भूमल्ल का ध्यान इस विषयके और गया और रसायन काया कल्प यह कुछ शास्त्रीय विषय आधुनिकोंमें नै औसा अक्षुण्ण हुआ । शास्त्रमें कुटिप्रादेशिक और वातात्मीय के प्रकारके रसायन प्रयोग हैं । व्यवसाय ग्रन्थ इस वत मान वालमें कुटि प्रादेशिक प्रयोग करना करवाना कठिन है । विधिहीन प्रयोग फल देता नहि और प्रयोगमें लिखी क्लेश्रुति प्रसन्न हैनेसे मालपर श्रद्धा कम होती है । पं मा मालवीयाजी पर विचार हुआ प्रयोग निष्फल हुआ इसका कारण यही है । मदन मोहन मदन विवेचन दिने प्राग्भिक शरीर शुद्धि नहि करवायी । शास्त्रमें कहा है कि अविशुद्ध-शरीरे हि दुष्को रसायने विधि ॥ वाजीवरो वा मलिनं वस्त्रं रग हाफलः ॥ मलिन वस्त्रपर रंग नहि चढ़ता इस प्रकार बिना शुद्ध किये शरीरपर रसायन अथवा वाजीकर विधि निष्फल होता है । प्रयोगके पीछे चार दयोंमें मालवीयाजी और प्रयोग करानेवाला वय गुजर गये और जीवित रहे जब तक शरीर जवानकं तरहका सत्साद भय और तेष कुछ नहि रहा । सामान्य मनुष्य भी ८०-९० और १०० वर्ष तक अच्छी तरह कर्बेन्द्रिय चळके साथ जीवित रहता है जब मालवीयाजी ५५ वर्षसे शुरू गये थे इत्यावस्थाके विन्हेमें कोई परिवर्तन नहि हुआ था । काया कल्पके पहिले वतमान पत्रोंमें किये गये प्रचारसे विश्वभरके लोगोका ध्यान इस ओर आया और अनेक विदेशी लोग उन्हें देखने हि द आये ये वे निर्गुण हुये । काया कल्प का प्रयोग विधिहीन कराया गया था । इसमें लिखा है कि एकादशाहे च तर्का ८५ तर्के पतन्ति वेदा दशना मय अ ॥ अथारदये दिन बेश रे म दति

नख गिर जाते हैं और पुनः नये निकलने लगते हैं। भैया तो यह हुआ लेकिन पूरे सोवर्ष तक नीरोगी इशामें जन्मि भी न रह सके। प्रयोग करानेके पूर्व एक व्यक्ति पर आचार न रख कर वेश्याकी समा सुला कर वैद्य सवितिकी देखभालमें कराया जाता तो अच्छा परिणाम आनेका सम्भव था। पढ़नेका यह है कि शास्त्रीय क्रियाये बतायी हुई विधिसे करना चाहिये था।

वाजीकरणका अर्थ—वाजीकरण औषधोंके सेवनसे पुष्प स्त्री स्रंगके लिये अशक्त नहि होता, व्यञ्जन नहि होता, स्त्रीको संतुष्ट कर सकता है, वीर्यको वृद्धि होकर विषम सेवनसे होनेवाली बीर्यकी क्षीणता नहि होती। शरीर भी कृश क्षीण नहि होता इंद्रियोंका बल बना रहता है, यथेष्ट आहार सुख भोग सकता है। संसारमें विषयवाचनाही वृत्ति चाहनेवालेने वाजीकर औषध सेवन करने रहना चाहिये।

अनितीक्षण तीखा अति क्षार वाले लक्षणवाले बहुत सस्ते पदार्थ खानेसे उपद्रव्यादि रोगसे वीर्यवाही शिराके छेदसे अति द्रव्यचयसे इत्यादि कारणोंसे पुष्प क्षीण वीर्य होता है। चिन्ता क्रोध लज्जा श्रद्धावस्था आदिसे पुष्प स्त्री स्रंगके लिये अशक्त बनता है। वाजीकरण औषधको सेवन नहि करता और अतिविषय सेवन करता है वह भी क्षीण और नपुंसक जैसी दशाको प्राप्त होता है। अथवा पक्षघात जैसे दर्दका भोग बनता है। इस लिये विषय सुखकी इच्छावालेने वाजीकर औषधका सेवन करना चाहिये।

वाजीकर औषध नहि सेवन करते हुये अतिविषय सुख भोगनसे वीर्य क्षीण पुष्पको सब इंद्रियोंकी रसरक्त वीर्यादिही क्षीणता होती है, मन उदाली रहता है, साधोके दृष्ट रहता है, शरीरके किसी अंगमें कप होता है। साधोमें दर्द रहता है, हरने फिरनेमें दम चढ़ता है, पाचन कम होता है, वस्त्र धन्य रहता है भिन्न भिन्न प्रकारका वातव्याधि उत्पन्न होता है और कमी नपुंसकत्व प्राप्त होता है।

पश्यापथ्य—विभिन्नप्रकारके घृत शक्कर मधुयुक्त भोजन उत्तम संगीत तांबूल मद्य सुगंधी पदार्थ मनको प्रसन्न रखनेवाले व्यवहार नवयौवन युक्त स्त्री विविध प्रकारके स्नानपान हितकारक पथ्य है। इसके विरुद्धके कुपथ्य है।

नपुंसकत्व का कारण—भिन्न भिन्न भावोंके साथ स्त्रीस्रंग करने की इच्छावाले प्रथम काममें भाग होनेसे, अतिविषय सुख भोगनेपर वाजीकर औषध सेवन न करनेसे, उपद्रव जैसे किंगडोषके कारणसे, इंद्रियों के शक्तिकमसे, वीर्यवाहिनी

बादीका छेद होनेसे, अति प्रसन्नता पावनेसे हस्तदाश-पुष्टि मीथुनसे इस प्रकार अनेक-कारणोंसे-पुरुष नपुंसक बनता है अथवा नपुंसक जोड़ा कमजोर होता है ।

आजकाल के जमानेमें सोनेपामें कामोत्तेजक द्रव्य देखनेसे चित्त विकृत बनकर विषय वासनाकी तृप्तिकेलिये स्त्रीसंग की इच्छातृप्तिके लिये हस्तदाशकी कुटेव पड़ती है और पीछे यह हर इमेश की बन जाता है । लड़कोंका छोटी उम्रमें जन्म करनेसे अथवा स्त्रीसंगसे शरीर कमजोर होना संभव हैं परंच उत्तम आहार-विहारसे यह कमजोरी हानिकारक नहि बनती लेकिन हस्तदाशसे जो कमजोरी होती है वह शरीरके प्रत्येक अंगको कमजोर बना देती है और जींदगी भर वह संसारसुखके लिये योग्य नहि रहता । हस्तदाशकी कुटेवके परिणाम गृहस्थाश्रममें पुरुष आता है अपमालुम पड़ता है । इससे नीय इमेशके लिये पतला पानी जोड़ा बन जाता है, दिमाग खाली होता है, मन बेचेन, हरने फिरने कामकाज करनेमें निरुत्साह, स्त्रीसंगमें अथवा स्त्रिये साथ बातचित करने भावमें वीर्य स्थूलित होजाना, हाशपावमें दर्द (कठतर तोड़) इत्यदि कष्ट-थरका विराम दर्द इत्यादि चिन्ह होते हैं । आजकालके युवानोंमें से कदा ७० टका हस्तदाशकी कुटेवमें शकडे हुये हैं । इनका दिमाग इतना कमजोर हो जाता है कि मामुली बातमें दूसरोंके ना अपने शरीरका-हानि पहुँचाता है । अभ्यासमें नापास होनेसे अथवा नापाम होनेके अयम आपघात करता है इसका मूक कारण यह है । आगे वह गृहस्थाश्रममें बढता है तब हस्तदाशकी मूलके लिये उसे पम्मात्ताप होता है अथवा संसारसुख भोग नहि सकता जबमें आपघात करनेको बखत होता है ।

इस प्रकार स्त्रियोंमें भी नपुंसकत्व होता है । जैसे कोई पुरुष जन्मसे हि नपुंसक होता है वैसे स्त्री भी जन्ममें अथवा हस्त दाशसे नपुंसक होती है । उसे विषय वासना पर तिरस्कार रहता है इच्छा नहि होती । नाटक सोनेमा के प्रयोगसे उत्पन्न कामवासनाकी तृप्ति किसी लिंगाकृति वस्तुसे करती है यह आदत बढनेसे भी स्त्री नपुंसक होती है । उस ओरत का शरीर कुश बेचेन फँका रहता है । १६ वर्षकी-उम्रमें लग कर देनेका इसी हेतुमें शास्त्रकारोंने लिखा है । जैसे कि वृक्षपर पका हुआ फल लेकर उसका उपयोग करनेसे उसका लाभ प्राप्त हो सकता है, यदि फल पक जाने पर भी नहि लिया तो वह खट जाता है या वृक्षसे गिरकर निवम्मा हो जाता है । यही दशा लड़के लड़कीयोंके हैं । युव वस्था आजाना यह संसारमें आनेकी पक्व दशा है उस समय संसारमें बढनेसे शरीरको हानि नहि होती जो दूसरे विकारोंके आघीन बननेसे होती है ।

शरीर को कैसे आती है ?

सर्वशरीरदोषों भयान्ति प्राय्याहारान् अमलउपशान्तिद्वारा-
शुष्कप्राणानां सत्त्वपल्लवविश्वमेतानां विस्तृतपशुदशमीशान्य-
विक्रमऽसाम्यकशरीराणिपिन्द्रिमाजिगं क्षिप्रगुह्यतेरगुपितमेतानां
विषमाध्यतनप्राणानां दिवास्वप्नजीमयनित्यानां विषमानिमात्र-
व्यायामसंश्लिप्तशरीराणां भयकोचशोकलेमाप्राप्तपशुदशनामदोषनिमित्तं
हि शिथिलीभवन्ति मांसानि, विमुच्यन्ते सन्धयः, चिदस्थे
रक्तम् विषयन्दते कान्त्यं मेदः न सन्धीयतेऽस्थिषु मज्जा, शुक्लं
न प्रवर्त्तते, क्षयमुपैत्योजः स पचन्भूतो ग्लायति लोयवि निद्रा-
तन्द्रोलस्यसमन्वितोऽशरतमाशु चैव निरुत्ताहः प्रवसिति,
असमर्थश्चेष्टानां शरीरमानसानाम्, नष्टस्मृतिबुद्धिद्विजडयो रोगाणाम-
घिष्टानभूयो न सार्धं आयुष्वाप्नोति तस्मादेतान् दोषाननेक्षणात् सर्वान्
यथोक्तान् दितानप्राण्याऽऽहारविहारान् रसायनानि प्रयोज्यमर्दनीत्युपशान्ति-
भगवान् पुनर्वसुराप्नेय उवाच ॥

वाम्य हलके सुराक मददे लणीय तोरो धाग्याले मुखे शाक लोणीय
भाटेकी चौक नरो धान्य प्रकृतिको अनुकूल न होनेवाले दूध तूले चरदों रक्त
करनेवाले पदार्थ खानेवाले, कड़ेहुए चिन्हे हुए मारी गरिष्ठ चिकने रातशाथो
पदार्थ खानेवाले, अनिश्चित और अजीर्ण पर मोहन करनेवाले, दिनको निद्रा और
रातको जागरण करनेवाले जो मदिग और विलास में शक्ति रत, व्यायामसे
शरीरको शिथिल करनेवाले, भय क्रोध शोक डोम और अधिक परिश्रम करने
वाले मनुष्यों के मांस स्नायु र्धधा शिथिल होला होता है । शून्य तन जाता
है चरवा बढ़ती है, अस्थिमें मज्जा भगती नहि, वीर्य बढ़ता नहि, ओम क्षीन
होता है । इस दशाके पहुँचा हुआ मनुष्य नेचेन रहता है कष्ट पाता है,
निद्रा सुस्ती थालस्य से घोर जाता है । शरीर और मनका धम करनेके लिये
अक्षय बनता है, स्मरणशक्ति बुद्धि कानि नष्ट होता है शरीर रोगका घर बनता
है, पूर्ण आयुष्य भोग सकता नहि । इस कारण दर्घ जीवन चाहने वालेने उपर
कहे हुए दोषोंको और अवगुण करने वाले आहार विहारोंको छोड़कर रसायन
और वाओकरण औषधोका सेवन करना चाहिये ।

रसयन औषध सेवन करने वालेने किस प्रकार का वर्तन करना इस
बारे में भगवान् आश्रीव लिखत हैं ।

सत्यवादिनमक्रोधं निवृत्तं मध्यमैशुनात् ॥
 अहिंसाक्रमनायासं प्रशान्तं प्रियवादिनम् ॥
 यक्षशीघ्रपरं धीरं दाननिष्ठं तपस्विनम् ॥
 देशगोवाक्षाणाचार्यं गुरुबुद्धार्चने रतम् ॥
 आनुशर्यपरं नित्यं नित्यं करुणवेदिनम् ॥
 समजागरणस्वप्नं नित्यं शरीरघृताशिनम् ॥
 देशकालप्रमाणकं युक्तिमनहंकृतम् ॥
 शस्ताभारमसंकीर्णं प्रध्यातमप्रवणेन्द्रियम् ॥
 उपासितारंबुद्धानामास्तिकानां जितात्मनाम् ॥
 धर्मशास्त्रपरं विद्यान्तरं नित्यरत्नाशनम् ॥
 गुणरेतः सन्तुष्टितः प्रयुक्ते यैरसायनम् ॥
 रसायनगुणान् सर्वान्युक्तान् स समनुश्रुते ॥

जो मनुष्य सत्यवादी हो, क्रोधो न हो मदिरा और ज्ञानमें पर्याप्त हो
 अहिंसक, परिधम दयायाम नहि करनेवाला शांतचित्तवाला, प्रिय नोलनेवाला
 नियम नैमित्तिक यज्ञ करनेवाला पवित्र धीर दाता तपस्वी देवता गाय ब्राह्मण आचार्य
 गुरु और गुरुओं सेवा करनेवाला शांतचित्त दयालु निश्चि और जागरण में नियमित,
 जो दूधका सेवन करनेवाला देश बालको पहिचानेवाला युक्ति प्रयुक्ति
 समझने वाला, अहंकार नहि काने वाला शुद्ध आचरण वाला कुलीन तत्त्वज्ञानी
 बुद्धो आस्तिक और जितेन्द्रिय पुरुषोक्ती सेवा करनेवाला, धर्मशास्त्रोक्त मानने वाला
 अहं मनुष्य बिना रसायन सेवन हि रसायनगुण पाता हैं । अर्थात् वह बहुत
 समय बीरोगी रहकर अवित रह सकता है । और रसायन औषध सेवन करने वाले
 जो भी उपर कहे सदगुणोंका सेवन करना चाहिये ।

रसायन औषधके गुण वर्णन करते हुवे भगवान् आत्रेय कहते हैं कि
 दोषमायुः स्मृतिं मेधाभारोग्यं तरुणं वयः ॥
 मभावणं स्वरोदार्यं देहेन्द्रियवत् परम् ॥
 वाक्सिद्धिं प्रणतिं कान्तिं लभते नो रसायनात् ॥
 अपत्यसंतानकरं यत्सद्यः संपर्षणम् ॥
 वाजीवातिबलो येन यात्यमतिशतः स्त्रियां ॥
 भवत्यतिप्रियः स्त्रिणां येन येनोपचीयते ॥
 जीवतोऽप्यक्षयं शुक्रं फलदयेन दृश्यते ॥

वीर्य'अयुः उत्तम स्मरण शक्ति देवा आरोग्य तथावस्था उत्तम बल
शक्ति उत्तम स्वर शरीरका और 'धर्म' इन्द्रियोका बल वाणीकी विद्वि ममता काम
शक्ति संताप उत्पन्न करनेवाली शक्ति सब अवयवोंकी वृत्ति आदि रघायन जीवन
शेधनसे प्राप्त होते हैं । और अथको दाह बलवान होकर जीवोंको प्रिय होता है
और जीवनमें वीर्य अक्षय होता है यद वाजीकर है ।

“शरकात्राय” शरक जि स्या मा १.

रसायनानां द्विविधं प्रयोगमृपयो धिनुः ॥
कुटीप्रावेशिक चैव घातापकमेव च ॥
कुटीप्रावेशिकस्यादौ विधिः समुपदेक्ष्यते ॥
नृपत्रैद्यद्विजातीनां साधूनां पुण्यकर्मणां च ॥
निवासे निर्भये शस्ते प्राप्योपकरणे पुरे ॥
दिशि पूर्वोत्तरस्यां तु सुभूमौ कारयेत् कुटीम् ॥
विस्तारोत्सेधसम्पन्ना प्रिगर्भा सुक्ष्मलोचनाम् ॥
घनमिच्छित्तुमुष्मां सुमृष्टां मनसः प्रियाम् ॥
शब्दादीनामशस्तानामगम्यां सीविवर्जिताम् ॥
इष्टोपकरणोपेतां सज्जवैद्यैषध्विजाम् ॥
अथोदगयन शुक्ले तिथिनिक्षत्रपूजिते ॥
शुद्धैर्त्तकरणोपेते प्रशस्ते कृतवापनः ॥
घातस्मृतिबलं कृत्वा श्रद्धधानः समाहितः ॥
विधूय माशसान् दोषान् मेघ्री भूतेषु चिन्तयन् ॥
देवताः पूजयित्वाग्रे द्विजातीं च प्रवक्षिणाम् ॥
देवगोब्राह्मणान् कृत्वा ततस्तां प्रविशेत् कुटीम् ॥
तस्यां सशोघनैः शुद्धः सुखी छातबलः पुनः ॥
रसायनं प्रयुजीत ॥
वाग्भटाचार्य उत्तरस्थान अ. ३९
धूपातपाजोव्यालस्त्रीमूर्खाद्यविलभितां ॥
सज्जौद्योपकरणां सुमृष्टां कारयेत्कुटीम् ॥
अथ पुण्येऽहि संपूज्य पुण्यास्तां प्रविशेच्छुचिः ॥
ब्रह्मचारी घनियुक्तः श्रद्धधानो जितेन्द्रियः ॥
दानशालक्ष्यास्त्यक्तधर्मपरायणः ॥

देवतासुस्मृती युक्ती युक्तस्वप्नप्रज्ञागरः ॥

प्रियोषधः पेशलवाक् प्रारमेत रसायनम् ॥

भाषायेति रसायन सेवन के दो प्रकार कहे हैं । कुटीप्रावेशिक और आतातपिक । कुटीप्रावेशिक प्रयोग पूर्ण हो जब तक कोटड़ी में रहकर और दूसरी बहार रहकर करनेका है ।

कुटीप्रावेशिक—जिस प्रदेशमें राजा वीर्य प्राप्तको साधुपुरुष पुण्यशाली मनुष्य निवास करते हो, जो स्थान निर्भय हो, प्रणामे प्रशंसा प्राप्त हो, जहाँ सब वस्तु तत्काल मिलती हो, शहर या ग्रामको नजदीक गांवसे बहार मनोहर भूमिमें कुटी करना । यह अच्छी तरह चौड़ी उंची तीनखंडवाली छोटी गारीयां जाली वाली अच्छी दिवालवाली ऋतुके परिवर्तनसे भी किसी प्रकार कष्ट न हो जिस जगहमें रहनेसे मन प्रसन्न हो वीर्य कुटी बनाना ।

यह कुटी मिट्टीको ईंटोंसे भिड़ीसे बनाना । और ऊपर बहार मिट्टी जुपड़कर सुंदर बनाना । वहाँ बहार के अप्रिय शब्द न सुना जाय, जहाँ लोभोंको आना जाना न हो सब साधन सामग्री आवश्यक वस्तुओं तैयार रख वैद्य औषध और देवपाटी आश्रमको हाजिर रखना । कोटड़ीकी दिशाओं पर नीचे भूमिपर मिट्टीमें गोबर मिश्रकर अच्छी गार करना । कोटड़ीके एक कमरेमें कलमूत्र करना, दूसरे खंडमें चीज बस्तु रखना, तीसरे खंडमें रहना सोना बैठना ।

कुटी प्रवेशके पहिले और पीछे के

नियम—छाया कल करानेकाला साधक जब सुख उत्तरायणका हो शुक्ल पक्ष तिथि नक्षत्र करण शुभ हो ऐसी उत्तम दिन शुद्ध शुभ मुहूर्त देखकर मस्तक मुख शरीरके सब बाल निहाल धर मुंडन कर कोटड़ीमें प्रवेश करे । कोटड़ीमें प्रवेश करनेके पहिले शरीरको स्नेहन—तैल मर्दन अभ्यंग विविधत कराना पीछे औषधोंसे स्नेहय क्रिया कराना पीछे वमन विरेचन कर उदर कोठा शुद्ध कराया पीछे जब जैका सकथु (श्रायवा) खिलाना इससे पुराना मल निकल जायगा पीछे स्नानकर ओक सफेद पोती पहिनना ओक सफेद पोती शरीर पर ओढना और कुटीमें प्रवेश करना ।

साधकने ब्रह्मचर्य पालन करना बैर रखना औषधोंपर प्रीति रखना, मंद हास्यके साथ मधुर नाणी बोलना क्रोध करना नहि । राग द्वेष इर्षा काम क्रोध मद आदि मनका दोष छोड़ देना । प्राणी मात्र पर स्नेह भावना रखना आश्रमोंका पूजन कर कोटड़ीमें प्रवेश करना ।

इस प्रकार शरीर करके निय प्रकृतिक मनुष्यको ओ रसायन औषध-
अनुकूल लाभप्रद होनेका हो वह सेन कराना । अर्थात् प्रत्येक मनुष्यका शरीर
कृष्ट पुष्ट मध्यम केना है, स्वभाव आधार विहारादि पैसा प्रिय है, शरीरमें
कोष्ठ पित्त कफादिमें कौन दाँव न्यूनाधिक है इत्यादि बातोंको ध्यानमें लेकर निम्नके
रिखे जो रसायन औषध अनुकूल हो उसके सेन कराना । यह बात पढ़तेसे
निश्चित करके औषधकी तैयारी कर रखना ।

नीलकण्ठ रस पूर्णचन्द्रोदय, तोला ४, सुवर्ण भस्म तोला ४, अभ्रक
गरम लेह भस्म मुकी पिष्टि वंकात भस्म प्रत्येक ३, दो तोला,
रौप्य भस्म प्रवाल पिष्टि स्वर्ण, माक्षिक भस्म वंगभस्म प्रत्येक एक एक तोला
आयफल जावत्री लवंग इलायची छोटी पोपल जीवक सेठ कालीमेरच कपुर
बधेद मुसली प्रत्येक एक एक तोला सबको विधिवत् मिलाय जंवती लख
चित्रकमूल शतावरी निदारीकद शालमल्लोमून प्रत्येक के रस या वनायकी एक
एक भावना देकर गोला बना २२ एरंड पत्र लपेट सूत्र बांध गेहूँकी काँठी में
३ दिन रखना । पीछे निकल कर रत्ती प्रमाण गोली बनाना । पान के साथ २ से ३
गोली खा कर दूध पीना । यह उत्तम रसायन गुणकारी है आरुघ्य बढ़ाता है
सर्व रोगों की हमजोरी में औषतों के क्रतुयोग पुरुषोक्ते शुक्रदोष आदिमें उत्तम
गुणकारी हैं बाजीकर कृष्ण पौष्टिक है ।

वृद्धोपि नृ वटी—पारद तोला ४ में सोनाका वर्क तोला १ मिलाना । पीछे
सबसे बंधक तोला ४ मिलाकर दजगी करना । पीछे सबमें रसद्विगुण तो ४,
लेह भस्म ४ तोला, अभ्रक भस्म ४ तोला रौप्य भस्म तोला २, वंग भस्म
तोला ४, ताम्र भस्म वांस्व भस्म एक एक तोला, आयफल लवंग इलायची भांग
जंरा भीममेनी कपुर प्रियंगु नागरमेध प्रत्येक तीनतीन तोला सब साथ विधिवत्
मिलाकर पवारपाठाके रसकी एरंडके मूलके वनायकी हरदके वनायकी भावना
देकर गोला बनाना । तबपर एरंडके पत्र लपेट कर सूत्रसे बांध कर घन्मकी
में ठामे ३ दिन रखना पीछे गुंजा प्रमाण गोली बनाना । पानके साथ १ या २
गोली रसयन गुण करती है । आरुघ्य बढ़ता है । पौष्टिक बाजीकर है
हृदयभंग प्रमेह बहुमूत्र मधुमेह पित्त शूल सप्रहणी आदि रोगोंमें गुणकारी है ।

वृद्धोपि लक्षणस्पर्धी स्त्रीणां च घल्लमो भवेत् ॥

पुंजालक्ष्मी विलास—अभ्रक भस्म तो ४, पारद तो ४ बंधक तो ४,
रौप्य भस्म तो २, रौप्य भस्म तोला १, स्वर्ण भस्म तो १,
रस भस्म तो १॥ दपूर तो ४, आयफल जावत्री भांग इत्यादि

कनकवर्ज प्रत्येक दो दो तोला सब साथ मिलाना । मात्रा २ से ३ रत्ती । गोली बनायी हो री १ से २ गोली पानकी पट्टीके साथ खाकर उपर दूध पीना यह रसायन गुणकारी है । आयुष्य मेघा बुद्धि स्मरण शक्ति कांति वीर्य बढ़ता है षड्वास्थामे भी युवन जैसा बल आता है । प्रमेह पिशाबके रोग स्त्रीका ऋतु दोष गर्भाशयका रोग स्त्री स्तन रोग श्वासरोग हृदयकी कमजोरी गलेका रोग संप्रहणो अतिसार अश्वित सब रोगोंकी कमजोरी मस्तकके कानके नाकके मुखके रोग आदिमे उत्तम गुणकारी है ।

त्रैलोक्य चिन्तामणि पारद गच्छ हीरामय सुवर्ण भस्म रौप्य भस्म लोह भस्म अभ्रक भस्म ताम्र भस्म मुक्ता गिष्ठि शंखपिष्टि प्रवाल पिष्टि शुद्ध हरताल शुद्ध मैन्सोल प्रत्येक एक एक तोला लेना और पौली बराटिकाकी पिष्टि तोला २३ लेना विधिवत् मिलाकर चित्रकमूलके कवाथकी ७ भावना, आकके दुबकी २ भावना निर्गुंजी रस, सूरणका रस और सेहूँ के दुबकी एकएक भावना देकर टिकीया करके शराब संपुटमे रखकर कपडमिट्टी कर बालूका यंत्रमे ४८ घंटा पकाना स्वांगशीत होनेपर निकाल कर पीघना । उसमे २० तोला पूर्ण चंद्रोदय द्विगुण गंधक जारित और वैक्रांत पिष्टो तोला ५ डालकर घोटकर सड़ानेकी छालके कवाथकी ७ और चित्रकमूलके कवाथकी २ भावना देकर घोटकर रख छोड़ना । मात्रा १ से २ रत्ती शहद घृत मलाई दुधसे देना । यह उत्तम रसायन है आयुष्य बढ़ाता है शरीरको नीरोगी रखता है । फुफ्फुस रोग हृदयरोग हृदयकी कमजोरी विद्रधि पांडुरोग अतिसार संप्रहणो कवासीर कुष्ठ आदि रोगोंमे भी उत्तम गुणकारी है ।

अष्टावक्र रसः

पारद शुद्ध तोला १०, गंधक तोला २० लेना । पारदमे सेनाका बक तोला १ और चांदीका बक तोला १ मिलाकर पीछे उसमे गंधक डाल कज्जली करना । पीछे इसमे नागभस्म ताम्रभस्म यशद भस्म बगभस्म प्रत्येक आधा आधा तोला डाल घोटकर बटांकरके रसमे ३ घंटा घोटना । पीछे कवारपाठा के रसमे घोटना सुखने पर काचकी शीशोमे डालकर बालूका यंत्रमे मंद मध्य तीव्र अग्निसे ३ दिन तक पकाना । शीशोके गलेपर जमा हुआ पूर्ण चंद्रोदय जैसा रस शीशी तोड़ कर निकाल लेना घोट कर रखना । इसकी मात्रा १ से २ रत्ती और अनुपान चूर्ण ३ से ४ रत्ती पानकी पट्टीमे डालकर खाना साथ अनुपान चूर्ण ६ से ८ रत्ती मिलाना अथवा शहद और घृतके साथ लेना ।

अनुपान चूर्ण—जायफल लवंग जावत्री सेमलका गोंद सकेर गुग्गुली
पंजासालम कालीमिरच भैमसेनी कपूर सब समभाग छे-॥ कूट कर रसना ।
उपर बादाम इलायची शफर केसर डालकर पकाया हुआ दूध पीना । यह
उत्तम रसायन गुणकारी है बलीपलितको मिटाता है पौष्टिक शक्तिप्रद मेधा बुद्धि
आयुष्यवर्धक उत्तम औषध है । अष्टांगक रस के साथ ६ से ८ रती देना ।

सारस्वतारिष्ट—प्राप्ती पचांग १६४ तोला, शतावरी विदारी कंद हरद
वाला सेंट बड़ीसेप तज इलायची छोटी पीपल कालीमिरच प्रत्येक बीस बीस तोला,
पानी १ मन कच्चा मे घब द्रव कूटकर डाल पकाना आधा पानी रहने पर
कपडछान कर एक चीनाई मिट्टीकी बरणीमें भर उसमें मधु तोला ८० शक्कर
तोला २००, धाईके फूड तोला २०, प्रियंगु छोटी पीपल लवंग बच कुष्ठ
अककलधरा अमगध गूदेडा गीठाय इलायची मुसली जायफल जावत्री वायविङ्ग
तज प्रत्येक दो दो तोला कूटकर डालना । इसमें सेनाका बर्क तोला १
मलमलके काढेकी थैलीमें डाल मुख बंदकर इसमें डाल देना । १ मासके
पछे देखना उसमें स्वर्णपत्रा पिघल कर आस्रवमें प्रवाही बनकर मिश्रगया
होगा यदि कुछ बचा हो तो थैली आस्रवमें फिर डालना और १॥ से २ मास पछे
आस्रवको कपड छान कर रख छोडना । सेनाका बर्क कुछ बचा हो तो
थैली आस्रवमें रख छोडना । एकाध मासमें सब पघल जायगा ।

माशा १ से ३ तोला दिनमें एक या दो बार पीनेसे उत्तम रसायन गुण
करता है । बुद्धि मेधा स्मरण शक्ति प्रज्ञा आयुष्य बढ़ता है । हृदयको
बलवान करता है । आरोग्यको हानिधारक तत्वोंको नष्टकर शरीरको तंदुरुस्त
बनाता है । पुरुष छे और बच्चे सबके लिये गुणकारी है । संगीतकारीके
लिये भी उत्तम लाभकारी है ।

पूर्णचंद्रोदय द्विगुण गंधक जारित—(स्वर्ण घटित सिद्ध मकरध्वज)
सेनाका बर्क १ तोला मे शुद्ध पारद ८ तोला डालकर घोटना मिल जाने पर
शुद्ध गंधक तोला १६ मिलाकर कजली हो जानेसे कापूस के फूलको १ और
क्वार पाठा के रस को १ भावना देकर सुख जाने पर कपडमाटी को हुद्दी
शीशी मे डाल कर बालुछायत्र मे मंद मध्य तीव्र अग्निसे पकानेसे गंधक जलकर
शीशी के गलेमे जमता हैं ओर नीचे चंद्रोदय लग जाता है । शीशी तोड कर
निकाल लेना तलमें स्वर्ण भस्मइस में जो कुछ रहा हो चंद्रोदय मे घोट
मिलाकर कछुरी जलमें १४ घंटा घोट कर सुखाना इसको १ रती माशा में

अनुपान चूर्ण ३ रती मिलाय शहद घृत से अथवा पानकी पट्टी के साथ खा कर उपर बेसर इलायची छक्कर मिलाकर पकाया हुआ दूध पीना ।

पूर्णचन्द्रोदय-का अनुपान चूर्ण—भीमसेनी कपूर जायफल कालीमिरच कर्कश प्रत्येक चार चार तोला और कस्तुरी १ तोला मिलाकर घोटकर रखना यह अनुपान चूर्ण द्विगुण पङ्कगुण षोडशगुण आदि पूर्णचन्द्रोदय के साथ दिया जाता है । पूर्णचन्द्रोदय का अनुपानचूर्णका नीचे दिया अन्य प्रकार भी है ।

पूर्णचन्द्रोदय अनुपान चूर्ण—रसहिंदुर टोहभस्म सुवर्णमाक्षीकभस्मक भस्म त्रिबंग भस्म सफेद मुसली पंजासालम विशसीकंद भूताग धीरपुटी छोटपेपल भाग के बीज इलायची रुद्र शोफके बीज अवलकरा प्रत्येक एक एक तोला अष्टवर्ग अठद्वय मिलकर १६ तोला, जायफल जाबत्री कालीमिरच भीमसेनी कपूर प्रत्येक आठ आठ तोला, कस्तुरी ४ तोला बेसर ४ तोला सब साथ घोटकर रखना । इसकी मात्रा ३ से ६ रती दी है द्विगुण पङ्कगुण षोडशगुण शतगुण कोई भी पूर्णचन्द्रोदय की १ रती मात्रा में यह अनुपान चूर्ण मिलाकर पानकी पट्टी के साथ खाना अथवा शहद घृतमें लेना उपर दूध पीना ।

विषीभी कारण से पुष्क २१ स्त्री कमजोर अशक्त हो गये हो, विषी भी रोगसे उत्पन्न हुयी निर्मळता मिटती है हृदय फेफड़े दिमाग बलवान होता है कामशक्ति बढ़ती है यह अनुपान चूर्ण अकेला लेने से

गर्वं श्लययतिः स्त्रीणां कामविह्वलचेतसां ॥

कामाप्तको मृगाक्षीणां प्रियः स्यात् वलवान् पुमान् ॥१॥

वयःस्तंभनकृत्सर्वरोगाशक्तिनिवारणः ॥

रसायनगुणश्रेष्ठो वलीपलितनाशनः ॥२॥

क्षुधावृद्धिं च कुरुते मेधायुः कांतिवर्धनः ॥

सेवनात् सततं पुसां जरामरणनाशनः ॥३॥

पूर्णचन्द्रोदय पङ्कगुणगणधक जारित (स्वर्ण घटित सिद्धमकरध्वज) द्विगुण गंधक कारण किये हुये पूर्णचन्द्रोदयमें पुन १६ तोला गंधक मिलाय कापूसके फूल और कवारपाठाकी भाषना देकर बालुका यंत्र में पकाना इस प्रकार कुल तीन वस्तु पकाने से पङ्कगुणगणधक जारित होता है । उसी प्रकार षोडशगुण और शतगुण गणधक कारण करनेसे भिन्न भिन्न प्रकारका पूर्णचन्द्रोदय बनाकर अनुपान चूर्ण के साथ सेवन किया जाता है ।

पूर्णचंद्रोदयकी अनुपान मिश्र गोली-घोट्टाहुआ चंद्रोदय लेने से कठिनाई मालूम हो उनके गोली लेना अनुकूल रहता है। १० तोला पूर्ण चंद्रोदय में ४० तोला अनुपान चूर्ण मिलाय शहर में मुंग जैसी गोली बनायी जाती है मात्रा ३ से ६ गोली दूध के साथ ली जाती है अथवा पानकी पाटी के साथ खाकर उपर दूध पिया जाता है। सब प्रकार के पूर्णचंद्रोदय की गोली इस प्रकार बनाकर सेवन की जाती हैं। सबरोग की कमजोरी में पुष्प और खोया सब ले सकते हैं।

इसके सेवनसे इच्छानुसार विषय सुखभोग सकता है ध्वजमंग नहि होता। स्त्रीओका गर्भ खटन करता है। सतत सेवन करनेसे बलीपलित मिटती हैं। वृद्धावस्था आती नहि युवावस्था जैसा बल बना रहता है। किसी भी रोग का भोग नहि घनता। स्त्रीयां भी शक्ति बढ़ाने के लिये इसका सेवन कर सकती हैं सब प्रकारकी कमजोरी मिटती हैं।

शरीरकी क्षीणतासे अतिविषयसे हस्तदोष आदिसे हुआ शुष्क क्षय क्षीयता नष्टसक जैसी स्थिति का दूर कर शरीरको बलवान बनानेवाला यह औषध है।

श्री मन्मथाश्र—अन्नक भस्म तोला ८, पारद गंधक कपूर लोह भस्म प्रत्येक चार तोला, गग भस्म तोला २, ताम्र भस्म समुद्रशोष बीज विदारी कंद शतावरी तालमज्जाना यलाचीज कौबचीज अतिथला बीज जायफल जावंत्रो लवंग भांगके धीज सफेद राळ अजमोद प्रत्येक एक एक तोला सब विधिवत् मिलाकर तीन दिन तक घोट कर तैयार करना। मात्रा ३ से ६ रती पानकी पाटीके साथ अथवा शहरसे लेकर उपर दूध पीना।

न शिश्रस्य च शैथिल्यं सेवनादस्य जायते ॥

विषयासक्तचित्तस्य शुक्रे न क्षीयते बलं ॥१॥

रसायनगुणो बल्यो बृष्यो वाजीकरः परः ॥

मन्मथाश्रो रसश्चायं शंकरेणोदितः स्वयं ॥२॥

सिद्ध सूत—द्विगुण गन्धक जरीत पूर्णचंद्रोदय तोला ५, मुस्ता पीप्ली सुवर्ण भस्म गौप्य भस्म प्रत्येक एक तोला सब साथ मिलाकर कमलके फूलके रसर्षी अथवा क्वाथकी भावना देकर रख छोड़ना मात्रा २ से ३ रती सफेद मुशकी चूर्ण, १ माषा मिलाय पानकी पाटीके साथ अथवा शहरद घृतसे लेकर उपर दूध पीना कामोत्तेजक पौष्टिक वाजीकर है। हृदय पौष्टिक रसायन है।

मोगपुरंदरी घटी—रससिंदूर तज तमाल पत्र इलायची नागकेशर लवंग
सेंठ चंदन जावंत्री केसर छोटीपीपल अक्षरकरा अफीम कस्तूरी कपूर प्रत्येक
एक एक तोला, भांग १५ तोला नागर बेलके पत्तेके रसमे गोली रत्तीकी बनाना ।
१ से २ गोली दूधसे रेंना । यह पौष्टिक कामोत्तेजक शक्ति वर्धक स्तंभन कर है ।

कामिनी विद्रावण—रस सिंदूर, गंधक लोहमल्ल कपूर लवंग केसर
छोटी पीपल जायफल जावंत्री चंदन अक्षरकरा प्रत्येक एक एक तोला भांग २
तोला पानके रसमे गोली गुंजा प्रमाण बनाना । १ से २ गोली दुधके साथ लेना ।
वृद्ध पौष्टिक है ।

मोफरवा-युनानी खाटन-अन्नक सुवर्ण रौप्य नाग वग लोह भोजित
प्रत्येककी मल्ल, सुकता पिष्टी रससिंदूर मीमसेनी कपूर अगर पीपल जावंत्री वच
नागकेशर मोथ छोटीपीपल कचुगे चीनीकषाला रसीमस्तणो माजूफल जटामांसी
खारीवा सेमल मूल जायफल घादके फूल गोखरु अक्षरकरा मेथीदाना शतावरी कौबच
बीज तालमखाना काकेली कनकबीज कमलकंद केसर कुंठ मूंगैठा मूल चंदन
विदारीकंद सुशली करलोकद प्रियंगु बोरखुटी मूनाग सेंठ मरी हरड बहेडा
आंवला इलायची तज धनिया चापचीनी समुद्रशोष बीज अपामार्ग बीज अक्षरकरा
आला कस्तूरी प्रत्येक एक एक तोला, भांग १५ तोला और शक्कर ८० तोला
सब मिलाय हाददमे मिलाय अवलेह बनाना । ०। से ०६ तोला खाकर उपर दूध
पीना बड़ा पौष्टिक कामोत्तेजक शक्तिदा है ।

पुष्पघन्धा लघु—रससिंदूर, नाग लोह, अन्नक वग माक्षिक प्रत्येककी
मल्ल, कनक बीज, भांग, मूलीठी मूल, सेमलका मूल पानकी जड़ सब समान
भाग लेकर विधिवत मिलाना । माशा २ से ४ रत्ती मधुतृप्तके साथ लेकर दूध पीना
काम शक्ति बढ़ाने वाला और आयुष्य वर्धक रसायन है ।

पुष्प घन्धा बृहत् (स्वर्णयुक्त)—सेनाका धकै तोला १, पूर्णचंद्रोदय तोला
२, लोह मल्ल तोला ३, माक्षिक मल्ल तोला ४, जायफल जावत्री कमलकंद
सेमलका गोंद पानकी जड़ लवंग मीमसेनी कपूर काली मोरच अक्षरकरा प्रत्येक
चार चार तोला मिला कर २ रत्तीकी गोली बनाना । १ से २ गोली पानकी
पट्टी के साथ खाकर उपर पकाया हुआ दुध अथवा रबड़ी पीना और दुधपाक
जोषा पौष्टिक खुराक खाना । इसके सेवन से वांछित गुण होता है नपुंसक
जैसी दशा मिटती है आयुष्य बढ़ता है । रसायन गुण करता है । वीर्यकी
वृद्धि और स्तंभन होता है ।

मदनकाम देव रस- पारद तोला ८ मे सुवर्ण बर्त तोला १ मिलाकर पीछे उसमे गन्धक तोला ८ मिलाकर खज्जरी करना पीछे रौप्य भस्म वैकान्त पिष्टो मुष्ठा पिष्टि लेह भस्म माक्षीक भस्म प्रत्येक चार चार तोला डाल मिलाय कव्वा पाठके रस मे घोट सुखा कर शराब संपुट में रख कपड मिट्टी कर सेधानेन भरेहुए लवण यंत्रमे रख २४ घंटा पकाना । स्वागशत होने पर संपुटखोलकर औषध निकाल लेना पीछे उसमे घोट कर उसमे पानके रसकी भावना देकर अषगंधा अष्टवर्ग कौष मुसली तालमखाना चीनीकबाला सेठ पीपल काली मिरच इलायची लवंग जायफल जावंत्री भीमसेनी कपुर सेमलका गोंद प्रत्येक दो दो तोला और कस्तुरी भावा तोला मिलाय शहदमे दो रत्तो प्रमाण गोळी बनाना । पानकी पट्टी के साथ दो तीन गोळी खा कर उपर कड़ा हुआ दूध पीना यह बाजीकर वृष्य पौष्टिक है ।

कामेश्वर रस-पूर्णचंद्रोदय जायफल जावंत्री अकलकरा बगभस्म अभ्रक भस्म माक्षीक भस्म अफीम समभाग लेकर पोस्त के दोहे के क्वाथ मे घोट कर रती प्रमाण गोळी करना । पानकी पट्टी के साथ एक दो गोली खा कर उपर बहाहुआ दूध पीना । यह बाजीकर स्तंभक पौष्टिक कामोत्तेजक संप्रहणी अतिहार प्रदर प्रमेह में गुणकारी हैं ।

सिन्दुर भूषण रस-रस सिंदुर तोला ८ मे सेनाघ्न बर्त तोला आधा-मिलाना पीछे उसमे कनक बीज भाग तालखाना जायफल जावंत्री सहेजने का बीज अकलकरा लवण चीनीकबाला सफेद मुसली पंजासालम समुद्रशोष बीज कपुर अफीम प्रत्येक दो दो तोला लेकर घोट कर नागरवेल के पान के रसमे दो-रती प्रमाण गोळी बनाना पानकी पट्टीमे १ या २ गोली खाकर उपर कड़ा हुआ दूध पीना । नपुंसक मनुष्य को भी काम जागृत होता है । वीर्यवा स्तंभन होता है प्रमेह प्रदर अतिहार संप्रहणी जैसे रोग मिटते हैं ।

वंजेश्वर वृहत् रस- बंग रांग तोला ८ को पिघालकर उसमे पारा तोला ८ डालना पीछे पीसकर उसमे गन्धक तोला ८ डालकर कपड माटी की हुइ अमो शशी में भर वालुकयत्र में पकाना । स्वांगशीत निकाल कर रसके घोट-यह रस तोला ८ और जायफल जावंत्री लवंग कालीमिरच केसर भीमसेनी प्रत्येक चार चार तोला मिलाकर रखना । उसकी २ से ३ रती मात्रामे अष्टवर्ग पूर्ण २ से ३ मास मिलाकर शहद घृतसे खाकर उपर दूध पीना । शक्तिबल बीर्य वर्धक पौष्टिक है । प्रमेह मूत्ररोगमें गुणकारी हैं ।

गोक्षुरादि चूर्ण—गोखर तालमखाना सफेद मुशली शतावरी वाराही कंद कमलकंद छोटी पीपल मूलीठी मूल नागरमोम आंवला कौंच बीज अश्वगंधा सेठ प्रम भाग कूट रखना । २ से ३ मासा में शहद मिलाय लेना उपर दूध पीना वाजीकर गुण होता है ।

घोनरी बटी—कपिकच्छु कौंचाको दूधमे पकाना पीछे निकालकर उपरकी छिलकी निकाल गिरी लेना बहु गिरी तोला ८० को महीन पीसना, पीछे उसमे रसविह्वर लवंग काळी मिरच सेठ जायफल अकलकरा इलायची शतावरी सफेद मुशली तालमखाना प्रत्येक दो दो तोलाका चूर्ण मिलाकर चार चार मासाका गोला बनाना पीछे उन गोलाको घीमे पकाकर तलकर शहद भरे बरतनमें ढाल देना १५ दिनके पीछे दो चार गोला खाकर उपर दुध पीना पौष्टिक कामोत्तमक है ।

पुननवादि चूर्ण—श्वेत पुननवाका मूल शतावरी गोखर अश्वगंधा सफेद मुशली नागबला मूळ शालाली मुळ बबूलका गोद अश्वगंधा सबसम भाग कूटकर रखना । २ से ४ मासा दुधके साथ सेवन करनेसे वाजीकर गुण होता है ।

केसरादि अवलेह—केसर तोला ८ को घोटकर तैयार करना पीछे रसविह्वर अन्नक मन्म लोह भण्ण पगभरम प्रत्येक दो दो तोला लेना । तब तमाल नागकेसर इलायची सेठ पीपल कालीमीरच लवंग अगर चंदन तालमखाना अकलकरा जायफल शालपली गोखर बलायोज मूलीठी मूल अश्वगंधा गोखर मुशली वाय वदग समुद्रशोष बीज भांग प्रत्येक चार चार तोला लेकर कूटकर सब साथ मिलाय शहदमे अवलेह जैसा बनाना । पीछे इसमे सेनाका बर्क तोला एक और चांदीका बर्क दो तोला मिलाना । मात्रा २ से ४ मासा खाकर उपर दूध पीना वाजीकर कामोत्तमक पौष्टिक युद्धमेघा वर्धक रसायन है । इसके सेवनसे रुद्ध भी तृण जैसा बलवान होता है । सब प्रकारके वातरोग संधिवात पक्षघात स्नायुवात उरुस्तंभ कटिग्रह कमजोरी रक्तश्राव आदिमे गुणकारी है ।

सुपारी पाक अवलेह—चिकनी दक्षीण देशकी लाल सुपारी तोला ८० लेकर कूट कर चूर्ण करना । उसको पहा १० शेर दुधमे पकाकर खोवा-मावा बनाना पीछे उस मावाको घंमे पकाना बदामी रंग हो वहां तक घोभी आंचसे पकाना पीछे उत्तारकर ठंडा करना । पीछे उसमे नीचेके द्रव्योका चूर्ण ढालना । तब तमाल नागकेसर इलायची जायफल जावत्री बलामूल नागबला मूल मूलीठी मूल छोटी पीपल वंशलेचन सेठ विदारीकद शतावरी कौंचाबीजकी गीरी प्राक्ष तालमखाना गोखर बीरा धनीया बलौजीबीरा अजवाइन जटामांघ्री मेथीदाना "चूरा कमल बीजकी गीरी सफेद चंदन प्रत्येक चार चार तोला कूटकर मिलाय

शक्कर शेर १०को चासनी कर सब द्रव्य इसमे ढाल देना अवलेह वैसा बनाना १ से २ तोला खाकर उपर दूध पीना । पौष्टिक शक्तिप्रद रसायन है ।

महासूदनदि तैल—चंदन, रक्तचंदन पतंग कृष्णागद देवदार सरल बीज पद्मकाष्ठ लाल सुगरी वपुष लताकस्तूरी लोमान केसर गोरोचन जायफल जावंत्री लवंग इलायची चीनीकबाला तज नागकेसर वाला जटामांघी मूरीछरीला नागरमोथ प्रियंगु गुण्ड लाख नवठा राळ घायके फूड अन्निभण मजीठ तगर प्रत्येक चार चर तोला लेकर पानीमे कटक कर तिलका तेल रतल २५ मे पकाना पीछे इसमे पानीका अंश जल जाय जब स्वागशीत होनेपर कस्तूरीका अंतर अथवा हीनाका अंतर दोला ४ और भीपमेनी कपूर पीस कर ४ तोला मिलाना । अच्छे वांचके बर्तनमे रख छोडना । बुच मजबुत लगाना । यह तेल शरीरपर मालीस करनेसे वृद्धके शरीरमे बलवृत्ति शक्ति आती है वाजीकर है आयुष्य दृढता है रसायन गुणकारी है ।

गुडूचयादि रसायन—गिलेय शंखावली हरड बहेडा आवळा मूलौठी सूत्र समभाग कूट कर भांगरेके रसको ३ भावना देना हमेशा प्रातःकाल २ मासा शहदसे लेकर दूध पीना ।

अश्वगधा रसायन—असगध काला तिल आवळा सम भाग लेकर भांगरेके रसको ३ भावना देना प्रात १ से २ मासा दुधसे लेना ।

वचादि रसायन—वच हरड शतावरी सोठ गिलेय अपामार्ग मूल घायविडंग आवळा शंखावली जटामांघी समभाग लेकर भांगरेके रसको ३ भावना देना १ से २ मासा शहद घृतसे लेकर दुध पीना ।

वाजीकर भोजन—वडकी दाल खंडेउडद हरेवखत खाना । वीर्यकी वृद्धि कर्ता है । गेहूँकी रोटी चावल दूधकी खीर मुग चावलकी खीरको में दूध मिलाकर भोजन पुरणपोली उडदकालहड़ शीखड दुधपाक १ शेर दूधमे १ तोला चावल टाँल और ४ तोला शक्कर घिलाकर पकाकर बदाम इलायची पीस्ता ढाल बन या हुआ पायस दुधपाक, गेहूँका लहड़ इत्यादि भोजन पौष्टिक शक्ति वर्धक हैं ।

हरीतकयादि अवलेह—हरड बहेडा आवळा चित्रक मूत्र गिलेय सोठ पीपल काली मिरच ब्राह्मी शतावरी मुशली बलामूल निगुंही मूल हलदी दासहल्ली न'गदेशर भांगरा तज इलायची मूलौठी मूल वायविडंग इन्द्रौ अतिविषा लताशरंज वीजका गीरी प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूटकर चूर्ण बनाना पीछे गुड तोला एक सजाग्या भांगरेके रसमे पकाकर घट होनेसे चूर्ण ढाल अवलेहके रूपमे तैयार करना । हमेशा १ से २ तोला खाना दुधका खुराक रखना रसायन गुण करता है और हृदय रोग उदररोग गुल्म अडवृद्धि अत्रावृद्धि सारणगीठ श्वासकाश आदिमे भूत गुण करता है ।

वाजीकर घटी युनानी—माये भरावी तोला ४, केसर तो १, अनर तोला ०॥ इस्तूरी तो. ०॥ भमसेनी कपूर तो. १, जायफल जावत्री पानकी फड लवंग भवल्करा पंजा सालम प्रत्येक दो तोला साथ मिलाकर प्रांछी दाव तेला २० मे घोटकर (तो) प्रमाण गेली बनाना । दुधके साथ १ से २ गोली बेनेसे कामोत्तेजक गुण करती है ।

नपुसकत्वहर युनाची तिलो—रीछकी इन्दी तोला २॥, जु प्रलेदस्तर तो २॥ खराटन तो ५, बीरदुरी तो. ५ रेग महीन तो २॥, जोक (जलो) तो. २॥, जादफल मालवाणी चीज बनवचीण प्रत्येक ढाड ढाड तोला अकर करा तज अगरफ शुद्ध इफेद मल्ल इद्ध प्रत्येक सवा सवा तोला, मुरगीना के २० अंडोकी जदी सोइकी चरबी तेला ५, लेकर रंछकी इद्र और जुझ वैशस्तर हो बेचीमे कातरकर प्ररीक करना उसमे दूसरी चीजे मल हीगुल घोट मिलाव चरबी और अडाकी जरदी मिलाय चुपारी जैसा गोलाकर पाताल्यंत्र से तोला १ निकालना । पीछे उसमे कपूर तो. ०॥, कातूरी तो ०॥, प्रांछी तोला १ मे घोटकर मिलाय शीशीमे भाना । इसके इन्दीपर मालीष करनेसे हस्तदोषसे हुआ नपुसकत्व इन्दीघाटे टापन वचता मिटकर इन्दी लंबी होती है । इन्दीमे बढता बढ़ती है काम जगृत होता है ।

स्त्री सगके पीछे क्या करना ऋतु के अनुसार और अपने शरीरको पसंद हो वैसे गरम ठंडाया रस शरीरांग पानसे नहाना । शक्कर मिलाय दुध तैयार रखा हो वह पीना । मधुर फल खाना प्राक्षा सब जैसा आश्रव चार पांच तोला पीना । पख्खा पवन लेना और नीद्रा करना सो जाना यह हित का है ।

प्रयोग १ विदरीकद शतावरी समभाग कूट कर ०॥ से ०॥ तोली चूर्ण की या मघमें चांटी उपर दुध पीना वाजीकर है ।

२ हरे आवल्लाको कुखाकर चूर्ण करना पीछे आवल्लाकी मौसममे पांके हुए हरे आवल्लाको कूट कर रस निकाल उसको २ या ३ भावना देकर रखना । ०॥ तोला उस चूर्णमे शहद घृत मिलाकर खाना, उपर दूध पीना इससे बृद्धमे भी तरुण जैसा बल आता है ।

३ कौबच की गीरी और तालमखाना समभाग कूट रखाना । दोनोंके समान शक्कर मिलाना ०॥ से १ तोला मात्रा दुधसे सेना तो बृद्धमे भी शक्ति आती है ।

४ मूलेठी मूल विदारी कंद समभाग कूट ०॥ से १ तोला मधु घृतसे लेकर दूध पांचे उसका बीज क्षीण नहो काम शक्ति बढे ।

५ विभीरुकंद छोटी पीपल वंशलोचन मूलेठी मूल सब समभाग लेकर कूटकर शहदमे मिलाइर अच्छे स्तनमे रखना १ मासके पीछे १ से २ तोला खा कर दूध पीना यह द्रव्य वाजीकर वृद्ध है ।

शिशुवृद्धि लेप—छोटी कटहरी फल, तज काली मीरच पीपल सेवानान शालपर्णी सब काळे तील तिल सफेद सरसो अश्वगन्धा सब समभाग कूट कर रखना मिलाय शहद मिल सकाते रहेनेसे स्तन शिशु आदिकी वृद्धि होकर पुष्ट होते हैं ।
शिशुवृद्धि मलम—नागवला मूल बच अम्रगंध गजपीपल करनेकी जड़ सब सम भाग लेकर पीसकर मसखनमे मिलाय मलम बनाना हमेशा स्तन करनेसे लिंग स्तन पुष्ट होते हैं ।

वीर्यस्त भवटी—जायफल लवंग जायत्री केसर इलायची अफीम अकर-करा प्रत्येक एक एक तोला, केपूर ०। पांच तोला ताबूल पत्रके रससे गुजा प्रमाण गोली बनाना । एकसे दो गोली लेनेसे वीर्यका स्तभन करतो है बल शक्ति बढाती है ।

लपिकच्छु अवलेह—कौचा कीगरी तोला १२० को पीस कर चूर्णका दूध पक्का सेर ५ मे ढालकर पकाना खोवा-मावा हो जानेसे उसमे घी शेर १ मे पदामी रंग होने दो शकर शेर ३ को चासनी कर उसमे नीचे लियो प्रयोक्ता चूर्ण तैयार रखा हो ढाल कर धीमी आंचसे पकाना अवलेह जैसा होनेसे ठंडा होने देना ।

प्रक्षेप द्रव्य जाय फल सेठ पीपल काकीमिरच तज तमालपत्र इलायची लवंग अकरकरा जायत्री तालखाना केसर पुनर्नवामूल प्रत्येक चार चार तोला, सफेद मुवली तोला ८ अफीम रसबिंदू लोह भस्म अभ्रक भस्म प्रत्येक दो दो तोला, ढालना उपर लीखे कपिकच्छु अवलेहकी चासनीमे ढाल धतन मे भर देना । हमेशा १ से २ तोला खाकर उपर कडा हुआ दूध पीना इससे वीर्य बल शक्ति बढती है कामोत्तेजक है ।

जातीफलानि गुटी—जायफल अकरकरा घतुराका बीज जायत्री अफीम नाग भस्म रसबिंदू सबसम भाग लेकर पोस्त के डोडे के कवाथ मे घोट कर गुजा प्रमाण गोली बनाना । एक से दो गोली शकर प्राय तोला के साथ लेकर उपर दूध पीना वीर्य स्तभन होता है कामोत्तेजक पौष्टिक है ।

शंखपुष्पी प्रयोग—शंखाहुवी गिलेय अगामागमूल वायविंदंग बच हरद सेठ शतावरी समभाग कूट चूर्ण करना १ से २ मासा गय के घी साथ लेने से मेधा स्मरण शक्ति बुद्धि आयुष्य बढना हैं ।

शताघर्षादि चूर्ण-असगंध कौच बीजको गोरी सफेद मुषली गोखरु चाराहीकंद मूलेठी मूल जायफल समलका गोद समभाग कुट कर पाव तोला चूर्ण शकर के साथ लेकर उपर दूध पीना पौष्टिक वीर्यवर्धक कामोत्तेजक है।

कामोत्तेजक युनानी तिला-ढोवान कोडीयो तोला २०, काले तिल से ७५, सफेद शोमल तोला ११, बछनाग, घतुराका घोज सफेद गुआ कुचला अकरहरा जायफल मालर्कागणी बीज लवंग तज प्रत्येक पांच पांच तोला लेकर पाताल यंत्रसे तेल निकालना। यह तेल तोला ५ में छस्तुरी रती ६ फेब्रर रती १२ मीमसेनी रती ६ मांढी दाढ़ मासा (८ तोला १) सबसाथ मिलाकर बीशी में भरना। इसको इशोपर मालिश करने से कोम जागृत होता है नपुंसकत्व मिटता है स्तन बढ़ता है।

॥ समाप्त ॥

दीर्घ और आरोग्यपूर्ण
जीवन देनेवाला औषध



गोडल सन्तलिन कपल की जड़ औष सिद्धि

सन्तलिन कपल

सन्तलिन औषधश्रीम
आयुर्वेदिक फार्मसी गोडल (भारत),

सिद्ध रसायन

वृहत

१० ग्रामका

रु. २५-००

पत्रवीरा

सिद्ध रसायन

कल्प लघु

१० ग्रामका

रु. १०-००

दश रूपिया

